

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिदं विद्यते ।



माणिकचन्द-दिगम्बर-जैन-  
ग्रन्थमाला ।



जैन शिलालेखसंग्रहः ।

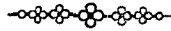
माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमालायाः

अष्टाविंशतितमो ग्रन्थः ।



# जैन-शिलालेखसंग्रहः ।

( प्रथमो भागः )



सम्पादकः—

अमरावतीस्थ किङ्ग-एडवर्ड-कालेज-संस्कृताध्यापकः

एम्० ए०, एल्एल्० बी० इत्युपाधिवारी

श्रीहीरालालजैनः ।

प्रकाशिका—

श्रीमाणिकचन्द्र दि० जैनग्रन्थमालासमितिः ।

मूल्यं रूप्यकद्वयम् ।

प्रकाशकः—

नाथूराम प्रेमी, मन्त्री—  
माणिकचन्द्र जैन ग्रन्थमाला,  
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई ।

सिर्फ भूमिका और अनुक्रमणिका आदिके मुद्रक—

मंगेश नारायण कुळकर्णी,

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस,

३१८ ए, ठाकुद्वार, बम्बई ।

और शेष संपूर्ण पुस्तकके मुद्रक—

ए० बोस, इंडियन प्रेस

लिमिटेड, बनारस केष्ट ।

# निवेदन

—:०:—

दिगम्बर जैन सम्प्रदायके शिलालेखों, ताम्रपत्रों, मूर्तिलेखों और ग्रन्थप्रशस्तियोंमें जैनधर्म और जैन समाजके इतिहासकी विपुल सामग्री बिखरी हुई पड़ी है जिसको एकत्रित करनेकी बहुत है बड़ी आवश्यकता है। जब तक 'जैनहितैषी' निकलता रहा, तब तक मैं बराबर जैनसमाजके शुभचिन्तकोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करता रहा हूँ। परन्तु अभी तक इस ओर कुछ भी प्रयत्न नहीं हुआ है और जो कुछ थोड़ासा इधर उधरसे हुआ भी है वह नहीं होनेके बराबर है।

बड़ी प्रसन्नताकी बात है कि बाबू हीरालालजीकी कृपा और निस्वार्थ सेवासे आज मेरी एक बहुत पुरानी इच्छा सफल हो रही है और जैन शिलालेखसंग्रहका यह प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। बाबू हीरालालजी इतिहासके प्रेमी और परिश्रमशील विद्वान् हैं। उनके द्वारा मुझे बड़ी बड़ी आशाएँ हैं। वे संस्कृतके एम० ए० हैं। इलाहाबाद यूनीवर्सिटीकी ओरसे उन्हें दो वर्ष तक रिसर्च स्कालरशिप मिल चुकी है और इस समय अमरावतीके किंग एडवर्ड कालेजमें वे संस्कृतके प्रोफेसर हैं। कारंजाके जैनशास्त्रभण्डारोंका एक अन्वेषणात्मक विस्तृत सूचीपत्र सी० पी० गवर्नमेण्टकी ओरसे आपने ही तैयार किया था, जो मुद्रित हो चुका है। आपकी इच्छा है कि शिलालेखसंग्रहके और भी कई भाग प्रकाशित किये जायँ और उनके सम्पादनका भार भी आप ही लेना चाहते हैं। मुझे आशा है कि माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालाकी प्रबन्धकारिणी कमेटी इस भागके समान आगेके भागोंको भी प्रकाशित करनेका श्रेय सम्पादन करेगी। अस्तव्यस्त और जीर्णशीर्ण अवस्थामें पड़े हुए जैन इतिहासके साधनोंको अच्छे रूपमें प्रकाशित करना बड़े ही पुण्यका कार्य है।

निवेदक—

नाथूराम प्रेमी







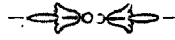
# प्राचीन शिलालेख-संग्रह —



श्री मोदी बालचन्द्रजी

( लेखक के पिता )

## समर्पण



पिताजी,

आपने अत्यन्त परिश्रम करके मुझे जो कुछ  
विद्यादान व धार्मिक ज्ञान दिलाया है,  
उसीके फलस्वरूप यह प्रथम  
मेंट आपके करकमलोंमें  
सादर समर्पित है ।

आपका पुत्र,

हीरालाल



# विषय-सूची



## Preface

पृ०

### प्राथमिक वक्तव्य

भूमिका—(श्रवणबेलगोलके स्मारक)	...	...	...	...	१-१६२
चन्द्रगिरि	...	...	...	...	३-१६
विन्ध्यगिरि	...	...	...	...	१६-४२
श्रवणबेलगोल नगर	...	...	...	...	४२-५०
श्रवणबेलगोलके आसपासके ग्राम	...	...	...	...	५०-५४
लेखोंकी ऐतिहासिक उपयोगिता व भिन्न २ राजवंश	...	...	...	...	५४-११२
लेखोंका मूल प्रयोजन	....	....	...	...	११३-१२३
लेखोंसे तत्कालीन दूधके भावका अनुमान	...	...	...	...	१२२-१२३
आचार्योंकी वंशावली	...	...	...	...	१२५-१४४
संघ, गण, गच्छ और बलि भेद	...	...	...	...	१४४-१४८
आचार्योंकी नामावली	...	...	...	...	१४९-१६२
लेख—	...	...	...	...	१-४२७
चन्द्रगिरिके शिलालेख	...	...	...	...	१-१५५
विन्ध्यगिरिके शिलालेख	...	...	...	...	१५७-२३२
श्रवणबेलगोल नगरमें के लेख	...	...	...	...	२३३-२९३
श्रवणबेलगोलके आसपासके लेख	...	...	...	...	२९४-२९९
श्रवणबेलगोल और आसपासके ग्रामोंके अवशिष्ट लेख	...	...	...	...	३०१-४२७
अवशिष्ट लेखोंके समयका अनुमान...	...	...	...	...	३०३-३०५
अनुक्रमणिका १	...	...	...	...	१-१६
अनुक्रमणिका २	...	...	...	...	१७-३८



## PREFACE

The inscriptions at Sravana Belgola were first collected and published by Mr. B. Lewis Rice, C.I.E., M.R.A.S., Director of Archaeological Researches in Mysore, as far back as 1889. A thoroughly revised and enlarged edition of the same was brought out by the late Director of Mysore Archaeological Researches, Práktana Vimarsha Vichakshana Rao Bahadur R. Narsinhachar, M. A., M.R.A.S. While the first edition contained only 144 inscriptions, Rao Bahadur Narsinhachar has brought to light hundreds of other inscriptions from the same locality and his edition contains no less than 500 of them. The site may now be said to be more or less thoroughly explored.

These inscriptions have a peculiar interest for the historian in so far as all of them are associated in one way or another with the Jain Religion. Interest in historical researches has of late been awakened in almost all the important communities of India and it is a happy augury of the times that the Directors of the Manikachandra Digambara Jain Granthamala have decided to include in their distinguished series a set of volumes bringing together in a handy form, all the known inscriptions of the Digambara Jains, thus facilitating the work of the future Jain Historian. It was thought suitable and convenient to start this series with a volume of Sravana Belgola inscriptions and the work was entrusted to me.

The present edition is based upon the above mentioned two editions. It has, thus, nothing new to offer to the scholar; but to the general reader, who is interested in Jain History but who for one reason or another can not go to the previous costly editions in Roman and Kanarese characters, this edition has a few advantages. The text of the inscriptions is here presented for the first time in Devanagari characters, the numbers of the inscriptions in the previous



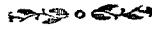
two editions have been given and the verses have been numbered to facilitate reference; the substance of the inscriptions having portions of Kanarese in them has been given in Hindi; all the important information about Sravana Belgola and its surroundings, as contained in the previous two editions is given in the introduction and the historical importance of the inscriptions from the Jain point of view is more thoroughly discussed and the index of the names of Jain monks, poets and works has been separated from the general index.

My sincere thanks are due to the Mysore Government and its distinguished Directors of Archaeology, mentioned above, without whose previous labours this edition would have been impossible and to Pandit Nathuram Premi, the able Secretary of the Manikachandra Digambara Jaina Granthamala without whose initiative and encouragement the work would have never been undertaken.

AMRAOTI,  
King Edward College,  
March 21st 1928.

HIRALAL.

# प्राथमिक वक्तव्य



श्रवण बेलगोल के शिलालेख सबसे प्रथम मैसूर सरकार की कृपासे सन् १८८९ में प्रकाशित हुए थे। मैसूर पुरातत्त्वविभाग के तत्कालीन अधिकारी लुइस राइस साहब ने उस समय श्रवण बेलगोल के १४४ लेखों का संग्रह प्रकाशित किया। इस संग्रह की भूमिका में राइस साहब ने पहले पहल इन लेखों के साहित्य-सौन्दर्य व ऐतिहासिक-महत्व की ओर विद्वत्समाज का ध्यान आकर्षित किया व चन्द्रगुप्त और भद्रबाहु वाले प्रश्न का विस्तृत विवेचन कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि चन्द्रगुप्त ने यथार्थतः भद्रबाहु मुनिसे दीक्षा ली थी व लेख नं० १ उन्हीं का स्मारक है। तबसे इस प्रश्न पर विद्वानों में बराबर वादविवाद होता आया है। उक्त संग्रह का दूसरा संस्करण अभी सन् १९२२ ईस्वी में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह के रचयिता प्राक्तनविमर्ष-विचक्षण राव बहादुर आर० नरसिंहाचारजी हैं, जिन्होंने श्रवणबेलगोल के सब लेखों की पुनः सूक्ष्मतः जाँच की व परिश्रमपूर्वक खोज करके अन्य सैकड़ों लेखों का पता लगाया। इस संस्करण में उन्होंने पाँच सौ लेखों का संग्रह किया है व एक विस्तृत व विशद भूमिका में वहाँ के समस्त स्मारकों का वर्णन व लेखों के ऐतिहासिक महत्व का विवेचन किया है।

किन्तु ये संग्रह कनाड़ी व रोमन लिपिमें प्रकाशित किये जाने व बहु-मूल्य होनेके कारण बहुतसे इतिहासप्रेमियों को उनसे कुछ लाभ न हो सका और अधिकांश जैन लेखक इनका उपयोग न कर सके। वास्तवमें इन लेखोंका परिशीलन किये बिना आजकल जैन साहित्यिक, धार्मिक व राजनैतिक इतिहास के विषयमें कुछ लिखना एक प्रकारसे अनधिकार चेष्टा है, क्योंकि ये लेख प्रायः समस्त प्राचीन दिगम्बर जैनाचार्यों के कृत्यों के प्राचीनतम ऐतिहासिक प्रमाण हैं। इस प्रकार के समस्त उपलब्ध जैन लेख जब तक संग्रह रूपमें प्रकाशित न हो जाँयगे तबतक प्रामाणिक जैन इतिहास संतोषजनक रीति से नहीं लिखा जा सकता।

इसी आवश्यकता की भावना से प्रेरित होकर श्रीयुक्त पं० नाथूरामजी प्रेमी ने सन् १९२४ में उक्त लेखोंका देवनागरी संस्करण तैयार करने का मुझसे अनुरोध किया। प्रथमतः कार्य के भार का ध्यान करके मुझे इसे

स्वीकार करने का साहस न हुआ किन्तु अन्तमें लाचार होकर वह कार्य हाथ में लेना ही पड़ा। सन १९२५ में कार्य प्रारम्भ हुआ। आशा की गई थी कि कुछ मासमें ही कार्य समाप्त हो जावेगा। किन्तु कार्य बड़ा होने व मेरे अलाहाबाद से अमरावती आ जानेके कारण वह आशा पूर्ण न हो सकी। अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हुई और समय बहुत लग गया। किन्तु हर्षका विषय है कि अन्ततः कार्य निर्वर्ण पूर्ण हो गया।

राइस साहब के संग्रह के १४४ लेखों की, श्रीयुक्त बाबू सूरजभानुजी वकील द्वारा काग़ी की हुई और पं० जुगलकिशोर जी मुख्तार द्वारा शुद्ध की हुई एक प्रेस कापी मुझे पं० नाथूरामजी द्वारा प्राप्त हुई। प्रथम यह विचार हुआ कि इन्हीं लेखों में नये संस्करण के कुछ चुने हुए लेख सम्मिलित कर प्रथम संग्रह प्रकाशित कर दिया जाय। किन्तु सूक्ष्म विचार करने पर यह उचित न जँचा। किसी न किसी दृष्टिसे सभी लेख आवश्यक जँचने लगे व लेखों का पाठ नये संस्करण के अनुसार रखना आवश्यक प्रतीत हुआ। प्रस्तुत संग्रह में बड़े परिश्रम से पाठ शुद्ध कर उसे सर्वप्रकार मूलक अनुसार ही रक्खा है। पञ्चमाक्षर भी मूलके अनुसार हैं यद्यपि इससे कहीं कहीं शब्दों के रूप अपरिचित से हो गये हैं। किन्तु छापे की कठिनाई के कारण कनाड़ी भाषा के कुछ वर्णों का भिन्न स्वरूप यहाँ नहीं दर्शाया जा सका। उदाहरणार्थ, *e, é* को यहां 'ए', *o, ó* को 'ओ' *r, r* को 'र' व *l, l, l* को 'ल' से ही सूचित किया है। प्रूफ-शोधन में यथा-शक्ति कसर नहीं रक्खी गई किन्तु फिर भी कुछ छोटी मोटी अशुद्धियाँ आ ही गई हैं। उल्लेख के सुभीते के लिये लेखों की श्लोक संख्या दे दी गई है। यह बात पूर्व संस्करणों में नहीं है। जहाँ पर प्रथम और द्वितीय संस्करण के पाठोंमें कुछ विचारणीय भिन्नता ज्ञात हुई वहाँ दूसरा पाठ फुटनोटमें दे दिया गया है। बहुत अच्छा होता यदि लेखों का पूरा अनुवाद दिया जा सकता किन्तु इससे ग्रंथका आकार बहुत बढ़ जाता। अतएव जिन लेखों में थोड़ी भी कनाड़ी आई है उनका हिन्दी भावार्थ देकर ही संतोष करना पड़ा है। प्रथम १४४ लेख राइस साहब के क्रमानुसार रखकर पश्चात् का क्रम स्वतन्त्रतासे चालू रक्खा गया है। कोष्ठक में नये संस्करण के नम्बर दे दिये गये हैं जिससे आवश्यकता होने पर पहले व दूसरे संस्करण से प्रसंगोपयोगी

लेख का सुगमता से मिलान किया जा सकता है। नये संस्करण के पाँच लेख यहाँ दो ही लेखों ( ७५, ७६ )में आ गये हैं व लेख नं० ३९४ और ४०१-४०६ विशेषोपयोगी न होने के कारण छोड़ दिये गये हैं। इस प्रकार दस लेखों की जो बचत हुई उनके स्थान में एपीग्राफिया कर्नाटिका भाग ५ में से चुनकर दस लेख सम्मिलित कर दिये गये हैं।

भूमिका का वर्णनात्मक भाग सर्वथा रा० ब० नरसिंहाचार के वर्णन के आधार पर ही लिखा गया है किन्तु ऐतिहासिक व आचार्यों के सम्बन्ध का विवेचन बहुत कुछ स्वतंत्रता से किया गया है। गोम्मटेश्वर मूर्ति की स्थापना का समय निर्णय व शिलालेख नं० १ का विवेचन नरसिंहाचारजी के मतसे कुछ भिन्न हुआ है।

अन्त में हम मैसूर सरकार व उनके पुरातत्त्व विभाग के सुयोग्य अधिकारी भूतपूर्व राइस साहब व रा० ब० नरसिंहाचार के बहुत कृतज्ञ हैं। विना उनकी अपूर्व खोजों और अनुपम प्रयास के जैन इतिहास पर यह भारी प्रकाश पड़ना व इस पुस्तक का प्रकाशित होना दुःसाध्य था। हम माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला के मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी के विशेष रूपसे उपकृत हैं। आपके सस्नेह प्रेरण व अपार उत्साह के विना हमसे यह कार्य होना अशक्य था। आपने असाधारण विलम्ब होने पर भी धैर्य रक्खा जिससे ग्रंथ सुचारुरूपसे सम्पादित हो सका। पुस्तक के—विशेषतः कनाड़ी अंशों के—कम्पोजिंग व प्रूफ शोधन में प्रेसवालों की भारी कठिनाई और विलम्ब का साम्हना करना पड़ा है किन्तु उन्होंने योग्यतापूर्वक इस कार्य को निवाहा। इस हेतु इंडियन प्रेस, अलाहाबाद के मैनेजर हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका की अपूर्णताओं और त्रुटियों का ध्यान जितना स्वयं मुझे है उतना कदाचित् हमारे उदार हृदय पाठकों को न होगा; किन्तु विषयकी ओर विद्वानों का लक्ष्य दिलाने के हेतु इन त्रुटियों में पड़ना भी आवश्यक था। यदि इस पुस्तक से जैन ऐतिहासिक प्रश्नों के हल करने में कुछ भी सहायता पहुँची तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा। यदि पाठकों ने चाहा और भविष्य अनुकूल रहा तो दक्षिण भारत के जैन लेखोंका दूसरा संग्रह भी शीघ्र ही पाठकों की भेंट किया जायगा।

किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती,  
फाल्गुन शुक्ला ७, सं० १९८४. }

हीरालाल



# शुद्धिपत्र ( भूमिका )

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	५	बेल्लोल	बेल्लोल
७९	७	सल्लेखना	सल्लेखना
९८	१	१६२४	१२४
१००	१-२	माघनन्दि आचार्यों	माघनन्दि आदि आचार्यों
१०६	८	जगदेव के	जगदेव नामक
११२	१३	भटत	भरत
१२८	९	वीरट्ट	वीर
१२८	१०	पदावली	पदावली
१३९	१५	दयालपाल	दयापाल
१५२	४	पुष्पनान्द	पुष्पनन्दि

## ( लेख )

२१	१०	चौड़	चालुक्य
४८	१८	विष्णुवर्द्धनद्वारा	विष्णुवर्द्धनके मंत्री गंगराज
४९	२	विष्णुवर्द्धन नरेश	गंगराज मंत्री [ द्वारा
५५	१३	पद्यों	पंक्तियों
१४७	१४	एरड्ड कट्टे वस्ति	एरड्डकट्टे वस्तिमें
१५७	११	श्री चामुण्डराजं	श्रीचामुण्डराजं
१७५	१८	रामचल्ल नृप	राचमल्ल नृप
१९४	१३	कुलो...ङ्ग	कुलोत्तुङ्ग
२०७	२	पण्डिताय्यः	पण्डिताय्यः
२९२	अन्तिम	नं. ( ३५४ )	नं. ४३४ ( ३५४ )
३१६	१२	१८९	१९८
३१६	१३	१९७	१९९
३१९	१४	२१९ ( १२५ )	२१९ ( ११५ )
३२७	६	२५५ ( ४१३ )	२५५ ( ४१४ )
३७३	२	विजयराज्यय्य	विजयराजय्य
३७७	१	४७७ ( ३८६ )	४७६ ( ३८६ )
३८५	१०	वीं पंक्तिके पश्चात्	लेखांक ४९१ छूट गया है ।

## भूमिकामें प्रयुक्त संकेताक्षर

इ. ए.=इंडियन एन्टीकेरी ।

ए. इ.=एपीग्राफिआ इंडिका ।

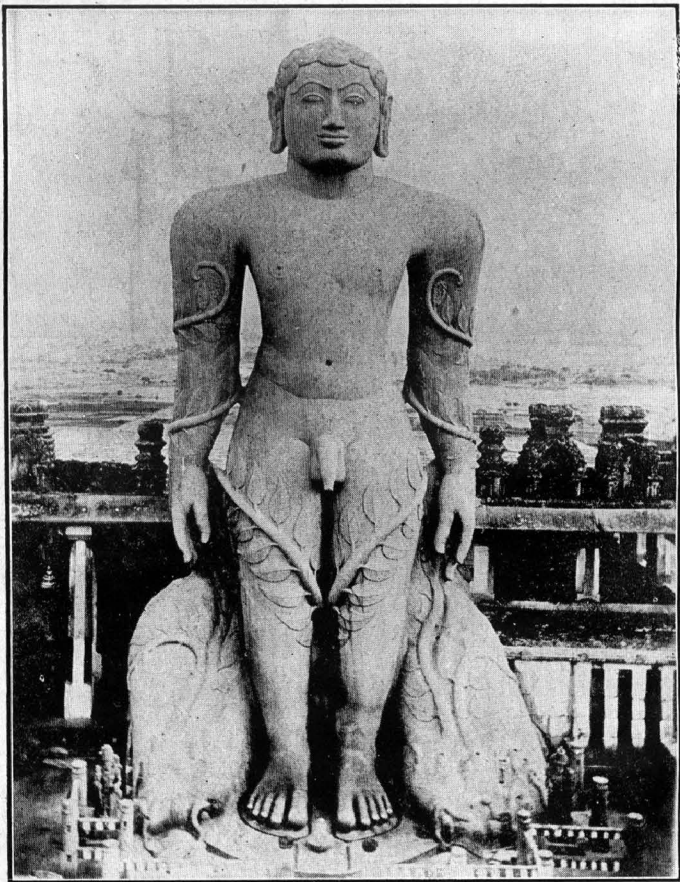
ए. क.=एपीग्राफिआ कर्नाटिका ।

मै. आ. रि.=मैसूर आर्किलाजीकल रिपोर्ट ।

सा. इ. इ.=साउथ इंडियन इन्स्ट्रक्शन्स ।







श्री गोम्मटेश ( बाहूबलि )  
( श्रवणबेलगोलकी मुख्य मूर्ति )

## श्रवणबेलगोल के स्मारक

समस्त दक्षिण भारत में ऐसे बहुत ही कम स्थान होंगे जो प्राकृतिक सौन्दर्य में, प्राचीन कारीगरी के नमूनों में व धार्मिक और ऐतिहासिक स्मृतियों में 'श्रवणबेलगुल' की बराबरी कर सके। आर्य जाति और विशेषतः जैन जाति की लगभग अढ़ाई हजार वर्ष की सभ्यता का इतिहास यहाँ के विशाल और रमणीक मन्दिरों, अत्यन्त प्राचीन गुफाओं, अनुपम उत्कृष्ट मूर्तियों व सैकड़ों शिलालेखों में अङ्कित पाया जाता है। यहाँ की भूमि अनेक मुनि-महात्माओं की तपस्या से पवित्र, अनेक धर्म-निष्ठ यात्रियों की भक्ति से पूजित और अनेक नरेशों और सम्राटों के दान से अलंकृत और इतिहास में प्रसिद्ध हुई है।

यहाँ की धार्मिकता इस स्थान के नाम में ही गर्भित है। 'श्रवण' ( श्रमण ) नाम जैन मुनि का है और 'बेलगुल' कनाड़ा भाषा के 'बेल' और 'गुल' दो शब्दों से बना है। 'बेल' का अर्थ धवल व श्वेत होता है और 'गुल' (गोल) 'कोल' का अप-भ्रंश है जिसका अर्थ सरोवर है। इस प्रकार श्रवणबेलगुल का अर्थ जैन मुनियों का धवल-सरोवर होता है। इसका तात्पर्य संभवतः उस रमणीक सरोवर से है जो ग्राम के बीचोंबीच अब भी इस स्थान की शोभा बढ़ा रहा है। सात-आठ सौ

वर्ष पुराने कुछ लेखों में भी इस स्थान का नाम श्वेत सरोवर, धवलसरः व धवलसरोवर पाये जाते हैं\* ।

‘बेलगोल’ नाम लगभग सातवीं शताब्दि के एक लेख में आता है,† और लगभग आठवीं शताब्दि के एक दूसरे लेख में इसका नाम ‘बेलगोल’ पाया जाता है‡ । इनसे पीछे के अनेक लेखों में बेलगुल, बेलगुल और बेलुगुल नाम पाये जाते हैं । एक लेख में ‘देवर बेलगोल’ नाम भी पाया जाता है§ जिसका अर्थ होता है देव का ( जिनदेव का ) बेलगोल । श्रवणबेलगोल के आसपास दो और बेलगोल नाम के स्थान हैं जो हल्ले-बेलगोल और कोडि-बेलगोल कहलाते हैं । गोम्मटेश्वर की विशाल मूर्ति के कारण इसका नाम गोम्मटपुर भी है+ । कुछ अर्वाचीन लेखों में दक्षिण काशी नाम से भी इस तीर्थ-स्थान का उल्लेख हुआ है x ।

श्रवणबेलगोल ग्राम मैसूर प्रान्त में हासन जिले के चेन्नरा-यपाटन तालुके में दो सुन्दर पहाड़ियों के बीच बसा हुआ है । इनमें से बड़ी पहाड़ी ( दोडुबेट्ट ) जो ग्राम से दक्षिण की ओर है ‘विन्ध्यगिरि’ कहलाती है । इसी पहाड़ी पर गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्ति स्थापित है जो कंसा की दूरी से यात्रियों की दृष्टि इस पवित्र स्थान की ओर आकर्षित करती है । इसके

\* देखो लेख नं० ५४ और १०८. † देखो लेख नं० १७-१८.

‡ देखो लेख नं० २४.

§ देखो लेख नं० १४०.

+ देखो लेख नं० १२८, १३७.

x देखो लेख नं० ३५५, ४८१.

अतिरिक्त कुछ बस्तियाँ ( जिन-मन्दिर ) भी इस पहाड़ी पर हैं । दूसरी छोटी पहाड़ी ( चिक्क बेट्ट ), जो ग्राम से उत्तर की ओर है, चन्द्रगिरि के नाम से प्रख्यात है । अधिकांश और प्राचीनतम लेख और बस्तियाँ इसी पहाड़ी पर हैं । कुछ मन्दिर, लेख आदि ग्राम की सीमा के भीतर हैं और शेष श्रवणबेलगोल के आस-पास के ग्रामों में हैं । अतः यहाँ के समस्त प्राचीन स्मारकों का वर्णन इन चार शीर्षकों में करना ठीक होगा—( १ ) चन्द्रगिरि, ( २ ) विन्ध्यगिरि, ( ३ ) श्रवण बेलगोल ( खास ) और ( ४ ) आस-पास के ग्राम । लेख नं० ३५४ के अनुसार श्रवणबेलगोल के समस्त मन्दिरों की संख्या ३२ है अर्थात् आठ विन्ध्यगिरि पर, सोलह चन्द्रगिरि पर और आठ ग्राम में । पर लेख में इन बस्तियों के नाम नहीं दिये गये ।

## चन्द्रगिरि

चन्द्रगिरि पर्वत समुद्र-तल से ३,०५२ फुट की ऊँचाई पर है । प्राचीनतम लेखों में इस पर्वत का नाम कटवप्र\* (संस्कृत) व कल्वप्पु या कल्वप्पु† ( कनाड़ी ) पाया जाता है । तीर्थ-गिरि और ऋषि-गिरि नाम से भी यह पहाड़ी प्रसिद्ध रही है‡ । इरुवेन्नह्मदेव मन्दिर को छोड़ इस पर्वत पर के शेष सब

\* देखो लेख नं० १, २७, २८, २९, ३३, १५२, १५६, १८६.

† देखो लेख नं० ३४, ३५, १६०, १६१.

‡ देखो लेख नं० ३४, ३५.

जिनालय एक दीवाल के घेरे के भीतर प्रतिष्ठित हैं। इस घेरे की उत्कृष्ट लम्बाई ५०० फुट और चौड़ाई २२५ फुट है। सब मन्दिर द्राविड़ी ढङ्ग के बने हुए हैं। इनमें से सबसे प्राचीन मन्दिर ईसा की आठवीं शताब्दि का प्रतीत होता है। घेरे के भीतर के मन्दिरों की संख्या १३ है। सभी मन्दिरों का ढङ्ग प्रायः एक सा ही है। सभी में साधारणतः एक गर्भगृह, एक **मुखनासि** खुला या घिरा हुआ, और एक **नवरङ्ग** रहता है। नीचे इस पहाड़ी के सब मन्दिरों व अन्य प्राचीन स्मारकों का सूक्ष्म वर्णन दिया जाता है:—

**१ पार्श्वनाथ वस्ति**—इस सुन्दर और विशाल मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई ५६ × २६ फुट है। दरवाजे भारी हैं। नवरङ्ग और सामने के दरवाजे के दोनों ओर बरामदे बने हुए हैं। बाहरी दीवालें स्तम्भों और छोटी-छोटी गुम्मतों से सजी हुई हैं। सप्तफणी नाग की छाया के नीचे भगवान् पार्श्वनाथ की १५ फुट ऊँची मनोज्ञ मूर्ति है। इस पर्वत पर यही मूर्ति सबसे विशाल है। सामने बृहत् और सुन्दर **मानस्तम्भ** खड़ा हुआ है जिसके चारों मुखों पर यक्ष-यक्षिणिओं की मूर्तियाँ खुदी हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस मन्दिर के निर्माण का ठीक समय क्या है। नवरङ्ग में एक बड़ा भारी लेख खुदा हुआ है (लेख नं० ५४) जिसमें शक सं० १०५० में मल्लिषेण-मलधारि देव के समाधि-मरण का संवाद है। पर मन्दिर के निर्माण के विषय की कोई वार्त्ता

लेख में नहीं पाई जाती। यहाँ के मानस्तम्भ के विषय में अनन्त कवि-कृत कनाड़ी भाषा के 'बेलगोलद गोम्मटेश्वर-चरित' नामक काव्य में कहा गया है कि उक्त मानस्तम्भ मैसूर के चिक्क देव-राज ओडेयर नामक राजा ( १६७२-१७०४ ईस्वी ) के समय में पुट्टैय नामक एक सेठ-द्वारा निर्माण कराया गया था। इसी काव्य के अनुसार मन्दिर की बाहरी दीवाल भी इसी सेठ ने बनवाई थी। यह काव्य लगभग डेढ़ सौ वर्ष पुराना है।

**२ कत्तले बस्ति—**चन्द्रगिरि पर्वत पर यह मन्दिर सबसे भारी है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई १२४ × ४० फुट है। गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा है। नवरङ्ग से सटा हुआ एक मुखमण्डप ( सभा-भवन ) भी है और एक बाहरी बरामदा भी। सामने के दरवाजे के अतिरिक्त इस सारे विशाल भवन में और कोई खिड़कियाँ व दरवाजे नहीं हैं। बाहरी ऊँची दीवाल के कारण उस एक सामने के दरवाजे से भी पूरा-पूरा प्रकाश नहीं जाने पाता। इसी से इस मन्दिर का नाम कत्तले बस्ति ( अन्धकार का मन्दिर ) पड़ा है। बरामदे में पद्मावती देवी की मूर्ति है। जान पड़ता है, इसी से इस मन्दिर का नाम पद्मावतीबस्ति भी पड़ गया है। मन्दिर पर कोई शिखर नहीं है, पर मठ में इस मन्दिर का जो मान-चित्र है उसमें शिखर दिखाया गया है। इससे जान पड़ता है कि किसी समय यह मन्दिर शिखर-बद्ध रहा है।

मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान् की छः फुट ऊँची पद्मासन मूर्ति बड़ी ही हृदय-प्राही है। दोनों बाजुओं पर दो चैरी-वाहक खड़े हैं। मन्दिर के ऊपर दूसरा खण्ड भी है पर वह जीर्ण अवस्था में होने के कारण बन्द कर दिया गया है। सभा-भवन के बाहरी ईशान कोण पर से ऊपर को सीढ़ियाँ गई हैं। कहा जाता है कि महोत्सव के समय ऊपर प्रतिष्ठित स्त्रियों के बैठने का प्रबन्ध रहता था। आदीश्वर भगवान् के सिंहासन पर जो लेख है ( नं० ६४ ) उससे ज्ञात होता है कि इस बस्ति को होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्ग-राज ने अपनी मातृश्री पोचम्बे के हेतु निर्माण कराया था। इससे इसका निर्माण-काल सन् १११८ के लगभग सिद्ध होता है। सभा-भवन पीछे निर्मापित हुआ जान पड़ता है। इसका जीर्णोद्धार लगभग ७० वर्ष हुए मैसूरराजकुल की दो महिलाओं—देवीरम्मणि और केम्पम्मणि—द्वारा हुआ है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस पर्वत पर केवल यही एक मन्दिर है जिसके गर्भगृह के चारों ओर प्रदक्षिणा भी है।

**३ चन्द्रगुप्त बस्ति**—यह चंद्रगिरि पर्वत पर सबसे छोटा जिनालय है, जिसकी लम्बाई-चौड़ाई केवल २२ × १६ फुट है। इसमें लगातार तीन कोठे हैं और सामने बरामदा है। बीच के कोठे में पार्श्वनाथ भगवान् की मूर्ति है और दायें-बायें वाले कोठों में क्रमशः पद्मावती और कुष्माण्डिनी देवी की मूर्तियाँ हैं। बरामदे के दाहने छोर पर धरणेन्द्रयज्ञ और

बायें छोर पर सर्वाङ्ग्यक्ष की मूर्तियाँ हैं। सभी मूर्तियाँ पद्मासन हैं। बरामदे के सम्मुख जो बहुत ही सुन्दर प्रतोली ( दरवाजा ) है वह पीछे निर्मापित हुआ है। इसकी कारीगरी देखने योग्य है। घेरे के पत्थरों पर जाली का काम, जिस पर श्रुतकेवलि भद्रबाहु और मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त के कुछ जीवन-दृश्य खुदे हुए हैं, अपूर्व कौशल का नमूना है। इसी जाली पर एक जगह 'दासेजः' ऐसा लेख है जो इस प्रतोली के बनानेवाले कारीगर का नाम प्रतीत होता है। इसी नाम के एक व्यक्ति ने लेख नं० ५० उत्कीर्ण किया है। यह लेख शक सं० १०६८ का है। यदि ये दोनों व्यक्ति एक ही हों तो यह प्रतोली शक सं० १०६८ के लगभग की बनी सिद्ध होती है। उपर्युक्त लेख की लिपि भी इसी समय की ज्ञात होती है। मन्दिर के दोनों बाजुओं के कोठों पर छोटे खुदावदार शिखर भी हैं। मध्य के कोठे के सम्मुख सभा-भवन में चित्र-पाल की स्थापना है जिनके सिंहासन पर कुछ लेख भी हैं। इस मन्दिर का नाम चन्द्रगुप्त-वस्ति पड़ने का कारण यह बतलाया जाता है कि इसे स्वयं महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य ने निर्माण कराया था। इसमें सन्देह नहीं कि इस मन्दिर की इमारत इस पर्वत के प्राचीनतम स्मारकों में से है।

**४ शान्तिनाथ वस्ति**—यह छोटा सा जिनालय २४×१६ फुट लम्बा-चौड़ा है। इसकी दीवारों और छत पर अभी तक चित्रकारी के निशान हैं। शान्तिनाथ



स्वामी की मूर्ति खड्गासन ११ फुट ऊँची है। मन्दिर के बनने का समय ज्ञात नहीं।

**५ सुपार्श्वनाथ बस्ति**—इस मन्दिर की लम्बाई-चौड़ाई २५ × १४ फुट है। सुपार्श्वनाथ स्वामी की पद्मासन मूर्ति तीन फुट ऊँची है, जिसके ऊपर सप्तफणी नाग की छाया हो रही है। मन्दिर के बनने के विषय की कोई वार्त्ता विदित नहीं है।

**६ चन्द्रप्रभ बस्ति**—इस मन्दिर का क्षेत्रफल ४२ × २५ फुट है। चन्द्रप्रभस्वामी की पद्मासन मूर्ति तीन फुट ऊँची है। सुखनासि में उक्त तीर्थंकर के यक्ष और यक्षिणी श्याम और ज्वालामालिनि विराजमान हैं। मन्दिर के सामने एक चट्टान पर 'शिवमारन बसदि' ( २५६ ) ऐसा लेख है। इस लेख की लिपि से ऐसा प्रतीत होता है कि सम्भवतः उसमें गङ्गनरेश शिवमार द्वितीय, श्रीपुरुष के पुत्र, का उल्लेख है। शिवमार के द्वारा जिस 'बसदि' ( बस्ति ) के बनने का लेख में उल्लेख है, सम्भव है वह यही चन्द्रप्रभ-बस्ति हो; क्योंकि इसके निकट अन्य और कोई बस्ति नहीं है। यदि यह अनुमान ठीक हो तो यह बस्ति सन् ८०० ईस्वी के लगभग की सिद्ध होती है।

**७ चामुण्डराय बस्ति**—यह विशाल भवन बनावट और सजावट में इस पर्वत पर सबसे सुन्दर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ६८ × ३६ फुट है। ऊपर दूसरा खण्ड और

एक सुन्दर गुम्मत भी है। इसमें नेमिनाथ स्वामी की पाँच फुट ऊँची मनोहर प्रतिमा है। गर्भगृह के दरवाजे पर दोनों बाजुओं पर क्रमशः यक्ष सर्वाङ्ग और यक्षिणी कुष्माण्डिनी की मूर्तियाँ हैं। बाहरी दोवाले स्तम्भों, आलों और उत्कीर्ण या उकेली हुई प्रतिमाओं से अलंकृत हैं। बाहरी दरवाजे की दोनों बाजुओं पर नीचे की ओर 'श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं' ( २२३ ) ऐसा लेख है। इससे स्पष्ट है कि यह बस्ति स्वयं गङ्गनरेश राचमल के मन्त्री चामुण्डराज ने निर्माण कराई थी और उसका समय ६८२ ईस्वी के लगभग होना चाहिये। पर नेमिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है ( ६६ ) कि गङ्गराज सेनापति के पुत्र 'एचण' ने त्रैलोक्यरञ्जन मन्दिर अपरनाम बोप्पणचैत्यालय निर्माण कराया था। यह लेख सन् ११३८ के लगभग का अनुमान किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एचण का निर्माण कराया हुआ चैत्यालय कोई अन्य रहा होगा जो अब ध्वंस हो गया है और यह नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमा वहीं से लाकर इस बस्ति में विराजमान करा दी गई है। मन्दिर के ऊपर के खण्ड में एक पार्श्वनाथ भगवान् की तीन फुट ऊँची मूर्ति है। उनके सिंहासन पर लेख है (नं० ६७) कि चामुण्डराज मन्त्री के पुत्र जिनदेव ने बेलगोल में एक जिन-भवन निर्माण कराया। अनुमान किया जाता है कि इस लेख का तात्पर्य मन्दिर के इसी ऊपरी भाग से है जो नीचे के खण्ड से कुछ पीछे बना होगा।

**८ शासन बस्ति**—मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख शासन नं० ५६) है, जान पड़ता है, उसी से इसका नाम शासनबस्ति पड़ा है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५५ X २६ फुट है। गर्भगृह में आदिनाथ भगवान् की पाँच फुट ऊँची मूर्ति है जिसके दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हुए हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी गोमुख और चक्रेश्वरी की प्रतिमाएँ हैं। बाहरी दीवारों में स्तम्भों और आलों की सजावट है। बीच-बीच में प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है (नं० ६५) कि इस मन्दिर को गङ्गराज सेनापति ने “इन्दिराकुलगृह” नाम से निर्माण कराया। दरवाजे पर के लेख में समाचार है कि शक सं० १०३६ फाल्गुण सुदि ५ को गङ्गराज ने ‘परम’ नाम के ग्राम का दान दिया। यह ग्राम उन्हें विष्णुवर्द्धन नरेश से मिला था। इसी समय से कुछ पूर्व मन्दिर बना होगा।

**९ मज्जिगणबस्ति**—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ३२ X १६ फुट है। इसमें अनन्तनाथ स्वामी की साढ़े तीन फुट ऊँची प्रतिमा है। बाहरी दीवाल के आसपास फूलदार चित्रकारी के पत्थरों का घेरा है। मन्दिर के नाम से अनुमान होता है कि उसे किसी मज्जिगण नाम के व्यक्ति ने निर्माण कराया होगा। पर समय निश्चित किये जाने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं।

**१० एरडुकट्टेबस्ति**—इस मन्दिर का नाम उसके दायीं और बायीं बाजू पर की सीढ़ियों पर से पड़ा है। इसकी

लम्बाई-चौड़ाई ५५ × २६ फुट है। आदिनाथ स्वामी की मूर्ति पाँच फुट ऊँची है और प्रभावली से अलंकृत है। दोनों ओर चौरी-वाहक खड़े हैं। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं। आदिनाथ स्वामी के सिंहासन पर लेख है ( नं० ६३ ) कि इस मन्दिर को गङ्गा-राज सेनापति की भार्या लक्ष्मी ने निर्माण कराया था।—

**११ सवतिगन्धवारणवस्ति**—होय्सलनरेश विष्णुवर्द्धन की रानी का नाम शान्तल देवी और उपनाम 'सवति-गन्धवारण' ( सौतों के लिए मत्त हाथी ) था। इसी पर से इस मन्दिर का यह नाम पड़ा है। साधारणतः इसे गन्धवारण-वस्ति कहते हैं। मन्दिर विशाल है जिसकी लम्बाई-चौड़ाई ६६ × ३५ फुट है। शान्तिनाथ स्वामी की मूर्ति प्रभावली-संयुक्त पाँच फुट ऊँची है। दोनों ओर दो चौरी-वाहक खड़े हैं। सुखनासि में यक्ष यक्षिणी किम्पुरुष और महामानसि की मूर्तियाँ हैं। गर्भगृह के ऊपर एक अच्छी गुम्फ है। बाहरी दीवालें स्तम्भों से अलंकृत हैं। दरवाजे पर के लेख ( नं० ५६ ) और शान्तिनाथ स्वामी के सिंहासन पर के लेख ( नं० ६२ ) से विदित होता है कि इस वस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश की रानी शान्तल देवी ने शक सं० १०४४ में निर्माण कराया था।

**१२ तेरिनवस्ति**—इस मन्दिर के सम्मुख एक रथ ( तेरु ) के आकार की इमारत बनी हुई है। इसी से इसका

नाम तेरिनवस्ति पड़ा है। इसमें बाहुबलि स्वामी की मूर्ति है। इसी से इसे बाहुबलि वस्ति भी कहते हैं। इसकी लम्बाई चौड़ाई ७० X २६ फुट है। बाहुबलि स्वामी की मूर्ति पाँच फुट ऊँची है। सन्मुख के रथाकार मन्दिर पर चारों ओर बावन जिन-मूर्तियाँ खुदी हुई हैं। मन्दिर दो प्रकार के होते हैं नन्दी-श्वर और मेरु। उक्त रथाकार मन्दिर नन्दीश्वर प्रकार का कहा जाता है। इस पर के लेख (नं० १३७ शक सं० १०३८) से विदित होता है कि इस मन्दिर और वस्ति को विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के पोय्सल सेठ की माता माचिकब्बे और नेमि सेठ की माता शान्तिकब्बे ने निर्माण कराया था।

**१३ शान्तीश्वर वस्ति**—इसकी लम्बाई-चौड़ाई ५६ X ३० फुट है। यह मन्दिर ऊँची सतह पर बना हुआ है। इसकी गुम्फट पर अच्छी कारीगरी है। गर्भगृह के बाहर सुखनासि में यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं। पीछे की दीवाल के मध्य-भाग में एक आला है जिसमें एक खड्गासन जिन-मूर्ति खुदी हुई है। इस मन्दिर को कब और किसने निर्माण कराया, यह निश्चय नहीं हो सका है।

**१४ कूगेब्रह्मदेवस्तम्भ**—यह विशाल स्तम्भ चन्द्रगिरि पर्वत पर के घेरे के दक्षिणी दरवाजे पर प्रतिष्ठित है। इसके शिखर पर पूर्वमुखी ब्रह्मदेव की छोटी सी पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। इसकी पीठिका आठों दिशाओं में आठ हस्तियों पर प्रतिष्ठित रही है पर अब केवल थोड़े से ही हाथी

रह गये हैं। स्तम्भ के चारों ओर एक लेख है ( नं० ३८ ) ( ५८ ) जो गङ्गनरेश मारसिंह द्वितीय की मृत्यु का स्मारक है। इस राजा की मृत्यु सन् ६७४ ईस्वी में हुई थी। अतः यह स्तम्भ इससे पहले का सिद्ध होता है।

**१५ महानवमी मण्डप**—कतले बस्ति के गर्भगृह के दक्षिण की ओर दो सुन्दर पूर्व-मुख चतुस्तम्भ मण्डप बने हुए हैं। दोनों के मध्य में एक एक लेखयुक्त स्तम्भ है। उत्तर की ओर के मण्डप के स्तम्भ की बनावट बहुत सुन्दर है। उसका गुम्फटाकार शिखर बहुत ही दर्शनीय है। उस पर के लेख नं० ४२ ( ६६ ) में नयकीर्त्ति आचार्य के समाधि-मरण का संवाद है जो सन् ११७६ में हुआ। यह स्तम्भ उनके एक श्रावक शिष्य नागदेव मन्त्री ने स्थापित कराया था। ऐसे ही अन्य अनेक मण्डप इस पर्वत पर विद्यमान हैं जिनमें लेख-युक्त स्तम्भ प्रतिष्ठित हैं। एक चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर, एक एरडुकट्टे बस्ति से पूर्व की ओर और दो तेरिन बस्ति से दक्षिण की ओर पाये जाते हैं।

**१६ भरतेश्वर**—महानवमी मण्डप से पश्चिम की ओर एक इमारत है जो अब रसोईघर के काम में आती है। इस इमारत के समीप एक नव फुट ऊँची पश्चिममुख मूर्ति है जो बाहुबलि के भ्राता भरतेश्वर की बतलाई जाती है। मूर्ति एक भारी चट्टान में घुटनों तक खोदी जाकर अपूर्ण छोड़ दी गई है। इस मूर्ति से थोड़ी दूर पर जो शिलालेख नं० २५ ( ६१ ) है

उससे अनुमान होता है कि वह किसी अरिट्टोनेमि नाम के कारीगर की बनाई हुई है। पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता क्योंकि लेख का जितना भाग पड़ा जाता है उससे केवल इतना ही अर्थ निकलता कि 'गुरु अरिट्टोनेमि' ने बनवाया। पर क्या बनवाया यह कुछ स्पष्ट नहीं है। अरिट्टोनेमि अरिष्टनेमि का अपभ्रंश है। लेख ईसा की नवमी शताब्दि का अनुमान किया जाता है।

**१७ इरुवे ब्रह्मदेव मन्दिर**—जैसा कि ऊपर कह आये हैं, केवल यही एक मन्दिर इस पहाड़ी पर ऐसा है जो घेरे के बाहर है। यह घेरे के उत्तर-दरवाजे के उत्तर में प्रतिष्ठित है। यहाँ ब्रह्मदेव की मूर्ति<sup>८</sup> विराजमान है। सम्मुख एक बृहत् चट्टान है जिस पर जिन-प्रतिमाएँ, हाथी, स्तम्भ आदि खुदे हुए हैं। कहीं-कहीं खोदनेवालों के नाम भी दिये हुए हैं। मन्दिर के दरवाजे पर जो लेख (नं० २३५) है उसकी लिपि से वह दसवीं शताब्दि के मध्य-भाग का अनुमान किया जाता है।

**१८ कञ्चिन दोणो**—इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर से वायव्य की ओर एक चौकोर घेरे के भीतर चट्टान में एक कुण्ड है। यही कञ्चिन दोणो कहलाता है। 'दोणो' का अर्थ एक प्राकृतिक कुण्ड होता है और 'कञ्चिन' का एक धातु जिससे घण्टा आदि बनते हैं। कहा नहीं जा सकता कि इस कुण्ड का यह नाम क्यों पड़ा। यहाँ कई छोटे-छोटे लेख हैं। एक लेख है 'मुरुकल्लंकदम्ब तरसि' (२८२) अर्थात् कदम्ब की आज्ञा

से तीन शिलाएँ यहाँ लाई गईं । इनमें की दो शिलाएँ अब भी यहाँ विद्यमान हैं और तीसरी शिला टूट-फूट गई है । कुण्ड के भीतर एक स्तम्भ है जिस पर यह लेख है—‘मानभ आनन्द-संवच्छदल्लि कट्टिसिद दोणेयु’ (२४४) अर्थात् इस कुण्ड को मानभ ने आनन्द-संवत्सर में बनवाया था । यह संवत् सम्भवतः शक सं० १११६ होगा ।

**१८ लक्किदोणे**—यह दूसरा कुण्ड घेरे से पूर्व की ओर है । सम्भवतः यह किसी लक्कि नाम की स्त्री-द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण लक्किदोणे नाम से प्रसिद्ध हुआ है । कुण्ड से पश्चिम की ओर एक चट्टान है जिस पर कोई तीस छोटे-छोटे लेख हैं जिनमें प्रायः यात्रियों के नाम अङ्कित हैं । इनमें कई जैन आचार्यों, कवियों और राजपुरुषों के नाम हैं ( नं० २८४-३१४ ) ।

**२० भद्रबाहु की गुफा**—कहा जाता है कि अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु स्वामी ने इसी गुफा में देहोत्सर्ग किया था । उनके चरण इस गुफा में अङ्कित हैं और पूजे जाते हैं । गुफा में एक लेख भी पाया गया था (नं० ७१ (१६६) पर यह लेख अब गुफा में नहीं है । हाल में गुफा के सन्मुख एक भहा सा दरवाजा बनवा दिया गया है ।

**२१ चामुण्डराय की शिला**—चन्द्रगिरि पर्वत के नीचे एक चट्टान है जो उक्त नाम से प्रसिद्ध है । कहा जाता है कि चामुण्डराय ने इसी शिला पर खड़े होकर विन्ध्यगिरि पर्वत की



और बाण चलाया था जिससे गोम्मटेश्वर की विशालमूर्ति प्रकट हुई थी। शिला पर कई जैन गुरुओं के चित्र हैं जिनके नाम भी अङ्कित हैं।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के अधिकांश प्राचीनतम शिलालेख या तो पार्श्वनाथ बस्ति के दक्षिण की शिला पर उत्कीर्ण हैं या उस शिला पर जो शासन बस्ति और चामुण्डराय बस्ति के सन्मुख है।

## विन्ध्यगिरि

यह पर्वत दोडुबेट्ट अर्थात् बड़ी पहाड़ी के नाम से भी प्रख्यात है। यह समुद्रतल से ३,३४७ फुट और नीचे के मैदान से लगभग ४७० फुट ऊँचा है। कभी-कभी इन्द्रगिरि नाम से भी इस पर्वत का सम्बोधन किया जाता है। पर्वत के शिखर पर पहुँचने के लिये नीचे से लगाकर कोई ५०० सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। ऊपर समतल चौक है जो एक छोटे घेरे से घिरा हुआ है। इस घेरे में बीच-बीच में तलघर हैं जिनमें जिन-प्रतिबिम्ब विराजमान हैं। इस घेरे के चारों ओर कुछ दूरी पर एक भारी दीवाल है जो कहीं-कहीं प्राकृतिक शिलाओं से बनी हुई है। चौक के ठीक बीचों-बीच गोम्मटेश्वर की वह विशाल खड्गासन मूर्ति है, जो अपनी दिव्यता से उस समस्त भूभाग को अलङ्कृत और पवित्र कर रही है।

**१ गोम्मटेश्वर**—यह नग्न, उत्तर-मुख, खड्गासन मूर्ति समस्त संसार की आश्चर्यकारी वस्तुओं में से है। सिर के बाल घुँघराले, कान बड़े और लम्बे, वक्षस्थल चौड़ा, विशाल बाहु नीचे को लटकते हुए और कटि किञ्चित् क्षीण है। मुख पर अपूर्व कान्ति और अगाध शान्ति है। घुटनों से कुछ ऊपर तक बमीठे दिखाये गये हैं जिनसे सर्प निकल रहे हैं। दोनों पैरों और बाहुओं से माधवी लता लिपट रही है तिस पर भी मुख पर अटल ध्यान-मुद्रा बिराजमान है। मूर्ति क्या है मानो तपस्या का अवतार ही है। दृश्य बड़ा ही भव्य और प्रभावोत्पादक है। सिंहासन एक प्रफुल्ल कमल के आकार का बनाया गया है। इस कमल पर बायें चरण के नीचे तीन फुट चार इंच का माप खुदा हुआ है। कहा जाता है कि इसको अठारह से गुणित करने पर मूर्ति की ऊँचाई निकलती है। जो हो, पर मूर्तिकार ने किसी प्रकार के माप के लिये ही इसे खोदा होगा। निस्सन्देह मूर्तिकार ने अपने इस अपूर्व प्रयास में अनुपम सफलता प्राप्त की है। एशिया खण्ड ही नहीं समस्त भूतल का विचरण कर आइये, गोम्मटेश्वर की तुलना करने-वाली मूर्ति आपको क्वचित् ही दृष्टिगोचर होगी। बड़े-बड़े पश्चिमीय विद्वानों के मस्तिष्क इस मूर्ति की कारीगरी पर चकर खा गये हैं। इतने भारी और प्रबल पाषाण पर सिद्धहस्त कारीगर ने जिस कौशल से अपनी छैनी चलाई है उससे भारत के मूर्तिकारों का मस्तक सदैव गर्व से ऊँचा उठा रहेगा। यह

ख

सम्भव नहीं जान पड़ता कि ५७ फुट की मूर्ति खोद निकालने के योग्य पाषाण कहीं अन्यत्र से लाकर उस ऊँची पहाड़ी पर प्रतिष्ठित किया जा सका होगा। इससे यही ठीक अनुमान होता है कि उसी स्थान पर किसी प्रकृतिप्रदत्त स्तम्भाकार चट्टान को काटकर इस मूर्ति का आविष्कार किया गया है। कम से कम एक हजार वर्ष से यह प्रतिमा सूर्य, मेघ, वायु आदि प्रकृति-देवी की अमोघ शक्तियों से बातें कर रही है पर अब तक उसमें किसी प्रकार की थोड़ी भी चर्ति नहीं हुई। मानो मूर्तिकार ने उसे आज ही उद्घाटित की हो।

एक पहाड़ी के ऊपर प्रतिष्ठित इतनी भारी मूर्ति को मापना भी कोई सरल कार्य नहीं है। इसी से उसकी ऊँचाई के सम्बन्ध में मतभेद है। बुचानन साहब ने उसकी ऊँचाई ७० फुट ३ इञ्च और सर अर्थर वेल्सली ने ६० फुट ३ इञ्च दी है। सन् १८६५ में मैसूर के चीफ कमिश्नर मि० बैरिंग ने मूर्ति का ठीक ठीक माप कराकर उसकी ऊँचाई ५७ फुट दर्ज की थी। सन् १८७१ ईस्वी में मस्तकाभिषेक के समय कुछ सरकारी अफसरों ने मूर्ति का माप लिया था जिससे निम्नलिखित माप मिले :—

	फुट इञ्च
चरण से कर्ण के अधोभाग तक	५०—०
कर्ण के अधोभाग से मस्तक तक	
( लगभग )	६—६

	फुट इञ्च
चरण की लम्बाई	८—०
चरण के अग्रभाग की चौड़ाई	४—६
चरण का अंगुष्ठ	२—८
पादपृष्ठ की ऊपर की गुलाई	६—४
जंघा की अर्ध गुलाई	१०—०
नितम्ब से कर्ण तक	२४—६
पृष्ठ-अस्थि के अधोभाग से कर्ण तक	२०—०
नाभि के नीचे उदर की चौड़ाई	१३—०
कटि की चौड़ाई	१०—०
कटि और टेहुनी से कर्ण तक	१७—०
बाहुमूल से कर्ण तक	७—०
वक्षस्थल की चौड़ाई	२६—०
ग्रीवा के अधोभाग से कर्ण तक	२—६
तर्जनी की लम्बाई	३—६
मध्यमा की लम्बाई	५—३
अनामिका की लम्बाई	४—७
कनिष्ठिका की लम्बाई	२—८

लगभग एक सौ वर्ष पुराने 'सरसजनचिन्तामणि' काव्य के कर्ता कविचक्रवर्ति शान्तराज पण्डित के बनाये हुए सोलह श्लोक मिले हैं जिनमें गोम्मटेश्वर की मूर्ति के माप हस्त और अंगुलों में दिये हैं। अन्तिम श्लोक से पता चलता है कि

मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय की आज्ञा से कवि ने स्वयं  
ये माप लिये थे। ये श्लोक नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

जयति बेलुगुल-श्री-गोमटेशोस्य मूर्त्तेः

परिमितमधुनाहं वच्मि सर्वत्र हर्षात् ।

स्वसमयजनानां भावनादेशनार्थं

परसमयजनानामद्भुतार्थं च साक्षात् ॥ १ ॥

पादान्मस्तकमध्यदेशचरमं पादार्ध-युद्धा तु षट्-

त्रिंशद्दहस्तमितोच्छ्रूयोस्ति हि यथा श्रीहोर्बलि-स्वामिनः ।

पादाद्विंशतिहस्तसन्निभमितिर्नाभ्यन्तमस्युच्छ्रयः

पादार्धान्वितषोडशोच्छ्रयभरो नाभेशिशरोन्तं तथा ॥ २ ॥

चुबुकन्मूर्ध-पर्यन्तं श्रीमद्बाहुबलीशिनः ।

अस्यङ्गुलि-त्रयी-युक्त-हस्त-षट्कप्रमोच्छ्रयः ॥ ३ ॥

पादत्रयाधिक्ययुक्त-द्विहस्तप्रमितोच्छ्रयः ।

प्रत्येकं कर्णयोरस्ति भगवद्दोर्बलीशिनः ॥ ४ ॥

पश्चाद्भुजबलीशस्य तिर्यग्भागेस्ति कर्णयोः ।

अष्ट-हस्त-प्रमोच्छ्रायः प्रमाकृद्धिः प्रकीर्तितः ॥ ५ ॥

सौनन्देः परितः कण्ठं तिर्यगस्ति मनोहरम् ।

पाद-त्रयाधिक-दश-हस्त-प्रमित-दीर्घता ॥ ६ ॥

सुनन्दा तनुजस्यास्ति पुरस्तात्कण्ठ-सूच्छ्रयः ।

पाद-त्रयाधिक्य-युक्त-हस्त-प्रमिति-निश्चितः ॥ ७ ॥

भगवद्गोमटेशस्यांशयोरन्तरमस्य वै ।

तिर्यगायतिरस्यैव खलु षोडश-हस्त-मा ॥ ८ ॥

वक्षश्चूचुक-संलक्ष्य रेखाद्वितय-दीर्घता ।  
 नवाङ्गुलाधिक्ययुक्तचतुर्हस्तप्रमेशितुः ॥ ८ ॥  
 परितो मध्यमेतस्य परीतत्वेन विस्तृतः ।  
 अस्ति विंशतिहस्तानां प्रमाणं दोर्बलीशिनः ॥ १० ॥  
 मध्यमाङ्गुलिपर्यन्तं स्कन्धाद्दीर्घत्वमीशितुः ।  
 बाहु-युग्मस्य पादाभ्यां युताष्टादशहस्तमा ॥ ११ ॥  
 मणिबन्धस्यास्य तिर्यक्परीतत्वात्समन्ततः ।  
 द्विपादाधिक-षड्-हस्त-प्रमाणं परिगण्यते ॥ १२ ॥  
 हस्ताङ्गुष्ठोच्छ्रयोस्त्यस्यैकाङ्गुष्ठात्पद्द्विहस्त-मा ।  
 लक्ष्यते गोमटेशस्य जगदाश्चर्यकारिणः ॥ १३ ॥  
 पादाङ्गुष्ठस्यास्य दैर्घ्यं द्विपादाधिकता-युजः ।  
 चतुष्टयस्य हस्तानां प्रमाणमिति निश्चितम् ॥ १४ ॥  
 दिव्य-श्रीपाद-दीर्घत्वं भगवद्गोमटेशिनः ।  
 सैकाङ्गुल-चतुर्हस्त-प्रमाणमिति वर्णितम् ॥ १५ ॥  
 श्रीमत्कृष्णनृपालकारितमहासंसेक-पूजोत्सवे  
 शिष्ट्या तस्य कटाक्षरोचिरमृतस्नातेन शान्तेन वै ।  
 आनीतं कविचक्रवर्तुर्भूतर-श्रीशान्तराजेन तद्  
 वीक्ष्येत्यं परिमाणलक्षणमिहाकारीदमेतद्विभोः ॥ १६ ॥  
 इसका निम्नलिखित तात्पर्य निकलता है:—

हस्त अंगुल

चरण से महत्तक तक

३६½—०

चरण से नाभि तक

२०—०

	हस्त अंगुल
नाभि से मस्तक तक	१६ $\frac{1}{4}$ —०
चिबुक से मस्तक तक	६—३
कर्ण की लम्बाई	२ $\frac{3}{4}$ —०
एक कर्ण से दूसरे कर्ण तक	८—०
गले की गुलाई	१० $\frac{3}{4}$ —०
गले की लम्बाई	१ $\frac{3}{4}$ —०
एक कन्धे से दूसरे कन्धे तक	१६—०
स्तन-मुख की गोल रेखा	४—०
कटि की गुलाई	२०—०
कन्धे से मध्यमा अंगुली तक	१८ $\frac{1}{4}$ —०
कलाई की गुलाई	६ $\frac{1}{4}$ —०
अंगुष्ठ की लम्बाई	२ $\frac{1}{4}$ —०
चरण का अंगुष्ठ	( ? ) ४ $\frac{1}{4}$ —०
चरण की लम्बाई	४—१

ये माप उपर्युक्त मापों से मिलते हैं। केवल चरण के अंगुष्ठ की लम्बाई में त्रुटि ज्ञात होती है।

गोम्मट स्वामी कौन थे और उनकी मूर्ति यहाँ किसके द्वारा, किस प्रकार, प्रतिष्ठित की गई इसका कुछ विवरण लेख नं० ८५ (२३४) में पाया जाता है। यह लेख एक छोटा सा कनाड़ी काव्य है जो सन् ११८० ईस्वी के लगभग बोप्पण कवि-द्वारा रचा गया है। इसके अनुसार गोम्मट पुरुदेव अपर

नाम ऋषभदेव प्रथम तीर्थङ्कर के पुत्र थे । इनका नाम बाहुबलि या भुजबलि भी था । इनके ज्येष्ठ भ्राता भरत थे । ऋषभदेव के दीक्षा धारण करने के पश्चात् भरत और बाहुबलि दोनों भ्राताओं में राज्य के लिये युद्ध हुआ जिसमें बाहुबलि की विजय हुई । पर संसार की गति से विरक्त हो उन्होंने राज्य अपने ज्येष्ठ भ्राता भरत को दे दिया और आप तपस्या के हेतु वन को चले गये । थोड़े ही काल में घोर तपस्या कर उन्होंने केवल ज्ञान प्राप्त किया । भरत ने, जो अब चक्रवर्ति राजा हो गये थे, पौदनपुर में उनकी शरीराकृति के अनुरूप ५२५ धनुष की प्रतिमा स्थापित कराई । समयानुसार मूर्ति के आसपास का प्रदेश कुक्कुट-सर्पों से व्याप्त हो गया जिससे उस मूर्ति का नाम कुक्कुटेश्वर पड़ गया । धीरे-धीरे वह मूर्ति लुप्त हो गई और उसके दर्शन केवल दीक्षित व्यक्तियों को मंत्रशक्ति से प्राप्य हो गये । चामुण्डराय मंत्री ने इस मूर्ति का वर्णन सुना और उन्हें उसके दर्शन करने की अभिलाषा हुई । पर पौदनपुर की यात्रा अशक्य जान उन्होंने उसी के समान स्वयं मूर्ति स्थापित कराने का विचार किया और तदनुसार इस मूर्ति का निर्माण कराया । इस वार्ता के पश्चात् लेख में मूर्ति का वर्णन है । यही वर्णन थोड़े-बहुत हेर-फेर के साथ भुजबलिशतक, भुजबलि-चरित, गोम्मटेश्वर-चरित, राजावलिकथा और स्थलपुराण में भी पाया जाता है । इनमें से पहले काव्य को छोड़ शेष सब कनाड़ी भाषा में हैं । ये सब ग्रंथ १६वीं



शताब्दि से लगाकर १-६वीं शताब्दि तक के हैं। भुजबलि-चरित में वर्णन है कि आदिनाथ के दो पुत्र थे; भरत, रानी यशस्वती से और भुजबलि, रानी सुनन्दा से। भुजबलि का विवाह इच्छा देवी से हुआ था और वे पौदनपुर के राजा थे। कुछ मतभेद के कारण दोनों भाइयों में युद्ध हुआ और भरत को पराजय हुई। पर भुजबलि राज्य त्यागकर मुनि हो गये। भरत ने ५२५ मारु\* प्रमाण भुजबलि की स्वर्णमूर्ति बनवाकर स्थापित कराई। कुक्कुट सर्पों से व्याप्त हो जाने के कारण केवल देव ही इस मूर्ति के दर्शन कर पाते थे। एक जैनाचार्य जिनसेन दक्षिण मधुरा को गये और उन्होंने इस मूर्ति का वर्णन चामुण्डराय की माता कालल देवी को सुनाया। उसे सुनकर मातश्री ने प्रण किया कि जब तक गोम्मट देव के दर्शन न कर लूँगी, दूध नहीं खाऊँगी। जब अपनी पत्नी अजितादेवी के मुख से यह संवाद चामुण्डराय ने सुना तब वे अपनी माता को लेकर पौदनपुर की यात्रा को निकल पड़े। मार्ग में उन्होंने श्रवणबेल्लोल की चन्द्रगुप्त बस्ती में पार्श्वनाथ भगवान् के दर्शन किये और भद्रबाहु के चरणों की वन्दना की। उसी रात्रि को पद्मावती देवी ने उन्हें स्वप्न दिया कि कुक्कुट सर्पों के कारण पौदनपुर की बन्दना तुम्हारे लिये असम्भव है। पर तुम्हारी

---

\* दोनों बाहुओं को फैलाने से एक हाथ की अंगुली के अग्रभाग से लगाकर दूसरे हाथ की अंगुली के अग्रभाग तक जितना अन्तर होता है उसे 'मारु' कहते हैं।

भक्ति से प्रसन्न होकर गोम्मटेश्वर तुम्हें यहीं बड़ी पहाड़ी (विन्ध्य-गिरि) पर दर्शन देंगे। तुम शुद्ध होकर इस छोटी पहाड़ी (चन्द्रगिरि) पर से एक स्वर्ण बाण छोड़ो, और भगवान् के दर्शन करो। मात श्री को भी ऐसा ही स्वप्न हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल ही चामुण्डराय ने स्नान-पूजन से शुद्ध हो छोटी पहाड़ी की एक शिला पर अवस्थित होकर, दक्षिण दिशा को मुख करके एक स्वर्ण बाण छोड़ा जो बड़ी पहाड़ी के मस्तक पर की शिला में जाकर लगा। बाण के लगते ही गोम्मट स्वामी का मस्तक दृष्टिगोचर हुआ। फिर जैनगुरु ने हीरे की छैनी और मोती के हथौड़े से ज्योंही शिला पर प्रहार किया त्योंही शिला के पाषाण-खण्ड अलग जा गिरे और गोम्मटेश्वर की पूरी प्रतिमा निकल आई। फिर कारीगरों से चामुण्डराय ने दक्षिण बाजू पर ब्रह्मदेव सहित पाताल गम्ब, सन्मुख ब्रह्मदेव-सहित यक्ष-गम्ब, ऊपर का खण्ड, ब्रह्मसहित त्यागद कम्ब, अखण्ड बागिलु नामक दरवाजा और यत्र-तत्र सीढ़ियाँ बनवाईं।

इसके पश्चात् अभिषेक की तैयारी हुई। पर जितना भी दुग्ध चामुण्डराय ने एकत्रित कराया उससे मूर्ति की जंघा से नीचे के स्नान नहीं हो सके। चामुण्डराय ने घबराकर गुरु से सलाह ली। उन्होंने आदेश दिया कि जो दुग्ध एक वृद्धा स्त्री अपनी 'गुल्लकायि' में लाई है उससे स्नान कराओ। आश्चर्य कि उस अत्यल्प दुग्ध की धारा गोम्मटेश के मस्तक पर छोड़ते ही समस्त मूर्ति के स्नान हो गये और सारी पहाड़ी पर दुग्ध

बह निकला । उस वृद्धा स्त्री का नाम इस समय से 'गुल्लका-यज्जि' पड़ गया । इसके पश्चात् चामुण्डराय ने पहाड़ी के नीचे एक नगर बसाया और मूर्ति के लिये ६६ हजार 'वरह' की आय के गाँव ( ६८ के नाम दिये हुए हैं ) लगा दिये । फिर उन्होंने अपने गुरु अजितसेन से इस नगर के लिये कोई उपयुक्त नाम पूछा । गुरु ने कहा 'क्योंकि उस वृद्धा स्त्री के गुल्लकायि के दुग्ध से अभिषेक हुआ है, अतः इस नगर का नाम बेलगोल ठीक होगा । तदनुसार नगर का नाम बेलगोल रक्खा गया और उस 'गुल्लकायज्जि' स्त्री की मूर्ति भी स्थापित की गई । इस प्रकार इस अभिनव पौदनपुर की स्थापना कर चामुण्डराय ने कीर्त्ति प्राप्त की । इस काव्य के कर्त्ता पञ्चबाण का नाम शक सं० १५५६ के एक लेख नं० ८४ (२५०) में आता है ।

अन्य ग्रन्थों में उपर्युक्त विवरण से जो विशेषताएँ हैं वे संक्षेप में इस प्रकार हैं । दोड्डय कवि-कृत 'भुजबलिशतक' में कहा गया है कि सिंहनन्दि आचार्य के शिष्य राजमल्ल द्राविड देश में मधुरा के राजा थे । ब्रह्मचत्र-शिखामणि चामुण्डराय, सिंहनन्दि आचार्य के प्रशिष्य व अजितसेन और नेमिचन्द्र के शिष्य, उनके मन्त्री थे । राजमल्ल को किसी व्यापारी द्वारा पौदनपुर में कर्केतन-पाषाण-निर्मित गोम्मटेश्वर की मूर्ति का समाचार मिला । इसे सुनकर चामुण्डराय अपनी माता और गुरु नेमिचन्द्र के साथ राजा की आज्ञा ले, यात्रा को

निकले । जब उन्होंने श्रवणबेलगोल की छोटी पहाड़ी पर से स्वर्ण बाण चलाये तब बड़ी पहाड़ी पर पौदनपुर के गोम्मटेश्वर भगवान् प्रकट हुए । चामुण्डराय ने भगवान् के हेतु कई ग्रामों का दान दिया । उनकी धर्म-शीलता से प्रसन्न हो राजमल्ल ने उन्हें राय की उपाधि दी । १८ वीं शताब्दि के बने हुए अनन्त कवि-कृत **गोम्मटेश्वरचरित** में यह वार्ता है कि चामुण्डराय के स्वर्ण बाण चलाने से गोम्मट की जो मूर्ति प्रकट हुई उसे उन्होंने मूर्तिकारों से सुघटित कराकर अभिषिक्त और प्रतिष्ठित कराई । **स्थलपुराण** में समाचार है कि पौदनपुर की यात्रा करते समय चामुण्डराय ने सुना कि बेलगोल में अठारह धनुष प्रमाण एक गोम्मटेश्वर की मूर्ति है । उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा कराई और उसे एक लाख छयान्नवे हजार वरह की आय के ग्रामों का दान किया । चामुण्डराय को अपनी अपूर्व सफलता पर जो गर्व हुआ उसे खर्व करने के हेतु पद्मावती देवी गुल्लकायजि नामक वृद्धा स्त्री के वेष में अभिषेक के अवसर पर उपस्थित हुई थीं । **राजावलिकथा** के अनुसार गुल्लकायजि कूष्माण्डिनी देवी का अवतार थी । इस ग्रंथ में यह भी कहा गया है कि प्राचीन काल में राम, रावण और रावण की रानी मन्दोदरि ने बेलगोल के गोम्मटेश्वर की वन्दना की थी । सत्र-हवीं शताब्दि के चिदानन्दकवि-कृत **मुनिवंशाभ्युदय** काव्य में कथन है कि गोम्मट और पार्श्वनाथ की मूर्तियों को राम और सीता लङ्का से लाये थे और उन्हें क्रमशः बड़ी और छोटी

पहाड़ी पर विराजमान कर उनको पूजन-अर्चन किया करते थे । जाते समय वे इन मूर्तियों को उठाने में असमर्थ हुए, इसी से वे उन्हें उसी स्थान पर छोड़कर चले गये ।

उपर्युल्लिखित प्रमाणों से यह निर्विवादतः सिद्ध होता है कि गोम्मटेश्वर की स्थापना चामुण्डराय द्वारा हुई है । शिलालेख नं० ८५ ( २३४ ), १०५ ( २५४ ), ७६ ( १७५ ) और ७५ ( १७६ ) भी यही बात प्रमाणित करते हैं । शिलालेख नं० ७५, ७६ मूर्ति के आस-पास ही खुदे हैं और मूर्ति के निर्माण समय के ही प्रतीत होते हैं । चामुण्डराय कौन थे ? भुजबलिशतक आदि ग्रन्थों से विदित होता है कि चामुण्डराय गङ्गनरेश राचमल्ल के मन्त्री थे । शिलालेख नं० १३७ ( १४५ ) से भी यही सिद्ध होता है । राचमल्ल के राज्य की अवधि सन् ६७४ से ६८४ तक बाँधी गई है । अतः गोम्मटेश्वर की स्थापना इसी समय के लगभग होना चाहिये । चामुण्डराय का बनाया हुआ एक चामुण्डराय पुराण मिलता है । इसमें ग्रन्थ-समाप्ति का समय शक सं० ६०० ( सन् ६७८ ईस्वी ) दिया हुआ है । इसमें चामुण्डराय के कृत्यों का वर्णन पाया जाता है पर गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का कहीं उल्लेख नहीं है । इससे अनुमान होता है कि उक्त ग्रन्थ की रचना के समय ( सन् ६७८ ई० ) तक चामुण्डराय को इस महत्कार्य के सम्पादन का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था । बाहुबलि-वरित्र में गोम्मटेश्वर की प्रतिष्ठा का समय इस प्रकार दिया है :—

“कल्क्यब्दे षट्शताख्ये विनुतविभवसंवत्सरे मासि चैत्रे  
पञ्चम्यां शुक्लपक्षे दिनमणिदिवसे कुम्भलग्ने सुयोगे ।

सौभाग्ये मस्तनाम्नि प्रकटित-भगणे सुप्रशस्तां चकार

श्रीमन्चामुण्डराजो बेलगुलनगरे गोमटेशप्रतिष्ठाम् ॥”

अर्थात् कल्कि संवत् ६०० में विभव संवत्सर में चैत्र शुक्ल  
५ रविवार को कुम्भलग्न, सौभाग्य योग, मस्त ( मृगशिरा )  
नक्षत्र में चामुण्डराज ने बेलगुल नगर में गोमटेश की प्रतिष्ठा  
कराई। विद्याभूषण, काव्यतीर्थ, प्रो० शरच्चन्द्र घोषाल ने  
इस अनुमान पर कि यह तिथि गङ्गनरेश राचमल्ल के समय  
में ( सन् ८७४ और ८८४ के बीच ) ही पड़ना चाहिये,  
उक्त तिथि को तारीख २ अप्रैल ८८० ईस्वी के बराबर माना  
है। उनके कथनानुसार इस तारीख को रविवार चैत्र शुक्ल  
५ तिथि थी और कुम्भ लग्न भी पड़ा था। हमने इस  
तारीख का मि० स्वामी कन्नूपिलाई के ‘इंडियन एफोमेरिस’  
से मिलान किया तो २ अप्रैल ८८० ईस्वी को दिन शुक्र-  
वार और तिथि १४ पाये। न जाने प्रोफेसर साहब ने  
किस आधार पर उस तारीख को रविवार और पञ्चमी तिथि  
मान लिया है। इसके अतिरिक्त प्रोफेसर साहब की तारीख  
में एक और भारी त्रुटि है। ऊपर उद्धृत श्लोक में संवत्सर  
का नाम ‘विभव’ दिया हुआ है। पर सन् ८८० ईस्वी ( शक  
सं० ८०२ ) ‘विभव’ नहीं ‘विक्रम’ संवत्सर था। इन कारणों  
से प्रो० घोषाल की निश्चित की हुई तिथि में सन्देह होता है।

उपर्युक्त श्लोक में कल्कि संवत् ६०० में गोमटेश की प्रतिष्ठा होना कहा है। कल्कि कौन था और उसका संवत् कब से चला ? हरिवंशपुराण, उत्तरपुराण, त्रिलोकसार और त्रिलोकप्रज्ञप्ति में कल्कि राजा का उल्लेख पाया जाता है। कल्कि का दूसरा नाम चतुर्मुख था। त्रिलोकप्रज्ञप्ति में कल्कि का समय इस प्रकार दिया है :—

गिष्वाणगदे वीरे चउसदइगिसट्टिवासविच्छेदे ।

जादो च सगणरिन्दो रज्जं वस्सस्स दुसय वादाला ॥६३॥

दोण्णि सदा पणवण्णा गुत्ताणं चउमुहस्स वादालं ।

वस्सं होदि सहस्सं कोई एवं परूवंति ॥६४॥

अर्थात्—वीर निर्वाण के ४६१ वर्ष बीतने पर शक राजा हुआ, और इस वंश के राजाओं ने २४२ वर्ष राज्य किया। उनके पश्चात् गुप्तवंशी नरेशों का २५५ वर्ष तक राज्य रहा और फिर चतुर्मुख (कल्कि) ने ४२ वर्ष राज्य किया। कोई-कोई लोग इस तरह (४६१ + २४२ + २५५ + ४२ = १०००) एक हजार वर्ष बतलाते हैं। अन्य ग्रंथों में भी कल्कि का समय महावीर के निर्वाण से १००० वर्ष पश्चात् माना गया है। पर इन ग्रंथों में इस बात पर मत-भेद है कि निर्वाण संवत् से १००० वर्ष पीछे कल्कि का जन्म हुआ या मृत्यु। ऊपर हमने जिस मत का उल्लेख किया है उसके अनुसार १००० वर्ष में कल्कि के राज्य के ४२ वर्ष भी सम्मिलित हैं। अतः इस मत के अनुसार निर्वाण सं० १००० कल्कि की मृत्यु

का है। जिन ग्रन्थों में कल्कि का उल्लेख पाया जाता है उन सबके अनुसार निर्वाण का समय शक सं० से ६०५ वर्ष, विक्रम सं० से ४७० वर्ष व ईस्वी सन् से ५२७ वर्ष पूर्व पड़ता है। अतएव कल्कि-मृत्यु का समय सन् ४७२ ईस्वी आता है।

संवत् बहुधा राजा के राज्य-काल से प्रारम्भ किये जाते हैं। अतः कल्कि संवत् सन् ४७२—४२ = ४३० ईस्वी से प्रारम्भ हुआ होगा। गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का समय कल्कि संवत् ६०० कहा गया है जो ऊपर की गणना के अनुसार सन् ईस्वी १०३० के बराबर है। हमने स्वामी कन्नूपिलाई के इण्डियन एफेमेरिस से इस संवत् के लगभग उपर्युक्त तिथि, वार, नक्षत्र आदि का मिलान किया तो २३ मार्च सन् १०२८ को चैत्र सुदि ५ रविवार पाया। इस दिन मृगशिरा नक्षत्र और मौभाग्य योग भोः वर्तमान थे, और दक्षिणी गणना के अनुसार यह संवत्सर भी विभव था। इस प्रकार बाहुबलिचरित में दी हुई समस्त बातें इस तिथि में घटित होती हैं, जिससे विश्वास होता है कि गोम्मटेश की प्रतिष्ठा का ठीक समय सन् १०२८, २३ मार्च ( शक सं० ८५१ ) है।\*

इस तिथि के विरोध में केवल एक किंवदन्ती का प्रमाण प्रस्तुत किया जा सकता है। वह किंवदन्ती यह है कि गोम-

---

\* उपर्युक्त विवेचन लिखे जाने के पश्चात् हमें मैसूर आर्किलाजिकल रिपोर्ट १९२३ देखने को मिली। इसमें डा० शाम शास्त्री ने विस्तृत रूप से इसी बात को प्रमाणित किया है।



देश की मूर्ति की प्रतिष्ठा राचमल्लनरेश के समय में ही हुई थी और इस नरेश का समय शिलालेखों के आधार पर सन् ६७४ से ६८४ तक निश्चित किया गया है। पर इस किंवदन्ती पर विशेष जोर नहीं दिया जा सकता क्योंकि एक तो इसके लिये कोई शिलालेखों का प्रमाण नहीं है और दूसरे यह कथन केवल भुजबलिशतक में ही पाया जाता है, जिसकी रचना का समय ईसा की सोलहवीं शताब्दि अनुमान किया जाता है। जिन अन्य ग्रन्थों में गोमटेश की प्रतिष्ठा का कथन है उनमें यह कहीं नहीं कहा गया कि यह कार्य राचमल्ल के जीते ही हुआ था। सन् ६७८ ईस्वी में रचे जानेवाले चामुण्डराय पुराण से यह निश्चित है ही कि उस समय तक मूर्ति की स्थापना नहीं हुई थी, और सन् १०२८ से पहले के किसी शिलालेख में इस प्रतिष्ठा का समाचार नहीं पाया जाता।

एक बात और है जिसके कारण ऊपर निश्चित किया हुआ समय ही गोमटेश की प्रतिष्ठा के लिये ठीक प्रतीत होता है। कहा जाता है कि नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ति चामुण्डराय के गुरु थे और गोमटेश की प्रतिष्ठा के समय उनके साथ थे। द्रव्य-संग्रह नामक ग्रन्थ के टीकाकार ब्रह्मदेव ने ग्रन्थ के मूलकर्त्ता नेमिचन्द्र को धाराधोश भोजदेव के समकालीन कहा है। ऊपर निश्चित किये हुए समय के अनुसार यह कथन अयुक्ति-सङ्गत नहीं कहा जा सकता क्योंकि भोजदेव

का राज्य-काल उस समय विद्यमान था । भोजदेव के सन् १०१६, १०२२ और १०४२ ईस्वी के उल्लेख मिले हैं ।

कुछ वर्षों के अन्तर से गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक होता है, जो बड़ी धूमधाम, बहुत क्रियाकाण्ड और भारी द्रव्य-व्यय के साथ मनाया जाता है । इसे महाभिषेक भी कहते हैं । इस मस्तकाभिषेक का सबसे प्राचीन उल्लेख शक सं० १३२० के लेख नं० १०५ ( २५४ ) में पाया जाता है । इस लेख में कथन है कि पण्डितार्य ने सात बार गोम्मटेश्वर का मस्तकाभिषेक कराया था । पञ्चबाण कवि ने सन् १६१२ ईस्वी में शान्त-वर्णि-द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है, व अनन्त कवि ने सन् १६७७ में मैसूर नरेश चिक्कदेवराज ओडेयर के मन्त्री विशालाक्ष पण्डित-द्वारा कराये हुए और शान्त-राज पण्डित ने सन् १८२५ के लगभग मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय द्वारा कराये हुए मस्तकाभिषेक का उल्लेख किया है । शिलालेख नं० ६८ ( २२३ ) में सन् १८२७ में होने-वाले मस्तकाभिषेक का उल्लेख है । सन् १८०६ में भी मस्तकाभिषेक हुआ था । अभी तक सबसे अन्तिम अभिषेक हाल ही में—मार्च सन् १८२५ में—हुआ है जिसके विषय में 'वीर' पत्र में यह समाचार प्रकाशित हुआ है—“ ता० १५-३-२५ को श्रीमान् महाराज कृष्णराज बहादुर मैसूर अपने दो सालों-सहित पहाड़ पर पधारे और अपनी तरफ से अभिषेक कराया । बन्दोबस्त बहुत अच्छा था । आज लगभग ३०,००० मनुष्य

अभिषेक देख सके जिसमें करीब पाँच हजार विन्ध्यगिरि पर थे और शेष सब चन्द्रगिरि पहाड़ पर इधर-उधर बैठकर दूर से अभिषेक देखते थे। महाराजा ने अभिषेक के लिए पाँच हजार रुपया प्रदान किये। उन्होंने स्वयं गोम्मटस्वामी की प्रदक्षिणा की, नमस्कार किया तथा द्रव्य से पूजन की व कुछ रुपये प्रतिमाजी व भट्टारकजी को भेंट किये व भट्टारकजी को नमस्कार किया। सुबह ८ बजे से दोपहर एक बजे तक इस प्रथम अभिषेक का कार्य अतीव आनन्द व धर्म-प्रभावना के साथ हुआ। इस अभिषेक में जल, दुग्ध, दही, केला, पुष्प, नारियल व चुरमा, घृत, चन्दन, सर्वोषधि, इक्षुरस, लाल चन्दन, बदाम, खारक गुड़, शक्कर, खसखस, फूल, चने की दाल आदि का अभिषेक उपाध्यायी द्वारा मचान पर से हुआ।”

कहा जाता है कि जब होय्सल-नरेश विष्णुवर्द्धन जैन-धर्म को छोड़ वैष्णव धर्मावलम्बी हो गया तब रामानुजाचार्य ने गोम्मट की मूर्ति को तुड़वा डाला; पर इस कथन में कोई सत्य का अंश प्रतीत नहीं होता क्योंकि मूर्ति आज तक सर्वथा अक्षत है।

गोम्मटेश्वर की दो और विशाल मूर्तियाँ विद्यमान हैं। ये दोनों दक्षिण कनाड़ा जिले में ही हैं; एक कारकल में और दूसरी एनूर में। कारकल की मूर्ति ४१ फुट ५ इंच ऊँची है। इसे सन् १४३२ ईस्वी में जैनाचार्य ललितकीर्ति के उपदेश से वीर पाण्ड्य ने प्रतिष्ठित कराई थी। एनूर की मूर्ति ३५ फुट ऊँची है और सन् १६०४ में चारुकीर्ति पण्डित के

उपदेश से चामुण्डवंशीय 'तिम्मराज' द्वारा प्रतिष्ठित की गई थी। इन तीनों मूर्तियों की बनावट प्रायः एक सी ही है। वमीठे, सर्प और लताएँ तीनों में एक से ही दिखाये गये हैं।

विन्ध्यगिरि के गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओं पर यज्ञ और यज्ञिणी की मूर्तियाँ हैं, जिनके एक हाथ में चौरी और दूसरे में कोई फल है। मूर्ति के बायीं ओर एक गोल पाषाण का पात्र है जिसका नाम 'ललितसरोवर' खुदा हुआ है। मूर्ति के अभिषेक का जल इसी में एकत्र होता है। इस पाषाण-पात्र के भर जाने पर अभिषेक का जल एक प्रणाली-द्वारा मूर्ति के सम्मुख एक कुएँ में पहुँच जाता है और वहाँ से वह मन्दिर की सरहद के बाहर एक कन्दरा में पहुँचा दिया जाता है। इस कन्दरा का नाम 'गुल्लकायज्जि बागिलु' है। मूर्ति के सम्मुख का मण्डप नव सुन्दर खचित छतों से सजा हुआ है। आठ छतों पर अष्ट दिक्पालों की मूर्तियाँ हैं और बीच की नवमो छत पर गोम्मटेश के अभिषेक के लिये हाथ में कलश लिये हुए इन्द्र की मूर्ति है। ये छत बड़ी कारीगरी के बने हुए हैं। मध्य की छत पर खुदे हुए शिलालेख (नं० ३५१) से अनुमान होता है कि यह मण्डप बलदेव मन्त्रो ने १२ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में किसी समय निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ११५ (२६७) से विदित होता है कि सेनापति भरत-मय्य ने इस मण्डप का कठघरा (हप्पलिगे) निर्माण कराया था। शिलालेख नं० ७८ (१८२) में कथन है कि नयकीर्त्तिसिद्धान्त-

चक्रवर्त्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने कठघरे की दीवाल और चौबीस तीर्थकरों की प्रतिमाएँ निर्माण कराई थीं और उसके पुत्रों ने उन प्रतिमाओं के सम्मुख जालीदार खिड़कियाँ बनवाईं । शिलालेख नं० १०३ ( २२८ ) से ज्ञात होता है कि चङ्गाव-नरेश महादेव के प्रधान सचिव केशवनाथ के पुत्र चन्न बोम्मरस और नञ्जरायपट्टन के श्रावकों ने गोम्मटेश्वरमण्डप के ऊपर के खण्ड (बल्लिवाड) का जीर्णोद्धार कराया ।

**परकोटा**—गोम्मटेश्वर की दोनों बाजुओं पर खुदे हुए शिलालेख नं० ७५ ( १८० ) व ७६ ( १७७ ) से विदित होता है कि गोम्मटेश्वर का परकोटा गङ्गराज ने निर्माण कराया था । यही बात लेख नं० ४५ ( १२५ ), ५६ ( ७३ ), ६० ( २४० ) व ४८६ से भी सिद्ध होती है । गङ्गराज होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति थे । उपर्युक्त शिलालेख शक सं० १०४० व उसके पश्चात् के हैं । इसके पहले के शिलालेखों में परकोटे का उल्लेख नहीं है । इससे सिद्ध होता है कि शक सं० १०३६ के लगभग ही इसका निर्माण हुआ है ।

परकोटे के भीतर मण्डपों में इधर-उधर कुल ४३ जिन-मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं, जो इस प्रकार हैं—

ऋषभ	१	सुमति	१	शीतल	२	अनन्त	१
अजित	२	सुपार्श्व	१	श्रेयांस	१	धर्म	१
संभव	२	चन्द्रप्रभ	३	वासुपूज्य	१	शान्ति	३
अभिनन्दन	२	पुष्पदन्त	२	विमल	२	कुन्थ	१

अर १ मुनिसुव्रत २ नेमि २ वद्धर्मान १  
मल्लि २ नमि १ पार्श्व ४ बाहुवलि १  
कुष्माण्डिनि २ १ ( अज्ञात )

अधिकांश मूर्तियाँ ४ फुट ऊँची हैं। पाँच-छः मूर्तियाँ पाँच फुट, एक छः फुट व दो-तीन मूर्तियाँ तीन साढ़े-तीन फुट की हैं। एक चन्द्रप्रभ की व अन्तिम अज्ञात मूर्ति को छोड़कर शेष जिन मूर्तियों पर लेख हैं वे सब नयकीर्ति सिद्धान्तदेव और उनके शिष्य बालचन्द्र अध्यात्मि के समय की सिद्ध होती हैं। लेख नं० ७८ ( १८२ ) व ३२७ ( १६७ ) से ज्ञात होता है कि नयकीर्ति के शिष्य बसविसेट्टि ने यहाँ चतुर्विंशति तीर्थ-करों की प्रतिष्ठा कराई थी। पर केवल तीन मूर्तियों पर बसविसेट्टि का नाम पाया जाता है ( लेख नं० ३१७, ३१८, ३२७ )। उपर्युक्त मूर्तियों में पद्मप्रभ तीर्थकर की कोई मूर्ति नहीं है। चन्द्रप्रभ की एक मूर्ति पर मारवाड़ी में लेख है कि उसे ( विक्रम ) संवत् १६३५ में सेनवीरमतजी व अन्य सज्जनों ने प्रतिष्ठित कराई थी ( ३३१ )। अज्ञात मूर्ति डेढ़ फुट की है। इस पर मारवाड़ी में लेख है कि उसे ( विक्रम ) संवत् १५४८ में अगुशाजी जगद.....ने प्रतिष्ठित कराई ( ३३२ )।

परकोटे के द्वारे पर दोनों बाजुओं पर छः छः फुट ऊँचे द्वार-पालक हैं। परकोटे के बाहर गोम्मटदेव के ठीक सन्मुख लग-भग छः फुट की ऊँचाई पर ब्रह्मदेवस्तम्भ है। इसमें ब्रह्मदेव की पद्मासन मूर्ति है। ऊपर गुम्मत है। स्तम्भ के नीचे कोई

पाँच फुट ऊँची 'गुल्लकायजि' की मूर्ति है, जिसके हाथ में 'गुल्लकायि' है। जन-श्रुति के अनुसार यह स्तम्भ और गुल्लकायजि की मूर्ति दोनों स्वयं चामुण्डराय ने प्रतिष्ठित कराये थे।

**२ सिद्धर वस्ति**—यह एक छोटा सा मन्दिर है जिसमें तीन फुट ऊँची सिद्ध भगवान की मूर्ति विराजमान है। मूर्ति के दोनों ओर लगभग छः-छः फुट ऊँचे खचित स्तम्भ हैं। ये स्तम्भ महानवमी मण्डप के स्तम्भ के समान ही उच्च कारीगरी के बने हुए हैं। दायीं बाजू के स्तम्भ पर अर्हदास कवि का रचा हुआ पण्डितार्य की प्रशस्तिवाला बड़ा भारी सुन्दर लेख है [१०५ ( २५४ )] जिसके अनुसार पण्डितार्य की मृत्यु शक संवत् १३२० में हुई थी। इस स्तम्भ में पीठिका पर विराजमान, शिष्य को उपदेश देते हुए, एक आचार्य का चित्र है। शिष्य सन्मुख बैठा है। दूसरे चित्र में जिनमूर्ति है। बायीं बाजू के स्तम्भ पर मङ्गराज कवि का रचा हुआ सुन्दर लेख है [१०८ ( २५८ )] जिसमें शक सं० १३५५ में श्रुतमुनि के स्वर्गवास का उल्लेख है।

**३ अखण्ड बागिलु**—यह एक दरवाजे का नाम है। यह नाम इसलिये पड़ा क्योंकि यह पूरा दरवाजा एक अखण्ड शिला को काटकर बनाया गया है। दरवाजे का ऊपरी भाग बहुत ही सुन्दर खचित है। इसमें लक्ष्मी की पद्मासन मूर्ति खुदी है जिसको दोनों ओर से दो हाथी स्नान करा रहे हैं। जन-श्रुति के अनुसार यह द्वार भी चामुण्डराय ने निर्माण

कराया था। दरवाजे के दोनों ओर दायें-बायें क्रमशः बाहुबलि और भरत की मूर्तियाँ हैं। इन पर जो लेख हैं (३६८-३६९) उनसे विदित होता है कि वे गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के शिष्य दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा प्रतिष्ठित की गई हैं। इनका समय शक सं० १०५२ के लगभग प्रतीत होता है। इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा का उल्लेख शिलालेख नं० ११५ (२६७) में भी आया है जिसके अनुसार ये मूर्तियाँ दरवाजे की शोभा बढ़ाने के लिये स्थापित की गई हैं। इस लेख के अनुसार इस दरवाजे की सीढ़ियाँ भी उक्त दण्डनायक ने ही निर्माण कराई हैं।

**४ सिद्धरगुण्डु**—अखण्ड दरवाजे की दाहिनी ओर एक बृहत् शिला है जिसे 'सिद्धर गुण्डु' ( सिद्ध-शिला ) कहते हैं। इस शिला पर अनेक लेख हैं। ऊपरी भाग की कई सतरों में जैनाचार्यों के चित्र हैं। कुछ चित्रों के नीचे नाम भी अङ्कित हैं।

**५ गुल्लकायज्जिबागिलु**—यह एक दूसरे दरवाजे का नाम है। इस दरवाजे की दाहिनी ओर एक शिला पर एक बैठी हुई स्त्री का चित्र खुदा है। यह लगभग एक फुट का है। इसे लोगों ने गुल्लकायज्जि का चित्र समझ लिया है। इसी से उक्त दरवाजे का नाम गुल्लकायज्जिबागिलु पड़ गया। पर चित्र के नीचे जो लेख ( ४१८ ) पाया गया है उससे विदित होता है कि वह एक मल्लिसेट्टि की पुत्री का चित्र है। गुल्लकायि की मूर्ति का वर्णन ऊपर कर ही चुके हैं।



**६ त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ**—यह चागद कंब ( त्याग-स्तम्भ ) भी कहलाता है क्योंकि कहा जाता है कि यहाँ दान दिया जाता था । इस स्तम्भ की कारीगरी प्रशंसनीय है । कहा जाता है कि यह स्तम्भ अधर है, उसके नीचे से रूमाल निकाला जा सकता है । यह भी चामुण्डराय-द्वारा स्थापित कहा जाता है और स्तम्भ पर खुदे हुए लेख नं० १०६ ( २८१ ) से भी यही बात प्रमाणित होती है । इस लेख में चामुण्डराय के प्रताप का वर्णन है । दुर्भाग्यवश यह लेख हमें पूरा प्राप्त नहीं हो सका । ज्ञात होता है कि हेर्गंडे कण्ठ ने अपना छोटा सा लेख [ नं० ११० ( २८२ ) ] लिखाने के लिये चामुण्डराय का लेख घिसवा डाला । यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो सम्भवतः उससे गोम्मटेश्वर की स्थापनादि का समय भी ज्ञात हो जाता । स्तम्भ की पीठिका की दक्षिण बाजू पर दो मूर्तियाँ खुदी हुई हैं । एक मूर्ति, जिसके दोनों ओर चवरवाही खड़े हुए हैं, चामुण्डराय की और उसके साम्हनेवाली उनके गुरु नेमिचन्द्र की कही जाती हैं ।

**७ चेन्नण्ण बस्ति**—यह बस्ति त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ से पश्चिम की ओर थोड़ी दूर पर है । इसमें चन्द्रनाथ स्वामी की २½ फुट ऊँची मूर्ति है । साम्हने मानस्तम्भ है । लेख नं० ४८० ( ३६० ) से अनुमान होता है कि इसे चेन्नण्ण ने शक सं० १५६६ के लगभग निर्माण कराया था । बरामदे में दो स्तम्भों पर क्रमशः एक पुरुष और एक स्त्री की मूर्ति खुदी हुई

है। सम्भव है कि ये मूर्तियाँ चेन्नण और उनकी धर्मपत्नी की हों। वस्ति से ईशान की ओर दो दोणे ( कुण्डों ) के बीच एक मण्डप बना हुआ है। उपर्युक्त लेख में सम्भवतः इसी मण्डप का उल्लेख है।

**८ ओदेगल वस्ति**—इसे त्रिकूट वस्ति भी कहते हैं क्योंकि इसमें तीन गर्भगृह हैं। चन्द्रगिरि पर्वत की शान्तेश्वर वस्ति के समान यह वस्ति भी खूब ऊँची सतह पर बनी हुई है। सीढ़ियों पर से जाना पड़ता है। भोटों की मजबूती के लिये इसमें पाषाण के आधार ( ओदेगल ) लगे हुए हैं, इसी से इसे ओदेगल वस्ति कहते हैं। बीच की गुफा में आदिनाथ की और दायीं बाईं गुफाओं में क्रमशः शान्तिनाथ और नेमिनाथ की पद्मासन मूर्तियाँ हैं। वस्ति के पश्चिम की ओर की चट्टान पर सत्ताइस लेख नागरी अक्षरों में हैं जिनमें अधिकतर तीर्थ-यात्रियों के नाम अङ्कित हैं (नं० ३७८-४०४)।

**९ चौबीस तीर्थंकर वस्ति**—यह एक छोटा सा देवालय है। इसमें एक अढ़ाई फुट ऊँचे पाषाण पर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। नीचे एक कतार में तीन बड़ी मूर्तियाँ खुदी हुई हैं जिनके ऊपर प्रभावली के आकार में इकोस अन्य छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं। इस वस्ति के लेख नं० ११८ ( ३१३ ) से ज्ञात होता है कि इस चौबीस तीर्थंकर मूर्ति की स्थापना चारुकीर्ति पण्डित, धर्मचन्द्र आदि ने शक सं० १५७० में की थी।

**१० ब्रह्मदेव मन्दिर**—यह छोटा सा देवालय विन्ध्य-गिरि के नीचे सीढ़ियों के समीप ही है। इसमें सिन्दूर से रंगा हुआ एक पाषाण है जिसे लोग ब्रह्म या 'जारुगुप्पे अप्प' कहते हैं। मन्दिर के पीछे चट्टान पर के लेख नं० १२१ (३२१) से ज्ञात होता है कि इसे हिरिसालि के गिरिगौड के कनिष्ठ भ्राता रङ्गय्य ने सम्भवतः शक सं० १६०० में निर्माण कराया था। मन्दिर के ऊपर दूसरी मंजिल भी है जो पीछे से निर्माण कराई गई विदित होती है। इसमें पार्श्वनाथ की मूर्ति है।

### श्रवणबेलगोल नगर

ऊपर कहा जा चुका है कि श्रवणबेलगोल चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि के बीच बसा हुआ है। यहाँ के प्राचीन स्मारक इस प्रकार हैं:—

**१ भण्डारि बस्ति**—यह श्रवण बेलगोल का सबसे बड़ा मन्दिर है। इसकी लम्बाई-चौड़ाई २६६ X ७८ फुट है। इसमें एक गर्भगृह, एक सुखनासि, एक मुखमण्डप और प्राकार हैं। गर्भगृह में एक सुन्दर चित्रमय वेदी पर चौबीस तीर्थ-करों की तीन २ फुट ऊँची मूर्तियाँ हैं। इसी से इसे चौबीस तीर्थकरबस्ति भी कहते हैं। गर्भगृह में तीन दरवाजे हैं जिनकी आजू-बाजू जालियाँ बनी हुई हैं। सुखनासि में पद्मावती और ब्रह्म की मूर्तियाँ हैं। नवरङ्ग के चार स्तम्भों के बीच

जमीन पर एक दस फुट का चौकोर पत्थर बिछा हुआ है। आगे के भाग और बरामदे में भी इतने इतने बड़े पत्थर लगे हुए हैं। ये भारी-भारी पाषाण यहाँ कैसे लाये गये होंगे, यह भी आश्चर्यजनक है। नवरङ्गद्वार की चित्रकारी बड़ी ही मनोहर है। इसमें लताएँ व मनुष्य और पशुओं के चित्र खुदे हुए हैं। मुख्य भवन के चारों ओर बरामदा और पाषाण का चार फुट ऊँचा कठघरा है। बस्ति के सन्मुख एक पाषाण-निर्मित सुन्दर मानस्तम्भ है। होयसल नरेश नरसिंह ( प्रथम ) के भण्डारि हुल्ल द्वारा निर्माण कराये जाने के कारण यह भण्डारि बस्ति कहलाती है। लेख नं० १३७ ( ३४५ ) और १३८ ( ३४६ ) से ज्ञात होता है कि यह शक सं० १०८१ में निर्माण कराई गई थी व नरसिंह नरेश ने इसे भव्य-चूडामडि नाम देकर इसकी रक्षा के हेतु सवणेरु ग्राम का दान दिया था। उक्त लेखों में हुल्ल और उनके बस्ति-निर्माण का सुन्दर वर्णन है।

**२ अक्कन बस्ति**—नगर भर में यही बस्ति होयसल-शिल्पकला का एकमात्र नमूना है। इस सुन्दर भवन में गर्भगृह, सुखनासि, नवरङ्ग और मुखमण्डप हैं। गर्भगृह में सप्तफणी पार्श्वनाथ की पाँच फुट ऊँची भव्य मूर्ति है। गर्भगृह के दरवाजे पर बड़ा अच्छा खुदाई का काम है। सुखनासि में एक दूसरे के सन्मुख साढ़े तीन फुट ऊँची पञ्चफणी धरणेन्द्र यक्ष और पद्मावती यक्षिणी की मूर्तियाँ हैं। दरवाजे के आसपास जालियाँ हैं। नवरङ्ग के चार काले पाषाण के

बने हुए आइने के सदृश चमकीले स्तम्भ और कुशल कारीगरी के बने हुए नवछत बड़े ही सुन्दर हैं। मंदिर की गुम्फट अनेक प्रकार की जिन-मूर्तियों से चित्रित है, शिखर पर सिंहललाट है। दक्षिण की दीवाल सीधी न होने के कारण उसमें पत्थर के आधार लगाये गये हैं। द्वारे के पास के लेख ( नं० १२४ ( ३२७ ) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति होयसल नरेश बल्लाल ( द्वितीय ) के ब्राह्मण मंत्री चन्द्रमौलि की जैन धर्मावलम्बिनी भार्या आचियक ने शक सं० ११०३ में निर्माण कराई थी व राजा ने उसकी रक्षा के निमित्त बम्मेयनहल्लि नामक ग्राम का दान दिया था। 'अकन' आचियकन का ही संक्षिप्त रूप है इसी से इसे अकन बस्ति कहते हैं। यही बात लेख नं० ४२६ ( ३३१ ) व ४६४ से भी सिद्ध होती है।

**३ सिद्धान्त बस्ति**—यह बस्ति अकन बस्ति के पश्चिम की ओर है। किसी समय जैन सिद्धान्त के समस्त ग्रंथ इसी बस्ति के एक बन्द कमरे में रक्खे जाते थे। इसी से इसका नाम सिद्धान्त बस्ति पड़ा। कहा जाता है कि धवल, जयधवल आदि अत्यन्त दुर्लभ ग्रंथ यहीं से मूडविद्रो गये हैं। इसमें एक पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकरों की प्रतिमाये हैं। बीच में पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा है और उनके आसपास शेष तीर्थंकरों की। यहाँ के लेख नं० ४२७ ( ३३२ ) से ज्ञात होता है कि यह चतुर्विंशति मूर्त्ति उत्तर भारत के किसी यात्री ने शक सं० १६२० के लगभग प्रतिष्ठित कराई थी।

**४ दानशाले बस्ति**—यह छोटा सा देवालय अकन बस्ति के द्वार के पास ही है। इसमें एक तीन फुट ऊँचे पाषाण पर पञ्चपरमेष्ठी की प्रतिमाये हैं। चिदानन्द कवि के मुनि-वंशाभ्युदय ( शक सं० १६०२ ) के अनुसार मैसूर के चिक देवराज ओडेयर ने अपने पूर्ववर्ती नृप दोड्ड देवराज ओडेयर के समय में (सन् १६५८—१६७२ ईस्वी) बेलगोल की यात्रा की, दानशाला के दर्शन किये और राजा से उसके लिये मदनेय ग्राम का दान करवाया। यहाँ पहले दान दिया जाता रहा होगा इसी से इस बस्ति का यह नाम पड़ा।

**५ नगर जिनालय**—इस भवन में गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं। इसमें आदिनाथ की प्रभावली संयुक्त अढ़ाई फुट ऊँची मूर्ति है। नवरङ्ग की बाईं ओर एक गुफा में दो फुट ऊँची ब्रह्मदेव की मूर्ति है जिसके दाये हाथ में कोई फल और बाये हाथ में कोड़े के आकार की कोई चीज है। पैरों में खड़ाऊँ हैं। पीठिका पर घोड़े का चिह्न बना हुआ है। यहाँ के लेख नं० १३० ( ३३५ ) से ज्ञात होता है कि इस मन्दिर को होय्सल नरेश बल्लाल ( द्वितीय ) के 'पट्टणस्वामी' व नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्ति के शिष्य नागदेव मंत्री ने शक सं० १११८ में निर्माण कराया था। नगर के महाजनों-द्वारा ही इसकी रक्षा होती थी इसी से इसका नाम नगर जिनालय पड़ा। 'श्रीनिलय' भी इस मंदिर का नाम रहा है। उक्त लेख में नागदेव मंत्री द्वारा कमठपार्श्वनाथबसदि के सन्मुख 'नृत्य

रङ्ग' और अश्मकुट्टिम ( पाषाणभूमि ) व अपने गुरु नय-कीर्ति देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का भी उल्लेख है । लेख नं० १२२ ( ३२६ ) के अनुसार उन्होंने नयकीर्ति के नाम से ही नागसमुद्र नामक सरोवर भी बनवाया । यह सरोवर अब 'जिगणेकट्टे' कहलाता है । पर लेख नं० १०८ ( २५८ ) में कहा गया है कि पण्डित यति के तप के प्रभाव से ही नगर जिनालय ( नगर जिनास्पद ) की सृष्टि हुई ।

**६ मङ्गायि बस्ति**—इसमें एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग है । इसमें एक साढ़े चार फुट ऊँची शान्तिनाथ की मूर्ति विराजमान है । सुखनासि के द्वार पर आजू-बाजू पाँच फुट ऊँची चवरवाहियों की मूर्तियाँ हैं । नवरङ्ग में वर्द्धमान स्वामी की मूर्ति है जिस पर लेख है, ४२६ ( ३३८ ) । मन्दिर के सन्मुख सुन्दरता से खचित दो हस्ती हैं । लेख नं० १३२ ( ३४१ ) व ४३० ( ३३६ ) से ज्ञात होता है कि यह बस्ति अभिनव चारुकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेलगोल के मङ्गायि ने बनवाई थी । उक्त लेखों में इसे त्रिभुवनचूड़ामणि कहा है । ये लेख शक की तेरहवों शताब्दि के ज्ञात होते हैं । शान्तिनाथमूर्ति की पीठिका पर के लेख से विदित होता है कि वह मूर्ति पण्डिताचार्य की शिष्या व देवराय महाराज की रानी भीमादेवी ने प्रतिष्ठित कराई थी [ लेख नं० ४२८ ( ३३७ ) ] । ये देवराय सम्भवतः विजयनगर के राजा देवराज प्रथम हैं जिनका राज्य सन् १४०६ से १४१६ तक रहा था ।

उक्त महावीर स्वामी की पीठिका पर के लेख से सिद्ध होता है कि उनकी प्रतिष्ठा पण्डितदेव की शिष्या वसतायि ने कराई थी। इसका भी उक्त समय ही अनुमान होता है। इसी मंदिर के एक लेख [ नं० १३४ (३४२) ] से विदित होता है कि इसकी मरम्मत सम्भवतः शक सं० १३३४ में गेरसोप्पे के हिरिय अय्य के शिष्य गुम्मटण्ण ने कराई थी।

**७ जैनमठ**—यह यहाँ के गुरु का निवास-स्थान है। इमारत बहुत सुन्दर है, बीच में खुला हुआ आँगन है। हाल ही में दूसरी मब्जिल भी बन गई है। मण्डप के खम्भे अच्छी कारीगरी के बने हुए हैं। उन पर खूब चित्रकारी है। यहाँ के तीन गर्भगृहों में अनेक पाषाण और धातु की मूर्तियाँ हैं। इनमें की अनेक मूर्तियाँ बहुत अर्वाचोन हैं। इन पर संस्कृत व तामिल भाषा में ग्रंथ अक्षरों के लेख हैं जिनसे ज्ञात होता है कि वे अधिकांश मद्रास प्रान्तीय धर्मिष्ठ भाइयों ने प्रदान की हैं। नवदेवता बिम्ब में पञ्चपरमेश्वो के अतिरिक्त जिनधर्म, जिनागम, चैत्य और चैत्यालय भी चित्रित हैं। मठ की दीवारों पर तीर्थंकरों व जैन राजाओं के जीवन की घटनाओं के अनेक रङ्गीन चित्र हैं। इनमें मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर तृतीय के 'दसर दरवार' का भी चित्र है। पार्श्वनाथ के समवसरण व भरत चक्रवर्ति के जीवन के चित्र भी दर्शनीय हैं। चार चित्र नागकुमार की जीवन-घटनाओं के हैं। एक वन के दृश्य में षड्लेश्याओं के पुरुषों के चरित्र बड़ी उत्तम रीति



से चित्रित किये गये हैं। ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्ति है और एक काले पाषाण पर चतुर्विंशति तीर्थंकर खचित हैं।

कहा जाता है कि चामुण्डराय ने गोम्मटेश्वर की मूर्ति निर्माण कराकर अपने गुरु नेमिचन्द्र को यहाँ का मठाधीश नियुक्त किया। यह भी कहा जाता है कि इससे पहले भी यहाँ गुरु-परम्परा चली आती थी। लेख नं० १०५ (२५४) व १०८ (२५८) में उल्लेख है कि यहाँ के एक गुरु चारु-कीर्ति पण्डित ने होयसल नरेश बल्लाल प्रथम ( सन् ११००-११०६ ) को एक बड़ी दुःसाध्य व्याधि से मुक्त किया था जिससे उन्हें बल्लालजीवरत्नक की उपाधि मिली थी।

**८ कल्याणि**—यह नगर के बीच के एक छोटे से सरोवर का नाम है। इसके चारों ओर सीढ़ियाँ और दीवाल हैं। दीवाल के दरवाजे शिखरबद्ध हैं। उत्तर की ओर एक सभामण्डप है जिसके एक स्तम्भ पर लेख है (४४४ ( ३६५) कि यह सरोवर चिकदेव राजेन्द्र ने बनवाया। मैसूर के चिकदेवराजेन्द्र ने सन् १६७२ से १७०४ तक राज्य किया है। अनन्त कवि-कृत गोम्मटेश्वरचरित ( शक सं० १७०० ) में उल्लेख है कि चिकदेवराज ने अपने टकसाल के अर्ध्यत्त अण्णाय्य की प्रार्थना से 'कल्याणि' निर्माण कराया। पर सरोवर के पूरे होने से प्रथम ही राजा की मृत्यु हो गई, तब अण्णाय्य ने उसे चिकदेवराज के पौत्र कृष्णराज ओडेयर

प्रथम ( सन् १७१३-१७३१ ) के समय में शिखर, सभामण्डप आदि बनवाकर पूर्ण कराया । सम्भवतः यही बड़ा पुराना सरोवर रहा है जिस पर से इस नगर का नाम बेलगुल ( धवल सरोवर ) पड़ा । उक्त पुरुषों ने सम्भवतः इसका जीर्णोद्धार कराया होगा । यह भी हो सकता है कि इस स्थान को नाम देनेवाला धवल सरोवर कोई अन्य ही रहा हो ।

**८ जक्किमट्टे**—यह भण्डारि बस्ति के दक्षिण में एक छोटा सा सरोवर है । इसके पास की दो चट्टानों पर जैन प्रतिमाओं के नीचे के दो लेखों नं० ४४६ ( ३६७ ) और ४४७ ( ३६८ ) से ज्ञात होता है कि बोप्पदेव की माता, गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता की भार्या, शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जक्किमव्वे ने ये जिनमूर्तियाँ और सरोवर निर्माण कराये । लेख नं० ४३ ( ११७ ) व अन्य लेखों से सिद्ध है कि गङ्गराज होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति थे और शक सं० १०४५ में जीवित थे । इस लेख में जक्किमव्वे की भी प्रशस्ति है । साण्डेल्लि के एक लेख नं० ४८६ ( ४०० ) से ज्ञात होता है कि इसी धर्मपरायणा साध्वी महिला ने वहाँ भी एक बस्ति निर्माण कराई थी ।

**१० चेन्नण्ण का कुण्ड**—नगर से दक्षिण की ओर कुछ दूरी पर यह कुण्ड है । इसका निर्माता वही चेन्नण्ण बस्ति का निर्माता चेन्नण्ण है । चेन्नण्ण की कृतियों का उल्लेख लेख नं० १२३ तथा ४४८-४५३ व ४६३-४६५ में है ।

घ

नं० ४८० ( ३६० ) से इस कुण्ड का समय शक सं० १५६५ के लगभग प्रतीत होता है ।

## श्रवणबेलगोल के आसपास के ग्राम

**जिननाथ पुर**—यह श्रवणबेलगोल से एक मील उत्तर की ओर है । लेख नं० ४७८ (३८८) के अनुसार इसे होयसल-नरेश विष्णुवर्द्धन के सेनापति गङ्गराज ने शान्तिनाथ बस्ति शक सं० १०४० के लगभग बसाया था ।

यहाँ की शान्तिनाथ बस्ति होयसल शिल्पकारी का बहुत सुन्दर नमूना है । इसमें एक गर्भगृह, सुखनासि और नवरङ्ग हैं । शान्तिनाथ की साढ़े पाँच फुट ऊँची मूर्ति बड़ी भव्य और दर्शनीय है । वह प्रभावली और दोनों ओर चवरवाहियों से सुसज्जित है । नवरङ्ग के चार स्तम्भ अच्छी मूँगों की कारीगरी के बने हुए हैं । इसके नवछत भी बड़े सुन्दर हैं । आगने-सामने दो सुन्दर आले बने हुए हैं जो अब खाली हैं । बाहिरी दीवारों पर अनेक चित्रपट हैं । कई चित्र अधूरे ही रह गये हैं । इनमें तीर्थकर, यक्ष, यक्षिणी, ब्रह्म, सरस्वती, मन्मथ, मोहिनी, नृत्यकारिणी, गायक, वादित्रवादी आदि के चित्र हैं । नारी-चित्रों की संख्या चालीस है ।

यह बस्ति मैसूर राज्य भर के जैन मंदिरों में सबसे अधिक आभूषित है । शान्तिनाथ की पीठिका के लेख नं० ४७१

( ३८० ) से ज्ञात होता है कि इस बस्ति को 'वसुधै क्वान्धव रेचिमय्य' सेनापति ने बनवाकर सागरनन्दि सिद्धान्तदेव के अधिकार में दे दी थी। एक लेख ( ए० क० अर्सीक्रे ७७ सन् १२२० ) में उल्लेख है कि उक्त सेनापति कलचुरि-नरेश के मंत्री थे, पश्चात् उन्होंने होयसल नरेश बल्लाल (द्वितीय) ( सन् ११७३-१२२० ) की शरण ली। इससे शान्तिनाथ बस्ति के निर्माण का समय लगभग शक सं० ११२० सिद्ध होता है। नवरङ्ग के एक स्तम्भ पर के लेख नं० ४७० ( ३७६ ) से विदित होता है कि इस बस्ति का जीर्णोद्धार पालेद पदुमन्न ने शक सं० १५५३ में कराया था।

ग्राम के पूर्व में अरेगल बस्ति नाम का एक दूसरा मंदिर है। यह शान्तिनाथ बस्ति से भी पुराना है। इसमें पार्श्वनाथ भगवान् की सप्तफणी, प्रभावली संयुक्त पाँच फुट ऊँची पद्मासन मूर्ति है। सुखनासि में धरणेन्द्र और पद्मावती के सुन्दर चित्र हैं। मन्दिर में सफाई अच्छी रहती है। एक चट्टान ( अरेगल ) के ऊपर निर्मित होने से ही यह मन्दिर अरेगल बस्ति कहलाता है। पार्श्वनाथ की पीठिका पर के लेख नं० ४७४ ( ३८३ ) से विदित होता है कि वह मूर्ति शक सं० १८१२ में बेलगुल के भुजबलैय्य ने प्रतिष्ठित कराई है। इसका कारण यह था कि प्राचीन मूर्ति बहुत खण्डित हो गई थी। यह प्राचीन मूर्ति अब पास ही के तालाब में पड़ी हुई है और उसका छत्र बस्ति के द्वारे के पास

अरेगल बस्ति

रक्खा हुआ है जहाँ पर कि लेख नं० १४४ ( ३८४ ) है । मंदिर में चतुर्विंशति तीर्थंकर, पञ्चपरमेष्ठो, नवदेवता, नन्दीश्वर अर्द्धि की धातुनिर्मित मूर्तियाँ भी हैं ।

ग्राम की नैऋत दिशा में एक समाधिमण्डप है । इसे शिलाकूट कहते हैं । मण्डप चार फुट लम्बा-चौड़ा और पाँच फुट ऊँचा है । ऊपर शिखर है । इसके चारों ओर दीवालें हैं पर दरवाजा एक भी नहीं है । इस पर के लेख नं ४७८ ( ३८८ ) से वह बालचन्द्रदेव के तनय की निषद्या सिद्ध होती है जिनकी मृत्यु शक सं ११३६ में हुई । लेख में बालचन्द्रदेव के तनय का नाम घिस गया है, पर उनके गुरु बेलिकुम्ब के नमिचन्द्र पण्डित व निषद्या निर्मापक बैरोज के नाम लेख में पढ़े जाते हैं । लेख के अन्तिम भाग में यह भी लिखा है कि एक साध्वी स्त्री कालबू ने सल्लेखना विधि से शरीरान्त किया । सम्भवतः यह उक्त मृत पुरुष की विधवा पत्नी रही होगी ।

ऐसा ही एक समाधिमण्डप तावरेकेरे सरोवर के समीप है । इसके पास जो लेख ( नं० १४२ ( ३६२ ) है उससे विदित होता है कि यह चारुकीर्ति पण्डित की निषद्या है जिनकी मृत्यु शक सं० १५६५ में हुई ।

लेख नं० ४० ( ६४ ) में उल्लेख है कि देवकीर्ति पण्डित, जिनकी मृत्यु शक सं० १०८५ में हुई, ने जिननाथ पुर में एक दानशाला निर्माण कराई थी ।

**हलेबेलगोल**—यह ग्राम श्रवणबेलगोल से चार मील उत्तर की ओर है। यहाँ का होयसल शिल्पकारी का बना हुआ जैनमन्दिर ध्वंस अवस्था में है। गर्भगृह में अढ़ाई फुट की खड्गासन मूर्ति है। सुखनासि में लगभग पाँच फुट ऊँची सप्तफणी पार्श्वनाथ की खण्डित मूर्ति रखी है। नवरङ्ग में अच्छी चित्रकारी है। बीच की छत पर देवियों-सहित रथारूढ़ अष्टदिक्पालों के चित्र हैं जिनके बीच में पञ्चफणी धरणेन्द्र का चित्र है। धरणेन्द्र के बाँये हाथ में धनुष और दाहिने में सम्भवतः शङ्ख है। नवरङ्ग में दो चवरवाही और एक तीर्थंकर मूर्ति खण्डित रखी हुई हैं। नवरङ्ग के द्वार पर अच्छी कारीगरी दिखलाई गई है। इस मन्दिर के सन् १०६४ के लेख (नं० ४६२) से विदित होता है कि विष्णु-वर्द्धन के पिता होयसल एरेयङ्ग ने बेलगोल के मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिये जैनगुरु गोपनन्दि को राचनहल्ल ग्राम का दान दिया। इस लेख व लेख नं० ५५ (६६) में गोपनन्दि की खूब प्रशंसा पाई जाती है। यह बस्तु संभवतः लगभग शक सं० १०१६ की बनी हुई है।

इस ग्राम में एक शैव और एक वैष्णव मन्दिर भी है। ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में यहाँ अधिक मन्दिर रहे हैं क्योंकि यहाँ के एक तालाब की नहर में प्रायः सारा मसाला दूटे हुए मन्दिरों का लगा हुआ है। ग्राम के मध्य में एक तालाब के पास एक खण्डित जिन प्रतिमा भी है।

**साणेहल्लि**—यह ग्राम श्रवणबेल्लुगुल से तीन मील पर है। यहाँ एक ध्वंस जैन मन्दिर है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, लेख नं० ४८६ ( ४०० ) के अनुसार इसे गङ्गराज की भावज जक्किमव्वे ने निर्माण कराया था।

## लेखों की ऐतिहासिक उपयोगिता

विशेष राजवंशों से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों का विवेचन करने से पूर्व यहाँ एक ऐसी घटना पर कुछ विचार करना आवश्यक है जिसका राजकीय व जैन-धार्मिक इतिहास से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैनसंघ के नायक भद्रबाहु स्वामी के साथ भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य की दक्षिण यात्रा का प्रसङ्ग जैसा जैन इतिहास के लिए महत्त्वपूर्ण है वैसा ही वह भारत के राजकीय इतिहास में अनुपेक्षणीय है। लगातार कई वर्षों से इस विषय पर इतिहासवेत्ताओं में मतभेद चला आता है। यद्यपि मतभेद का अभी तक अन्त नहीं हुआ, पर अधिकांश विद्वानों का झुकाव एक ओर होने से इस विषय का प्रायः निर्णय ही समझना चाहिए। संक्षेप में, जैनसाहित्य में यह प्रसङ्ग इस प्रकार पाया जाता है—अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी ने निमित्त-ज्ञान से जाना कि उत्तर भारत में एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। ऐसी विपत्ति के समय में वहाँ मुनिवृत्ति का पालन होना कठिन जान

उन्होंने अपने समस्त शिष्यों-सहित दक्षिण की ओर प्रस्थान किया। भारतसम्राट् चन्द्रगुप्त ने भी इस दुर्भिक्ष का समाचार पा, संसार से विरक्त हो, राज्यपाट छोड़ भद्रबाहु स्वामी से दीक्षा ली और उन्हीं के साथ गमन किया। जब यह मुनि-संघ श्रवण बेलगोल स्थान पर पहुँचा तब भद्रबाहु स्वामी ने अपनी आयु बहुत थोड़ी शेष जान, संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा दी और आप चन्द्रगुप्त शिष्य-सहित छोटी पहाड़ी पर रहे। चन्द्रगुप्त मुनि ने अन्त समय तक उनकी खूब सेवा की और उनका शरीरान्त हो जाने पर उनके चरणचिह्न की पूजा में अपना शेष जीवन व्यतीत कर अन्त में सल्लेखना विधि से शरीरत्याग किया।

अब देखना चाहिए कि श्रवण बेलगोल के स्थानीय इतिहास से, शिलालेखों से व साहित्य से इस बात का कहाँ तक समर्थन होता है। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त के वहाँ रहने से ही उस पहाड़ी का नाम चन्द्रगिरि पड़ा। इस पहाड़ी पर की प्राचीनतम बस्ति चन्द्रगुप्त द्वारा ही पहले-पहल निर्माण कराये जाने के कारण चन्द्रगुप्त बस्ति कहलाई। इस पहाड़ी पर की भद्रबाहु गुफा में चन्द्रगुप्त के भी चरण-चिह्न हैं। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त ने इसी गुफा में समाधिमरण किया था। सेरिङ्गपट्टम के दो शिलालेखों ( ए० क० ३, सेरिङ्गपट्टम १४७, १४८ ) में उल्लेख है कि कलवप्पु शिखर ( चन्द्रगिरि ) पर महामुनि भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के चरण-चिह्न हैं। ये शिला-



लेख लगभग शक सं० ८२२ के हैं । श्रवणबेलगोल के लगभग शक सं० ५७२ के लेख नं० १७-१८ ( ३१ ) में कहा गया है कि 'जो जैनधर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया ।' शक सं० १०५० के लेख नं० ५४ ( ६७ ) ( श्लोक ४ ) में भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का उल्लेख है । ऐसा ही उल्लेख शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० ( ६४ ) ( श्लोक ४-५ ) में व शक सं० १३५५ के लेख नं० १०८ ( २५८ ) ( श्लोक ८-९ ) में है । इन उल्लेखों में चन्द्रगुप्त की गुरुभक्ति और तपश्चरण की महिमा गाई गई है ।

साहित्य में इस प्रसङ्ग का सबसे प्राचीन उल्लेख हरिषेण-कृत 'बृहत्कथाकोष' में पाया जाता है । यह ग्रन्थ शक सं० ८५३ का रचा हुआ है । इसमें भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त का वर्णन इस प्रकार पाया जाता है—'पौण्ड्रवर्धन देश में देवकोट नाम का नगर था । इस नगर का प्राचीन नाम कोटिपुर था । यहाँ पद्मरथ नाम का राजा राज्य करता था । इनके एक पुरोहित सोमशर्मा और उनकी भार्या सोमश्री के भद्रबाहु नामक पुत्र हुआ । एक दिन अन्य बालकों के साथ नगर में खेलते हुए भद्रबाहु को चतुर्थ श्रुतकेवली गोवर्धन ने देखा । उन्होंने देखकर जान लिया कि यही बालक अन्तिम श्रुतकेवली होनेवाला है । अतएव माता-पिता की अनुमति से उन्होंने

भद्रबाहु को अपने संरक्षण में ले लिया और उन्हें सब विद्याएँ सिखाई। यथासमय भद्रबाहु ने गोवर्धन स्वामी से जिन दीक्षा धारण की। एक समय विहार करते हुए भद्रबाहु स्वामी उज्जैनी नगरी में पहुँचे और सिप्रा नदी के तीर एक उपवन में ठहरे। इस समय उज्जैनी में जैनधर्मावलम्बी राजा चन्द्रगुप्त अपनी रानी सुप्रभा-सहित राज्य करते थे। जब भद्रबाहु स्वामी आहार के निमित्त नगरी में गये तब एक गृह में भूले में भूतते हुए शिशु ने उन्हें चिल्लाकर मना किया और वहाँ से चले जाने को कहा। इस निमित्त से स्वामी को ज्ञात हो गया कि वहाँ एक बारह वर्ष का भीषण दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर उन्होंने समस्त संघ को बुलाकर सब हाल कहा और कहा कि “अब तुम लोगों को दक्षिण देश को चले जाना चाहिए। मैं स्वयं यहीं ठहरूँगा क्योंकि मेरी आयु क्षीण हो चुकी है।”\*

जब चन्द्रगुप्त महाराज ने यह सुना तब उन्होंने विरक्त होकर भद्रबाहु स्वामी से जिन दीक्षा ले ली। फिर चन्द्रगुप्त मुनि, जो दशपूर्वियों में प्रथम थे, विशाखाचार्य के नाम से जैन संघ के नायक हुए। भद्रबाहु की आज्ञा से वे संघ को दक्षिण के पुन्नाट† देश को ले गये। इसी प्रकार रामिल्ल, स्थूलवृद्ध,

॥ अहमत्रैव तिष्ठामि क्षीणमायुर्ममाधुना ।

† पुन्नाट बड़ा पुराना राज्य रहा है। कन्नड साहित्य में यह पुन्नाड के नाम से प्रसिद्ध है। ‘टालेमी’ ने इसका उल्लेख ‘पौन्नाट’

**धौर भद्राचार्य** अपने-अपने संघों-सहित सिंधु आदि देशों को भेजे गये। स्वयं भद्रबाहु स्वामी उज्जयिनी के 'भाद्रपद' नामक स्थान पर गये और वहाँ उन्होंने कई दिन तक अनशन व्रत कर समाधिमरण किया \*। जब द्वादशवर्षीय दुर्भिक्ष का अन्त हो गया तब विशाखाचार्य संघ-सहित दक्षिण से मध्यदेश को लौट आये।

दूसरा ग्रंथ, जिसमें उपर्युक्त प्रसङ्ग आया है, रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित है। रत्ननन्दि, अनन्तकीर्ति के शिष्य ललित-कीर्ति के शिष्य थे। उनका ठीक समय ज्ञात नहीं है पर वे पन्द्रहवीं सोलहवीं शताब्दि के लगभग अनुमान किये जाते हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः ऊपर के ही समान भद्रबाहु का प्राथमिक वृत्तान्त देकर कहा गया है कि वे जब उज्जयिनी आ गये तब वहाँ के राजा 'चन्द्रगुप्त' ने उनकी खूब भक्ति की और उनसे

---

नाम से किया है और कहा है कि वहाँ रक्तमणि ( beryl ) बहुत पाये जाते हैं। यहाँ के राष्ट्रवर्मा आदि राजाओं की राजधानी 'कीर्तिपुर' थी। कीर्तिपुर कदाचित् मैसूर जिले के हेगगुडे वन्कोटे तालुके में कपिनी नदी पर के आधुनिक 'किन्नूर' का ही प्राचीन नाम है। हरिषेण और जिनसेन कवि अपने को पुन्नट संघ के कहते हैं। यह संघ सम्भवतः 'किन्नूर' संघ का ही दूसरा नाम है जिसका उल्लेख शिलालेख नं० १६४ ( ८१ ) में आया है।

\* प्राप्य भाद्रपदं देशं श्रीमदुज्जयिनीभवम् ।

चकारानशनं धीरः स दिनानि बहून्यलम् ॥

समाधिमरणं प्राप्य भद्रबाहुर्दिवं ययौ ॥

अपने सोलह स्वप्नों का फल पूछा। इनके फल-कथन में भद्र-बाहु ने कहा कि यहाँ द्वादश वर्ष का दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। इस पर चन्द्रगुप्त ने उनसे दीक्षा ले ली। फिर भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित 'कर्नाटक' को जाने के लिये दक्षिण को चल दिये। जब वे एक वन में पहुँचे तब अपनी आयु पूरी हुई जान उन्होंने विशाखाचार्य को अपने स्थान पर नियुक्त कर उन्हें संघ को आगे ले जाने के लिये कहा और आप चन्द्रगुप्ति-सहित वहीं ठहर गये। संघ चौड देश को चला गया। थोड़े समय पश्चात् भद्रबाहु ने समाधिमरण किया। चन्द्रगुप्ति उनके चरण-चिह्न बनाकर उनकी पूजा करते रहे। विशाखाचार्य जब दक्षिण से लौटे तब चन्द्रगुप्ति मुनि ने उनका आदर किया। विशाखाचार्य ने भद्रबाहु की समाधि की वन्दना कर कान्यकुब्ज को प्रस्थान किया।

चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय नामक कन्नड काव्य में भी भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त की कुछ वार्ता आई है। यह ग्रन्थ शक सं० १६०२ का बना हुआ है। इसमें कथन है कि “श्रुतकेवली भद्रबाहु बेलगोल को आये और चिक्कवेट्ट (चन्द्रगिरि) पर ठहरे। कदाचित् एक व्याघ्र ने उन पर धावा किया और उनका शरीर विदीर्ण कर डाला। उनके चरणचिह्न अब तक गिरि पर एक गुफा में पूजे जाते हैं.. .....अर्हद्वलि की आज्ञा से दक्षिणाचार्य बेलगोल आये। चन्द्रगुप्त भी यहाँ तीर्थयात्रा को आये थे। इन्होंने दक्षिणाचार्य से दीक्षा ग्रहण की

और उनके बनवाये हुए मन्दिर की तथा भद्रबाहु के चरण-चिह्नों की पूजा करते हुए वहाँ रहे। कुछ कालोपरान्त दक्षिणाचार्य ने अपना पद चन्द्रगुप्त को दे दिया।”

शक सं० १७६१ के बने हुए देवचन्द्रकृत राजावलीकथा नामक कन्नड ग्रन्थ में यह वार्ता प्रायः रत्ननन्दिकृत भद्रबाहुचरित के समान ही पाई जाती है। पर इस ग्रन्थ में और भी कई छोटी-छोटी बातें दी हुई हैं जो अधिक महत्त्व की नहीं हैं। यहाँ कथन है कि श्रुतकेवली विष्णु, नन्दमित्र और अपराजित व पाँच सौ शिष्यों के साथ गोवर्धनाचार्य जम्बूस्वामी के समाधिस्थान की वन्दना करने के हेतु कोटिकपुर में आये। राजा पद्मरथ की सभा में भद्रबाहु ने एक लेख, जिसे अन्य कोई भी विद्वान् नहीं समझ सका था, राजा को समझाया। इससे उनकी विलक्षण बुद्धि का पता चला। कार्तिक की पूर्णमासी की रात्रि को पाटलिपुत्र के राजा चन्द्रगुप्त को सोलह स्वप्न हुए। प्रातःकाल यह समाचार पाकर कि भद्रबाहु नगर के उपवन में विराजमान हैं, राजा अपने मन्त्रियों-सहित उनके पास गये। राजा का अन्तिम स्वप्न यह था कि एक बारह फण का सर्प उनकी ओर आ रहा है। इसका फल भद्रबाहु ने यह बतलाया कि वहाँ बारह वर्ष का दुर्भिक्ष पड़नेवाला है। एक दिन जब भद्रबाहु आहार के लिये नगर में गये तब उन्होंने एक गृह के सामने खड़े होकर सुना कि उस घर में एक भूले में भूलता हुआ बालक जोर-जोर से चिल्ला रहा है।

वह शिशु बारह बार चिल्लाया पर किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी। इससे स्वामीजी को विदित हुआ कि दुर्भिक्ष प्रारम्भ हो गया है। राजा के मन्त्रियों ने दुर्भिक्ष को रोकने के लिये कई यज्ञ किये। पर चन्द्रगुप्त ने उन सबके पापों के प्रायश्चित्त-स्वरूप अपने पुत्र सिंहसेन को राज्य दे भद्रबाहु से जिन दीक्षा ले ली और उन्हीं के साथ हो गये। भद्रबाहु अपने बारह हजार शिष्यों-सहित दक्षिण को चल पड़े। एक पहाड़ी पर पहुँचने पर उन्हें विदित हुआ कि उनकी आयु अब बहुत थोड़ी शेष है; इसलिये उन्होंने विशाखाचार्य को संघ का नायक बनाकर उन्हें चाल और पाण्ड्य देश को भेज दिया। केवल चन्द्रगुप्त को उन्होंने अपने साथ रहने की अनुमति दी। उनके समाधिमरण के पश्चात् चन्द्रगुप्त उनके चरणचिह्नों की पूजा करते रहे। कुछ समय पश्चात् सिंहसेन नरेश के पुत्र भास्कर नरेश भद्रबाहु के समाधिस्थान की तथा अपने पिता-मह की बन्दना के हेतु वहाँ आये और कुछ समय ठहरकर उन्होंने वहाँ जिनमन्दिर निर्माण कराये, तथा चन्द्रगिरि के समीप बेलगोल नामक नगर बसाया। चन्द्रगुप्त ने उसी गिरि पर समाधिमरण किया।

इस सम्बन्ध में सबसे प्राचीन प्रमाण चन्द्रगिरि पर प्रार्थनाथ बस्ति के पास का शिलालेख ( नं० १ ) है। यह लेख श्रवणबेलगोल के समस्त लेखों में प्राचीनतम सिद्ध होता है। इस लेख में कथन है कि “महावीर स्वामी के पश्चात् परमर्षि

गौतम, लोहार्य, जम्बू विष्णुदेव, अमराजित, गोवर्द्धन, भद्रबाहु, विशाख, प्रोष्ठिल, कृतिकार्य, जय, सिद्धार्थ, धृतिषेण, बुद्धिलादि गुरुपरम्परा में होनेवाले भद्रबाहु स्वामी के त्रैकाल्यदर्शी निमित्त-ज्ञान द्वारा उज्जयिनी में यह कथन किये जाने पर कि वहाँ द्वादश वर्ष का वैषम्य ( दुर्भिक्ष ) पड़नेवाला है, सारे संघ ने उत्तरापथ से दक्षिणापथ को प्रस्थान किया और क्रम से वह एक बहुत समृद्धियुक्त जनपद में पहुँचा। यहाँ आचार्य प्रभाचन्द्र ने व्याघ्रादि व दरीगुफादि-संकुल सुन्दर कटवप्र नामक शिखर पर अपनी आयु अल्प ही शेष जान समाधितप करने की आज्ञा लेकर, समस्त संघ को आगे भेजकर व केवल एक शिष्य को साथ रखकर देह की समाधि-आराधना की।”

ऊपर इस विषय के जितने उल्लेख दिये गये हैं उनमें दो बातें सर्वसम्मत हैं—प्रथम यह कि भद्रबाहु ने बारह वर्ष के दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की और दूसरे यह कि उस वाणी को सुनकर जैनसंघ दक्षिणापथ को गया। हरिषेण के अनुसार भद्रबाहु दक्षिणापथ को नहीं गये। उन्होंने उज्जयिनी के समीप ही समाधिमरण किया और चन्द्रगुप्ति मुनि अपर नाम विशाखाचार्य संघ को लेकर दक्षिण को गये। भद्रबाहुचरित तथा राजावलीकथा के अनुसार भद्रबाहु स्वामी ने ही श्रवणबेलगोल तक संघ के नायक का काम किया तथा श्रवणबेलगोल की छोटी पहाड़ी पर वे अपने शिष्य चन्द्रगुप्त-सहित ठहर गये। मुनिवंशाभ्युदय तथा उपर्युल्लिखित सेरिङ्गपट्टम के दो लेख,

श्रवणबेलगोल के लेख नं० १७-१८, ४०, ५४ तथा १०८ भद्र-  
बाहु और चन्द्रगुप्त दोनों का चन्द्रगिरि से सम्बन्ध स्थापित  
करते हैं। पर जैसा कि ऊपर के वृत्तान्त से विदित होगा,  
शिलालेख नं० १ की वार्ता इन सबसे विलक्षण है। उसके  
अनुसार त्रिकालदर्शी भद्रबाहु ने दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी की,  
जैन संघ दक्षिणापथ को गया व कटवप्र पर प्रभाचन्द्र ने जैन  
संघ को आगे भेजकर एक शिष्य-सहित समाधि-आराधना की।  
यह वार्ता स्वयं लेख के पूर्व और अपर भागों में वैषम्य उपस्थित  
करने के अतिरिक्त ऊपर उल्लिखित समस्त प्रमाणों के विरुद्ध पड़ती  
है। भद्रबाहु दुर्भिक्ष की भविष्यवाणी करके कहाँ चले गये, प्रभा-  
चन्द्र आचार्य कौन थे, उन्हें जैन संघ का नायकत्व कब और  
कहाँ से प्राप्त हो गया इत्यादि प्रश्नों का लेख में कोई उत्तर नहीं  
मिलता। इस उलझन को सुलझाने के लिये हमने लेख के  
मूल की सूक्ष्म रीति से जाँच की। इस जाँच से हमें ज्ञात  
हुआ कि उपर्युक्त सारा बखेड़ा लेख की छठी पंक्ति में  
'आचार्यः प्रभाचन्द्रोनामावतितल... ..' इत्यादि पाठ से  
खड़ा होता है। यह पाठ डा० फ्लीट और रायबहादुर नर-  
सिंहाचार का है। श्रवणबेलगोल शिलालेखों के प्रथम संग्रह  
के रचयिता राइस साहब ने 'प्रभाचन्द्रोना.....' की जगह  
'प्रभाचन्द्रेण... ..' पाठ दिया है। डा० टा० के० लड्डू भी  
राइस साहब के पाठ को ठीक समझते हैं। 'प्रभाचन्द्रो' की  
जगह 'प्रभाचन्द्रेण' होने से उपर्युक्त सारा बखेड़ा सहज ही



तय हो जाता है। इससे 'आचार्यः' का सम्बन्ध भद्रबाहु स्वामी से हो जाता है और लेख का यह अर्थ निकलता है कि भद्रबाहु स्वामी संघ को आगे बढ़ने की आज्ञा देकर आप प्रभा-चन्द्र नामक एक शिष्य-सहित कटवप्र पर ठहर गये और उन्होंने वहीं समाधिमरण किया। इससे लेख के पूर्वापर भागों में सामञ्जस्य स्थापित हो जाता है और अन्य प्रमाणों से कोई विरोध नहीं रहता। मूल में 'प्रभाचन्द्रोना' 'प्रभाचन्द्रेणाम' भी पढ़ा जा सकता है। इस पाठ में कठिनाई केवल यह आती है कि 'म' अक्षर का कोई अर्थ व सम्बन्ध नहीं रहता। पर इसके परिहार में यह कहा जा सकता है कि लेख को खोदनेवाले ने 'प्रभाचन्द्रेणाम...' की जगह भ्रम से 'प्रभाचन्द्रे-णाम' खोद दिया है; वह 'न' को भूल गया। ऐसी भूलें शिलालेखों में बहुधा पाई जाती हैं। प्रभाचन्द्र के भद्रबाहु के शिष्य होने से ऊपर के समस्त प्रमाणों द्वारा यह बात सहज ही समझ में आ जाती है कि प्रभाचन्द्र चन्द्रगुप्त का ही नामान्तर व दीक्षा-नाम होगा।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ये भद्रबाहु और चन्द्र-गुप्त कौन थे और कब हुए। शिलालेख नं० १, जिसकी वार्त्ता पर हम ऊपर विचार कर चुके हैं, अपनी लिखावट पर से अपने को लगभग शक संवत् की पाँचवीं-छठी शताब्दि का सिद्ध करता है। अतः उसमें उल्लिखित भद्रबाहु और प्रभा-चन्द्र (चन्द्रगुप्त) शक की पाँचवीं छठी शताब्दि से पूर्व

होना चाहिये । दिगम्बर पट्टावलियों में महावीर स्वामी के समय से लगाकर शक की उक्त शताब्दियों तक 'भद्रबाहु' नाम के दो आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं, एक तो अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु और दूसरे वे भद्रबाहु जिनसे सरस्वती गच्छ की नन्दी आम्नाय की पट्टावली प्रारम्भ होती है । दूसरे भद्रबाहु का समय ईस्वी पूर्व ५३ वर्ष व शक संवत् से १३१ वर्ष पूर्व पाया जाता है । इनके शिष्य का नाम गुप्तिगुप्त पाया जाता है जो इनके पश्चात् पट्ट के नायक हुए । डा० फ्लीट का मत है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले ये ही द्वितीय भद्रबाहु हैं और चन्द्रगुप्त उनके शिष्य गुप्तिगुप्त का ही नामान्तर है । पर इस मत के सम्बन्ध में कई शंकाएँ उत्पन्न होती हैं । प्रथम तो गुप्तिगुप्त और चन्द्रगुप्त को एक मानने के लिये कोई प्रमाण नहीं है, दूसरे इससे उपर्युक्त प्रमाणों में जो चन्द्रगुप्त नरेश के राज्य त्यागकर भद्रबाहु से दीक्षा लेने का उल्लेख है, उसका कुछ खुलासा नहीं होता और तीसरे जिस द्वादश-वर्षीय दुर्भिक्ष के कारण भद्रबाहु ने दक्षिण की यात्रा की थी उस दुर्भिक्ष के द्वितीय भद्रबाहु के समय में पड़ने के कोई प्रमाण नहीं मिलते । इन कारणों से डा० फ्लीट की कल्पना बहुत कमजोर है और अन्य कोई विद्वान् उसका समर्थन नहीं करते । विद्वानों का अधिक झुकाव अब इसी एकमात्र युक्तिसंगत मत की ओर है कि दक्षिण की यात्रा करनेवाले भद्रबाहु अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु ही हैं और उनके

साथ जाने वाले उनके शिष्य चन्द्रगुप्त स्वयं भारत सम्राट्, चन्द्रगुप्त के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हैं। यद्यपि वीर निर्वाण के समय का अब तक अन्तिम निर्णय न हो सकने के कारण भद्रबाहु का जो समय जैन पट्टावलियों और ग्रंथों में पाया जाता है तथा चन्द्रगुप्त सम्राट् का जो समय आजकल इतिहास सर्व सम्मति से स्वीकार करता है उनका ठीक समीकरण नहीं होता, \* तथापि दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदाय के ग्रंथों से भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त समसामयिक सिद्ध होते हैं। इन दोनों सम्प्रदायों के ग्रंथों में इस विषय पर कई विरोध होने पर भी वे उक्त बात पर एकमत हैं। हेमचन्द्राचार्य के 'परिशिष्ट पर्व' से यह भी सिद्ध होता है कि इस समय बारह वर्ष का दुर्मित्त पड़ा था, तथा 'उस भयङ्कर दुष्काल के पड़ने पर जब साधु समुदाय का भिक्षा का अभाव होने लगा तब सब लोग निर्वाह के लिये समुद्र के समीप गाँवों में चले गये'। इस समय चतुर्दशपूर्वधर श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी

---

\* दि० जैन ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का आचार्यपद निर्वाण संवत् १३३ से १६२ तक २९ वर्ष रहा जो प्रचलित निर्वाण संवत् के अनुसार ईस्वीपूर्व ३६४ से ३६५ तक पड़ता है, तथा इतिहासानुसार चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्य ईस्वीपूर्व ३२१ से २९८ तक माना जाता है। इस प्रकार भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त के अन्तकाल में ६७ वर्ष का अन्तर पड़ता है। श्वेताम्बर ग्रंथों के अनुसार भद्रबाहु का समय नि० सं० १५६ से १७० तदनुसार ईस्वी पूर्व ३११ से ३१७ तक सिद्ध होता है। इसका चन्द्रगुप्त के समय के साथ प्रायः समीकरण हो जात है।

ने बारह वर्ष के महाप्राण नामक ध्यान की आराधना प्रारम्भ कर दी थी। परिशिष्ट पर्व के अनुसार भद्रबाहु स्वामी इस समय नेपाल की ओर चले गये थे और श्रांसंघ के बुलाने पर भी वे पाटलिपुत्र को नहीं आये जिसके कारण श्रीसंघ ने उन्हें संघबाह्य कर देने की भी धमकी दी। उक्त ग्रंथ में चन्द्रगुप्त के समाधि पूर्वक मरण करने का भी उल्लेख है।

इस प्रकार यद्यपि दिगम्बर और श्वेताम्बर ग्रन्थों में कई बारीकियों में मत-भेद है पर इन भेदों से ही मूल बातों की पुष्टि होती है क्योंकि उनसे यह सिद्ध होता है कि एक मत दूसरे मत की नकल मात्र नहीं है व मूल बातें दोनों के ग्रन्थों में प्राचीनकाल से चली आती हैं।

अब इस विषय पर भिन्न-भिन्न विद्वानों के मत देखिये। डा० ल्यूमन\* और डा० हार्नने† श्रुतकेवली भद्रबाहु की दक्षिण यात्रा को स्वीकार करते हैं। टामस साहब अपनी एक पुस्तक‡ में लिखते हैं कि “चन्द्रगुप्त जैन समाज के व्यक्ति थे यह जैन ग्रन्थकारों ने एक स्वयंसिद्ध और सर्व प्रसिद्ध बात के रूप से लिखा है जिसके लिये कोई अनुमान प्रमाण देने की आवश्यकता ही नहीं थी। इस विषय में लेखों के प्रमाण बहुत प्राचीन और साधारणतः सन्देह-रहित हैं। मैगस्थनीज

\* Vienna Oriental Journal VII, 382.

† Indian Antiquary XXI, 59-60.

‡ Jainism or the Early Faith of Asoka P. 23.

के कथनों से भी झलकता है कि चन्द्रगुप्त ने ब्राह्मणों के सिद्धान्तों के विपक्ष में श्रमणों ( जैन मुनियों ) के धर्मोपदेशों को अङ्गीकार किया था ।” टामस साहब इसके आगे यह भी सिद्ध करते हैं कि चन्द्रगुप्त मौर्य के पुत्र और प्रपौत्र बिन्दुसार और अशोक भी जैनधर्मावलम्बी थे । इसके लिये उन्होंने ‘मुद्राराक्षस’ ‘राजतरङ्गिणी’ तथा ‘आइने अकबरी’ के प्रमाण दिये हैं । श्रीयुक्त जायसवाल महादय लिखते हैं\* कि “प्राचीन जैनग्रंथ और शिलालेख चन्द्रगुप्त को जैन राजर्षि प्रमाणित करते हैं । मेरे अध्ययन ने मुझे जैनग्रंथों की ऐतिहासिक वार्ताओं का आदर करने को बाध्य किया है । कोई कारण नहीं है कि हम जैनियों के इस कथन को कि चन्द्रगुप्त अपने राज्य के अन्तिम भाग में राज्य को त्याग जिन दीक्षा ले मुनि वृत्ति से मरण को प्राप्त हुए, न मानें । मैं पहला ही व्यक्ति यह माननेवाला नहीं हूँ । मि० राइस, जिन्होंने श्रवण-बेलगोला के शिलालेखों का अध्ययन किया है, पूर्णरूप से अपनी राय इसी पक्ष में देते हैं और मि० व्ही० स्मिथ भी अन्त में इस मत की ओर झुके हैं ।” डा० स्मिथ लिखते हैं† कि “चन्द्रगुप्त मौर्य का घटना-पूर्ण राज्यकाल किस प्रकार समाप्त हुआ इस पर ठीक प्रकाश एक मात्र जैन कथाओं से ही

---

\* Journal of the Behar and Orissa Research Society Vol. III.

† Oxford History of India 75-76.

पड़ता है। जैनियों ने सदैव उक्त मौर्य सम्राट् को बिम्बसार ( श्रेणिक ) के सदृश जैन धर्मावलम्बी माना है और उनके इस विश्वास को झूठ कहने के लिये कोई उपयुक्त कारण नहीं है। इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है कि, शैशुनाग, नन्द और मौर्य राजवंशों के समय में जैन धर्म मगध प्रान्त में बहुत जोर पर था। चन्द्रगुप्त ने राजगद्दी एक कुशल ब्राह्मण की सहायता से प्राप्त की थी यह बात चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने के कुछ भी विरुद्ध नहीं पड़ती। 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक में एक जैन साधु का उल्लेख है जो नन्द नरेश के और फिर मौर्य सम्राट् के मन्त्री राक्षस का खास मित्र था।

“एक बार जहाँ चन्द्रगुप्त के जैनधर्मावलम्बी होने की बात मान ली तहाँ फिर उनके राज्य को त्याग करने व जैनविधि के अनुसार सल्लेखना द्वारा मरण करने की बात सहज ही विश्वसनीय हो जाती है। जैनग्रन्थ कहते हैं कि जब भद्रबाहु की द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षवाली भविष्यवाणी उत्तर भारत में सच होने लगी तब आचार्य बारह हजार जैनियों को साथ लेकर अन्य सुदेश की खोज में दक्षिण को चल पड़े। महाराज चन्द्रगुप्त राज्य त्यागकर सङ्घ के साथ हो लिये। यह सङ्घ श्रवण बेलगोला पहुँचा। यहाँ भद्रबाहु ने शरीर त्याग किया। राजर्षि चन्द्रगुप्त ने उनसे बारह वर्ष पीछे समाधिमरण किया। इस कथा का समर्थन श्रवणबेलगोला के मन्दिरों आदि के नामों, ईसा की सातवीं शताब्दि के उपरान्त के लेखों तथा दसवीं

शताब्दि के ग्रन्थों से होता है। इसकी प्रामाणिकता सर्वतः पूर्ण नहीं कही जा सकती किन्तु बहुत कुछ सोच-विचार करने पर मेरा भुकाव इस कथन की मुख्य बातों को स्वीकार करने की ओर है। यह तो निश्चित ही है कि जब ईस्वी पूर्व ३२२ में व इसके लगभग चन्द्रगुप्त सिंहासनारूढ़ हुए थे तब वे तरुण अवस्था में ही थे। अतएव जब चौबीस वर्ष के पश्चात् उनके राज्य का अन्त हुआ तब उनकी अवस्था पचास वर्ष से नीचे ही होगी। अतः उनका राजपाट त्याग देना उनके इतनी कम अवस्था में लुप्त हो जाने का उपयुक्त कारण प्रतीत होता है। राजाओं के इस प्रकार विरक्त हो जाने के अन्य भी उदाहरण हैं और बारह वर्ष का दुर्भिक्ष भी अविश्वसनीय नहीं है। संचेपतः अन्य कोई वृत्तान्त उपलब्ध न होने के कारण इस क्षेत्र में जैन कथन ही सर्वोपरि प्रमाण हैं।”

अब शिलालेखों में जो राजवंशों का परिचय पाया जाता है उसका सिलसिलेवार परिचय दिया जाता है।

**१ गङ्गवंश**—इस राजवंश का अब तक का ज्ञात इतिहास लेखों, विशेषतः ताम्रपत्रों पर से सङ्कलित किया गया है। इस वंश से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ताम्रपत्रों की डा० फ्लोट ने पूर्णरूप से जाँचकर यह मत प्रकाशित किया था कि वे सब ताम्रपत्र जाली हैं और गङ्गवंश की ऐतिहासिक सत्ता के लिये कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है। इसके पश्चात् मैसूर पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर रावबहादुर नरसिंहाचार ने इस वंश

के अन्य अनेक लेखों का पता लगाया जो उनकी जाँच में ठीक उतरे। इनके बल से उन्होंने गङ्गवंश की ऐतिहासिकता सिद्ध की है।

इस वंश का राज्य मैसूर प्रान्त में लगभग ईसा की चौथी शताब्दि से ग्यारहवीं शताब्दि तक रहा। आधुनिक मैसूर का अधिकांश भाग उनके राज्य के अन्तर्गत था जो गङ्गवाडि ८६००० कहलाता था। मैसूर में जो आजकल गङ्गडिकार (गङ्गवाडिकार) नामक किसानों की भारी जनसंख्या है वे गङ्गनरेशों की प्रजा के ही वंशज हैं। गङ्गराजाओं की सबसे पहली राजधानी 'कुवलाल' व 'कोलार' थी जो पूर्वी मैसूर में पालार नदी के तट पर है। पीछे राजधानी कावेरी के तट पर 'तलकाड' को हटा ली गई। आठवीं शताब्दि में श्रीपुरुष नामक गङ्गनरेश अपनी राजधानी सुविधा के लिये बङ्गलोर के समीप मण्णे व मान्यपुर में भी रखते थे। इसी समय में गङ्गराज्य अपनी उत्कृष्ट अवस्था पर पहुँच गया था। तलकाड ईसा की ११ हवीं शताब्दि के प्रारम्भ में चोल नरेशों के अधिकार में आ गया और तभी से गङ्गराज्य की इतिश्री हुई। आदि से ही गङ्गराज्य का जैनधर्म संघनिष्ठ सम्बन्ध रहा। लेख नं० ५४ (६७) के उल्लेख से ज्ञात होता है कि गङ्गराज्य की नींव डालने में जैनाचार्य सिंहनन्दि ने भारी सहायता की थी। सिंहनन्दाचार्य की इस सहायता का उल्लेख गङ्गवंश के अन्य कई लेखों में भी पाया जाता है, उदाहरणार्थ लेख नं०



३८७; उदयेन्दिरम् का दानपत्र ( सा० ई० ई० २, ३८७ ); कूडलु का दानपत्र ( मै० आ० रि० १८२१ पृ० २८ ); ए० क० ७, शिमोग ४; ए० क० ८ नगर ३५ व ३६ इत्यादि । इसके अतिरिक्त गोम्मटसार वृत्ति के कर्त्ता अभयचन्द्र त्रैविद्य-चक्रवर्ती ने भी अपने ग्रन्थ की उत्थानिका में इस बात का उल्लेख किया है । इन अनेक उल्लेखों से यद्यपि यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि जैनाचार्य ने गङ्गाराज्य की जड़ जमाने में किस प्रकार सहायता की थी तथापि यह बात पूर्णतः सिद्ध होती है कि गङ्गावंश की जड़ जमानेवाले जैनाचार्य सिंहनन्दि ही थे । कहा जाता है कि आचार्य पूज्यपाद देवनन्दि इसी वंश के सातवें नरेश दुर्विनीत के राजगुरु थे । गङ्गावंश के अन्य अनेक प्रकाशित लेख जैनाचार्यों से सम्बन्ध रखते हैं ।

लेख नं० ३८ ( ५८ ) में गङ्गानरेश मारसिंह के प्रताप का अच्छा वर्णन है । अनेक भारी भारी युद्धों में विजय पाकर अनेक दुर्ग किले आदि जीतकर व अनेक जैन मन्दिर और स्तम्भ निर्माण कराकर अन्त में अजितसेन भट्टारक के समीप सल्लेखना विधि से बङ्कापुर में उन्होंने शरीर त्याग किया । उन्होंने राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र ( चतुर्थ ) का अभिषेक किया था । यद्यपि इस लेख में उनके स्वर्गवास का समय नहीं दिया गया पर एक दूसरे लेख ( ए० क० १०, मूलबागलू ८४ ) में कहा गया है कि उन्होंने शक सं० ८८६ में शरीर त्याग किया था । गङ्गानरेश मारसिंह और राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज तृतीय इन

दोनों के बीच घनिष्ठ मित्रता थी। मारसिंह ने अनेक युद्ध कृष्णराज के लिये ही जीते थे। कूडलूर के दानपत्र (मै० आ० रि० १६२१ पृ० २६ सन् ८६३) में कहा गया है कि स्वयं कृष्णराज ने मारसिंह का राज्याभिषेक किया था।

मारसिंह के उत्तराधिकारी राचमल्ल (चतुर्थ) थे। इन्हीं के मन्त्री चामुण्डराज ने विन्ध्यगिरि पर चामुण्डरायवस्ती निर्माण कराई और गोम्मटेश्वर की वह विशाल मूर्ति उद्घाटित की (नं० ७५-७६ आदि)। लेख नं० १०६ (२८१) यद्यपि अधूरा है तथापि इसमें चामुण्डराय का कुछ परिचय पाया जाता है। उससे विदित होता है कि चामुण्डराय ब्रह्मचर्य कुल के थे और उन्होंने अपने स्वामी के लिये अनेक युद्ध जीते थे। इतना ही नहीं चामुण्डराय एक कवि भी थे। उनका लिखा हुआ चामुण्डराय पुगण नाम का एक कन्नड ग्रन्थ भी पाया जाता है। यह अधिकांश गद्य में है। इसमें चौबीस तीर्थंकरों के जीवन का वर्णन है। यह ग्रन्थ उन्होंने शक सं० ८०० में समाप्त किया था। इस ग्रन्थ में भी उनके कुल व गुरु अजितसेन आदि का परिचय पाया जाता है तथा किस प्रकार भिन्न भिन्न युद्ध जीतकर उन्होंने समर धुरन्धर, वीर-मात'ण्ड, रणरङ्गसिंग, वैरकुलकालदण्ड, भुजविक्रम, समर-परशुराम की उपाधियाँ प्राप्त की थीं इसका भी वर्णन इस ग्रन्थ में है। वे अपनी सत्यनिष्ठा के कारण सत्ययुधिष्ठिर कहलाते थे। कई लेखों में उनका उल्लेख केवल 'राय' नाम से

ही किया गया है नं० १३७ ( ३४५ ) । लेख नं० ६७ ( १२१ ) में उल्लेख है कि चामुण्डराय के पुत्र, व अजितसेन के शिष्य जिनदेवन ने बेलगोल में एक जैन मन्दिर निर्माण कराया था ।

इनके अतिरिक्त अन्य कई लेखों में गङ्गवंश के ऐसे नरेशों का उल्लेख मात्र आया है, जिनका अभी तक अन्य कहीं कोई विशेष परिचय नहीं पाया गया । लेख नं० २५६ ( ४१५ ) में जिस शिवमारन बसदि का उल्लेख है वह सम्भवतः गङ्गवंश के शिवमार नरेश, ( सम्भवतः शिवमार द्वि० श्री-पुरुष के पुत्र ) ने निर्माण कराई थी । लेख नं० ६० ( १३८ ) में किसी गङ्गवज्र अपर नाम रक्समणि का उल्लेख है जिनके बोयिग नाम के एक वीर योद्धा ने वहेग और कोण्येगङ्ग के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये । वहेग राष्ट्रकूटनरेश अमोघवर्ष तृतीय का उपनाम भी था । गङ्गवज्र मारसिंग नरेश की उपाधि भी थी ( नं० ३ . ( ५६ ) । लेख नं० ६१ ( १३८ ) में लोकविद्याधर अपर नाम उदयविद्याधर का उल्लेख है । निश्चयतः नहीं कहा जा सकता कि यह भी कोई गङ्गवंशी नरेश का नाम है या नहीं; किन्तु कुछ गङ्गनरेशों की विद्याधर उपाधि थी । उदाहरणार्थ, रक्सगङ्ग के दत्तक पुत्र का नाम राजविद्याधर था ( ए० क० ८, नगर ३५ ) व मारसिंग की उपाधि गङ्गविद्याधर थी ३८ ( ५६ ) । अतएव सम्भव है कि लोकविद्याधर व उदयविद्याधर भी कोई गङ्गनरेश रहा हो । नं० २३५ ( १५० ) में गङ्गराज्य व एरेगङ्ग के महामन्त्री नर-

सिंग के एक नाती नागवर्म के सल्लेखना मरण का उल्लेख है । सूडि व कूडलूर के दान-पत्रों ( ए० इ० ३, १५८; म० आ० रि० १८२५, पृ० २५ ) में गङ्गनरेश एरेयप्प और उनके पुत्र नरसिंग का उल्लेख है । सम्भव है कि उपर्युक्त लेख के एरगङ्ग और नरसिंग ये ही हों ।

कुछ लेखों में बिना किसी राजा के नाम के गंगवंश मात्र का उल्लेख है [ लेख नं० १६३ ( ३७ ); १५१ ( ४११ ); २४६ ( १६४ ); ४६८ ( ३७८ ) ] । लेख नं० ५५ ( ६८ ) में उल्लेख है कि जो जैन धर्म हास अवस्था को प्राप्त हो गया था उसे गोपनन्दि ने पुनः गङ्गकाल के समान समृद्धि और ख्याति पर पहुँचाया । लेख नं० ५४ ( ६७ ) में उल्लेख है कि श्रीविजय का गङ्गनरेशों ने बहुत सम्मान किया था । लेख नं० १३७ ( ३४५ ) में उल्लेख है कि हुल्ल ने जिस केल्लंगेरे में अनेक बस्तियाँ निर्माण कराई थीं उसकी नींव गङ्गनरेशों ने ही डाली थी । लेख नं० ४८६ में गङ्ग वाडि का उल्लेख है ।

**२ राष्ट्रकूटवंश**—राष्ट्रकूटवंश का दक्षिण भारत में इतिहास ईस्वी सन् की आठवीं शताब्दि के मध्यभाग से प्रारम्भ होता है । इस समय राष्ट्रकूटवंश के दन्तिदुर्ग नामक एक राजा ने चालुक्यनरेश कीर्तिवर्मा द्वितीय को परास्त कर राष्ट्रकूट साम्राज्य की नींव डाली । उसके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम ने चालुक्य राज्य के प्रायः सारे प्रदेश अपने आधीन कर लिये । कृष्ण के पश्चात् क्रमशः गोविन्द ( द्वितीय ) और ध्रुव ने राज्य

किया। इनके समय में राष्ट्रकूट राज्य का विस्तार और भी बढ़ गया। आगामी नरेश गोविन्द तृतीय के समय में राष्ट्रकूट राज्य विन्ध्य और मालवा से लगाकर काश्मी तक फैल गया। इन्होंने अपने भाई इन्द्रराज को लाट ( गुजरात ) का सूबेदार बनाया। गोविन्द तृतीय के पश्चात् अमोघवर्ष राजा हुए जिन्होंने लगभग सन् ८१५ से ८७७ ईस्वी तक राज्य किया। इन्होंने अपनी राजधानी नासिक को छोड़ मान्यखेट में स्थापित की। इनके समय में जैन धर्म की खूब उन्नति हुई। अनेक जैन कवि—जैसे जिनसेन, गुणभद्र, महावीर आदि—इनके समय में हुए। गुणभद्राचार्य ने उत्तर पुराण में कहा है कि राजा अमोघवर्ष जिनसेनाचार्य को प्रणाम करके अपने को धन्य समझता था। अमोघवर्ष स्वयं भी कवि थे। इनकी बनाई हुई 'रत्नमालिका' नामक पुस्तक से ज्ञात होता है कि वे अन्त समय में राज्य को त्यागकर मुनि हो गये थे।

“विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका।

रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलंकृतिः॥”

अमोघवर्ष के पश्चात् कृष्णराज द्वितीय हुए जिनकी अकाल-वर्ष, शुभतुङ्ग, श्रोपृथ्वीवल्लभ, वल्लभराज, महाराजाधिराज, परमेश्वर परमभट्टारक उपाधियाँ पाई जाती हैं। इनके पश्चात् इन्द्र (तृतीय) हुए जिन्होंने कन्नौज पर चढ़ाई कर वहाँ के राजा महीपाल को कुछ समय के लिये सिंहासनच्युत कर दिया। इनके उत्तराधिकारियों में कृष्णराज तृतीय सबसे प्रतापी हुए

जिन्होंने राजादित्य चोल के ऊपर सन् ८४८ में बड़ी भारी विजय प्राप्त की। इस समय के युद्धों का मूल कारण धार्मिक था। राष्ट्रकूटनरेश जैनधर्मपोषक और चोलनरेश शैव धर्मपोषक थे। इनके समय में सोमदेव, पुष्पदन्त, इन्द्रनन्दि आदि अनेक जैनाचार्य हुए हैं। कृष्णराज के उत्तराधिकारी खोटिगदेव और उनके पीछे कर्कराज द्वितीय हुए। इनके समय में चालुक्यवंश पुनः जागृत हो उठा। इस वंश के तैल व तैलप ने कर्कराज को सन् ८७३ में बुरी तरह परास्त कर दिया जिससे राष्ट्रकूट वंश का प्रताप सदैव के लिये अस्त हो गया। जैसा कि आगे विदित होगा, लेख नं० ५७ ( शक सं० ८०४ ) में कृष्णराज तृतीय के पौत्र एक इन्द्रराज ( चतुर्थ ) का भी उल्लेख है व लेख नं० २८ में कहा गया है कि गङ्गनरेश मारसिंह ने इन्द्र का अभिषेक किया था। सम्भवतः राष्ट्रकूटवंश के हितैषी गङ्गनरेश ने राष्ट्रकूट राज्य को रक्षित रखने के लिये यह प्रयत्न किया पर इतिहास में इसका कोई फल देखने में नहीं आता। दक्षिण का राष्ट्रकूटवंश इतिहास के सफे से उड़ गया।

अब इस संग्रह के लेखों में इस वंश के जो उल्लेख हैं उनका परिचय कराया जाता है।

इस वंश के वहेग व अमोघवर्ष तृतीय ने कोण्य गंग के साथ गङ्गवज्र व रक्समणि के विरुद्ध युद्ध किया था, ऐसा लेख नं० ६० ( १३८ ) ( अनु० शक ८६२ ) के उल्लेख से

ज्ञात होता है। लेख नं० १०६ (२=१) (अनु० शक ६५०) से ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूटनरेश इन्द्र की आज्ञा से चामुण्डराय के स्वामी जगदेकवीर राचमल्ल ने वज्रलदेव को परास्त किया था। लेख नं० ३८ ( ५६ ) ( शक ८६६ ) से विदित होता है कि राष्ट्रकूटनरेश कृष्ण तृतीय के लिये गङ्गनरेश मारसिंह ने गुर्जर प्रदेश को जीता था व राष्ट्रकूट नरेश इन्द्र ( चतुर्थ ) का राज्याभिषेक किया था। इन उल्लेखों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि गङ्गवंश और राष्ट्रकूटवंश के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध था। इस वंश का सबसे प्राचीन लेख, जो इस संग्रह में आया है, लेख नं० २४ ( ३५ ) (अनु० शक ७२) है। इस लेख में ध्रुव के पुत्र व गोविन्द ( तृतीय ) के ज्येष्ठ भ्राता रणावलोक कम्बय्य का उल्लेख है। एक लेख ( ए० क० ४, हेगडदेव-नकोटे ६१ ) से ज्ञात होता है कि जब गङ्गाज शिवमार द्वितीय को ध्रुव ने कैद कर लिया था तब राजकुमार कम्ब गङ्गप्रदेश के शासक नियुक्त किये गये थे व ए० क० ६, नेलमङ्गल ६१ से ज्ञात होता है कि कम्ब शक सं० ७२४ ( ई० सन् ८०२ ) में गङ्गप्रदेश का शासन कर रहे थे। हाल ही में चामराज नगर से कुछ ताम्रपत्र मिले हैं ( मै० आ० रि १६२० पृ० ३१ ) जिनसे ज्ञात होता है कि जिस समय कम्ब का शिविर तलवन-नगर ( तलकाड ) में था तब उन्होंने अपने पुत्र शङ्करगण्य की प्रार्थना से शक सं० ७२६ ( सन् ८०७ ई० ) में एक ग्राम का दान जैनाचार्य वर्धमान को दिया था। अन्य प्रमाणों से ज्ञात

हुआ है कि ध्रुव नरेश ने अपना उत्तराधिकारी अपने कनिष्ठ पुत्र गोविन्द ( तृतीय ) को बनाया था व कम्ब को गङ्गप्रदेश दिया था । इस हेतु कम्ब ने गोविन्द के विरुद्ध तैयारी की पर अन्त में उन्हें गोविन्द का आधिपत्य स्वीकार करना पड़ा ।

लेख नं० ५७ ( १३३ ) में इन्द्र चतुर्थ की किसी गेंद के खेल में चतुराई आदि का वर्णन है व उल्लेख है कि उन्होंने शक सं० ६०४ में श्रवणवेल्लुल में सल्लेखना मरण किया । लेख में यह भी कहा गया है कि इन्द्र कृष्ण ( तृतीय ) के पौत्र, गङ्गगंगेय ( बूतुग ) के कन्यापुत्र व राजचूडामणि के दामाद थे । यह विदित नहीं हुआ कि ये राजचूडामणि कौन थे । इन्द्र की रटुकन्दर्प, राजमार्तण्ड, चलङ्कराव, चलदग्गलि, कीर्तिनारायण, एलेवबेडेंग, गेडेगलाभरण, कलिगलोल्लगण्ड और वीरर वीर ये उपाधियाँ थीं । जैसा ऊपर कहा जा चुका है, गङ्गनरेश मारसिंह ने इन्द्र का राज्याभिषेक किया था । लेख नं० ५८ ( १३४ ) 'भावणगन्धहस्ति' उपाधिधारी एक वीर योधा पिट्ट की मृत्यु का स्मारक है । लेख में इस वीर के पराक्रम-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि उसे राजचूडामणि मार्गेडे-मल्ल ने अपना सेनापति बनाया था । लेख की लिपि और राजचूडामणि व चित्रभानु संवत्सर के उल्लेख से अनुमान होता है कि यह भी इन्द्र चतुर्थ के समय का है ।

प्रसङ्गवश लेख नं० ५४ ( ६५ ) में साहसतुङ्ग और कृष्ण-राज का उल्लेख है । अकलङ्कदेव ने अपनी विद्वत्ता का वर्णन



साहसतुङ्ग को सुनाया था ( पद्य नं० २१ ), और परवादि-मल्ल ने अपने नाम की सार्थकता कृष्णराज को समझाई थी ( पद्य नं० २६ ) । ये दोनों क्रमशः राष्ट्रकूटनरेश दन्तिदुर्ग और कृष्ण द्वितीय अनुमान किये जाते हैं ।

**३ चालुक्यवंश**—चालुक्यनरेशों की उत्पत्ति राजपुताने के सोलङ्की राजपूतों में से कही जाती है । दक्षिण में इस राजवंश की नाँव जमानेवाला एक पुलाकेशी नाम का सामन्त था जो इतिहास में पुलाकेशी प्रथम के नाम से प्रख्यात हुआ है । इसने सन् ५५० ईस्वी के लगभग दक्षिण के बीजापुर जिले के वातापि ( आधुनिक बादामी ) नगर में अपनी राजधानी बनाई और उसके आसपास का कुछ प्रदेश अपने अधीन किया । इसके उत्तराधिकारी कीर्तिवर्मा, मङ्गलेश और पुलाकेशी द्वितीय हुए जिन्होंने चालुक्यराज्य को क्रमशः खूब फैलाया । पुलाकेशी द्वितीय के समय में चालुक्यराज्य दक्षिण भारत में सबसे प्रबल हो गया । इस नरेश ने उत्तर के महाप्रतापी हर्षवर्धन नरेश की भी दक्षिण की ओर प्रगति रोक दी । इस राजा की कीर्ति विदेशों में भी फैली और ईरान के बादशाह खुसरो ( द्वितीय ) ने अपना राजदूत चालुक्य राजहरिवर में भेजा । पुलाकेशी द्वितीय ने सन् ६०८ से ६४२ ईस्वी तक राज्य किया । पर उसके अन्तिम समय में पल्लव नरेशों ने चालुक्यराज्य की नाँव हिला दी । उसके उत्तराधिकारी विक्रमादित्य प्रथम के समय में इस वंश की एक शाखा ने

गुजरात में राज्य स्थापित किया। आठवीं शताब्दी के मध्य भाग में दन्तिदुर्ग नामक एक राष्ट्रकूट राजा ने इस वंश के कीर्तिवर्मा द्वितीय को बुरी तरह हराकर राष्ट्रकूटवंश की जड़ जमाई। चालुक्यवंश कुछ समय के लिये लुप्त हो गया।

दशमी शताब्दी के अन्तिम भाग में चालुक्यवंश के तैल नामक राजा ने अन्तिम राष्ट्रकूट नरेश कर्क द्वितीय को हराकर चालुक्यवंश को पुनर्जीवित किया। इस समय से चालुक्यों की राजधानी कल्याणी में स्थापित हुई। इसके उत्तराधिकारियों को चोल नरेशों से अनेक युद्ध करना पड़ा। सन् १०७६ से ११२६ तक इस वंश के एक बड़े प्रतापी राजा विक्रमादित्य षष्ठम ने राज्य किया। इन्हीं के समय में बिल्हण कवि ने 'विक्रमाङ्गदेवचरित' काव्य रचा। इनके उत्तराधिकारियों के समय में चालुक्यराज्य के सामन्त नरेश देवगिरि के यादव और द्वारासमुद्र के होयसल स्वतंत्र हो गये और सन् ११८० में चालुक्य साम्राज्य की इतिश्री हो गई।

अब इस संग्रह के लेखों में जो इस वंश के उल्लेख हैं उनका परिचय दिया जाता है।

लेख नं० ३८ ( ५८ ) ( शक ८८६ ) में गङ्गनरेश मारसिंह के प्रताप-वर्णन में कहा गया है कि उन्होंने चालुक्यनरेश राजादित्य को परास्त किया था। नं० ३३७ (१५२) में किसी चगभक्षण चक्रवर्ती उपाधिधारी गोगि नाम के एक सामन्त का उल्लेख है। यह संभवतः वही चालुक्य सामन्त

है जिसका उल्लेख ए० क० ३, मैसूर ३७ के लेख में पाया जाता है। इस लेख में वे 'समधिगतपञ्चमहाशब्द' महा-सामन्त कहे गये हैं। जहाँ से यह लेख मिला है उसी वरुण नामक ग्राम में अन्य भी अनेक वीरगल हैं जिनमें गोगि के अनुजीवी योद्धाओं के रण में मारे जाने के उल्लेख हैं ( मै० आ० रि० १८१६ पृ० ४६-४७ )। लेख नं० ४५ ( १२५ ) और ५८ ( ७३ ) में उल्लेख है कि होयसलनरेश विष्णुवर्धन के सेनापति गङ्गराज ने चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्ल पेर्माडि-देव ( विक्रमादित्य षष्ठ ( १०७६-११२६ ई० ) को भारी पराजय दी। इन लेखों में गङ्गराज का कन्नोगल में चालुक्य सेना पर रात्रि में धावा मारने व उसे हराकर उसकी रसद व वाहन आदि सब स्वाधीन कर अपने स्वामी को देने का जोर-दार वर्णन है। नं० १४४ ( ३८४ ) होयसलवंश का लेख है पर उसके आदि में चालुक्याभरण त्रिभुवनमल्ल की राज्य-वृद्धि का उल्लेख है जिससे होयसल राज्य के ऊपर त्रिभुवन-मल्ल के आधिपत्य का पता चलता है। लेख नं० ५५ ( ६८ ) में मलधारि गुणचन्द्र "मुनीन्द्र बलिपुरे मल्लिकामोद शान्तीशच-रणार्चकः" कहे गये हैं ( पद्य नं० २० )। अन्य अनेक लेखों ( ए० क० ७, शिकारपूर २० अ, १२५, १२६, १५३; ए० इ० १२, १४४ ) से ज्ञात हुआ है कि मल्लिकामोद चालुक्य-नरेश जयसिंह प्रथम की उपाधि थी। इससे अनुमान किया जा सकता है कि सम्भवतः बलिपुर में शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा

जयसिंह नरेश ने ही कराई थी। इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ५४ ( ६७ ) में उल्लेख है कि वादिराज ने चालुक्य राजधानी में भारी ख्याति प्राप्त की थी तथा जयसिंह ( प्रथम ) ने उनकी सेवा की थी ( पद्य ४१, ४२ ) इसी लेख में यह भी उल्लेख है कि जिन जैनाचार्य को पांड्यनरेश ने स्वामी की उपाधि दी थी उन्हें ही आहवमल्ल ( चालुक्यनरेश १०४२-१०६८ ई० ) ने शब्दचतुर्मुख की उपाधि प्रदान की थी। लेख नं० १२४ ( ३२७ ) व १३७ ( ३४५ ) में होयसल नरेश एरेयङ्ग चालुक्य नरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं ( पद्य नं० ८ )।

**४ होयसलवंश**—पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में कादुर जिन्ने के मुद्देगेरे तालुका में 'अंगडि' नाम का एक स्थान है। यही स्थान होयसल नरेशों का उद्गमस्थान है। इसी का प्राचीन नाम शशकपुर है जहाँ पर अब भी वासन्तिका देवी का मन्दिर विद्यमान है। यहाँ पर 'सल' नामक एक सामन्त ने एक व्याघ्र से जैनमुनि की रक्षा करने के कारण पोयसल नाम प्राप्त किया। इस वंश के भावी नरेशों ने अपने को 'मलपरोल्-गण्ड' अर्थात् 'मलपाओं' ( पहाड़ सामन्तों ) में मुख्य कहा है। इसी से सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में होयसलवंश पहाड़ी था। इस वंश के एक 'काम' नाम के नृप के कुछ शिलालेख मिले हैं जिनमें उसके कुर्ग के कोङ्गाल्व नरेशों से

युद्ध करने के समाचार पाये जाते हैं। होयसलनरेश इस समय चालुक्यनरेश के माण्डलिक राजा थे। जिस समय ईसा की ११ वीं शताब्दि के प्रारम्भ में चोलनरेशों द्वारा गङ्ग-वंश का अन्त हो गया उस समय होयसल माण्डलिकों को अपना प्रादल्य बढ़ाने का अवसर मिला। 'काम' के उत्तराधिकारी 'विनयादित्य' ने चोलों से लड़-भिड़कर अपना प्रभुत्व बढ़ाया यहाँ तक कि चालुक्यनरेश सोमेश्वर आहवमल्ल के महामण्डलेश्वरों में विनयादित्य का नाम गङ्गवाडि ६६००० के साथ लिया जाने लगा। विनयादित्य के उत्तराधिकारी बल्लाल ने अपनी राजधानी शशपुरी से 'बेलूर' में हटा ली। द्वारा-समुद्र में भी उनकी राजधानी रहने लगी। इन्होंने चङ्गाव-नरेशों से युद्ध किया था। इनके उत्तराधिकारी विष्णुवर्द्धन के समय में होयसल नरेशों का प्रभाव बहुत ही बढ़ गया। गङ्गवाडि का पुराना राज्य सब उनके आधीन हो गया और विष्णुवर्द्धन ने कई अन्य प्रदेश भी जीते। प्रारम्भ में विष्णु-वर्द्धन जैन धर्मावलम्बी थे पर पीछे वैष्णव हो गये थे। तथापि जैन धर्म में उनकी सहानुभूति बनी ही रही। विष्णुवर्द्धन ने लगभग सन् ११०६ से ११४१ तक राज्य किया और फिर उनके पुत्र नरसिंह ने सन् ११७३ तक। नरसिंह ने अपने पिता के समान ही होयसल राज्य की वृद्धि की। उनके पुत्र वीर बल्लाल के समय में यह राज्य चालुक्य साम्राज्य के अन्तर्गत नहीं रहा और स्वतंत्र हो गया। वीर बल्लाल ने सन् १२२०

तक राज्य किया। इसके पश्चात् वीर बल्लाल के उत्तराधिकारियों ने होयसल राज्य को नब्बे वर्ष तक और कायम रक्खा। सन् १३१० ईस्वी में दक्षिण पर मुसलमानों की चढ़ाई हुई। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफूर ने होयसल राज्य को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला, होयसलनरेश को पकड़कर कैद कर लिया और राजधानी द्वारा-समुद्र का भी नाश कर डाला। द्वारासमुद्र का पूर्णतः सत्यानाश मुसलमानी फौजों ने सन् १३२६-२७ में किया।

अब इस वंश के सम्बन्ध के जो उल्लेख संगृहीत लेखों में आये हैं उनका परिचय दिया जाता है।

इस संप्रह में होयसलवंश के सबसे अधिक लेख हैं। लेख नं० ५३ ( १४३ ), ५६ ( १३२ ), १४४ ( ३४८ ) व ४६३ में विनयादित्य से लगाकर विष्णुवर्धन तक; लेख नं० १३७ ( ३४५ ) और १३८ ( ३४६ ) में विनयादित्य से नारसिंह ( प्रथम ) तक व १२४ ( ३२७ ), १३० ( ३३५ ) और ४६१ में विनयादित्य से बल्लाल ( द्वितीय ) तक की वंशपरम्परा पाई जाती है। नं० ५६ ( १३२ ) में इस वंश की उत्पत्ति का इस प्रकार वर्णन पाया जाता है—“विष्णु के कमलनाल से उत्पन्न ब्रह्मा के अत्रि, अत्रि के चन्द्र, चन्द्र के बुध, बुध के पुरुरव, पुरुरव के आयु, आयु के नहुष, नहुष के ययाति व ययाति के यदु नामक पुत्र उत्पन्न हुए। यदु के वंश में अनेक नृपति हुए। इस वंश के प्रख्यात नरेशों में एक सल नामक नृपति हुए। एक

समय एक मुनिवर ने एक कराल व्याघ्र को देखकर कहा 'पोयसल' 'हे सल, इसे मारो' । इस वृत्तान्त पर से राजा ने अपना नाम पोयसल रक्खा और व्याघ्र का चिह्न धारण किया । इसके आगे द्वारावती के नरेश पोयसल कहलाये और व्याघ्र उनका लाञ्छन पड़ गया । इन्हीं नरेशों में विनयादित्य हुए ।<sup>१</sup> अन्य शिलालेखों ( ए० क० ५, अर्सिकेरे १४१, १५७ ) से ज्ञात होता है कि विनयादित्य के पिता नृप काम होयसल थे । अनेक लेखों ( ए० क० ५, मञ्जराबाद ४३; अर्कलगुद ७६; ए० क० ६, मूडुगेरे १६ ) से सिद्ध है कि नृप काम ने भी उसी प्रदेश पर राज्य किया था । लेख नं० ४४ ( ११८ ) में भी नृप काम का एचि के रत्नक के रूप में उल्लेख है ( पद्य ५ ) अतएव यह कुछ समझ में नहीं आता कि उपर्युक्त वंशावली में उनका नाम क्यों नहीं सम्मिलित किया गया । विनयादित्य के विषय में लेख नं० ५४ ( ६७ ) में कहा गया है कि उन्होंने शान्तिदेव मुनि की चरणसेवा से राज्यलक्ष्मी प्राप्त की थी ( पद्य नं० ५१ ), तथा लेख नं० ५३ ( १४३ ) में कहा गया है कि उन्होंने कितने ही तालाब व कितने ही जैनमन्दिर आदि निर्माण कराये थे यहाँ तक कि ईंटों के लिए जो भूमि खोदी गई वहाँ तालाब बन गये, जिन पर्वतों से पत्थर निकाला गया वे पृथ्वी के समतल हो गये, जिन रास्तों से चूने की गाड़ियाँ निकलीं वे रास्ते गहरी घाटियाँ हो गये । पोयसलनरेश जैनमंदिर निर्माण कराने में ऐसे दत्तचित्त थे । ( पद्य नं० ४—५ ) ।

विनयादित्य के कैलेयबरसि रानी से एरेयङ्ग पुत्र हुए जो लेख नं० १२४ ( ३२७ ) व १३७ ( ३४५ ) में चालुक्यनरेश की दक्षिण बाहु कहे गये हैं । लेख नं १३८ ( ३४६ ) के कई पद्यों में इस नरेश के प्रताप का वर्णन पाया जाता है । वे वहाँ 'चत्रकुलप्रदीप' व 'चत्रमौलिमणि' 'साक्षात्समर-कृतान्त' व मालवमण्डलेश्वर पुरी धारा के जलानेवाले, कराल चोलकटक को भगानेवाले, चक्रगोट्ट के हरानेवाले, व कलिङ्ग का विध्वंस करनेवाले कहे गये हैं ।

लेख नं० ४६२ ( शक. १०१५ ) विनयादित्य के पुत्र एरेयङ्ग के समय का है । इस लेख में एरेयङ्ग और उनके गुरु गोप-नन्दि की कीर्ति के पश्चात् नरेश द्वारा चन्द्रगिरि की बस्तियों के जीर्णोद्धार के हेतु गोपनन्दि को कुछ ग्रामों का दान दिये जाने का उल्लेख है । एरेयङ्ग गङ्गमण्डल पर राज्य करते थे, लेख में इसका भी उल्लेख है । एरेयङ्ग की रानी एचलदेवी से बल्लाल, विष्णुवर्धन और उदयादित्य ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए ।

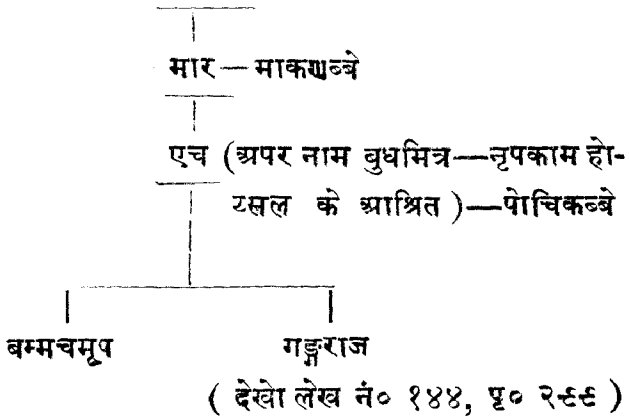
विष्णुवर्धन की उपाधियों व प्रतापादि का वर्णन लेख नं० ५३ ( १४३ ), ५६ ( १३२ ), १२४ ( ३२७ ), १३७ ( ३४५ ), १३८ ( ३४६ ), १४४ ( ३८४ ) और ४६३ में पाया जाता है । वे महामण्डलेश्वर, समधिगतपञ्चमहाशब्द, त्रिभुवनमल्ल, द्वारावतीपुरवराधीश्वर, यादवकुलाम्बरद्युमणि, सम्यक्चूड़ा-मणि, मलपरोल्गण्ड, तलकाडु-कोङ्ग-नङ्गलि-कोय्तूर-उच्छङ्गि-नोलम्बवाडि-हानुगल-गोण्ड, भुजबल वीरगङ्ग आदि प्रताप-



सूचक पदवियों से विभूषित किये गये हैं। उन्होंने इतने दुर्जय दुर्ग जीते, इतने नरेशों को पराजित किया व इतने आश्रितों को उच्च पदों पर नियुक्त किया कि जिससे ब्रह्मा भी चकित हो जाता है। लेखों में उनकी विजयों का खूब वर्णन है। लेख नं० २२६ (१३७) जो शक सं० १०३६ का है विष्णुवर्द्धन के राज्यकाल का ही है। इस लेख में पोयसलसेट्टि और नेमिसेट्टि नाम के दो राजव्यापारियों का उल्लेख है। इन व्यापारियों की माताओं माचिकब्बे और शान्तिकब्बे ने जिनमन्दिर और नन्दाश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्ति मुनि से जिन दीक्षा ले ली। यह मन्दिर चन्द्रगिरि पर तेरिन वस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। लेख नं० ४४५ ( ३६६ ) अधूरा है पर इसमें विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है। नं० ४७८ ( ३८८ ) से ज्ञात होता है कि इस नृपति के हिरियदण्डनायक, स्वामिद्रोहघरट्ट गङ्गराज ने बेलगुल में जिननाथपुर निर्माण कराया। यह लेख बहुत घिस गया है। विदित होता है कि गङ्गराज ने उक्त नरेश की अनुमति से कुछ दान भी मन्दिर को दिया था। लेख में कोलग का उल्लेख है। 'कोलग' एक माप विशेष था। लेख नं० ४६३ (शक १०४७) में विष्णुवर्द्धन के वस्तियों के जीर्णोद्धार व ऋषियों को आहारदान के हेतु शल्य ग्राम के दान का उल्लेख है। यह दान नन्दि संघ, द्रमिड गण, अरुङ्गलान्वय के श्रीपाल त्रैविद्यदेव को दिया गया। लेख में उक्त अन्वय की परम्परा भी है। लेख नं० ४६७ में चालुक्य

त्रिभुवनमल्ल के साथ-साथ विष्णुवर्द्धन का उल्लेख है जिससे सिद्ध होता है कि विष्णुवर्द्धन चालुक्यों के आधिपत्य को स्वीकार करते थे। इस लेख में नयकीर्ति के स्वर्गवास का भी उल्लेख है। लेख नं० ४५ ( १२५ ), ५६ ( ७३ ), ६० ( २४० ), १४४ ( ३८४ ) ३६० ( २५१ ) तथा ४८६ ( ३६७ ) विष्णुवर्द्धन नरेश ही के समय के हैं। इन लेखों में गङ्गराज की वंशावली तथा उनके प्रतापमय व धार्मिक कार्यों का वर्णन पाया जाता है। गङ्गराज का वंशवृत्त इस प्रकार है—

कौण्डिन्यगोत्रोय नागवर्मा



लेख नं० ४४ ( ११८ ) में गङ्गराज की ये उपाधियाँ पाई जाती हैं—समधिगतपञ्चमहाशब्द, महासामन्ताधिपति, महा-प्रचण्डदण्डनायक, वैरिभयदायक, गोत्रपवित्र, बुधजनमित्र, श्रीजैनधर्माश्रिताम्बुधिप्रवर्द्धनमुधाकर, सम्यक्त्वरत्नाकर, आहार-

भयभैषज्यशास्त्रदानविनोद, भव्यजनहृदयप्रमोद, विष्णुवर्द्धन-  
भूपालहोयसलमहाराजराज्याभिषेकपूर्णकुम्भ, धर्महर्म्योद्धरण-  
मूलस्तम्भ और द्रोहधरट्ट । इसी लेख में यह भी कहा गया  
है कि गङ्गराज के पिता मुल्लूर के कनकनन्दि आचार्य के शिष्य  
थे । चालुक्यवंशवर्णन में कहा जा चुका है कि इन्होंने  
कन्नैगाल में चालुक्य-सेना को पराजित किया था । उनके  
तलकाडु, कोङ्गु, चेङ्गिरि आदि स्वाधीन करने, नरसिंग को  
यमलोक भेजने, अदिपम, तिमिल, दाम, दामोदरादि शत्रुओं  
को पराजित करने का वर्णन लेख नं० ६० ( २४० ) के ६,  
१० व ११ पद्यों में पाया जाता है । जिस प्रकार इन्द्र का  
वज्र, बलराम का हल, विष्णु का चक्र, शक्तिधर की शक्ति  
व अर्जुन का गाण्डीव उसी प्रकार विष्णुवर्द्धन नरेश के गङ्ग-  
राज सहायक थे । गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे ही धर्मिष्ठ  
भी थे । उन्होंने गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाया, गङ्गवाडि  
परगने के समस्त जिनमन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, तथा  
अनेक स्थानों पर नवीन जिनमन्दिर निर्माण कराये । प्राचीन  
कुन्दकुन्दान्वय के वे उद्धारक थे । इन्होंने कारणों से वे चामुण्ड-  
राय से भी सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं । धर्म बल से  
गङ्गराज में अलौकिक शक्ति थी । लेख नं० ५६ ( ७३ ) के  
पद्य १४ में कहा गया है कि जिस प्रकार जिनधर्माग्रणी अत्ति-  
यब्बरसि के प्रभाव से गोदावरी नदी का प्रवाह रुक गया था  
उसी प्रकार कावेरी के पूर से घिर जाने पर भी, जिनभक्ति के

कारण गङ्गराज की लेशमात्र भी हानि नहीं हुई। जब वे कन्नोगल में चालुक्यों को पराजित कर लौटे तब विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे कोई वरदान माँगने को कहा। उन्होंने परम नामक ग्राम माँगकर उसे अपनी माता तथा भार्या द्वारा निर्माण कराये हुए जिनमन्दिरों के हेतु दान कर दिया। इसी प्रकार उन्होंने गोविन्दवाडि ग्राम प्राप्त कर गोम्मटेश्वर को अर्पण किया। गङ्गराज शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ५६ ( ७३ ) से विदित होता है कि दण्डनायक एचि-राज ने इस परम ग्राम के दान का समर्थन किया था।

गङ्गराज से सम्बन्ध रखनेवाले और भी अनेक शिलालेख हैं, यद्यपि उनमें गङ्गराज के समय के नरेश का नाम नहीं आया। लेख नं० ४६ ( १२६ ) गङ्गराज की भार्या लक्ष्मी ने अपने भ्राता वूचन की मृत्यु के स्मरणार्थ लिखवाया था। वूचन शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे। लेख नं० ४७ ( १२७ ) जैनाचार्य मेवचन्द्र त्रैविद्यदेव की मृत्यु का स्मारक है और इसे गङ्गराज और उनकी भार्या लक्ष्मी ने लिखवाया था। लेख नं० ४६ ( १२६ ) लक्ष्मीमतिजी ने अपनी भगिनी देमति के स्मरणार्थ लिखवाया था। लेख नं० ६३ ( १३० ) से ज्ञात होता है कि शुभचन्द्रदेव की शिष्या लक्ष्मी ने एक जिन मन्दिर निर्माण कराया जो अब 'एरडुकट्टे बस्ति' के नाम से प्रख्यात है। लेख नं० ६४ ( ७० ) में कहा गया है कि गङ्गराज ने अपनी माता पोचब्बे के हेतु कत्तले बस्ति निर्माण कराई। लेख नं०

६५ ( ७४ ) में गङ्गराज के इन्द्रकुल गृह ( शासन बस्ति ) बनवाने का उल्लेख है। लेख नं० ७५ ( १८० ) और ७६ ( १७७ ) में गङ्गराज द्वारा गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाये जाने का उल्लेख है। लेख नं० ४३ ( ११७ ), ४४ ( ११८ ), ४८ और ( १२८ ) गङ्गराज द्वारा निर्माण कराये हुए क्रमशः उनके गुरु शुभचन्द्र, उनकी माता पोचिकव्वे और भार्या लक्ष्मी के स्मारक हैं। लेख नं० १४४ ( ३८४ ) में गङ्गराज के वंश का बहुत कुछ परिचय मिलता है व लेख नं० ४४६ ( ३६७ ), ४४७ ( ३६८ ) और ४८६ ( ४०० ) में गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता बम्मदेव की भार्या जक्कणव्वे के सत्कार्यों का उल्लेख है। ये सब लेख विष्णुवर्द्धन नरेश के समय के व उस समय से सम्बन्ध रखनेवाले हैं इसी लिये इनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक हुआ।

विष्णुवर्द्धन के समय के अन्य लेख इस प्रकार हैं। लेख नं० १४३ ( ३७७ ) में राजा के नाम के साथ ही गङ्गराज के नामोल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि चलदङ्गराव हेडेजीय और अन्य सज्जनों ने कुछ दान किया। जान पड़ता है यह दान गोम्मटेश्वर के दायीं ओर की एक कंदरा को भरकर समतल करने के लिये दिया गया था। लेख नं० ५६ ( १३२ ) में विष्णुवर्द्धन की रानी शान्तलदेवी द्वारा 'सवति गन्धवारण बस्ति' के निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। इस लेख में भोवचन्द्र के शिष्य प्रभावचन्द्र की स्तुति, होयसल वंश की उत्पत्ति

व विष्णुवर्द्धन तक की वंशावलि, विष्णुवर्द्धन की उपाधियों व शान्तलदेवी की प्रशंसा व उनके वंश का परिचय पाया जाता है। शान्तलदेवी की उपाधियों में 'उद्बृत्तसवतिगन्धवारणे' अर्थात् 'उच्छृंखल सौतों के लिये मत्त हाथी' भी पाया जाता है। शान्तलदेवी की इसी उपाधि पर से वस्ति का उक्त नाम पड़ा। लेख नं० ६२ ( १३१ ) में भी इस मन्दिर के निर्माण का उल्लेख है। इस लेख में यह भी कहा गया है कि उक्त मन्दिर में शान्तिनाथ की मूर्ति स्थापित की गई थी। लेख नं० ५३ ( १४३ ) ( शक १०५० ) में शान्तलदेवी की मृत्यु का उल्लेख है जो 'शिवगङ्गा' में हुई। यह स्थान अब बङ्गलोर से कोई तीस मील की दूरी पर शैवों का तीर्थस्थान है। लेख में शान्तलदेवी के वंश का भी परिचय है। उनके पिता पेंगेडे मारसिङ्गय्य शैव थे पर माता माचिकब्बे जिन भक्त थीं। लेख नं० ५१ ( १४१ ) और ५२ ( १४२ ) ( शक १०४१ ) में शान्तलदेवी के मामा के पुत्र बलदेव और उनके मामा सिङ्गिमय्य की मृत्यु का उल्लेख है। बलदेव ने मोरिङ्गेरे में समाधिमरण किया तब उनकी माता और भगिनी ने उनकी स्मारक एक पट्टशाला ( वाचनालय ) स्थापित की। सिङ्गिमय्य के समाधिमरण पर उनकी भार्या और भावज ने स्मारक लिखवाया। लेख नं० ३६८ ( २६५ ) और ३६९ ( २६६ ) में दण्डनायक भरतेश्वर द्वारा दो मूर्तियों के स्थापित कराये जाने का उल्लेख है। भरतेश्वर गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के

शिष्य थे और अन्य शिलालेखों ( नागमङ्गल ३२ ए० क- ४; चिकमगलूर १६० ए० क० ६ ) से सिद्ध है कि वे और उनके बड़े भाई मरियाणो विष्णुवर्द्धन नरेश के सेनापति थे । लेख नं० ४० ( ६४ ) ( शक १०८५ ) में भी भरत के गण्डविमुक्त-देव के शिष्य होने का उल्लेख है । लेख नं० ११५ ( २६७ ) से विदित होता है कि भरतेश्वर ने जिन दो मूर्तियों की स्थापना कराई थी वे भरत और बाहुबली स्वामी की मूर्तियाँ थीं । इस लेख में भरतेश्वर के अन्य धार्मिक कृत्यों का भी उल्लेख है । उन्होंने उक्त दोनों मूर्तियों के आसपास कटवर ( हप्पलिंगे ) बनवाया, गोम्मटेश्वर के आसपास बड़ा गर्भगृह बनवाया, सीढ़ियाँ बनवाई तथा गङ्गवाडि में दो पुरानी बस्तियों का उद्धार कराया और अस्सी नवीन बस्तियाँ निर्माण कराईं । यह लेख भरत की पुत्री शान्तलदेवी ने लिखवाया था । लेख नं० ६८ ( १५६ ) और ३५१ ( २२१ ) भी इसी नरेश के समय के विदित होते हैं उनमें कुछ जिन भक्त पुरुषों का उल्लेख है ।

विष्णुवर्द्धन और लक्ष्मीदेवी के पुत्र नारसिंह प्रथम हुए जिनकी उपाधियों आदि का उल्लेख लेख नं० १३७ ( ३४५ ) और १३८ ( ३४६ ) में है । लेख नं० १३८ ( ३४६ ) में उल्लेख है कि उक्त नरेश के भण्डारि और मन्त्रो हुल्ल ने बेलगोल में चतुर्विंशति जिनमन्दिर निर्माण कराया । यह मन्दिर भण्डारि बस्ति के नाम से प्रसिद्ध है । लेख में विनयादित्य से लगाकर नारसिंह प्रथम तक के वर्णन और हुल्ल के वंशपरिचय

के पश्चात् कहा गया है कि एक बार अपनी दिग्विजय के समय नरेश बेलगोल में आये, गोम्मटेश्वर की वन्दना की और हुल्ल के बनवाये हुए चतुर्विंशति जिनालय के दर्शन कर उन्होंने उस मन्दिर का नाम 'भव्यचूड़ामणि' रक्खा क्योंकि हुल्ल की उपाधि 'सम्यक्चूड़ामणि' थी। फिर उन्होंने मन्दिर के पूजन, दान तथा जीर्णोद्धार के हेतु 'सवणेरु' नामक ग्राम का दान किया। लेख में यह भी उल्लेख है कि हुल्ल ने नरेश की अनुमति से गोम्मटपुर के तथा व्यापारी वस्तुओं पर के कुछ कर ( टैक्स ) का दान मन्दिर को कर दिया। हुल्ल वाजि-वंश के जकिराज ( यत्तराज ) और लोकाभिका के पुत्र, लक्ष्मण और अमर के ज्येष्ठ भ्राता तथा मलधारि स्वामी के शिष्य थे। सवणेरु ग्राम का दान उन्होंने भानुकीर्ति को दिया था। वे राज्यप्रबन्ध में 'योगन्धरायण' से भी अधिक कुशल और राजनीति में बृहस्पति से भी अधिक प्रवीण थे। लेख नं० १३७ ( ३४५ ) में भी नारसिंह के बेलगोल की वन्दना करने का उल्लेख है और इस लेख से यह भी ज्ञात होता है कि हुल्ल विष्णुवर्द्धन के समय में भी राजदरबार में थे तथा लेख नं० ६० ( २४० ) व ४६१ से विदित होता है कि वे अगामी नरेश बल्लाल द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे क्योंकि उन्होंने उक्त नरेश से एक दान प्राप्त किया था। इस लेख में हुल्ल की कीर्ति और धर्मपरायणता का खूब वर्णन है। वे चामुण्डराय और गङ्गराज की श्रेणी में ही सम्मिलित किये गये हैं। उन्होंने



बङ्गापुर और कलिविट के जिनमन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, कापण में 'जैनाचार्यों' के हेतु बहुत सी जमीन लगाई, केलङ्गेरे में छः नवीन जिनमन्दिर बनवाये और बेलगोल में चतुर्विंशति तीर्थकर मन्दिर बनवाया। उन्होंने गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य महामण्डलाचार्य नयकीर्ति सिद्धान्तदेव को इस मन्दिर के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। लेख नं० ८० ( २४० ) में भी नारसिंह की बेलगोल की वन्दना का उल्लेख है। इस लेख से विदित होता है कि सवणेरु के अतिरिक्त नरेश ने दो और ग्रामों—बेक और कगोरे—का दान दिया था। हुल्ल की प्रार्थना से इसी दान का समर्थन बल्लाल द्वितीय ने भी किया था ( ४८१ )। लेख नं० ८० ( १७८ ) और ३१६ ( १८१ ) में भी इस दान का उल्लेख है। लेख नं० ४० ( ६४ ) में उल्लेख है कि हुल्ल ने अपने गुरु महामण्डलाचार्य देवकीर्ति पण्डितदेव की निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा उन्होंने उनके शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव द्वारा कराई। लेख नं० १३७ ( ३४६ ) में हुल्ल की भार्या पद्मावती के गुणों का वर्णन है। इस लेख में भी हुल्ल के नयकीर्ति के पुत्र भानुकीर्ति को सवणेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है।

नारसिंह प्रथम और उनकी रानी एचलदेवी के बल्लालदेव द्वितीय हुए। लेख नं० १२४ ( ३२७ ) १३० ( ३३१ ) और ४८१ में इनके वंश व उपाधियों आदि का वर्णन है।

वे सनिवार सिद्धि, गिरिदुर्गमल्ल व कुम्भट और एरम्बरगे के विजेता भी कहे गये हैं। उनकी उच्छङ्गि की विजय का बड़ा वीरतापूर्ण वर्णन दिया गया है। लेख नं० ४६१ ( शक १०६५ ) इस राज्य का सबसे प्रथम लेख है। इसमें इन नरेश और उनके दण्डाधिप हुल्ल का परिचय है। नरेश ने चतुर्विंशति तीर्थकर की पूजन के हेतु मारुहल्लिग्राम का दान दिया व हुल्ल के अनुरोध से वेक ग्राम के दान का समर्थन किया। यह दान नयकीर्ति के शिष्य भानुकीर्ति को दिया गया। लेख नं० ६० ( २४० ) में गङ्गराज की कीर्ति का वर्णन, व गुणचन्द्र के पुत्र नयकीर्ति का, नारसिंह प्रथम की बेलगोल की वन्दना का तथा बल्लाल द्वारा नारसिंह के दान के समर्थन का उल्लेख पाया जाता है। लेख के अन्तिम भाग में कथन है कि नयकीर्ति के शिष्य अध्यात्मि बालचन्द्र ने एक बड़ा जिनमंदिर, एक बृहत् शासन, अनेक निषद्यायें व बहुत से तालाब आदि अपने गुरु की स्मृति में निर्माण कराये। लेख नं० १२४ ( ३२७ ) ( शक ११०३ ) में नरेश के मन्त्री चन्द्रमौलि की भार्या आचियक द्वारा बेलगोल में पार्श्वनाथ वस्ति निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। यह वस्ति अब अकन वस्ति के नाम से प्रसिद्ध है। चन्द्रमौलि शम्भूदेव और अकब्बे के पुत्र थे। वे शिवधर्मी ब्राह्मण थे और न्याय, साहित्य, भरत शास्त्र आदि विद्याओं में प्रवीण थे। उनकी भार्या आचियक व आचलदेवी जिनभक्ता थी। ( आचलदेवी की वंशावली

के लिये देखो लेख नं० १६२४ ) । उनके गुरु नयकीर्ति और बालचन्द्र थे । लेख में कहा गया है कि चन्द्रमौलि की प्रार्थना पर बल्लालदेव ने आचलदेवी द्वारा निर्मापित मंदिर के हेतु बम्भेयन हल्लिग्राम का दान दिया । लेख में और भी दानों का उल्लेख है । उक्त दान का उल्लेख उसी ग्राम के लेख नं० ४६४ ( शक ११०४ ) तथा लेख नं० १०७ ( २५६ ) और ४२६ ( ३३१ ) में भी है । लेख नं० १३० ( ३३५ ) में विनयादित्य से लगाकर होयसल नरेशों के परिचय के पश्चात् महामण्डलाचार्य नयकीर्ति की कीर्ति का वर्णन है और फिर नरेश के 'पट्टणस्वामी' नागदेव का परिचय है । देखो लेख नं० १३० ) । नागदेव के अपने गुरु नयकीर्ति की निषद्या बनवाने का उल्लेख लेख नं० ४२ ( ६६ ) में भी है । नागदेव के कुछ और सत्कृत्यों और कुछ आचार्यों का परिचय लेख नं० १२२ ( ३२६ ) और ४६० ( ४०७ ) में पाया जाता है । लेख नं० ४७१ ( ३८० ) में वसुधैकवान्धव रेचिमय्य के जिननाथपुर में शान्तिनाथ की प्रतिष्ठा कराने व शुभचन्द्र त्रैविश के शिष्य सागरनन्दि को उस मंदिर के आचार्य नियुक्त करने का उल्लेख है । यद्यपि इस लेख में किसी नरेश का उल्लेख नहीं है तथापि अन्य शिलालेखों से ज्ञात होता है कि रेचिमय्य इन्हीं बल्लालदेव के सेनापति थे । बल्लालदेव के पास आने से प्रथम वे कलचुरि नरेशों के मन्त्री थे । ( मै० आ० रि० १६०६, पृ० २१; ए० क० ५, अर्सिकोरे ७७; ए० क० ७,

शिकारपुर १६७) लेख नं० ४६५ में बल्लालदेव के समय में अपने गुरु श्रीपाल योगीन्द्र के स्वर्गवास होने पर वादिराजदेव के परवादिमल्ल जिनालय निर्माण कराने व भूमिदान देने का उल्लेख है।

इस राज्य का अन्तिम लेख नं० १२८ ( ३३३ ) ( शक ११२८ ) का है जिसमें वीर बल्लालदेव के कुमार सोमेश्वरदेव और उनके मंत्री रामदेव नायक का उल्लेख है। इतिहास में कहीं अन्यत्र बल्लालदेव के सोमेश्वर नामक पुत्र का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि सम्भवतः नरेश का कोई प्रतिनिधि ही यहाँ विजय से अपने को नरेश का पुत्र कहता है। ( लेख के सारांश के लिये देखो नं० १२८ )।

बल्लाल द्वितीय के पुत्र नारसिंह द्वितीय के समय का एक ही लेख इस संग्रह में आया है। लेख नं० ८१ ( १८६ ) में कहा गया है कि पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर नारसिंह के राज्य में पदुमसेट्टि के पुत्र व आध्यात्मि बालचन्द्र के शिष्य गोम्मटसेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजा के लिये बारह गद्याण का दान दिया।

नरसिंह द्वितीय के उत्तराधिकारी सोमेश्वर के समय का लेख नं० ४६६ ( शक ११७० ) है। इसमें सोमेश्वर की विजय व कीर्ति का परिचय उनकी उपाधियों में पाया जाता है। लेख में कहा गया है कि सोमेश्वर के सेनापति 'शान्त' ने

शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया । लेख में माघनन्दि  
आचार्यों की परम्परा भी दी है ।

लेख नं० ८६ ( २४६ ) ( शक ११८६ ) में वीर नारसिंह  
तृतीय ( सोमेश्वर के पुत्र व नारसिंह द्वितीय के प्रपौत्र ) का  
उल्लेख है । लेख नं० १२८ ( ३३४ ) ( शक १२०५ ) भी  
सम्भवतः इसी राजा के समय का है । इस लेख में होयसल  
वंश की स्तुति है, और कहा गया है कि उस समय के नरेश  
के गुरु मेघनन्दि थे । ये ही सम्भवतः शास्त्रसार के कर्ता थे  
जिसका उल्लेख लेख के प्रथम पद्य में ही है । ( सारांश के  
लिये देखो लेख नं० ८६ ) ।

लेख नं० १०५ ( २५४ ) ( शक १३८० ) के ४६ वे  
पद्य में व लेख नं० १०८ ( २५८ ) ( शक १३५५ ) के २८  
वे पद्य में उल्लेख है कि बल्लाल नरेश की एक घोर व्याधि से  
चारुदत्त गुरु ने रक्षा की थी । यह नरेश इस वंश के बल्लाल  
प्रथम, विष्णुवर्द्धन के ज्येष्ठ भ्राता हैं जिन्होंने बहुत अल्पकाल  
राज्य किया था । 'भुजबलि शतक' में कहा गया है कि इस  
नरेश को पूर्वजन्म के संस्कार से भारी प्रेत बाधा थी जिसे चारु-  
कीर्ति ने दूर की । इसी से इन आचार्यों को 'बल्लालजीव-  
रक्षक' की उपाधि प्राप्त हुई ।

## विजयनगर

जब सन् १३२७ ईस्वी में मुहम्मद तुगलक ने होयसल राज्य का पूर्ण रूप से सत्यानाश कर डाला और होयसल राज्य को अपने साम्राज्य में मिला लिया तब दक्षिण के अन्य राज्य सचेत हुए। वे सब दो वीर योधाओं के नायकत्व में एकत्र हुए। इन वीर योधाओं, जिनके वंश आदि का विशेष कुछ पता नहीं चलता, ने थोड़े ही वर्षों में एक राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी उन्होंने विजयनगर बनाई। उक्त दोनों वीरों के नाम क्रमशः हरीहर और बुक्क थे और वे दोनों भ्राता थे। इन्होंने मुसलमानों के बढ़ते प्रवाह को रोक दिया। इसी समय दक्षिण में मुसलमानों ने बहमनी राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी गुलबर्गा थी। अब दक्षिण में ये दोनों राज्य ही मुख्य रहे और दोनों आपस में लगातार झगड़ते रहे। सन् १४८१ के लगभग बहमनी राज्य बरार, विदर, अहमदनगर, गोलकुण्डा और बीजापुर इन पाँच भागों में बट गया। विजयनगर नरेशों का झगड़ा बीजापुर के आदिल शाहों से चलता रहा। इनमें अधिकतः विजयनगर विजयी रहता था क्योंकि उक्त पाँचों मुसलमानी राज्यों में द्वेष था। अन्त में मुसलमानी राजाओं ने अपनी भूल पहचान ली। वे सन् १५६५ में एक होकर तालीकोटा के मैदान पर इकट्ठे हुए और यहाँ दक्षिण भारत में हिन्दू साम्राज्य का निपटारा सदैव के लिये हो गया। विजयनगर-नरेश रामराय कैद कर लिये

गये और मार डाले गये और उनकी सुन्दर राजधानी विजय-नगर विध्वंस कर दी गई। यह संक्षिप्त में विजयनगर राज्य का इतिहास है।

अब संग्रहीत लेखों में इस राज्य के जो उल्लेख आये हैं उन्हें देखिये।

इस राजवंश के सम्बन्ध का सबसे प्रथम और सबसे महत्व का लेख नं० १३६ ( ३४४ ) ( शक १२८० ) का है जिसमें बुकराय प्रथम द्वारा जैन और वैष्णव सम्प्रदायों के बीच शान्ति और संधि स्थापित किये जाने का वर्णन है। वैष्णवों ने जैनियों के अधिकारों में कुछ हस्तक्षेप किया था। इसके लिये जैनियों ने नरेश से प्रार्थना की। नरेश ने जैनियों का हाथ वैष्णवों के हाथ पर रखकर कहा कि धार्मिकता में जैनियों और वैष्णवों में कोई भेद नहीं है। जैनियों को पूर्वतत् ही पञ्च-महावाद्य और कलश का अधिकार है। जैन दर्शन की हानि व वृद्धि को वैष्णवों को अपनी ही हानि व वृद्धि समझना चाहिए। श्री वैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त बस्तियों में लगा देना चाहिए। जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक वैष्णव जैन धर्म की रक्षा करेंगे। इसके अतिरिक्त लेख में कहा गया है कि प्रत्येक जैन गृह से कुछ द्रव्य प्रति वर्ष एकत्रित किया जायगा जिससे बेलगोल के देव की रक्षा के लिये बीस रत्नक रक्खे जावेंगे व शेष द्रव्य मंदिरों के जीर्णोद्धारदि में खर्च किया जावेगा। जो इस शासन का उल्लंघन करेगा

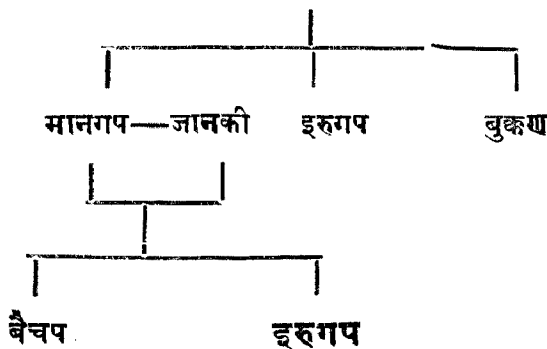
वह राज्य का, संघ का व समुदाय का द्रोही ठहरेगा । इस सम्बन्ध में कदम्बहल्लि की शान्तीश्वर बस्ती का स्तम्भ लेख भी महत्व पूर्ण है । इस लेख में शैवों द्वारा जैनियों के अधिकारों की रक्षा का उल्लेख है । उसमें कहा गया है कि यमादि योग गुणों के धारक, गुरु और देवों के भक्त, कलिकाल की कालिमा के प्रक्षालक, लाकुलीश्वर सिद्धान्त के अनुयायी, पञ्चदीक्षा क्रियाओं के विधायक सात करोड़ श्रीरुद्रों ने एकत्रित होकर मूलसंघ, देशीगण, पुस्तक गच्छ के कदम्बहल्लि के जिनालय को 'एकटोटि जिनालय' की उपाधि तथा पञ्चमहावाद्य का अधिकार प्रदान किया । जो कोई इसमें 'ऐसा नहीं होना चाहिए' कहेगा वह शिव का द्रोही ठहरेगा । यह लेख लगभग शक सं० ११२२ का है ।

लेख नं० १२६ ( ३२६ ) में हरिहर द्वितीय की मृत्यु का उल्लेख है जो तारण संवत्सर ( शक १३६८ ) भाद्रपद कृष्ण दशमी सोमवार को हुई । अन्य एक लेख ( ए० क० ८, तीर्थहल्लि १२६ ) से भी इसी बात का समर्थन होता है । लेख नं० ४२८ ( ३३७ ) से विदित होता है कि देवराय महाराय की रानी व पण्डिताचार्य की शिष्या भीमादेवी ने मङ्गायी बस्ति में शान्तिनाथ भगवान् की प्रतिष्ठा कराई । यह राजा सम्भवतः देवराय प्रथम है । शिलालेख से यह नई बात विदित होती है कि इस राजा की रानी जैनधर्मावलम्बिनी थी । यह लेख लगभग शक सं० १३३२ का है । लेख



नं० ८२ ( २५३ ) ( शक १३४४ ) में हरिहर द्वितीय के सेना-पति इरुगप का परिचय है और कहा गया है कि उन्होंने बेलगोल, एक वनकुञ्ज और एक तालाब का दान गोम्मटेश्वर के हेतु कर दिया । लेख में इरुगप की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—

वैच दण्डनायक ( बुकराय प्र० के मंत्री )



लेख में पण्डितार्य और श्रुतमुनि की प्रशंसा के पश्चात् कहा गया है कि श्रुतमुनि के समस्त उक्त दान दिया गया था । यह लेख शक सं० १३४४ का है जिससे विदित होता है कि इरुगप देवराय द्वितीय के समय में भी विद्यमान थे । इरुगप संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे । उन्होंने 'नानार्थरत्नमाला' नामक पद्यात्मक कोष की रचना की थी । उनके तीन और लेख मिले हैं ( ए० इ० ७, ११५; सं० इ० इ० १—१५६ ) जिनमें से दो शक सं० १३०४ और १३०६ के हैं जिनमें पण्डितार्य की प्रशंसा है व तीसरा शक सं० १३०७ का है और उसमें

कथन है कि इरुगप ने विजयनगर में कुंथजिनालय निर्माण कराया। लेख नं० १२५ ( ३२८ ) और १२७ ( ३३० ) में देवराय द्वितीय की क्षय संवत्सर ( शक १३६८ ) में मृत्यु का उल्लेख है।

### मैसूर राजवंश

लेख नं० ८४ ( २५० ) शक सं० १५५६ का है। इसमें मैसूर नरेश चामराज ओडेयर द्वारा बेलगोल के मंदिरों की जमीन के, जो बहुत दिनों से रहन थी, मुक्त कराये जाने का उल्लेख है। नरेश ने जिन लोगों को इस अवसर पर बुलवाया था उनमें भुजबलि चरित के कर्ता पञ्चबाण कवि के पुत्र बोम्यप्प व कवि बोमण्ण भी थे। इसी विषय का कुछ और विशेष विवरण लेख नं० १४० ( ३५२ ) ( शक १५५६ ) में पाया जाता है। इस लेख में राजा की ओर से मंदिर की भूमि रहन करने व कराने का निषेध किया गया है। यद्यपि लेखों में इस बात का उल्लेख नहीं है तथापि यह प्रायः निश्चय ही है कि उक्त विषय के निर्णय के लिये नरेश बेलगोल अवश्य गये होंगे। चिदानन्द कवि के मुनिवंशाभ्युदय में नरेश की बेलगोल की यात्रा का इस प्रकार वर्णन है। “मैसूर नरेश चामराज बेलगोल में आये और गर्भगृह में से गोम्मटेश्वर के दर्शन किये। फिर उन्होंने द्वारे पर आकर दोनों बाजुओं के

शिलालेख पढ़ाये । उन्होंने यह ज्ञात किया कि किस प्रकार चामुण्डराय बेलगोल आये थे और अपने गुरु नेमिचन्द्र की प्रेरणा से उन्होंने गोम्मटेश्वर को एक लाख छयानवे हजार 'वरह' की आय के ग्रामों का दान दिया था । इसके पश्चात् नरेश सिद्धर बस्ति में गये और वहाँ के लेखों से जैनाचार्यों की वंशावली, उनके महत्व व उनके कार्यों का परिचय प्राप्त किया । फिर उन्होंने यह पूछा कि अब गुरु कहाँ गये । बम्मण कवि, जो मन्दिर के अर्ध्यक्षों में से थे, ने उत्तर दिया कि जगदेव के तेलुगु सामन्त के त्रास के कारण गोम्मटेश्वर की पूजा बन्द कर दी गई है और गुरु चारुकीर्ति उस स्थान को छोड़ भैरव-राज की रक्षा में भल्लातकीपुर ( गेरुसोप्पे ) में रहते हैं । इस पर नरेश ने गुरु को बुला लेने के लिये कहा और नया दान देने का वचन दिया । फिर उन्होंने भण्डारि बस्ति के दर्शन किये और चन्द्रगिरि के सब मंदिरों के दर्शन कर वे सेरिङ्गा-पट्टम को लौट गये । पदुमण सेट्टि और पदुमण पण्डित चारु-कीर्ति को लेने के लिये भल्लातकीपुर भेजे गये । उनके आने पर वे सत्कार से बेलगोल पहुँचाये गये और राजा ने वचना-नुसार दान दिया ।" उपरोक्त वर्णन में जिस जगदेव का उल्लेख आया है वह चेन्नपट्टन का सामन्त राजा था । वह शक सं० १५५२ में चामराज द्वारा हराकर राज्यच्युत कर दिया गया ।

लेख नं० ४४४ ( ३६५ ) में चिकदेवराज ओडेयर द्वारा बेलगोल में एक कल्याणी ( कुण्ड ) निर्माण कराये जाने का

उल्लेख है। लेख नं० ८३ ( २४६ ) में कृष्णराज ओडेयर के शक सं० १६४५ में बेलगोल में आने व गोम्मटेश्वर के हेतु बेलगोल आदि कई ग्रामों के दान का व चिकदेवराजवाले कुण्ड के निकट बनी हुई दानशाला के हेतु कबाले नामक ग्राम के दान का उल्लेख है। लेख में कहा गया है कि गोम्मटेश्वर के दर्शन कर नरेश बहुत ही प्रसन्न हुए और पुलकितगात्र होकर उन्होंने उक्त दान दिये। अनन्तकवि कृत 'गोम्मटेश्वर चरित' में भी इस नरेश की बेलगोल-यात्रा का वर्णन है।

लेख नं० ४३३ ( ३५३ ) और ४३४ ( ३५४ ) कागज पर लिखी हुई कृष्णराज ओडेयर तृतीय की सनदे हैं जो समय-समय पर बेलगोल के गुरु को दी गई हैं। इनमें की प्रथम सनद नरेश के मंत्री पुर्णय्य की दी हुई है और उस में कृष्णराज ओडेयर प्रथम के दान का समर्थन किया गया है। द्वितीय सनद स्वयं नरेश ने दी है। उसमें बेलगोल के समस्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये तीन ग्रामों के दान का उल्लेख है। इस लेख में समस्त मंदिरों की संख्या तेतीस दी है—विन्ध्यगिरि पर आठ, चन्द्रगिरि पर सोलह, ग्राम में आठ व मलेयूर की पहाड़ी पर एक। इससे पूर्व मठ को उक्त मंदिरों के खर्च व जीर्णोद्धार के लिये राज्य से एक सौ बीस वरह का दान मिलता था। पर यह उक्त कार्य के लिये यथेष्ट नहीं था इसी से राजमहल के

लक्ष्मी पंडित की प्रार्थना पर इसके बदले तीन ग्रामों का उक्त दान दिया गया \* ।

कृष्णराज ओडेयर तृतीय के समय का एक और लेख नं० ८८ ( २२३ ) ( शक १७४८ ) है । इस लेख में उल्लेख है कि चामुण्डराज के एक वंशज, कृष्णराज के प्रधान अङ्गरक्षक की मृत्यु गोम्भटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई । इस पर उनके पुत्र ने गोम्भट स्वामी की प्रतिवर्ष पूजा के हेतु कुछ दान दिया ।

वर्तमान महाराजा कृष्णराज ओडेयर चतुर्थ का नाम तिथि सहित चन्द्रगिरि के शिखर पर अंकित है जो नवम्बर १८०० ईस्वी में उनके बेलगोल आने का स्मारक है ।

### कदम्ब वंश

अनुमान शक की नवमी शताब्दि के लेख नं० २८२ ( ४४३ ) में काञ्चिन देश के पास एक कदम्ब राजा की आज्ञा से तीन शिलायें लाई जाने का उल्लेख है । यह कदम्ब नरेश कौन था व शिलायें किस हेतु लाई गई थीं यह विदित करने के कोई साधन उपलब्ध नहीं हैं ।

---

\* लेख नं० १४१ राइस साहब के संग्रह में छपा है पर श्रीयुक्त नरसिंहाचार के नये संस्करण में वह नहीं छपा गया । श्रीयुक्त नरसिंहाचार का कथन है कि यह लेख उपर्युक्त दोनों सनदों के ऊपर से तैयार किया गया है और इसका अब मठ में पता नहीं चलता (देखो लेख नं० १४१ ।)

## नोलम्ब व पल्लव वंश

लेख नं० १०६ ( २८१ ) में चामुण्डराज द्वारा नोलम्ब नरेश को हराये जाने का उल्लेख है । सम्भवतः यह नरेश दिलीप का पुत्र नन्नि नोलम्ब था । लेख नं० १२० ( ३१८ ) में अरकरे के वीर पल्लवराय व उसके पुत्र शङ्कर नायक के नाम पाये जाते हैं । शङ्कर नायक का नाम लेख नं० ७३ ( १७० ) व २४६ ( १७१ ) में भी पाया जाता है । ये लेख लगभग शक सं० ११४० के हैं ।

## चोलवंश

शक की दशवीं शताब्दि के एक अधूरे लेख नं० ४६६ ( ३७८ ) में एक चोल पेर्मडि का गङ्गों के साथ युद्ध का उल्लेख है । सम्भवतः यह नरेश राजेन्द्र चोल ही था जो गङ्गनरेश भूतराय द्वारा शक सं० ८७१ के लगभग मारा गया था जिसका कि उल्लेख अतकूर के लेख में है । लेख नं० ६० ( २४० ), ३६० ( २५१ ) व ४८६ ( ३६७ ) में गङ्गराज द्वारा चोलराज नरसिंह वर्मा व दामोदर की पराजय का उल्लेख है ।

## कोङ्गाल्ववंश

कोङ्गाल्व नरेशों का राज्य अर्कलुद तालुका के अन्तर्गत कावेरी और हेमवती नदियों के बीच था । इनके लेख शक सं० ६४२ से १०२२ तक के पाये गये हैं । इन्हीं के दक्षिण में चङ्गाल्व राज्य था । इस वंश का सबसे अच्छा परिचय लेख नं० ५०० में राजा की उपाधियों में पाया जाता है ।

वहाँ इस वंश के राजा राजेन्द्र पृथ्वी 'समधिगतपञ्चमहाशब्द', 'महामण्डलेश्वर', 'ओरेयूरपुरवराधीश्वर', 'चोलकुलोदयाचलग-भस्तिमाली' व 'सूर्यवंशशिखामणि' कहे गये हैं। इससे स्पष्ट है कि कोङ्गाल्व नरेश सूर्यवंशी थे और चोलवंश से उनकी उत्पत्ति थी। ओरेयूर व उरगपूर चोल राज्य की प्राचीन राजधानी थी। इस वंश के शिलालेखों से अब तक निम्न-लिखित राजाओं के नाम व समय विदित हुए हैं—

बडिव कोङ्गाल्व..... सन् ईस्वी

राजेन्द्र चोल पृथुवी महाराज..... १०२२

राजेन्द्र चोल कोङ्गाल्व..... १०२६

राजेन्द्र पृथुवी कोङ्गाल्वदेव अदटरादित्य... १०६६-११००

त्रिभुवनमल्ल चोल कोङ्गाल्वदेव अदटरादित्य..... ११००

लेख नं० ५०० ( शक १००१ ) व अन्य लेखों से स्पष्ट

है कि अदटरादित्य जैनधर्मावलम्बी था। उक्त लेख में उभय-सिद्धान्त-रत्नाकर प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव की कीर्ति के पश्चात् कहा गया है कि अदटरादित्य नरेश राजेन्द्र पृथुवी कोङ्गाल्व ने गण्डविमुक्त सिद्धान्तदेव के लिये चैत्यालय बनवाया। यह लेख चतुर्भाषाविज्ञ सान्धिविग्रहिक नकुलार्य का लिखा हुआ है। लेख नं० ४६८ त्रिभुवनमल्ल चोल कोङ्गाल्व देव के समय का है।

### चङ्गल्ववंश

इस वंश के नरेशों का राज्य पश्चिम मैसूर और कुर्ग में था। वे अपने को यादववंशी कहते थे। उनका प्राचीन स्थान

चङ्गनाडु (आधुनिक हुणसूर तालुका) था। लेख नं० १०३ (२८८) में कथन है कि इस वंश के एक नरेश कुलोत्तुङ्ग चङ्गात्व महादेव के मन्त्रों के पुत्र ने गोम्मटेश्वर की ऊपरी मञ्जिल का शक सं० १४२२ में जीर्णोद्धार कराया। उक्त नरेश का उल्लेख एक और लेख में भी पाया गया है ( ए. क. ४, हुणसूर ६३ )

### निडुगलव श

निडुगल नरेश सूर्यवंशी थे और अपने को करिकाल चोल के वंशज कहते थे। वे ओरेयूराधीश्वर की उपाधि धारण करते थे। ओरेयूर ( त्रिचनापल्ली के समीप ) चोल राज्य की प्राचीन राजधानी थी। ये नरेश चोल महाराजा भी कहलाते थे। उनकी राजधानी पेञ्जेरु थी जो अब अनन्तपुर जिले में हेमावती कहलाती है। होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के समय इस वंश का एक 'इरुङ्गोल' नाम का राजा राज्य करता था। लेख नं० ४२ ( ६६ ) में उसके नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य होने व लेख नं० १३८ ( ३४६ ) में उसके विष्णुवर्द्धन द्वारा हराये जाने का उल्लेख है।

उपयुक्त राजकुलों के अतिरिक्त कुछ लेखों में और भी फुटकर राजाओं व राजवंशों का उल्लेख है। लेख नं० १५२ ( ११ ) में अरिष्टनेमि गुरु के समाधिमरण के समय दिण्डि-कराज उपस्थित थे। दिण्डिक का उल्लेख एक और लेख ( सा. इ. इ. २-३८१ ) में भी आया है पर वह लेख लगभग



सन ८०० का है और प्रस्तुत लेख उससे कोई दो सौ वर्ष प्राचीन अनुमान किया जाता है। लेख नं० १४ ( ३४ ) की नागसेन प्रशस्ति में **नागनायक** नाम के एक सामन्त राजा का उल्लेख है। लेख नं० ५५ ( ६६ ) में कहा गया है कि प्रभाचन्द्र धाराधीश भोज द्वारा व यशःकीर्ति **सिंहलनरेश** द्वारा सम्मानित हुए थे। लेख नं० ५४ ( ६७ ) में कथन है कि अकलङ्क देव ने **हिमशीतल नरेश** की सभा में बौद्धों को परास्त किया था व चतुर्मुखदेव ने **पाण्ड्यनरेश** द्वारा स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी। लेख नं० ३७ ( १४६ ) में **गरुडकेसिराज** व नं० २६६ ( ४५७ ) में **बालादित्य**, **वत्सनरेश**, का उल्लेख है। लेख नं० ४० ( ६४ ) में सामन्त केदार नाकरस कामदेव व निम्बदेव माघनन्दि के, व दण्डनायक मरियाण और भटत व बूचिमय्य और कोरय्य गण्डविमुक्तदेव के शिष्य कहे गये हैं। निम्ब के माघनन्दि के शिष्य होने का समाचार तेरदाल के एक लेख ( इ. ए. १४, १४ ) में भी पाया जाता है। शुभचन्द्र के शिष्य पद्मनन्दि ने अपनी 'एकत्वसतति' में उन्हें सामन्तचूडामणि कहा है। नं० ४७७ ( ३८७ ) में **सिङ्गपनायक** व नं० ४१ ( ६५ ) में बेलुकरे के राजा **गुम्मत** का उल्लेख है। गुम्मत ने शुभचन्द्र देव की निषद्या बनवाई थी। लेख नं० १०५ ( २५४ ) में हरियण और माणिकदेव नामक दो सामन्त राजाओं के पण्डितार्य के शिष्य होने का उल्लेख है।

## लेखों का मूल प्रयोजन

प्रस्तुत लेखों का मूल प्रयोजन धार्मिक है । इस सङ्ग्रह में लगभग एक सौ लेख मुनिओं, आर्जिकाओं, श्रावक और श्राविकाओं के समाधिमरण के स्मारक हैं; लगभग एक सौ मन्दिर-निर्माण, मूर्तिप्रतिष्ठा, दानशाला, वाचनालय, मन्दिरों के दरवाजे, परकोटे, सिढियाँ, रङ्गशालायेँ, तालाब, कुण्ड, उद्यान, जीर्णोद्धार आदि कार्यों के स्मारक हैं, अन्य एक सौ के लगभग मन्दिरों के खर्च, जीर्णोद्धार, पूजा, अभिषेक, आहारदान आदि के लिये ग्राम, भूमि, वरकम के दान के स्मारक हैं, लगभग एक सौ साठ संघों और यात्रियों की तीर्थयात्रा के स्मारक हैं और शेष चालीस ऐसे हैं जो या तो किसी आचार्य, श्रावक, व योधा की स्तुति मात्र हैं, व किसी स्थान-विशेष का नाम मात्र अंकित करते हैं व जिनका प्रयोजन अपूर्ण होने के कारण स्पष्ट विदित नहीं हो सकता ।

**सल्लेखना**—समाधिमरण से सम्बन्ध रखनेवाले सौ लेखों में अधिकांश—अर्थात् लगभग साठ—सातवीं आठवीं शताब्दि व उससे पूर्व के हैं और शेष उससे पश्चात् के । इससे अनुमान होता है कि सातवीं आठवीं शताब्दि में सल्लेखना का जितना प्रचार था उतना उससे पश्चात् की शताब्दियों में नहीं रहा । समाधिमरण करनेवालों में लगभग सोलह के संख्या स्त्रियों—आर्जिकाओं व श्राविकाओं—की भी है । लेखों में कहीं पर इसे सल्लेखना, कहीं समाधि, कहीं संन्यसन,

कहीं व्रत व उपवास व अनशन द्वारा मरण व स्वर्गारोहण कहा है। अनेक स्थानों पर सल्लेखना मरण की सूचना केवल मुनियों व श्रावकों की निषद्याओं ( स्मारकों ) से चलता है।

सल्लेखना क्यों और किस प्रकार की जाती थी इसके सम्बन्ध में प्राचीन जैन ग्रन्थों में समाचार मिलते हैं। इस विषय पर समन्तभद्र स्वामी कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार में इस प्रकार कहा है—

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निःप्रतीकारे ।

धर्माय तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनामार्याः ॥ १ ॥

स्नेहं वैरं सङ्गं परिग्रहं चापहाय शुद्धमनाः ।

स्वजनं परिजनमपि च क्षान्त्वा क्षमयेत्प्रियवचनैः ॥ २ ॥

आलोच्य सर्वमेनः कृतकारितमनुमतं च निर्व्याजम् ।

आरोपयेन्महाव्रतमामरणस्थायि निशेषम् ॥ ३ ॥

शोकं भयमवसाहं क्लेशं कालुष्यमरतिमपि हित्वा ।

सत्वेत्साहमुदीर्य च मनः प्रसाद्यं श्रुतैरमृतैः ॥ ४ ॥

आहारं परिहाप्य क्रमशः स्निग्धं विवर्धयेत्पानं ।

स्निग्धं च हापयित्वा खरपानं पूरयेत्क्रमशः ॥ ५ ॥

खरपानहापनामपि कृत्वा कृत्वोपवासमपि शक्त्या ।

पञ्चनमस्कारमनास्तनुं त्यजेत्सर्वयत्नेन ॥ ६ ॥

अर्थात् “जब कोई उपसर्ग व दुर्भिक्ष पड़े, व बुढ़ापा व व्याधि सतावे और निवारण न की जा सके उस समय धर्म की रक्षा के हेतु शरीर त्याग करने को सल्लेखना कहते हैं। इसके

लिये प्रथम स्नेह व वैर, संग व परिग्रह का त्याग कर मन को शुद्ध करे व अपने भाई बन्धु व अन्य जनों को प्रिय वचनों द्वारा क्षमा प्रदान करे और उनसे क्षमा करावे । तत्पश्चात् निष्कपट मन से अपने कृत, कारित व अनुमोदित पापों की आलोचना करे और फिर यावज्जीवन के लिये पञ्चमहाव्रतों को धारण करे । शोक, भय, विषाद, स्नेह, रागद्वेषादि परिणति का त्याग कर शास्त्र-वचनों द्वारा मन को प्रसन्न और उत्साहित करे । तत्पश्चात् क्रमशः कवलाहार का परित्याग कर दुग्धादि का भोजन करे । फिर दुग्धादि का परित्याग कर कज्जिकादि शुद्ध पानी ( व गरम जल ) का पान करे । फिर क्रमशः इसे भी त्यागकर शक्तानुसार उपवास करे और पञ्चनमस्कार का चिन्तन करता हुआ यत्नपूर्वक शरीर का परित्याग करे ।” यह सल्लेखना मुनियों के लिये ही नहीं श्रावकों को भी उपादेय कही गई है । आशाधरजी ने अपने धर्माभूत ग्रन्थ में कहा है—

सम्यक्त्वममलममलान्यनुगुणशिक्षाव्रतानि मरणान्ते ।

सल्लेखना च विधिना पूर्णः सागारधर्मोऽयम् ॥

अर्थात् शुद्ध सम्यक्त्व, अणुव्रत, गुणव्रत और शिक्षा-व्रतों का पालन व मरण समय सल्लेखना यह गृहस्थों का सम्पूर्ण धर्म है । कुछ शिलालेखों में जितने दिनों के उपवास के पश्चात् समाधि मरण हुआ उसकी संख्या भी दी है । लेख नं० ३८ ( ५६ ) में तीन दिन, नं० १३ ( ३३ ) में इक्कीस दिन , व नं० ८ ( २५ ); ५३ ( १४३ ) और ७२ ( १६७ )

में एक माह का उल्लेख है। सबसे प्राचीन लेख समाधि-मरण के विषय के ही हैं। लेख नं० १ जो सब लेखों में प्राचीन है, भद्रबाहु के ( व कुछ विद्वानों के मतानुसार प्रभा-चन्द्र के ) समाधिमरण का उल्लेख करता है। इसका विवे-चन ऊपर किया जा चुका है। इस लेख की लिपि छठवीं सताब्दी की अनुमान की जाती है। इसी प्रकार जैन इतिहास के लिये सबसे महत्वपूर्ण लेख भी इसी विषय के हैं। देवकीर्ति प्रशस्ति नं० ३६-४० ( ६३-६४ ) शुभचन्द्र प्रशस्ति नं० ४१ ( ६५ ), मेघचन्द्र प्रशस्ति ४७ ( १२० ), प्रभाचन्द्र प्रशस्ति ५० ( १४० ) मल्लिषेण प्रशस्ति ५४ ( ६७ ), पण्डितार्य प्रशस्ति १०५ ( २५४ ), व श्रुतमुनि प्रशस्ति १०८ ( २५८ ) में उक्त आचार्यों के कीर्ति-सहित स्वर्गवास का वर्णन है। लेख नं० १५६ ( २२ ) में कहा गया है कि कालत्तूर के एक मुनि ने कटवप्र पर १०८ वर्ष तक तपश्चरण करके समाधिमरण किया। इन्हीं लेखों में आचार्यों की परम्पराये व गण गच्छों के समा-चार पाये जाते हैं, जिनका सविस्तर विवेचन आगे किया जावेगा।

**यात्रियों के लेख—**जैन औपदेशिक ग्रन्थों में श्रावक-धर्म के अन्तर्गत तीर्थयात्रा का भी विधान है। जिन स्थानों पर जैन तीर्थ'करों के कल्याणक हुए हैं व जिन स्थानों से मुनियों ने मोक्ष प्राप्त किया है व जहाँ अन्य कोई असाधारण धार्मिक घटना घटी हो वे सब स्थान 'तीर्थ' कहलाते हैं। गृहस्थों को समय समय पर पुण्य का लाभ करने के हेतु इन स्थानों की

वन्दना करनी चाहिए । श्रवणबेलगोल बहुत काल से एक ऐसा ही स्थान माना जाता रहा है । इस लेख-संग्रह में लगभग १६० लेख तीर्थ-यात्रियों के हैं । इनमें के अधिकांश-लगभग १०७—दक्षिण भारत के यात्रियों के और शेष उत्तर भारत-वासियों के हैं । दक्षिणी यात्रियों के लेखों में लगभग ५४ में केवल यात्रियों के नाम मात्र अंकित हैं, शेष लेखों में यात्रियों की केवल उपाधियाँ व उपाधियों सहित नाम पाये जाते हैं । कुछ लेखों में यह भी स्पष्ट कहा है कि अमुक यात्री व यात्रियों ने देव की व तीर्थ की वन्दना की । यात्रियों के जो नाम पाये जाते हैं उनमें से कुछ ये हैं—श्रोधरन्, वीतराशि, चावुण्डय्य, कविरत्न, अकलङ्क पण्डित, अलम्बकुमार महामुनि, मालव अमावर, सहदेव मणि, चन्द्रकीर्ति, नागवर्म, मारसिङ्गय्य और मल्लिषेण । सम्भव है कि इनमें के ‘कविरत्न’ वही कन्नड भाषा के प्रसिद्ध कवि हों जिन्हें चालुक्य नरेश तैल तुतीय ने ‘कविचक्रवर्ति’ की उपाधि से विभूषित किया था व जिन्होंने शक सं० ६१५ में ‘अजितपुराण’ की रचना की थी । नागवर्म सम्भवतः वही प्रसिद्ध कनाड़ी कवि हों जिन्हें गङ्गनरेश रकसगङ्ग ने अपने दरबार में रक्खा था और जिन्होंने ‘छन्दो-म्बुधि’ और ‘कादम्बरी’ नामक काव्यों की रचना की थी । ‘चन्द्रकीर्ति’ सम्भव है वे ही आचार्य हों जिनका उल्लेख ४३ ( ११७ ) में आया है । आश्चर्य नहीं जो चावुण्डय्य और मारसिङ्गय्य क्रमशः चामुण्डराज मन्त्री और मारसिंह नरेश ही

हों। केवल उपाधियों में से कुछ इस प्रकार हैं—समधिगत पञ्चमहाशब्द; महामण्डलेश्वर, श्रीराजन् चट्ट ( राजव्यापारी ), श्रीवडवरवण्ट (गरीबों का सेवक), रणधीर, इत्यादि। उपाधिसहित नामों के उदाहरण इस प्रकार हैं—श्री ऐचय्य-विरोधि-निष्ठुर, श्रीजिनमार्गनीति-सम्पन्न-सर्पचूडामणि, श्रीवत्सराज बालादित्य, अरिष्टनेमि पण्डित परसमयध्वंसक, इत्यादि। जिनके साथ में यह भी कहा गया है कि उन्होंने देव की व तीर्थ की वन्दना की, उनमें से कुछ के नाम ये हैं—मल्लिषेण भट्टारक के शिष्य चरेङ्गय्य, अभयनन्दि पण्डित के शिष्य कोत्तय्य, श्रीवर्मचन्द्रगीतय्य, नयनन्दि विमुक्तदेव के शिष्य मधुवय्य, नागति के राजा इत्यादि। कुछ शिल्पियों के नाम भी हैं, जैसे—गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेव के शिष्य श्रीधरवोज, विदिग, ववोज, चन्द्रादित और नागवर्म।

इस प्रकार के शिलालेख यों तो निरूपयोगी समझ पड़ते हैं पर इतिहासखोजक के लिये कभी-कभी ये ही बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं। कम से कम उनसे यह बात तो सिद्ध होती ही है कि कितने प्राचीन समय से उक्त स्थान तीर्थ माना जाता रहा है और यति, मुनि, कवि, राजा, शिल्पी, आदि कितने प्रकार के यात्रियों ने समय समय पर उस स्थान की पूजा वन्दना करना अपना धर्म समझा है। इससे उस स्थान की धार्मिकता, प्राचीनता और प्रसिद्धि का पता चलता है।

उत्तर भारत के यात्रियों के लेखों की संख्या लगभग ५३ है। ये सब मारवाड़ी-हिन्दी भाषा में हैं। लिपि के अनुसार ये लेख दो भागों में विभक्त किये जा सकते हैं। ३६ लेखों की लिपि नागरी है और १७ की महाजनी। नागरी लेखों का समय लगभग शक सं० १४०० से १७६० तक है। इनमें के दो लेख स्याही से लिखे हुए हैं। इन लेखों में के अधिकांश यात्री काष्ठा संघ के थे जिनमें के कुछ मण्डितगच्छ के थे। यह गच्छ काष्ठा संघ के ही अन्तर्गत है। कुछ यात्रियों के साथ उनकी वधेरवाल जाति व गोनासा और पीनला गोत्र का उल्लेख है। कुछ लेखों में यात्रियों के निवासस्थान पुरस्थान, माडवागढ़ व गुड़घटीपुर का उल्लेख है। महाजनी लिपि के १७ लेख उस विचित्र लिपि के हैं जिसे मुण्डा भाषा कहते हैं। इसकी विशेषता यह है कि इसमें मात्राये प्रायः नहीं लगाई जातीं। केवल 'अ' और 'इ' की मात्राओं से ही अन्य सब मात्राओं का भी काम निकाल लिया जाता है। व्यञ्जनों में 'ज' और 'झ', 'ट' और 'ठ', 'ड' और 'ण', 'भ' और 'व' में कोई भेद नहीं रक्खा जाता। यह भाषा आगरा, अवध और पञ्जाब प्रदेशों के व्यापारी महाजनों में प्रचलित है। कुछ लेखों में 'टाकरी' लिपि के अक्षर भी पाये जाते हैं, जो पञ्जाब के पहाड़ी हिस्सों में प्रचलित हैं। इस पर से अनुमान किया जा सकता है कि उक्त सब प्रदेशों से यात्री इस तीर्थस्थान की वन्दना को आते थे। उल्लिखित यात्रियों में अधिकांश अग्र-



वाल और सरावगी जातियों के थे। अग्रवालों के अन्तर्गत ही वे सब अवान्तर भेद पाये जाते हैं जिनका उल्लेख लेखों में आया है; यथा—नरथनवाला, सहनवाला, गङ्गानिया इत्यादि। अनेक यात्रियों ने अपने को 'पानीपथीय' कहा है जिससे विदित होता है कि वे 'पानीपत' के थे। लेखों में गोथल और गर्ग गोत्रों व स्थानपेठ और मांडनगढ़ स्थानों के नाम भी आये हैं। इन लेखों का समय लगभग शक सं० १६७० से १७१० तक है।

**जीर्णोद्धार और दान**—मन्दिरादिनिर्माण, जीर्णोद्धार और पूजाभिषेकादि के हेतु दान से सम्बन्ध रखनेवाले लेखों की संख्या लगभग दो सौ है। मन्दिरादिनिर्माण के विषय के लेखों का उल्लेख पहले मन्दिरों आदि के वर्णन में आ चुका है। यहाँ शेष लेखों में के मुख्य २ का कुछ परिचय दिया जाता है। शक सं० ११०० के लगभग के लेख नं० ८८ ( २३७ ), ८९ ( २३८ ) और ९२ ( २४२ ) में गोम्मटेश्वर की पूजा के हेतु पुष्पों के लिये दान का उल्लेख है। प्रथम लेख में कहा गया है कि महापसायित विजय्य के दामाद चिक मडुकण्य ने महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव से कुछ भूमि मेल लेकर उसे गोम्मटेश की नित्य पूजा में बीस पुष्पमालाओं के लिये लगा दो। द्वितीय लेख में कथन है कि सोमेय के पुत्र कविसेट्टि ने उक्त देव की पूजार्थ पुष्पों के लिये कुछ भूमि का दान महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव को दिया। तीसरे

लेख में उल्लेख है कि बेलगोल के समस्त व्यापारियों ने 'संघ' से कुछ भूमि खरीद कर उसे मालाकार को गोम्मटेश की पूजा में पुष्प देने के लिये दान कर दी। लेख नं० ८१ ( २४१ ) में कथन है कि बेलगोल के समस्त व्यापारियों ने गोम्मटेश और पार्श्वदेव की पूजा में पुष्पों के लिये प्रतिवर्ष कुछ चन्दा देने का वचन दिया। लेख नं० ८३ ( २४३ ) के अनुसार चेन्नि सेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक के शिष्य कल्लय्य ने कुछ द्रव्य का दान इस हेतु दिया कि कम से कम पुष्पों की छः मालायें प्रतिदिवस गोम्मटेश और तीर्थ'करों का चढ़ाई जावे'। लेख नं० ८४, ८५, ८७ व ३३० (२४४, २४५, २४७, २००) में गोम्मटेश के प्रतिदिन अभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान का उल्लेख है। इन लेखों में दुग्ध का परिमाण भी दिया गया है। और बेलगोल के व्यापारी इस कार्य के प्रबन्धक नियुक्त किये गये हैं। लेख नं० १०६ ( २५५ ) ( शक सं० १३३१ ) में गोम्मटेश की मध्याह्न पूजन के हेतु दान का उल्लेख है।

लगभग शक सं० ११०० के लेख नं० ८६, ८७, ३६१ (२३५, २३६, २५२) में बसविसेट्टि द्वारा स्थापित चतुर्विंशति तीर्थ'करों की अष्टविध पूजा के हेतु व्यापारियों के वार्षिक चन्दों का उल्लेख है। इसी प्रकार लेख नं० ८६-१०२, १३१, १३५, १३७, ४५४ और ४७५ में भिन्न भिन्न सत्पुरुषों द्वारा भिन्न-भिन्न देवों और मन्दिरों की भिन्न भिन्न प्रकार की सेवा और पूजा के हेतु भिन्न-भिन्न समय पर नाना प्रकार के दानों का उल्लेख है।

लेख नं० १३४ ( ३४२ ) में कहा गया है कि हिरिय-अय्य के शिष्य गुम्मटन्न ने चन्द्रगिरि पर की चिक्कबस्ति, उत्तरीय दरवाजे पर की तीन बस्तियों और मङ्गायि बस्ति का जीर्णोद्धार कराया । लेख नं० ३७० ( २७० ) के अनुसार बेगूरु के बैयण ने एक बड़ा हैज और छप्पर बनवाया । नं० ४६८ ( ५०० ) के अनुसार एक साध्वी स्त्री जिण्णन्न ने एक मन्दिर को रथ का दान दिया, व नं० ४८३ के अनुसार महेय नायक ने एक नन्दिस्तम्भ बनवाया ।

**लेखों से तत्कालीन दूध के भाव का अनुमान-**  
अनेक लेखों में मस्तकाभिषेक के हेतु दुग्ध के लिये दान दिये जाने के उल्लेख हैं जिनसे उस समय के दूध के भाव का कुछ ज्ञान हो सकता है । उदाहरणार्थ, शक सं० ११८७ के एक लेख नं० ८५ ( २४५ ) में कहा गया है कि हलसूर के केतिसेट्टि ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिये ३ मान दूध के लिये ३ गद्याण का दान दिया । यह दूध उक्त रकम के व्याज से जब तक सूर्य और चन्द्र हैं तब तक लिया जावे । गद्याण दक्षिण भारत का एक प्राचीन सोने का सिक्का है जो करीब दस आना भर होता है, और मान दक्षिण भारत का एक माप है जो ठीक दो सेर का होता है । अतएव स्पष्ट है कि १॥॥=) भर ( दो आना कम दो तोला ) सोने के सात भर के व्याज से  $३६० \times ३ \times २ = २१६०$  सेर दूध आता था । शक सं० ११२८ के लेख नं० १२८ ( ३३३ ) से ज्ञात होता

है कि उस समय आठ 'हण' का सालाना एक 'हण' व्याज आ सकता था अर्थात् व्याज की दर सालाना मूल रकम का अष्टमांश थी। इसके अनुसार १॥॥ (२) भर सोने का साल भर का व्याज ३॥॥ (पौने चार आना) भर सोना हुआ। अतएव स्पष्ट है कि शक की बारहवीं शताब्दी के लगभग अर्थात् आज से छः सात सौ वर्ष पूर्व दक्षिण भारत में पौने चार आना भर सोने का २१६० सेर दूध बिकता था। इसे आजकल के चाँदी सोने के भाव के अनुसार इस प्रकार कह सकते हैं कि उक्त समय एक रुपया का लगभग साढ़े नौ मन दूध आता था।

इसी प्रकार लेख नं० ८४ (२४४) में जो नित्यप्रति ३ मान दूध के लिये ४ गद्याण के दान का उल्लेख है उसका हिसाब लगाने से २१६० सेर दूध की कीमत पाँच आना भर सोना निकलती है। शक सं० १२०१ के लेख १३१ (३३६) में नित्यप्रति एक 'बल्ल' दूध के लिये पाँच 'गद्याण' के दान का उल्लेख है जिसके अनुसार ३६० 'बल्ल' दूध की कीमत सवा छः आना भर सोना निकलती है। बल्ल सम्भवतः उस समय 'मान' से बड़ा कोई माप रहा है\*।

---

॥ 'गद्याण' और 'मान' का अर्थ मुझे श्रीयुक्त पं० नाथूरामजी प्रेमी द्वारा विदित हुआ है। उन्होंने श्रवण वेल्गोला से समाचार माँगाकर अपने पहले पत्र में मुझे इस प्रकार लिखा था—“गद्याण = यह साप अनुमान १ तोले के बराबर होता है और एक सुवर्ण नाण्य (?) को

## आचार्यों की वंशावली

जैन इतिहास की दृष्टि से वे लेख बहुत महत्वपूर्ण हैं जिनमें आचार्यों की परम्पराये दी हैं। प्रस्तुत संग्रह के दस बारह लेखों में ऐसी परम्पराये व पट्टावलियाँ पाई जाती हैं। इस सम्बन्ध में सबसे पहले हम उन लेखों को लेते हैं जिनमें उन सुगृहीतनाम आचार्यों का क्रमबद्ध उल्लेख आया है जिन्होंने महावीर स्वामी के पश्चात् जैन आगम का अध्ययन और प्रचार किया। ऐसे लेख नं० १ और १०५ ( २५४ ) हैं। इनमें उक्त आचार्यों की निम्नलिखित परम्परा पाई जाती है। मिलान के लिये साथ में हरिवंश पुराण की गुर्वावली भी दी जाती है।

---

भी कहते हैं। मान = यह अनुमान एक सेर के बराबर होता है। इनका प्रचार प्राचीन काल में था अब नहीं है।” इसके पश्चात् उनका दूसरा पत्र आया जिसमें निम्नलिखित वार्ता थी—“गद्याण पुराने समय का सोने का सिक्का है जो करीब दस आने भर होता है। अब यह नहीं चलता। चार गुञ्जाओं का एक हणा, नौ हणाओं का एक बरहा और दो बरहा का एक गद्याण। मान ठीक दो सेर का होता है। अब इसको ‘बल्ला’ बोलते हैं। खेड़ों में इसका प्रचार है और अनाज मापने के काम में यह आता है। पहले दूध, दही, घी भी इससे मापा जाता था।” ऊपर के विवेचन में दूसरे पत्र का ही आधार लिया गया है। इसके अनुसार ‘मान’ और ‘बल्ला’ एक ही बराबर ठहरते हैं पर जैसा कि ऊपर कहा गया है, प्राचीन काल का ‘बल्ल’ सम्भवतः मान से बड़ा रहा है।

नं० १०५ (२५४) हरिवंश पुराण

नं० १

(शक सं० १३२०) (शक सं० ७०५) (अनु० ७ वीं शताब्दी)

	महावीर	महावीर	महावीर
११ गणधर ३ केवली	१ इन्द्रभूति । गौतम	१ गौतम	१ गौतम
	२ अग्निभूति		
	३ वायुभूति		
	४ अकम्पन		
	५ मौर्य		
	६ सुधर्म । सुधर्म	२ सुधर्म	२ लोहाचार्य
	७ पुत्र		
	८ मैत्रेय		
	९ मौण्ड्य		
	१० अन्धवेल		
	११ प्रभासक । जम्बू	३ जम्बू	३ जम्बू
२ अतर्कवली	१ विष्णु	१ विष्णु	१ विष्णुदेव
	२ अपराजित	२ नन्दमित्र	२ अपराजित
	३ नन्दमित्र	३ अपराजित	३ गोवर्धन
	४ गोवर्द्धन	४ गोवर्द्धन	४ भद्रबाहु
	५ भद्रबाहु	५ भद्रबाहु	

११ दशपूर्वी

१ चत्रिय

२ प्रोष्ठिल

३ गङ्गदेव

४ जय

५ सुधर्म

६ विजय

७ विशाख

८ बुद्धिल

९ धृतिषेण

१० नागसेन

११ सिद्धार्थ

१ विशाख

२ प्रोष्ठिल

३ चत्रिय

४ जय

५ नाग

६ सिद्धार्थ

७ धृतिषेण

८ विजय

९ बुद्धिल

१० गङ्गदेव

११ धर्मसेन

१ विशाख

२ प्रोष्ठिल

३ कृत्तिकार्य

(चत्रिकार्य)

४ जय

५ नाम (नाग)

६ सिद्धार्थ

७ धृतिषेण

८ बुद्धिल आदि-

५ एकादशार्द्धी

१ नचत्र

२ पाण्डु

३ जयपाल

४ कंसाचार्य

५ द्रुमसेन (धृति-  
सेन)

१ नचत्र

२ यशःपाल

३ पाण्डु

४ ध्रुवसेन

५ कंसाचार्य

४ आचारार्द्धी

१ लोह

२ सुभद्र

३ जयभद्र

४ यशोबाहु

१ सुभद्र

२ यशोभद्र

३ यशोबाहु

४ लोहाचार्य

यह अङ्गधारी आचार्यों की पट्टावली है। नामों के क्रम में जो हेर फेर पाये जाते हैं, उसका कारण यह है कि लेख नं० १०५ हरिवंश पुराण से भिन्न छन्दों में लिखा गया है। कवि को अपने छन्द में नामों का समावेश करने के लिये उनको इधर उधर रखना पड़ा है। इसी कारण कहीं कहीं नामों में भी हेर फेर पाये जाते हैं। लेख में यशःपाल के लिये जयपाल, धर्मसेन के लिए सुधर्म, और यशोभद्र की जगह जयभद्र नाम आये हैं। ध्रुवसेन की जगह जो लेख में द्रुमसेन पाया जाता है, यह सम्भवतः मूल लेख के पढ़ने में भूल हुई है। लेख नं० १ में जो अधूरी परम्परा पाई जाती है उसका कारण यह ज्ञात होता है कि वहाँ लेखक का अभिप्राय पूरी पट्टावलि देने का नहीं था। उन्होंने कुछ नाम देकर आदि लगाकर उस सुप्रसिद्ध परम्परा का उल्लेख मात्र किया है। इसी से श्रुतकेवलियों के बीच एक नाम छूट भी गया है। उक्त लेखों में यद्यपि इन आचार्यों का समय नहीं बतलाया गया, तथापि इन्द्रनन्दि-कृत श्रुतावतार से जाना जाता है कि महावीर स्वामी के पश्चात् तीन केवली ६२ वर्ष में, पाँच श्रुत केवली १०० वर्ष में, ग्यारह दशपूर्वी १८३ वर्ष में, पाँच एकादशाङ्गी २२० वर्ष में और चार एकाङ्गी ११८ वर्ष में हुए हैं। इस प्रकार महावीर स्वामी की मृत्यु के पश्चात् लोहाचार्य तक ६८३ वर्ष व्यतीत हुए थे।

बहुत से लेखों में आगे के आचार्यों की परम्परा कुन्द-कुन्दाचार्य से ली गई है। दुर्भाग्यतः किसी भी लेख में उपर्युक्त



श्रुतज्ञानियों और कुन्दकुन्दाचार्य के बीच की पूरी गुरुपरम्परा नहीं पाई जाती। केवल उपर्युक्त लेख नं० १०५ में ही इस बीच के आचार्यों के कुछ नाम पाये जाते हैं जो इस प्रकार हैं—

१ कुम्भ	७ सर्वज्ञ
२ विनीत या अविनीत	८ सर्वगुप्त
३ हलधर	९ महिधर
४ वसुदेव	१० धनपाल
५ अचल	११ महावीर
६ मेरुधीर	१२ वीरट्ट इत्यादि

नन्दि संघ की पदावली में कुन्दकुन्दाचार्य की गुरुपरम्परा इस प्रकार पाई जाती है :—

भद्रबाहु  
|  
गुप्तिगुप्त  
|  
माघनन्दि  
|  
जिनचन्द्र  
|  
कुन्दकुन्द

इन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार के अनुसार कुन्दकुन्द उन आचार्यों में हुए हैं जिन्होंने अंगज्ञान के लोप होने के पश्चात् आगम को पुस्तकारूढ़ किया।

कुन्दकुन्दाचार्य जैन इतिहास, विशेषतः दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के इतिहास, में सबसे महत्वपूर्ण पुरुष हुए हैं। वे प्राचीन और नवीन सम्प्रदाय के बीच की एक कड़ी हैं। उनसे पहले जो भद्रबाहु आदि श्रुतज्ञानी हो गये हैं उनके नाममात्र के सिवाय उनके कोई ग्रंथ आदि हमें अब तक प्राप्त नहीं हुए हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से कुछ प्रथम ही जिन पुष्पदन्त, भूतबलि आदि आचार्यों ने आगम को पुस्तकारूढ़ किया उनके भी ग्रन्थों का अब कुछ पता नहीं चलता। पर कुन्दकुन्दाचार्य के अनेक ग्रन्थ हमें प्राप्त हैं। आगे के प्रायः सभी आचार्यों ने इनका स्मरण किया है और अपने को कुन्दकुन्दान्वय के कहकर प्रसिद्ध किया है। लेखों में दिगम्बर सम्प्रदाय का एक और विशेष नाम मूल संघ पाया जाता है। यह नाम सम्भवतः सबसे प्रथम दिगम्बर संघ का श्वेताम्बर संघ से पृथक् निर्देश करने के लिये दिया गया। अनुमान शक संवत् १०२२ के शिलालेख नं० ५५ में कुन्दकुन्द को ही मूल संघ के आदि गणी कहा है यथा—

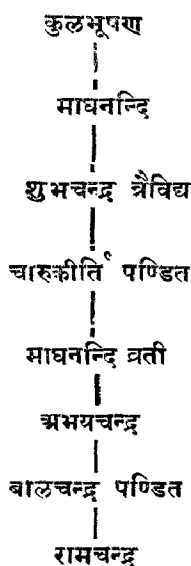
श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्रीकोण्डकुन्दनामाभूमूलसंघाग्रणीर्गणी ॥

पर शिलालेख नं० ४२, ४३, ४७ और ५० ( क्रमशः शकसं० १०८८, १०४५, १०३७ और १०६० ) में गौतमादि मुनीश्वरों का स्मरण कर कहा गया है कि उन्हींकी सन्तान के नन्दि गण में पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्दाचार्य हुए। लेख

नं० ५४ ( शक १०५० ), ४० ( शक १०८५ ) और १०८ ( शक १३५५ ) में गौतम स्वामी के उल्लेख के पश्चात् उन्हीं की सन्तति में भद्रबाहु और फिर उनके शिष्य चन्द्रगुप्त का वर्णन करते हुए कहा गया है कि उनके ही अन्वय में कुन्द-कुन्द मुनि हुए । इन लेखों में इस स्थल पर संघ गणादि का नाम निर्देश नहीं किया गया ।

लेख नं० ४१ में बिना किसी पूर्व सम्बन्ध के यह आचार्य-परम्परा भी दी है—



लेख नं० ४७, ४३, ५० और ४२ में नन्दिगण कुन्दकुन्दान्वय की परम्परा इस प्रकार पाई जाती है ।

शक सं० १०८५ के लेख नं० ४० में निम्न प्रकार  
आचार्य-परम्परा पाई जाती है —

गौतमादि

( उनकी सन्तान में )

भद्रबाहु

|

चन्द्रगुप्त

( उनके अन्वय में )

पद्मनन्दि ( कुन्दकुन्द )

( उनके अन्वय में )

उमास्वाति ( गृद्धपिञ्छ )

|

बलाकपिञ्छ

( उनकी परम्परा में )

समन्तभद्र

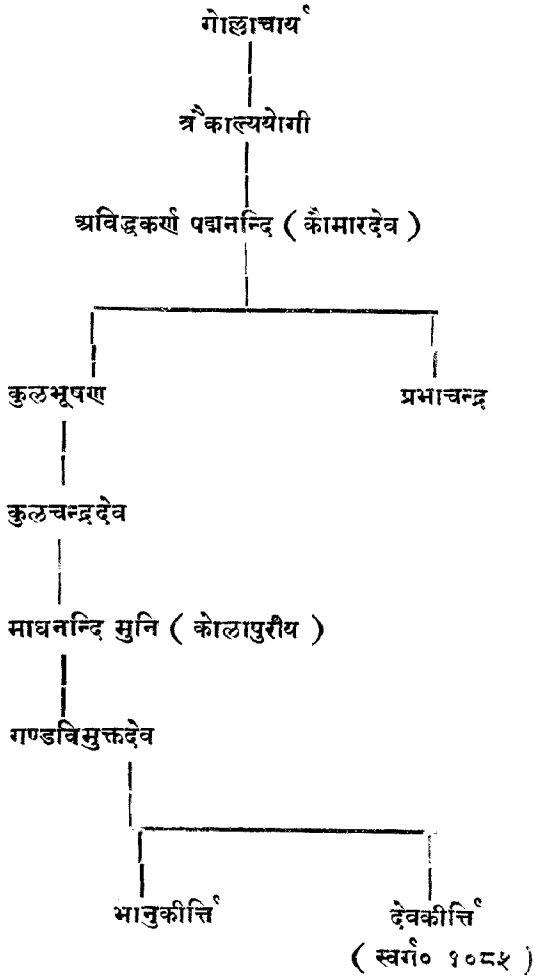
( उनके पश्चात् )

देवनन्दि ( जिनेन्द्रबुद्धि व पूज्यपाद )

( उनके पश्चात् )

अकलङ्क

( उनकी सन्तति में मूल संघ में नन्दिगण का जो देशीगण  
प्रभेद हुआ उसमें गोल्लदेशाधिप हुए । )



अनुमान शक सं० १०२२ के लेख नं० ५५ की आचार्य  
परम्परा इस प्रकार है—

## मूल संघ, देशीगण, वक्रगच्छ

कुन्दकुन्द ( मूलसंघाप्रणी )

( उनके अन्वय में )

देवेन्द्र सिद्धान्तदेव

चतुर्मुखदेव ( वृषभन्धाचार्य )

(इनके ८४ शिष्य थे)

गोपनन्दि प्रभाचन्द्र दामनन्दि गुणचन्द्र माघनन्दि, जिनचन्द्र, देवेन्द्र

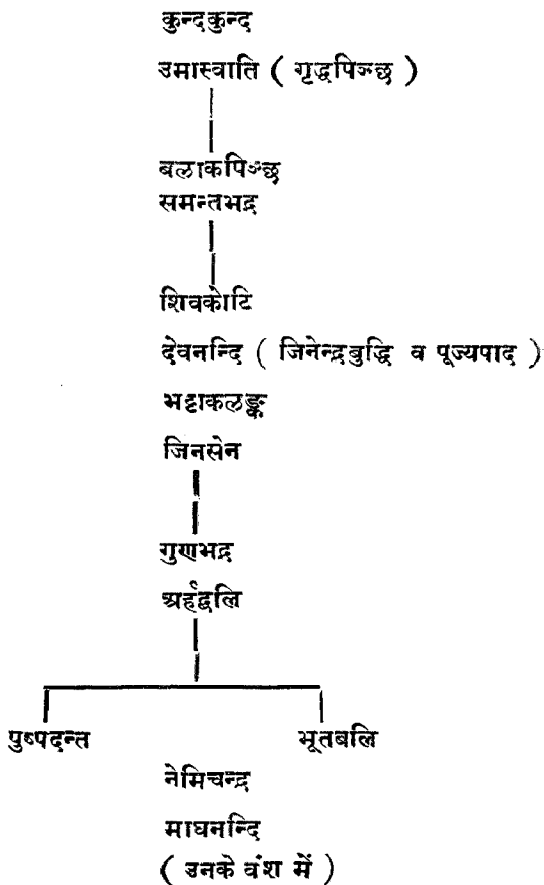
वासवचन्द्र यशः-  
कीर्त्ति, शुभकीर्त्ति पं.दे.

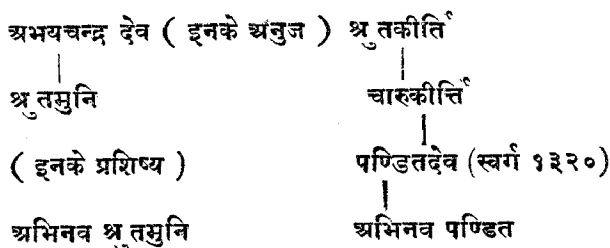
त्रिमुष्टिमुनि मलधारिहेमचन्द्र मेघचन्द्र कल्याणकीर्त्ति बालचन्द्र

(गण्डविमुक्त गौलमुनि)

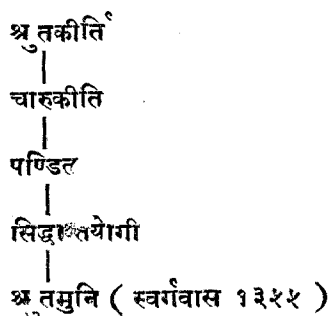
मूल पद्यात्मक लेख के पश्चात् आचार्यों के नामों की गद्य में पुनरावृत्ति है। इस नामावली में ऊपर के भाग से कुछ विशेषताये पाई जाती हैं। मूलसंघ देशीगण, वक्रगच्छ कुन्दकुन्दान्वय में यहाँ देवेन्द्र सिद्धान्तदेव से प्रथम बड्डदेव का नामोल्लेख है। देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के पश्चात् चतुर्मुखदेव का द्वितीय नाम वृषभन्धाचार्य दिया है। चतुर्मुखदेव के शिष्यों में महेन्द्रचन्द्र पण्डितदेव का नाम अधिक है। माघनन्दि के शिष्यों में त्रिरत्ननन्दि का नाम अधिक है। यशःकीर्त्ति और वासवचन्द्र गोपनन्दि के शिष्यों में गिनाये गये हैं। इनमें चन्द्रनन्दि का नाम अधिक है।

लेख नं० १०५ ( शक १३२० ) की कुन्दकुन्दाचार्य तक की परम्परा हम ऊपर देख चुके हैं। कुन्दकुन्दाचार्य से आगे इस लेख की गुरु-परम्परा इस प्रकार है—





लेख नं० १०८ की परम्परा आदि से अकलङ्कदेव तक लेख नं० ४० के समान ही है। अकलङ्कदेव के पश्चात् संघ-भेद हुआ जिसकी इंगुलेश बलि की कुछ परम्परा इस प्रकार दी है।



शक संवत् १२८५ के लेख नं० १११ में मूलसंघ बलात्कार गण की कुछ परम्परा निम्न प्रकार पाई जाती है। लेख बहुत घिसा हुआ है। के कारण परम्परा के ऊपर और नीचे के कुछ नाम स्पष्ट नहीं पढ़े गये।



## मूल स'घ—बलात्कार गण

.....कीर्त्ति ( वनवासि के )

देवेन्द्र विशालकीर्त्ति

शुभकीर्त्तिदेव भट्टारक

धर्मभूषणदेव

अमरकीर्त्ति-आचार्य

धर्मभूषणदेव ( की निषद्या बनवाई गई शक  
सं० १२६५ )

शक सं० १०४७ के लेख नं० ४६३ में नन्दि संघ, द्रमिण-  
गण अरुङ्गलान्वय की निम्न प्रकार परम्परा है । इस लेख में  
आचार्यों का गुरु-शिष्य-सम्बन्ध नहीं बतलाया गया केवल  
एक के पश्चात् दूसरे हुए ऐसा कहा गया है ।

## नन्दि स'घ, द्रमिणगण, अरुङ्गलान्वय

महावीर स्वामी

गौतम गणधर

.....

समन्तभद्रव्रती

एक सन्धिसुमति-भट्टारक

अकलङ्कदेव वादीभसिंह

वक्रग्रीवाचार्य

श्रीनन्दाचार्य

सिंहनन्दाचार्य

श्रीपाल भट्टारक

कनकसेन वादिराजदेव

श्रीविजयशान्तिदेव

पुष्पसेन सिद्धान्तदेव

वादिराज

शान्तिषेण देव

कुमारसेन सैद्धान्तिक

मल्लिषेण मलधारि

श्रीपाल त्रैविद्यदेव (शक सं० १०४७ में

विष्णुवर्द्धन नरेश ने शल्य ग्राम का दान दिया ।)

लगभग शक सं० १०६६ के लेख नं० ११३ में उल्लेख है कि देसी गण पुस्तक गच्छ कुन्दकुन्दान्वय के निम्नो-  
ल्लिखित आचार्यों ने मिलकर पञ्चकल्याणोत्सव मनाया—

त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्ती, सोमचन्द्र  
सि० च०, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति  
भट्टारक, शान्तिकीर्ति, कनकचन्द्र मलधारिदेव और नेमिचन्द्र  
मलधारिदेव ।

शक सं० १०५० का लेख नं० ५४ आचार्यों की नामावली में और आचार्यों के सम्बन्ध की बहुत सी वार्त्ता देने में सब लेखों में विशेष महत्वपूर्ण है । किन्तु दुर्भाग्यवश इस लेख में आचार्यों का पूर्वापर सम्बन्ध व गुरु-शिष्य-सम्बन्ध स्पष्टतः नहीं बतलाया गया । इससे इस लेख का ऐतिहासिक महत्व उतना नहीं रहता जितना अन्यथा रहता । इस लेख के आचार्यों की नामावली का क्रम लेख में इस प्रकार है—

वर्द्धमानजिन

गौतमगणधर

भद्रबाहु

चन्द्रगुप्त

कुन्दकुन्द

समन्तभद्र—वाद में 'धूर्जटि' की जिह्वा को भी स्थगित करनेवाले ।

सिंहनन्दि

वक्रग्रीव—छः मास तक 'अथ' शब्द का अर्थ करनेवाले ।

वज्रनन्दि ( नवस्तोत्र के कर्त्ता )

पात्रकेसरि गुरु ( त्रिलक्षण सिद्धान्त के खण्डनकर्त्ता )

सुमतिदेव ( सुमतिसप्तक के कर्त्ता )

कुमारसेन मुनि

चिन्तामणि ( चिन्तामणि के कर्त्ता )

श्रीवर्द्धदेव (चूड़ामणि काव्य के कर्त्ता, दण्डी द्वारा स्तुत्य)

महेश्वर (ब्रह्मराक्षसों द्वारा पूजित)

अकलङ्क ( बौद्धों के विजेता, साहसतुङ्ग नरेश के सम्मुख  
हिमशीतल नरेश की सभा में )

पुष्पसेन ( अकलङ्क के सधर्म )

विमलचन्द्र मुनि—इन्होंने शैवपाशुपतादिवादियों के लिये 'शत्रु-  
भयङ्कर' के भवन-द्वार पर मोटिस लगा दिया था ।

इन्द्रनन्दि

परवादिमल्ल ( कृष्णराज के समक्ष )

आर्यदेव

चन्द्रकीर्त्ति ( श्रुतविन्दु के कर्त्ता )

कर्मप्रकृति भट्टारक

<p>श्रीपालदेव मतिसागर</p>	}	<p>वादिराज-कृत पार्श्वनाथचरित ( शक ६४७ ) से विदिता होता है कि वादिराज के गुरु मति- सागर थे और मतिसागर के श्रीपाल ।</p>
-------------------------------	---	--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

हेमसेन विद्याधनञ्जय महामुनि

दयालपाल मुनि ( रूपसिद्धि के कर्त्ता, मतिसागर के शिष्य ) वादिराज  
( दयापाल के सहब्रह्मचारी, चालुक्यचक्रेश्वर जयसिंह के कटक में  
कीर्त्ति प्राप्त की )

श्रीविजय ( वादिराज द्वारा स्तुत्य हेमसेन गुरु के समान )

कमलभद्र मुनि

दयापाल पण्डित, महासूरि

शान्तिदेव ( विनयादित्य पोयसल नरेश द्वारा पूज्य ) चतुर्मुखदेव  
( पाण्ड्य नरेश द्वारा स्वामी की उपाधि और आहवमल्लनरेश द्वारा  
चतुर्मुखदेव की उपाधि प्राप्त की )

गुणसेन ( मुल्लूर के )

अजितसेन वादीभसिंह

शान्तिनाथ कविताकान्त

पद्मनाभ वादिकोलाहल

कुमारसेन

मल्लिषेण मलधारि ( अजितसेन पण्डितदेव के शिष्य, स्वर्गवास  
शक सं० १०१० )

उपर्युक्त वंशावलियों के आचार्यों में से कुछ के विषय  
ने जो खास खास बातें लेखों में कही गई हैं वे इस प्रकार हैं —

**कुन्दकुन्दाचार्य**—ये मूल संघ के अग्रगणी थे ( मूल-  
संघाग्रणीर्गणी ) ( ५५ ) । इन्होंने उत्तम चारित्र द्वारा चारण  
ऋद्धि प्राप्त की थी ( ४०, ४२, ४३, ४७, ५० ) जिसके बल से वे  
पृथ्वा से चार अंगुल ऊपर चलते थे ( १३६ ) मानों यह बतलाने  
के हेतु कि वे बाह्य और अभ्यन्तर रज से अस्पृष्ट हैं ( १०५ )\* ।

**उमास्वाति**—ये गृद्धपिच्छाचार्य कहलाते थे ( ४०, ४३,  
४७, ५० ) वे बलाकपिच्छ के गुरु और तत्त्वार्थसूत्र के कर्ता  
थे ( १०५ )\* ।

\* इन आचार्यों के विषय में विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र  
ग्रन्थमाला के 'रत्नकरण श्रावकाचार' की भूमिका देखिए ।

**समन्तभद्र**—ये वादिसिंह, गणभृत और समस्तविद्या-निधि पदों से विभूषित थे ( ४०, ५४, ४६३ ) इन्होंने भस्मक व्याधि को जीता तथा पाटलिपुत्र, मालवा, सिन्धु, ठक (पञ्जाब), काञ्चीपुर, विदिशा ( उज्जैन ) व करहाटक ( कोल्हापूर ) में वादियों को आमन्त्रित करने के लिये भेरी बजाई । उन्होंने 'धूर्जटि'\* की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था ( ५४ ) । समन्तभद्र 'भद्रमूर्ति' जिन शासन के प्रणेता और प्रतिवाद-शैलों को वाग्वज्र से चूर्ण करनेवाले थे ( १०८ )

**शिवकोटि**—ये समन्तभद्र के शिष्य व तत्त्वार्थसूत्रटीका के कर्त्ता थे ( १०५ ) ।

**पूज्यपाद**—इनका दीक्षा नाम 'देवनन्दि' था, महद्बुद्धि के कारण वे जिनेन्द्रबुद्धि कहलाए तथा इनके पादों की पूजा वनदेवता करते थे इससे विद्वानों में ये पूज्यपाद के नाम से प्रख्यात हुए ( ४०, १०५ ) । वे जैनेन्द्र व्याकरण, सर्वार्थसिद्धि ( टीका ), जैनाभिषेक, समाधिशतक, छन्दः-शास्त्र व स्वास्थ्यशास्त्र के कर्त्ता थे ( ४० ) । हुमच के एक लेख ( रि. ए. जै. ६६७ ) में वे न्यायकुमुदचन्द्रोदय, शाक-टायन सूत्र न्यास, जैनेन्द्र न्यास, पाणिनि सूत्र के शब्दावतार

---

\* 'धूर्जटि' की जिह्वा को स्थगित करने का श्रेय गोपनन्दि आचार्य को भी दिया गया है ( ५५, ४६२ ) । धूर्जटि शङ्कर की उपाधि है व इसका तात्पर्य शङ्कराचार्य से भी हो सकता है क्योंकि शङ्कराचार्य हिन्दू ग्रन्थों में शङ्कर के अवतार माने गये हैं ।

न्यास, वैद्यशास्त्र और तत्त्वार्थ सूत्रटीका ( सर्वार्थसिद्धि ) के कर्त्ता कहे गये हैं । वे सुराधीश्वरपूज्यपाद, अप्रतिमौषधर्द्धि, 'विदेहजिनदर्शनपूतगात्र' थे । उनके पादप्रक्षालित जल से लोहा भी सुवर्ण हो जाता था ( १०८ )\* ।

**गोलाचार्य**—ये मुनि होने से प्रथम गोल्ल देश के नरेश थे । नूतन चन्दिल नरेश के वंशचूड़ामणि थे ( ४७ ) ।

**त्रैकाल्ययोगी**—इन्होंने एक ब्रह्मराक्षस को अपना शिष्य बना लिया था । उनके स्मरणमात्र से भूत प्रेत भाग जाते थे । उन्होंने करञ्ज के तेल को घृत में परिवर्तित कर दिया था ( ४७ ) ।

**गोपनन्दि**—बड़े भारी कवि और तर्कप्रवीण थे । उन्होंने जैन धर्म की वैसी ही उन्नति की जैसी गङ्गनरेशों के समय में हुई थी । उन्होंने धूर्जटि की जिह्वा को भी स्थगित कर दिया था ( ५५—४६२ ) ।

**प्रभाचन्द्र**—ये धारा के भोज नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे ( ५५ ) ।

**दामनन्दि**—इन्होंने महावदि 'विष्णुभट्ट' को परास्त किया था जिससे वे 'महावादिविष्णुभट्टघरट्ट' कहे गये हैं ( ५५ ) ।

**जिनचन्द्र**—ये व्याकरण में पूज्यपाद, तर्क में भट्टाकलङ्क और साहित्य में भारवि थे ( ५५ ) ।

॥ विशेष जानने के लिये माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला के रत्नकरण्ड श्राव-  
काचार की भूमिका व 'जैन साहित्य संशोधक' भा० १ अं० २, देखिए  
पृ० ६७-८७ ।

**वासवचन्द्र**—इन्होंने चालुक्य नरेश के कटक में बाल-सरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी ( ५५ ) ।

**यशःकीर्ति**—इन्होंने सिंहल नरेश से सम्मान प्राप्त किया था ( ५५ ) ।

**कल्याणकीर्ति**—साकिनी आदि भूत-प्रेतों को भगाने में प्रवीण थे ( ५५ ) ।

**श्रुतकीर्ति**—‘राववपाण्डवोय’ काव्य के कर्त्ता थे । यह काव्य अनुलोमप्रतिलोम नामक चित्रालङ्कार-युक्त था अर्थात् वह आदि से अन्त व अन्त से आदि की ओर एक सा पढ़ा जा सकता था । जैसा कि काव्य के नाम से ही विदित होता है वह द्व्यर्थक भी था । श्रुतकीर्ति ने देवेन्द्र व अन्य विपक्षियों को वाद में परास्त किया था । सम्भव है कि उक्त देवेन्द्र उस नाम के वे ही श्वेताम्बराचार्य हों जिनके विषय में प्रभावक चरित में कहा गया है कि उन्होंने दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को परास्त किया था । ( लेख नं० ४० के नीचे का फुटनोट देखिए । )

**वादिराज**—जयसिंह चालुक्य द्वारा सम्मानित हुए थे ( ५४ ) ।

**चतुर्मुखदेव**—पाण्ड्य नरेश से स्वामी की उपाधि प्राप्त की थी ।

इन आचार्यों के अतिरिक्त अन्य जिन प्रभावशाली आचार्यों का परिचय हमें लेखों से मिलता है उनका विवरण ऊपर ऐति-



हासिक विवेचन में आ चुका है। एक बात विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि जैनाचार्यों ने हर प्रकार से अपना प्रभाव महाराजाओं और नरेशों पर जमाने का प्रयत्न किया था। इसी से वे जैन धर्म की अपरिमित उन्नति कर सके। जैनाचार्यों का राजकीय प्रभाव उठ जाने से जैन धर्म का हास हो गया।

अन्य लेखों से जिन आचार्यों का जो परिचय हमें मिलता है वह भूमिका के अन्त में तालिकारूप में दिया जाता है।

### संघ, गण, गच्छ और बलि भेद

**मूलसंघ**—ऊपर कहा जा चुका है कि लेखों में दिगम्बर सम्प्रदाय को मूल संघ कहा है। सम्भवतः यह नाम उक्त सम्प्रदाय को श्वेताम्बर सम्प्रदाय से पृथक् निर्दिष्ट करने के लिये दिया गया है। लेखों में इस संघ के अनेक गण, गच्छ और शाखाओं का उल्लेख है। इनमें मुख्य नन्दिगण

नन्दिगण और  
देशीगण

है। लेख नं० ४२, ४३, ४७, ५० आदि में इस गण के आचार्यों की परम्पराये पाई जाती है। सबसे अधिक

लेखों में मूल संघ, देशीगण और पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। यह देशीगण नन्दिगण से भिन्न नहीं है किन्तु उसी का एक प्रभेद है जैसा कि लेख नं० ४०, ( शक १०८५ ) से विदित होता है। इस लेख में कुन्दकुन्द से लगाकर अकलङ्क तक के

मुख्य मुख्य 'आचार्यों' के उल्लेख के पश्चात् पद्य नं० १३ में कहा गया है कि इसी मूल संघ के नन्दिगण का प्रभेद देशो गण हुआ जिसमें गोब्रह्माचार्य नाम के प्रसिद्ध मुनि हुए। लेख नं० १०८ ( शक १३५५ ) में भी इसी के अनुसार नन्दिसंघ, देशोगण, पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। 'नन्दिसंघे सदेशी-यगणे गच्छे च पुस्तके'। अन्य अनेक लेखों में भी ( यथा ४७, ५० आदि ) नन्दिगण के उल्लेख के पश्चात् देशोगण पुस्तकगच्छ का उल्लेख है। लेख नं० १०५ ( शक १३२० ) और १०८ ( शक १३५५ ) में स'घभेद की उत्पत्ति का कुछ विवरण पाया जाता है। लेख नं० १०५ में कथन है कि अर्हद्वलि आचार्य ने आपस का द्वेष घटाने के लिये 'सेन', 'नन्दि', 'देव' और 'सिंह' इन चार संघों की रचना की। इनमें कोई सिद्धान्त-भेद नहीं है और इसलिये जो कोई इनमें भेद-बुद्धि रखता है वह 'कुदृष्टि' है। यह कथन इन्द्रिनन्दिकृत नीति-सार के कथन से बिलकुल मिलता है।\* लेख नं० १०८ में कहा गया है कि अकलङ्क के स्वर्गवास के पश्चात् संघ देश-भेद से उक्त चार भेदों में विभाजित हो गया। इन भेदों

॥ तदेव यतिराजोऽपि सर्वनैमित्तिकाग्रणीः ।

अर्हद्वलिगुरुश्चक्रे संघसंघट्टनं परम् ॥ ६ ॥

सिंहसंघो नन्दिसंघः सेनसंघो महाग्रभः ।

देवसंघ इति स्पष्टं स्थानस्थितिविशेषतः ॥ ७ ॥

गणगच्छादयस्तेभ्यो जाताः स्वपरसौख्यदाः ।

न तत्र भेदः कोप्यस्ति प्रवृज्यादिषु कर्मसु ॥ ८ ॥

न

में कोई चारित्र-भेद नहीं है। कई लेखों ( १११, १२६ आदि ) में बलात्कारगण का उल्लेख है। इन्हीं उल्लेखों से स्पष्ट है कि यह भी नन्दिगण व देशीगण से अभिन्न है।

लेख नं० १०५ में कहा गया है कि प्रत्येक संघ गण, गच्छ और बलि ( शाखा ) में विभाजित है। देशीगण का सबसे प्रसिद्ध गच्छ **पुस्तकगच्छ** है जिसका उल्लेख अधिकांश लेखों में पाया जाता है। इसी गण का दूसरा गच्छ

पुस्तकगच्छ और  
वक्रगच्छ

‘**वक्रगच्छ**’ है जिसकी एक परम्परा लेख नं० ५५ ( लगभग शक १०८२ ) में पाई जाती है। लेख नं० १०५, १०८ व १२६ में देशीगण की **इंगुलेश्वरबलि** ( शाखा ) का उल्लेख है। बलि या

इंगुलेश्वरबलि

शाखा किसी आचार्य-विशेष व स्थान-विशेष के नाम से निर्दिष्ट होती थी। देशीगण की एक दूसरी ‘**हनसोगे**’ नामक

शाखा का उल्लेख लेख नं० ७० में पाया जाता है। लेख घिसा हुआ होने से

हनसोगे व पनसोगे बलि

वहाँ यह स्पष्ट नहीं ज्ञात होता कि यह शाखा देशीगण की ही है। पर जिन आचार्यों ( गुणचन्द्र व नयकीर्ति ) को वहाँ हनसोगे शाखा का कहा है वे ही लेख नं० १२४ में मूल संघ देशीगण, पुस्तकगच्छ के कहे गये हैं। इसी से उक्त शाखा का देशीगणान्तर्गत होना सिद्ध होता है। हनसोगे शाखा का कई अन्य लेखों में भी उल्लेख आया है। हनसोगे एक

स्थान-विशेष का नाम था। कहीं-कहीं इसे पनसोगेबलि भी कहा है। ( रि० ए० जै० नं० २२३, २३६, ४४६ आदि )

अनेक लेखों ( २८, ३१, २११, २१२, २१४, २१८ ) में नविलूर संघ का उल्लेख है। इसी संघ को कहीं-कहीं ( २७, २०७, २१५ ) नमिलूर संघ कहा

नविलूर, नमिलूर है। इसी का दूसरा नाम 'मयूर स'घ' व मयूर सघ पाया जाता है ( २७, २६ )। लेख

नं० २७ में पहले नमिलूर संघ का उल्लेख है और फिर उसे ही मयूर संघ कहा है। लेख नं० २६ में इसे 'मयूर ग्राम' संघ कहा है जिससे स्पष्ट है कि यह संघ बलि व शाखा के समान स्थान-विशेष की अपेक्षा से पृथक् निर्दिष्ट हुआ है। कहीं पर स्पष्ट उल्लेख तो नहीं पाया गया पर जान पड़ता है कि यह भी देशीगण के ही अन्तर्गत है। इसी प्रकार जो लेख नं० १६४ में कितूरस'घ\* नं० २०३, २०६ में कोला-तूर स'घ नं० ४६६ में दिण्डिगूर शाखा व नं० २२० में 'श्रीपूरान्वय' का उल्लेख है वे सब भी देशीगण की ही स्थानीय शाखाएँ विदित होती हैं।

\* कितूर सैसूर जिजे के होमाडेवन्कोटे तालुका में है। इसका प्राचीन नाम कीर्त्तिपुर था जो पुन्नाट राज्य की राजधानी था। कन्नड साहित्य में पुन्नाट राज्य का उल्लेख है। टालेमी ने भी 'पौन्नाट' नाम से इसका उल्लेख किया है। इसी राज्य का पुन्नाट संघ प्रसिद्ध है। हरिवंश पुराण के कर्त्ता जिनसेन व कथाकोष के कर्त्ता हरिषेण पुन्नाट-संघीय ही थे। सम्भवतः कितूर संघ पुन्नाट संघ का ही दूसरा नाम है।

लेख नं० ४६३ में द्रमिणगण के अरुङ्गलान्वय का उल्लेख है। इन्द्रनन्दि-कृत नीतिसार व देवसेन-कृत दर्शनसार

में द्राविड़ संघ जैनाभासों में गिनाया गया है। पर जिस द्रमिणगण का उक्त लेख में उल्लेख है वह इस जैनाभास संघ से भिन्न है। उक्त द्रमिण संघ स्पष्टतः नन्दि संघ के अन्तर्गत कहा गया है।

लेख नं० ५०० में मूल संघ काशूरगण, तगरिलगच्छ का उल्लेख है। सम्भवतः यह गण भी देशीगण व नन्दि संघ से सम्बन्ध रखनेवाला ही है।

काशूरगण,  
तगरिल गच्छ  
काष्ठा संघ  
मण्डितगच्छ  
लेख नं० ११६ में काष्ठा संघ मण्डितगच्छ का उल्लेख है।

उ.पर वर्णित लेख नं० ४०, ४१, ४२, ४३, ४७, ४८, ४९, १०५, १०६, १०७, १०८, १११, ११२ और ४६३ को छोड़ शेष लेखों में उल्लिखित आचार्यों का परिचय ।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि लेख नं०	समय शक सं० में	विशेष विवरण
१	बलदेव मुनि	कनकसेन	×	अ० ५७२	समाधिमरण ।
२	शान्तिसेन मुनि	×	×	"	समाधिमरण । भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र ने जिस धर्म की उन्नति की थी उसके लीण होने पर इन मुनिराज ने उसे पुनरुत्थापित किया ।
३	अरिष्टनेमि आचार्य	×	×	"	समाधिमरण । इनके अनेक शिष्य थे । समाधि के समय 'दिण्डिकराज' साली थे । लेख नं० १२४ व २६७ यद्यपि क्रमशः मर्दों व श्वों शताब्दि के अनुमान किये जाते हैं तथापि सम्भवतः उनमें भी इन्हीं आचार्य का उल्लेख है । लेख नं० २६७ में वे 'परसमयध्वंसक' पद से विभूषित किये गये हैं व 'मले गोल' के कहे गये हैं ।
४	वृषभनंदि आचार्य	×		"	इनके किसी शिष्य ने समाधिमरण किया ।
५	मौनि गुरु	×	×	अ० ६२२	एक शिष्या का समाधिमरण । ये ही सम्भवतः लेख नं० ६ के गुणसेन गुरु के व लेख नं० ३१ के वृषभनन्दि गुरु के गुरु थे ।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि लेख नं०	समय शक सं० में	विशेष विवरण
६	चरितश्री मुनि	×	×	अ० ६२२ समाधिमरण ।	
७	पानप (मौनद)	×	×	"	समाधिमरण ।
८	बलदेव गुरु	धर्मसेन गुरु	×	"	इनके गुरु 'कित्तू' परगने में 'वेलमाद' नामक स्थान के थे ।
९	उग्रसेन गुरु	पट्टिनि गुरु	×	"	इनके गुरु 'मालनूर' के थे । उग्रसेनजी ने एक मास तक अनशन किया ।
१०	गुणसेन गुरु	मौनि गुरु	×	"	लेख नं० २ में सम्भवतः इन्हीं मौनिगुरु का उल्लेख है । गुणसेन 'कोटर' के थे ।
११	उल्लिक्कल गुरु	×	×	"	"
१२	कालावि (कलापक) गुरु	×	×	"	एक शिष्य का समाधिमरण ।
१३	नागसेन गुरु	ऋषभसेन गुरु	×	"	समाधिमरण ।
१४	सिंहनेदि गुरु	वेट्टे गुरु	×	"	"
१५	गुणभूषित	×	सन्निधिगण(?)	"	लेख बहुत घिसा है, इससे भाव स्पष्ट नहीं हुआ ।







४१ प्रभाचन्द्रसिद्धान्त देव	×	×	५००	अ० १००१	कुछ भूमि का दान दिया । जैनालय के हेतु कोङ्गाल्व नरेश अदरशदिल्य द्वारा भूमिदान । उपाधि-उभयसिद्धान्तरत्ना- कर ।
४२ गण्डविमुक्तदेव	×	मूलसंव कानूर गण तगरिल गच्छ	"	"	कोङ्गाल्वनरेश राजेन्द्र पृथुवी द्वारा बस्ती- निर्माण और भूमिदान ।
४३ देवनन्दि भट्टारक	×	×	४५६	अ० १०००	
४४ गोपनन्दि पण्डित देव	चतुर्मुखदेव	मू० दे० पु०	४६२	अ० १०१५	पोयसलनरेश त्रिभुवनमल्ल पर्येङ्ग ने बस्तियों के जीर्णोद्धार के हेतु ग्राम का दान दिया । गोपनन्दि ने वीण होते हुए जैनधर्म का गङ्ग नरेशों की सहायता से पुनरुद्धार किया । ने षडदर्शन के ज्ञाता थे । उपर्युक्त नरेश के गुरुओं में से थे ।
४५ देवेन्द्रसिद्धान्तदेव	×	"	"	"	
४६ अकलङ्क पण्डित	×	×	१६६	अ० १०२०	×
४७ सातनन्दि देव	×	×	२२४	"	चरणचिह्न हैं ।
४८ चन्द्रकीर्त्तिदेव	×	×	२२५	"	"
४९ अभयनन्दिपण्डित	×	×	२२	अ० १०२२	एक शिष्य ने देवद्वन्द्वना की ।
५० शुभचन्द्रसि० देव	कु० मलधारिदेव	मू० दे० पु०	४६	१०३७	ये पोयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के मंत्री १०३६ गंगराज दण्डनायक और उनके कुटुंब १०४० के गुरु थे । इन्होंने उक्त कुटुम्ब के सदस्यों से कितने ही जिनालय निर्माण कराये,
			४५, ६३, ६४, ६५,		

क्र.सं.	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	सेवा, गण, गच्छादि	लेख नं०	समय	विशेष विवरण
५२	भानुकीर्ति मुनि	मेघचन्द्रसिंहदेव	मू० दे० पु०	४४६, ४४७, ४८६, ४८६,	अ० १०४१	जीर्णोद्धार कराया, मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कराईं और कितनों ही को दीक्षा, संन्यास आदि दिये।
५३	प्रभाचन्द्रसिंहदेव	मेघचन्द्रसिंहदेव	मू० दे० पु०	४६, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००	मलधारिदेव शुभचन्द्रदेव सि० मु० पेरसल राजसेट्टि ने इनसे दीक्षा ली। १०४१ इनकी एक शिष्या ने पट्टशाला (वाचना- लय) स्थापित कराई। ये विष्णुचन्द्र ने १०४१ नरेश की रानी शान्तलदेवी के गुरु थे।	



नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि लेख नं०	समय	विशेष विवरण
६६	त्रिकालयोगी	X	X	४७३ अ० १०६७	
६७	अभयदेव	X	मूलसंघ	"	
६८	कु० मलधारि- देव	X	X	१३७ अ० १०८०	हुल्ल मंत्री के गुरु ।
६९	नयकीर्ति सि० देव (म० म०)	गुणचन्द्र सि० दे०	मू० दे० पु० हनसेगो शाखा	"	हुल्ल मंत्री ने ग्राम का दान दिया ।
७०	दामनन्दित्रै० देव			७८ अ० १०२०	
७१	भानुकीर्ति सि० देव			१२२ "	
७२	बालचन्द्रदेव			३१७-२०	
७३	अध्यात्मि			३२४ "	
७४	प्रभाचन्द्रदेव			३२६ "	
७५				३२७ "	
७६				१३८	
७७				१३७ अ० १०८७	
७८				६६ "	
७९				७० "	
८०				१०६२	
८१				१०६२	
८२				१०६२	
८३				१०६२	
८४				१०६२	
८५				१०६२	
८६				१०६२	
८७				१०६२	
८८				१०६२	
८९				१०६२	
९०				१०६२	
९१				१०६२	
९२				१०६२	
९३				१०६२	
९४				१०६२	
९५				१०६२	
९६				१०६२	
९७				१०६२	
९८				१०६२	
९९				१०६२	
१००				१०६२	
१०१				१०६२	
१०२				१०६२	
१०३				१०६२	
१०४				१०६२	
१०५				१०६२	
१०६				१०६२	
१०७				१०६२	
१०८				१०६२	
१०९				१०६२	
११०				१०६२	
१११				१०६२	
११२				१०६२	
११३				१०६२	
११४				१०६२	
११५				१०६२	
११६				१०६२	
११७				१०६२	
११८				१०६२	
११९				१०६२	
१२०				१०६२	
१२१				१०६२	
१२२				१०६२	
१२३				१०६२	
१२४				१०६२	
१२५				१०६२	
१२६				१०६२	
१२७				१०६२	
१२८				१०६२	
१२९				१०६२	
१३०				१०६२	
१३१				१०६२	
१३२				१०६२	
१३३				१०६२	
१३४				१०६२	
१३५				१०६२	
१३६				१०६२	
१३७				१०६२	
१३८				१०६२	
१३९				१०६२	
१४०				१०६२	
१४१				१०६२	
१४२				१०६२	
१४३				१०६२	
१४४				१०६२	
१४५				१०६२	
१४६				१०६२	
१४७				१०६२	
१४८				१०६२	
१४९				१०६२	
१५०				१०६२	
१५१				१०६२	
१५२				१०६२	
१५३				१०६२	
१५४				१०६२	
१५५				१०६२	
१५६				१०६२	
१५७				१०६२	
१५८				१०६२	
१५९				१०६२	
१६०				१०६२	
१६१				१०६२	
१६२				१०६२	
१६३				१०६२	
१६४				१०६२	
१६५				१०६२	
१६६				१०६२	
१६७				१०६२	
१६८				१०६२	
१६९				१०६२	
१७०				१०६२	
१७१				१०६२	
१७२				१०६२	
१७३				१०६२	
१७४				१०६२	
१७५				१०६२	
१७६				१०६२	
१७७				१०६२	
१७८				१०६२	
१७९				१०६२	
१८०				१०६२	
१८१				१०६२	
१८२				१०६२	
१८३				१०६२	
१८४				१०६२	
१८५				१०६२	
१८६				१०६२	
१८७				१०६२	
१८८				१०६२	
१८९				१०६२	
१९०				१०६२	
१९१				१०६२	
१९२				१०६२	
१९३				१०६२	
१९४				१०६२	
१९५				१०६२	
१९६				१०६२	
१९७				१०६२	
१९८				१०६२	
१९९				१०६२	
२००				१०६२	
२०१				१०६२	
२०२				१०६२	
२०३				१०६२	
२०४				१०६२	
२०५				१०६२	
२०६				१०६२	
२०७				१०६२	
२०८				१०६२	
२०९				१०६२	
२१०				१०६२	
२११				१०६२	
२१२				१०६२	
२१३				१०६२	
२१४				१०६२	
२१५				१०६२	
२१६				१०६२	
२१७				१०६२	
२१८				१०६२	
२१९				१०६२	
२२०				१०६२	
२२१				१०६२	
२२२				१०६२	
२२३				१०६२	
२२४				१०६२	
२२५				१०६२	
२२६				१०६२	
२२७				१०६२	
२२८				१०६२	
२२९				१०६२	
२३०				१०६२	
२३१				१०६२	
२३२				१०६२	
२३३				१०६२	
२३४				१०६२	
२३५				१०६२	
२३६				१०६२	
२३७				१०६२	
२३८				१०६२	
२३९				१०६२	
२४०				१०६२	
२४१				१०६२	
२४२				१०६२	
२४३				१०६२	
२४४				१०६२	
२४५				१०६२	
२४६				१०६२	
२४७				१०६२	
२४८				१०६२	
२४९				१०६२	
२५०				१०६२	
२५१				१०६२	
२५२				१०६२	
२५३				१०६२	
२५४				१०६२	
२५५				१०६२	
२५६				१०६२	
२५७				१०६२	
२५८				१०६२	
२५९				१०६२	
२६०				१०६२	
२६१				१०६२	
२६२				१०६२	
२६३				१०६२	
२६४				१०६२	
२६५				१०६२	
२६६				१०६२	
२६७				१०६२	
२६८				१०६२	
२६९				१०६२	
२७०				१०६२	
२७१				१०६२	
२७२				१०६२	
२७३				१०६२	
२७४				१०६२	
२७५				१०६२	
२७६				१०६२	
२७७				१०६२	
२७८				१०६२	
२७९				१०६२	
२८०				१०६२	
२८१				१०६२	
२८२				१०६२	
२८३				१०६२	
२८४				१०६२	
२८५				१०६२	
२८६				१०६२	
२८७				१०६२	
२८८				१०६२	
२८९				१०६२	
२९०				१०६२	
२९१				१०६२	
२९२				१०६२	
२९३				१०६२	
२९४				१०६२	
२९५				१०६२	
२९६				१०६२	
२९७				१०६२	
२९८				१०६२	
२९९				१०६२	
३००				१०६२	
३०१				१०६२	
३०२				१०६२	
३०३				१०६२	
३०४				१०६२	
३०५				१०६२	
३०६				१०६२	
३०७				१०६२	
३०८				१०६२	
३०९				१०६२	
३१०				१०६२	
३११				१०६२	
३१२				१०६२	
३१३				१०६२	
३१४				१०६२	
३१५				१०६२	
३१६				१०६२	
३१७				१०६२	
३१८				१०६२	
३१९				१०६२	
३२०				१०६२	
३२१				१०६२	
३२२				१०६२	
३२३				१०६२	
३२४				१०६२	
३२५				१०६२	
३२६				१०६२	
३२७				१०६२	
३२८				१०६२	
३२९				१०६२	

७४	माघनन्दि भट्टारक पद्मानन्ददेव मं ब्रवादि नेमिचन्द्रपं० देव			१८७ ८५ १२४ ४२६ ४६४ १३० ३२३ ३२५ ३२८ १२८ ८१	” ” ११०२ ” ११०३ ” ११०४ अ० १११८  ” ११२० ” ११२८ अ० ११२३					
७७	लखनन्दि मुनि	देवकीर्ति म०म०	×	३६	१०८५				देवकीर्ति मुनि बड़े भारी कवि, तार्किक और वक्ता थे। उक्त तिथि को उनका स्वर्ग-वास होने पर उक्त शिष्यों ने उनकी निषद्या बनवाई।	
७८	माधवचन्द्र व्रती									
७९	त्रिभुवनमल्ल योगी									
८०	मेघचन्द्र	शालचंद्र अध्यात्मी	मू० दे० पु०	४६६	११०८				इनके एक शिष्य रामदेव विभ्र ने जिनालय	
८१	नयकीर्ति देव	(हिरिय) नय-कीर्ति देव	×	४७५	अ० १११०				बनवाया व दान दिया।	
८२	धनकीर्ति देव	×	×	२४३	अ० १११२					

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि लेख नं०	समय	विशेष विवरण
८३	चन्द्रप्रभदेव म० म०	हिरिनयकीर्ति	×	८८, ८९ अ. ११०८	
८४	चन्द्रकीर्ति	×	×	११२०	
८५	कनकनन्दिदेव	×	×	२३८ अ. ११२०	
८६	मल्लिषेण	×	×	२५१ "	
८७	सागरनन्दि	×	×	४६१ "	
८८	सि० देव	शुभचन्द्र त्रै०	मू० दे० पु०	४७१ "	
८९	शुभचन्द्र त्रै०	देव	"	" "	
९०	वादिराज	माघनन्दिनि०	"	" "	
९१	मल्लिषेण मलघारि	देव	×	४६५ अ० ११२२	
९२	श्रीपालयोगीन्द्र	×	×	" "	
९३	वादिराजदेव	×	×	" "	
९४	शान्तिसिंहापण्डित	श्रीपाल योगीन्द्र	×	" "	
९५	परवादिमल्ल	"	×	" "	
९६	नेमिचन्द्र पं० देव	पण्डित	×	" "	
९७	म० म० राजगुरु	×	×	४७९	११३६

इनकी प्रतिमा है।

१६	अभयनन्दि	×	अ० ११७८	
१७	सुरकीर्ति	×	"	
१८	गुणचन्द्र	×	"	
१९	भानुकीर्ति	×	११७०	
१००	माधनन्दि भट्टारक	मू० दे० पु०	"	
१०१	चन्द्रप्रभदेव	भातुकीर्ति	अ० ११८६	
		नयकीर्ति देव		
		म० म०		
१०२	चन्द्रकीर्तिभट्टारक	×	१२३	
१०३	प्रभाचन्द्रभट्टारक	×	१२७	
१०४	सुनिचन्द्रदेव	उदयचन्द्रदेव	१२००	
		म० म०	"	
१०५	पद्मनन्दिदेव	चन्द्रप्रभदेव	"	
१०६	कुमुदचन्द्र	×	१२६	
१०७	माधनन्दि सि० च०	×	"	

इन आचार्यों और अन्य सग्यों ने चन्दा किया ।

होयसलराय राजगुरु । सम्भवतः ये ही उस शास्त्रार के कर्ता हैं जिसका उल्लेख प्रारम्भ के एक श्लोक में आया है । माणिक-चन्द्र ग्रन्थमाला नं० २१ में एक 'शास्त्र-सार समुच्चय' नामक ग्रन्थ छपा है और भूमिका में कहा गया है कि सम्भवतः वे कुमुदचन्द्र के गुरु थे । ( देखा मा० प्र० भूमिका पृ० २३-२४ )





१२१	जिनसेन भट्टारक ( पट्टाचार्य )	×	×	४२२	अ० १३६०	ग्राम का दान दिया ।
१२२	अभिनव पण्डित देव	चारुकीर्ति पं० देव	×	३६२	१३७१	संघ सहित बन्दना को आये ।
१२३	पण्डितदेव	×	×	४८४	अ० १४२०	
१२४	चारुकीर्ति भट्टारक	×	×	१३३	”	
१२५	पण्डितदेव	×	×	३७७	अ० १४२०	चरणचिह्न ।
१२६	ब्रह्म० धर्मरुचि	×	×	११७	अ० १४३१	
१२७	” गुणसागर	अभयचन्द्र भट्टारक	×	३३३	संवत् १४-यात्रा ।	
१२८	चारुकीर्ति पं० देव	×	×	५८	(वि०)	
	”	×	×	८४	१४५६	इनके समस्त मैसूर-नरेश ने मन्दिर की
		×	×	१४२	१४६४	भूमि ऋणमुक्त कराई ।
		×	×			स्वर्गवास ।
१२९	धर्मचन्द्र	चारुकीर्ति	बलाकार गण	११८	१४७०	इनके उपदेश से वधेरवालों ने चौबीस
१३०	श्रुतसागर बर्णी		×	११६	१६०२	तीर्थंकर प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई ।
१३१	इन्द्रभूषण	राजकीर्ति के शिष्य लक्ष्मीसेन	×	११६	वि० सं०	इनके साथ वधेरवालों ने तीर्थयात्रा
					१७१६	की ।

नंबर	आचार्य का नाम	गुरु का नाम	संघ, गण, गच्छादि लेख नं०	समय	विशेष विवरण
१३१	अजितकीर्ति	चारुकीर्ति	देसी गण	७२	१७३१ एक मास के अनशन से सह्येखना ।
१३२	आचार्य	अजितकीर्ति	भू० दे० पु०	४३३ १७३२	मेसूर-नरेश कृष्णराज की ओर से सनदे प्रास की ।
१३३	आचार्य	शान्तिकीर्ति	"	४३४ १७५२	इनके मनोरथ से बिम्बस्थापना की गई ।
१३४	सन्मत्तिसागरवर्णी	चारुकीर्ति गुरु	"	४३५ १७७८	
			"	४५६	
			"	४५७	
			"	४३६ १७८०	
			"	४५५	

### संकेताक्षरों का अर्थ

अ० व अनु० = अनुमातः । कु० = कुकुटासन । त्रै० देव = त्रैविद्यदेव । पं० आचार्य = पंडिताचार्य । पं० देव = पंडितदेव । ब्रह्म = ब्रह्मचारी । म० म० = महामण्डलाचार्य । मू० दे० पु० = मूल संघ, देशीगण, पुस्तक-गच्छ । सि० देव = सिद्धान्तदेव । सि० च० = सिद्धान्त चक्रवर्ती । सि० सु० = सिद्धान्त सुनीश्वर ।





चन्द्रगिरि पर्वत ।

# चन्द्रगिरि पर्वत पर के शिलालेख



# पार्श्वनाथ वस्ति के दक्षिण की ओर के शिलालेख

१ (१)

( लगभग शक सं० ५२२ )

सिद्धम् स्वस्ति ।

जितम्भगवता श्रीमद्धर्म तीर्थ-विधायिना ।

वर्द्धमानेन सम्प्राप्त-सिद्धि-सौख्यामृतात्मना ॥ १ ॥

लोकालोक-द्वयाधारम्बस्तु स्थास्तु चरिष्णु वा ।

\*संविदालोक-शक्तिः स्वाव्यशनुते यस्य केवला ॥ २ ॥

जगत्यचिन्त्य-माहात्म्य-पूजातिरायमीयुषः ।

तीर्थकृन्नाम-पुण्यौघ-महार्हन्त्यमुपेयुषः ॥ ३ ॥

तदनु श्री-विशालयम् (लायाम्†) जयत्यद्य जगद्धितम् ।

तस्य शासनमव्याजं प्रवादि-मत-शासनम् ॥ ४ ॥

अथ खलु सकल-जगदुदय-करणोदित-निरतिशय-गुणा-  
स्पदीभूत-परमजिन-शासन-सरस्समभिवर्द्धित - भव्यजन - कमल-  
विकसन-वितिमिर-गुण-किरण-सहस्र-महोति महावीर-सवितरि  
परिनिवृत्ते भगवत्परमर्षि - गौतम - गणधर - साक्षाच्छिष्य-

\* सच्चिदा † विशालेयत्



लोहार्य - जम्बु - विष्णुदेवापराजित-गोवर्द्धन - भद्र-  
 बाहु-विशाख-प्रोष्ठिल-कृत्तिकार्य\* - जयनाम-सिद्धार्थ-  
 धृतिषेणबुद्धिलादि - गुरुपरम्परीणकूमाभ्यागत - महापुरुष -  
 सन्तति-समवद्योतितान्वय-भद्रबाहु-स्वामिना उज्जयन्या-  
 मष्टाङ्ग-महानिमित्त-तत्त्वज्ञेन त्रैकाल्य-दर्शिना निमित्तेन द्वादश-  
 संवत्सर-काल-वैषम्यमुपलभ्य कथिते सर्वस्सङ्घ उत्तरापथादृत्ति-  
 णापथम्प्रस्थितः क्रमेणैव जनपदमनेक-ग्राम-शत-सङ्ख्यं मुदित-  
 जन-धन-कनक-सस्य-गो-महिषा-जावि-कुल-समाकीर्णम्प्राप्तवान्  
 [१] अतः आचार्यः प्रभाचन्द्रो† नामावनितल-ललाम-भूतेऽ-  
 थास्मिन्कटवप्र-नामकोपलक्षिते विविध-तरुवर-कुसुम-दला-  
 वलि-विरचना-शबल-विपुल-सजल-जलद - निवह - नीलोपल - तले  
 वराह - द्वीपि-व्याघ्रर्क्ष-तरु-व्याल-मृगकुलोपचितोपत्यक-कन्दर-  
 दरी-महागुहा-गहनाभोगवति समुत्तुङ्ग-शृङ्गेसिखरिणि जीवित-  
 शेषमल्पतर-कालमवबुध्यात्मनः‡ सुचरितः§ - तपस्समाधिमारा-  
 धयितुमापृच्छ निरवसेषेण सङ्घं विसृज्य शिष्येणैकेन पृथुलत-  
 रास्तीर्ण-तलासु शिलासु शीतलासु स्वदेहं संन्यस्याराधितवान्  
 क्रमेण सप्त-शतमृषीणामाराधितमिति जयतु जिन-शासनमिति ।

२ ( २० )

( लगभग शक सं० ६२२ )

अदेयरेनाड चित्तूर मौनिगुरवडिगल शिषित्तियर्  
 नागमतिगन्तियर् मूरु तिङ्गल् नोन्तु मुडिप्पिदर् ।

\* कृत्तिकार्य † प्रभाचन्द्रेण ‡ अध्वनः § सुचकितः

चन्द्रगिरि पर्वत पर के शिलालेख ।

३

[ अदेयरेनाडु<sup>†</sup> में चित्तूर के मौनि गुरु की शिष्या नागमति गन्तियर् ने तीन मास के व्रत के पश्चात् शरीरान्त किया । ]

३ ( १२ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री । दुरिताभूद् वृषमान्कीस्तलरे पोदेदज्ञानशैलेन्द्रमान्पोल्  
दुर-मिथ्यात्व-प्रमूढ-स्थिरतर-नृपनान्मेद्विगन्धेभमय्दान् ।  
सुरविद्यावध्नभेन्द्रास्सुरवरमुनिभिस्तुत्य कल्बप्पिनामेल्  
चरितश्रीनामधेयप्रभुमुनिन्नतगल् नोन्तुसौख्यस्थनाट्दान् ॥

[ पाप, अज्ञान व मिथ्यात्व को हत और इन्द्रियों का दमन कर कटवप्र पर्वत पर चरितश्री मुनि-व्रत पाळ सुख को प्राप्त हुए । ]

४ ( १७ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

.....गल्नोन्तु मुडिप्पिदर् ।

[ व्रतधार प्राणोत्सर्ग किया । ]

५ ( १८ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

स्वस्ति श्री जम्बुनाय गिर् तील्यदोल् नोन्तु मुडिप्पिदर् ।

[ जम्बुनायगिर् ने व्रतपाळ प्राणोत्सर्ग किया । ]

६ ( ६ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री नेडुबोरेय पानप\* भटारजोन्तु मुडिप्पिदर् ।

†पल्लवनरेश नन्दिवर्म के एक दानपत्र में अदेयराष्ट्र का उल्लेख आया है । संभव है अदेयरेनाडु भी उसी का नाम हो (इंडि. एन्टी. ८, १६८)

\*मौनद ।

[ नेडुबोरे के पानप भटार ने व्रतपाल प्राणोत्सर्ग किया । ]

७ ( २४ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री कित्तूरा वेल्माददा धम्मसेनगुरवडिगला शिष्यर्  
बालदेवगुरवडिगल् सन्यासनं नोन्तु मुडिप्पिदार् ।

[ कित्तूर में वेल्माद के धम्मसेनगुरु के शिष्य बालदेवगुरु ने सन्यास-व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया । ]

८ ( २५ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री मालनूर पट्टिनि गुरवडिगल शिष्यर् उग्रसेनगुर-  
वडिगल् ओन्दु तिङ्गल् सन्यासनं नोन्तु मुडिप्पिदार् ।

[ मलनूर के पट्टिनिगुरु के शिष्य उग्रसेनगुरु ने एक मास तक सन्यास-व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया । ]

९ ( २६ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री अगलिय मौनिगुरवर शिष्य कोट्टरद गुणसेनगुर-  
वन्नोन्तु मुडिप्पिदार् ।

[ अगलि के मौनिगुरु के शिष्य कोट्टर के गुणसेन गुरु ने व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया । ]

१० ( २७ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री पेरुमालु गुरवडिगला शिष्य धरणो कुत्तारेवि\*गु-  
रवि...डिप्पिदार् ।

\* एचि ।

चन्द्रगिरि पर्वत पर के शिलालेख ।

५

[ पेरुमालुगुरु की शिष्या धण्येकुत्तारेविगुरवि (?) ने .....  
प्राणोत्सर्ग किया । ]

११ ( ६ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री उल्लिकल्गोरवडिगल् नोन्तु.....दार् ।

[ उल्लिकल्गुरु (या उल्लिकल् के गुरु) ने व्रत पाल प्राणो-  
त्सर्ग किया ]

१२ ( ५ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्रीतीर्थद गोरवडिगल् नो.....

[ तीर्थदगुरु (या तीर्थ के गुरु) ने व्रत पाल (प्राणोत्सर्ग किया)]

१३ ( ३३ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री कालाविगुर्गुरवडिगल शिष्यर् तरेकाड पेजेडिय  
मोदेय कलापकद गुरवडिगल्लिर्पत्तोन्तु दिवसं सन्यासनं नोन्तु  
मुडिप्पिदार् ।

[ तलेकाड में पेजेडि के कलापक\* गुरु कालाविर गुरु के  
शिष्य ने इक्कीस दिन तक सन्यास व्रत पाल प्राणोत्सर्ग किया । ]

१४ ( ३४ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री-ऋषभसेन गुरवडिगल शिष्यर् नागसेन गुर-  
वडिगल् सन्यासनविधि इन्तु मुडिप्पिदार् ।

\* कलापक का शब्दार्थ मुञ्जवृक्ष या समूह होता है ।

नागसेनमनघं गुणाधिकं नागनायकजितारिमण्डलं ।

राजपूज्यममलश्रीयाम्पदं कामदं हतमदं नमाम्यहं ॥

[ ऋषभसेनगुरु के शिष्य नागसेनगुरु ने सन्यास-विधि से प्राणोत्सर्ग किया । ]

१५ ( २ )

( लगभग शक सं० ५७२ )

श्री । उद्यानैर्जितनन्दनं ध्वनदलिव्यासत्तरक्तोत्पल—

व्यामिश्रीकृत†-शालिपिञ्जरदिशं कृत्वा तु बाह्याचलं ।

सर्व्वप्राणिदयार्थदाब्धिभगवद्ध्यानेन‡सम्बोधयन्

आराध्याचलमस्तके कनकसत्सेनोत्भवत्सत्पति ॥ १ ॥

अहो बहिर्गिरिन्त्यक्त्वा बलदेवमुनिश्श्रीमान् ।

आराधनम्प्रगृहीत्वा सिद्धलोकं गतर्पुनः ॥ २ ॥

१६ ( ३० )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री ...म्मडिगल् नोन्तु कालं केय्दार् ।

[ ...म्मडिगल ने व्रत पाल देहोत्सर्ग किया । ]

१७-१८ ( ३१ )

( लगभग शक सं० ५७२ )

श्री —भद्रबाहु सचन्द्रगुप्तमुनीन्द्रयुग्मदिनोप्पेवल् ।

भद्रमागिद धर्ममन्दु वलिककेवन्दिनिसल्कलो ॥

† व्यापि श्रीकृत    ‡ भगव'ना (ज्ञा) नेन (नया एडीशन)

विदुमाधर शान्तिसेनमुनीशनाकिण्वेलगोल ।

अद्रिमेलशनादि विदुपुनर्भवकरे आगि . . ॥

[ जो जैन-धर्म भद्रबाहु और चन्द्रगुप्त मुनीन्द्र के तेज से भारी समृद्धि को प्राप्त हुआ था उसके किञ्चित् क्षीण हो जाने पर शान्तिसेन मुनि ने उसे पुनरुत्थापित किया । इन मुनियों ने वेलगोल पर्वत पर अशन आदि का त्याग कर पुनर्जन्म को जीत लिया । ]

१८ ( ३२ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री वेष्टेडे गुरवडिगलमाणाकस्सिङ्गणन्दिगुरवडिगलनोन्तु-  
कालं-केय्दार् ।

[ वेष्टेडेगुरु के शिष्य सिंहनन्दिगुरु ने व्रत पाल देहात्सर्ग किया ]

२० ( २६ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

.....

.....यरुल्लरि पीठ दिल्लो नान्

.....तारि कुमाररि नच्चिर्चकेय्येतां

स्थिरदरल्लिन्तुपेगुरम सुरलोकविभूति एय् दिदार् ।

[ .....इस प्रकार पेगुरम (?) ने सुरलोक विभूति को प्राप्त किया । ]

२१ ( २८ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

स्वस्ति श्रीगुणभूषितमादि उल्लाडग्देरिसिद्धा निसिदिगे  
सद्धम्मगुरुसन्तानान् सन्दिद्वग-गणता-नयान् गिरितल्लदामे-

८

चन्द्रगिरि पर्वत पर के शिलालेख ।

लति.....स्थलमान् तीरदाणमाकेलगे नेलदि मानदा सद्धम्मदा  
गेलि ससानदि पतान् ।

[ इस लेख का भाव स्पष्ट नहीं हुआ । ]

२२ ( ४८ )

( लगभग शक सं० १०२२ )

श्री अभयान्दि पण्डितर गुड् कोत्तय्य वन्दिस्सि देवर  
वन्दिस्सिद ।

[ अभयान्दि पण्डित के गृहस्थ शिष्य कोत्तय्य ने यहाँ आकर  
देव-वन्दना की । ]

२३ ( २८ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

स्वस्ति श्रीइनुड् गूरा मे\*लगवासगुरवर्क्कल्वप्प वेट्टम्मे-  
ल्कालं केय्दार् ।

[ इनुड् गूर के मेललगवासगुर ने कल्वप्प (कटवप्र) पर्वत पर  
देहोत्सर्ग किया । ]

२४ ( ३५ )

( लगभग शक सं० ७२२ )

स्वस्ति . समधिगतपञ्चमहाशब्दपदडक्केदलिध्वजसाम्या...  
महामहासामन्ताधिपति श्रीवल्लभ...हा-राजाधिराज...  
मेश्वर-महाराजरा मगन्दिर् रणावलोक-श्रीकम्बय्यन्  
पृथुवीराज्यं गेये ब...रसर्क्कल्वप्पु...ल पेर्गल्वप्पिना पोलादिन्न-

\* चे

डदु कोट्टदु...सेन अडिगलं मनसिजरा...गनाअरसि बेनेएत्ति  
मैनमुज्जमिसुवल्लि कोट्टदु पोलमेरे तट्टगरेय किल्कंरे पैगि  
अत्तरकल्ल मेगे अल्लिन्दा वसेल् कर्गलमारदु सल्लु पेरिय आल  
...वारि मरल् पुणुसपेरि...तोरेयु आलरे मेरे दुवेट्टगे निरुक्कल्लु  
कोवळ्ळादा पेरिय एलवु अल्लि कुडित्तु अरसरा श्रीकरणमुं.....  
.....गादियर दिगिडगगामुण्डरुम् एन्नवरु...वङ्गरु-  
वल्लभ-गामुण्डरुम् रुन्दि वञ्जरु रुण्डि मास्मनुं कादलूर  
श्रीविक्रम-गामुण्डरुं कलिदुर्गगामुण्डरुं अगदिपो.....  
.....यरर...रणपारगामुण्डरुं अन्दमासल उत्तम  
गामुण्डरुं नविलूर नालूगामुण्डरुं बेल्लेगालद गोविन्दपा-  
डिय उ...ल्लामन्दुं बेल्लेगालदा वलि गोविन्दपाडिगे कोट्टदु.

बहुभिर्व्वसुधाभुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलं ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां ।

षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रमिः ॥ॐ

[ श्रीबल्लभमहाराज के पुत्र महासामन्ताधिपति रणावलोका श्रीकम्बय्यन् के राज्य में मनसिज (?) की राज्ञी के व्याधि से मुक्त होने के पश्चात् मौन व्रत समाप्त होने पर कुछ भूमि का दान दिया गया था, जिसकी सीमा आदि लेख में दी है । लेख दान की शपथ के साथ समाप्त होता है । ]

\* ये दो श्लोक त्रयेण्डीशन में बहुत अशुद्ध हैं । उसमें 'यदाभूमि' के स्थान पर 'यथाभूमि' व 'स्वदत्त' 'परदत्त' 'हरन्ति' 'पृष्ठायां' पाठ हैं ।



२५ \* ( ६१ )

( लगभग शक सं० ८२२ )

श्रीमत्.....पु...शिष्यर्अरिट्टोनेमि माडिसिहर् सिंह

[ ...के शिष्य अरिट्टोनेमि ने बनवाया । ]

—

\* भरतेश्वर की मूर्ति के दक्षिण की ओर ।

## शासनवस्ति के पूर्व की ओर के शिलालेख

२६ ( ८८ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

सुरचापंभोले विद्युल्लतेगल तेरवोल्मञ्जुवोल्तोारि बेगं ।  
पिरिगुं श्रीरूप-लीला-धन-विभव-महाराशिगल्लिनल्लवार्गं ॥  
परमार्थं मेच्छेनानीधरणिगुलिरवानेन्दु सन्यासनं-गे- ।  
यदुरु सत्वननन्दिसेन-प्रवर-मुनिवरन्देवलोकके सन्दान् ॥

[ रूप, लीला, धन व विभव, इन्द्र-धनुष, विजली व ओसबिन्दु  
के समान लक्षिक हैं, ऐसा विचारकर नन्दिसेन मुनि ने सन्यास धार  
सुरलोफ को प्रस्थान किया । ]

२७ ( ११४ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री ॥ शुभान्वित-श्रीनमिलूरसङ्घदा । प्रभावती..... ।  
प्रभाख्यमी-पर्वतदुल्ले नोन्तुताम् । स्वभाव-सौन्दर्य-कराङ्ग-  
राधिपर् ॥

ग्रामे मयूरसङ्घेऽस्य आर्यिका दमितामती ।

कट्वप्रगिरिमध्यस्था साधिता च समाधिता ॥

[ नमिलूरसंघ की प्रभावती ने इस पर्वत पर व्रत धार दिव्य  
शरीर प्राप्त किया । ]

[ मयूरग्रामसंघ की आर्यिका दमितामती ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया । ]

२८ ( ६८ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री ॥ तपमान्द्वादशदा विधानमुखदिन् केट्ठेन्दुताधात्रिमेल् ।  
चपलिल्ला नविलूर सङ्गदमहानन्तामतीखन्तियार् ॥  
विपुलश्रोकटवप्रनल् गिरियमेल्नोन्तोन्दु सन्मार्गदिन् ।  
उपमील्या सुरलोकसौख्यदेडेयान्तामेयिद् इल्दाल् मनम् ॥

[ नविलूर संघ की अनन्तामती-गन्ति ने द्वादश तप धार कटवप्र पर्वत पर यथाविधि व्रतों का पालन किया और सुरलोक का अनुगम सुख प्राप्त किया । ]

२९ ( १०८ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्री ॥ अनवरतत्रालम्पि भृत-शयममेन्ते विच्छेयं  
वनदोलयोग्य... नक्कुमदि.....गलो...  
मनवमिक्कुत.....रदि...नोन्तुसमाधिकूडिदों  
अनुपम दिव्यप्पदु सुरलोकद मार्गं दोलिल्दरिन्विनिम् ॥  
मयूरग्रामसंङ्गस्य सौन्दर्या-आर्य्य-नामिका ।  
कटप्रगिरिशैलेच साधितस्य समाधितः ॥

[ उत्साह के साथ आत्म-संयम-सहित समाधि व्रत का पालन किया और सहज ही अनुपम सुरलोक का मार्ग ग्रहण किया । (१) ]

[ मयूरग्रामसंघ की आर्या ने कटवप्र पर्वत पर समाधि-मरण किया । ]

३० ( १०५ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

अङ्गादिनामननेकं गुणकीर्त्तिदेन्तान्  
तुङ्गोच्चभक्तिवशदिन् तोरदिल्लिदेहम्  
पोङ्गोल् विचित्रगिरिकूटमयंकुचेलम् ।

[ गुणकीर्त्ति ने भक्ति-सहित यहाँ देहोत्सर्ग किया । ]

३१ ( १०६ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

नविलूरा श्रीसङ्गदुल्ले गुरवंनम्मौनियाचारियर्  
अवराशिष्यरनिन्दितागुणमि...वृषभनन्दोमुनी ।  
भवविज्जैन-सुमार्गदुल्ले नडदेन्दाराधना-योगदिन्  
अवरुं साधिसि स्वर्गलोकमुख-चित्तं .....माधिगल् ।

[ नविलूर संघ के मौनिय आचार्य के शिष्य वृषभनन्दि मुनि ने समाधि-मरण किया । ]

३२ ( ११३ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

तनगे मृत्युवरवानरि देन्दु सुपण्डितन् ।  
अनेक-शील-गुणमालेगलिनसगिदोप्पिदेन् ॥  
विनय-देवसेन-नाम-महामुनि नोन्तु पिन् ।  
इन दरिल्लु पलितङ्कदे तान्दिवमेरिदन् ॥

[ मृत्यु का समय निकट जान गुणवान् और शीलवान् देवसेन महामुनि व्रत पाल स्वर्ग-गामी हुए । ]

३३ ( ८३ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

एडेपरेगीनडे केय्दु तपं सय्यममान्कोलत्तूरसङ्घ . . ।

वडे कोरेदिन्तुवाल्वुदरिदिन्नेनगेन्दु समाधि कूडिए ॥

एडे-विडियल्कवडिं कटवप्रवणरिये निल्लदनन्धन्

पडेगमोलिप्प.....न्दी-सुरलोक-महा-विभवस्थननादं ।

[ “अब मेरे लिये जीवन असम्भव है” ऐसा कहकर कोल-  
त्तूर संघ के.....(?) ने समाधि-व्रत लिया और कटवप्र पर्वत पर से  
सुरलोक प्राप्त किया । ]

३४ ( ८४ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

स्वस्ति श्री

अनवद्यन्नदि-राष्ट्रदुल्ले प्रथित-यशो...न्दकान्वन्दु... लाम्

विनयाचार प्रभावन्तपदिन्नधिकन्चन्द्र-देवाचार्य नामन्

उदित-श्री-कल्वप्पिनुल्ले रिषिगिरि-शिले-मेल्लेन्तुतन्देहमिक्कि

निरवद्यन्नैरि स्वर्गं शिवनिलेपडेदान्साधुगल्पूज्यमानन् ।

[ नदिराज्य के यशस्वी, प्रभावयुक्त, शील-सदाचार-सम्पन्न  
चन्द्रदेव आचार्य कल्वप्प नामक ऋषिपर्वत पर व्रत पाल स्वर्ग-  
गामी हुए । ]

३५ ( ७६ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

सिद्धम्

नेरेदाद व्रत-शील-नोन्पि-गुणदिं स्वाध्याय-सम्पत्तिनिम् ।

करेइल्-नस्तप-धर्मदा-ससिमति-श्री-गन्तियर्व्वन्दुमेल् ॥

अरिदायुष्यमनेन्तु नोडेनगे तानिन्तेन्दु कल्वप्पिनुल् ।

तोरदाराधने-नोन्तु तीर्थ-गिरि-मेल् स्वर्गालयकैरिदार् ॥

[ व्रत-शील-आदि-सम्पन्न ससिमति-गन्ति कल्वप्पु पर्वत पर  
आई और यह कहकर कि मुझे इसी मार्ग का अनुसरण करना है  
तीर्थगिरि पर सन्यास धारणकर स्वर्ग गामी हुई । ]

— — —

# कांचिन दोणे के मार्ग पर के शिलालेख

३६ ( १४५ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

श्रो एरेयगवे कवट्टद लो.....।

[ कवट्ट में एरेयगवे..... ]

३७ ( १४६ )

( लगभग शक सं० १०७२ )

श्रीमतु गरुडकेसिराज स्थिरं जीयातु ।

३८ ( ५६ )

( शक सं० ८६६ )

कूगे ब्रह्मदेव स्तम्भ पर

( दक्षिणमुख )

स्वस्ति म.....म् उदधिं कृत्वावधिं मेदिनी

...चक्र.....धवो भुञ्जन् भुजासेर्वलात् ।

न्यश्रीजग.....पतेर्गङ्गान्वयद्दमाभुजां

भूषा-रत्नमभू.....वनितावक्त्रेन्दुमेघोदयः ॥ १ ॥

गद्यं । तस्य सकलजगतीतलोत्तुङ्गगङ्गकुलकुमुद-

कौमुदी-महातेजायमानस्य । सत्यवाक्यकौकुणिवर्म्म-धर्म्म-  
महाराजाधिराजस्य । कृष्णराजोत्तरदिग्विजयविदितगुर्जराधि-  
राजस्य । वनगजमल्लप्रतिमल्लबलवदल्लदर्प-दलनप्रकटीकृतविक्र-  
मस्य । गण्डमार्त्तण्ड-प्रतापपरिरक्षित-सिंहासनादि-सकल-राज्य-  
चिह्नस्य । विन्ध्याटवीनिकटवर्त्ति...ण्डक-किरातप्रकरभङ्ग-करस्य ।  
भुजबलपरि..... मान्यखेट-प्रवेशितचक्रवर्त्तिकट...विक्रम...  
श्रीमदिन्द्रराजपट्टबन्धोत्सवस्य ।...समुत्साहितसमरसज्ज-  
वज्जल.....घ...नस्य । भयोपनतवनवासिदेशाधि.....  
मणिकुण्डलमदद्विपादि-समस्त-वस्तुग्र ..... समुपलब्ध-सङ्कीर्त्त-  
नस्य । प्रणतमाटूरवंशजस्य.....ज-सुतसत-भुज-बलावलेप-गज-  
घटाटोपगर्व्वदुर्वृत्तसकलनेालम्बाधिराजसमरविध्वंसकस्य ।  
समुन्मूलितराज्यकण्टकस्य । सञ्चूर्णितोच्चङ्गिगिरिदुर्गस्य । संहत-  
नरगाभिधानशबरप्रधानस्य । प्रतापावनतचेर-चोल-पाण्ड्य-  
पल्लवस्य । प्रतिपालितजिनशासनस्य ।.....त-महाध्वजस्य ।  
बलबदरिनृपद्रविणापहरण.....कृतमहादानस्य । परिपालितसेतु  
बन्धमै...न्धुसम्बन्धवसुन्धरातलस्य । श्रीनेालम्बकु(लान्त)क-  
देवस्य । शौर्यशासनं धर्म्मशासनं च सञ्चरतु दिग्मण्डलान्तरमा-  
कल्पान्तरमाचन्द्रतारम् ॥

( पश्चिममुख )

.....या कै रण्यु पायान्त.....तिशिशखाशेखरं  
..... नान्य एवाहृतो ... श्रीगङ्गचूडामणि  
...वना...द...बाणि...क्रं पल्लव...मा...येनामितं...



...भुजाबलेपमल...कृत्वा...गं स्वयं ... गुत्तियगङ्गभूपति ...  
 नोलम्बान्तकः॥ .....यिय.....सन्मुखं...युधि.....गादस्मय  
 .....प्रतिगज.....विक्रमं ॥...त्पलमिव... नोलम्बान्तकः  
 .....भूलोकादनेक-द्र...नेकबन्धान्धक... चाल-पल्लव...का  
 नन्दहेतोर...श्रीमारसिंह-क्षि ... तिलक-क्षत्र-चन्द्रस्य...चन्द्र  
 ...व...र्यर.....दर्पं ...गं सं...गं...ह...रः॥...वद्रोषणा  
 ...न्महाविजयोत्सवे.....सिंहासनोर्वी-ध...

इत्याधिष्कृत-वीर-सङ्गर-गिरः चालुक्य-चूडामणे

राजादित्य-हरेर्देवाग्निरजनिश्रीगङ्ग-चूडामणि ।

दैत्येन्द्रैर्मधुकैटभप्रभृतिभिर्ध्वस्तैर्मरुद्रे...

किं मायारिभिरित्यमुत्थितमिति क्षमातङ्क-शङ्काकृ...

...लैर्नरगासुरस्य वसुधानन्दाश्रुमिश्रैश्शिश...

दातैरैकरोत्सरागमवनीचक्रं नोलम्बान्तकः ।

( उत्तरमुख )

( प्रथम ८ पंक्तियाँ अस्पष्ट हैं )

.....गन.....ज्ञ-क्षमाभृतः .....  
 याव ... न ... ड ...ति...तिना.....पद.....क्षति ॥  
 .....मिश्रीकृत-म...क-वीर-विस्मय-तेज.....गुत्तिय-गङ्ग  
 भूपमितियं विश्वं.....कृता.....तिं पतिमह  
 .....वष्टभ्यदुष्टावनिप-कुलमिलामिन्द्रराज...ण...कुम्ब-  
 हल...यक-च्छत्र.....श्रीगङ्ग-चूडामणिरिति धरणी स्तौतियं  
 .....कीर्तिः ॥ .....स्सम्प्रति मारसिंह-नृपतिर्विक्रान्त-

क.....सौ यत्र...स्थिति-साहसोन्मद-महासामन्त-मत्त-  
द्विपम् । ...स्वामिनि पट्ट-बन्ध-महिमा-निर्व्वि...मित्युर्व्वराचक्रं  
यस्य पराक्रम-स्तुति-परैः व्यावर्ण्यत्यङ्गकैः ॥ येनेन्द्र-क्षिति-वृद्धभस्य  
जगती-राज्याभिषेकः कृतः । येना...द-मद...पेनविजितपर्ता-  
लमल्लानुजः । ...प्रो...रणङ्गणे रण-पदुस्तस्यात्मजोजा.....  
.....रभू.....म...

( पूर्वमुख )

वगेयललुस्वमप्प बलदल्लन...डिसि गेल्द शौर्यमं  
पोगल्वेनो धात्रियेल् नेगल्द वज्जलनं बिडेयट्टि देल्गेयं  
पोगल्वेनो पल्लवाधिप.....मं तवे कोन्द वीरमं  
पोगल्वेनो पेलिमेवोगल्वेनेन्दरिये चलदुत्तरङ्गनं ॥  
ओलियेकोदु पल्लवर पन्दलेयेल्लमनेयदेदट्टिका—  
पालिकरूरि सारि परमण्डलिककल नम्मनीवुईय् ।  
ओलिगे निम्म पन्दलेगलं वरलीयदे कण्डु बाल्लु... ।  
ओलिय लेम्बिनं नेगल्दुदेदट्टि मण्डलिक-त्रिणेत्तना ॥  
तुङ्गपराक्रमं पल्लु कालमगुर्व्विसे सुत्तिवुत्ति बि—  
ट्टुङ्गडकाडुवट्टि कोललारन...मुन्नमेनिप्प पेंम्पिनु—  
चचङ्गिय कोटेयं जगमसुङ्गोले कोण्ड नगल्ले मूरु लो—  
कङ्गलोलम्पोगल्लेगेडेयादुदु गुत्तिय-गङ्ग-भूपना ॥  
कन्दं ॥ कालनो रावणनो शिशु—

पालनो नानेनिसि नेगल्द नरगन तले त—

त्रालाल कय्गे वन्दुदु

हेलासाध्यदाले गङ्ग-चूडामणिया ।

नुडिदने कावुदने एल्दे-

गिडदिरुजवनिट्ट रक्के निनगीवुदने

नुडिदने एअदु कय्यदु

नुडिदुदु तप्पुगुमे गङ्ग-चूडामणिया ॥

इन्तु बिन्ध्याटवी-निकट-तापी-तटवुं । मान्यखेट-पुर-  
वरवुं । गोनूरुमुचच्चियुं । बनवासिदेशवुं । पाभसेयकोटेयुं ।  
मोदलागे पलवेडेयोलमरियरं पिरियरुवं कादि गेल्लु पलवेडे-  
गलोलं महाध्वजमनेत्तिसि महादानंगेयट्टु नेगल्द गङ्ग-विद्याधरं ।  
गङ्गरोल्लगण्डं । गङ्गरसिङ्गं । गङ्गचूडामणि गङ्गकन्दर्पं । गङ्गवज्रं ।  
चलदुत्तरङ्गं । गुत्तियगङ्गं । धर्म्मवितारं । जगदेकवीरं । नुडि-  
दन्तेगण्डं । अहितमार्त्तण्डं । कदनकर्कशं । मण्डलिक-त्रिणेत्रं ।  
श्रीमन्नोलम्बकुलान्तकदेवं पलवेडेगलोलं बसदिगलुं मानस्त-  
म्भङ्गलुवं माडिसिदं । मङ्गलं । धर्म्म(म)ङ्गलं नमस्यं नडयिसिबलिय-  
मेन्दुवर्ष राज्यमं पत्तुविट्टु बङ्गापुरदाल् अजितसेनभट्टारकर  
श्रीपादसन्निधियोल् आराधनाविधियिमूरुदे...सं नोन्तु समाधियं  
साधिसिदं ॥

वृत्त ॥ एले चोलचित्तिपाल सन्तवेल्देयं नीं नीविकोल्  
निन्ननुं-गोले माण्डत्तिरु पाण्डय पल्लव भयङ्गोण्डोडदिर्निन्नम-  
ण्डलदिं पिङ्गदे निल्वदीगनिवनिन्नं त...गङ्गम-  
ण्डलिकं देवनिवासदत्त विजयं-गेयदं नोलम्बान्तकं ॥

[इस लेख में गङ्गराज मारसिंह के प्रताप का वर्णन है । इसमें कथन है कि मारसिंह ने ( राष्ट्रकूट नरेश ) कृष्णराज ( तृतीय ) के लिए गुर्जर देश को विजय किया; कृष्णराज के विपत्ती अल्ल का मद चूर किया; विन्ध्य पर्वत की तली में रहने वाले किरातों के समूहों को जीता; मान्यखेट में नृप ( कृष्णराज ) की सेना की रक्षा की; इन्द्रराज ( चतुर्थ ) का अभिषेक कराया; पातालमल्ल के कनिष्ठ भ्राता वज्जल को पराजित किया; वनवासीनरेश की धन सम्पत्ति का अपहरण किया; मादूर वंश का मस्तक झुकाया; नेलम्ब कुल के नरेशों का सर्वनाश किया; काडुवट्टि जिस दुर्ग को नहीं जीत सका था उस उच्चङ्गि दुर्ग को स्वाधीन किया; शवराधिपति नरग का संहार किया; चौड़ नरेश राजादित्य को जीता; तापी-तट, मान्यखेट, गोनूर, उच्चङ्गि, बनवासि व पाभसे के युद्ध जीते, व चेर, चोड़, पाण्ड्य और पल्लव नरेशों को परास्त किया व जैन धर्म का प्रतिपादन किया और अनेक जिन मन्दिर बनवाये । अन्त में उन्होंने राज्य का परित्याग कर अजितसेन भट्टारक के समीप तीन दिवस तक सत्लेखना व्रतका पालन कर बंकापुर में देहोत्सर्ग किया । लेख में वे गङ्ग चूड़ामणि, नेलम्बान्तक, गुत्तिय-गङ्ग, मण्डलिकत्रिनेत्र, गङ्ग-विद्याधर, गङ्गकन्दर्प, गङ्गवज्र, गङ्गसिंह, सत्यवाक्य कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाराजाधिराज आदि अनेक पदवियों से विभूषित किये गये हैं । ]

३८ (६३)

महनवमी मण्डप में

( शक सं० १०८५ )

(पूर्वमुख)

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्त - भुवन -स्तुत्य- नित्य-निरवद्य-विद्या-विभव-  
 प्रभाव-प्रह्वरुहरीपाल-मौलि - मणि-मयूख-शेखरीभूत-पूत-पद-नख-  
 प्रकरं । जितवृजिनजिनपतिमतपयर्पयोधिलीलासुधाकरं ।  
 चाव्वाकाखव्वगव्वदुव्वारोव्वीधरोत्पाटनपटिष्ठनिष्ठुरोपालम्भद -  
 म्भोलिदण्डरं अकुण्ठ-कण्ठ-कण्ठीरव-गभीर-भूरि - भीम - ध्वान-  
 निर्हलितदुर्दमेद्वबौद्धमदवेदण्डरुम् । अप्रतिहत-प्रसरदसम-लसदु-  
 पन्यसननित्यनैसित्य - पात्र-दात्र-दलितनैयायिकनयनिकरनलरं ।  
 चपलकपिलविपुलविपिनदहन-दावानलरं । शुम्भदम्भोद-नाद-नो-  
 दितविततवैशेषिकप्रकरमदमराज्ञरं । शरदमलशशधरकरनिकरनी-  
 हारहाराकारानुवर्त्तिकीर्त्तिवल्लीवेल्लितदिगन्तरालरुमप्पश्रीमन्म-  
 हामण्डलाचार्यरु श्रीमद्देवकीर्त्तिपण्डितदेवरु ।

कुव्वेनमः कपिल-वादि-वनोम्र-वह्वये

चाव्वाक-वादि-मकराकर-वाडवाग्नये ।

बौद्धोम्रवादितिमिरप्रविभेदभानवे

श्रीदेवकीर्त्तिमुनये कविवादिवाग्मिने ॥ २ ॥

सङ्कल्पं जल्पवल्लीं विलयमुपनयंश्चण्डवैतण्डिकोक्ति-

श्रीखण्डं मूलखण्डं भटिति विघटयन्वादमेकान्तभेदं ।

निर्षिण्डगण्डशैलं सपदि विदलयन्सूक्तप्रौढगर्ज-

त्स्फूर्जन्मेवामदोर्जाजयतु विजयते देवकीर्त्तिद्विपेन्द्रः ॥ ३ ॥

चतुर्मुखचतुर्वक्त्रनिर्गमागमदुस्सहा ।

देवकीर्त्तिमुखाम्भोजे नृत्यतीति सरस्वती ॥ ४ ॥

चतुरते सत्कवित्वदोलभिज्ञते शब्दकलापदोल् प्रस-

नतेमतियोल् प्रवीणते नयागम-तर्क-विचारदोल् सुपू-  
ज्यते तपदोल् पवित्रते चरित्रदोलोन्दि विराजिसल् प्रसि-  
द्धते मुनि-देवकीर्त्तिविबुधाग्रणिगोप्पुवुदी धरित्रियोल् ॥ ५ ॥  
शकवर्षसासिरद एम्भत्तयदेनेय ॥

**वर्षे ख्यात-सुभानु-नामनि सिते पक्षे तदाषाढके  
मासे तन्नवमीतिथौ बुध-युते वारे दिनेशोदये ।**

श्रीमत्तार्किकचक्रवर्त्ति-दशदिग्वर्त्तीर्द्धकीर्त्तिप्रियो  
जातः स्वर्गवधूमनःप्रियतमः श्रीदेवकीर्त्तिव्रती ॥ ६ ॥  
जातेकीर्त्यवशेषके यतिपतौ श्रीदेवकीर्त्तिप्रभौ  
वादीभेमरिपौ जिनेश्वर-मत-क्षीराब्धितारापतौ ।  
क स्थानं वरवाग्वधूर्जिर्जनमुनिव्रातं ममेति स्फुटं  
चाक्रोशं कुरुते समस्तधरणौ दाक्षिण्य-लक्ष्मीरपि ॥ ७ ॥  
तच्छिष्यो नुतलवखणन्दिमुनिपः श्रीमाधवेन्दुव्रती  
भव्याम्भोरुहभास्करस्त्रिभुवनाख्यानश्रयोगीश्वरः ।  
एते ते गुरुभक्तितो गुरुनिषद्यायाः प्रतिष्ठामिमां  
भूत्याकाममकारयन्निजयशस्सम्पूर्णदिग्मण्डलाः ॥ ८ ॥

[इस लेख में अपने समय के अद्वितीय कवि, तार्किक और वक्ता  
महामण्डलाचार्य मुनि देवकीर्त्ति पण्डित की विद्वत्ता का व्याख्यान है ।  
इस समय जैनाचार्य के सन्मुख सांख्यिक, चार्वाक, नैयायिक, वेदान्ती,  
बौद्ध आदि सभी दार्शनिक हार मानते थे ।

शक सं० १०८२ सुभानु संवत्सर आषाढ शुक्ल ६ बुधवार को  
सूर्योदय के समय इन तार्किक चक्रवर्त्ति श्री देवकीर्त्ति मुनि का स्वर्ग-

वास हुआ । उनके शिष्य लक्खनन्दि, माधवेन्दु और त्रिभुवनमल्ल ने अपने गुरु की स्मारक यह निषद्या प्रतिष्ठित कराई । ]

४० ( ६४ )

## उसी स्तम्भ पर

( शक सं० १०८५ )

( दक्षिणमुख )

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभिन्नघन-भानवे ॥१॥

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः

प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।

शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शवलित-जनतानन्द नादेरु-घोषः

स्थेयादाचन्द्र-तारं परम-सुख-महावीर्य-वीचो-निकायः ॥२॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते

तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ बोधनिधिर्व्वभूव ॥३॥

[ श्री ] भद्रस्सर्व्वतो योहि भद्रबाहुरिति श्रुतः ।

श्रुतकेवलिनाथेषु चरमर्परमो मुनिः ॥४॥

चन्द्र-प्रकाशोज्ज्वल-नान्द्र-कीर्त्तिः श्रीचन्द्रगुप्तोऽजनि तस्य शिष्यः ।

यस्य प्रभावाद्नन्ददेवताभिराराधितः स्वस्य गणो मुनीनां ॥५॥

तस्यान्वये भू-विदिते बभूव यः पद्मनन्दिप्रथमाभिधानः ।

श्रीकोण्डकुन्दादि-मुनीश्वराख्यस्सत्संयमादुद्गत-चारणर्द्धिः ॥६॥

अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्य-शब्दोत्तरगृद्धपिच्छः ।

तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-पदार्थ-वेदी ॥७॥

श्री गृद्धपिच्छ-मुनिपस्य बलाकपिच्छः

शिष्योऽजनिष्ठभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।

चारित्रचञ्चुरखिलावनिपाल-मौलि-

माला-शिलीमुख-विराजितपादपद्मः ॥८॥

एवं महाचार्य-परम्परायां स्यात्कारमुद्राङ्किततत्त्वदीपः ।

भद्रस्समन्ताद्गुणतो गणीशस्समन्तभद्रोऽजनिवादिसिंहः ॥९॥

ततः ॥

यो देवनन्दि-प्रथमाभिधानो बुद्ध्या महत्या स जिनेन्द्रबुद्धिः ।

श्रीपूज्यपादोऽजनिदेवताभिर्यत्पूजितं पाद-युगं यदीयं ॥१०॥

जैनेन्द्रं निज-शब्द-भोगमतुलं सर्वार्थसिद्धिः परा

सिद्धान्ते निपुणत्वमुद्रकवितां जैनाभिषेकः स्वकः ।

छन्दस्मूढमधियं समाधिशतक-स्वास्थ्यं यदीयं विदा

माख्यातीह स पूज्यपाद-मुनिपः पूज्यो मुनीनां गणैः ॥११॥

ततश्च ॥

(पश्चिममुख)

अजनिष्ठाकलङ्कं यज्जिनशासनमादितः ।

अकलङ्कं वभौ येन सोऽकलङ्को महामतिः ॥१२॥

इत्याद्युद्धमुनीन्द्रसन्ततिनिधौ श्रीमूलसङ्घे ततो

जाते नन्दिगण-प्रभेदविलसद्देशीगणेश्विभ्रुते ।

गोल्लाचार्य इति प्रसिद्ध-मुनिपोऽभूदोल्लदेशाधिपः

पूर्वं केन च हेतुना भवभिया दीक्षां गृहीतस्सुधीः ॥१३॥



श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिका काय-लम्बा तनुत्रं  
यस्याभूद्वृष्टि-धारानिशितशर-गणाग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्बं ।

चक्रं सद्बृत्तचापाकलित-यति-वरस्याघशत्रून्विजेतुं

**गोलाचार्यस्य** शिष्यस्तजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१४॥

तच्छिष्यस्य ॥

अविद्वकण्ठादिकपद्मनन्दि**सैद्धान्तिकाख्योऽजनि** यस्य लोके ।

**कौमारदेव-**व्रतिताप्रसिद्धिर्जीयात्तु सो ज्ञाननिधिस्सधीरः ॥१५॥

तच्छिष्यः **कुलभूषणाख्ययतिपश्चारित्रवारान्निधि-**

स्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्म्मो महान् ।

शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कप्रन्थकारः **प्रभा—**

**चन्द्राख्यो** मुनिराज-पण्डितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः ॥१६॥

तस्य श्री**कुलभूषणाख्यसुमुने** शिष्यो विनेयस्तुत-

स्सद्बृत्तः कुलचन्द्रदेवमुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधिः ।

तच्छिष्योऽजनि **माघनन्दिमुनिपः कोलापुरे** तीर्थक-

द्राद्धान्तारार्णवपारगोऽचलधृतिश्चारित्रचक्रेश्वरः ॥१७॥

एले माविं वनवज्रदिं तिलिगोलं माणिक्यदिं मण्डना-

वलिताराधिपनिं नभं शुभदमा गिर्पन्तिरिर्दत्तुनि-

र्मलवीगल् **कुलचन्द्रदेव-**चरणाम्भोजातसेवाविनि—

श्चलसैद्धान्तिक**माघनन्दिमुनि**यिं श्री**कोण्डकुन्दान्वयम्** ॥१८॥

हिमवत्कुत्कोल-मुक्ताफल-तरलतरत्तार-हारेन्दुकुन्दो—

पमकीर्त्ति-व्याप्तदिग्मण्डलनवनत-भू-मण्डलं भव्य-पद्मो-

ग्र-मरीचीमण्डलं पण्डित-तति-विनतं **माघनन्द्याख्यवाचं**

यमिराजं वाग्वधूटीनिटिलतटहटन्नूनसद्रत्नप... ॥१८॥

...त मद-रदनिकुलमं भरदिं निर्वर्भेदिसल्के...सरियेनिपं  
वरसंयमाब्धिचन्द्रं धरेयोल् ..**माघनन्दि-सैद्धान्तेश** ॥२०॥  
तच्छिष्यस्य ॥

अवर गुडुगलु सामन्त**केदारनाकरस**† दानश्रेयांस सामन्त  
**निम्बदेव** जगदोर्व्वगण्ड सामन्त**कामदेव** ॥

( उत्तरमुख )

गुरुसैद्धान्तिक**माघनन्दि**मुनिपं श्रीमच्चमूवल्लभं  
भरतं छात्रनपारशास्त्रनिधिगल् श्री**भानुकीर्त्ति**प्रभा-  
स्फुरितालङ्कृत-**देवकीर्त्ति**-मुनिपर्शिर्ष्यर्ज्जगन्मण्डन-  
-होरेये गण्डविमुक्तदेवनिनगित्रीनामसैद्धान्तिकर् ॥२१॥  
क्षीरोदादिव चन्द्रमा मणिरिव प्रख्यात-रत्नाकरात्  
सिद्धान्तेश्वर**माघनन्दि**यमिनो जातो जगन्मण्डनः ।  
चारित्रैकनिधानधामसुविनम्रो दीपवर्त्ती स्वयं  
श्रीमद्गण्डविमुक्तदेवयतिपस्सैद्धान्तचक्राधिपः ॥२२॥

अवर सधर्मर् ।

आवो वादिकथात्रयप्रवणदोल् विद्वज्जनं मेच्छे वि-  
द्यावष्टम्भमनप्पुकेय्दु परवादिक्षोणिभृत्पन्नमं ।  
**देवेन्द्र** कडिवन्ददिं कडिदेले स्याद्वादविद्यास्त्रदिं  
त्रैविद्यश्रुतकीर्त्तिदिव्यमुनिवोल् विख्यातियं ताल्दिदो ॥२३॥  
**श्रुतकीर्त्ति**-त्रैविद्य—

† निकरस

व्रति राघवपाण्डवीयमं विभु (बु) धचम-

त्कृतियेनिसि गत-प्रत्या —

गतदिं पेल्दमलकीर्त्तियं प्रकटिसिदं ॥२४॥

अवरप्रजरु ॥

यो बौद्धन्नित्तिभृत्करालकुलिशश्चाव्वाकमेधान ( नि ) लो

मीमांसा-मत-व्रत्ति<sup>१</sup>-वादि-मदवन्मातङ्ग कण्ठीरवः ॥

स्याद्वादाब्धि-शरत्समुद्रतसुधा-शोचिस्समस्तैस्तुत-

स्त श्रीमान्भुवि भासते कनकनन्दि-ख्यात-योगीश्वरः ॥२५॥

वेताली मुकुलीकृताञ्जलिपुटा संसेवते यत्पदे

भोट्टिङ्गः प्रतिहारको निवसति द्वारे च यस्यान्तिके ।

येन क्रीडति सन्ततं नुततपोलक्ष्मीर्यश (:) श्रीप्रिय—

स्सोऽयं शुम्भति देवचन्द्रमुनिपो भट्टारकौघाप्रणीः ॥२६॥

अवर सधर्मस्मार्चनन्दि-त्रैविद्य-देवरु विद्याचक्रवर्त्ति-  
श्रीमद्देवकीर्त्ति<sup>१</sup>-पण्डितदेवर शिष्यरु श्रीशुभचन्द्रत्रैविद्य-  
देवरुं गण्डविमुक्तवादि-चतुर्मुख-रामचन्द्रत्रैविद्यदेवरुं  
वादिवज्राङ्कुश-श्रीमदकलङ्कत्रैविद्यदेवरुमापरमेश्वरन गुड्डुगुल्ल  
माणिक्यभण्डारि मरियाने दण्डनायकरुं श्रीमन्महाप्रधानं  
सर्वाधिकारिपिरियदण्डनायकंभरतिमय्यङ्गलुं श्रीकरणद हेग्गडे  
बूचिमय्यङ्गलुं जगदेक-दानि हेग्गडे कोरय्यनुं ॥

अकलङ्कं पितृ बाजि-वंश-तिलक-श्री-यक्षराजं निजा-

-म्बिके लोकांम्बिके लोक-वन्दिते सुशीलाचारे देवं दिवी-

-श-कदम्ब-स्तुत-पाद-पद्मनरुहं नाथं यदुत्तोष्णिपा-

-लक-चूडामणि नारसिङ्गनेनलेत्रोम्पुल्लनोहुल्लपं ॥२७॥

श्रीमन्महाप्रधानं सर्वधिकारि हिरियभण्डारि अभिनवगङ्ग-  
दण्डनायक-श्रीहुल्लराजं तम्म गुरुगलप्पश्रीकोण्डकुन्दान्वयद  
श्रीसूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीकोल्लापुरद श्रीरूप-  
नारायणन बसदिय प्रतिविद्धद श्रीमत्केल्लङ्गेरेय प्रतापपुरवं पुनर्भ-  
रणवं माडिसि जिननाथपुरदलु कल्ल दानशालेयं माडिसिद  
श्रीमन्महामण्डलाचार्यदेवकीर्त्तिपण्डितदेवर्गो परोत्तविनय-  
वागि निशिदियं माडिसिद अवर शिष्यर्त्तवखणन्दि-माधव-  
त्रिभुवनदेवर्महादान-पूजाभिषेक-माडि प्रतिष्ठेयं माडिदरु  
मङ्गल महा श्री श्री श्री ॥

[ इस लेख में गौतम गणधर से लगाकर मुनिदेवकीर्त्ति पण्डितदेव की गुरु-परम्परा दी है† । कनकनन्दि और देवचन्द्र के आता श्रुतकीर्त्ति त्रैविद्य मुनि की प्रशंसा में कहा गया है कि उन्होंने देवेन्द्र सदृश विपक्ष-वादियों को पराजित किया और एक चमत्कारी काव्य राघव-पाण्डवीय की रचना की जो आदि से अन्त को व अन्त से आदि को देनेों और पढ़ा जा सके X । प्रतापपुर की रूपनारायण बस्ती का

† भूमिका देखो ।

X श्रुतकीर्त्ति की प्रशंसा के ये दोनों छन्द नागचन्द्रकृत 'रामचन्द्र-चरितपुराण' अपर नाम 'पम्प रामायण' के प्रथम आश्वास में नं० २४-२५ पर भी पाये जाते हैं । इस काव्य की रचना शक सं० १०२२ के लगभग हुई है । जिन विपक्ष-सैद्धान्तिक देवेन्द्र का यहाँ उल्लेख है वे सम्भवतः 'प्रमाणनय-तत्त्वलोकाटङ्कार' के कर्त्ता वादि-प्रवर श्वेताम्बरा-

जीर्णोद्धार व जिननाथपुर में एक दानशाला का निर्माण कराने वाले महामण्डलाचार्य देवकीर्ति पण्डितदेव के स्वर्गवास होने पर यादव-वंशी नारसिंह नरेश ( प्रथम ) के मंत्री हुल्लप ने यह निषद्या निर्माण कराई जिसकी प्रतिष्ठा देवकीर्ति आचार्य के शिष्य लक्ष्मनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेव ने दान सहित की । ]

४१ ( ६५ )

### उसी मण्डप में

( शक सं० १२३५ )

श्रीमत्स्याद्रादमुद्राङ्कितममलमहीनेन्द्रचक्रेश्वरेड्यं  
 जैनीयं शासनं विश्रुतमखिलहितं दोषदूरं गभीरं ।  
 जीयात्कारुण्यजन्मावनिरमितगुणैर्व्वर्ण्यनीक-प्रवेकैः  
 संसेव्यं मुक्तिकन्या-परिचय-करणप्रौढमेतत्त्रिलोक्यां ॥१॥  
 श्रीसूलसङ्घ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वाये ।  
 गुरुकुलमिह कथमिति चेद्ब्रवीमि सङ्क्षेपतो भुवने ॥२॥  
 यः सेव्यः सर्व्वलोकैः परहितचरितं यं समाराधयन्ते  
 भव्या येन प्रबुद्धं स्वपर-मत-महा-शास्त्र-तत्त्वं नितान्तं ।  
 यस्मै मुक्तप्रज्ञता संस्पृहयति दुरितं भीरुतां याति यस्मा—  
 यस्याशानास्ति यस्मिन्निभुवन-महितो विद्यते शीलराशिः ॥३॥

चार्य देवेन्द्र व देवसूरि हैं, जिनके विषय में प्रभावक-चरित में कहा गया है कि उन्होंने वि० सं० ११८१ में दिगम्बराचार्य कुमुदचन्द्र को वाद में परास्त किया था । ]

तन्मेघचन्द्रत्रैविद्यशिष्यो राद्धान्तवेदी लोकप्रसिद्धः ।  
 श्रीवीरशंदी मोक्षस्तदन्तेवासी गुणाब्धिः प्रास्ताङ्गजन्मा ॥४॥  
 यः स्याद्वाद-रहस्य-वाङ्निपुणोऽगण्यप्रभावो जना-  
 नन्दः श्रीमदनन्तकीर्त्तिमुनिपञ्चारित्रमाख्यतनुः ।  
 कामोप्राहि-गर-द्विजापहरणे रूढो नरेन्द्रोऽभव-  
 तच्छिष्यो गुरुपञ्चकस्मृति-पथ-स्वच्छन्द-सन्मानसः ॥ ५ ॥  
 मलधारिरामचन्द्रो यमी तदीय-प्रशस्य-शिष्योऽसौ ।  
 यच्चरणयुगलसेवापरिगतजनतैति चन्द्रतां जगति ॥ ६ ॥  
 परपरिणतिदूरोऽध्यात्मसत्सारधीरो  
 विषय-विरति-भावो जैनमार्ग-प्रभावः ।  
 कुमत-घन-समीरो ध्वस्तमायान्धकारो  
 निखिलमुनिविनूतो रागकोपादिघातः ॥ ७ ॥  
 चित्ते शुभावनां जैनीं वाक्ये पञ्चनमस्क्रियां ।  
 काये व्रतसमारोपं कुर्वन्नध्यात्मविन्मुनिः ॥ ८ ॥  
 पञ्चत्रिंशत्संयुत-शत-द्वयाधिक-सहस्र-नुतवर्षेषु ।  
 वृत्तेषु शकनृपस्य तु काले विस्तीर्णविलसदर्पणवन्मौ ॥९॥  
 प्रमादि (सं)वत्सरेमासे श्रावणे तनुमत्यजत् ।  
 वक्रे कृष्णचतुर्दश्यां शुभचन्द्रो महायतिः ॥१०॥  
 अमरपुरममरवासं तद्रत-जिन-चैत्य-चैत्यभवनानां ।  
 दर्शन-कुतूहलेन तु यातो यातार्त्त-रौद्र-परिणामः ॥ ११ ॥

तच्छिष्यर् ॥

दुरितान्धकाररविहिम—

-कररोगेदर्पद्मणन्दिपण्डितदेवर् ।

वर-माधवेन्दु-समया —

भरणश्रीमूलसङ्घ-देशीगणदेाल् ॥ १२ ॥

गुरु-रामचन्द्र-यतिपन

वर-शिष्य-शुभेन्दुमुनिय निस्तिगेयं वि—

स्तरदिं माडिसिदं बेलु—

करेयधिपं राय-राज-गुरुगुम्भट्टं ॥ १३ ॥

श्रीविजय-पार्श्व-जिनवर-चरणारुण-कमल-युगल-यजन-रतः ।

बोगार-राज-नामा तद्वैयापृत्यतो हि शुभचन्द्रः ॥ १४ ॥

हेयादेय-विवेकता जनतया यस्मात्सदादीयते

तस्य श्रीकुलभूषणस्य वरशिष्योमाधनन्दिब्रती ।

सिद्धान्ताम्बुधितीरगो विशद-कीर्तिस्तस्य शिष्योऽभवत्

त्रैविद्यः शुभचन्द्र-योगि-तिलकः स्याद्वाद-विद्याञ्चितः ॥ १५ ॥

तच्छिष्यश्चारुकीर्त्ति-प्रथित-गुण-गणः पण्डितस्तस्य शिष्यः

ख्यातः श्रीमाधनन्दि-ब्रति-पति-नुत-भट्टारकस्तस्य शिष्यः ।

सिद्धान्ताम्भोधिसीत-द्युतिरभयशशी तस्य शिष्यो महीयान्

बालेन्दुः पण्डितस्तत्पदनुतिरमलो रामचन्द्रोऽमलाङ्गः ॥ १६ ॥

चित्रं सम्प्रति पद्मनन्दिनिह कृत्तावकीर्णं तपः

पद्मानन्दपि विश्रुताप्रमद इत्यासीस्सतां नम्रतां ।

कामं पूरयसे शुभेन्दु-पद-भक्त्यासक्त-चेतः सदा

कामं दूरयसे निराकृत-महा-मोहान्धकारागम ॥ १७ ॥

काम-विदारोदारः क्षमावृत्तोप्यक्षमो जगतिभासि

श्रीपद्मनन्दिपण्डित पण्डित-जन-हृदय-कुमुदशीतकर ॥१८॥

पण्डित-समुदयवति शुभचन्द्र-प्रिय-शिष्य भवति

सुदयास्ति ।

श्री-पद्म-नन्दि-पण्डित-यमीश भवदितर-मुनिषुनालोके ।१९।

श्रीमदध्यात्मिशुभचन्द्रदेवस्य स्वकीयान्तेवासिना पद्म  
नन्दि-पण्डित-देवेन माधवचन्द्रदेवेन च परोक्ष-विनय-निमित्तं  
निषद्यका कारयिता ॥ भद्रं भवतु जिनशासनाय ॥

[ इस लेख में शुभचन्द्र मुनि की आचार्यपरम्परा और उनके स्वर्ग-  
वास की तिथि दी हुई है । कुन्दकुन्दान्वय, मूल संघ, पुस्तक गच्छ,  
देशी गण में गुरुशिष्य परम्परा से मेघचन्द्र त्रैविद्य, वीरनन्दि, अनन्त  
कीर्त्ति, मलधारि रामचन्द्र और शुभचन्द्र मुनि हुए । शुभचन्द्र  
मुनि का शक सं० १२३५ श्रावण कृष्ण १४ को स्वर्गवास हुआ ।  
उनके शिष्य पद्मनन्दि पण्डितदेव और माधवचन्द्र ने उनकी निषद्या  
निर्माण कराई । लेख में रामचन्द्र मुनि की आचार्य परम्परा इस  
प्रकार दी है । कुलभूषण, माघनन्दि व्रती, शुभचन्द्र त्रैविद्य, चारुकीर्त्ति  
पण्डित, माघनन्दि भट्टारक, अभयचन्द्र, बालचन्द्र पण्डित और  
रामचन्द्र । ]

४२ ( ६६ )

महानवमी मण्डप के उत्तर में एक स्तम्भ पर

( शक सं० १०८८ )

( पूर्वमुख )

श्रामत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥



श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीक-सौधोरु-वार्द्धिः  
 प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।  
 शस्त-स्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरु-घोषः  
 स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महावीर्य्य-वीची-निकायः ॥२॥  
 श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गा श्रीगौतमाद्यार्प्रभविष्णवस्तं ।  
 तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धि-युक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥  
 श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः  
 द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥  
 अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोसावाचार्य्य-शब्दोत्तरगृद्धपिञ्छः ।  
 तदन्वये तत्सदृसो(शो)ऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेष-  
 पदार्थ्य-वेदी ॥५॥

श्रीगृद्धपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छ-

शिष्याऽजनिष्ट भुवनत्रय-वर्ति-कीर्तिः ।

चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-

माला-शिलीमुख-विराजित-पाद-पद्मः ॥६॥

तच्छिष्या गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर  
 स्तर्क-व्याकरणादि-शास्त्र-निपुणस्साहित्य-विद्यापतिः ।

मिश्यावादिमदान्ध-सिन्धुर-घटासङ्घट्टकण्ठोरवो  
 भव्याम्भोज-दिवाकरो विजयतां कन्दर्प-दर्पापहः ॥ ७ ॥

तच्छिष्यास्त्रिशता विवेक-निधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता  
 स्तेषूत्कृष्टतमा-द्विसप्रतिमितास्सिद्धान्त-शास्त्रार्थक —  
 व्याख्याने पटवो विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धोमुनि—

त्रानानून-नय-प्रमाणनिपुणो देवेन्द्र-सैद्धान्तिकः ॥ ८ ॥

अजनि महिपचूडा-रत्नराराजिताङ्घ्रि

र्विजित-मकरकेतूदण्ड-दार्दण्ड-गर्वः ।

कुनय-निकर-भूङ्गानीक-दम्भेलि-दण्ड

स्सजयतु विभुधेन्द्रोभारती-भाल-पट्टः ॥ ९ ॥

तच्छिष्यः कलधौतनन्दिमुनिपस्सिद्धान्त-चक्रेश्वरः

पारावार-परीत-धारिणि-कुल-व्याप्तोहकीर्तीश्वरः ।

पञ्चाक्षोन्मद-कुम्भि-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल-

प्रांशु-प्राञ्चितक्रेसरी बुधनुतो वाक्कामिनी-वल्लभः ॥ १० ॥

अवर्गो रविचन्द्र-सिद्धान्तविदस्सम्पूर्णचन्द्रसिद्धान्तमुनि-

प्रवररवरवर्गो शिष्यप्रवर श्रीदामनन्दि-सन्मुनि-पतिगल् ॥ ११ ॥

बोधित-अव्यरस्त-मदनर्मद-वर्जित-शुद्ध-मानसर्

श्रीधरदेवरेम्बरवर्गग्र-तनूभवरादरा यश—।

श्रीधरगादि शिष्यरवरोल् नेगल्दम्मलधारिदेवरुं

श्रीधरदेवरुं नत-नरेन्द्र-ति (कि)रीट-तटार्चिर्चतक्रमर् ॥ १२ ॥

आनप्रावनिपाल-जालकशिरो-रत्न-प्रभा-भासुर-

श्रीपादाम्बुरुह-द्वयो वर-तपोलक्ष्मीमनोरञ्जनः ।

मोह-व्यूह-महीध्र-दुर्द्धर-पविः सच्छीलशालिर्जग-

त्ख्यातश्रीधरदेव एष मुनिपो भाभाति भूमण्डले ॥ १३ ॥

तच्छिष्यर् ॥

भव्याम्भोरुह-षण्ड-चण्ड-किरणः कर्पूर-हार-स्फुर-

त्कीर्त्तिश्रीधवलीकृताखिलदिशाचक्रश्चरित्रोन्नतः ।

(दक्षिणमुख)

भातिश्रीजिन-पुङ्गव-प्रवचनाम्भोराशि-राका-शशी

भूमौ विश्रुत-माघनन्दिमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१४॥

तच्छिष्यर् ॥

सच्छीलशू शरदिन्दु-कुन्द-विशद-प्रोद्यद्यश-श्रीपति-

हृष्यहर्षक-दर्प-दाव-दहन-ज्वालाति-कालाम्बुदः ।

श्रीजैनेन्द्र-वचःपयोनिधि-शरत्सम्पूर्ण-चन्द्रः क्षितौ

भाति श्रीगुणचन्द्र-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥१५॥

तत्सधर्मर् ॥

उद्भूते नुत-मेघचन्द्र-शशिनि प्रोद्यद्यशश्चन्द्रिके

संवर्द्धते तदस्तु नाम नितरां राद्धान्त-रत्नाकरः ।

चित्रं तावदिदं पयोधि-परिधि-क्षौणौ समुद्रीदयते

प्रायेणात्र विजृम्भते भरत-शास्त्राम्भोजिनी सन्ततं ॥१६॥

तत्सधर्मर् ॥

चन्द्र इव धवल-कीर्त्तिर्द्धवलीकुरुते समस्त-भुवनं यस्य ।

तच्चन्द्रकीर्त्तिसञ्ज्ञ-भट्टारक-चक्रवर्त्तिनोऽस्य विभाति ॥१७॥

तत्सधर्मर् ॥

नैयायिकेभ-सिंहो मीमांसकतिमिर-निकरनिरसन-तपनः

बौद्ध-वन-दाव-दहनोजयतिमहानुदयचन्द्रपण्डितदेवः ॥१८॥

सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती श्रीगुणचन्द्रव्रतीश्वरस्यं बभूव

श्रीनयकीर्त्ति-मुनीन्द्रो जिनपति-गदिताखिलार्थवेदी शिष्यः

॥१९॥

स्वस्थनवरत-विनत-महिप-मुकुट-मौक्तिक-मयूख-माला-सरो-  
मण्डनीभूत-चारुचरणारविन्दरुं । भव्यजन-हृदयानन्दरुं ।  
कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मात्त'ण्डरुं । लीला-मात्र-विजितोच्चण्ड-  
कुसुमकाण्डरुं । देशीय-गण-गजेन्द्र-सान्द्र-मद-धारावभासरुं ।  
वितरणविलासरुं । पुस्तकगच्छस्वच्छ-सरसी-सरोजरुं । वन्दि-  
जनसुरभूजरुं । श्रीमद्गुणचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति'-चारुतर-चरण  
सरसीरुह-षट्चरणरुं । अशेष-दोषदूरीकरणपरिणतान्तःकरण-  
रुमप्य श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्ति' गले-न्तप्परेन्दडे ॥

साहित्य-प्रमदा-मुखाब्जमुकुरश्चारित्र-चूडामणि  
श्रीजैनागम-वार्द्धि-वर्द्धन-सुधाशोचिस्समुद्रासते ।

यश्शल्य-त्रय-गारव-त्रय-लसद्दण्ड-त्रय-ध्वंसक —

स्स श्रीमान्नयकीर्त्ति' देवमुनिपस्सैद्धान्तिकाप्रेसरः ॥२०॥

माणिक्यनन्दिमुनिप श्रीनयकीर्त्ति'त्रतीश्वरस्य सधम्मः ।

गुणचन्द्रदेवतनयो राद्धान्त-पयोधि-पारगो-भुवि भाति ॥२१॥

हार-चीर-हराट्टहास-हलभृत्कुन्देन्दु-मन्दाकिनी—

कर्पूर-स्फटिक-स्फुरद्भरयशो-धौतत्रिलोकोदरः ।

उच्चण्ड-स्मर-भूरि-भूधरपविःख्यातो बभूवचितौ

सश्रीमान्नयकीर्त्ति' देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥२२॥

शाके रन्ध्रनवद्युचन्द्रमसि दुस्सुख्याच\*संवत्सरे

वैशाखेधवले चतुर्द्दशदिने वारे च सूर्यात्मजे ।

पूर्वार्द्धे प्रहरेगतेऽर्द्धसहिते स्वर्गं जगामात्मवान्

विख्यातो नयकीर्त्ति-देव-मुनिपो राद्धान्त-चक्राधिपः ॥२३॥

श्रीमज्जैन-वचोद्धि-वद्धन-विधुस्साहित्यविद्यानिधिसू

( पश्चिम मुख )

सर्पहर्षक-हस्ति-मस्तक-लुठत्प्रोत्कण्ठ-कण्ठीरवः ।

स श्रीमान् गुणचन्द्रदेवतनयस्त्वौजन्यजन्यावनि

स्थेयात् श्रीनयकीर्त्ति देवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥२४॥

गुरुवादं खचराधिपङ्गे बलिगं दानके विणिपङ्गे तां

गुरुवादं सुर-भूधरके नेगल्दा कैलास-शैलके तां ।

गुरुवादं विनुतङ्गे राजिसुविरुङ्गोलङ्गे लोकके सद्

गुरुवादं नयकीर्त्तिदेवमुनिपं राद्धान्त-चक्राधिपं ॥२५॥

तच्छिष्यर् ॥

हिमकर-शरदभ्र-क्षीर-कल्लोल-जाल-स्फटिक-सित-यश-श्री-

शुभ्र-दिक्-चक्रवालः ।

मदन-मद-तिमिस्र-श्रेणितीव्रांशुमाली जयति निखिल-वन्द्यो

मेघचन्द्र-व्रतीन्द्रः ॥२६॥

तत्सधर्मर् ॥

कन्दर्पाहवकर्पातोद्धु रतनुत्राणोपमोरस्थली

चञ्चद्भूरमला विनेय-जनता-नीरेजिनी-भानवः ।

त्यक्ताशेष-बहिर्विकल्प-निचयाश्चारित्र-चक्रेश्वरः

शुम्भन्त्यणिगतटाक-वासि-मलधारि-स्वामिनो भूतले ॥२७॥

तत्सधर्मर् ॥

षट्-कर्म-विषय-मन्त्रे नानाविध-रोग-हारि-वैद्ये च ।

जगदेकसूरिरेष श्रीधरदेवो बभूव जगति प्रवणः ॥२८॥

तत्सधर्मर् ॥

तर्क-व्याकरणागम-साहित्य-प्रभृति-सकल-शास्त्रार्थज्ञः ।

विख्यात-**दामनन्दि**-त्रैविद्य-मुनीश्वरो धराप्रे जयति ॥२९॥

श्रोमज्जैनमताब्जिनीदिनकरो नैय्यायिकाभ्रानिल

श्चावर्वाकावनिभृत्करालकुलिशो बौद्धाब्धिकुम्भोद्भवः ।

योमीमांसकगन्धसिन्धुरशिरोनिर्भेदकण्ठीरव—

लैविद्योत्तम**दामनन्दि**मुनिपस्सोऽयंभुविभ्राजते ॥३०॥

तत्सधर्मर् ॥

दुग्धाब्धि-स्फटिकेन्दु-कुन्द-कुमुद-व्याभासि-कीर्तिप्रिय-

स्सिद्धान्तोदधि-वर्द्धनामृतकरःपारात्थ्य-रत्नाकरः ।

ख्यात-श्रो-**नयकीर्त्ति**देवमुनिपश्रीपाद-पद्म-प्रियो ।

भात्यस्यांभुवि**भानुकीर्त्ति**-मुनिपस्सिद्धान्तवक्राधिपः ॥३१॥

उरगेन्द्र-क्षीर-नीराकर-रजत-गिरि-श्रीसितच्छत्र-गङ्गा—

हरहासैरावतेभ-स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्रनीहार-हारा—।

मर-राज-श्वेत-पङ्केरुह-हलधर-वाक्-शङ्ख-हंसेन्दु-कुन्दो-

त्करचञ्चत्कीर्त्तिकान्तं धरेयोलेसेदनी **भानुकीर्त्ति**-व्रतीन्द्रं

तत्सधर्मर् ॥

॥३२॥

सद्वृत्ताकृति-शांभिताखिलकला-पूर्ण-स्मर-ध्वंसकः

शश्वद्विश्व-वियोगि-हृत्सुखकर-श्रीबाल**चन्द्रो** मुनिः ।

वक्रेणोन-कलेन-काम-सुहृदाचञ्चद्वियोगिद्विषा

लोकेस्मिन्नुपमीयते कथमसौ तेनाथ बालेन्दुना ॥३३॥

उच्चण्ड-मदन-मद-गज-निर्भेदन-पटुतर-प्रताप-मृगान्द्रः ।

भग्न्य-कुमुदौघ-विकसन-चन्द्रो भुवि भाति बालचन्द्र-मुनीन्द्रः

॥३४॥

ताराद्रि-क्षीर-पूर-स्फटिक-सुर-सरित्तरहारेन्दु-कुन्द—

श्वेतोद्यत्कीर्ति-लक्ष्मी-प्रसर-धवलताशेषदिक्-चक्रवालः ।

श्रीमत्सिद्धान्त-चक्रेश्वर-नुत-नयकीर्ति-व्रतीशङ्खि-भक्तः

(उत्तर मुख)

श्रीमान्भट्टारकेशो जगति विजयते प्रेघचन्द्र-व्रतीन्द्रः ॥३५॥

गाम्भीर्ये मकराकरो वितरणे कल्पद्रुमस्तेजसि

प्रोच्चण्ड-द्युमणिः कलास्वपि शशी धैर्ये पुनर्मन्दरः ।

सर्वोर्व्वी-परिपूर्ण-निर्मल-यशो-लक्ष्मी-मनो-रञ्जनो

भात्यस्यां भुवि माघनन्दिमुनिपो भट्टारकाग्रेसरः ॥३६॥

वसुपूर्णसमस्ताशःक्षितिचक्रे विराजते ।

चञ्चत्कुवलयानन्द-प्रभाचन्द्रोमुनीश्वरः ॥३७॥

तत्सधर्मर् ॥

उच्चण्डप्रहकोटयो नियमितास्तिष्ठन्ति यंन क्षितौ

यद्वाग्जातसुधारसोऽखिलविषव्युच्छेदकशोभते ।

यत्तन्त्रोद्धविधिःसमस्तजनतारोग्याय संवर्तते

सोऽयं शुम्भति पद्मनन्दिमुनिनाथो मन्त्रवादीश्वरः ॥३८॥

तत्सधर्मर् ॥

चञ्चचन्द्र-मरीचि-शारद-वन-क्षीराब्धि-ताराचल—

प्रोद्यत्कीर्ति-विकास-पाण्डुर-तर-ब्रह्माण्ड-भाण्डोदरः ।

वाक्कान्ता-कठिन-स्तन-द्वय-तटी-हारो गभीरस्थिरं  
 सोऽयं सन्नृत-नेमिचन्द्र-मुनिपो विभ्राजते भूतले ॥३६॥  
 भण्डाराधिकृतःसमस्त-सचिवाधीशो जगद्विश्रुत—  
 श्रीहुल्लो नयकीर्ति-देव-मुनि-पादाम्भोज-युग्मप्रियः ।  
 कीर्त्ति-श्री-निलयःपरार्थ-चरितो नित्यं विभाति चित्तौ  
 सोऽयं श्रीजिनधर्म-रक्षणकरः सम्यक्तव-रत्नाकरः ॥४०॥  
 श्रीमच्छ्रीकरणाधिपस्सचिवनाथो विश्व-विद्वन्निधि-  
 आतुर्वर्ण-महान्नदान-करणोत्साही चित्तौ शोभते ।  
 श्रीनीलो जिन-धर्म-निर्मल-मनास्साहित्य-विद्याप्रिय-  
 स्सौजन्यैक-निधिश्शशाङ्क-विशद-प्रोद्यद्यश-श्रोपतिः ॥४१॥  
 आराध्यो जिनपो गुरुश्च नयकीर्ति-ख्यात-योगीश्वरो  
 जोगाम्बा जननी तु यस्य जनक ( : ) श्रीवस्मदेवो विभुः ।  
 श्रीमत्कामलता-सुता पुरपति श्री मल्लिनाथस्सुतो  
 भात्यस्यां भुवि नागदेव-सचिवश्चण्डाम्बिकावल्लभः ॥४२॥  
 सुर-गज-शरदिन्दु-प्रस्फुरत्कीर्त्ति-शुभ्री  
 भवदखिल-दिगन्तो वाग्वधू-चित्तकान्तः ।  
 बुध-निधि-नयकीर्ति-ख्यात-योगीन्द्र-पादा—  
 म्बुज-युगकृत-सेवः शोभते नागदेवः ॥४३॥  
 ख्यातश्रीनयकीर्ति-देवमुनिनाथानां पयःप्रोल्लस-  
 त्कीर्त्तीनां परमं परोक्ष-विनयं कर्तुं निषध्यालयं ।  
 भक्त्याकारयदाशशाङ्क-दिनकृतारं स्थिरं स्थायिनं  
 श्रीनागस्सचिवोत्तमो निजयशश्रोशुभ्र-दिग्मण्डलः ॥४४॥



[इस लेख में नागदेव मंत्री द्वारा अपने गुरु श्री नयकीर्त्ति योगीन्द्र की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है । नयकीर्त्तिमुनि का स्वर्गवास शक सं० १०६६ वैशाख शुक्ल १४ को हुआ था । मुनि की विस्तार-सहित वर्णन की हुई गुरु-परम्परा में निम्नलिखित आचार्यों का उल्लेख आया है । पद्मनन्दि अपर नाम कुन्दकुन्द, उमास्वाति गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक, कलधौतनन्दि, रविचन्द्र अपर नाम सम्पूर्णचन्द्र, दामनन्दिमुनि, श्रीधरदेव, मलधारिदेव, श्रीधरदेव, माघनन्दि मुनि, गुणचन्द्रमुनि, मेघचन्द्र, चन्द्रकीर्त्ति भट्टारक और उदयचन्द्र पण्डितदेव । नयकीर्त्ति गुणचन्द्रमुनि के शिष्य थे और उनके सधर्म गुणचन्द्र मुनि के पुत्र माणिक्यनन्दि थे । उनकी शिष्य-मण्डली में मेघचन्द्र व्रतीन्द्र, मलधारिस्वामी, श्रीधरदेव, दामनन्दि त्रैविद्य, भानुकीर्त्ति मुनि, बालचन्द्र मुनि, माघनन्दि मुनि, प्रभाचन्द्र मुनि, पद्मनन्दि मुनि और नेमिचन्द्र मुनि थे । ]

४३ ( ११७ )

**चामुण्डराय वस्ति के दक्षिण की ओर मण्डप में  
प्रथम स्तम्भ पर  
( शक सं० १०४५ )**

( पूर्वमुख )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥१॥

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमल-जिनवरानीकसौधोरु-वाद्धिः

प्रध्वस्ताघ-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्य-बोधोरु-वेदिः ।

शस्तस्यात्कार-मुद्रा-शबलित-जनतानन्द-नादोरुधोषः

स्थेयादाचन्द्रतारं परम-सुख-महा-वीर्य-वीची-निकायः ॥२॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्न-वर्गाश्श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।  
तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥३॥  
श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामा ह्याचार्यशब्दोत्तरकोण्ड-

कुन्दः ।

द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥४॥  
अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोऽसावाचार्यशब्दोत्तरगृद्ध  
पिञ्छः ।  
तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥५॥  
श्रीगृद्धपिञ्छ-मुनिपस्य बलाकपिञ्छशिशव्योऽजनिष्टभुवन-  
त्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।  
चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलिमाला-शिलीमुख-विरा-  
जित-पाद-पद्मः ॥६॥

तच्छिष्या गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वरः  
तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।  
मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुर-घटा-सङ्घट्ट-कण्ठीरवो  
भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्प-दर्पापहः ॥७॥  
तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-  
स्तेषूत्कृष्टतमाद्विसप्रतिमिताःसिद्धान्तशास्त्रार्थक-  
व्याख्यानेष्वेव विचित्र-चरितास्तेषु प्रसिद्धांमुनिः  
नानानूननयप्रमाणनिपुणोदेवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥७॥  
अजनिमहिष-चूडा-रत्न-राराजिताङ्घ्रिर्विजितमकरकेतूह  
ण्डदोर्दण्डगर्वः ।

कुनयनिकरभूषानीकदम्भोलिदण्डःसजयतु विबुधेन्द्रो

भारती-भालपट्टः ॥८॥

( दक्षिणमुख )

तच्छिष्यःकलधौतनन्दिमुनिपः सैद्धान्तचक्रेश्वरः

पारावारपरीतधारिणि-कुल-व्याप्नोरुकीर्त्तेश्वरः ।

पञ्चाक्षोन्मदकुम्भ-कुम्भ-दलन-प्रोन्मुक्त-मुक्ताफल—

प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥

अवर्गो रविचन्द्रसिद्धा—

न्तविदर्सम्पूर्णचन्द्र-सिद्धान्त-मुनि- ।

प्रवररवरवर्गेशिष्य—

प्रवरश्रीदामनन्दि-सन्मुनि-पतिगल ॥११॥

बोधितभव्यरस्तमदनर्मद-वर्जित-शुद्ध-मानसर्

श्रीधरदेवरेम्बरवर्गप्रतनूभवरादरायशस्

श्रीधरगाँद शिष्यरवरोल् नेगल्दर्मलधारि-देवरुं ।

श्रीधरदेवरुंनतनरेन्द्र-किरीट-तटाच्चित-क्रमर् ॥१२॥

मलधारिदेवरिन्द

बेलगिदुदु जिनेन्द्रशासनं मुन्ननि—

र्मलमागिमत्तमीगल्

बेलगिदपुदु चन्द्रकीर्त्तिभट्टारकरि ॥१३॥

अवर शिष्यर् ॥

परमाप्ताखिल-शास्त्र-तत्त्वनिलयं सिद्धान्त-चूडामणि

स्फुरिताचारपरं विनेयजनतानन्दं गुणानीकसु—

न्दरनेम्बुन्नतिथिं समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यनादं दिवा—  
 करणान्दि-व्रतिनाथनुज्वलयशो विभ्राजिताशातटं ॥१४॥  
 विदितव्याकरणद तर्कद सिद्धान्तद विशेषदिं त्रैविद्या—  
 स्पदरेन्दो-धरेबणिणपुदु दिवाकरणान्दिदेवसिद्धान्तगरं ॥१५॥  
 वरराद्धान्तिकचक्रवर्त्ति दुरितप्रध्वंसि कन्दर्पसि—  
 न्धुरसिंहं वर-शील-सद्गुण-महाम्भोराशि पङ्केजपु-  
 ष्कर-देवेभ-शशाङ्क-सन्निभ-यश-श्री-रूपनो होदिवा-  
 करणान्दिव्रतिनिर्मदं निरुपमं भूपेन्द्रवृन्दार्चितं ॥१६॥

( पश्चिममुख )

वर-भव्यानन-पद्ममुल्ललरलज्ञानीकनेत्रोत्पलं  
 कोरगल्पापतमस्तमं परयलेत्तं जैनमार्गामला—  
 म्बरमत्युज्वलमागलं बेलगितोभूभागं श्रीदिवा—  
 करणान्दिव्रतिवाक्किदवाकरकराकारम्बोलुब्धीनुतं ॥१७॥  
 यद्वक्तृचन्द्रविलसद्भूचनमृताम्भःपानेननुष्यतिविनेयचक्रो  
 रवृन्दः ।

जैनेन्द्रशासनसरोवरराजहंसो जीयादसौभुविदिवाकरण-  
 न्दिदेवः ॥१८॥

अवर शिष्यरु ॥

गरुडविमुक्तदेव-मलधारि-मुनीन्द्रपादपद्मं  
 कण्डोडसाध्यमें नेनेद भव्यजनकमकोण्डचण्ड —  
 दण्ड-विरोधि-दण्ड-नृप-दण्ड-पतत्पृथु-वज्रदण्ड-को—  
 दण्ड-कराल-दण्डधर-दण्डभयं-पेरपिङ्गि-पोगवे ॥१९॥

बलयुतरं बलचुव लतान्तशरङ्गिदिरागितागिस  
 चलिसे पलच्चि तूल्दवननोडिसिमेय् वगेयाद दूसरिं ।  
 कलेयदे निन्द कव्वुनद कर्गिद सिप्पिनमक्के-वेत्त क —  
 त्तलमेनिसित्तु पुत्तडर्दमेय्य मलं मलधारि-देवरं ॥२०॥  
 मरेदुमदोम्मे लौकिकद वार्त्तेयनाडद कंत्त वागिलं  
 तेरेयद भानुवस्तमितमागिरे पोगद मेय्यनोम्मेयुं ।  
 तुरिसद कुकुटासनके सोलद गण्डविमुत्तवृत्तियं  
 मरेयद धोर-दुश्चर-तपश्चरितं मलधारिदेवर ॥२१॥

आ-चारित्र-चक्रवर्त्ति गल शिष्यरु ॥

पञ्चेन्द्रिय-प्रथित-सामज-कुम्भपीठ-निर्द्धोट-लम्पट-महोअ-

समग्र-सिंहः ।

सिद्धान्त-वारिनिधि-पूर्ण-निशाधिनाथो वाभाति भूरिभुवने

**शुभचन्द्रदेवः ॥२२॥**

शुभ्राभ्राभसुरद्विपामरसरित्तरापतिस्प्रस्फुट—

ज्योत्स्ना-कुन्द-शशीद्र-कम्बु-कमलाभाशा-तरङ्गोत्करः ।

प्रख्य-प्रज्वल-कीर्त्तिमन्वहमिमां गायन्ति देवाङ्गना

दिक्कन्याः **शुभचन्द्रदेव** भवतश्चारित्रभूभामिनि ॥२३॥

**शुभचन्द्रमुनीन्द्रयश**

स्प्रमेयोल्सरियागलारदिन्तो चन्द्रं ।

प्रभुतेगिदे कन्दि कुन्दिद—

नभव-शिरोमणिगदेके कन्दुं कुन्दुं ॥२४॥

एत्तलु विजयङ्गवद—

मत्तले धर्मप्रभावमधिकोत्सवदिं ।

वित्तरिपुदेनले पोस्वरे

मत्तिनवरु श्रीशुभेन्दुसैद्धान्तिगरं ॥२४॥

कन्तुमदापहर्षकल-जीव-दयापर-जैन-मार्ग-रा—

द्धान्त-पयोधिगल् विषयवैरिगलुद्धत-कर्म-भजनर् ।

स्सन्त-भव्य पद्म-दिनकृत्प्रभरं शुभचन्द्र-देव-सि—

द्धान्तमुनीन्द्ररं पोगल्वुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ॥२५॥

( उत्तरमुख )

ख्यातश्रीमलधारिदेवयमिनश्शिष्योत्तमे स्वर्गते

हा हा श्री शुभचन्द्रदेवयतिपे सिद्धान्तचूडामणौ ।

लोकानुग्रहकारिणि क्षितिनुते कन्दर्पदर्पान्तकं

चारित्र्यज्वलदीपिका प्रतिहता वात्सल्यवल्ली गता ॥२६॥

शुभचन्द्रे महस्सान्द्रेऽन्विक्रिते काल-राहुणा ।

सान्धकारं जगज्जालं जायतेत्येति नाद्भुतं ॥२७॥

बाणाम्भोधिभश्शशाङ्कतुलितेजाते शकाब्दे

ततो वर्षे शोभकृताह्वये व्युपनते मासे पुन श्रावणे ।

पक्षे कृष्णविपक्षवर्त्ति'निसिते वारे दशम्यां तिथौ

स्वर्यातः शुभचन्द्रदेवगणभृत्सिद्धान्तवारान्निधिः ॥२८॥

श्रीमदवरगुडु' ॥

समधिगतपञ्चमहाशब्दमहासामन्ताधिपतिमहाप्रचण्डदण्ड

नायकं । वैरिभयदायक । गोत्रपवित्र । बुधजनमित्र ।

स्वामिद्रोहगोधूमघरट्ट । सङ्ग्रामजत्तुट्ट । विष्णुवर्द्धन-पोय्सल

महाराजराज्यसमुद्धरणकलिगलाभरणश्रीजैनधर्माभूताम्बुधिप्रवर्द्ध-  
न-सुधाकर-सम्यक्त—रत्नाकराद्यनेकनामावलीसमालङ्कितरूपश्रीम  
न्महाप्रधानदण्डनायकगङ्गराजं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घददेसिय  
गणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवर्गो परोक्षविनयके  
निसिधिगेय निलिसि महापूजेयं माडि महादानमं गेयदरु ॥  
ग्रामहानुभावनत्तिगे ॥ शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डि ॥

वरजिनपूजेयनत्या—

दरदिन्दं जक्कणब्बे माडिसुवल्लस—।

चरिते गुणान्विते ये—

न्दी धरणीतल मेच्चि पोगल्लुतिप्पुदु निच्चं ॥२६॥

दोरेये जक्कणिकब्बेगी भुवनदोल् चारित्रदोल् शीलदोल्

परमश्रीजिनपूजेयोल् सकलदानाश्चर्य्यदोल् सत्यदोल् ।

गुरुपादाम्बुजभक्तियोल् विनयदोल् भव्यकलं कन्ददा—

दरदिं मन्निसुतिप्प पेम्पिनेडेयोल् मत्तन्यकान्ताजनम् ॥ ३०॥

श्रीमत्प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुड्डि हेग्गडेमर्दिमय्यंबरेदं ॥

बिरुदरूवारिमुखतिलकं बद्धमानाचारि खंडरिसिद

मङ्गल महा ॥ श्री श्री ॥

[इस लेख में पोय्सल महाराज गङ्गनरेश विष्णुवर्द्धन द्वारा उनके गुरु शुभचन्द्र देव की निषद्या निर्माण कराये जाने का उल्लेख है। शुभचन्द्र देव का स्वर्गारोहण शक सं० १०४५, श्रावण कृष्ण १० को हुआ था। इनके गुरु परम्परा-वर्णन में मलिधारिदेव और श्रीधरदेव के उल्लेख तक के प्रथम ग्यारह श्लोक वे ही हैं जो उपर्युक्त शिलालेख नं० ४२ ( ६६ ) के हैं। इसके पश्चात् चन्द्रकीर्त्ति भट्टारक, दिवाकरनन्दि,

गण्डविमुक्तदेव मलधारि मुनीन्द्र और शुभचन्द्र देव का उल्लेख है । लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश की भावज जवक्कणब्बे की जैन धर्म में भारी श्रद्धा का भी उल्लेख है । यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य हेगडे मर्दिमय्य द्वारा रचित और वर्द्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है । ]

४५ ( ११८ )

## उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

( शक सं० १०४३ )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य नाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥

नमस्सिद्धेभ्यः ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी

घनवृत्तस्तनहारनुप्ररणधीरं मारनेनेन्दपै ।

जनकं तानेने माकणब्बे विबुधप्रख्यातधर्मप्रयु-

क्ते निकामात्त-चरित्रे तायंनलिदेनेचं महाधन्यनो ॥३॥

कन्द ॥ वित्रस्तमलं बुधजनमित्रं

द्विजकुलपवित्रनेचं जगदोलु ।

पात्रं रिपुकुलकन्दखनित्रं

कौशिडन्य गोत्रनमलचरित्र ॥४॥

वृ [त्त] ॥ परमजिनेश्वरं तनगेदेयवमलुर्केयिनोल्पु-वेत्त मु-

ल्लुरदुरितत्तयर्कनकनन्दिमुनीश्वररुत्तमोत्तम—



गुरुगलुदात्तवित्तनवदात्तयशं नृपकामवोयसलं

पोरेद महीशनेन्दोडेले वणिणपरानेगल्देचिगाङ्कन ॥५॥

कं [६] ॥ मनुचरितनेचिगाङ्कन

मनेयोल मुनिजनसमूहमुं बुधजनमुं ।

जिनपूजने जिनवन्दने

जिनमहिमेगलावकालमुं शोभिसुगुं ॥६॥

आमहानुभावनद्धाङ्गियेन्तप्पलेन्दोडे ।

उत्तम-गुण-ततिवनिता—

वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लं क—।

य्येत्तुविनममलगुणस—

स्पत्तिगे जगदोलगे पोचिकब्बेये नोन्तलु ॥७॥

तनुवं जिनपतिनुत्तिथिं ।

धनमं मुनिजनदत्तित्तिथिं सफलमिदि—

न्नेनगेम्बी नम्बुगेथोल

मनमं जगदोलगे पोचिकब्बेयेनिरिपलु ॥८॥

जन विनुतनेचिगाङ्कन—

मनस्सरोहंसि गङ्गराजचमूना—

थन जननि जननि भुवन—

क्केने नेगल्दल् पोचिकब्बे गुणदुन्नत्तिथिं ॥९॥

एनिसिद पोचाम्बिके परि—

जनमुं बुधजनमु मोम्मोर्गोम्मो मनन्त—

ण्णने तण्णिदु परसे पुण्यम—

[न] नन्तमं नेरपि परपि जसमंजगदोलु ॥१०॥

व [चन] ॥ इन्तेनिसिदापोचाम्बिके बेलगोलद तीर्थं  
मोदलागनेकतीर्थगलोलु पलवुं चैत्यालयङ्गल माडिसि महा-  
दान गेय्दु ॥

वृ [त्त] ॥ अदनिन्नेनेम्बेनानोन्दमलद सुकृत्रमं नोड रोमाञ्च  
माद—

प्पुदु पेल्वुयोगदिन्दं स्मरियिपदेनमो वीतरागाय गार्ह—  
स्थयद योषिद् भावदी कालद परिणतियिं गेल्लु सल्लेखनास-  
म्पददिन्दं देविपोचाम्बिके सुरपदमं लीलेयिं सूरैगोण्डल् ॥११॥

**सकवर्ष १०४३ नेय सार्व्वरि संवत्सरदाषाढ शुद्ध**

५ सोमवारदन्दु सन्यसनमं कैकोण्डु एकपाश्वरनियमदिं पञ्च-  
पदमनुच्चारिसुत्तं देवलोककके सन्दलु ॥ आ जगज्जननियपुत्रं ॥  
समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्डदण्ड-  
नायकं । वैरिभयदायकं । गोत्रपवित्रं । बुधजनमित्र । श्रीजैन-  
धर्म्मामृताम्बुधिप्रवर्द्धनसुधाकरं । सम्यक्त्वरत्नाकरं । आहाराभय-  
भैषज्य-शास्त्रदानविनोद । भव्यजनहृदयप्रमोद । **विष्णुवर्द्धन**  
भूपालहोयसलमहाराजराज्याभिषेकपूर्णकुम्भ । धर्म्महर्म्योद्ध-  
रणमूलस्तम्भ । नुडिदन्तेगण्डपगेवरं बेङ्कोण्ड । द्रोहघरट्टाद्यनेक  
नामावलीसमालङ्कृतनप्प श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं गङ्ग-  
राजं तन्नात्मांम्बिके पोचलदेवियरु दिवके सललु परोच्चविन-  
यकेन्दी निसिधिगेयं निलिसि प्रतिष्ठे गेय्दु महादानपूजाच्च-  
नाभिषेकङ्गलं माडिद मङ्गलमहा श्री श्री ॥

श्री प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवगुहं पेर्गडे चावराजं बरेदं ॥

रुवारिहोयसलाचारियमगं वर्द्धमानाचारि विरुदरुवारि-  
मुखतिलकं कण्डरिसिद ॥

[ इस लेख में 'मार' और 'माकणब्बे' के सुपुत्र 'एचि' व 'एचि-गाङ्क' की भार्या 'पोचिकब्बे' की धर्मपरायणता और अन्त में संन्यास-विधि से स्वर्गारोहण का उल्लेख है । पोचिकब्बे ने अनेक धार्मिक कार्य किये । उन्होंने बेलगोल में अनेक मन्दिर बनवाये । शक सं० १०४३, आषाढ़ सुदि ५ सोमवार को इस धर्मवती महिला का स्वर्गवास हो जाने पर उसके प्रतापी पुत्र महासामान्ताधिपति, महाप्रचण्ड दण्डनायक, विष्णुवर्द्धन महाराज के भर्त्री गङ्गराज ने अपनी माता की स्मारक यह निषद्या निर्माण कराई ।

यह लेख प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव के गृहस्थ शिष्य चावराज का रचा हुआ और होयसलाचारि के पुत्र वर्द्धमानाचारि द्वारा उत्कीर्ण है ]

४५ ( १२५ )

एरडु कटे वस्ति के पश्चिम की ओर

एक पाषाण पर ।

( लगभग शक सं० १०४० )

श्रोमत्परमगम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ २ ॥

स्वस्ति 'समधिगतपञ्चमहाशब्द' महामण्डलेश्वर द्वारवतीपुर  
वराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्कूडामणि मलपरोल्

गण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कृतं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभु-  
वनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुज-बलवीर-गङ्ग विष्णुवर्द्धन  
होयसलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा चन्द्रा-  
र्कतारं सलुत्तंइरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-

घनवृत्त-स्तन-हारनुग्ररणधीरं मारनेनेन्दपै ।

जनकं तानेने माकणब्बे विबुधप्रख्यातधर्मप्रयु-

क्ते निकामात्तचरित्रे तायेनलिदेनेचं महाधन्यनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ वित्रस्तमलं बुधजन—

मित्रं द्विजकुलपवित्रनेचम् जगदोलु ।

पात्रमूरिपुकुलकन्दघनित्रं

कौण्डिन्यगोत्रन मलचरित्र ॥ ४ ॥

मनुचरितनेचिगाङ्गन

मनेयोलुमुनिजनसमूहमुं बुधजनमुं ।

जिनपूजनेजिनवन्दने

जिनमहिमेगलाव कालमुं शोभिसुगुं ॥ ५ ॥

उत्तमगुणतत्तिवनिता-

वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेत्तलं कै-

य्येत्तुविनममलगुणस-

म्पत्तिगे जगदोलगे पोचिकब्बेयेनोन्तलु ॥ ६ ॥

अन्तेनिसिदेचिराजन पोचिकब्बेय पुत्रनखिल-तीर्थकर-  
परम-देव-परम-चरिताकर्णनोदीर्ण-विपुल-पुलक-परिकलित वार

बाणनुवसम-समर-रस-रसिक-रिपु-नृप-कलापावलेप-लोप-लोलुप-  
कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-विनोदनुं सकल - लोक-  
शोकापनोदनुं ॥

वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण

शक्तिशूक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीव-कोदण्डिनः ।

यस्तद्वत् वितनोति विष्णुनृपतेष्कार्यं कथं मादृशै-

र्गाङ्गो गाङ्ग-तरङ्गरञ्जित-यशो-राशिस्सवर्णो भवेत् ॥ ७ ॥

इन्तेनिप श्रोमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरदृगङ्गराजं  
चालुक्यचक्रवर्त्तिं त्रिभुवनमल्ल पेम्माडिदेवनदलं पन्निर्व्वर-  
स्सामन्तर्व्वरसुकण्णगालवीडिनलुबिट्टिरे ॥

कन्द ॥ तेगेवारुवमं हारुव

बगेयं तनगिरुल बवरवेनुत सवङ्गं ।

बुगुवकटकिगरनलिरं

पुगिसिदुदु भुजासि गङ्गदण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्दमनिवरुं सामन्तरुमं भङ्गिसि  
तदीयवस्तु-वाहनसमूहमं निजस्वामिगे तन्दु कोट्टुनिज-  
भुजावष्टम्भकमेच्चि मेच्चिदे बेंडिकोल्लेने ॥

कन्द । परमप्रसादमं पडेदु

राज्यमं धनमनेनुमं बेडदन-

स्वरमागे बेडिकोण्डं

परमननिदनहर्दचर्चनाञ्चितचित्त ॥ ९ ॥

अन्तुबेडिकोण्डु ॥

वृत्त ॥ पसरिसेकीत्तनं जननिपोचल-देवियरत्थिवट्टु मा-  
डिसिदजिनालयक्कमोसेदात्म-मनोरमे लत्तिदेविमा-।  
डिसिद जिनालयक्कमिटुपूजनेयोजितमेन्दुकोट्टुस-  
न्तोसमनजस्रमाम्पनेनेगङ्गचमूपनिदेनुदात्तनो ॥ १० ॥

अक्षर ॥ आदियागिर्पुर्दारहत-समयके मूलसङ्घं कोण्डकुन्दान्वयं  
बादुवेडदं बलयिपुदल्लिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।  
बोध-विभवद कुकुट्टासनमलधारिदेवर शिष्यरेनिप पेम्पिङ्ग  
आदमेसेदिर्पशुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवरगुडुंगङ्ग-चमूपति ११।  
गङ्गवाडिय बस दिगलेनितोलवनितुमस्तानेय्दे पोसयिसिदं  
गङ्गवाडिय गोम्मटदेवर्गे सुत्तालयमनेय्दे माडिसिदं ।  
गङ्गवाडिय तिगुलरं बेड्डोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिच्चिर्चकोट्ट  
गङ्गराजना मुन्निन गङ्गररायङ्गं नूर्म्मडिधन्यनस्ते ॥ १२ ॥

[ यह लेख शिलालेख नं० ५६ ( ७३ ) के प्रथम पैंतीस पद्यों का उद्धरण मात्र है । देखो नं० ५६ ]

४६ ( १२६ )

एरड्डु कट्टे वस्ति के पश्चिम की ओर मण्डप में  
पहले स्तम्भ पर  
( शक सं० १०३७ )

( उत्तरमुख )

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूरः क्षीरकुपारहारः

प्रथितपृथुलकीर्तिश् श्री शुभेन्द्रव्रतीशः ।

गुणमणिगणसिंधु शिशुलोकैकबन्धुः

विबुधमधुपफुल्लः फुल्लबाणादिसन्नः ॥ १ ॥

श्रीवधुचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुद्भवदिं पयोधिवे-

लावधु पेम्पुवेत्तवोल निन्दिते नागले चारुरूपली-

लावति दण्डनायकिति लकतेदेमति बूचिराजने-

म्बीविभु पुट्टे पेम्पु वडेदारिर्जिसिदलु पिरिदप्प कीत्तिय ॥ २ ॥

आवयव्वेय मगनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनभवनविख्यातख्यातिकान्तानिकामकमनी-  
यमुखकमलपरागपरभागसुभगीकृतात्मीयवक्तुं । स्वकीयकायका  
न्तिपरिहसितकुसुमचापगात्रनुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदान-  
विनोदनुं । सकललोकशोकामनोदनुं । निखिलगुणगणाभरणनुं ।  
जिनचरणशरणनुमेनिसिद बूचणं ।

वृत्त ॥ विनयद सीमे सत्यद तवर्मने शौचद जन्मभूमि ये—

न्दनवरतं पोगल्लुदु जनं विबुधोत्तरकैरवप्रबो-

धनहिमरोचियं नेगर्ह बूचियनुद्धपरार्थसद्गुणा-

भिनवदधोचियं सुभटभीकरविक्रमसव्यसाचियं ॥ ३ ॥

आ-यण्णं सकवर्ष १०३७ नेय विजयसंवत्सरद-  
बैशाखसुद्ध १० आदित्यवार दन्दु सर्व्वसङ्गपरियागपूर्व्वकं  
मुडिपिदं ॥

( पश्चिममुख )

पद्य ॥ त्यागंसर्व्वगुणाधिकं तदनुजं शौर्य्यं च तद्गान्धवं

धैर्य्यं गर्व्वगुणातिदारुणरिपुं ज्ञानं मनोऽन्यं सतां ।

शेषाशेषगुणं गुणैकशरणं श्रीबूचणोऽप्याहितं  
 सत्यं सत्यगुणीकरोति कुरुते किं वा न चातुर्यभाक् ॥ ४ ॥  
 यो वीर्ये गजवैरिभूयमतुले दानक्रमे बूचणो  
 यस्साक्षात्सुरभूजभूयमवनौ गम्भीरताया विधौ ।  
 यो रत्नाकरभूयमुन्नति-गुणे यो मेरुभूयं गत-  
 स्सोऽन्ते सान्तमना मनीषिलषितं गीर्वाणभूयंगतः ॥ ५ ॥  
 माराकारइति प्रसिद्धतरइत्यत्यूज्जित-श्रीरिति  
 प्राप्तस्वर्गपतिप्रभुत्वगुणइत्युच्चैर्मनीषीति च ।  
 श्रोमद्रङ्गचमूपते प्रियतमा लक्ष्मीसदृक्षा शिला—  
 स्तम्भं स्थापयतिस्म बूचणगुणप्रख्यातिवृद्धि प्रति ॥ ६ ॥  
 धरे लघुवायुतु विश्रुतविनेयनिकायमनाथमायुतुवाक्-  
 तरुणियुमीगली जगदोलार्गमनादरणीयेयादले—  
 न्दिरदे विषादमादमोदवुत्तिरे भव्यजनान्त [रङ्ग] दोलु  
 निरुपमनेयदिदं नेगर्ह बूचियणं दिविजेन्द्रलोकमं ॥ ७ ॥  
 श्री मूलसङ्घद देसिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्त-  
 देवर गुड्डं बूचणन निशिधिगे ॥

[ इस लेख में 'नागले' माता के सुपुत्र 'बूचिराज' व बूचण के सौन्दर्य, शौर्य और सद्गुणों का उल्लेख है । यह तेजस्वी और धर्मिष्ठ पुरुष शक सं० १०३७ वैशाख सुदि १० रविवार को सर्व-परिग्रह का त्यागकर स्वर्गगामी हुआ । उनके स्मरणार्थ सेनापति गङ्ग ने एक पाषाण-स्तम्भ आरोपित कराया ।

बूचिराज के गुरु मूल संघ, देशीगण पुस्तक गच्छ के शुभचन्द्र सिद्धान्त देव थे । ]



४७ ( १२७ )

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

( शक सं० १०३७ )

(दक्षिणमुख)

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कुतीर्थ-ध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवाद्विः

प्रध्वस्ताध-प्रमेय-प्रचय-विषय-कैवल्यबोधोरु-वेदिः ।

शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोषः

स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्यवीचीनिकायः ॥ २ ॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।

तत्राम्बुधौ सप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौ नन्दिगणे बभूव ॥ ३ ॥

श्रीपद्मनन्दीत्यनवद्यनामाह्याचार्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः ।

द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसञ्जातसुचारणर्द्धिः ॥ ४ ॥

अभूदुमास्वातिमुनीश्वरोऽसावाचार्यशब्दोत्तरगृद्धपिच्छः ।

तदन्वये तत्सदृशोऽस्ति नान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥ ५ ॥

श्रीगृद्धपिच्छमुनिपस्यबलाकपिच्छः

शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिः क्रीर्त्तिः ।

चारित्रचुञ्चुरखिलावनिपालमौलि-

मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥ ६ ॥

तच्छिष्योगुणानन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-

स्तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।

मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो  
 भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्पदर्पापहः ॥७॥  
 तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयशशास्त्राब्धिपारङ्गता-  
 स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्थक-  
 व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः  
 नानानूननयप्रमाणनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥८॥  
 अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्घ्रि-  
 र्विजितमकरकेतूदण्डदेहदण्डगर्वः ।  
 कुनयनिकरभूषानीकदम्भोलिदण्ड  
 स्सजयतु विबुधेन्द्रो भारतीभालपटुः ॥९॥  
 तच्छिष्यः कलधौतनन्दिमुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः  
 पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तेश्वरः ।  
 पञ्चाक्षोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—  
 प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥१०॥  
 तत्पुत्रको महेन्द्रादिकीर्त्तिर्मदनशङ्करः ।  
 यस्य वाग्देवता शक्ता श्रौतीं मालामयूयुजत् ॥११॥  
 तच्छिष्योवीरणन्दीकवि-गमक-महावादि-वाग्मित्वयुक्तो  
 यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशसङ्काशकीर्त्ति ।  
 गायन्त्युच्चैर्हिगन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्  
 सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्डः ॥१२॥  
 श्रीगोलाचार्यनामा समजनि मुनिपशुशुद्धरत्नत्रयात्मा  
 सिद्धात्माद्यर्थ-सार्थ-प्रकटनपटु-सिद्धान्त-शास्त्राब्धि-वीची-

सङ्घातचालिताहः प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभावः

जीयाद्भू पाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्गु प्रबजलक्ष्मीविलासः ॥

पेर्गडे चावराजं बरेदंमङ्गल ॥

(पश्चिममुख)

**वीरगण्डी** विबुधेन्द्रसन्ततौ नूलचन्दिलनरेन्द्रवंशचू-

डामणिः प्रथितगोछदेशभूपालकः किमपि कारणेन सः ॥१४॥

**श्रोमत्त्रैकाल्ययोगी** समजनि महिकाकायलग्नातनुत्रं

यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित-शर-गणा ग्रीष्ममार्त्तण्डबिम्बं ।

चक्रंसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्याघशत्रून्विजेतुं

गोछाचार्यस्य शिष्यस्सजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१५॥

तपस्सामर्थ्यतो यस्य छात्रोऽभूद्ब्रह्मराक्षसः ।

यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहाः ॥१६॥

प्राज्याज्यतां गतं लोके करञ्जस्य हि तैलकं ।

तपस्सामर्थ्यतस्तस्य तपः किं वणिर्णतुं क्षमं ॥१७॥

**त्रैकाल्य-योगि-यतिपात्र-विनेयरत्न-**

स्तिद्वान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्रः ।

दिग्नागकुम्भलिखितोज्ज्वलकीर्तिकान्तो

जीयादसावभयनन्दिमुनिर्जगत्यां ॥१८॥

येनाशेषपरीषहादिरिपवस्सम्यग्जिताः प्रोद्धताः

येनाप्ता दशलक्षणोत्तममहाधर्माख्यकल्पद्रुमाः ।

येनाशेष-भवोपताप-हननस्वाध्यात्मसंवेदनं

प्राप्तं स्यादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽयं कृतार्थो भुवि ॥१९॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासंयुत-  
 स्सच्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्यकन्दादुरः ।  
 मिथ्यात्वाब्जवनप्रतापहननश्रीसोमदेवप्रभु-  
 र्जीयात्सत्सकलेन्दुनाममुनिपः कामाटवीपावकः ॥२०॥  
 अपिच सकलचन्द्रो विश्वविश्वम्भरेश  
 प्रणुतपदपयोजः कुन्दहारेन्दुरोचिः ।  
 त्रिदशगजसुवज्रवयोमसिन्धुप्रकाश  
 प्रतिमविशदकीर्तिर्वाग्बधूकर्णपूरः ॥२१॥  
 शिष्यस्तस्य दृढव्रतश्शमनिधिस्सत्संयमाम्भोनिधिः  
 शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्युक्तिस्त्रिगुप्तिश्रितः ।  
 नानासद्गुणरत्नरोहणगिरिर् प्रोद्यत्तपो जन्मभूः  
 प्रख्यातो भुवि मेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिपः ॥ २२ ॥  
 त्रैविद्ययोगीश्वर-मेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्रमुनिस्सुशिष्यः ।  
 शुम्भद्वताम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निर्दूतदण्डत्रितयो विशल्यः २३  
 पुष्पास्त्रानून-दानोत्कट-कट-करटिच्छेद-दृष्यन्मृगेन्द्रः  
 नानाभव्याब्जषण्डप्रतति-विकसन-श्रीविधानैकभानुः ।  
 संसाराम्भोधिमध्येत्तरणकरणतौयानरत्नत्रयेशः  
 सम्यग्जैनागमार्थान्वित-विमलमतिः श्री प्रभाचन्द्र  
 यांगी ॥ २४ ॥

( उत्तरमुख )

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ञानलक्ष्मीपति —  
 शचारित्रोत्करवाहनशिशतयशश्शुभ्रातपत्राञ्चितः ।

त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्मचक्राधिपः  
 पृथ्वीसंस्तवतूर्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २५ ॥  
 शाब्दौघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कज्ञचूडामणिः  
 सैद्धान्तेद्धशिरोमणिः प्रशमवद् व्रातस्य चूडामणिः ।  
 प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरुदञ्चद्भव्यरत्नामणि-  
 र्जीयात्सन्नतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणिः ॥ २६ ॥  
 त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्ममासि प्रिया  
 वाग्देवी दिसहावहित्यहृदया तद्वश्यकर्म्मार्थिनी ।  
 कीर्त्तिर्वारिधिदिककुलाचलकुले स्वादात्मा प्रष्टुम-  
 प्यन्वेष्टुं मणिमन्त्रतन्त्रनिचयं सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥ २७ ॥  
 तर्कन्यायसुवज्रवेदिरमलार्हत्सूक्तितन्मौक्तिकः  
 शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्स्याद्वादसद्विद्रुमः ।  
 व्याख्यानोज्जितघोषणर् प्रविपुलप्रज्ञोद्धवीचीचयो  
 जीयाद्विश्रुतमेघचन्द्र-मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकरः ॥ २८ ॥  
 श्रीमूलसङ्घकृत-पुस्तक-गच्छ-देशी  
 योद्यद्गणाधिपसुतार्किकचक्रवर्ती ।  
 सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणिमेघचन्द्र-  
 स्त्रैविद्यदेव इति सद्रिबुधा(ः) स्तुवन्ति ॥ २९ ॥  
 सिद्धान्ते जिन-वीरसेन-सदृशः शास्याब्ज-भा-भास्करः  
 षट्कर्त्तृककलङ्कदेवविबुधः साक्षादयं भूतले ।  
 सर्व-व्याकरणे विपश्चिदधिपः श्रीपूज्यपादस्वयं  
 त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ ३० ॥

रुद्राणीशस्य कण्ठं धवलयति हिमज्योतिषोजातमङ्कं  
पीतं सौवर्ण्यशैलं शिशुदिनपतनुं राहुदेहं नितान्तं ।  
श्रीकान्तावल्लभाङ्गं कमलभववपुर्मधेचन्द्रव्रतीन्द्र—  
त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिचन्द्रातपोऽसौ ॥३१॥  
मुनिनाथं दशधर्मधारि दृढषट्-त्रिंशद्गुणं दिव्य-वा-  
णनिधानं निनगिच्छुचापमलिनीज्यासूत्रमोरेन्दे पू-  
विन बाणङ्गलुमयदे हीननधिकङ्गाक्षेपमंमाण्पुदा-  
व नयं दर्पक मेघचन्द्र मुनियोल् माण्निन्नदोर्द्वर्पमं ॥३२॥  
मृदुरेखाविलासं चावराज-वलहदल्वरेदुद विरुद रूवा-  
रिमुख-तिलकगङ्गाचारि कण्डरिसिद शुभचन्द्रसिद्धान्त-  
देवरगुडु ।

( पूर्वमुख )

श्रवणीयं शब्दविद्यापरिणति महनीयं महातर्कविद्या—  
प्रवणत्वं श्लाघनीयं जिननिगदित-संशुद्धसिद्धान्तविद्या-  
प्रवणप्रागल्भ्यमेन्देन्दुपचितपुलकं कीर्त्तिसल् कूर्त्तु-विद्व-  
न्निबहं त्रैविद्यनाम-प्रविदितनेसेदं मेघचन्द्रव्रतीन्द्र ॥३३॥  
क्षमेगीगल् जौवनं तीविदुदतुलतप श्रीगे लावण्यमीगल्  
समसन्दिर्दत्तु तन्नि श्रुतवधुगधिकप्रौढियाय्तीगलेन्द-  
न्दे महाविख्यातियं तालिददनमल्लचरित्रोत्तमं भव्यचेतो-  
रमणं त्रैविद्यविद्योदितविशदयशं मेघचन्द्रव्रतीन्द्र ॥३४॥  
इदे हंसीवृन्दमीण्टल् बगेदपुदु चकोरीचयं चञ्चुविन्दं  
कदुकल् सार्दपुदीशं जडेयोलिरिसलेन्दिर्दपं सेज्जेगेरल् ।

पदेदप्यं कृष्णनेम्बन्तेसेदु विस-लसत्कन्दलीकन्दकान्तं  
पुदिदत्तो मेघचन्द्रव्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाश ॥३५॥

पूजितविदग्धविबुधस-

माजं त्रैविद्य-मेघचन्द्र-व्रति रा-

राजिसिदं विनमितमुनि-

राजं वृषभगणभगणताराराजं ॥३६॥

सक वर्षं १०३७ नेय मन्मथसंवत्सरद मार्ग-  
सिर सुद्ध १४ बृहवारं धनुलग्नद पूर्वाह्णदारुघलिगेयप्पागलु  
श्रीमूलसङ्गद देसिगगणद पुस्तकगच्छद श्रीमेघचन्द्रत्रैविद्य  
देवर्त्तम्मवशानकालमनरिदु पल्यङ्काशनदे।लिर्हु आत्मभावनेयं  
भाविसुत्तुं देवलोकके सन्दराभावनेयेन्तप्पुदेन्दोडे ॥

अनन्त-बोधात्मकमात्मतत्त्वं निधाय चेतस्यपहाय हेयं ।

त्रैविद्यनामा मुनिमेघचन्द्रो दिवं गतोबोधनिधिर्विशिष्टाम् ॥

अवरप्रशिष्यरशेष-पद-पदार्थ-तत्त्व-विदरु सकलशास्त्रपारा-  
वारपारगरुं गुरुकुलसमुद्धरणरुम्प श्री प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-  
देवर्त्तम्म गुरुगलो परोक्षविनेयं कारणमागि श्रीकब्बप्पु-तीर्थदल्  
तम्म गुडुं ॥

समधिगतपञ्चमहाशब्द महासामन्ताधिपति महाप्रचण्ड  
दण्डनायक वैरिभयदायकं गोत्रपवित्रं बुधजनमित्र स्वामिद्रोह-  
गोधूमघरट्टसङ्ग्रामजत्तलट्ट विष्णुवर्द्धनभूपालहोयसलमहाराज-  
राज्य-समुद्धरण कलिगलाभरण श्रीजैनधर्माभूताम्बुधि-प्रवर्द्धन-  
सुधाकर सम्यक्तरत्नाकर श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकगङ्गराजनु-

मातन मनस्सरोवरराजहंसे भव्यजनप्रसंसे गोत्र-निधाने रुक्मिणी  
समाने लक्ष्मीमतिदण्डनायकितियुमन्तवरिन्दमतिशयमहा-  
विभूतियिं सुभलप्रदोलु प्रतिष्ठेय माडिसिदर् आमुनीन्द्रोत्तमर्  
ईनिसिधिगेयन् अवर तपःप्रभावमेन्तपुदेन्दोडे ॥

समदोद्यन्मार-गन्ध-द्विरद-दलन १-कण्ठीरवं क्रोध-लोभ-

द्रुम-मूलच्छेदनं दुर्द्धरविषयशिलाभेद-वज्र-प्रतापं ।

कमनीयं श्रोजिनेन्द्रागमजलनिधिपारं प्रभाचन्द्र-सिद्धान्तमु-  
नीन्द्रं मोहविध्वंसनकरनेसेदं धात्रियोल् योगिनाथ ॥ ३८ ॥

चावराजं बरेद ॥

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्णजिनाश्रयकोटियं क्रमं

वेत्तिरे मुन्नितन्तिरनितूर्गलोलं नेरे माडिसुत्तम —

त्युत्तमपात्रदानदोदवं मेरेवुत्तिरे गङ्गावाडितो —

म्बत्तरु सासिरं कोपणमादुदु गङ्गादण्डनाथनिं ॥ ३९ ॥

सोभेयने कैकोण्डुदे

सौभाग्यद-कणियेनिप्प लक्ष्मीमतिथि-

न्दीभुवनतलदोला हा-

राभयभैसज्यशास्त्र-दान-विधान ॥४०॥

[यह लेख मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव की प्रशस्ति है। प्रथम श्लोक को छोड़  
आदि के नव पद वे ही हैं जो शिलालेख नं० ४१ (६१) में भी पाये  
जाते हैं। उनमें कुन्दकुन्दाचार्य, उमास्वाति गृद्ध पिच्छ, बलाक पिच्छ,  
गुणनन्दि, देवेन्द्र सैद्धान्तिक और कलधौतनन्दि मुनि का उल्लेख है।

१ द्विरदन-बल



कलधौतनन्दि के पुत्र महेन्द्रकीर्ति हुए जिनकी आचार्यपरम्परा में क्रम से वीरनन्दि, गोल्लाचार्य, त्रैकाल्ययोगी, अभयनन्दि और सकलचन्द्र मुनि हुए। लेख में इन आचार्यों के तप और प्रभाव का अच्छा वर्णन है। त्रैकाल्ययोगी के विषय में कहा गया है कि तप के प्रभाव से एक ब्रह्मराक्षस उनका शिष्य होगया था। उनके स्मरणमात्र से बड़े बड़े भूत भागते थे, उनके प्रताप से करझ का तैल घृत में परिवर्तित होगया था। सकलचन्द्रमुनि के शिष्य मेघचन्द्र त्रैविद्य हुए जो सिद्धान्त में वीरसेन, तर्क में अकलङ्क और व्याकरण में पूज्यपाद के समान विद्वान् थे।

शक सं० १०३७ मार्गसिर सुदि १४ बृहस्पतिवार को उन्होंने सद्ग्रन्थानसहित शरीर-त्याग किया। उनके प्रमुख शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्त देव ने महाप्रधान दण्डनायक गङ्गराज द्वारा उनकी निषद्या निर्माण कराई।

लेख चावराज का लिखा हुआ है। ]

४८ ( १२८ )

उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ पर

( शक सं० १०४४ )

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादासोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

जयतु दुरितदूरः क्षीरकूपारहारः

प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्रीशुभेन्दुव्रतीशः ।

गुणमणिगणसिन्धुः शिष्टलोकैकबन्धुः

विबुध-मधुप-फुल्लः फुल्लबाणादि-सल्लः ॥ २ ॥

अवर गुड्डि ॥

परमपदार्थनिर्णयमनान्त विदग्धते दुर्नयङ्गलोल्  
परिचयमेन्दुमिल्लदतिमुग्धते तन्निनियङ्गे चित्तदोल् ।  
पिरिदनुरागमं पडेव रूपु विनेयजनान्तरङ्गदोल्  
निरुपमभक्तियं पडेव पेम्पिवु लक्ष्मलोगेन्दुमन्वितं ॥ ३ ॥

चतुरतेयोल् लावण्य दो-

लतिशयमेने नेगल्द देवभक्तियोलिन्ती

क्षितियोलगे गङ्गराजन

सति लक्ष्म्यम्बिकेयोलितरसतियर्होरेये ॥ ४ ॥

सौभाग्यदोलमर्दादं

सोभास्पदमादरूपिनोल्पि प्रस्य-

क्षीभूत लक्ष्मयेन्दुपु-

दी भूतलमिनितुमेय्दे लक्ष्मीमतिथं ॥ ५ ॥

शोभेयनें कय्कोण्डुदो

सौभाग्यद कणियेनिप्प लक्ष्मीमतिथि-

न्दी भुवन-तलदोलाहा-

रामय-मैश(ष)ज्यशास्त्रदानविधानं ॥ ६ ॥

वितरणगुणमदे वनिता—

कृतियं कय्कोण्डुदेनिप महिमेय लक्ष्मी-

मतिथेयलवो देवताधि-

ष्टितेयल्लदे केवलं मनुष्याङ्गनेये ॥ ७ ॥

इभगमने हरिणलोचने

शुभलक्षणे गङ्गराजनर्द्धाङ्गने ता-

नभिनवरुग्मिणियेनली

ऋभुवनदोल् पोल्वरोलरे लक्ष्मीमतियं ॥ ८ ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगणद पुस्तकगच्छद श्रीमत्-शुभचन्द्र  
सिद्धान्तदेवर गुड्डि दण्डनायकितिलकब्बे सक वर्ष १०४४ नेय  
एवसम्बत्सरद शुद ११ शुक्रवारदन्दु सन्यसनं गेय्दु  
समाधिवेरसि मुडिपि देवलोकके सन्दल् ॥

परोक्षविनेयके निषिधिगेयं श्रीमदण्डनायक-गङ्गराजं  
निलिसि प्रतिष्ठेमाडि महादानमहापुजेगलं माडिदरु मङ्गल  
महा श्री श्री ॥

[ इस लेख में दण्डनायक गङ्गराज की धर्मपत्नी लक्ष्मीमति के गुण, शील और दान की प्रशंसा की गई है। इस धर्मपरायण साध्वी महिला ने शक सं० १०४४ में संन्यास-विधि से शरीर त्याग किया। वह मूलसंघ पुस्तक-गच्छ देशीगण के शुभचन्द्राचार्य की शिष्या थी। अपनी साध्वी स्त्री की स्मृति में दण्डनायक गङ्गराज ने यह निषद्या निर्माण कराई। ]

४८ (१२८)

उसी मण्डप में चतुर्थ स्तम्भ पर

( शक सं० १०४२ )

( उत्तरमुख )

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥

जयतु दुरितदूरः चीरकूपारहारः

प्रथितपृथुलकीर्त्तिश्री शुभेन्द्र ब्रतीशः ।

गुणमणिगणसिन्धुः शिष्ट-लोकैकबन्धुः

विवुधमधुपफुल्लः फुल्लबाणादिसङ्घः ॥ १ ॥

श्रोवधुचन्द्रलेखे सुरभूरुहदुद्भवदि पयोधि-वे-

लावधु पेम्पु वेत्तबोलनिन्दिते नागले चारुरूपली-

लावति दण्डनायकिति लक्कले देमति बूचिराजने

म्बी विभु पुट्टे पेम्पु वडेदार्जिसिदल् पिरिदप्पकीर्त्तियं ॥२॥

वचन ॥ आ यच्चेय मगलेन्तप्पलेन्दडे । स्वस्ति निस्तुषाति-  
जितवृजिन-भाग - भगवदर्हदर्हणीयचारुचरणारविन्दद्वन्द्वानन्दव-  
न्दनवेलाविलोकनीयाद्दमायमाण-लक्ष्मीविलासेयुं । अपहसनी-  
यस्वीयजीवितेशजीवितान्तजीवनविनोदानारतरतरतिविलासेयुं ।  
कालेयकालराक्षसरक्षाविकलसकलवाणिजत्राणतिप्रचण्डचा-  
मुण्डातिश्रेष्ठराजश्रेष्ठिमानसराजमानराजहंसवनिताकल्पेयुं ।  
परमजिनमतपरित्राणकरणकारणीभूत - जिनशासनदेवताकारा -  
कल्पेयुं । अभिराभगुणगणवशीकरणीयतानुकरणीयधरणीसुतेयुं ।  
श्रीसाहित्यसत्यापितक्षीरोदसुतेयुं । सद्ब्रह्मानुरागमतिपुण्यनिशि-  
ददेमियक्क ॥

पद्य ॥ श्रीचामुण्डमनोमनोरथरथव्यापारणैकक्रिया

श्रीचामुण्डमनस्सरोजरजसाराजद्द्विरेफाङ्गना ।

श्रीचामुण्डगृहाङ्गणोद्गतमहाश्रीकल्पवल्ली स्वयं

श्रीचामुण्डमनःप्रिया विजयतांश्रीदेमवत्यङ्गना ॥ ३ ॥

(पश्चिममुख)

आहारं त्रिजगज्जनाय विभयं भीताय दिव्यौषधं  
 व्याधिव्यापदुपेतदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागमं ।  
 एवं देवमतिस्सदैव ददती प्रप्रक्षये स्वायुषा—  
 मर्हद्देवमतिविधाय विधिना दिव्या वधू प्रोदभू ॥ ४ ॥  
 आसीत्परक्षोभकरप्रतापाशेषावनीपालकृतादरस्य ।

**चामुण्डनाम्नो वणिजःप्रियास्त्री मुख्यामती या भुविदे-  
 मतीति ॥ ५ ॥**

भूलोक-चैत्यालय-चैत्य-पूजा-व्यापार-कृत्यादरतोऽवतीर्ण्णा  
 स्वर्गात्सुरस्त्रीतिविलोक्यमाना पुण्येनलावण्यगुणेनयात्र ॥६॥  
 आहारशास्त्राभयभेषजानां दायिन्यलंवर्ण्यचतुष्टयाय ।  
 पश्चात्समाधिक्रिययायुरन्ते स्वस्थानवत्स्वः प्रविवेशयोच्चैः ॥७॥  
 सद्धर्मशत्रुं कलिकालराजं जित्वा व्यवस्थापितधर्मवृत्त्या ।  
 तस्याजयस्तम्भनिभंशिलाया स्तम्भं व्यवस्थापयतिस्म लक्ष्मीः ॥८॥

श्रीसूक्तसङ्घद देशिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र  
 सिद्धान्तदेवर गुडि सकवर्ष १०४२ नेय विकारिसंवत्सर-  
 दफाल्गुणव ११ बृहवारदन्दु सन्यासन विधियिं देमियक्क  
 मुडिपिदलु ॥

[ इस लेख में चामुण्ड नाम के किसी प्रतिष्ठित और राजसन्मानित वणिक् की धर्मवती भार्या 'देमति' व 'देवमति' की प्रशंसा है । इस महिला की माता का नाम 'नागले' व उसके एक भाई और बहिन के नाम क्रमशः बूचिराज और लक्कले थे । दान-पुण्य के कार्यों में जीवन

व्यतीत कर इस महिला ने शक सं० १०४२, फाल्गुण वदि ११ बृहस्पति वार को संन्यास-विधि से शरीर त्याग किया । यह महिला शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी । ]

५० (१४०)

गन्धवारण बस्ती के प्रथम मण्डप में एक स्तम्भ पर

( शक सं० १०६८ )

( पूर्वमुख )

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ १ ॥

श्रीमन्नाभेयनाथाद्यमलजिनवरानीकसौधोरुवार्द्धिः

प्रध्वस्ताषप्रमेयप्रचयविषयकैवल्यबोधोरुवेदिः ।

शस्तस्यात्कारमुद्राशबलितजनतानन्दनादोरुघोषः

स्थेयादाचन्द्रतारं परमसुखमहावीर्यवीचीनिकायः ॥ २ ॥

श्रीमन्मुनीन्द्रोत्तमरत्नवर्गाः श्रीगौतमाद्याः प्रभविष्णवस्ते ।

तत्राम्बुधौसप्तमहर्द्धियुक्तास्तत्सन्ततौनन्दिगणे बभूव ॥ ३ ॥

श्रीपद्मनन्दीयनवद्यनामाद्याचार्य्यशब्दोत्तरकोण्डकुन्दः ।

द्वितीयमासीदभिधानमुद्यच्चरित्रसंजातसुचारणर्द्धिः ॥ ४ ॥

अभूदुमास्वाति मुनीश्वरोऽसावाचार्य्यशब्दोत्तरगृद्ध-

पिञ्छः ।

तदन्वयेतत्सदृशोऽस्तिनान्यस्तात्कालिकाशेषपदार्थवेदी ॥ ५ ॥

श्रीगृद्धपिञ्छमुनिपस्यबलाकपिञ्छः

शिष्योऽजनिष्टभुवनत्रयवर्त्तिकीर्त्तिः ।

चारित्रचञ्चुरखिलावनिपालमौलि-  
 मालाशिलीमुखविराजितपादपद्मः ॥ ६ ॥  
 तच्छिष्यो गुणनन्दिपण्डितयतिश्चारित्रचक्रेश्वर-  
 स्तर्कव्याकरणादिशास्त्रनिपुणस्साहित्यविद्यापतिः ।  
 मिथ्यावादिमदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टकण्ठीरवो  
 भव्याम्भोजदिवाकरो विजयतां कन्दर्पदण्डपातः ॥ ७ ॥  
 तच्छिष्यास्त्रिशता विवेकनिधयश्शास्त्राब्धिपारङ्गता-  
 स्तेषूत्कृष्टतमा द्विसप्ततिमितास्सिद्धान्तशास्त्रार्थक-  
 व्याख्याने पटवो विचित्रचरितास्तेषु प्रसिद्धो मुनिः  
 नानानूननयप्रमाणनिपुणो देवेन्द्रसैद्धान्तिकः ॥ ८ ॥  
 अजनि महिपचूडारत्नराराजिताङ्गि-  
 र्विजितमकरकेतूदण्डदोर्हण्डगर्वः ।  
 कुनयनिकरभूधानीकदम्भोलिदण्ड  
 स्सजयतु विबुधेन्द्रो भारतीभालपटुः ॥ ९ ॥  
 तच्छिष्यः कलधैतनन्दिमुनिपस्सैद्धान्तचक्रेश्वरः  
 पारावारपरीतधारिणिकुलव्याप्तोरुकीर्त्तीश्वरः ।  
 पञ्चात्तोन्मदकुम्भिकुम्भदलनप्रोन्मुक्तमुक्ताफल—  
 प्रांशुप्राञ्चितकेसरी बुधनुतो वाक्कामिनीवल्लभः ॥ १० ॥  
 तत्पुत्रको महेन्द्रादिकीर्त्तिर्मदनशङ्करः ।  
 यस्य वाग्देवता शक्ता श्रौतीं मालामयूयुजत् ॥ ११ ॥  
 तच्छिष्यो वीरगण्दीकवि-गमक-महावादि-वाग्मिस्त्वयुक्तो  
 यस्य श्रीनाकसिन्धुत्रिदशपतिगजाकाशसङ्काशकीर्त्तिः ।

गायन्त्युच्चैर्दिगन्ते त्रिदशयुवतयः प्रीतिरागानुबन्धात्  
 सोऽयं जीयात्प्रमादप्रकरमहिधराभीलदम्भोलिदण्डः ॥१२॥  
 श्रीगोस्त्राचार्य्यनामा समजनि मुनिपशुशुद्धरत्नत्रयात्मा  
 सिद्धात्माद्यर्थ्य-सार्थ्य-प्रकटनपटु-सिद्धान्त शास्त्राब्धि-वीची-  
 सङ्घातचालिताहः प्रमदमदकलालीढबुद्धिप्रभावः  
 जीयाद्भूपाल-मौलि-द्युमणि-विदलिताङ्गु रज्जलक्ष्मी-  
 विलासः ॥ १३ ॥

वीरणान्दिविबुधेन्द्रसन्ततौ नूतनचन्दिलनरेन्द्रवंशचू-  
 डामणिः प्रथितगोस्त्रदेशभूपालकः किमपि कारणेन सः ॥१४॥  
 श्रीमत्त्रैकाल्ययोगी समजनि महिकाकायलग्नातनुत्रं  
 यस्याभूद्वृष्टिधारा निशित-शर-गणा प्रोष्ममार्त्तण्डबिम्बं ।  
 चक्रंसद्वृत्तचापाकलितयतिवरस्याघशत्रून्विजेतुं  
 गोस्त्राचार्य्यस्य शिष्यस्सजयतु भुवने भव्यसत्कैरवेन्दुः ॥१५॥  
 गङ्गणन लिखित

( दक्षिणमुख )

तपस्सामर्त्यतो यस्य छात्रोऽभूद्ब्रह्मराक्षसः ।  
 यस्य स्मरणमात्रेण मुञ्चन्ति च महाग्रहाः ॥ १६ ॥  
 प्राज्याज्यतां गतं लोके करञ्जस्य हि तैलकं ।  
 तपस्सामर्त्यतस्तस्य तपः किं वर्णिष्यतुंक्षमं ॥ १७ ॥  
 त्रैकाल्य-योगि-यतिपात्र-विनेयरत्न-  
 स्सिद्धान्तवार्द्धिपरिवर्द्धनपूर्णचन्द्रः ।  
 दिग्भागकुम्भलिखितोज्ज्वलकीर्तिकान्तो



जीयादसावभयनन्दिमुनिर्जगत्यां ॥ १८ ॥

येनाशेषपरीषहादिरिवस्सम्यग्जिताः प्रोद्धताः

येनाप्ता दशलक्ष्णोत्तममहाधर्माख्यकल्पद्रुमाः ।

येनाशेष-भवोपताप-हननं स्वाध्यात्मसंवेदनं

प्राप्तं स्यादभयादिनन्दिमुनिपस्सोऽयं कृतात्थो भुवि ॥ १९ ॥

तच्छिष्यस्सकलागमार्थनिपुणो लोकज्ञतासंयुत-

स्सच्चारित्रविचित्रचारुचरितस्सौजन्य कन्दादुरः ।

मिथ्यात्वाब्जवनप्रतापहननश्श्रीसोमदेवप्रभु-

र्जीयात्सत्सकलेन्दु नाममुनिपः कामाटवीपावकः ॥ २० ॥

अपिच सकलचन्द्रो विश्वविश्वम्भरेश-

प्रणुतपदपयोजः कुन्दहारेन्दुरोचिः ।

त्रिदशगजसुवज्रव्योमसिन्धुप्रकाश-

प्रतिमविशदकीर्तिर्वर्गवधूकर्णपूरः ॥ २१ ॥

शिष्यस्तस्य दृढव्रतश्शमनिधिस्सत्संयमाम्भेनिधिः

शीलानां विपुलालयस्समितिभिर्युक्तिस्त्रिगुप्तिश्रितः ।

नानासद्गुणरत्नरोहणगिरिः प्रोद्यत्तपोजन्मभूः

प्रख्यातो भुवि मेघचन्द्र मुनिपस्त्रैविद्यचक्राधिपः ॥ २२ ॥

श्रीभूपालकमौलिलालितपदस्सज्ञानलक्ष्मीपति—

श्चारित्रोत्करवाहनश्शतयशश्शुभ्रातपत्राश्रितः ।

त्रैलोक्याद्भुतमन्मथारिविजयस्सद्धर्मचक्राधिपः

पृथ्वीसंस्तवतूर्य्यघोषनिनदस्त्रैविद्यचक्रेश्वरः ॥ २३ ॥

शाब्दैघस्य शिरोमणिः प्रविलसत्तर्कज्ञचूडामणिः  
 सैद्धान्तेषु शिरोमणिः प्रशमवद्-त्रात्तस्य चूडामणिः ।  
 प्रोद्यत्संयमिनां शिरोमणिरुदञ्चद्भव्यरत्नामणि—  
 जीयात्सन्नतमेघचन्द्रमुनिपस्त्रैविद्यचूडामणिः ॥ २४ ॥  
 त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रयमिनः पत्युर्ममासि प्रिया  
 वाग्देवी दिसहावहित्थहृदया तद्वश्यकर्मार्थिनी ।  
 कीर्त्तिर्वारिधि दिक्कुलाचलकुलखादात्म [ . . ] प्रष्टुम—  
 प्यन्वेष्टुं मणिमन्त्रतन्त्रनिचयं सा सम्भ्रमाभ्राम्यति ॥ २५ ॥  
 तर्कन्यायसुवज्रवेदिरमलार्हत्सूक्तितन्मौक्तिकः  
 शब्दग्रन्थविशुद्धशङ्खकलितस्स्याद्वादसद्विद्रुमः ।  
 व्याख्यानेर्जितघोषणः प्रविपुलप्रज्ञोद्भवीचीचये  
 जीयाद्विश्रुतमेघचन्द्र-मुनिपस्त्रैविद्य-रत्नाकरः ॥ २६ ॥

श्रीमूलसङ्कृत-पुस्तक-गच्छ-देशी

योद्यद्गणाधिपसुतार्किकचक्रवर्ती ।

सैद्धान्तिकेश्वरशिखामणिमेघचन्द्र—

त्रैविद्यदेव इति सद्विवुधा ( : ) स्तुवन्ति ॥ २७ ॥

सिद्धान्ते जिनवीरसेन-सदृशशशास्याब्ज-भा-भास्करः

षट्कर्त्तृष्वकलङ्कदेवविबुधस्साक्षादयं भूतले ।

सर्व-व्याकरणे विपश्चिदधिपः श्रीपूज्यपादस्त्वयं

त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रमुनिपो वादीभपञ्चाननः ॥ २८ ॥

लिखिता मनोहर परनारीसहोदरनप्य गङ्गण्णन लिखित

( पश्चिममुख )

रुद्राणीशस्य कण्ठं धवलयति हिमज्योतिषोजातमङ्क-  
 पीतं सौवर्णशैलं शिशुदिनपतनं राहुदेहं नितान्तं ।  
 श्रीकान्तावल्लभाङ्गं कमलभववपुर्मेषचन्द्रव्रतीन्द्र-  
 त्रैविद्यस्याखिलाशावलयनिलयसत्कीर्त्तिचन्द्रातपोऽसौ ॥२८॥

मूवत्तारुं गुणदिं

भावजनं कट्टि पेट्ट-वेल्लेदूर् वृषदि ।

भाविपडे मेघचन्द्र-

त्रैविद्यरदेन्तो शान्तरसमं तलेदूर् ॥ ३० ॥

मुनिनाथं दशधर्मधारिदृढषट्त्रिंशद्गुणं दिव्यवा-  
 ण-निधानं निनगिञ्चु चापमलिनीज्यासूत्रमोरोन्देपू—  
 विन बाणङ्गलुमय्दे हीननधिकङ्गाक्षेपमं मालपुदा—  
 अ नयं दर्पक मेघचन्द्र मुनियोल् माण्निन्नदोर्दर्पमं ॥३१॥  
 श्रवणीयं शब्दविद्यापरिणतिमहनीयं महातर्कविद्या—  
 प्रवणत्वं श्लाघनीयं जिननिगदितसंशुद्धसिद्धान्तविद्या—  
 प्रवणप्रागल्भ्यमेन्देन्दुपचितपुलकं कीर्त्तिसल् कूर्त्तु विद्व-  
 न्निवहं त्रैविद्यनामप्रविदितनेसेदं मेघचन्द्रव्रतीन्द्रं ॥ ३२ ॥  
 क्षमेगीगल् जौवनं तीविदुदतुलतपःश्रीगे लावण्यमीगल्  
 समेसन्दिर्दत्तु तन्नि श्रुतवधुगधिकप्रौढियायती गलेन्द-  
 न्दे महाविख्यातियं तालिददनमलचरित्रोत्तमं भव्यचेतो—  
 रमणं त्रैविद्यविद्योदितविशदयशं मेघचन्द्र व्रतीन्द्रं ॥३३॥  
 इहे हंसीवृन्दमीण्टल् बगेदपुदु चकोरीचयं चञ्चुविन्दं  
 कदुकल् सार्दप्पुदीशं जडेयोलिगरिसलेन्दिर्दपसेज्जेगेरल् ।

पदेदप्यं कृष्णनेम्बन्तेसेदु विसलसत्कन्दलीकन्दकान्त  
पुदिदत्तो मेघचन्द्रव्रतितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाशं ॥ ३४ ॥

पूजितविदग्धविबुध-स—

माजं त्रैविद्यमेघचन्द्रव्रतिरा—

राजिसिदं विनमितमुनि—

राजं वृषभगणभगणताराराजं ॥ ३५ ॥

स्तब्धात्मरनतनुशर—

लुब्धरने वोगस्त्रे पोगले जिनशासन-दु—

ग्धान्धिसुधाशुवनखिल-क—

कुद्धवलिमकीर्त्ति मेघचन्द्रव्रतियं ॥ ३६ ॥

तत्सधर्मरु ॥

श्रीबालचन्द्रमुनिराजपवित्रपुत्रः

प्रोद्वमवादिजनमानलतालवित्रः ।

जीयादयं जितमनोजभुजप्रतापः

स्याद्वादसूक्तिशुभगशुभकीर्त्तिदेवः ॥ ३७ ॥

किंवापस्मृतिविस्मृतः किमुफणिग्रस्तः किमुग्रग्रह-

व्यग्रोऽस्मिन्स्ववदश्रुगद्गदवचोम्लानाननं दृश्यते ।

तज्जानेशुभकीर्त्तिदेवविदुषा विद्वेषिभाषाविष-

ज्वालाजाङ्गुलिकेन जिह्वितमतिर्वादीवराकस्त्वयं ॥ ३८ ॥

घनदप्पोन्नद्धबौद्ध-क्षितिधरपवियीबन्दनी बन्दनी बन्—

दनेसन्नैयायिकोद्यत्तिमिरतरणियी बन्दनी बन्दनी बन्-

दनेसन्मोमांसकोद्यत्करि-करिरिपु यी बन्दनी बन्दनी बन्

दने पो पो वादि पोगेन्दुलिवुदु शुभकीर्त्तिद्वकीर्त्तिप्रघोषा ॥ ३६ ॥

वितथोक्तियस्तजंपशु—

पतिसाङ्गि येनिप्प मूवरुं शुभकीर्त्ति—

व्रतिसन्निधियोल् नामो—

चितचरितरेतोडर्दडितरवादिगललवे ॥ ४० ॥

सिङ्गद सरमं केल्द म—

तङ्गजदन्तलुकि बलुकलल्लदे सभेयोल् ।

पोङ्गि शुभकीर्त्ति-मुनिपनो—

लेङ्गल नुडियल्के वादिगल्गेन्तेल्देये ॥ ४१ ॥

पो साल्वुदु वादि वृथा—

यासं विबुधोपहासमनुमनोप—

न्यासं निन्नोतेथे—

वासं संदपुदे वादिवज्जाडुशेनाल् ॥ ४२ ॥

गङ्गण्णन लिखित ॥ सेवणुबल्लरदेव रूवारिरामोजन मग

दासोज कण्डरिसिद ॥

( उत्तरमुख )

त्रैविद्ययोगीश्वरमेघचन्द्रस्याभूत्प्रभाचन्द्र-

मुनिस्सुशिष्यः ।

शुम्भद्रताम्भोनिधिपूर्णचन्द्रो निहूर्तदण्डत्रितयो विशल्यः । ४३ ।

त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रसुतपःपीयूषवारासिजः

सम्पूर्णाक्षयवृत्तनिर्मलतनुःपुण्यद्रुधानन्दनः ।

त्रैलोक्यप्रसरद्यशः शुचिरुचिःयः प्रार्थ्यपोषागमः

सिद्धान्ताम्बुधिर्वर्द्धनो विजयतेऽपूर्वप्रभाचन्द्रमाः ॥४४॥

संसाराम्भोधिमध्योत्तरणकरणयानरत्नत्रयेशः ।

सम्यग्जैनागमार्थान्वितविमलमतिःश्रीप्रभाचन्द्रयोगी ॥४५॥

सकलजनविनूतं च!रुबोधत्रिनेत्रं

सुकरकविनिवासं भारतीनृत्तरङ्गम् ।

प्रकटितनिजकीर्तिं दिव्यकान्तामनोजं

सकलगुणगणेन्द्रं श्राप्रभाचन्द्रदेवं ॥ ४६ ॥

तत्सधर्मम् ॥

गणधरं श्रुतदोलू चा-

रण-रिषयरनमलचरितदोलू योगिजना-

प्रणिगण्येन्नदे मिक्कर—

नेण्येम्बुदे वीरणान्दिसैद्धान्तिकरोलू ॥ ४७ ॥

हरिहर-हिरण्यगर्भर—

नुरवणियिं गेल्लद कामनं दीप्ततपो—

भरदिन्दुरिपिदरने बि—

त्तरिसदराव्वीरणान्दिसैद्धान्तिकरं ॥ ४८ ॥

यन्मूर्त्तिर्जगतां जनस्य नयने कर्पूरपूरायते ।

यत्कीर्तिः ककुभां श्रियः कचभरे मल्लीलतान्तायते ॥

..... ।

जेजीयाद्भुविवीरणान्दिमुनिपो राद्धान्तचक्राधिपः ॥४९॥

वैदग्धश्रीवधूटीपतिरत्नगुणालङ्कृतिर्मघचन्द्र-

त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमहिभृतो भेदने वज्रपातः ।

सैद्धान्तव्यूहचूडामणिरनुपलचिन्तामणिर्भूजनानां  
योऽभूत्सौजन्यरुद्रश्रियमवतिमहो वीरणन्दी मुनीन्द्रः ॥५०॥

श्रीप्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवर गुडि विष्णुवर्द्धन भुज-  
बल वीरगङ्ग विट्टिदेवन हिरियरसि पट्टमहादेवी ॥

शान्तल-देविय सद्गुण-

वन्तेगे सौभाग्यभाग्यवतिगे वचश्री-

कान्तियुमच्युत [ ..... ]

कान्तियुमेण्येयल्लदुलिद सतियदोरेयं ॥ ५१ ॥

शान्तल-देविय तायि ।

दानमननूनं कः

केनार्थी येण्डु कोट्टु जिननं मनदोलू ।

ध्यानिसुतं मुडिपिदलिन

नेनेम्बुदो माचिकब्बे येन्दुन्नतियम् ॥ ५३ ॥

सकवर्ष १०६८ नेय क्रोधनसंवत्सरद् आश्विज-  
सुद्ध-दशमी बृहवार दन्दु धनुलग्नद पूर्वाह्णद् आरुघलिगे-  
यप्पागल् श्रीसूलसङ्घद कोण्डकुन्दान्वयद देशिगगणद पुस्तक-  
गच्छद श्री मेघचन्द्रत्रैविद्यदेवर हिरियशिष्यरप्प श्री प्रभाचन्द्र  
सिद्धान्तदेवरु स्वर्गस्तरादरु ॥

[ इस लेख के प्रथम इकतीस पद्य शिलालेख नं० ४७ (१२७) के प्रथम बत्तीस पदों के समान ही हैं, केवल ४७ वें लेख में पद्य नं० २३ और २४ और इस लेख में पद्य नं० ३० अधिक हैं । कुन्दकुन्दाचार्य से प्रारम्भ कर मेघचन्द्र बत्ती तक की गुरु-परम्परा का वर्णन करने के

पश्चात् लेख में मेघचन्द्र के गुरुभाई बालचन्द्र मुनिराज का उल्लेख है । तत्पश्चात् शुभकीर्ति 'आचार्य' का उल्लेख है जिनके सम्मुख वाद में बौद्ध, मीमांसकादि कोई भी नहीं ठहर सकता था । इसके पश्चात् लेख में मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र और वीरनन्दि का उल्लेख है । प्रभाचन्द्र आगम के अच्छे ज्ञाता और वीरनन्दि भारी सैद्धान्तिक थे । लेख के अन्तिम भाग में विष्णुवर्द्धन-नरेश की पटराज्ञी शान्तलदेवी की धर्मपरायणता का भी उल्लेख है । वे प्रभाचन्द्र की शिष्या थीं । प्रभाचन्द्रदेव का स्वर्गवास शक सं० १०६८ आसोज सुदि १० बृहस्पति-वार को हुआ । यह लेख उन्हीं का स्मारक है । ]

५१ ( १४१ )

उसी स्थान के द्वितीय मण्डप में प्रथम स्तम्भ पर  
( शक सं० १०४१ )

( पूर्वमुख )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

सकल-जन-विनृतं चारु-बोध-त्रिनेत्रं

सुकरकविनिवासं भारतीनृत्यरङ्गं ।

प्रकटितनिजकीर्त्तिर्दिव्यकान्तामनोजं

सकलगुणगणेन्द्रं श्रीप्रभाचन्द्रदेव ॥ २ ॥

अवर गुडुनेन्तप्पनेन्दडे ॥

स्वस्ति समस्तभुवनजनवन्द्यमानभगवद्दहृतसुरमिगन्धि-  
गन्धोदककणव्यक्तमुक्तावलीकृतोत्तंशहंस सुजनमनःकमलिनी-  
राजहंस महाप्रचण्डदण्डनायक । शत्रुभयदायक । प्रतिहित



प्रकारन् । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामराम । साहसभीम । मुनिजन-  
विनेयजनबुधजनमनस्सरोवरराजहंसननूनदानाभिनवश्रेयांस ।  
जिनमतानुप्रेक्षाविचक्षण । कृतधर्म्मरक्षण । दयारसभरितभृङ्गार ।  
जिनवचनचन्द्रिकाचकोरनुमप्य श्रीमनु बलदेवदण्डनायकनेने  
नेगर्द ॥

पलरुं मुन्निन पुण्यदोन्दोदविनि भाग्यके पक्कादोडं  
चलदिं तेजदिनाल्पिनि गुणदिनादौदार्यदिं धैर्यदिं ।  
ललनाचित्तहरोपचारविधियिं गांभीर्यदिं सौर्यदिं  
बलदेवङ्गे समानमप्परोल्लरे मत्तन्यदण्डाधिपक ॥ ३ ॥

बलदेवदण्डनायक—

नलङ्घ्यभुजबलपराक्रमं मनुचरितं ।

जलनिधिवेष्टितधात्रो—

तलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥ ४ ॥

आ महानुभावनद्धाङ्गलद्धिमयेन्तप्पलेन्दडे ॥

सतिरूपमल्लु तोर्पडे

ल्लितियोल् सौभाग्यवतियनुन्नतमतियं ।

पतिहितेयं गुणवतियं

सततंकीर्त्तिपुदु वाचिकब्बेयं भुवनजनं ॥ ५ ॥

अवगो सुपुत्रप्पुट्टिद—

रवनितलं पोगले रामलक्ष्मीधर र-

न्तवरिर्व्वर्गुणगणदिं

रवितेज न्नागदेवनुं सिङ्गणनुं ॥ ६ ॥

( पश्चिम मुख )

अवरोलगे ॥

दोरेयारी भुवनङ्गलोऽलु दिटके केऽलु सम्यक्त्वदोऽलु सत्यदोऽलु  
परमश्रीजितपूजेयोऽलु विनयदोऽलु सौजन्यदोऽलु पेम्पिनेऽलु ।  
परमोऽसाहदे माऽर्पदानदेहेयोऽलु सौचव्रताचारदोऽलु  
निरुतं नोऽर्पडे **नागदेवने** वलं धन्यं पेरद्धन्यरे ॥ ७ ॥

अन्तेनिप **नागदेवन**

कान्ते मनोरमणसकलगुणगणधरणी—

कान्तेगवधिकं नोऽर्पडे

कोन्तिय दोरेयेनिसि नागियकं नेगरदोऽलु ॥ ८ ॥

अन्तवरिर्वर तनयं

सन्ततमखिलोर्वियोलगे जसवेसेविनेगं ।

चिन्तितवस्तुवनीयलु

चिन्तामणिकामधेनुवेनिपं बल्लं ॥ ९ ॥

एन्तेन्तु नोऽर्पडं गुण—

वन्तं कलिसुचिदयापरं सत्यविदं ।

अन्तेनेनुतं बुधर—

श्रान्तं कीर्त्तिपुदु धात्रियोऽलु बल्लणनं ॥ १० ॥

आतननुजाते भुवन—

ख्यातियनेरे तालिद दानगुणदुन्नतिथिं ।

सीतादेविगवधिकं

भूतलदोलगेचियकनेनेमेच्चदरारु ॥ ११ ॥

आजगज्जननि योडवुट्टिदं ॥

भाविसिपञ्चपदङ्गल—

नोवदे परिदिक्कि मोहपासद तोडरं ।

देव-गुरु-सन्निधानद—

ला-विभु बलदेवनमरगतियं पडेदं ॥ १२ ॥

**सकवर्ष १०४१नेय सिद्धार्थि संवत्सरद मार्गशिर-  
शुद्धपाडिव सोमवारदन्दु मोरिङ्गेरेय तीर्थदलु सन्यसनवि-  
धियि मुडिपिद ॥**

आतन जननि नागियक्कु एचियक्कु परोक्षविनयक्के कब्ब-  
प्पुनाडोल् ओम्मालिगेय हललुपट्टसालेय माडिसि तम्म गुरुगल्  
प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर कालं कच्चिर्वधारापुर्व्वकं माडिकोट्टु  
आरेयकरैयुमं आ करेय मूडण देसेयलु खण्डुग बेदले ॥

[इस लेख में किसी बल्ल व बल्लण नामक धर्मवान् पुरुष के संन्यास-  
विधि से शरीर त्याग करने पर उसकी माता और भगिनी द्वारा उसकी  
स्मृति में एक पट्टशाला (वाचनालय) स्थापित करने और उसके चलाव  
के लिए कुछ ज़मीन दान करने का उल्लेख है। बल्लण के वंश का यह  
परिचय दिया गया है कि वह एक बड़े पराक्रमी दण्डनायक बलदेव और  
उनकी पत्नी बाचिकव्वे का पौत्र और धर्मवान् नागदेव और उसकी स्त्री  
नागियक्क का पुत्र था। उसकी भगिनी का नाम एचियक्के था। बल्लण  
ने शक सं० १०४१ मगसिर सुदि १ सोमवार को शरीर त्याग किया।  
इस के पश्चात् उक्त दान दिया गया और यह लेख लिखा गया। लेख  
के द्वितीय पद्य में प्रभाचन्द्रदेव का उल्लेख है।]

१ सिद्धार्थ ।

लेख में यह सम्वत् सिद्धार्थ सम्वत्सर कहा गया है पर मिलान करने से शक सं० १०४१ विकारी और शक सं० १०६१ सिद्धार्थ पाया जाता है । लेख में सम्वत् की भूल है ।

५२ ( १४२ )

उसी मण्डप में द्वितीय स्तम्भ पर

( शक सं० १०४१ )

( पूर्वमुख )

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषसमरावनीमहामहारिसंहारक-  
रणकारणप्रचण्डदण्डनायकमुखदर्पणकर्णेजपकुभृत्कुलिश जिन-  
धर्महर्म्यमाणिक्यकलश मलयजमिलितकास्मीरकालागरुधूपधूम-  
ध्यामलीकृतजिनार्चनागार । निर्विकारमदनमनोहराकार ।  
जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्ग वीरलक्ष्मीभुजङ्गनाहाराभयभैष-  
ज्यशास्त्रदानविनोद जिनधर्मकथाकथनप्रमोदनुमप्य श्रीमतुबल-  
देवदण्डनायकनेनेनेगर्द ॥

स्थिरने बाप्पमराद्रियिन्दवधिकं गम्भीरने बाप्पु सा-

गरदिन्दगलमेन्तु दानिये सुरोर्वीजके मारण्डलम् ।

सुरराजङ्गे येन्दु कीर्त्तिपुदुक्यकोण्डकरि सन्ततं

धरेयेल्लंबलदेवमात्यननिलालोकैकविख्यातनं ॥ २ ॥

बलदेव दण्डनायक —

नलङ्घ्यभुजबलपराक्रमं मनुचरितं ।

जलनिधिवेष्टितधात्री—

तलदोलु समनारो मन्त्रिचूडामणियोलु ॥ ३ ॥

पलरुं मुन्निन पुण्यदेन्दोदविनिभाग्यक्केपक्कादोडं

चलदिं तेजदिनोल्पिनिं गुणदिनादौदार्यदिंधैर्यदिं ।

ललनाचित्तहरोपचारविधियिं गाम्भीर्यदिं सौर्यदिं

बलदेवङ्गं संमानमप्परोलरे मत्तन्यदण्डाधिपरु ॥ ४ ॥

आ बलदेवङ्गं मृग—

शाबेच्छणेयेनिप वाचिकब्बे गवखिलो—

र्वीबन्धु पुट्टिदं गुण—

लोवरनदटलेव सिङ्गिमय्यनुदारं ॥ ५ ॥

जिनधम्माम्बरतिग्मरोचिसुचरित्रं भव्यवंशोत्तमं

सिष्टिनिधानं मन्त्रिचूडामणि बुधविनुतं गोत्रवंशाम्बरार्कं ।

वनिताचित्तप्रियं निर्म्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्प

विनयाम्भोराशि विद्यानिधिगुणनिलयं धात्रियोत्तिङ्गि-

मय्यं ॥ ६ ॥

( पश्चिममुख )

जिनपदभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं

मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूदनानि म—

त्तिन पुरुषर्गो पोलिपुददाहोरेयंम्बिनेगं नेगर्दनी—

मनुजनिधाननेन्दु पोगलगुं धरे पेगर्गडे सिङ्गिमय्यन ॥ ७ ॥

एने नेगल्द सिङ्गिमय्यन

वनिते मनोरथन लद्धिमयेनिपलु रूपिं ।

जनविनुते सिरिय देविय—

ननुनयदिं पोगल्वुदखिल भूतलवेख ॥ ८ ॥

वचन ॥ आ महानुभावनवसानकालदोल ॥

परमश्री जिनपादपङ्कुरुहंमं सद्भक्तिरियं तालिद नि—

ब्भरदिं पञ्चपदङ्गलं नेनेयुतं दुम्मोहसन्दोहमं ।

त्वरितं खण्डिसुतं समाधिविधियं भव्याब्जिनीभास्करं

निरुतं पेर्गडे सिङ्गिमय्यनमरेन्द्रावासमं पोर्दिदं ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाकल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य-चतुस्त्रिंश-  
दतिशयविराजमान-भगवदर्हत्परमेश्वर-परमभट्टारक - मुखकमल-  
विनिर्गतसदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवण - राद्धान्तादिसकल-  
शास्त्रपारावारगपरमतपश्चरणनिरतरुमप्य श्रीमन्मण्डलाचार्य  
प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डि नागियक्क सिरियव्वेयुं सकवर्ष  
१०४१ नेय सिद्धार्थसम्बत्सरद कार्तिक सुद्ध द्वादस सोमवा-  
रदन्दु महापूजेयं माडिनिशिधियं निरिसिदल ॥

[ महाधर्मवान्, कीर्त्तिवान् और बलवान् दण्डनायक बलदेव और  
उसकी धर्मपत्नी बाचिकव्वे का पुत्र सिङ्गिमय्य हुआ जो उदारचरित और  
गुणवान् था । उसकी धर्मपत्नी का नाम सिरिय देवी था । सिङ्गिमय्य  
ने समाधिमरण कर स्वर्गलोक प्राप्त किया । मण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र  
के शिष्य सिरियव्वे और नागियक्क ने सिङ्गिमय्य की स्मृति में शक सं०  
१०४१ कार्तिक सुदि १२ सोमवार को यह निषद्या निर्माण कराई ]

[ नोट—जैसा कि लेख नं० २१ के नोट में कहा जा चुका है शक  
सं० १०४१ सिद्धार्थी नहीं था जैसा कि इस लेख में भी भूल से कहा  
गया है ]

५३ ( १४३ )

## उसी मंडप में तृतीय स्तम्भ पर—

( शक सं० १०५० )

( पूर्वमुख )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाब्धनम् ।

जीयात्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥ १ ॥

श्रीमद् यादववंशमण्डनमणिः क्षोणीशरक्षामणि-

लक्ष्मीहारमणिः नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणिः ।

जीयान्नोतिपथेक्षदर्पणमणिः लोकैकचूडामणि

श्रीविष्णुर्विनयाच्चिर्चतो गुणमणिः सम्यक्तचूडामणिः ॥ २ ॥

एरेदमनुजङ्गे सुर-भू-

मिरुहं शरणेन्दवङ्गे कुलिशमगारं ।

परवन्तिगेनिलतनयं ।

धुरदोलु पोणर्दङ्गे मृत्तु विनेयादित्यं ॥ ३ ॥

एने तानुं केरे देगुलङ्गलेनितानुं जैनगेहङ्गल-

न्तनेतुं नार्कलनूर्गलं प्रजेगलं सन्तोषदिं माडिदं ।

विनयादित्यनृपालपोयसलने सन्दिर्दा बलिन्द्रङ्गे मे-

लेने पेम्पं पोगल्वन्ननावनो महागम्भीरनं धीरनं ॥ ४ ॥

इट्टिगेन्दगल्द कुलिगल्केरेयादवु कल्लुगे गोण्ड पेर्-

व्वेट्टु धरातलके सरियादवु सुण्णद भण्डि बन्द पे-

वर्द्धये पञ्चमादुवेने माडिसिदं जिनराजगेहमं  
नेट्टने पोय्सलेसनेने बण्णि परार्म्मले राजराजनं ॥ ५ ॥

कन्दं ॥ आ पोय्सल भूपङ्गं म—

हीपाल कुमारनिकरचूडारत्नं ।

श्रीपति-निज-भुज-विजय-म—

हीपति जनिधिसिदनदटनेरेयङ्गनृपं ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ विनयादित्यनृपालनात्मजनिलालोकैककल्पदुमं

मनुमार्गं जगदेकवीरनेरेयङ्गोर्व्वीश्वरं मिक्कना—

तनपुं रिपुभूमिपालकमदस्सम्मर्दनं विष्णुव—

र्द्धन भूपं नेगल्वं धरावलेयदोल् आराजकण्ठीरवं ॥ ७ ॥

कन्दं ॥ आ नेगल्देरेयङ्ग नृपा —

लन सूनुवृहद्वैरिमर्दनं सकलधरि—

त्रो नाथनर्थि जनता—

भानुसुतं विष्णुभूपनुदयं गेय्दं ॥ ८ ॥

अरिनरपसिरास्फालन—

करनुद्धतवैरिमण्डलेश्वरमदसं—

हरणं निजान्वयैका—

भरणं श्री विट्ठि देवनी वरदेव ॥ ९ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं ।

द्वारावतीपुरवराधीश्वर । यादवकुलाम्बरद्युमणि । सम्यक्तचूडा-

मणि । मलपरोल्गण्ड । चलकेवलु गण्डन् । आलिंमुन्निरिव ।

सौय्यमं मेरे व । तलकाडुगोण्ड । गण्डप्रचण्ड । पट्टिपेरुमाल-



निजराज्याभ्युदयैकरक्षणदत्तक । अविनयनरपालकजनशिक्षक ।  
 चक्रगोष्ठ वनदावानलन् । अहितमण्डलिककालानल । तोण्ड-  
 मण्डलिकमण्डलप्रचण्डदौर्वानल । प्रवलरिपुवलसंहरणकारण ।  
 विद्विष्टमण्डलिकमदनिवारणकरण । नेलम्बवाडिगोण्ड ।  
 प्रतिपत्तनरपाललक्ष्मियनिकुलिगोण्ड । तप्पे तप्पुव । जय  
 श्रीकान्तेयनप्पुव । कूरेकूर्प सौय्यमं तोर्प । वीराङ्गना-  
 लिङ्गितदक्षिणदोर्ण्ड । नुडिदन्ते गण्ड । अदियमनहृदय-  
 शूल । वीराङ्गनालिङ्गित लोल । उद्धतारातिकञ्चवनकुञ्जर ।  
 सरणागतवज्रपञ्जर । सहजकीर्त्तिध्वज । सङ्ग्रामविजयध्वज ।  
 चेङ्गिरेय मनोभङ्ग । वीरप्रसङ्ग । नरसिङ्गवर्म्मनिर्मूलनं । कल-  
 पालकालानलं । हानुङ्गलु गोण्ड । चतुर्म्मुख गण्ड । चतुरचतु-  
 र्म्मुखन् । आहवषण्मुख । सरस्वतीकर्णवतंसन् । उन्नतविष्णुवंस ।  
 रिपुहृदयसेल्ल । भीतरंकोल्ल । दानविनोद । चम्पकामोद ।  
 चतुस्समयसमुद्धरण । गण्डराभरण । विवेकनारायण । वीरपारा-  
 यण । साहित्यविद्याधर । समरधुरन्धर । पोयसलान्वयभानु ।  
 कविजनकामधेनु । कलियुगपार्थ । दुष्टर्गोधूर्त । सङ्ग्रामराम ।  
 साहसभीम । हयवत्सराज । कान्तामनोज । मत्तगजभगदत्तन् ।  
 अभिनवचारुदत्त । नीलगिरिसमुद्धरण । गण्डराभरण । कोङ्ग-  
 रमारि । रिपुकुलतलप्रहारि । तेरेयुरनलेव । कोयतूरतुलिव ।  
 हेञ्जेरुदिसापट्ट । सङ्ग्रामजत्तलट्ट । पाण्ड्यनंबेङ्कोण्ड । उच्चङ्गि  
 गोण्ड । एकाङ्गवीर । सङ्ग्रामधीर । पोम्बुच्चनिर्द्धाटण । साविमले  
 निर्लोण्ड । वैरिकालानलन् । अहितदावानल । शत्रुनरपाल-

दिशापट्ट मित्रनरपालललाटपट्ट । घट्टवनलिव । तुलुवर  
सेलेव । गोयिन्दवाडिभयङ्करन् । अहितबलसङ्कर । रोदवतु-  
लिव । सितगरं पिडिव । रायरायपुरसूरेकार । वैरिभङ्गार ।  
वीरनारायण । सौर्यपारायण । श्रीमत्कुशेवदेवपादाराधक ।  
रिपुमण्डलिकसाधकाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतं गिरिदुर्ग-  
वनदुर्गजलदुर्गाद्यनेकदुर्गङ्गलनश्रमदि कोण्ड चण्डप्रतापदि  
गङ्गावाडितोम्भत्तरु-सासिरमुमं लोकिगुण्डिवर मुण्डिगे साध्य-  
म्माडि । मत्तं ॥

वृत्त—एलेयोलेदुष्टरनुद्धतारिगल नाटन्दोत्ति बेङ्कोण्डुदो—

व्वलदिं देशमनावगं तनगे साध्यं माडिरलु गङ्गम—

ण्डलमेन्दोलेगे तेत्तु मित्तु बेसनं पूण्डिर्पिनं विष्णु पो—

य्सलनिर्द सुखदिन्दे राज्यदोदविन्दं सन्ततोत्साहदिं ॥१०॥

एत्तिद नेत्तलत्तलिराद-नृपालकरलिक बल्लिक क—

ण्डित्तु समस्तवस्तुगलनालुतनमंसलेपुण्डु सन्ततं ।

सुत्तलुमोलगिप्परेने मुन्निनवर्गमनेकरादव—

गत्तलगं पोगर्त्तेगेने बण्णिपनावनो विष्णुभूपनं ॥ ११॥

अन्तु त्रिभुवनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-  
वर्द्धन पोय्सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमा-  
चन्द्रार्कतारं वरं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि पिरियरसि पट्ट-  
महादेवि सान्तलदेवी ॥

( दक्षिणमुख )

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणभ्युदयसहस्रफलभोगभागिनि

द्वितीयलक्ष्मीलक्षणसमानेयुं । सकलगुणगणानूनेयुं । अभिनव  
 रुगुमिणीदेवियुं । पतिहितसत्यभावेयुं । विवेकैकबृहस्पतियुं ।  
 प्रत्युत्पन्नवाचस्पतियुं । मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं । चतुस्समय-  
 समुद्धरणेयुं । व्रतगुणशीलचारित्रान्तःकरुणेयुं । लोकैक  
 विख्यातेयुं । पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं । सकलवन्दिजन-  
 चिन्तामणियुं । सम्यक्तचूडामणियुं । उद्भूतसवतिगन्ध-  
 वारणेयुं । पुण्योपाज्जनकरणकारणेयुं । मनोजराजविजेयपताकेयुं ।  
 निजकलाभ्युदयदीपिकेयुं । गीतवाद्यसूत्रधारेयुं । जिनसमयसमु-  
 दितप्राकारेयुं । जिनधर्मकथाकथनप्रमोदेयुं । आहाराभयभैषज्य-  
 शास्त्रदानविनोदेयुं । जिनधर्मनिर्मलेयुं । भव्यजनवत्सलेयुं ।  
 जिनगन्धोदकपवित्रीकृतोत्तमाङ्गयेमुमप्य ॥

कंद ॥ आ नेगर्ह विष्णुनृपन म—

नो-नयन-प्रिये चलालनीलालकि च—

न्द्रानने कामन रतियलु

तानेणे तोणे सरिसमाने शान्तलदेवी ॥ १२ ॥

वृत्त । धुरदोलु विष्णुनृपालकङ्गे विजयश्रीवत्तदोलु सन्ततं  
 परमानन्ददिनोतु निल्व विपुलश्रोतेजदुद्धानियं ।  
 वरदिग्भित्तियनेयुदिसल्लनेरेव कीर्तिश्रीयेनुतिर्पुदी  
 धरेयोतु शान्तलदेवियं नेरेये वणिण्णप्पण्णनेवणिण्णं ॥ १३ ॥

कलिकालं विष्णुवत्त—

स्थलदोलुकलिकाललक्ष्मि नेल्लसिद्धने शा—

न्तलदेविय सौभाग्यम—

नेल गलवणिण सुवेनेम्बनेवणिणसुव ॥ १४ ॥

शान्तलदेविगे सद्रुण—

मन्तेगे सौभाग्यभाग्यवतिगे वचःश्री—

कान्तेयुमगजेयुमच्युत—

कान्तेयुमेण्यल्लदुलिद सतियर्दोरेये ॥ १५ ॥

अकर ॥ गुरुगल प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवरे पत्ततायि गुणनिधि-  
माचिकब्बे

पिरियपेर्गडे मारसिङ्गय्यं तन्दे मावतुं पेर्गडे सिङ्गिमय्यं ।

अरसं विष्णुवर्द्धननृपं वल्लभं जिननाथंतनगेन्दु मिष्टदेयं

अरसि शान्तलदेविय महिमेयंबणिणसल्लुवकुमेभूतलदोलु ॥ १६ ॥

सकवर्षं १०५० मूरेनेय विरोधिकृत्सम्बत्सरद चैत्र शुद्धपञ्चमी

सोमवारदन्दु सिवगङ्गेय तीर्थदलु मुडिपि स्वर्गतेयादलु ॥

वृत्त ॥ ई कलिकालदोलु मनुबृहस्पतिवन्दि जनश्रयं जग —

व्यापितकामधेनुवभिमानी महाप्रभुपण्डिताश्रयं ।

लोकजनस्तुतं गुणगणाभरणं जगदेकदानिय—

व्याकुलमन्त्रियेन्दुपोगत्तुं धरे पेर्गडे मारसिङ्गन ॥ १७ ॥

दोरेयेपेर्गडे मारसिङ्ग विभुविङ्गी कालदोलु [.....]

पुरुषार्थङ्गलोलत्युदारतेयोलं धर्म्मनुरागङ्गलोलु ।

हरपादाम्बुजभक्तियोलु नियमदोलु शीलङ्गलोलु तानेनलु

सुरलोकके मनोमुदंबरसु पोदं भूतलं कीर्त्तिसलु ॥ १८ ॥

कन्द ॥ अनुपम-शान्तल देवियु—

मनुनयदिं तन्दे मारसिङ्गय्यनुमिं-

बिने जननि-माचिकब्बेयु—

मिनिवरु मोडनोडने मुडिपि स्वर्गतरादरु ॥ १८ ॥

लेखक बोकिमय्य ।

( पश्चिममुख )

अरसि सुरगतियनेयदिद—

लिरलागेनगेन्दु बन्दु बेलुगोलदलु दु—

द्धर-सन्यासनदि [ न्दं ]

परिणते तायि माचिकब्बे तानुं तोरेदलु ॥ २० ॥

पृत्त ॥ अरेमगुल्दिदकण्मलग्गलोदुव पञ्चपदं जिनेन्द्रं

स्मरियिसुवोजे बन्धुजनमं बिडिपुन्नति सन्यसक्केव

न्दिरलो सेदोन्दुतिङ्गलुपवासदोलिम्बिनेमाचिकब्बे तां

सुरंगतिगेय्दिदलु सकलभव्यरसत्रिधियोलु समाधियि ॥ २१ ॥

कन्द ॥ आ मारसिङ्ग मय्यन

कामिनिजिनचरणभक्ते गुणसंयुते उ-

दाम-पतिव्रते एन्दी—

भूमिजनं पोगले माचिकब्बेये नेगल्दलु ॥ २२ ॥

जिनपदभक्ते बन्धुजनपूजितेयाश्रितकामधेनुका—

मन सतिगं महासतिगुणाग्रणि दानविनोदे सन्ततं ।

मुनिजनपादपङ्कुरुहभक्ते जनस्तुते मारसिङ्गम—

य्यन सति माचिकब्बे येने कीर्त्तिमुगुं धरे मेच्चिनिच्चलुं ॥ २३ ॥

जिननाथं तनगाप्तनागे बलदेवं तन्दे पेतब्बे स—

द्वनिताग्रेसरे बाचिकब्बे येने तम्मं सिङ्गणं सन्दमान्—

तनदिन्दग्गद माचिकब्बे सुर-लोककोदलेन्दुमे—

दिनियेल्लं पोगलुत्तमिप्पुं देने वण्णिप्पण्णनेवण्णिपं ॥ २४ ॥

कन्द ॥ पेण्डिस्संन्यासनं गोण्डवरोल्लगिनितंवल्लरारेम्बिनं कै-

कोण्डागलुघोरवीरव्रतपरिणतेयं मेच्चि सन्तोषदिन्दं ।

पाण्डित्यं चित्तदोलु तल्लितरे जिनचरणाम्भोजमं भाविसुत्तं

कोण्डाडलुधात्रितन्नं सुरगतिवडेदलुलीलेयिं माचिकब्बे ॥ २५ ॥

दानमननूनमं कः

केनार्थी येन्दु कोट्टु जिननं मनदोलु ।

ध्यानिसुत्तं मुडिपिदलि—

त्रेनेम्बुदो माचिकब्बेयोन्दुन्नतियं ॥ २६ ॥

इन्तु तम्म गुरुगलु प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवरं वद्धमानदेवरं

रविचन्द्रदेवरं समस्तभव्यजनङ्गल सन्निधियोलु सन्यसनमं

कैकोण्डवर पेल्व समाधियं केलुत्त मुडिपिदलु ॥

पण्डितमरणदिनी भू—

मण्डलदोलु माचिकब्बेयन्तेवोलाक्के—

कोण्डिन्तु नेगल्दलरिगल—

खण्डितमं घोर-वीर-सन्यासनम ॥ २७ ॥

अवर वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥

कन्द ॥ जिनधम्मनिर्मलं भ—

व्य-निधानं गुणगणाश्रयं मनुचरितं ।

मुनिचरण-कमल-भृङ्ग

जन-विनुतं नागवर्म्मदण्डाधीशं ॥ २८ ॥

वृत्त ॥ अनुपम-नागवर्म्मनकुलाङ्गने पेम्पिन चन्द्रिकब्जे स—

ज्जननुते मानिदानिगुणमिक्कपतिव्रते सीलदिन्दे मे—

दिनिसुतेगं मिगिलुपोगल्लानरिये गुणदङ्ककार्त्तियं

जिनपदभक्तेयं भुवनसंस्तुतेयं जगदेकदानियं ॥ २९ ॥

अवर्गे सुपुत्रं बुधजन —

निवहक्कार्त्तीव कामधेनु वेनुत्तं ।

भुवनजनं पोगल्लु मि—

कवनुदयं गेय्दनुत्तमं बलदेव ॥ ३० ॥

वृत्त ॥ सकलकलाश्रयं गुणगणाभरणं प्रभु पण्डिताश्रयं

सुकविजनस्तुतं जिनपदाब्जभृङ्गननूनदानिलौ—

किक्कपरमार्त्थमेम्बेरडुमन्नेरे बल्लनेनुत्ते दण्डना—

यक्क बलदेवनं पोगल्लुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ॥ ३१ ॥

मुनिनिवहके भव्यनिकरक्के जिनेश्वर-पूजेगलो मि—

कनुपमदानधर्म्मदोदविङ्गे निरन्तरमोन्दे मार्गादिं ।

मनेयोलनाकुलं मदुवेयन्दद पाङ्गिनेलुण्णुदेन्दडिं

मनुजनिधाननं पोगल्लुवे वेगल्लवं बलदेवमार्त्त्यन ॥ ३२ ॥

स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदिन्दे मिगिले गम्भीरने बाप्पु सा-

गरदिन्दगल मेन्तु दानिये सुरोव्वीजक्केमेलु भोगिये ।

सुरराजङ्गेणे येन्दु कीर्त्तिपुटु कय् कोण्डल्करिं सन्ततं

धरेयोल् श्रीबलदेवमात्त्यनलिलालोकैकविख्यातन ॥ ३३ ॥

कन्द ॥ बलदेव-दण्डनायक—

नलङ्घ्य-भुजबल-पराक्रमं मनुचरितं ।

जलनिधिवेष्टितधात्री—

तलदोलु समनारो मन्त्रचूडामणियोलु ॥३४॥

श्रीमत् चारुकीर्तिदेवर गुडु लेखकबोकिमय्य वरद  
विरुदरु वारि-मुखतिलक गङ्गाचारिय तम्म कांवाचारि कण्डरिसिद॥  
( उत्तर मुख )

स्वस्त्यनवरतप्रबलरिपुबलविषमसमरावनिमहामहारिसंहार-  
करणकारण । प्रचण्डदण्डनायकमुखदर्पण । कथकमागध-  
पुण्यपाठककविगमकिवादिवाग्मिजनतादारिद्रसन्तर्पण । जिन-  
समयमहागगनशोभाकरदिवाकर । सकलमुनिजननिरन्तरदान-  
गुणाश्रयश्रेयांस । सरस्वतीकर्णावतंस । गोत्रपवित्र । पराङ्ग-  
नापुत्र । बन्धुजनमनोरञ्जन । दुरितप्रभञ्जन । क्रोधलोभानृत-  
भयमानमदविदूर । गुत्तचारुदत्तजीमूतवाहनसमानपरोपका-  
रोदार । पापविदूर । जिनधर्मनिर्मल । भव्यजनवत्सल ।  
जिनगन्धोदकपवित्रोक्तोत्तमाङ्गन् । अनुपमगुणगणोत्तुङ्ग ।  
मुनिचरणसरसिरुहभृङ्ग । पण्डितमण्डलीपुण्डरीकवनप्रसङ्ग ।  
जिनधर्मकथाकथनप्रमोदनं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदानविनो-  
दनुमप्य श्रीमत् बलदेव दण्डनायकनेने नेगल्द ॥

आ बलदेवङ्गं मृग—

शावेक्षणे यनिप बाचिकब्बेगव खिलो—

व्वी-बन्धु पुट्टिदं गुणि—



लोबरनदटलेव सिङ्गिमय्यनुदारं ॥ ३५ ॥

वृत्त ॥ जिनपतिभक्तनिष्टजनवत्सलनाश्रितकल्पभूरुहं  
मुनिचरणाम्बुजातयुगभृङ्गनुदारननूदनानि म—  
त्तिन पुरुषर्गे पोलिसुवडाहोरेयेम्बिनेगं नेगल्दनी-  
मनुज निधाननेन्दु पोगल्लुं धरे पेग्गडे सिङ्गिमय्यन ॥ ३६ ॥  
जिनधर्म्माम्बरतिग्मरोचि सुचरित्रं भव्यवंशोत्तमं सि—  
ष्टनिधानं मन्त्रिचिन्तामणि बुधविनुतं गोत्रवंशाम्बरार्क ।  
वनिताचित्तप्रियं निर्म्मलननुपमनत्युत्तमं कूरे कूर्प  
विनयाम्भोराशि विद्यानिधि गुणनिलयं धात्रियोत्सिङ्गिमय्यं ॥  
॥ ३७ ॥

कन्द ॥ श्रीयादेवि गुणाग्रणि—

यी युगदोलु दानधर्म्मचिन्तामणि भू—

देविय कोन्ती देविय

देरेयन्न सिङ्गिमय्यन वधुव ॥ ३८ ॥

स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयसतसहस्रफलभोगभागिनि  
द्वितीयलक्ष्मीसमानेयुं । सकलकलागमानूनेयुं विवेकैकवृहस्पतियुं  
मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं सम्यक्त  
चूडामणियुं उद्बुत्तसवतिगन्धवारण्येयुं आहाराभयभैषज्यशास्त्र  
दानविनोदेयुं अप्प श्रीमद्विष्णुवर्द्धन-पोयसलदेवर पिरियरसिपट्ट-  
महादेवि शान्तलदेवियश्रीबेल्गोलतीर्थदोलू सवतिगन्धवारण  
जिनालयमं माडिसियिदक्केदेवतापूजेगं रिषिसमुदायकाहारदानकं  
जीर्णोद्धारकं कल्कणिनाड मोट्टेनविलेयुमं गङ्गसमुद्रद नडुबयल-

लयवत्तुकोलगर्हेय तोण्टमुमं नाल्वत्तुगद्याणपोत्रनिकि कट्टिसि  
चारुगिङ्गे विलसनकट्टमुमं श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोयसलदेवरं बेडि-  
कोण्डु सकवर्ष सायिरद नाल्वत्तयदेनेय शोभकृत्सम्बत्सरद  
चैत्रशुद्धपडिववृहस्पतिवारदन्दु तम्म गुरुगलु श्रीमूलसङ्घद  
देशियगणद पोस्तकगच्छद श्रीमन्मेघचन्द्रत्रैविद्यदेवरशिष्यरप्प  
प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गे पादप्रक्षालनं माडि सर्व्वबाधापरिहार-  
वागि विट्टदत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेय दे काव पुरुषर्गायुं महाश्रीयुम—  
केयिदं कायदे कायव पापिगे कुरुत्तेत्रोत्तियेालु बाणरा-  
सियोलेक्कोटिमुनीन्द्रं कविल्लेयं वेदाह्यरं कोन्दुदे-  
न्दयशं सागुमिदेन्दु सारिदपुवी शैलात्तरं सन्ततं ॥३६॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।

षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥४०॥

[ यह लेख तीन भागों में विभक्त है । आदि से उन्नीसवें पद्य तक इसमें द्वारावती के यादव वंशीय पोयसल नरेश विनयादित्य व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी एरेयङ्ग व उनके पुत्र और उत्तराधिकारी विष्णु-वर्द्धन का वर्णन है । विष्णुवर्द्धन बड़ा प्रतापी नरेश हुआ । इसने अनेक माण्डलिक राजाओं को जीतकर अपना राज्य-विस्तार बढ़ाया । इसकी पटरानी शान्तलदेवी जैनधर्मावलम्बिनी, धर्मपरायणा और प्रभा-चन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या थी । इसने शक सं० १०५० चैत्र सुदि ५ सोमवार को शिवगङ्गे नामक स्थान पर शरीर त्याग किया । शान्तलदेवी के पिता का नाम मारसिङ्गय्य और माता का नाम माचिकब्बे था । इन्होंने शान्तलदेवी के पश्चात् शरीरत्याग किया ।

लेख के दूसरे भाग में, जो पृष्ठ २० से ३४ तक जाता है, शान्तलदेवी की माता माचिकब्बे का बेल्गोल में आकर एक मास के अनशन व्रत के पश्चात् संन्यास विधि से देहत्याग करने का वर्णन है और पश्चात् उसके कुल का वर्णन है। दण्डाधीश नागवर्म और उनकी भार्या चन्दिकब्बे के पुत्र प्रतापी बलदेव दण्डनायक और उनकी भार्या वाचिकब्बे से ही माचिकब्बे की उत्पत्ति हुई थी। माचिकब्बे ने अपने गुरु प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव, वर्धमानदेव और रविचन्द्रदेव की साक्षी से संन्यास ग्रहण किया था।

लेख के अन्तिम भाग में बलदेव दण्डनायक और उनके पुत्र सिद्धिमय्य की प्रशस्ति के पश्चात् शान्तलदेवी द्वारा सवति गन्धवारण नामक जिन मन्दिर निर्माण कराये जाने और उसकी आजीविका आदि के लिये विष्णुवर्द्धन नरेश की अनुमति से कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है। यह दान मूलसंघ, देशिय गण, पुस्तक गच्छ के मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव के शिष्य प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को दिया गया था।]

[ नोट—लेख में शक सं० १०५० विरोधिकृत् कहा गया है। पर ज्योतिष गणना के अनुसार शक सं० १०५० कीलक व सं० १०५३ विरोधिकृत् सिद्ध होता है। आगे का लेख (५४) शक १०५० कीलक संवत्सर का ही है। दान शोभकृत् (शुभकृत्) संवत् में दिया गया था जो विरोधिकृत् से आठ वर्ष पूर्व (शक सं० १०४४) में पड़ता है। ]

---

५४ ( ६७ )

पार्श्वनाथ वस्ति में एक स्तम्भ पर

( शक सं० ११०५० )

( उत्तरमुख )

श्रीमन्नाथकुलेन्दुरिन्द्र-परिषद्वन्द्यश्रुत-श्री-सुधा—  
धारा-धौत-जगत्तमोऽपह-महः-पिण्ड-प्रकाण्डं महत् ।  
यस्मान्निर्मल-धर्म-वार्द्धि-विपुलश्रीर्वर्द्धमाना सतां  
भर्तुर्भव्य-चकोर-चक्रमवतु श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥१॥

जीयादर्थयुतेन्द्रभूतिविदिताभिख्यो गणी गौतम—  
स्वामी सप्तमहर्द्धिभिस्त्रिजगतीमापादयन्पादयोः ।  
यद्वोधाम्बुधिमेल्य वीर-हिमवत्कुत्कीलकण्ठाद्बुधा—  
म्भोदात्ता भुवनं पुनाति वचन-स्वच्छन्द-मन्दाकिनी ॥२॥  
तीर्थेश-दर्शनभवन्नय-दृक्सहस्र-बिम्ब-बोध-वपुषश्शु-  
तकेवलीन्द्राः ।

निर्भिन्दतां विबुध-वृन्द-शिरोभिवन्द्यास्फूर्ज्जद्वचः-कुलिशतः  
कुमताद्रिमुद्राः ॥३॥

वर्ण्यः कथन्तु महिमा भण भद्रबाहो-  
स्मोहोरु-मल्ल-मद-मर्दन-वृत्तबाहोः ।  
यच्छिष्यतामसुकृतेन स चन्द्रगुप्त-  
शशुश्रूष्यतेस्म सुचिरं वन-देवताभिः ॥ ४ ॥

वन्द्योविभुर्भुवि न कैरिह कौण्डकुन्दः

कुन्द-प्रभा-प्रणयि-कीर्त्ति-विभूषिताशः ।

यश्चारु-चारण-कराम्बुजचञ्चरीक-

श्चक्रे श्रुतस्य भरते प्रयतः प्रतिष्ठाम् ॥ ५ ॥

वन्द्योभस्मक-भस्म-सात्कृति-पटुः पद्मावती-देवता-

दत्तोदात्त-पदस्व-मन्त्र-वचन-व्याहूत-चन्द्रप्रभः ।

आचार्य्यस्स समन्तभद्रगणभृद्येनेह काले कलौ

जैनं वर्त्म समन्तभद्रमभवद्भद्रं समन्तान्मुहुः ॥ ६ ॥

चूर्णि ॥ यस्यैवंविधा वादारम्भसंरम्भविजृम्भिताभिव्यक्तय-  
स्सूक्तयः ॥

वृत्त ॥ पूर्व पाटलिपुत्र-मध्य-नगरे भेरी मया ताडिता

पश्चान्मालव-सिन्धु-ठक-विषये काञ्चीपुरे वैदिशे ।

प्राप्तोऽहं करहाटकं बहु-भटं विद्योत्कटं सङ्कटं

वादात्थीं विचराम्यहन्नरपते शाहूल-विक्रीडितं ॥ ७ ॥

अवटु-तटमटतिभ्रटिति स्फुट-पटु-वाचाटधूर्जटेरपिजिह्वा ।

वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तव सदसि भूप कास्था-

न्येषां ॥ ८ ॥

योऽसौ घाति-मल-द्विषद्वल-शिला-स्तम्भावली-खण्डन —

ध्यानासिः पटुरर्हतो भगवतस्सोऽस्य प्रसादीकृतः ।

छात्रस्यापि स सिंहनन्दि-मुनिना नोचेत्कथं वा शिला-

स्तम्भोराज्य-रमागमाध्व-परिघस्तेनासिखण्डो घनः ॥ ९ ॥

**वक्रग्रीव-महामुने-र्दश-शत-प्रोवोऽप्यहीन्द्रो यथा—**  
 जातं स्तोतुमलं वचोबलमसौ किं भग्न-वाग्मि-व्रजं ।  
 योऽसौ शासन-देवता-बहुमतो ह्यो-वक्त्र-वादि-ग्रह—  
 प्रोवोऽस्मिन्नथ-शब्द-वाच्यमवदद् मासान्समासेन षट् ॥१०॥

नवस्तोत्रं तत्र प्रसरति कवीन्द्राः कथमपि  
 प्रणामं वज्रादौ रचयत परन्नन्दिनि मुनौ ।

नवस्तोत्रं येन व्यरचि सकलार्हत्प्रवचन-  
 प्रपञ्चान्तर्भाव-प्रवण-वर-सन्दर्भ सुभगं ॥ ११ ॥

महिमा स पात्रकेसरिगुरोः परं भवति यस्य भक्त्यासीत्  
 पद्मावती सहाया त्रिलक्षण-कदर्थनं कर्तुं ॥ १२ ॥

**सुमति-देवममुं** स्तुतयेन वस्सुमति-सप्तकमाप्ततयाकृतं ।  
 परिहृतापथ-तत्त्व-पथार्थिनांसुमति-कोटि-विवर्त्तिभवावर्त्ति-  
 हत् ॥ १३ ॥

उद्देय सम्यग्दिशि दक्षिणस्यां **कुमारसेना** मुनिरस्तमापत् ।  
 तत्रैव चित्रं जगदेक-भानोस्तिष्ठत्यसौ तस्य तथा प्रकाशः ॥१४॥

धर्मार्थकामपरिनिवृत्तिचारुचिन्तश्चिन्तामणिःप्रतिनिकेतम-  
 कारियेन ।

स स्तूयते सरससौख्यभुजा-सुजातश्चिन्तामणिर्मुनिवृषा  
 न कथं जनेन ॥१५॥

चूडामणिः कवीनां चूडामणि-नाम-सेव्य-काव्य-कविः ।  
**श्रीवर्द्धदेव** एव हि कृतपुण्यः कीर्त्तिमाहर्त्तुं ॥१६॥

चूर्णि ॥ य एवमुपश्लोकितो दण्डिना ॥

जहोः कन्यां जटाग्रेण बभार परमेश्वरः ।

श्रीबद्धदेव सन्धत्से जिह्वाग्रेण सरस्वतीं ॥१७॥

पुष्पास्त्रस्य जयो गणस्य चरणम्भूच्छिखा-घटनं

पद्भ्यामस्तु महेश्वरस्तदपि प्रापुं तुलामीश्वरः ।

यस्याखण्ड-कलावतोऽष्ट-विलसद्विष्णु-मौलि-स्खलत्—

कीर्त्तिं स्वस्सरितो महेश्वर इह स्तुत्यस्स कैस्यान्मुनिः

॥ १८ ॥

यस्सप्तति-महा-वादान् जिगायान्यानथामितान् ।

ब्रह्मरक्षोऽर्चितस्सोऽर्च्यो महेश्वर-मुनीश्वरः ॥ १९ ॥

तारा येन विनिर्जिता घट-कुटी-गूढावतारा समं

बौद्धैर्यो धृत-पीठ-पीडित-कुट्टदेवात्त-सेवाञ्जलिः ।

प्रायश्चित्तमिवाङ्घ्रि-वारिज-रज-स्नानं च यस्याचरत्

दोषाणां सुगतस्स कस्य विषयो देवाकलङ्कःकृती ॥२०॥

चूर्णि ॥ यस्येदमात्मनोऽनन्य-सामान्य-निरवद्य-विद्या-विभवेप-  
वर्णनमाकर्ण्यते ॥

राजन्साहसतुङ्ग सन्ति बहवः श्वेतातपत्रा नृपाः

किन्तुत्वत्सदृशा रणे विजयिनस्त्यागोन्नता दुर्लभाः ।

त्वद्वत्सन्ति बुधा न सन्ति कवयो वादीश्वरा वाग्मिनो

नाना-शास्त्र-विचारचातुरधियः काले कलौ मद्भिधाः ॥२१॥

नमो मल्लिषेण-मलधारि-देवाय ॥

( पूर्वमुख )

राजन्सव्वारि-दर्प-प्रविदलन-पदुरत्वं यथात्र प्रसिद्ध—  
स्तद्वत्ख्यातोऽहमस्यां भुवि निखिल-मदोत्पाटनः पण्डितानां ।  
नोचेदेषोऽहमेते तव सदसि सदा सन्ति सन्तो महान्तो  
वक्तुं यस्यास्ति शक्तिः स वदतु विदिताशेष-शास्त्रो यदि स्यात् ॥

॥ २२ ॥

नाहङ्कार-वशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं  
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्य-बुद्ध्या मया ।  
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदग्धात्मनो  
बौद्धौघान्सकलान्विजित्य सुगतः पादेन विस्फोटितः ॥ २३ ॥

श्रीपुष्पसेन-मुनिरेव पदम्महिम्नो  
देवस्स यस्य समभूत्स भवान्सधर्म्मा ।

श्रीविभ्रमस्य भवनन्ननु पद्ममेव

पुष्पेषुमित्रमिह यस्य सहस्रधामा ॥ २४ ॥

विमलचन्द्र-मुनीन्द्र-गुरोर्गुरु प्रशमिताखिल वादिमदं पदं ।  
यदि यथावदवैष्यत पण्डितैर्ननुतदान्ववदिष्यतवाग्विभोः

॥ २५ ॥

चूर्णि ॥ तथाहि । यस्यायमापादित-परवादि-हृदय-शोकः पत्रा-  
लम्बन-श्लोकः ॥

पत्रं शत्रु-भयङ्करोरु-भवन-द्वारे सदा सञ्चरन्—

नाना-राज-करीन्द्र-वृन्द-तुरग-त्राताकुले स्थापितम् ।

शैवान्पाशुपतांस्तथागतसुतान्कापालिकान्कापिला—



नुद्दिर्योद्धत-चेतसा विमलचन्द्राशाम्बरेणादरात् ॥२६॥

दुरित-ग्रह-निग्रहाद्भयं यदि भो भूरि-नरेन्द्र-वन्दितम् ।

ननु तेन हि भव्यदेहिना भजतश्श्रीमुनिमिन्द्रनन्दिनम्

॥ २७ ॥

घट-वाद्-घटा-कोटि-कोविदः कोविदां प्रवाक् ।

परवादिमल्ल-देवो देव एव न संशयः ॥२८॥

चूणिर्ण ॥ येनेयमात्म-नामधेय-निरुक्तिरुक्तानाम पृष्टवन्तं कृष्ण-  
राजं प्रति ॥

गृहीत-पक्षादितरः परस्यात्तद्वादिनस्ते परवादिनस्युः ।

तेषां हि मल्लः परवादिमल्लस्तन्नाममन्नाम वदन्ति सन्तः

॥ २९ ॥

आचार्य्यवर्ग्यो यतिरार्य्यदेवो राद्धान्त-कर्त्ता

ध्रियतां स मूर्ध्नि ।

यस्स्वर्ग-यानोत्सव-सीमि कायोत्सर्गस्थितः

कायमुदुत्ससर्ज ॥३०॥

श्रवण-कृत-वृणोऽसौ संयमं ज्ञातु-कामैः

शयन-विहित-वेला-सुप्त-लुप्तावधानः ।

श्रुतिमरभसवृत्त्योन्मृज्य पिच्छेन शिश्ये

किल मृदु-परिवृत्या दत्त-तत्कोट-वर्त्मा ॥३१॥

विश्वं यश्श्रुत-बिन्दुनावरुधे भावं कुशाग्रीयया

बुध्येवाति-महीयसा प्रवचसा बद्धं गणाधीश्वरैः ।

शिष्यान्प्रत्यनुकम्पया कृशमतीनैदं युगीनान्सुगी-

स्तं वाचाच्चर्चत चन्द्रकीर्त्ति-गणिनं चन्द्राभ-कीर्त्तिं बुधाः

॥३२॥

सद्धर्म-कर्म-प्रकृतिं प्रणामाद्यस्योग्र-कर्म-प्रकृति-प्रमोक्षः ।

तन्नाम्नि कर्म-प्रकृतिन्नमामो भट्टारकं दृष्ट-कृतान्त-पारम्

॥ ३३ ॥

अपि स्व-वागव्यस्त-समस्त-विद्यस्त्रैविद्य-शब्देऽप्यनुमन्यमानः ।

श्रीपालदेवः प्रतिपालनीयस्सतां यतस्तत्त्व-विवेचनी धीः

॥ ३४ ॥

तीर्थ श्रीमत्तिसागरो गुरुरिला-चक्रं चकार स्फुर-

ज्ज्योतिः-पीत-तमर्पयः-प्रविततिः पृतं प्रभूताशयः ।

यस्माद्भू रि-परार्द्ध-पावन-गुण-श्रीवर्द्धमानोल्लस-

द्रन्नोत्पत्तिरिला-तलाधिप-शिरश्शृङ्गारकारिण्यभूत् ॥३५॥

यत्राभियोक्तरी लघुर्द्धु-धाम-सोम-सौम्याङ्गभूत्स च भवत्यपि-

भूति-भूमिः ।

विद्या-धनञ्जय-पदं विशददधानो जिष्णुः स एव हि महा-

मुनिहेमसेनः ॥३६॥

चूणिण ॥ यस्यायमवनिपति-परिषदि निग्रह-मही-निपात-भीति-

दुस्थ-दुर्गर्व-पर्वतारूढ-प्रतिवादिलोकः प्रतिज्ञाश्लोकः ॥

तर्कं व्याकरणे कृत-श्रमतया धीमत्तयाप्युद्धतो

मध्यस्थेषु मनीषिषु न्तिभिभूतामग्रे मया स्पर्द्धया ।

यः कश्चित्प्रतिवक्ति तस्य विदुषो वाग्मेय-भङ्गं परं

कुर्वेऽवश्यमिति प्रतीहि नृपतेहे हैमसेनं मतं ॥३७॥

हितैषिणां यस्य नृणामुदात्त-वाचा निबद्धा हित-रूप-सिद्धिः ।

वन्द्यो दयापाल-मुनिः स वाचा सिद्धस्सताम्भूर्द्वनि यः

प्रभावैः ॥ ३८ ॥

यस्य श्रीमतिसागरो गुरुरसौ चञ्चलशस्त्रन्द्रसूः

श्रीमान्यस्य स वादिराज-गणभृत्स ब्रह्मचारी विभोः ।

एकोऽतीव कृती स एव हि दयापालव्रती यन्मन—

स्यास्तामन्य-परिग्रह-ग्रह-कथा स्वे विग्रहे विग्रहः ॥ ३९ ॥

त्रैलोक्य-दीपिका वाणी द्वाभ्यामेवादगादिह ।

जिनराजत एकस्मादेकस्मा द्वादिराजतः ॥ ४० ॥

आरुद्धाम्बरमिन्दु-बिम्ब-रचितौत्सुक्यं सदा यद्यश-

शस्त्रं वाक्चमरीज-राजि-रुचयोऽभ्यर्णं च यत्कर्णयोः ।

सेव्यः सिंहसमच्चर्य-पीठ-विभवः सर्व-प्रवादि-प्रजा-

दत्तोच्चैर्यकार-सार-महिमाश्रीवादिराजोविदां ॥ ४१ ॥

चूर्णि ॥ यदीय-गुण-गोचरोऽयं वचन-विलास-प्रसरः कवीनां ।

नमोऽर्हते ॥

( दक्षिणमुख )

श्रीमञ्चालुक्य-चक्रेश्वर-जयकटके वाग्वधू-जन्म-भूमौ

निष्काण्डण्डिण्डिमः पर्यटति पटु-रटो वादिराजस्य

जिष्णोः ।

जह्युद्यद्वाद-दर्पो जहिहि गमकता गवर्भ-भूमा जहाहि

व्याहारेभ्यो जहीहि स्फुट-मृदु-मधुर-श्रव्य-काव्यावल्लेपः

॥ ४२ ॥

पाताले व्याल-राजो वसति सुविदितं यस्य जिह्वा-सहस्रं  
निर्गन्ता स्वर्गतोऽसौ न भवति धिषणो वज्रभृद्यस्यशिष्यः ।  
जीवेतान्तावदेतौ निलय-बल-वशाद्वादिनः केऽत्रनान्ये  
गर्वं निर्भुञ्च्य सर्वं जयिनमिन-सभे वादिराजं नमन्ति

॥ ४३ ॥

वाग्देवीं सुचिरप्रयोग-सुदृढ-प्रेमाणमप्यादरा-  
दादत्ते मम पार्श्वतोऽयमधुना श्रीवादिराजो मुनिः ।  
भो भो पश्यत पश्यतैष यमिनां किं धर्म इत्युच्चकै-  
रब्रह्मण्य-पराः पुरातनमुनेर्वाग्वृत्तयः पान्तु वः ॥४४॥  
गङ्गावनिश्वर-शिरो-मणि-बद्ध-सन्ध्या-रागोल्लसच्चरण-चारु-  
नखेन्दु-लक्ष्मीः ।

श्रीशब्द-पूर्व-विजयान्त-विनूत-नामा धीमानमानुष-गुणोऽ-  
स्ततमः प्रमांशुः ॥४५॥

चूर्णिणं ॥ स्तुतो हि स भवानेष श्रीवादिराज-देवेन ॥

यद्विद्या-तपसोः प्रशस्तमुभयं श्रीहेमसेने मुनौ  
प्रागासीत्सुचिराभियोग-बलतो नीतं परामुन्नतिं ।  
प्रायः श्रीविजये तदेतदखिलं तत्पौठिकायां स्थिते  
सङ्क्रान्तं कथमन्यथानतिचिराद्विद्येदगीदृक् तपः ॥४६॥  
विद्योदयोऽस्ति न मदोऽस्ति तपोऽस्ति भास्व-  
न्नोम्रत्वमस्ति विभुतास्ति न चास्ति मानः ।  
यस्यश्रये कमलभद्र-मुनीश्वरन्तं  
यः ख्यातिमापदिह शाम्यद्घैर्गुणैर्गुणैः ॥४७॥

स्मरण-मात्र-पवित्रतमं मनो भवति यस्य सतामिह तीर्थिनां ।  
तमतिनिर्मलमात्म-विशुद्धये **कमलभद्र**सरोवरमाश्रये

॥ ४८ ॥

सर्वाङ्गैर्यमिहालिलिङ्ग सुमहाभागं कलौ भारती  
भास्वन्तं गुण-रत्न-भूषण-गणैरप्यग्रिमं योगिनां ।  
तं सन्तस्तुवतामलङ्कृत-**दयापाला**भिधानं महा-  
सूरिं भूरिधियोऽत्र पण्डित-पदं यत्रैव युक्तं स्मृताः ॥४९॥

विजित-मदन-दर्पः श्री**दयापाल**देवो  
विदित-सकल-शास्त्रो निर्जिताशेषवादी ।  
विमलतर-यशोभिर्व्याप्त-दिक्-चक्रवालो  
जयति नत-महीभृन्मौलि-रत्नारुणः डिग्घ्नः ॥५०॥

यस्यापास्य पवित्र-पाद-कमल-द्वन्द्वन्तपः **पोय् सलो**  
लक्ष्मीं सन्निधिमानयत्स **विनयादित्यः** कृताज्ञाभुवः ।  
कस्तस्याहति **शान्तिदेव**-यमिनस्सामत्पर्यमित्थं तथे-  
त्याख्यातुं विरलाः खलु स्फुरदुरु-ज्योतिर्दशा स्तादृशाः ॥५१॥

स्वामीति **पारुड्य**-पृथिवी-पतिना निसृष्ट-  
नामाप्त-दृष्टि-विभवेन निज-प्रसादात् ।

धन्यस्स एव मुनिराहवमल्लभूभु—  
गाथायिका-प्रथित-शब्द-**चतुर्मुखाख्यः** ॥५२॥

श्री**मुल्लू**र-विद्वर-सारवसुधा-रत्नं स नाथो गुणे  
नाच्छूणेन महीचितामुरु-महःपिण्डशिशरो-मण्डनः ।

आराध्यो गुणसेन-पण्डित-पतिस्स स्वास्थ्यकामैर्जना  
यत्सूक्तागद-गन्धतोऽपि गलित-ग्लानिं गतिं लम्बिताः ॥५३॥

वन्दे वन्दितमादरादहरहस्याद्वाद-विद्या-विदां  
स्वान्त-ध्वान्त-वितान-धूनन-विधौ भास्वन्तमन्यं भुवि ।  
भक्त्या त्वाजितसेन-मानतिकृतां यत्सन्नियोगान्मनः—  
पद्मं सद्य भवेद्विकास-विभवस्योन्मुक्त-निद्रा-भरं ॥५४॥

मिथ्या-भाषण-भूषणं परिहरेतौद्धत्य...न्मुञ्चत  
स्याद्वादं वदतानमेत विनयाद्वादीभ-कण्ठीरवं ।  
नो चेत्तद्गु.. गर्जित-श्रुति-भय-भ्रान्ता स्थ यूयं यत-  
स्तूष्णीं निग्रह-जीर्णकूप-कुहरे वादि-द्विपाः पातिनः ॥५५॥

गुणाः कुन्द-स्पन्दोद्भुमर-समरा वगमृत-वाः—  
प्लव-प्राय-प्रेयः-प्रसर-सरसा कीर्तिरिव सा ।  
नखेन्दु-ज्योत्स्नाङ्घ्रेन्नृप-चय-चकोर-प्रणयिनी  
न कासां श्लाघानां पदमजितसेन व्रतिपतिः ॥५६॥

सकल-भुवनपालानम्र-मूर्छावबद्ध—  
स्फुरित-मुकुट-चूडालीढ-पादारविन्दः ।  
मदवदखिल-वादीभेन्द्र-कुम्भ-प्रभेदी  
गणभृदजितसेनो भाति वादीभसिंहः ॥५७॥

चूष्णीं ॥ यस्य संसार-वैराग्य-वैभवमेवंविधास्त्ववाच स्सूचयन्ति ।

प्राप्तं श्रीजिनशासनं त्रिभुवने यदुल्लभं प्राणिनां  
यत्संसार-समुद्र-मग्न-जनता-हस्तावलम्बायितं ।

यत्प्राप्ताः परनिर्व्यपेक्ष-सकल-ज्ञान-श्रियालङ्कृता-  
 स्तस्मात्किं गहनं कुतो भयवशः कावात्र देहे रतिः ॥५८॥  
 आत्मैश्वर्यं विदितमधुनानन्त-बोधादि-रूपं  
 तत्सम्प्राप्त्यै तदनु समयं वर्त्ततेऽत्रैव चेतः ।  
 त्यक्तान्यस्मिन्सुरपति-मुखे चक्रि-सौख्ये च तृष्णा  
 तत्तुच्छार्थैरलमलमधी-ज्ञोभनैर्लोकावृत्तैः ॥५९॥  
 अजानन्नात्मानं सकल-विषय-ज्ञान-वपुषं  
 सदा शान्तं स्वान्तःकरणमपि तत्साधनतया ।  
 बही-रागद्वेषैः कलुषितमनाः कोऽपि यततां  
 कथं जानन्नेनं क्षणमपि ततोऽन्यत्र यतते ॥६०॥

( पश्चिममुख )

चूर्णिणं ॥ यस्य च शिष्ययोः कविताकान्त-वादिकोला-  
 हलापरनामधेययोः शान्तिनाथपद्मनाभ-पण्डितयोरखण्ड-  
 पाण्डित्य-गुणोपवर्णनमिदमसम्पूर्णं ॥

त्वामासाद्य महाधियं परिगता या विश्व-विद्वज्जन-  
 ज्येष्ठाराध्य-गुणाचिरेण सरसा वैदग्ध्य-सम्पद्गिरां ।  
 कृत्वाशान्त-निरन्तरोदित-यशश्श्रीकान्त शान्ते न तां  
 वक्तुं सापि सरस्वती प्रभवति ब्रूमः कथन्तद्वयं ॥६१॥  
 व्यावृत्त-भूरि-मद-उन्तति विस्मृतेष्वर्था-  
 पारुष्यमात्त-रुणारुति-कान्दिशीकं ।  
 धावन्ति हन्त परवादिगजास्त्रसन्तः  
 श्रीपद्मनाभ-बुध-गन्ध-गजस्य गन्धात् ॥६२॥

दीक्षा च शिखा च यतो यतीनां जैनंतपस्तापहरन्दधानात्  
कुमारसेनोऽवतु यच्चरित्रं श्रेयः पथोदाहरणं पवित्रं ॥६३॥

जगद्गरिम-धस्मर-स्मर-मदान्ध-गन्ध-द्विप-

द्विधाकरण-केसरी चरण-भूष्य-भूभृच्छिखः ।

द्वि-षड्-गुण-त्रपुस्तपश्चरण-चण्ड-धामोदयो

दयेत मम मल्लिषेण-मलधारिदेवो गुरुः ॥६४॥

वन्दे तं मलधारिणं मुनिपतिं मोह-द्विषद्-व्याहति-

व्यापार-व्यवसाय-सार-हृदयं सत्संयमोरु-श्रियं ।

यत्कायोपचयीभवन्मलमपि प्रव्यक्त-भक्ति-क्रमा-

नम्राकम्र-मनो-मिलन्मल-मषि-प्रक्षालनैकक्षमं ॥६५॥

अतुच्छ-तिमिर-च्छटा-जटिल-जन्म-जीर्णाटवी-

दवानल-तुला-जुषां पृथु-तपः-प्रभाव-त्विषां ।

पदं पद-पयोरुह-भ्रमित-भव्य-भृङ्गावलि-

र्ममोल्लसतु मल्लिषेण-मुनिराण्मनो-मन्दिरे ॥६६॥

नैर्मल्याय मलाविलाङ्गमखिल-त्रैलोक्य-राज्यश्रिये

नैष्ठिकश्चन्यमतुच्छ-तापहृदयेन्यश्चद्रुताशन्तपः ।

यस्यासौ गुण-रत्न-रोहण-गिरिः श्री मल्लिषेणो गुरु-

र्वन्द्यो येन विचित्र-चारु-चरितै-र्द्धात्री-पवित्री-कृता ॥६७॥

यस्मिन्नप्रतिमा क्षमाभिरमते यस्मिन्दया निर्दया-

श्लेषो यत्र-समत्वधीः प्रणयिनी यत्रास्पृहा सस्पृहा ।

कामं निर्वृति-कामुकस्त्वयमथाप्यग्रेसरो योगिना-

माश्चर्याय कथन्ननाम चरितैश्श्रीमल्लिषेणो मुनिः ॥६८॥



यः पृज्यः पृथिवीतले यमनिशं सन्तस्तुवन्त्यादरात्  
 येनानङ्ग-धनु-ज्जितं मुनिजना यस्मै नमस्कुर्वते ।  
 यस्मादागम-निर्णयोयमभृतां यस्यास्ति जीवेदया  
 यस्मिन्श्रीमलधारिणिब्रतिपतौ धम्मोऽस्ति तस्मै नमः ॥६६॥

धवल-सरस-तीर्थे सैष सन्यास-धन्यां  
 परिणतिमनुतिष्ठं नन्दिमां निष्ठितात्मा ।

व्यसृजदनिजमङ्गं भङ्गमङ्गोद्भवस्य

प्रथितुमिव समूलं भावयन्भावनाभिः ॥७०॥

चूर्णि ॥ तेन श्रीमद जितसेन-पण्डित-देव-दिव्य-श्री-पाद-  
 कमल-मधुकरी-भूत-भावेन महानुभावेन जैनागमप्रसिद्धसल्लेखना-  
 विधि-विसृज्यमान-देहेन समाधि-विधि-विलोकनोचित-करण-कुतू-  
 हल-मिलित-सकल-सङ्ग-सन्तोष-निमित्तमात्मान्तःकरण-परिणति-  
 प्रकाशनाय निरवद्यं पद्यमिदमाशु विरचितं ॥

आराध्यरत्न-त्रयमागमोक्तं विधाय निरशल्यमशेषजन्तोः

क्षमां च कृत्वा जिनपादमूले देहं परित्यज्य दिवंविशामः ॥७१॥

शाके शून्य-शराम्बरावनिमिते संवत्सरे कीलके  
 मासेफाल्गुनके तृतीय-दिवसेवारेसितेभास्करे ।

स्वातौ श्वेत-सरोवरे सुरपुरं यातो यतीनां पति-

र्मध्याह्ने दिवसत्रयानशनतः श्री मल्लिषेणो मुनिः ॥७२॥

श्रीमन्मलधारि-देवरगुडुं विरुद-लेखक-मदनमहेश्वरं मल्लिनाथं  
 बरेदं विरुद-रुवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि कण्डरिसिदं ॥

५५ ( ६६ )

**कत्तिले बस्ती के द्वारे से दक्षिण की ओर  
एक स्तम्भ पर  
( लगभग शक सं० १०२२ )**

( पूर्वमुख )

श्रीमत्परमगम्भीर-स्याद्वादाभोध-ज्ञाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ २ ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्री **कोण्डकुन्द**-नामाभून्मूलसङ्घाग्रणी गणी ॥ ३ ॥

तस्यान्वयेऽजनि ख्याते ..देशिके गणे ।

गुणी देवेन्द्रसैद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दितः ॥ ४ ॥

तच्छिष्यरु ॥

जयति **चतुर्मुख-देवो** योगीश्वर-हृदय-वनज-वन-

दिननाथः ।

मदन-मद-कुम्भि-कुम्भस्थल-दलनोलवण-पटिष्ठ-निष्ठुर-

सिंहः ॥ ५ ॥

योन्दोन्दु दिग्विभागदो—

लोन्दोन्दोपवासदिं कायोत्स-

गर्गन्दलेने नेगल्लु तिङ्गल्ल—

सन्दडे पारिसि चतुर्मुखाख्येयनाल्दरु ॥ ६ ॥

अवर्गलिंगं शिष्यराद-

प्रविमल-गुणरमल-कीर्त्ति-कान्ता-पतिगल् ।

कवि-गमकि-वादि-वाग्मि—

प्रवर-नुतर्चतुरसीति-सङ्ख्येयनुल्लर् ॥ ७ ॥

अवरोलगे गोपणन्दि —

प्रवर-गुणरदिष्ट-मुद्रराघातयश-

कविता पितामहर्त्त—

क-वरिष्ठर्व्वकगच्छदोल् पेसर्व्वडेदर् ॥ ८ ॥

जयति भुविगोपनन्दी जिनमतलसदमृतजलधितुहिनकरः

देशीयगणाग्रगण्यो भव्याम्बुज-घण्ड-चण्डकरः ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ तुङ्गयशोभिरामनभिमान-सुवर्ण-धराधरं तपो-

मङ्गल-लक्ष्मि-वल्लभनिलातलवन्दितगोपनन्दिया—

वङ्गमसाध्यमप्य पलकालदनिन्द-जिनेन्द्र-धर्ममं

गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रुढियनेयदे माडिदं ॥ १० ॥

जिनपादाम्भोज-भृङ्गं मदन-मद-हरं कर्म-निर्मूलनं वाग्-

वनिता-चित्त-प्रियं वादि-कुल-कुधर-वज्रायुधं चारु-विद्व-

ज्जन-पात्रं भव्य-चिन्तामणि सकल-कला-कोविदं काव्यकञ्जा-

सननेन्दानन्ददिन्दं पोगले नेगल्दनी गोपणन्दिब्रतीन्द्रं

॥ ११ ॥

मलेयदे शाङ्ख्य मट्टविरु भौतिक पोङ्गि कडङ्गि बागदि-

त्तोलतोलबुद्ध बौद्ध तले-शेरदे वैष्णवडङ्गडङ्गु वाग्—

बलद पोडपुं वेड गड चार्वक चार्वक निम्म दप्पेमं  
सलिपने गोपणन्दि-मुनिपुङ्गवनेम्ब मदान्ध-सिन्धुरं ॥१२॥

( दक्षिण मुख )

तगयल् जैमिनि-तिप्पिकोण्डु परियल् वैशेषिकं पोगदु-  
ण्डिगेयोत्तल् सुगतं कडङ्गि बले-गोयल्कक्षपादम्बडल्—  
पुगे लोकायतनेय्दे शाङ्ख्य नडसल्कम्मम्म षट्त्तर्क-वी-  
थिगलोलूत्तुदितुगोपणन्दि-दिगिभ-प्रोद्भासि-गन्धद्विपं ॥  
॥ १३ ॥

दिटनुडिवन्यवादि-मुख-मुद्रितनुद्धतवादिवाग्बलो-  
द्धट-जय-काल-दण्डनपशब्द-मदान्ध कुवादि-दैत्य-धू-  
ज्जटि कुटिल-प्रमेय-मद-वादि-भयङ्करनेन्दु दण्डुलं  
स्फुट-पटु-वोषदिक्-तटमनेय्दितु वाकु-पटु-गोपनन्दिय  
॥१४॥

परम-तपो-निधान वसुधैक-कुटुम्ब जैनशासना-  
म्बर-परिपूर्णचन्द्र सकलागम-तत्त्व-पदार्थ-शास्त्र-वि-  
स्तार-वचनाभिराम गुण-रत्न-विभूषण गोपणन्दि नि-  
त्रोरेगिनिसप्पडं दोरेगलिल्लेणे-गाणेनिला [ तला ] प्रदोलू  
॥ १५ ॥

कन्द ॥ एननेननेले पेल्वेनण स-  
न्मान-दानिय गुण-व्रतङ्गलं ।  
दान-शक्त्यभिमान-शक्ति वि-  
ज्ञान-शक्ति सले गोपणन्दिय ॥१६॥

अवर सधर्मरु ॥

श्रीधाराधिप भोजराज-मुकुट-प्रोताश्म-रश्मि-च्छटा-  
 च्छाया-कुङ्कुम-पङ्क-लिप्त-चरणाम्भोजात-ज्ञदमीधवः ।  
 न्यायाब्जाकरमण्डने दिनमणिशब्दाब्ज-रोदोमणि-  
 स्थेयात्पण्डित-पुण्डरीक-तरणिश्रीमान्प्रभाचन्द्रमाः ॥१७॥  
 श्रीचतुर्मुख-देवानां शिष्योऽधृष्यःप्रवादिभिः ।  
 पण्डितश्रीप्रभाचन्द्रो रुद्रवादि-गजाङ्कुशः ॥ १८ ॥

अवर सधर्मरु ॥

बौद्धोर्वीधर-शम्भुः नय्यायिक-कञ्ज-कुञ्ज-विधु-बिम्बः ।  
 श्रीदामनन्दिबिबुधः लुद्र-महा-वादि-बिष्णुभट्टघट्ट  
 ॥ १९ ॥

तत्सधर्मरु ॥

मलधारिमुनीन्द्रोऽसौ गुणचन्द्राभिधानकः ।  
 बलिपुरे मल्लिकामोद-शान्तीश-चरणार्चकः ॥२०॥

तत्सधर्मरु ॥

श्रीमाघनन्दि-सिद्धान्त-देवो देवगिरि-स्थिरः ।  
 स्याद्वाद-शुद्ध-सिद्धान्त-वेदी वादि-गजाङ्कुशः ॥२१॥  
 सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वर्द्धन-विधुः साहित्य-विद्यानिधिः  
 बौद्धादि प्रवितर्क-कर्कश-मतिःशब्दागमे भारतिः ।  
 सत्याद्युत्तम-धर्म-हर्म्य-निलयस्सद्वृत्त-बोधोदयः  
 स्थेयाद्विश्रुतमाघनन्दि-मुनिप श्रीवक्रगच्छाधिपः ॥२२॥

अवर सधर्मरु ॥

जैनेन्द्रे पूज्य [पादः] सकल-समय-तर्के च भट्टाकलङ्कः  
साहित्ये भारविस्स्यात्कवि-गमक-महावाद-वाग्वित्-रुद्रः ।  
गीते वाद्ये च नृत्ये दिशि विदिशि च संवर्त्ति सत्कीर्त्ति-  
मूर्तिः

स्थेयाशुद्धीयोगिवृन्दार्चिर्वतपदजिनचन्द्रो वितन्द्रो-  
मुनीन्द्रः ॥ २३ ॥

अवर सधर्मरु ॥

(पश्चिममुख)

वङ्कापुर-मुनीन्द्रोऽभूद् देवेन्द्रो रुद्र-सद्गुणः ।  
सिद्धान्ताद्यागमार्थज्ञो सज्ञानादि-गुणान्वितः ॥ २४ ॥

अवर सधर्मरु ॥

वासवचन्द्र-मुनीन्द्रो रुद्र-स्याद्वाद-तर्क-कर्कश-धिषणः ।  
चालुक्य-कटक-मध्ये बाल-सरस्वतिरितिप्रसिद्धिप्राप्तः  
॥ २५ ॥

इवर्गो सहोदर-सधर्मरु ॥

श्रीमान्यशःकीर्त्ति-विशालकीर्त्तिस्स्याद्वाद-तर्काब्ज-  
विबोधनार्कः ।

बौद्धादि-वादि-द्विप-कुम्भ-भेदो श्रीसिंहलाधोश-कृतागर्घ्य  
पाद्यः ॥ २६ ॥

अवर सधर्मरु ॥

मुष्टि-त्रय-प्रमिताशन-नुष्टःशिष्ट-प्रिय-स्त्रिमुष्टि-मुनीन्द्रः ।

दुष्टपरवादि-मल्लोत्कृष्टश्रीगोपनन्दि-यतिपतिशिष्यः ॥ २७ ॥

अवर सधर्मरु ॥

मलदा [धा] रि हेमचन्द्रो गण्डविमुक्तश्च गौल-  
मुनिनामा ।

श्री गोपनन्दि-यति-पति-शिष्योऽभूच्छुद्ध-दर्शनज्ञानाद्याः ॥

॥ २८ ॥

कन्द ॥ धारिणियोल् मनसिजसं—

हारिगलं नेनेयलुप्रपापं किडुगुं ।

सूरिगलनमल-गुण-स-

न्धारिगलं गौल-देव-मलधारिगलं ॥ २९ ॥

अवर सधर्मरु ॥

श्री मूलसङ्घगतदोषमेधे देशीगणे सच्चरितादिसद्गुणे ।

भारत्यतुच्छे वरवक्रगच्छे जातः सुभावः शुभकीर्तिर्देवः ॥

॥ ३० ॥

आजिरगे कीर्ति-नर्त्तकिगाजिर भूगोलवागं शुभकीर्ति  
बुधं ।

राजावलि-पूजितनें राजिसिद्धनो वक्रगच्छ देशीयगणं

॥ ३१ ॥

अवर सधर्मरु ॥

श्री माघनन्दिसिद्धान्तामृत-निधि-जात-मेघचन्द्रस्य

श्रीसोदरस्य भुवन-ख्याताभयचन्द्रिका सुता जाता

॥ ३२ ॥

अवर सधर्मरु ॥

कल्याणकीर्ति नामाभूद्व्य-कल्याण-कारकः ।

शाकिन्यादि-प्रहाणां च निर्द्धाटन-दुर्द्धरः ॥ ३३ ॥

अवर सधर्मरु ॥

सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-सूत-सुवचो-लक्ष्मी-ललाटेक्षणः

शब्द-व्याहृति-नायिकाम्ब(क)चकोरानन्दचन्द्रोदयः ।

साहित्य-प्रमदाकटाक्ष-विशिख-व्यापार-शिखागुरुः

स्थेयाद्विश्रुत-बालचन्द्रमुनिपः श्रीवक्रगच्छाधिपः ॥ ३४ ॥

श्रीमूलसङ्घ-कमलाकर-राजहंसे

देशीय-सदृश-गुण-प्रवरावतंसः ।

जीयाज्जिनागम-मुधाण्यव-पूण्यचन्द्रः

श्रीवक्रगच्छ-तिलको मुनिबालचन्द्रः ॥ ३५ ॥

सिद्धान्ताद्यखिलागमार्थ-निपुण-व्याख्यानसंशुद्धियि

शुद्धाध्यात्मक-तत्त्वनिर्णय-वचो-विन्यासदि प्रौढिसं-

बद्ध-व्याकरणार्थ-शास्त्र-भरतालङ्कार-साहित्यदि

राद्धान्तोत्तम-बालचन्द्र-मुनियन्ताख्यातरी लोकदेल्

॥ ३६ ॥

विश्वाशा-भरित-स्व-शीतलकर-प्रभ्राजितस्सागर-

प्रोद्भू तस्सकलानतः कुवलयानन्दस्सतामीश्वरः ।

काम-ध्वंसन-भूषितः चितितले जातो यथात्थार्थाद्वय-

स्सोऽयं विश्रुत-बालचन्द्र-मुनिपस्सिद्धान्त-चक्राधिपः

॥ ३७ ॥



( उत्तरमुख )

श्रीमूलसङ्घद देशीयगणद वक्रगच्छद कोण्डकुन्दान्वयद  
 परियलिय बहुदेवर बलिय । देवेन्द्रसिद्धान्तदेवरु । अवर  
 शिष्यरु वृषभनन्द्याचार्यरेम्ब चतुर्मुखदेवरु । अवर शिष्यरु  
 गोपनन्दि-पण्डितदेवरु । अवर सधर्मरु महेन्द्र-चन्द्र-  
 पण्डित-देवरु । देवेन्द्र-सिद्धान्तदेवरु । शुभकीर्त्ति-पण्डित-देवरु-  
 माघनन्दि-सिद्धान्त-देवरु । जिनचन्द्र-पण्डित-देवरु ।  
 गुणचन्द्र-मलधारि-देवरु । अवरोलगोमाघनन्दि-सिद्धान्त-  
 देवरु शिष्यरु । त्रिरत्ननन्दि-भट्टारक-देवरु । अवर सधर्मरु  
 कल्याणकीर्त्तिभट्टारकदेवरु । मेघचन्द्र-पण्डित-देवरु ।  
 बालचन्द्र-सिद्धान्त-देवरु । आ गोपनन्दि-पण्डित-देवरु शिष्यरु  
 जसकीर्त्ति-पण्डित-देवरु । वासवचन्द्र-पण्डित-देवरु ।  
 चन्दनन्दि-पण्डितदेवरु । हेमचन्द्र-मलधारि गण्डविमुक्तरम्ब  
 गौलदेवरु त्रिमुष्टि-देवरु ।

[ यह लेख कुछ आचार्यों की प्रशस्तिमात्र है । लेख के अन्तिम भाग में उपरिवर्णित आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति है । ये सब आचार्य मूलसंघ देशीय गण और वक्र गच्छ के देवेन्द्र सिद्धान्तदेव के समकालीन शिष्य थे । चतुर्मुखदेव इसलिए कहलाये क्योंकि उन्होंने चारों दिशाओं की ओर प्रस्तुत मुख होकर आठ आठ दिन के उपवास किये थे । गोपनन्दि अद्वितीय कवि और नैयायिक थे जिनके सम्मुख कोई बादी नहीं ठहरते थे । प्रभाचन्द्र धाराधीश भोजदेवद्वारा सम्मानित हुए थे । माघनन्दि, और जिनचन्द्र भारी कवि, नैयायिक और

वैयाकरण थे । देवेन्द्र वङ्कापुर के आचार्यों के नायक थे । वासवचन्द्र ने अपने वाद-पराक्रम से चालुक्य राजधानी में बालसरस्वती की उपाधि प्राप्त की थी । यशःकीर्ति सैद्धान्तिक सिंहल द्वीप के नरेश द्वारा सम्मानित हुए थे । त्रिमुष्टि मुनीन्द्र बड़े सैद्धान्तिक थे और तीन मुष्टि अन्न का ही आहार करते थे । मलधारि हेमचन्द्र और शुभकीर्तिदेव बड़े सदाचारी आचार्य्य थे । कल्याणकीर्ति शाकिनी आदि भूत प्रेतों को भगाने की विद्या में निपुण थे । बालचन्द्र आगम और सिद्धान्त के अच्छे ज्ञाता थे । ]

५६ ( १३२ )

गन्धवारण बस्ति के पूर्व की ओर

( शक सं० १०४५ )

त्रैविद्योत्तममेघचन्द्रसुतपःपीयूषवाराशिजः  
सम्पूर्णोच्चयवृत्तनिर्मलतनुःघुष्यद्बुधानन्दनः ।  
त्रैलोक्य प्रसरद्यशश्शुचिरुचिर्य्यप्रास्तदोषागमः  
सिद्धान्ताम्बुधिवर्द्धनो विजयते पूर्व्वः प्रभाचन्द्रमाः ॥ १ ॥  
श्रीसोदराम्बुजभवादुदितोऽत्रिरत्रि-  
जातेन्दुपुत्र-बुधपुत्र-पुरूरवस्तः ।  
आयुस्ततश्च नहुषो नहुषाद्ययातिः  
तस्माद्यदुर्यदुकुले बहवो बभूवुः ॥ २ ॥  
ख्यातेषु तेषु नृपतिः कथितः कदाचित्  
कश्चिद्वने मुनिवरेश्च(ष्व)-चलः करालं ।

शाद्गूलकं प्रतिह पोय्सल इत्यतोऽभू-  
 तस्याभिधा मुनिवचोऽपि चमूरलक्ष्मः ॥ ३ ॥  
 ततो द्वारवतीनाथा पोय्सला द्वोपिलाञ्छना ।  
 जाताश्शशपुरे तेषु विनयादित्यभूपतिः ॥ ४ ॥  
 स श्रीवृद्धिकरं जगज्जनहितं कृत्वा धरां पालयन्  
 श्वेतच्छत्रसहस्रपत्रकमले लक्ष्मीं चिरं वासयन् ।  
 दोर्दण्डे रिपुखण्डनैकचतुरे वीरश्रियं नाटयन्  
 चित्तेपाखिलदिक्षु शिञ्चितरिपुस्तेजःप्रशस्तोदयः ॥ ५ ॥  
 श्रीमद्यादववंशमण्डनमणिः क्षोणीशरक्षामणि-  
 र्लक्ष्मीहारमणिः नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गशुम्भमणिः ।  
 जीयान्नीतिपथेक्षददर्पणमणिलोकैकचूडामणि-  
 श्श्रीविष्णुर्विनयार्जितो गुणमणिस्सम्यक्तवचूडामणिः ॥ ६ ॥

कन्द ॥ एरेद मनुजङ्गे सुरभू—

मिरुहं शरणेन्दवङ्गे कुलिशागारं ।

परवनितेगनिलतनयं

धुरदोल् पोणर्दङ्गे मृत्यु विनयादित्य ॥ ७ ॥

बलिदडे मलेदडे मलपर—

तलेयोल् बलिडुवनुदितभयरसवसदि ।

बलियद मलेयद मलेपर—

तलेयोल् कैयिडुवनोडने विनयादित्य ॥ ८ ॥

आ पोय्सल भूपङ्गे म—

होपाल-कुमार-निकर-चूडारत्नं ।

श्रीपतिनिज-भुजविनयम—

हीपति जनियिसिदनदटनेरेयङ्गनृपं ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरेनेय मारुति नालकनेयुप्रवहिय-  
देनेयसमुद्रमारेनेय पूगण्येलनेयुर्व्वरेषने-  
ण्टेनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्धसमेतहस्तिप—  
त्तेनेय निधानमूर्त्तियेने पोल्ववरारेरेयङ्गदेवन ॥ १० ॥  
अरिपुरदोलधगद्धगिल्दन्धगिलेम्बुदरातिभूमिपा-  
लरशिरदोलगरिलगरिगरीगरिलेम्बुदु वैरिभूतले-  
शर करुलोल् चिमिलिचमि चिमीचिमिलेम्बुदुकोपवह्निदु-  
द्धरतरमेन्द्रोडलकुरदे कादुवरारेरेयङ्गदेवन ॥ ११ ॥

कन्द ॥ आ नेगल्द एरेग नृपालन

सूनु बृहद्वैरिमर्दनं सकलधरि-

त्रो-नाथनर्त्थिजनता-

भानुसुतं जिष्णु विष्णुवर्द्धननेसेदं ॥ १२ ॥

उदेयं गेयलोडनोडन-

न्तुदितोदितमागे सकलराज्याभ्युदयं ।

मदवदराति-नृपालक-

पदविदलननमम विष्णुवर्द्धन भूपं ॥ १३ ॥

वृत्त ॥ केलरं किर्त्तिकि बेरं बिदुर्दुकेलरनत्युग्रसङ्ग्रामदोलुवा—

ल्दले गोण्डात्तेपदिन्दं केलर तलेगलं मेट्टि मिन्दुप्रकोपं ।

मलेवत्युद्धवृत्तरं तोत्तलदुलिदु निजप्राज्यसाम्राज्यमं तो-

ल्वलदिं निष्कण्टकं माडिदनधिकबलं विष्णु जिष्णुप्रतापं ॥ १४ ॥

दुर्बाराधराधरेन्द्रकुलिशं श्रीविष्णुभूपालना-  
 हेंब्वट्टिलु सेडेदेडि पोगि भयदिन्दाबन्दनीबन्दनेन्द ।  
 उर्वीपालर कङ्गे लोकमनितुं तद्रूपमागिर्पिनं  
 सर्व्व विष्णुमयं जगत्तेनिपिदें प्रत्यक्षमागिर्हुदे ॥१५॥

वचन ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं द्वारावती-  
 पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्तचूडामणि मल-  
 परोल्लगण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृतनुं । मत्तं चक्रगोः  
 तलकाडु नीलगिरि कोङ्कु नङ्गलि कोलालं तेरेयूरु कोय-  
 तूरु कोङ्गलिय् उच्चङ्गि तलेयूरु पोम्बुर्चवन्धासुरचौक  
 बलेयवट्टण येन्दिवु मोदलागनेक दुर्गं त्रयङ्गलनश्रमदिं कोण्डु  
 चण्ड-प्रतापदिं गङ्गावाडि तोम्भत्तरु सासिरमुमनुण्डिगे साध्यं  
 भाडिसुखदिं राज्यं गेयुत्तमिर्दं श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभु-  
 वनमल्ल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोय्-  
 सलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क-  
 तारं बरं सलुत्तमिरे ॥

कन्द ॥ आ नेगर्द विष्णुनृपन म—

नो नयनप्रिये चलालनीलालकि च-  
 न्द्रानने कामन रतियलु ।

तानेणे तोणे सरि समाने शान्तल देवि ॥ १६ ॥

वृत्त ॥ अगद मारसिङ्ग न मनोनयनप्रिये माचिकब्बेय-  
 न्तगदकीर्त्ति वेत्तेसेवरग्रतनूभवे विष्णुवर्द्धनङ्ग-  
 गद चित्तवल्लभेयेनल्कभिवर्णिपरारो लक्षिमग-

न्तगलमप्प मान्तनद शान्तलदेविय पुण्यवृद्धियं ॥ १७ ॥

धुरदोल्विष्णुनृपालकङ्गे विजयश्रीवच्चदोल्सन्ततं  
परमानन्ददिनोतु निल्व विपुलश्रोतेजदुद्धानियं ।  
वर दिग्भित्तियनेय्दिसल्लनेरेवकीर्त्तिश्रीयेनुत्तिर्पुदी-  
दरेयोल् शान्तलदेवियं नेरेये वणिष्णप्पातने वणिष्णपं ॥ १८ ॥

कन्द ॥ शान्तल देविय गुणमं

शान्तलदेवियसमस्तदानोन्नतियं ।

शान्तलदेवियशीलम-

चिन्त्यं भुवनैकदानचिन्तामणियं ॥ १९ ॥

वचन ॥ स्वस्त्यनवरतपरमकल्याणाभ्युदयशतसहस्रफलभोगभा-  
गिनी द्वितीयलक्ष्मी समानेयुं । सकलकलागमानूनेयुं ।  
अभिनवरुग्मिणीदेवियुं । पतिहितसत्यभावेयुं । विवेकैकबृहस्प-  
तियुं । प्रत्युत्पन्नवाचस्पतियुं । मुनिजनविनेयजनविनीतेयुं ।  
पतिव्रताप्रभावप्रसिद्धसीतेयुं । सकलवन्दिजनचिन्तामणियुं ।  
सम्यक्तचूडामणियुं । उद्भूतसवतिगन्धवारणेयुं । चतुःसमयस-  
मुद्धरकरणकारणेयुं । मनोजराजविजयपताकेयुं । निजकुलाभ्युदय  
दीपकेयुं । गीतवाद्यनृत्यसूत्रधारेयुं । जिनसमय समुदितप्राका-  
रेयुं । आहाराभयभैषज्यशास्त्रदान-विनोदेयुमप्प विष्णुवर्द्धनपो-  
य्सलदेवर पिरियरसि पट्टमहादेवी शान्तलदेवि शकवर्ष  
सासिर ४० य्देनेय शोभकृतु संवत्सरद चैत्रसुद्धपाडिवबृह-  
स्पतिवारदन्दु श्री बेलगोलद तीर्थदोल् सवतिगन्धवारणजिना-

लयमं माडिसि देवता पूजेगर्भिसमुदायकाहारदानक कल्कणिनाड  
मोद्वेनविलेयं तम्म गुरुगल् श्रीमूलसङ्घद देसियगणद पुस्तकग-  
च्छद श्रीमन्मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवर शिष्यर् प्रभाचन्द्र सिद्धान्त  
देवर्गे पादप्रक्षालनं माडि सर्वबाधापरिहारवागि विट्ट दत्ति ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे कावपुरुषर्गायुं महाश्रीयु म-  
केयिदं कायदे कायव पापिगे कुरुक्षेत्रोर्बियोल् बाणरा-  
सियोलेकोटिमुनीन्द्रं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदे-  
न्दयसं सागुंमिदेन्दु सारिदपुवी शैलाक्षरं सन्ततं ॥ २० ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेति वसुन्धरा ।

षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ २१ ॥

एलसनकट्टव करेयागि कट्टिसि सवतिगन्धहस्तिवसदिगे  
सरुगिगे देवियरु जिनालयके विट्टरु ॥ श्रीमत् पिरियरसि पट्टम-  
हादेवि शान्तलदेवियरु तावु माडिसिद सवतिगन्धवारणद  
वसदिगे श्रीमद्विष्णुवर्द्धन पोय्सल देवर वेडिकोण्डु गङ्गस-  
मुद्रद कोलगण नडुवयलयवत्तु कोलग गर्दे तोटवं श्रीमत्प्रभाचन्द्र-  
सिद्धान्तदेवर कालं कच्चिर् धारापूर्वकं माडि विट्टदत्ति  
इदनलिदवं गङ्गेय तडियोले हदिनेण्डु कोटि कविलेयं कोन्द  
महापातक ॥ मङ्गलमहा श्री श्री ॥

( दक्षिण पार्श्वपर ) श्रीमत्प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यरु  
महेन्द्रकीर्त्ति देवरु मुन्नूरहदिमूरु कच्चिन होलविगेय शान्त-  
लदेविय वसदिगे माडिसि कोट्टरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

[ यह लेख शान्तलदेवी के दान का स्मारक है । लेख में यादवकुल की उत्पत्ति ब्रह्मा और चन्द्र से बतलाई है । इस कुल में 'सल' नामक एक राजा हुआ । एक बार वन में किसी साधु ने एक व्याघ्र की ओर संकेत कर इस राजा से कहा 'पोयसल' ( हे सल, इसे मारो ) । तभी से इस राजा का नाम पोयसल पड़ गया और उसने सिंह का चिह्न अपने मुकुट पर धारण किया । तब से इस वंश का नाम पोयसल पड़ गया । लेख में इस वंश के विनयादित्य, एरेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन नरेशों के प्रताप का वर्णन है । विष्णुवर्द्धन की पटरानी शान्तलदेवी, जो पातिव्रत, धर्मपरायणता और भक्ति में रुक्मिणी, सत्यभामा, सीता जैसी देवियों के समान थी, ने सवति गन्धवारणवस्ति निर्माण कराकर अभिषेक के लिए एक तालाब बनवाया और उसके साथ एक ग्राम का दान मन्दिर के लिए प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव को कर दिया । ]

[ नोट—लेख की ठीक तारीख 'सासिरद नल्वत्तयदनेय' है, परन्तु खोदनेवाले की भूल से जब 'नल्वत्त' छूट गया और 'सासिरदयदनेय' खुद गया तब उसने 'सासिरद' के 'द' को ४० में बदलकर जितना अच्छा उससे हो सका उसे शुद्ध कर दिया । यद्यपि पढ़ते समय इससे ठीक अर्थ निकल आता है परन्तु देखने में यह बड़ा विचित्र मालूम होता है । ]

५७ ( १३३ )

गन्धवारण वस्ति के उत्तर की ओर स्तम्भ पर ।

( शक सं० ६०४ )

( उत्तर मुख )

संसारवनमध्येऽस्मिन्जृस्तद्भान् जन-द्रुमान् ।

आलोक्यालोक्य सद्वृत्तान्छिनन्ति यमतच्चकः ॥ १ ॥



श्रीराजत्कृष्णराजेन्द्रन मगन मगं सत्यशौचद्वयाल-  
ङ्कारं श्रीगङ्गाङ्गेयन मगल मगं वीरलक्ष्मीविलासा-  
गारं श्रीराजचूडामणियलियनिदें पेम्पो पेलेंदलम्पि  
भूरिद्धमाचक्रमुंबण्णसे सले नेगल्दं रट्टकन्दर्पदेवं ॥ २ ॥

परभूमीश्वरभीकरंकरनिशातोप्रासि शत्रुक्षिती-  
श्वरविध्वंसपरं पराक्रमगुणाटोपं विपत्तावनी—

श्वरपक्षत्तयकारणं रणजयोद्योगं द्विषन्मेदिनी-  
श्वरसंहारहविर्भुजं भुजबलं श्रीराजमार्त्तण्डन ॥ ३ ॥

इरियल्कण्मुवरीयलाररेबर् पुण्डीवरारानुमा-  
न्तिरियल्कन्मरदाव गण्डगुणमावौदाय्य मेन्दल्कदा-  
न्तिरिवण्मुं पिरिदीव पेम्पुमेसेदोप्पिल्दप्पुवार्ब्बण्णसल्  
नेरेवर्ब्बीरद चागदुन्नतिकेयं श्री राजमार्त्तण्डन ॥ ४ ॥

किडद जसक्के ताने गुरियादचलं नेरेदर्थिगर्थमं ।  
कुडुव चलं तोदल्नुडियदिर्प्प चलं परवेण्णोलोतोदं-  
बड्द चलं शरण्णे वरेकाव चलं परसैन्यमं पेर-  
ङ्गे डे गुडदट्टि कोल्व चलमाल्द चलं चलदङ्ककार्न् ॥ ५ ॥

इरु पेरदेननिं पोगलुतिल्दपुदीवनेगल्ते कल्पभू-  
मिरुहदिनगलं नुडि सुराचलदिन्दचलं पराक्रमं ।  
खरकरतेजदिं विसिदु चागल नन्निय वीरदन्दमी-  
दोरेतेने वण्णसल्नेरेवरारलवं चलदङ्ककारन ॥ ६ ॥

ओगसुग मल्लदुल्लुदने पेल्लपेनेन्दुमतर्क्यविक्रमं  
मृगपति गल्लदिल्ले गड सन्द गभीरते वार्द्धिगल्लदि-

ल्लेगडजगत्प्रसिद्धिगेले.....महोन्नति-वे...ग.....

.....मेल्लमोलवानरिवें.....॥७॥

( पूर्वमुख )

दुस्थितेलोककल्पतरुवेम्बुदु वैरिनरेन्द्रकुम्भिकु-  
 म्भस्थल-पाटन-प्रवण-केसरियेम्बुदु कामिनीजनो-  
 रस्थलहारमेम्बुदु महाकविचित्तसरोरुहाकरा-  
 वस्थितहंसनेम्बुदु समस्तमहीजनमिन्द्रराजनं ॥ ८ ॥  
 पुसिवुदे तक्कु कोट्टलिपि कोल्वुदे मन्तणमन्यनारिगा-  
 टिसुवुदे चित्तमीयदुदे विन्नणमारुमनेयदे कुत्तुब-  
 च्चिसुवुदे कल्ल कल्पियेने मत्तवरं पेसर्गोण्डदेन्तु पो-  
 लिसुवुदो पेलिमीगडिन राजतनूजरोलिन्द्रराजनं ॥ ९ ॥  
 निखिलविनमन्नरेशवर-  
 मुखाब्जनेत्रोत्पलालकालोलशिली-  
 मुखनिकर-दिनेसेवुदु पदनख-  
 कमलाकरविलासमहितर जवन ॥ १० ॥  
 मन्निसि पिरिदीवंतोद-  
 लं नुडियन्तोडुर्दु माण्णनलरिन्दमिदे-  
 नुन्नतिवडेदुदो चागद  
 नन्निय वीरद नेगल्ले चलदग्गलिया ॥ ११ ॥  
 शरदमृतकिरणरुचियिं  
 चराचरव्याप्तियिं जगज्जननुत्तियिं  
 करमेसेदिल्लपुडेनी-

श्वरमूर्तिये कीर्त्ति कीर्त्तिनारायणन ॥ १२ ॥  
 नुडिबर्बीरमनोन्दुगण्डु सेडेवर्चागकेमुय्वाम्परी-  
 वडे पलगच्चुवरामे सौचिगलेमेन्दिर्प्यर्परस्त्रोयरोल्-  
 गडगं नन्निगे बीगुवर्नुडितोदल् दोसके पक्कादेदं  
 बडगण्डर् कलिकालदोल् कलिगलोल् गण्डं बरं गण्डरे ॥ १३ ॥

( दक्षिणमुख )

श्रीगे विजयके विद्देगे  
 चागकदटिङ्ग जसके पेम्पिङ्ग नित—  
 कर्गारमिदेन्दु कन्दुक-  
 दागमदोले नेगल्गुमल्ले बीरर बीर ॥ १४ ॥  
 ओलगं दक्षिण सुकरदुष्करमं पोरगण सुकरदुष्करभेदमं  
 ओलगे वामद विषममनस्त्रिय विषम दुष्करम निन्नदर पोरग-  
 गलिके येनिपति विषममनदरतिविषम दुष्करमेम्ब दुष्कर्म  
 एलेयोलोर्व्वने चारिसल्वल्लं नाल्कुप्रकरणमुमनिन्द्राजं  
 ॥ १५ ॥

चारिसे नाल्कु प्रकरण-  
 चारणे मूनूर मूवतेण्टेनिसिदवा-  
 चारणेगलनमदिं  
 चारिसुगुं कोटि तेरदिनेलेबेडेङ्ग ॥ १६ ॥  
 बलसुवेरुव सुलिवगल्विन्तप्प चारणदोषमल्लदे पोद्व-  
 द्दलेगे समनागेगिरिगेय कोल्मुट्टि मिगलुं नेललुमणमीयदिन्तो-

न्दलवियोल्बरे पोरगोलगोडदोलं बलदोलं कडुगडुपिन्ने  
वर्ष

वल्लयन्दप्पदे चारिसुवोजेयं रट्टकन्दर्पनन्तावं बल्लं ॥ १७ ॥

मेलसिन निलिरिदु गिरिगेय-

नलेदोर्गेड्डोलोलोलगे पोरगणे मेलेवो—

ल्ललवडे चारिप बहलिके-

यल्लविदुकेवलमे कीर्त्तिनारायणन ॥ १८ ॥

गिरिगे मेलसिन्दं किरिदक्क कालोल्पु नाल्वरललविग-  
किरिदुमक्क—

तुरगं बेट्टिदिं पिरिदक्क वल्लयमुं भूवल्लयदिनत्त पिरिदुमके ।

गिरिगे कोल्वलि वल्लयमिन्तिनितुमं बगेवोङ्गे करमरि-  
दिन्तिवरोल्-

इरदे पत्तेण्डुवल्लयं चारिसदन्नं भोगमिक्कक्कन्नल्लनिन्द्रराजं

॥ १९ ॥

कडुपुगलुइ वल्लंगड

बेडेङ्ग गल बेरे भङ्गिगल ललिगलिदें ।

कडुजाणेने वदिकय्वर-

मडर्दपुलेने बिहमेलेरु मेलेवबेडेङ्ग ॥ २० ॥

नेगल्द मण्डलमाले त्रिमण्डल यामकमण्डलमर्द्धचन्द्रमार्ग

बगेवोडरिदप्प सर्व्वतोभद्रमुह्वलं चक्रव्यूहं बल्लमेगलं ।

पोगलिसल्लक्क पेरेवु दुष्करदेलेपङ्गलनश्रमदिनेलेयोल्-

जगदोल्लेखबेडेङ्गनोर्वने वल्ल...न्तारालं मान्तरमे ॥ २१ ॥

( पश्चिम मुख )

उद्वल मेलवरेम्बुदे-

विहं मुन्नल्लि कडुपिनोल्बहु विधदि-

न्दुद्वलमेलेदु मुरिगुं ।

विहमेनल्लल पोरगनेलेवबेडेङ्गं ॥ २२ ॥

एरकमल्लदे पोन्नदागेरगि दोरेकोण्डे कोल्व तेरनल्लदे

नेरेये बरले तक्कदियल्लि बीसुवल्लिये बीसलरिदेयिल्ल ।

परियनादिट्टे मुरिवल्लि कडुपिनोल् मुरिदियिल्लियि विन्नणव-

नेरेये कल्पदे बीररबीरनं गिडेगला-भरणनं नोडि कल्ला ॥ २३ ॥

आसुवनुं कूकुवनुं

बीसुवनुं गडये नेगल्द तक्कदियोलेनु-

त्तासदेयु कुङ्कदेयुं

विसन्देयुविहमेलेगुमेलवबेडेङ्गं ॥ २४ ॥

एरगलरियदे जिण्डुकम्मगुल्दुंबरलणमरियदेतप्पंपिन्दुं

तेरननरियदे भङ्गमनिकियुम्मूरदेगल्लदे कट्टाडियुं ।

मुरिये पोयिसिदनुरेयं कोन्दु धरेगेडे तगर्गड यिवनेनिसदे

नेरेये कडुजाणनेनिसल्के वक्कुमे गेडेगलाभरणन कल्लदन्नं

॥ २५ ॥

काल्गल कय्गल तुरगद

काल्गल तिण्णिवुगलोल्लि बच्चिसुतेलेगुं ।

गेल्गुमेने नेगल्द मार्गदे

गेल्गुमे पिण्देदल्लि कीर्त्तिनारायणन ॥२६॥

**वनधिनभोनिधिप्रमितसङ्ख्ये शकावनिपाल  
कालमं ।**

नेनेयिसे चित्रभानुपरिवर्त्तिसे चैत्रसितेतराष्टमी-

दिन-युत-भौमवार देलनाकुलचित्तदे नोन्तु तल्दिदं

जननुतनिन्द्रराजनखिलामरराजमहाविभूतियं ॥२७॥

[ यह लेख राष्ट्रकूट नरेश कृष्णराज ( तृतीय ) के पौत्र इन्द्रराज की मृत्यु का स्मारक है । इन्द्रराज गङ्गाजायेय का दौहितृ और राज-चूड़ामणि का दामाद था । 'रदकन्दर्पदेव' 'राजमार्त्तण्ड' 'कलिगलोत्तमण्ड' 'बीरर बीर' आदि इन्द्रराज की प्रताप सूचक उपाधियाँ थीं । १४ वें से लगाकर २६ वें पद्य तक इन्द्रराज के एक गेंद के खेल में नैपुण्य का विवरण है । पर अनेक शब्दों का अर्थ अज्ञात होने के कारण इन पद्यों का पूरा-पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका है । सम्भवतः यह 'पोलो' के सदृश कोई खेल रहा है । क्योंकि उक्त पद्यों में गेंद, घोड़ों और खेल के दण्डों का उल्लेख है । इन्द्रराज की मृत्यु शक सं० ६०४ चैत्र सुदि ८ भौमवार को हुई । ]

५८ ( १३४ )

**तेरिन बस्ति के पश्चिम की ओर एक स्तम्भ पर**

( लगभग शक सं० ६०४ )

( उत्तर मुख )

.....वोर बेलपडिगु.....इन्ददे पोगलिसेम्बेने...

गिय...दिसिमा...लदो...नु... मे...गदेन ...ब्ब... तेसु...  
पोदिसुवेल्तेयुरि... बीडि... नगिसुगुवेम्ब... वपेद...क्ये  
मावन-गन्ध-हस्ति यं ॥

अदिरदिदिचिर्चनिन्दरि...नेने पायिसि तन्न मिण्डमुं  
कुदुरेय येम्बुं बेरसि बील्वदु मेण्णिदिरे...देहु काल् गुदि—  
गोले ताने.....

( पूर्व मुख )

साधिसि पोग.....निरदे.....दिब.....  
बेरित.....न्तलिय.....ल्दरि...लय.....ल्दन्तवल्ली  
.....पेनकेल.....बोलगदोस्ताये.....उनता.....  
यविट्टेनेवे.....अलिपि,.....य.....ण्डलु—

अलिदु निजाधिपं बेससिदेब्बेसनं कुसिदिम्मंकेलुवा-  
ल्वलिपननव्यवस्थितननोब्बेसकल्कुव जोलगल्लरं  
पलियेदे यिल्लदोल्पलेयुतिप्पुदु मावन गन्धहस्ति यं ॥  
परवलवेय्दि कय्दुवेडेयाडुव ताण्णदोल्लि बीरमं  
परवधु वट्टेलातरेडेयाडुवताण्णदोल्लि सौचमं ।  
परिकिसि सन्दरिल्ल पेरोरब्बरुवेन्नलिदण्णु सौचमे-  
म्बरदरेल .....

( दक्षिण मुख )

.....वागेदि—

ट्टिगरन...वुदं दारेगे वक्कुमे मावनगन्धहस्ति यं ॥

ओडनेय नायककुदिदु तागुमे...मल्व वक्कदोड्डुपु—

ण्वडुविनविल्दु सन्दु सवकट्टलिदल्लिगे नूड्कि बीरम-  
 च्चलिविनमामे तल्लिरिदु गेल्देवरातियनेन्दु पोच्चरि-  
 नुडिवल्लिगण्डरं नगुवुदोदृजि भावनगन्धहस्तियं ॥  
 अण्णुगिनेल्ले राजचूडा-  
 मण्णिमार्गेडे मल्लनीये गेल्वे लेपद वि-

त्रण्ण.....

( पश्चिममुख )

.. ललागे कण्णे पारुवल्लि वित्तरिसुवुदरियेंगतियनें  
 एनेनेगल्द पिट्टुगं बीडिनसौचीरनो प्रचण्डभुजदण्डंभावनगन्ध-  
 हस्ति कविजनविनुतं मोनेमुट्टे गण्डनाहवसौण्ड बरेचित्र-  
 भानुसम्बत्सरमधिकाषाढबहुल दसमीदिनदोल्गुरु-  
 चरणमूलदोल्सुभपरिणामदे पिट्टनिन्द्रलोकक्रोद' ॥

[ यह लेख एक भावन गन्धहस्ति नामक वीर योद्धा की मृत्यु का स्मारक है। युद्ध में अद्वितीय वीरता के कारण इसे एक राजा राज-चूड़ामणि मार्गेडेमल्ल ने अपनी सेना का नायक बनाया था। चित्रभानु सम्बत्सर की आषाढ वदि १० को इस वीर का प्राणान्त हुआ। यह लेख बहुत घिस गया है इससे पूरा पूरा नहीं पढ़ा गया। शक सं० १०४ चित्रभानु संवत्सर था। लेख की लिखावट से भी यह समय ठीक सिद्ध होता है। ]



५६ ( ७३ )

शासन वस्ति के सामने एक शिला पर ।

( शक सं० १०३६ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।

अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥

नमो वीतरागाय नमस्सिद्धेभ्यः ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द-महामण्डलेश्वरं द्वारवती-  
 पुरवराधीश्वरं यादव-कुलाम्बर-द्यु-मणि सम्यक्क-चूडामणि  
 मलपरोल्गण्डाद्यनेकनामावली-समालङ्कितरूप श्रीमन्महामण्ड-  
 लेश्वरं त्रिभुवनमल्ल तल्लकाडुगोण्ड भुज-बल-वीर-गङ्ग-  
 विष्णुवर्द्धन-होय्सल-देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्ध  
 मानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुद्धारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-

धन-वृत्त-स्तन-हारनुप्र-रणधीरं मारनेनेन्दपै ।

जनकं तानेने माकण्ठवे विबुध-प्रख्यात-धर्म-प्रयु-

क्त-निकामात्त-चरित्रे तायेनलिदेनेचं महाधन्यनो ॥ ३ ॥

कन्द ॥ वित्रस्तमलं बुध-जन-मित्रं द्विजकुलपवित्रनेचं जगदोलु ।

पात्रं रिपु-कुल-कन्द-खनित्रं कौण्डिन्य-गोत्रनमल्लचरित्रं ॥४॥

मनुचरितनेचिगाङ्गन

मनेथोलु मुनिजन समूहमुं बुधजनमुं ।

जिनपूजने जिनवन्दने ।

जिनमहिमेगलावकालमुं सोभिसुगुं ॥ ५ ॥

उत्तम-गुण-ततिवनिता—

वृत्तियनेलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लमूक—

य्येत्तुविनममल-गुण-स-

स्पत्तिगे जगदोलगे पोचिकब्बेये नोन्तलु ॥ ६ ॥

अन्तेनिसिद् एचिराजन पोचिकब्बेय पुत्रनखिलती-  
त्यंकरपरमदेवपरमचरिताकर्ण्येनोदीर्ण्य-विपुल-पुलक-परिकलित  
वारबाणनुवसम-समर-रस-रसिक-रिपुनृपकलापावलेप-लोप-लो-  
लुप-कृपाणनुवाहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-विनोदनुं सकललोक-  
शोकापनोदनुं ।

वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण-

शक्तिशक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डीवकोदण्डिनः ।

यस्तद्वद्वितनेति विष्णुनृपतेष्कार्यं कथं माहशै

र्गङ्गो गङ्ग-तरङ्ग-रञ्जितयशो-राशिस्स-वर्ण्यो भवेतु ॥ ७ ॥

इन्तेनिप श्रीमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्टं गङ्गराजं

चालुक्य-चक्रवर्ति-त्रिभुवनमल्ल-पेम्माडिदेवन दलं पन्निर्व्व-  
स्सामन्तर्व्वैरसुकण्णोगाल-बीडिनलु विट्टिरे ॥

कन्द ॥ तेगे बारुवमं हारुव

बगेयं तनगिरुलबवरमेनुत सवङ्गं ।

बुगुव कटकिगरनलिरं

पुगिसिदुदु भुजासि गङ्ग-दण्डाधिपन ॥ ८ ॥

वचन ॥ एम्बिनमवस्कन्दकेलियिन्द मनिवरुं सामन्तरुमं  
भङ्गिसितदीय-वस्तुवाहन-समूहमं निजस्वामिगे तन्दु कोट्टु  
निजभुजावष्टम्भके मेच्चिवमेच्चिदेंवेदि कोल्लिमेने ॥

कन्द ॥ परम-प्रसादमं पडे—

दु राज्यमं धनमनेनुमं बेडदन —

स्वरमागे बेडिकोण्डं

परमननिदनहृदचर्चनाच्चित-चित्तं ॥ ९ ॥

अन्तु बेडिकोण्डु—

वृत्त ॥ पसरिसे कीर्त्तनंजननि पोचलदेवियरर्थिवट्टु मा-  
डिसिद जिनालयकमोसेदात्म-मनोरमे लद्धिमदेवि मा-  
डिसिद जिनायलकमिदु पूजन येजितमेन्दु कोट्टु स-  
न्तोसमनजस्रमाम्पनेने गङ्गचमूपनिदेनुदात्तनो ॥ १० ॥

अकर ॥ आदियागिर्पुदार्हत-समयक्के मूलसङ्घं कोण्डकुन्दा-  
न्वयं

बादु वेडदं बलयिपुदल्लिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।

बोधविभवद कुक्कुटासन-मलधारि-देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-  
ङ्गादमेसेदिर्प शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुडु गङ्गचमूपति ११

गङ्गवाडिय बसदिगलेनितोलवनितंतवानेय्दे पोसयिसिदं

गङ्गवाडिय गोम्मटदेवर्ग सुत्तालयमनेय्दे माडिसिदं ।

गङ्गवाडिय तिगुलरं बेड्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिचिर्चिकोट्टं

गङ्गराजना मुन्नन गङ्गरायङ्गं नूर्म्मडिधन्यनस्ते ॥ १२ ॥

एत्तिदूनेल्लिगल्लि नेलेवीडने माडिदनेल्लिगल्लि कण्  
पत्तिदुदेल्लिगल्लि मनमावेडेयेय्दिदुदेल्लिगल्लि स-  
म्पत्तिन जैनगेहमने माडिसे देशदोलेल्लिगल्लिगे-  
त्तेत्तलुमावगं पलेय माल्केवोलादुदु गङ्गराजनिं ॥ १३ ॥

जिनधम्मप्रणियत्ति मब्बरसियं लोकं गुणंगोलुदे-  
केने गोदावरि निन्द कारणदिनीगलु गङ्गदण्डाधिना-  
थनुमं कावेरि पेच्चि सुत्ति पिरिदुं नीरोत्तियुं मुट्ठित्ति-  
ल्लेने सम्यक्कुद पेम्पनिनेरेये वण्णप्पण्णने वण्णपं ॥ १४ ॥

इन्तेतिप दण्डनायक गङ्गराजं सकवर्ष १०३८ नेय हेमण  
म्बि संवत्सरद फाल्गुण शुद्ध ५ सोमवार दन्दु तम्म गुरुगलु  
शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवर कालंकच्चि परमनं कोट्टू ॥ दण्डनायक  
एचिराजनुं तनगभिवृद्धियागे सलिसिदं । परमन सीमान्तरं  
मूडलु सल्ल्यद कल्ल हल्लवे गडि । तेङ्कलु कडिद कुम्मरि होर-  
गागि । हडुवलु बेर्केनोलगेरेय माविनकेरेय गहेयोलगागि ।

बेलुगोलके होद बट्टे गडि । बडगलु मेरे । नेरिल-केरेय  
मूडण कोडियि तेङ्कण होसगेरेय-च्चुगट्टादुदेल्लं । आहोसगेरेय  
बडगण कोडियिन्दं मूड होद नीरुवकेयिन्दं । अय्कनकट्टद ।  
ताइवल्लदिन्दं । तेङ्कलादुदेल्लविनितुं परमङ्गे सीमेयागि बिट्ठ  
दत्ति ॥ ईधम्ममं प्रतिपालि-सिदग्गे महापुण्यमकुं ॥

वृत्तं ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव-पुरुषर्गायुं महाश्रीयुम  
क्केयिदं कायदे कायव पापिगे कुरुत्तेत्रोर्व्वियोल् बाणरा-

सियोलेल्कोटि मुनीन्द्रं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदे-  
न्दयसं सागुमिदेन्दु सारिदपु वीशैलाचरं सन्ततं ॥ १५ ॥

श्लोक ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेद्वसुन्धरां ।

षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ १६ ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यानि यानि यथा धर्मं तानि तानि तथा फलं ॥ १७ ॥

विरुद-रूवारि-मुखतिलकं वर्द्धमानाचारि खण्डरिसिदं ॥

[ यह लेख एक दान का स्मारक है । मार और माकिण्डवे के पुत्र एचिराज हुए । एचिराज और पोचिकडवे के पुत्र महाप्रतापी गङ्गराज हुए । ये होयसल नरेश विष्णुवर्द्धन के महादण्डनायक थे । इन्होंने तिगुलों ( तैलङ्गों ) को परास्त कर गङ्गवाडि देश को बचा लिया तथा चालुक्य-नरेश त्रिभुवनमल्ल पेर्माडिदेव की सेना को जीतकर अपने भारी पराक्रम का परिचय दिया । उनकी स्वामि-भक्ति तथा विजय-शीलता से प्रसन्न होकर विष्णुवर्द्धन नरेश ने उन्हें पारितोषिक माँगने को कहा । उन्होंने 'परम' नामक ग्राम माँगा । इस ग्राम को पाकर उन्होंने उसे अपनी माता पोचल देवी तथा अपनी भार्या लक्ष्मीदेवी द्वारा निर्मापित जिन-मन्दिरों की आजीविका के हेतु अर्पण कर दिया । यह लेख इसी दान का स्मारक है । गङ्गराज जैसे पराक्रमी थे वैसे धर्मिष्ठ भी थे । इस दान के अतिरिक्त इन्होंने गङ्गवाडि परगने के समस्त जिन-मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया, गोम्मट स्वामी का परकोटा बनवाया तथा अनेक स्थलों पर नये-नये जिन-मन्दिर निर्माण कराये । लेख में कहा गया है कि इन कृत्यों से क्या गङ्गराज गङ्गराय ( चामुण्डराय-गोम्मट स्वामी के प्रतिष्ठाकारक ) की अपेक्षा सौ गुने अधिक धन्य

नहीं कहे जा सक्ते ? लेख में परम ग्राम की सीमा दी हुई है जिससे विदित होता है कि यह ग्राम श्रवण वेल्गोल के समीप ही ईशान दिशा में था । उक्त दान शक संवत् १०३६, फाल्गुण सुदि ५ सोमवार को दिया गया था । गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय देशीगण पुस्तक गच्छ के कुक्कुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य थे । दान की रक्षा के हेतु लेख में कहा गया है कि जो कोई इस दान-द्रव्य में हस्तक्षेप करेगा वह कुरुक्षेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिल गौर्धों व वेदज्ञ पण्डितों के घात का पापी होगा । ]

६० (१३८)

**बाहुबलि वस्ति के पूर्व की ओर प्रथम वीरगल् पर**

( लगभग शक सं० ८६२ )

श्रीगाश्रयवेने तेज-

कागरवेने नेगल्द गङ्गवज्जन लेङ्क

ब्बोगाय्चनेम्बरवरो-

ल्बोगेय ( बोयिग ) मार्पडेगोरण्टनणन बण्ट ॥ १ ॥

रक्कसमणिय कोण्येयगङ्गन कालेगदोस्तन्न सावं निश्रयिस्स  
कालेगकिडे रक्कसमणिय कलिपि तन्न बलमुं मार्बलमुं तन्नने पोगले ।

ओडने कालग बयिसिद घोलयिलर्परपिङ्गे मार्बलं

बिडे कडिकय्दा नूङ्कि किडे तन्न बलं पेरबागदल्लि ब-

न्दडिगेडदन्दे वजियेले पायिसि मूलमेल्लमं पडल्

वडिसि पोगल्लेयं पडेदु णान्तुदु बोयिगनान्तानिच्चट ॥२॥

अदिरि...लिक वहेगन कोण्येयगङ्गन मोत्तमेल्लमं

१०

बेदरुविनं तेरल्चि पलरुं तुलिलागलनिक्कि तन्न बी-  
 रद...लदेल्गेयं परबलं पेगलल्वडिकं...मागि बि-  
 लददटिनलुर्केयं मेरेदु सावुदु बायिगनन्तिलाग्रदेल् ॥३॥  
 नट्ट-सरलगलिन्दिदक (कन्वयको) यिंकिडि केय्दुबेडिरो-  
 ल्लिट्ट निसान्तहेतुगलिनादमगुर्बिसिबट्टु बीलुवो-  
 ल्तोदृने नोन्दु बील्वेडेये(ल् नय्य) गोण्डु विमान म...लं  
 मुट्टुलुमित्तरिच्च गल बायिगनं दिविजेन्द्र-कान्तेय... ॥४॥

[ यह एक वीरगल है । इसमें उल्लेख है कि गङ्गवज्र ( नरेश ) अपर नाम रक्कसमणि के बायिग नाम के एक वीर योद्धा ने 'वहेग' और 'कौण्येय गङ्ग' के विरुद्ध युद्ध करते हुए अपने प्राण विसर्जित किये । युद्ध में इसने ऐसी वीरता दिखाई कि जिसकी प्रशंसा उसके विपक्षियों ने भी की ]

ई१ ( १३६ )

उसी स्थान के द्वितीय वीरगल् पर

( लगभग शक सं० ८७२ )

श्री-युवतिगे निज-विजय-  
 श्री-युवतिये सवतियेनिसे रण-मूर्ख-नृपा-  
 म्नायदोलायद मेय्-गलि  
 बायिकनेम्ब नेगल्लेयं प्रकटिसिदन् ॥१॥  
 श्री-दयितन बायिकन म-  
 नो-दयितेगे जभदोलेसेद जाबय्यगे ताम्

आदर्तनयर्पेलल्

मादुवरं दौयिलम्मनेम्बर् पेसरिं ॥२॥

अवरोड-वुट्टिदोलरिविन

तवरेने धर्मदइगुन्तियेने नेगल्दल्भू-

भुवनक्के सावियब्बिगम्

अवनिजेगं दोरेयेनल्के पेण्डिरुमोलरे ॥३॥

धोरन तनयं विबुधो-

दारं धरेगेसेद लोक-विद्याधरनन्त

आ-रमणिगे पतियेने पेरर्

आरुमनासतिय पेम्पिनेल् पोलिपुदे ॥४॥

आवक-धर्मदोल् दोरेयेनल् पेरिल्लेने सन्द रेवति-

आवकि ताने सज्जनिकेयोल् जनकात्मजे ताने रूपिनेल्-

देवकि ताने पेम्पिनेलरुन्धति ताने जिनेन्द्र-भक्ति-सद्-

भावदे सावियब्बे जिन-शासन-देवते ताने काणारे ॥५॥

उदयविद्याधरनप्प सायिब्बेन्द्र

( उसी पाषाण के शिखर पर )

...रियिसिददि...मा मा ...द जन...न्दे मूप...

...रदि...लि...प...मु...यनि...न प...नुडिद-

गिदन्दरागि पसियानिवगानादेनेदल्लि मुनेल् कादि यलि...

विल्दवरन जननि सायिब्बे कण्ड...डिदरदे केय्यार जि...

मालाग्रद...करिप...लिनेतुमदे नुडियिडे...द्रागि...नुडिदु



नुव गदल् बगियुरल्लि सत्तल्.....वेत्त.....यब्बे सायलेन्दु  
पेण्डतिये.....वेत्तण्णलोगले पल्लं तोलगिद रायद चल मसल  
बल्लगि गन्दिनिप्पण्डतियिन् ।

[ यह भी एक वीरगल है जिसमें पराक्रमी और प्रसिद्ध बायिक और जाब्ये की पुत्री 'सावियब्बे' का परिचय है। सावियब्बे का पति 'धोर' का पुत्र 'लोक विद्याधर' था। यह स्त्री रेवती, देवकी, सीता, अरुन्धती आदि सद्यः रूपवती, पतिव्रता और धर्मप्रिया थी। वह पक्षी आदिका थी। जिन भगवान् में उसकी शासन देवता के सद्यः भक्ति थी। उसने 'बगियुर' नामक स्थान पर अपने प्राण विसर्जित किये ]

[ नोट—लेख का अन्तिम भाग जिसमें इस वीराङ्गना के प्राणत्याग का वर्णन है, बहुत घिस गया है इससे स्पष्ट नहीं है। ऐसा कुछ विदित होता है कि यह सती स्त्री अपने पति के साथ युद्ध में गई थी और वहाँ लड़ते-लड़ते इसने वीरगति पाई। लेख के ऊपर जो चित्र खुदा है उसमें यह स्त्री घोड़े पर सवार हुई हाथ में तलवार लिए हुए एक हाथी पर सवार वीर का सामना करती हुई चित्रित की गई है। हाथी पर चढ़ा हुआ पुरुष इस पर वार करता हुआ दिखाया गया है। 'सावियब्बे' सावियब्बे का संक्षेप रूप है ]

६२ ( १३१ )

गन्धवारण वस्ति में शान्तीश्वर की मूर्ति के  
पादपीठ पर

( लगभग शक सं० १०४४ )

प्रभाचन्द्र-मुनीन्द्रस्य पद-पङ्कजपट् पदा ।

**शान्तला शान्ति-जैनेन्द्र-प्रतिबिम्बमकारयत् ॥१॥**

(सिंहपीठ पर)

उक्तौ वक्तृ-गुणं दृशोस्तरलतां सद्बिभ्रमं भ्रूयुगे  
काठिण्यं कुचयोन्रितम्ब-फलके धत्सेऽतिमात्र-क्रमम् ।  
दोषानेव गुणीकरोषि सुभगे सौभाग्य-भाग्यं तव  
व्यक्तं शान्तल-देवि वक्तुमवनौ शक्नोति को वा  
कविः ॥२॥

राजते राज-सहीव पार्श्वे विष्णु-महीभृतः ।  
विख्याता शान्तलाख्या सा जिनागारमकारयत् ॥३॥

[ नोट—गन्धवारण वस्ति का निर्माण शान्तल देवी ने शक  
सं० १०४४ विरोधिकृत संवत्सर में व उससे कुछ पूर्व कराया था ।  
देखो लेख नं० १३ (१४३) ]

६३ ( १३० )

**एरडु कटे वस्ति ॥ आदीश्वर की मूर्ति  
के सिंहपीठ पर**

( लगभग शक सं० १०४० )

**शुभवन्द्र-मुनीन्द्रस्य सिद्धान्ते सिद्ध-नन्दिनः ।**

पद-पद्म-युगे लक्ष्मीर्लक्ष्मीरिव विराजते ॥१॥

या सीता पतिदेवताव्रतविधौ चान्तौ क्षितिर्या पुन-  
र्या वाचा वचने जिनार्चनविधौ या चेलिनी केवलम्  
कार्ये नीतिवधू रणे जय-वधूर्या गङ्गसेनापतेः

सा लक्ष्मीर्वसति गुणैक-वसति व्यतीतननूतनाम् ॥ २ ॥

श्रीमूलसङ्घद देसिग गणद पुस्तकान्वय ॥

६४ ( ७० )

## कत्तले वस्ति की ऊपर की मञ्जिल में आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

भद्रमस्तु श्रीमूलसङ्घद देशिकगणद श्रीशुभचन्द्र-  
सिद्धान्त-देवर गुडु दण्डनायक-ग(ङ्गर)य्यनु तम्म तायि पो-  
चव्वेगे माडिसिदी वसदि मङ्गलं ॥

[ दण्डनायक गङ्गरय्य ( या गङ्गपय्य ) शुभचन्द्रसिद्धान्तदेव के  
शिष्य, ने यह बस्ती अपनी माता पोचव्वे के लिए निर्माण कराई ।  
( आगे का लेख देखो ) ]

६५ ( ७४ )

## शासन वस्ति में आदीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०४०)

आचार्यशुभचन्द्रदेवयतिपो राद्धान्त-रत्नाकर-  
स्तातोऽसौ बुधमित्रनामगदितो माता च पोचाम्बिका ।  
यस्यासौ जिनधर्मनिर्मलरुचिश्रो गङ्गसेनापति-  
ज्जैनं मन्दिरमन्दिराकुलगृहं सद्भक्तितोऽचीकरत् ॥ १ ॥

ई६ (१२०)

## चामुण्डराय वस्ति में नेमीश्वर की मूर्ति के सिंहपीठ पर

(लगभग शक सं० १०६०)

गङ्गसेनापतेस्सुनूर् एचणो भारतीचणः ।

त्रैलोक्यरञ्जनं जैनचैत्यालयमचीकरत् ॥ १ ॥

बुधबन्धुस्सतां बन्धुरेचणः कमलाचणः ।

बोप्पणापरनामाङ्कचैत्यालयमचीकरत् ॥ २ ॥

ई७ (१२१)

## ऊपर की मञ्जिल में पार्श्वनाथ की मूर्ति के पादपीठ पर

( लगभग शक सं० ८६२ )

जिन गृहमं बेलगोलदोल्

जनमेल्लं पोगले मन्त्रि-चामुण्डन न-

न्दनोलविं माडिसिदं

जिन-देवणनजितसेन-मुनिवर गुडुं ॥ १ ॥

[ चामुण्ड के पुत्र और अजितसेन मुनि के शिष्य जिनदेवण ने बेलगोल में जिन मन्दिर निर्माण कराया । ]

ई८ (१५६)

## काञ्चिन देाणे के एक स्तम्भ पर

(शक सं० १०५६)

( उत्तर मुख )

श्रीमत्-परम-गम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरूप श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल चलद-  
ङ्कराव होयसल-सेट्टियरु अय्यावलेय युण्डिगेय दम्मिसेट्टिय मगं  
मल्लि-सेट्टिगे चलदङ्कराव-होयसलसेट्टिय एन्दु पेसरुकोट्ट-  
रिन्तु सकवर्ष १०५६ सौम्यसंवत्सरद माघ-मासद शुक्ल-  
पक्षद सङ्क्रमणदन्दु तन्नवसानमनरिदु तन्न बन्धुगलं विडिसि  
समचित्तदोलु मुडिपि स्वर्गस्थनादं ॥

( पश्चिम मुख )

आतन सति एन्तप्पलेन्दडे ॥

तुरवम्मरसग सुगवेग सुपुत्रि स्वस्ति श्रीजिन-गन्धोदक-  
पवित्री - कृतोत्तमाङ्गैयुरुंआहाराभयमैषज्यशास्त्रदानविनोदेयरप  
चट्टिकब्बे तन्न पुरुष चलदङ्कराव होयसल सेट्टिगं वनगं तन्न  
मग बूचण्णङ्ग परोच्च-विनेयमागि माडिसिद निसिधिगे ॥

[ त्रिभुवनमल्ल चलदङ्करावहोयसलसेट्टि ने दम्मिसेट्टि के पुत्र  
मल्लिसेट्टि को चलदङ्करावहोयसलसेट्टि की उपाधि प्रदान की ।  
मल्लिसेट्टि 'अय्यावले' के एक राज्यकर्मचारी ( युण्डिगेय ) थे । इनकी  
पत्नी जैनधर्म-परायणा चट्टिकब्बे थी जिसके पिता और माता के नाम

क्रमशः तुरवम्मरस और सुग्गब्बे थे । इसी साध्वी स्त्री ने अपने पति की यह निषद्या निर्माण कराई । ]

[ नोट—अद्यावले सम्भवतः बम्बई प्रान्त के कलाद्रि जिलान्तर्गत आधुनिक 'ऐहोले' का ही प्राचीन नाम है । लेख में शक १०५६ सौम्य संवत्सर का उल्लेख है । पर ज्योतिष-गणना के अनुसार शक १०५६ पिङ्गल संवत्सर था और सौम्य संवत्सर उससे आठ वर्ष पूर्व शक सं० १०५१ में था । अतएव लेख का ठीक समय शक सं० १०५१ ही प्रतीत होता है ]

दृष्ट (१५८)

काञ्चिन दोणे के प्रवेशद्वार के निकट पड़े हुए

एक टूटे पाषाण पर\*

( लगभग शक सं० १०६२ )

( प्रथम मुख )

.....

.....व्यावृत्तविच्छिन्नये ।

...क्र...कलिकल्मषत्यनुदिनं श्रीबालचन्द्रमुनि

पश्याम श्रुत-रत्न-रोहणधरं धन्यास्तु नान्ये वयं ॥१॥

प्रचुर-कलान्वितरकुटिलरचञ्चलसुहृ-पक्ष-वृत्त-

दीर्घापचय-प्रकाशरेनेबालचन्द्र देवप्रभावमेनचचरिये ॥२॥

श्री बालचन्द्र .....

\* यह पाषाण अब नहीं मिलता ।

( द्वितीय मुख )

.....भद्रमप्य त्रिलो.....वरविहितपूर्त्त नित्य-  
कीर्त्ति..चित्य-समुचितचरितो य...र-धृत...धुविनू.....यित्वाहं  
भुजबिम्बचितमणि .....कर त्वं चिरादिमु.....सम...  
.....गतिभिस्स.....क्षत्रियरुद्ध-श्रीकवि.....नध.....  
श्रोवहं...

( तृतीय मुख )

.....रानो वभा.....चित्रतनूभृताम.....यतेतरा ...।  
सकल.....वन्द्य पादारविन्दं स...ममूर्त्ति सर्व्वसत्त्वा...वक्-  
दुरित-राशिभव्यद.....नुविजित - मकरकेतु.....र्त्तित्र -  
तीन्द्रं । भानो.....सुविक...चक्रा.....रो तत्पद् भव.....

[ यह लेख बहुत टूटा हुआ है । इसमें बालचन्द्र मुनि की  
कीर्त्ति वर्णित रही है । द्वितीय पद्य पम्परामायण (आश्वास १ पद्य ८)  
में भी पाया जाता है । ]

१० (१५५)

## ब्रह्मदेव मन्दिर के निकट पड़े हुए एक टूटे पाषाण पर

(लगभग शक सं० १०८२)

.....दा...न्वयद हन...य बलिय श्रीगुणचन्द्रसिद्धान्त-  
देवरप्रशिष्यरु श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल शिष्यरु श्री-

**दावणन्दित्रैविद्य-देवरुं भानुकीर्त्तिसिद्धान्तदेवरुं श्री अध्या-  
त्मिबालचन्द्रदेवरु ॥**

परमागमवारिधि (हिम-

किर)णं राद्धान्तचक्रि नयकीर्त्तियमी-

श्वरशिष्यन.....लचित्

परिणतनध्यात्मि बा(लच)न्द्र मुत्तीन्द्रं ॥ १ ॥

बालचं.....

[ यह लेख अधूरा ही पड़ा गया है । हन ( सोगे ) शाखा के गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के प्रमुख शिष्य नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के दाम नन्दि त्रैविद्य देव, भानुकीर्त्ति सिद्धान्तदेव और अध्यात्मि बालचन्द्र ये तीन शिष्य हुए । बालचन्द्र की प्रशंसा का जो पद्य यहाँ है वह उनकी प्राभृतत्रय की टीका के अन्त में भी पाया जाता है देखो शिलालेख नं ६० ( २४० ) पद्य २२ ]

७१ (१६६)

**भद्रबाहु गुफा के भीतर पश्चिम की ओर**

**चट्टान पर\* ( नागरी अक्षरों में )**

( लगभग शक सं० १०३२ )

**श्रीभद्रबाहु स्वामिय पादमं जिनचन्द्र प्रणमतां ।**

\* यह लेख अब नहीं मिलता ।



७२ (१६७)

## भद्रबाहु गुफा के बाहर पश्चिम की ओर चट्टान पर

( शक सं० १७३१ )

शालिवाहन शकाब्दाः १७३१ नैय शुक्लनामसंवत्सरद  
भाद्रपद व ४ बुधवारदल्लि । कुन्दकुन्दान्य (नवय) देसिगणद श्री  
चारु । शिष्यराद अजितकीर्त्ति-देवरु अवर शिष्यरु शान्ति-  
कीर्त्ति देवर शिष्यराद अजितकीर्त्तिदेवरु मासोपवासवं  
सम्पूर्ण माडि ई गवियल्लि देवगतरादरु ।

[ कुन्दकुन्दान्वय देशीगण के चारु ( कीर्त्ति पण्डितदेव ) के शिष्य  
अजितकीर्त्तिदेव के शिष्य शान्तकीर्त्तिदेव के शिष्य अजितकीर्त्ति  
देव ने एक मास के उपवास के पश्चात् शक सं० १७३१ भाद्रपद  
वदि ४ बुधवार को स्वर्गगति प्राप्त की । ]

७३ (१७०)

## भद्रबाहु गुफा के मार्ग पर चरणचिह्न के पास चट्टान प

( सम्भवतः शक सं० ११३६ )

खस्ति श्री ईश्वर संवत्सरद मलयाल कोदयु-सङ्करु  
इल्लिई एच्च गद्देय हडुवण हुण्णिसेय मूरुगुण्डिगे

[ इस स्थान पर खड़े होकर 'मलयाल कोदयु सङ्कर' ने आर्द्र  
भूमि के पश्चिम की ओर इमली के वृक्ष के समीप की तीन शिलाओं

पर बाण चलाये । लेख में संवत्सर का नाम ईश्वर दिया हुआ है ।  
शक ११३६ ईश्वर संवत्सर था ]

७४ ( १६५ )

**पाकार के बाहर दक्षिण भागस्थ तालाब के  
उत्तर की ओर चट्टान पर**

( सम्भवतः शक सं० ११६८ )

स्वस्ति श्रीपराभवसंवत्सरद मार्गसिर बहुल  
अष्टमी सुक्रवारदन्दु मलेयाल अघ्याडि-नायक हिरिय-  
बेट्टदि चिकबेट्टकेच ॥

[ 'मलेयाल अघ्याडि नायक' ने विन्ध्यगिरि से चन्द्रगिरि का निशाना  
लगाया । लेख में पराभव संवत्सर का उल्लेख है । शक ११६८  
पराभव संवत्सर था ]



# विन्ध्यगिरि पर्वत पर के शिलालेख

७५ ( १७६-१८० )

गोम्मटेश्वरकी विशालमूर्ति के वामचरण के पास  
नागरी अक्षरोंमें

श्री चावुण्डे-राजें करवियलें ।

( लगभग शक सं० ६५० )

श्रीगङ्गराजे सुत्ताले करवियले ।

( लगभग शक सं० १०३६ )

[ चामुण्डराज ने ( मूर्ति ) प्रतिष्ठित कराई । गङ्गराज ने परकोटा  
निर्माण कराया । ]

७६ ( १७५, १७६, १७७ )

दक्षिणचरण के पास

( पूर्वद हले कन्नड़ अक्षरों में ) श्रीचामुण्डराजं माडिसिदं ।

( ग्रन्थ और वट्टेलुत्तु, , , ) श्रीचामुण्डराजन् सेय्विवित्तान् ।

( कन्नड़ अक्षरों में ) श्रीगङ्गराज सुत्तालयवं माडिसिदं ।

[ तात्पर्य पूर्वोक्त और समय भी पूर्वानुसार ]

७७ ( १८४ )

**पद्मासन पर**

( लगभग शक सं० १०७२ )

स्वस्ति समस्तदैत्यदिविजाधिप-किन्नर-पन्नगानम-  
 न्मस्तक-रत्ननिर्गत-गभस्तिशतावृत-पाद.....।  
 प्रास्त-समस्त-मस्तक-तमः-पटलं जिनधर्मशासनम्  
 विस्तरमागेनिल्के धरे-वारुधि-सूर्यशशाङ्करुल्लिनं ॥ १ ॥  
 [ जैनशासन सदा जयवन्त हो । ]

७८ ( १८२ )

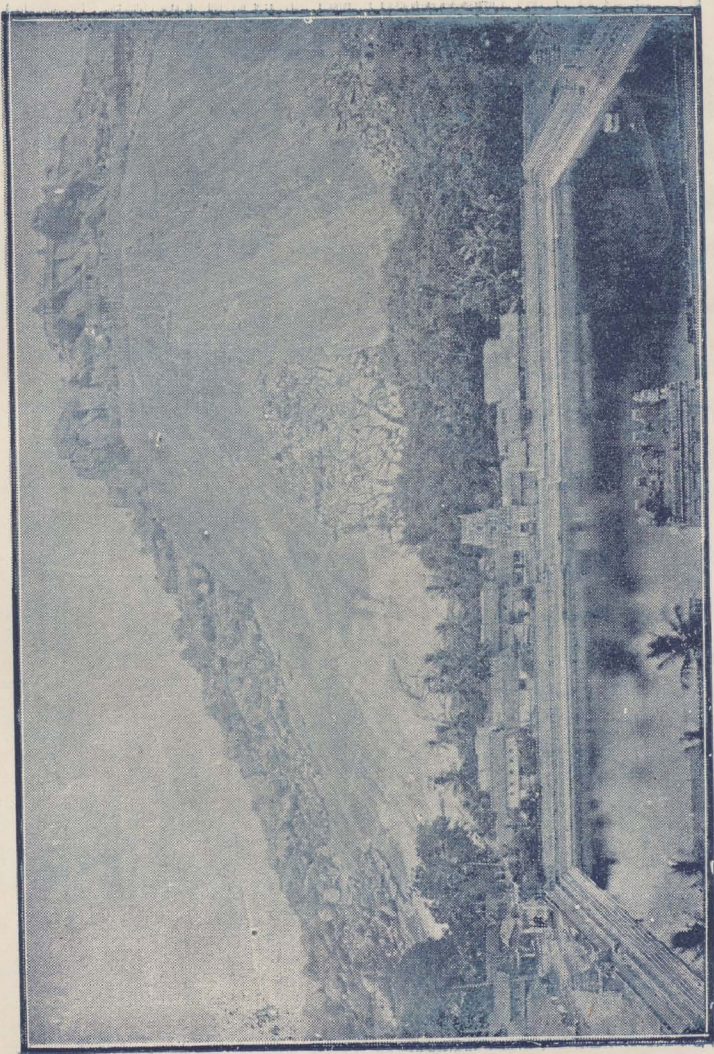
**वाम हस्त की ओर बमीठे पर**

( लगभग शक सं० ११२२ )

श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुडु श्रीबसविसे-  
 द्दियर सुत्तालयद भित्ति य माडिसि चव्वीसतीर्थकरं माडिसिदरु  
 मत्तं श्री बसविसेद्दियर सुपुत्ररु नम्बिदेवसेद्दि बोकि  
 सेद्दि जिन्निसेद्दि बाहुबलि-सेद्दि तम्मय्य माडिसिद  
 तीर्थकर मुन्दण जालान्दरवं माडिसिदरु ॥

[ नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य बसविसेद्दि ने परकोटे की  
 दीवाल बनवाई और चौबीस तीर्थ'करों को प्रतिष्ठित कराया व उनके  
 पुत्र नम्बिदेव सेद्दि, बोकिसेद्दि, जिन्निसेद्दि और बाहुबलि सेद्दि ने  
 तीर्थ'करों के सम्मुख जाळीदार वातायन बनवाया । ]





विन्ध्यगिरि पर्वत ।

७८ ( १८३ )

उपर्युक्त लेख के नीचे जहाँ से मूर्ति के अभिषेक के लिए व्यवहार में लाया हुआ जल बाहर निकलता है

( लगभग शक सं० ११२२ )

श्रीललित सरोवर

८० ( १७८ )

दक्षिण हस्त की ओर बमीठे पर

( लगभग शक सं० १०८० )

श्रीमन्महामण्डलेश्वर प्रतापहोयसल नारसिंहदेवर कैयल महाप्रधान हिरियभण्डारि हुल्लमय्य गोम्मटदेवर पारिश्वदेवर चतुर्विंशतितीर्थकर अष्टविधाचर्चनंगं रिषियराहारदानकं सव-  
णेरं बिडिसि कोट्ट दत्ति ।

[ महाप्रधान हुल्लमय्य ने अपने स्वामी होयसल नरेश नारसिंह देव से सवणेरु ( नामक ग्राम पारिनाषक में ) पाकर उसे गोम्मट स्वामी की अष्टविध पूजन और ऋषि मुनि आदि के आहार के हेतु अर्पण कर दिया ]

८१ ( १८६ )

तीर्थकरसुत्तालय में

( सम्भवतः शक सं० ११५३ )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।



जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रोपृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज-  
परमेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सर्वज्ञ-  
चूडामणि मगरराज्यनिर्मूलनं चालराज्य-प्रतिष्ठाचार्य्यं श्री-  
मत्प्रतापचक्रवर्ति होयसल-श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु पृथ्वीराज्यं  
गेय्युत्तिरलु तत्पादपद्मोपजीवियुं श्रीमन्नयकीर्ति-सिद्धान्त-  
चक्रवर्ति गल शिष्यरु श्रीमदध्यात्मबालचन्द्रदेवर गुडुं स्वस्ति  
समस्तगुणसम्पन्ननुं जिनगन्धोदक-पवित्रोक्तोत्तमाङ्गनुं सद्धर्म-  
कथाप्रसङ्गनुं चतुर्विधदानविनोदनुमण्य पदुमसेट्टिय मग  
गोम्मटसेट्टि खरसंवत्सरद पुण्य शुद्ध उत्तरायण-सङ्क्रान्ति  
पाडिदिव बृहवारदन्दु श्रीगोम्मटदेवर चव्वीसतीर्थकर अष्ट-  
विधान्चर्चनेगे अक्षयभण्डारवागि कोट्ट गद्याण ॥ १२ ॥

[ होयसल नरेश नारसिंह के राज्य में पदुमसेट्टि के पुत्र व अध्यात्मि  
बालचन्द्रदेव के शिष्य गोम्मट सेट्टि ने गोम्मटेश्वर की पूजार्चन के लिए  
१२ 'गद्याण' का दान दिया । ]

[ नोट—दान 'खर' संवत्सर की उक्त तिथि को दिया गया था ।  
शक सं० ११५३ खर संवत्सर था । ]

८२ ( २५३ )

ब्रह्मदेव मण्डप में एक स्तम्भ पर

( शक सं० १३४४ )

( दक्षिण मुख )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वाद्दामोघलाब्धनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीबुद्धरायस्य वभूव मन्त्री श्रीबैचदण्डेश्वरनामधेयः ।

नीतिर्यदीया निखिलाभिनन्द्या निशेषयामास विपक्ष-

लोकम् ॥ २ ॥

दानं चेत्कथयामि लुब्धपदवीं गाहेत सन्तानको

वैदग्धिं यदि सा बृहस्पतिकथा कुत्रापि संलीयते ।

क्षान्तिं चेदनपायिनीं जडतया स्पृश्येत सर्व्वं सहा

स्तोत्रं बैचपदण्डनेतुरवनौ शक्यं कवीनां कथं ॥ ३ ॥

तस्मादजायन्त जगद्जयन्तः पुत्रास्त्रयो भूषितचारुशीलाः ।

यैर्भूषितोऽजायत मध्यलोको रत्नैस्त्रिभिर्जैन इवापवर्गः ॥ ४ ॥

दूरुगपदण्डनाथमथ बुद्धमप्यनुजौ

स्वमहिमसम्पदाविरचयन् सुतरां प्रथितौ ।

प्रतिभटकामिनीपृथुपयोधरहारहरो

महितगुणोऽभवद् जगति मङ्गपदण्डपतिः ॥ ५ ॥

दाक्षिण्यप्रथमास्पदं सुचरितस्यैकाश्रयस्सत्यवा-

गाधारस्सततं वदान्यपदवीसञ्चारजङ्घालकः ।

धर्म्मोपपन्नतरुः क्षमाकुलगृहं सौजन्यसङ्कोतभूः

कीर्तिं मङ्गपदण्डपोऽयमतनोऽजैनागमानुव्रतः ॥ ६ ॥

जानकीत्यभवदस्य गेहिनी चारुशीलगुणभूषणोज्ज्वला ।

जानकीव तनुवृत्त-मध्यमा राघवस्य रमणीयतेजसः ॥ ७ ॥

आस्तां तयोरस्तमितारिवर्गौ पुत्रौ पवित्रोक्तधर्म्ममार्गौ ।

जायानभूत्तत्र जगद्विजेता भव्याग्रणी ब्वैचपदण्डनाथः ॥ ८ ॥

इरुगपदण्डाधिपतिस्तस्यावरजस्समस्तगुणशाली ।

यस्य यशश्चन्द्रिकया मीलन्ति दिवाप्यरातिमुखपद्माः ॥ ६ ॥

वृत्त ॥

ब्रह्मन् भाललिपिं प्रमाज्जय न चेद् ब्रह्मत्वहानिर्बभवे-

दन्यां कल्पय कालराजनगरीं तद्वैरिपृथ्वोभृतां ।

वेताल ब्रज वर्द्धयोदरततिं पानाय नव्यासृजां

युद्धायोद्धतशात्रवैर् इरुगपद्मापः प्रकोपोऽभवत् ॥ १० ॥

यात्रायां ध्वजिनीपतेरिरुगपद्मापस्य धाटीधट्-

घोटीघोरखुरप्रहारततिभिः प्रोद्धतधूलिव्रजैः ।

रुद्धे भानुकरेऽगमद्दिपुकराम्भोजं च संकोचनम्

( पश्चिम मुख )

प्रापत्कीर्त्तिकुमुद्रती विकसनं दीप्तः प्रतापानलः ॥ ११ ॥

यात्रायामिरुगेश्वरेण सहसा शून्यारिसौधाङ्गण-

प्रोद्धासद्विधुकान्तकान्तशकले गच्छद्वनेभाधिपः ।

हत्वा स्वप्रतिमां प्रतिद्विपमिति छिन्नैकदन्तस्तदा

त्राहि त्राहि गजाननेति बहुधा वेतालवृन्दैस्तुतः ॥ १२ ॥

को धात्रा लिखितं ललाटफलके वर्त्त प्रमाण्डुं क्षमो

वार्त्तां धूर्त्तवचोमयीमिति वयं वार्त्तान्न मन्यामहे ।

यद् धात्र्यामिरुगेन्द्रदण्डनृपतौ सञ्जातमात्रे प्रियो

निश्श्रीरप्यधिकश्रियाघटि रिपुस्सश्रीरपश्रीकृतः ॥ १३ ॥

यद् बाहाविरुगेन्द्रदण्डनृपतेर्बिभ्रत्यनन्ताधुरं

शेषाधीशफणागणे नियमितां सखाङ्गनायास्सदा ।

गाढालिङ्गनसान्द्रसम्भवसुखप्रोद्भूतरोमावलिः  
साहस्रौ रसनामधात्तवगुणान् स्तोतुं कृतार्थः फणी ॥ १४ ॥  
आहारसम्पदभयार्पणमौषधं च

शास्त्रं च तस्य समजायतनित्यदानम् ।  
हिंसानृतान्यवनिताव्यसनं स चौर्यं  
मूर्च्छा च देशवशतोऽस्य बभूव दूरे ॥ १५ ॥

दानं चास्य सुपात्र एव करुणा दीनेषु दृष्टिर्जिने  
भक्तिर्द्धर्मपथे जिनेन्द्रयशसामाकर्त्तनेषु श्रुती ।  
जिह्वा तद्गुणकीर्त्तनेषु वपुषस्सौख्यं च तद्वन्दने  
घ्राणं तच्चरणाब्जसौरभभरे सर्व्वं च तत्सेवने ॥ १६ ॥

यिरुगपदण्डनाथयशसा धवले भुवने  
मलिनिमसौस्तवः परमधीरदृशां चिकुरे ।  
बहति च तस्य बाहुपरिधे धरणीवलयं  
परमितरीतराक्रम-कथापि च तत्क्रुचयोः ॥ १७ ॥  
कर्त्त्रैर्व्विस्मृतकुण्डलैरतिलकासङ्गैर्ललाटस्थलै-  
राकीर्त्त्रैरलकैः पयोधरतटैरस्पृष्टमुक्तागुणैः ।  
बिम्बोष्ठैरपि वैरिराजसुदृशस्ताम्बूलरागोज्झितै-  
र्यस्य स्फारतरं प्रतापमसकृद् व्याकुर्व्वते सर्व्वतः ॥ १८ ॥

( पूर्वमुख )

यत्कीर्त्तिभिस्सुरधुनीपरिलङ्घिनीभि-  
धैति चिराय निजबिम्बगते कलङ्के ।

स्वच्छात्मकस्तुहिनदीधितिरङ्गनाना-

मव्याजमाननरुचि कवलीकरोति ॥ १६ ॥

यत्पादाब्जरजःकणा प्रसुवते भक्त्या नतानां भुवं

यत्कारुण्यकटाक्षकान्तिलहरी प्रक्षालयत्याशय ।

मोहाहङ्करणं क्षिणोति विमला यद्वैखरीमौखरी

वन्द्यः कस्य न माननीयमहिमा श्रीपण्डितार्यो यतिः

॥ २० ॥

मन्दारद्रुममञ्जरीमधुभरीमञ्जुस्फुरन्माधुरी-

प्रौढाहङ्कृतिरूढिपाटवपरीपाटी कृकाटी भटः ।

नृत्यद्रुद्रकपर्दगर्तविलुठस्वर्लोक्कल्लोलिनी-

सल्लापी खलु पण्डितार्ययमिनो व्याख्यानकोलाहलः

॥ २१ ॥

कारुण्यप्रथमावतारसरणिश्शान्तेर्निशान्तं स्थिरं

वैदुष्यस्य तपःफलं सुजनतासौभाग्यभाग्योदयः ।

कन्दर्पद्विरदेन्द्रपञ्चवदनः काव्यामृतानां खनि-

ज्जैनाध्वाम्बरभास्करश्श्रुतमुनिर्जागर्त्ति नम्रात्तिजित् ॥ २२ ॥

युक्त्यागमार्त्तवविलोलनमन्दराद्रि-

श्शब्दागमाम्बुरुहकाननबालसूर्यः ।

शुद्धाशयः प्रतिदिनं परमागमेन

संवर्द्धते श्रुतमुनिर्यतिसार्वभौमः ॥ २३ ॥

तत्सन्निधौ बेलुगुले जगदप्रतीत्ये

श्रीमानसाविरुगपाह्वय-दण्डनाथः ।

श्रीगुम्फेश्वरसनातनभोगहेतो-

अमोत्तमं बेलुगुलाख्यमदत्तधीरः ॥ २४ ॥

शुभकृति वत्सरे जयति कार्तिकमासि तिथौ ।

मुरमथनस्य पुष्टिमुपजग्मुषि शीतरुचौ ॥ २५ ॥

सदुपवनं स्वनिर्मितनवीनतटाकयुतम् ।

सचिवकुलाग्रणीरदिततीर्थवरं मुदितः ॥ २६ ॥

द्वरुगपदण्डाधीश्वरविमलयशः कलमवर्द्धनक्षेत्रं ।

आचन्द्रतारकमिदं बेलुगुलतीर्थं प्रकाशतामतुलं ॥ २७ ॥

दानपालनयोर्मध्ये दानात्सेयोऽनुपालनं ।

दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पदं ॥ २८ ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेच्च वसुन्धरां ।

षष्टिर्वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमिः ॥ २९ ॥

मङ्गल महा श्री श्री आ श्री ॥

८३ ( २४६ ) \*

नं० ८२ के पश्चिमकी ओर मण्डप में एक स्तम्भ पर

( शक सं० १६२१ )

श्रीसत्परमगम्भीरस्याद्वादामोवलाञ्छनं ।

जीयात्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वति श्री विजयाभ्युदय शालिवाहनशकवर्ष १६२१ ने सलुव

शोभकृतु संवत्सरद कार्तिक ब १३ गुरुवारदल्लु

श्रीमन् महाराजाधिराज राजपरमेश्वर कर्नाटकराज्याभिषेक

\* लेख के नीचे का नोट देखो ।

१६६ विन्ध्यगिरि पर्वत पर के शिलालेख

परिवृत्त परमाह्लाद परममङ्गलीभूत षड्दर्शनसंरक्षणविच-  
क्षणोपाय विद्वद्गरिष्ठदुष्टदुप्तजनमदविभञ्जन महिशूर धरा-  
धिनाथरूप दोडकृष्णराजवडेयरैयनवरु ॥ मत्तं ॥

वृत्त ॥ जनताधारनुदारसत्यमदयं सत्कीर्तिकान्ताजयं  
विनयं धर्मसदाश्रयं सुखचयं तेजः प्रतापोदयं ।  
जननाथं वरकृष्णभूवरलमत्प्रख्यातचन्द्रोदयं  
घनपुण्यान्वितचत्रियाण्म पडेदं सद्धर्मसम्पत्तिथं ॥२॥

कन्द ॥ श्रामद्बेलुगुलदचलदि  
सोमार्कर जरिव देवगोमटजिनपन ।  
श्रीमुखववलोकिसलोड-  
नामोदयु पुट्टि हरुषभाजननुसुदं ॥३॥

वचन ॥ पार्थिवकुलपवित्रनुं कृष्णराजपुङ्गवनुं बेलुगुलद  
जिनधर्मके बिटन्थ ग्रामाधिग्रामभूमिगल् । आर्हनहल्लियुं ।  
होसहल्लियुं । जिननाथपुरं । वस्तियग्राममुं । राचनह-  
ल्लियुं । उत्तनहल्लियुं । जिननहल्लियुं । कोप्पलुगल् वेरसु  
कसबे-बेलुगुलसमेतं । सप्तसमुद्रमुल्लन्नेवर सप्तपरमस्था-  
नाधिपतियप्प गोम्मटस्वामियवर पूजोत्सवङ्गल पुण्यसमृद्धि-  
सम्प्राप्त्यनिमित्त्यर्थवागियुं । अञ्जाञ्जमित्रर-सात्तिपूर्वकं  
सर्व्वमान्यवागि दयपालिसियु मत्तं ।

कन्द ॥ चिगदेवराजकल्या-

णिय भागदेलिर्प्य अन्नछत्रादिगलिगे ।

सुगुणियु कबालेग्रामव

जगदेरैयनु कृष्णराजशेखर नित्तं ॥४॥

इन्ती बेलगुलधर्मवु

अन्तरिसदे चन्द्रसूर्यरुल्लन्नेवरं ।

सन्तसदिन्देम्मय भू-

कान्तरु रत्तिसलि धर्मवृद्धिय बेलेयं ॥५॥

यी धर्ममं परिपालिसिदवर् धर्मार्थकाममोत्तङ्गलं परम्परेयिं  
पडेयुव ॥

वृत्त ॥ प्रियदिन्दी जिनधर्ममं नडेयिपर्गियुं महाश्रीयु-  
मक्केयिदं कायद नीचपापिगे कुरुत्तेत्रोर्वियोल् बाणरा-  
शियोलेल्कोटि मुनीन्द्ररं कपिलेयं वेदाह्यरं कोन्दुदे-  
न्दयसं सार्गुमिदेन्दु कृष्णनृपशैलाचारगल् नेमिसल् ॥  
इतिमङ्गलं भवतु ॥ श्री श्री श्री ॥

[ मैसूर-नरेश कृष्णराज ओडेयर ने गोम्मटेश्वर भगवान् के दर्शन किये और हर्ष से पुलकित होकर बेलगोल में जैन धर्म के प्रभावानार्थ सदा के लिए उक्त ग्रामों का दान किया । इन ग्रामों में बेलगुल भी है ]

[ नोट—लेख में शक सं० १६२१ शोभकृत का उल्लेख है । पर शक १६२१ न तो शोभकृत ही था और न उस समय कृष्णराज ओडेयर का ही राज्य था । लेख का ठीक समय शक सं० १६४६ है जो शोभकृत था और जब कृष्णराज ओडेयर का राज्य था । ]



८४ (२५०)

## उसी स्तम्भ की दूसरी बाजू पर

( शक सं० १५५६ )

श्री शालिवाहन शकवरुष १५५६ नैय भावसंवत्सरद  
 आषाढ-शु-१३ स्थिरवार ब्रह्मयोगदलु श्रीमन्महाराजा-  
 धिराज राजपरमेश्वर मैसूरपट्टनाधीश्वर षड्द्रुशन-धर्मस्थापना-  
 चार्य्यराद चामराजबोडेयरु अय्यनवरु बेलुगुलद स्थानदवर  
 क्षेत्रवु बहुदिन अडवु आगिरलागि आचामराजबोडेयरु-अय्य-  
 नवरु यीक्षेत्रव अडवहिडिदन्तावरु होसवोलल केम्पप्पन  
 मग चन्नणन बेलुगुलद पायिसेट्टियर मकलु चिक्कणन चिग-  
 पायसेट्टि यिवरु मुन्ताद अडवहिडिदन्तावर करसिं निम्म अड-  
 विन सालवनु तीरिसेनु यन्नलागि चन्नणन चिक्कणन चिगपायि  
 सेट्टि मुद्दणन अज्जण्णन पदुमप्पन मग पण्डेणन पदुमरसय्य  
 दोडुणन पञ्चबाणकविगल मग बम्मप्प बोम्मणकवि विजेयणन  
 गुम्मणन चारुकीर्त्ति नागप्प बेडदय्य बोम्मिसेट्टि होसहलिय  
 रायणन परियणनगौड बैरसेट्टि बैरण वीरय्य इवरु मुन्ताद  
 समस्तरु तम्म तन्देतायिगलिगे पुण्येवागलियेन्दु गोम्मटस्वामिय  
 सन्निधियलि तम्म गुरु चारुकीर्त्तिपण्डितदेवर मुन्दे धारा-  
 इत्तवागि यी-अडहिन पत्रसालवनु यी-अडव कोट्टु स्थातदवरिगे  
 यी-वर्त्तकरु गौडुगलु यी-सालवनु धारापूर्व्वकवागि कोट्टेवु यी  
 विट्टन्त पत्रसालवनु आवनादरु अलुपिदरे काशिरामेश्वरदल्लि

साहस्रकपिलेयनु ब्राह्मणरनु कोन्द पापके होगुवरु येन्दु बरेद  
शिलाशासन ॥ श्री श्री ॥

[ बेल्गुल मन्दिर की ज़मीन आदि बहुत दिनों से रहन थी । उक्त तिथि को महाराज चामराज ओडेयर ने चेन्नन्न आदि रहनदारों को बुलाकर कहा कि तुम मन्दिरों की भूमि को मुक्त कर दो, हम तुम्हारा रुपया देते हैं । इस पर रहनदारों ने अपने पूर्वजों के पुण्य-निमित्त बिना कुछ लिये ही श्रीगोम्मटस्वामी और अपने गुरु चारुकीर्ति पण्डित देव की साक्षी में मन्दिरों की भूमि रहन से मुक्त कर दी और यह शिलालेख लिखाया ।

८५ ( २३४ )

गोम्मटेश्वर-द्वार की बाईं ओर एक पाषाण पर

( लगभग शक सं० ११०२ )

श्रीगोम्मटजिननं नर-

नागामर-दितिज-खचर-पति-पूजितनं ।

योगाग्निहृतस्मरनं

योगिध्येयननमेयनं स्तुतियिसुवें ॥१॥

क्रमदिं मेखेणदरिद क्रमदे मातं बिट्टु तन्निट्ट च-

क्रमदुं निःप्रभमाणे सिग्गनोलकोण्डात्माग्रजङ्गोलपु गे-

यदुमहीराज्यमनित्तु पोगि तपदिं कम्मरि विध्वंसिया-

द महात्सं पुरुसूनुबाहुवलिवोल् मत्तारो मानोन्नतर् ॥२॥

धृतजयबाहुबाहुबलिकेवलिरूपसमानपञ्चवि-

शति-समुपेत-पञ्चशतचापसमुन्नतियुक्तमप्य तत्-  
 प्रतिकृतियं मनोमुददे माडिसिदं भरतं जिताखिल-  
 क्षितिपतिचक्रि पौदनपुरान्तिकदोल् पुरुदेवनन्दनं ॥३॥  
 चिरकालं सले तज्जिनान्तिकधरित्रीदेशदोल् लोकाभी-  
 करणं कुकुटसर्पसङ्कुलमसङ्ख्यं पुट्टे दल् कुकुटे-  
 श्वर-नामन्तदधारिगादुदुबलिकं प्राकृतर्गायतगो-  
 चरमन्तामहि मन्त्रतन्त्रनियतर्काण्वर्गगडिन्तुं पलर् ॥४॥  
 केलल्कप्पुदु देवदुन्दुभिरवं मातेनो दिव्यार्चना-  
 जालं काणलुमप्पुदाजिनन पादोद्यन्नखप्रस्फुर-  
 ल्लीलादर्पणमं निरीक्षिसिदवर्काण्वर्जितातीत ज-  
 न्मालम्बाकृतियं महातिशयमादेवङ्गिलाविश्रुतं ॥५॥  
 जनदिं तज्जिनविश्रुतातिशयमं तां केल्लु नोल्पल्लित चे-  
 तनेयोल् पुट्टिरे पोगलुद्यमिसे दूरं दुर्गमं तत्पुरा-  
 वनियेन्दार्य्यजनं प्रबोधिसिदोडन्तादन्दु तदेवक-  
 ल्पनेयिं माडिपेनेन्दु माडिसिदनिन्तीदेवनं गोमटं ॥६॥  
 श्रुतमुं दर्शनशुद्धियुं विभवमुं सद्भुत्तमुं दानमुं  
 धृतियुं तन्नोले सन्द गङ्गकुलचन्द्रं राचमल्लं जग-  
 न्नुतनाभूमिपनद्वितीयविभवं चामुण्डरायं मनु-  
 प्रतिमं गोम्मटनल्ले माडिसिदनिन्ती देवनं यत्नदिं ॥७॥  
 अतितुङ्गाकृतियादोडागददरोल्सौन्दर्य्यमौन्नयमुं  
 नुतसौन्दर्य्यमुमागे मत्ततिशयं तानागदौन्नयमुं ।  
 नुतसौन्दर्य्यमुमूर्ज्जितातिशयमुं तन्नल्लि निन्दिर्हुवं

चित्सम्पूज्यमो गोम्मटेश्वरजिनश्रीरूपमात्मोपमं ॥८॥  
 प्रतिविद्धं बरेयल् मयं नेरेये नोडल् नाकलोकाधिपं  
 स्तुतिगेयल् फणिनायकं नेरेयेनेन्दन्दन्यराराप्पुर्णि ।  
 प्रतिविद्धं बरेयल् समन्तु तवे नोडल् वणिसल् निस्समा-  
 कृतियंदत्तिणकुकुटेशतनुवं साश्चर्य्यसौन्दर्य्यमं ॥९॥  
 मरेदुं पारदु मेले पत्तिनिवहं कच्चद्वयोद्देशदोल्  
 मिरुगुत्तुं पोरपोण्मुगुं सुरभिकाशमीरारुणच्छायमी-  
 तेरदाश्चर्य्यमनीत्रलोकद जनं तानेय्दे कण्डिर्दु दा-  
 न्नेरेवन्नेट्टने गोम्मटेश्वरजिनश्री मूर्त्तियं कर्त्तिसल् ॥१०॥  
 नेलगट्टानागलोकं तलमवनि दिशाभित्ति भित्तिव्रजं स्व-  
 स्तलभागं मुच्चणं मेगण सुरर विमानोत्करं कूटजालं ।  
 विलसत् तारौघमन्तरर्व्विततमणिवितानं समन्तागे नित्यं  
 निलयं श्रीगोम्मटेशङ्गेनिसिदुदु जिनोक्तावलोकं त्रिलोकं  
 ॥ ११ ॥

अनुपमरूपने स्मरनुदग्रने निर्जितचाक्र मत्तु दा-  
 रने नेरे गेल्लुमित्तनखिलोर्व्वियनत्यभिमानीये तपस्-  
 स्थनुमेरवर्द्धघ्नयित्तं त्रयोलिर्दुपुदेम्बननूनबोधने  
 विनिहतकर्मबन्धनेने बाहुवलीशनिदेनुदात्तनो ॥ १२ ॥  
 अभिमानस्थिरभावमं नमगे माल्कत्युद्धमानोन्नतं  
 शुभसौभाग्यमनङ्गजं भुजबलावष्टम्भमं चक्रव-  
 र्त्तिभुजादर्पवित्तोपि बाहुबलि तृष्णाच्छेदमं मुक्तरा-  
 ज्यभरं मुक्तियनाप्तनिर्व्वृत्तिपदं श्रीगोम्मटेशं जिनं ॥१३॥

स्फुरदुद्यत्सितकान्तिथिं परिसरत्सौरभ्यदिन्दं दिशो-  
 त्करमं मुद्रिसुतुं नमेरुसुमनोवर्षं स्फुटं गोम्मटे-  
 श्वरदेवोत्तमचारुदिव्यशिरदोल् देवर्कलिन्दादुदं  
 धरेयेल्लं नेरे कन्डुदामहिमेयादेवङ्गदाश्रय्यमे ॥ १४ ॥  
 एनगायतीत्तिशलागदायतेनगे काणल्केम्बवोलायते पे-  
 ल्वनिताबालकवृद्धगोपततियुं कण्डल्करिन्दात्र्विनं ।  
 दिनवोन्दावगमुद्धदिव्यकुसुमासारं महीलोकलो-  
 चन सन्तोषदमायु गोम्मटजिनाधीशोत्तमाङ्गाग्रदोल् ॥ १५ ॥  
 मिरुगुव तारकप्रकरमीपरमेश्वरपादसेवेगे-  
 न्देरपुद्दे भक्तियिन्दमेने निर्म्मलिनं घनपुष्पवृष्टि व-  
 न्देरगिदुदभ्रदिं धरेगदभ्रतराद्भुतहर्षकोटि कण्-  
 देरेदिरे सन्द वेल्गुलद गोम्मटनाथन पादपद्मदोल् ॥ १६ ॥  
 भरतननादिचक्रधरनं भुजयुद्धदे गेल्द कालदोल्  
 दुरितमहारियं तविसि केवलबोधमनाल्द कालदोल् ।  
 सुरतति मुन्ने माडिदुदु पृमलेयीदारेयकुमेम्बिनं  
 सुरिदुदु पुष्पवृष्टि विभुबाहुबलीशन मेले लीलेयिं ॥ १७ ॥  
 केम्मगिदेके नाड पलवन्दद नन्दिद विन्दिगर्कलं  
 नीं मरुलागि देवरिवरेन्दवरं मतिगेट्टु निन्नने-  
 कम्म तोलल्लिचदप्पे भवकाननदोल् परमात्मरूपनं  
 गोम्मटदेवनं नेनेय नीगुवे जाति जरादिदुःखमं ॥ १८ ॥  
 सम्मदवागलाग कोलेयुं पुसियुं कलवुं पराङ्गना-  
 सम्मतियुं परिग्रहद काङ्क्षेयुमेम्बवरिन्दमादोडे-

न्दुं मनुजङ्गिरत्रेय परत्रेय कंडेनुतुं मद्दोच्चदोल्  
 गोम्मटदेवनिर्द्दुसले सारुवबोलेसेदिर्दनीचिसै ॥ १६ ॥  
 एम्मुमनीवसन्तनुमनिन्दुवुमं ननेविल्लुमम्बुमं  
 केम्मगनाथयूथमने माडि विसुट्टुतपक्के पृण्डु नि-  
 न्दिम्मिगिलप्पुदें पडेवुदेन्दतिमुग्धयरल्पनादमुं  
**गोम्मटदेव**निन्नकिविगेय्दवे निन्नबोलारो निःकृपर् ॥ २० ॥  
 एम्मनिदेके नीं विसुटेयेन्देलेयुं लतिकाङ्गियर्कलुं  
 तम्मललिन्दे वन्दु विगियप्पिदरेम्बिनमङ्गदञ्जि पु-  
 तुं मुरिदेत्ति तस्त लतिकालियुमोप्पे तपोनियोगदोल्  
**गोम्मटदेव**निर्दिर्द्वहीन्द्रसुरेन्द्रमुनीन्द्रवन्दितं ॥ २१ ॥  
 तम्मनेपोदंननुजरेल्लरुमेय्दे तपक्के नीनुमि-  
 न्तम्म तपक्के वोदोडेनगीसिरियोप्पदु बेडेनुत्तु म-  
 प्पनं मनमिल्लुमन्नुमिगेयुं बगेगोल्लदे दीत्तेगोण्डे नीं  
**गोम्मटदेव** निन्न तरिसन्दलवार्य्यजनक्के गोम्मटं ॥ २२ ॥  
 निम्मडियेन्न धात्रियोलगिर्द्वुवेब्बिदु वेड धात्रि तां  
 निम्मदुमेन्नदुं बगेवोडल्लदु बेरदु दृष्टिबोधवी-  
 र्य्यं महितात्मधर्म्ममभवोक्तियोलेम्ब निजाप्रजोक्तियिं  
**गोम्मटदेव** नीं मनद मानकषायमनेय्दे तूल्लिददै ॥ २३ ॥  
 तम्मतपस्विगलं कुतपस्थिति वेल्दवलाङ्गसङ्गतं  
 तम्म शरीरमागे नेगल्वन्यतराप्परशस्तवृत्तकं ।  
 कम्मरियोजनन्दमे वलं स्वपरात्तयसौख्यहेतुवं  
**गोम्मटदेव** नीं तपमनान्तुपदेशकनादुदोप्पदे ॥ २४ ॥

नीं मनमं निजात्मनेलकम्पितमागिडे मोहनीयमु-  
 ख्यम्मणिदेडि बीले घनघातिबलं बलदृक्प्रबोधसौ-  
 ख्यं महिमान्वितं नेगले वर्त्तिसि मत्तमघातिघातदि  
**गोम्मटदेवमुक्तिपदमं** पडेदे निरपायसौख्यमं ॥ २५ ॥  
 कम्मिदवप्प काड पोसपूगलिनच्चिर्वसि पादपद्ममं  
 सम्मददिन्दे नोडि भवदाकृतियं बल्लगोण्डु बल्लपा-  
 ङ्गि मनमोल्हु कीर्त्तिपवरें कृतकृत्यरो शक्रनन्ददि  
**गोम्मटदेव** निन्ननरिदच्चिर्वसुतिर्पवरें कृतार्थरो ॥ २६ ॥  
 कुसुमास्त्रं कामसाम्राज्यद महिमेयनान्तिर्दोडं मुन्ने तन्नोल्  
 वसुधा साम्राज्ययुक्तं भरतकरविमुक्तं रथाङ्गास्त्रमुग्रां-  
 शु-समन्तद्दुधदेर्दण्डमनेलसिदेडं बिट्ठवं मुक्तिसाम्रा-  
 ज्यसुखार्थं दीक्षेयं बाहुबलि तलेदनेम्मन्नरेनेन्दोमाण्वर् ॥ २७ ॥  
 मनदिं नुडिथिं तनुवि-  
 न्देनसुं मुन्नेरपिदधमनलरिपेनेम्बी-  
 मनदिन्दमोसेदु **गोम्मट-**  
 जिननं स्तुतियिसिदनिन्तु सुजनोत्तंसं ॥ २८ ॥  
 सुजनवर्म्मव्यरे तनगव-  
 रजस्त्रमुत्तंसमप्प पुरुलिं **वोप्पं ।**  
 सुजनोत्तंसनेनिप्पं  
 सुजनगुत्तंसमेम्ब पुरुलिन्देनिसं ॥ २९ ॥  
 ई-जिननुतिशासनमं  
 श्रीजिनशासनविदं विनिर्मिसिदं वि-

द्याजितवृजिनं सुकवि स-

माजनुतं विशदकीर्त्तिं सुजनोत्तंसं ॥ ३० ॥

वरसैद्धान्तिक-चक्रे-

श्वरनयकीर्त्तिप्रतीन्द्रशिष्यनिजचि-

त्परिणतनध्यात्मकला-

धरनुज्वलकीर्त्तिं बालचन्द्रमुनीन्द्रं ॥ ३१ ॥

तन्मुनिनियोगदिं ॥

पोडविगे सन्द गोम्मटजिनेन्द्रगुणस्तवशासनके क-

न्नडगविवप्पनेन्देनिप बोप्पणपण्डितनोल्दु पेल्दिवं ।

कडयिसिदं बलं कवडमय्यन देवणनल्लित्थिन्दे बा-

गडेगेय रुद्रनादरदे माडिसिदं विलसत्प्रतिष्ठेयं ॥ ३२ ॥

[ इस लेख में बाहुवलि गोम्मटेश्वर की स्तुति है । बाहुवलि पुरु-  
देव के पुत्र तथा भरत के लघुभ्राता थे । इन्होंने भरत को युद्ध में  
परास्त कर दिया । किन्तु संसार से विरक्त हो राज्य भरत के लिये ही  
छोड़ उन्होंने जिन-दीक्षा धारण कर ली । भरत ने पौदनपुर के समीप  
५२५ धनुष । प्रमाण बाहुवलि की मूर्ति प्रतिष्ठित कराई । कुछ  
काल बीतने पर मूर्ति के आसपास की भूमि कुक्कुट सर्पों से व्याप्त  
और बीहड़ वन से आच्छादित होकर दुर्गम्य हो गई । रामचल्लनृप  
के मन्त्री चामुण्डराय को बाहुवलि के दर्शन की अभिलाषा हुई पर  
यात्रा के हेतु जब वे तैयार हुए तब उनके गुरु ने उनसे कहा कि वह  
स्थान बहुत दूर और अगम्य है । इस पर चामुण्डराय ने स्वयं वैसी  
मूर्ति की प्रतिष्ठा कराने का विचार किया और उन्होंने वैसा कर डाला ।

लेख में चामुण्डराय-द्वारा स्थापित गोम्मटेश्वर का बड़ा ही मनोहर  
वर्णन है । 'जब मूर्ति बहुत बड़ी होती है तब उसमें सौन्दर्य प्रायः



नहीं आता । यदि बड़ी भी हुई और सौन्दर्य भी हुआ तो उसमें दैवी प्रभाव का अभाव हो सकता है । पर यहाँ इन, तीनों के मिश्रण से गोम्मटेश्वर की छटा अपूर्व हो गई है ।' कवि ने एक दैवी घटना का उल्लेख किया है कि एक समय सारे दिन भगवान् की मूर्ति पर आकाश से 'नमेरु' पुष्पों की वर्षा हुई जिसे सभी ने देखा । कभी कोई पक्षी मूर्ति के ऊपर होकर नहीं उड़ता । भगवान् की भुजाओं के अधोभाग से नित्य सुगन्ध और केशर के समान रक्त ज्योति की आभा निकलती रहती है ।

बाहुवलि स्वामी ने किस प्रकार राज्य को त्याग कठिन तपस्या स्वीकार की, कैसा घोर तप किया, कर्म शत्रुओं को कैसा दमन किया आदि विषयों का वर्णन बड़ा ही चित्तग्राही है ।

लेख की कविता बड़े ऊँचे दर्जे की है । यह कन्नड़ कविराज बोप्पण पण्डित अपर नाम 'सुजनोत्तंस' की रचना है । इसे उन्होंने नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र मुनि के शिष्य कवडमय्य देवन के आग्रह से रचा । ]

८६ ( २३५ )

## उसी पाषाण के पश्चिम मुख पर

( लगभग शक सं० ११०७ )

स्वस्ति श्री बेलुगुलतीर्तद गोम्मटदेवर सुत्तालयदोलु वडु-  
व्यवहारि मोसलेय बसविसेट्टियरु तावु माडिसिद चतुर्व्विस-  
तितीर्थकर अष्टविधार्चनेगे मोसलेय नकरङ्गलु वरिसनिब-  
न्धियागि कोडुव पडि नेमिसेट्टि बसविसेट्टि प ४ गङ्गर महदेव  
चिकमादि प २ दम्मिसेट्टि प ४ बिट्टिसेट्टि बीचिसेट्टि एलगिसेट्टि

प ३ उयमसेट्टि बिदियमसेट्टि प ४ महदेव सेट्टि रट्टे सेट्टि प २  
 पारिससेट्टि बसविसेट्टि रायिसेट्टि प ४ मारगूलिसेट्टि होयसल-  
 सेट्टि प २ नम्बिदेवसेट्टि प ५ चौकिसेट्टि प ५ जिन्निसेट्टि प ५  
 बाहुबलिसेट्टि प ५ पट्टणसामि अङ्गिसेट्टि मालिसेट्टि प ३ महदेव-  
 सेट्टि गोविसेट्टि प २ बम्मिसेट्टि मूकिसेट्टि प २ माराण्डिसेट्टि  
 महदेवसेट्टि प २ बैरिसेट्टि मारिसेट्टि प २ सोविसेट्टि दुदिसेट्टि  
 प २ हारुवसेट्टि हरदिसेट्टि प २ बम्माण्डि प २ सान्तेय प १  
 कूतैय्य प २ मासण्णिसेट्टि कूतिसेट्टि बसविसेट्टि प ३ चट्टिसेट्टि  
 बसविसेट्टि प १ मल्लिसेट्टि प १ महदेव बयिर प २ बम्मेय मसण  
 प २ कालेय गाडेय प २ गवुडुसामि मदवनिगसेट्टि प २ मालि-  
 सेट्टि पारिससेट्टि प २ होल्लिसेट्टि बोकिसेट्टि प २ गङ्गिसेट्टि  
 आय्तसेट्टि देविसेट्टि (प) २ मालिसेट्टि दम्मिसेट्टि प २ मारि-  
 सेट्टि आय्तमसेट्टि प २ मारज्ज हरियण कालेय प २ मारगौ-  
 ण्डनहल्लिय गुम्मज्ज बैरेय प १ माकिसेट्टि बूविसेट्टि प १ एचि-  
 सेट्टि प १ अक्कवेय महदेवसेट्टि पारिस्ससेट्टि प १ निडिय  
 मल्लिसेट्टि प १...

[ मोसले के बड्ड व्यवहारि बसवसेट्टि द्वारा प्रतिष्ठापित चतुर्विंशति  
 तीर्थंकरों की अष्टविधपूजन के लिए मोसले के महाजनों ने उक्त मासिक  
 चन्दा देने का संकल्प किया । ]

८७ ( २३६ )

## उसी पाषाण के पूर्व मुख पर

( लगभग शक सं० ११०७ )

श्रीबसविसेट्टियर तीर्थंकर अष्टविधार्चनेगे मौसलेय नकर  
वरिस निबन्धियागि चवुण्डेय जकण किरिय-चवुण्डेय प २  
महदेवसेट्टि कम्बिसेट्टि प १ उयमसेट्टि पारिससेट्टि प १ बोकि-  
सेट्टि बूकिसेट्टि प १ माचिसेट्टि होन्निसेट्टि मुग्गि सेट्टि प १  
सूकिसेट्टि प १ रामिसेट्टि हाबिसेट्टि (प) १ मच्चिसेट्टि बसविसेट्टि  
प १ मल्लिसेट्टि गुड्डिसेट्टि चिक्कमल्लिसेट्टि(प)२ मसण्णिसेट्टि माचि-  
सेट्टि अम्माण्डुसेट्टि प २ अलियमारिसेट्टि मुद्दिसेट्टि प २ करि-  
किसेट्टि चिक्कमादि प २ करिय बम्मिसेट्टि मारिसेट्टि प १ मल्लि-  
सेट्टि अयिबिसेट्टि कालिसेट्टि प २ मण्णिगार माचिसेट्टि सेट्टियण  
प १ तेरणिय चैण्डेय हेग्गडे वसवण्ण चन्देय रामेय हुल्लेय  
जक्कण प २ मालगौण्ड सेट्टियण माचय मारेय चिक्कण गोस्सेय  
प १ मादि-गौण्ड गौण्डेय माचेय बम्मेय होन्नेय जक्कगौण्ड प १

[ तात्पर्य पूर्वोक्तानुसार ही है ]

८८ ( २३७ )

## पूर्वोक्त लेख के नीचे

( संभवतः शक सं० १११८ )

नल संवत्सरद उत्तरायण-सङ्करान्तियलु श्रीमन्महापसा-  
यितं विजयण्णनवरलिय चिक्कमदुकण्ण श्रीगोम्मटदेवर

नित्यार्चनेगे २० बासिग हूविङ्गे श्रीमन्महामण्डलाचार्यरु चन्द्र-  
प्रभदेवर कैयलु मारुगोण्डु गङ्गसमुद्रदलु गद्दे स १ वेदलु कं  
२०० नूरनुं कोण्डु कोट्ट दत्ति मङ्गलमहाश्री ।

[ उक्त तिथि को महापसायित विजयण्ण के दामाद चिक्क मदुकण्ण  
ने गङ्गसमुद्र की कुछ भूमि महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव से खरीदकर  
गोम्मटदेव की प्रतिदिन की पूजन के हेतु बीस पुष्प मालाओं के लिए  
अर्पण की । ]

[ नोट—लेख में नल संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० १११८  
नल था ]

८८ ( २३८ )

पूर्वोक्त लेख के नीचे

( संभवतः शक सं० ११२० )

कालयुक्तिसंवत्सरद कार्तिक सु १ आ श्रीगोम्म  
टदेवर यर्चनेगे हुविन पडिगे श्रीमन्महामण्डलाचार्यरु हिरिय  
नयकीर्त्तिदेवर शिष्यरु चन्द्रप्रभदेवर कयलु यगलियद कवि  
सेट्टिय सोमेयनु गद्दे पडवलगेरेय गद्दे को १० गङ्गसमुद्रदल्लि  
कोम्म तगलि को १० आर्ब्बदलु गुलेय केयमेगे गद्याण ओन्दुहैन  
वेदलु अकलुन सीमे ।

[ उक्त तिथि को कविसेट्टि के ( पुत्र ) सोमेय ने उक्त भूमि का  
दान गोम्मटदेव की पुष्प-पूजन के हेतु हिरियनयकीर्त्ति देव के शिष्य  
महामण्डलाचार्य चन्द्रप्रभदेव को कर दिया । ]

[ नोट—लेख में कालयुक्त संवत्सर का उल्लेख है । शक सं०  
११२० कालयुक्त था । ]

६० ( २४० )

## गोम्मटेश्वर-द्वार के दाहिनी तरफ एक पाषाण पर

( लगभग शक सं० ११०० )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥१॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादि मदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटोयसे ॥२॥

नमोऽस्तु ॥

जगत्त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।

नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥३॥

नमो जिनाय ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं । द्वारवती  
पुरवराधीश्वरं । यादव-कुलाम्बर-द्युमणि । सम्यक्तवचूडामणि ।  
मलपरोल् गण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कितरूप श्रीमन्महामण्डल-  
ेश्वरं । त्रिभुवनमत्तल तलकाडुगोण्ड भुजबलवीर-गङ्ग-  
विष्णु-वर्द्धन-होयसलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्ध-  
मानमाचन्द्रार्ककर्तारं सलुत्तमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ जनता धारनुदारनन्यबनितादूरं वचस्सुन्दरी-

घनवृत्तस्तनहारनुप्ररणधीरं मारनेनेन्दपै ।

जनकं तानेने माकण्वे विबुधप्रख्यातधर्मप्रयु-

क्तनिकामात्तचरित्रे तायेनलिदेनेच' महाधन्यनो ॥४॥

कन्द ॥ वित्रस्तमलं बुधजन-

मित्रं द्विजकुलपवित्रनेचं जगदोल् ।

पात्रं रिपुकुलकन्द-ख-

नित्रं कौण्डिन्यगोत्रनमलचरित्रं ॥५॥

मनुचरितनेचिगाङ्गन

मनेयोल् मुनिजनसमूहमुं बुधजनमुं ।

जिनपूजने जिनवन्दने

जिनमहिमेगलावकालमुं शोभिसुगुं ॥६॥

उत्तमगुणततिवनिता-

वृत्तियनोलकोण्डुदेन्दु जगमेल्लं क-

य्येत्तुविनममलगुणस-

म्पत्तिगे जगदोलगे पौचिकब्बेये नोन्तल् ॥७॥

वचन ॥ अन्तेनिसिद् एचिराजन पौचिकब्बेय पुत्रनखिलतीर्थ-

करपरमदेव - परमचरिताकर्णनोदीर्ण - विपुलपुलकपरिक-

लितबारबाणनुमसमसरसरसिक-रिपुनृपकलापावलेपलो

लुपकृपाणनुवाहाराभयभैषज्यशास्त्रज्ञानविनोदनुं सकललोक

शोकापनोदनुं ॥

वृत्त ॥ वज्रं वज्रभृतो हलं हलभृतश्चक्रं तथा चक्रिण-

शक्तिशक्तिधरस्य गाण्डिवधनुर्गाण्डिवकोदण्डिनः ।

यस्तद्वद्वितनोति विष्णुनृपतेः कार्यं कथं मादृशै-

र्गङ्गो गङ्गतरङ्गरञ्जितयशोराशिस्स वण्ण्यो भवेत् ॥८॥

वचन ॥ अन्तेनिप श्रोमन्महाप्रधानं दण्डनायकं द्रोहघरट्ट

गङ्गा राज चोलन सामन्तनदियमं घट्टिं मेलाद गङ्गा-  
डिनाड गडिय तलकाड वीडिनोल् पडियिप्पन्तिट्टु 'चोल'  
कोट्ट नाडं कोडदे कादि कोल्लिमेने विजिगीषुवृत्तियिन्द  
मेत्ति बलमेरडु' साच्चिर्दल्लि ॥

वृत्त ॥ इत्तण भूमिभागदोलधन्यरदेके भवत्प्रतापस-  
म्पत्तिय वर्णनाविधिगे गङ्गाचमूप जिगीषुवृत्तियि-  
न्देत्तिद निन्न कय्य निशितासिय तौमोने बेन्न बारने-  
त्तुत्तिरे पोगि कञ्चि गुरियिप्पिनमोडिद दामनेयदने ॥६॥  
कदनदोलन्दु निन्न तरवारिय बारिगे मेय्यनोडुला-  
रदे नलिदिन्नुवन्तदने जानिसि जानिसि गङ्गा तन्न न-  
म्बिद सुदतीकदम्बदेर्दे पौवने वोगिरे पुल्ले वेच्चु वे-  
च्चिदपनहर्निशं तिगुलदामनरण्यशरण्यवृत्तियि ॥१०॥  
एनितानुं ववरङ्गलोत्पलवरं बेङ्कोण्ड गण्डिन्दमो-  
वेनिसुत्तं तलकाडोलिन्नेवरमिर्दगल्करं गङ्गा-  
जन खल्गाहतिगल्कि युद्धविधियोल्बेन्नित्तु नायुणनदे-  
डिनलुण्डिर्दपनत्त शैवशमिवोल्सामन्तदामोदरं ॥११॥

वचन ॥ एम्बिनमोन्दे मेय्योलवयवदिनेयिद मृदलिसि धृतिगिडिसि  
बेङ्कोण्डु मत्तं नरसिङ्गवर्म्म मोदलागे घट्टिं मेलाद चोलन  
सामन्तरेल्लरं बेङ्कोण्डु नाडादुदेल्लमनेकच्छत्रदुण्डिगेसाध्यं  
माडि कुडे कृतज्ञं विष्णुनृपति मेच्चि मेच्चिर्दे बेडिकोल्लिमेने  
कन्द ॥ अवनपनेनगित्तपने-

न्दवरिवरवोलुलिद वस्तुवं बेडदे भू-

भुवनं बणिसे गोवि-

न्दवाडियं बेडिदं जिनाच्चर्चन लुब्धं ॥१२॥

गोम्मटमेने मुनिसमुदा-

यं मनदोल्मेच्चि मेच्चि विचलिसुत्तुं ।

गोम्मटदेवर पूजेग-

दं मुददिं विट्टनल्ले धीरोदात्तं ॥१३॥

अक्षर ॥ आदियागिर्पुद्गार्हतसमयके सूलसङ्घं कोण्डकु-

दान्वयं

बादु वेडदं बलेयिपुदल्लिय देसिगगणद पुस्तकगच्छद ।

बोधविभवद कुकुटासनमलधारि देवर शिष्यरेनिप पेम्पि-

ङ्गादमेसेदिर्प शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुडुं गङ्गचमूपति

॥ १४ ॥

गङ्गवाडिय वसदिगलेनितोलवनिमुमं तानेयदे पोसयिसिदं

गङ्गवाडिय गोम्मटदेवगो सुत्तालयमनेयदे माडिसिदं ।

गङ्गवाडिय तिगुलरं बेङ्कोण्डु वीरगङ्गङ्गे निमिच्चि कोट्टं

गङ्गराजनामुन्नन गङ्गर रायङ्गं नूर्मडि धन्यनल्ले ॥ १५ ॥

धर्मस्यैव बलाल्लोको जयत्यखिलविद्विषः ।

आरोपयतु तत्रैव सर्वोऽपि गुणमुत्तमं ॥१६॥

श्रीमज्जैनवचोब्धिवर्द्धनविधुः साहित्यविद्यानिधि-

स्सर्पदर्पकहस्तिमस्तकलुठत्प्रोत्कण्ठकण्ठीरवः ।

स श्रीमान् गुणचन्द्रदेवतनयस्सौजन्यजन्यावनि-

स्थेयात् श्रीनयकीर्तिदेवमुनिपस्सिद्धान्तचक्रेश्वरः ॥१७॥



कृतदिग्जैत्रविदं बरुत्ते नरसिंहक्षोणिपं कण्डु स-  
 न्मतिथिं गोम्मटपार्श्वनाथजिनरं मत्तीचतुर्विंशति-  
 प्रतिमागेहमनन्तिवर्के विनुतं प्रोत्साहदिं विट्टन-  
 प्रतिमल्लं सवणेरबेक्ककगोरेयुमं कल्पान्तरं सल्विनं ॥१८॥

नरसिंहहिमाद्रितदुद्धृतकलशहृदकहुल्लकरजिह्विकेया-  
 नतधारागङ्गाम्बुनि नयकीर्त्तिमुनीशपादसरसीमध्ये ॥१९॥

ललनालीलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमास्त्रं पुट्टिदों विष्णुगं  
 ललितश्रीवधुविङ्गवन्ते नरसिंहक्षोणिपालङ्गवे-  
 चलदेवीवधुगं परार्थचरितं पुण्याधिकं पुट्टिदों  
 बलवद्वैरिकुलान्तकं जयभुजं बल्लालभूपालकं ॥२०॥

चिरकालं रिपुगल्गसाध्यमेनिसिद्धुच्चङ्गियं मुत्ति  
 दुद्धरतेजोनिधि धूलिगोटेयने कोण्डाकामदेवावनी-  
 श्वरनं सन्दोडेयत्तितीश्वरननाभण्डारमं स्त्रीयरं  
 तुरगव्रातमुमं समन्दु पिडिदं बल्लालभूपालकं ॥२१॥

स्वस्ति श्रीमन्नयकिर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुडुं श्रीमन्म-  
 हाप्रधानं सर्वधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लय्यङ्गलु श्रीमत्प्रताप  
 चक्रवर्त्ति वीरबल्लालदेवर कय्यलु गोम्मटदेवर पार्श्वदेवर  
 चतुर्विंशति तीर्थकरर अष्टविधाचर्चनेगं रिषियराहारदानकं  
 बेडिकोण्डु सवणेरबेक्ककगोरेय बिह दत्ति ॥

परमागमवारिधिहिम-

किरणं राद्धान्तचक्रिनयकीर्त्तियमी-

श्वरशिष्यनमलनिजचित्-

परिणतनध्यात्मिबालचन्द्रमुनीन्द्रं ॥ २२ ॥

कन्तुकुलान्तकालयमनूर्जितशासनमं निशिधिका-

सन्ततितयं तटाक सरसीकुलमं नयकीर्त्तिदेवसै-

द्धान्तिकरोल्परोक्षविनयङ्गलनीतेरदिन्द मालपरा-

रिन्तिरे नोन्तरारेनिसिदं नयकीर्त्तिनिलाविभागदोल् ॥ २३ ॥

[ यह लेख आदि से आठवें पद्य तक लेख नं० ५६ ( ७३ ) के पूर्वभाग के समान ही है । केवल इसमें तीसरा पद्य अधिक है । इस लेख में भी विष्णु नरेश के महादण्डनायक गङ्गराज के पराक्रम का अच्छा वर्णन है । उन्होंने तलकाडु पर घेरा डालनेवाले चोळ सामन्त अदियम नरसिंह वर्मा, दामोदर व तिगुलदाम को भारी पराजय दी । इस पर विष्णुवर्द्धन ने प्रसन्न होकर उनसे पारितोषक मांगने को कहा । उन्होंने गोम्मटेश्वर की पूजन निमित्त 'गोविन्द वाडि' का दान मांगा । इसे नरेश ने सहर्ष स्वीकार किया ।

गङ्गराज कुन्दकुन्दान्वय के कुक्कुटासन मलधारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य थे । उनके तिगुलों को हराकर गङ्गवाडि की रक्षा करने, गङ्गवाडि के गोम्मटेश्वर का परकोटा बनवाने व अनेक जैन बस्तियों का जीर्णोद्धार करने का लेख नं० ५६ के सदृश यहाँ भी उल्लेख है और यहाँ भी वे चामुण्डरायसे सौगुणे अधिक धन्य कहे गये हैं । .

पद्य १७ और १८ में गुणचन्द्र देव के तनय नयकीर्त्तिदेव का उल्लेख करके कहा गया है कि नरसिंह नरेश ने दिग्विजय से लौटते हुए गोम्मटेश्वर के दर्शन किये और सदा के लिए पूजनार्थ तीन ग्रामों का दान दिया । इसके पश्चात् नरसिंह नरेश और एचल देवी से उत्पन्न होनेवाले बल्लाल नृप का कामदेव और ओडेय राजाओं को जीतने, उच्चङ्गि

का क़िला विजय करने तथा अपने प्रधान कोषाध्यक्ष, नयकीर्ति देव के शिष्य 'हुल्लय' द्वारा उक्त तीनों ग्रामों के दान को पूरा करने का उल्लेख है ।

अन्त में नयकीर्ति देव के शिष्य अघ्यात्मि बालचन्द्र के अपने गुरु के स्मारक अनेक शासन रचने व तालाब आदि निर्माण करवाने का उल्लेख है । ]

[ नोट—पद्य १७ से ऐसा विदित होता है कि उसके लिखे जाने के समय नयकीर्ति जीवित थे । किन्तु अन्तिम पद्य से स्पष्ट होता है कि उनके लिखे जाने के समय नयकीर्ति का स्वर्गवास हो चुका था । सम्भव है कि लेख का पूर्व भाग ( पद्य २५ तक ) नयकीर्ति के जीवन-काल में ही लिखा गया हो और शेष भाग पीछे से जोड़ा गया हो । ]

८१ ( २४१ )

## उपर्युक्त लेख के नीचे

( लगभग शक सं० ११०० )

स्वस्ति समस्तगुणसम्पन्नरूप श्रीबेलुगुलतीर्थद समस्त  
माणिक्य नखरङ्गलु श्रीगोम्मटदेवर पारिश्वदेवरिगे वर्षनिबन्धि-  
यागि हूविनपडिगे जातिहवलके तोलगे ता १ करिदके बीस १  
यिद आचन्द्रार्कतारं वरं सलिसुवरु ॥ मङ्गल महा श्री श्री ॥

[ बेलुगुल के समस्त जैहारियों ने गोम्मट देव और पार्वदेव की पुष्प-पूजन के लिए अपने माणिक्यों पर उक्त वार्षिक चन्दा देने का संकल्प किया । ]

—

८२ ( २४२ )

## उपर्युक्त लेख के नीचे

( लगभग शक सं० ११०० )

स्वस्ति श्री बेलुगुलतीर्थद गुमिसेट्टिय दसैय बिकैवेय  
केतय्य कोणन मरिसेट्टिय मग लखणन लोकेयसहणिय मगलु  
सोमौवे मेलमेलद समस्तनखरङ्गलु गोम्मटदेवर हुविन पडगे  
गङ्गसमुद्रद हिन्दे गदे स १ आगोम्मटपुरद भूमियोलगे  
ओन्दुहोन्न बेदले गुलयकेय्य समुदायङ्गल कय्यलु मारुगोण्डु मा  
(म) लेगारगे आचन्द्रार्कतारंवरं सलुवन्तागि वरदुकोट्ट शासन ॥

[ बेलुगुल के गुमिसेट्टि आदि समस्त व्यापारियों ने गङ्गसमुद्र और  
गोम्मटपुर की कुछ भूमि खरीद कर उसे गोम्मटदेव की पूजा के निमित्त  
पुष्प देने के लिए एक माली को सदा के लिए प्रदान कर दी । ]

८३ ( २४३ )

## उसी पाषाण की दूसरी बाजू पर

( सम्भवतः शक सं० ११६७ )

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद शुक्रवारदन्दु श्री  
गोम्मटदेवरिगेवु तीर्थकरिगेवु हुविन पडिगे चन्निसेट्टिय मग  
चन्द्रकीर्त्ति भट्टारकदेवर गुड्ड कल्लय्यनु अन्नयभण्डारवागि  
कोट्ट ग १ प २१ यि-मरियादेयलु कुन्ददे ६ बासिग-हुव्वनि-  
कुवव मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[ चेन्निसेट्टि के पुत्र व चन्द्रकीर्ति भट्टारक देव के शिष्य कल्लय्य ने कम से कम ६ पुण्य मालाएँ नित्य चढ़ाये जाने के हेतु उक्त तिथि को उक्त दान दिया । ]

[ नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख है शक सं० १११७ भाव संवत्सर था । ]

८४ ( २४४ )

### उपर्युक्त लेख के नीचे

( सम्भवतः शक सं० ११६७ )

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद पुण्य सुद्ध ५ त्रि (वृ) श्रीगोम्मट-  
देवर नित्याभिषेकके श्रीप्रभाचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्डु बारकनूर  
मेधाविसेट्टिगे परोक्षविनेयकके अत्तयभण्डारकके कोट्टु गद्याण  
नात्कु यहोन्निङ्गे अमृतपडिगे आचन्द्रार्क नित्यपाडि ३ य मान  
हाल नडसुवदु यि-धम्मव माणिक-नकरङ्गलुं एलियिगलुं आरैवरु  
मङ्गलमहा श्री श्री ॥

[ प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य बारकनूर के मेधावि सेट्टि की स्मृति में गोम्मट देव के अभिषेकार्थ ३ 'मान' दुग्ध प्रति दिवस देने के लिए उक्त तिथि को ४ 'गद्याण' का दान दिया गया । ]

[ नोट—लेख में भाव संवत्सर का उल्लेख होने से समय उपर्युक्त । ]

८५ ( २४५ )

### उपर्युक्त लेख के नीचे

( लगभग शक सं० ११६७ )

हलसूर सोयिसेट्टिय मग केतिसेट्टियरु गोम्मट-देवरिगे

नित्यपडि मूरुमान हालनु अभिषेककके कोट्ट ग ३ कक होन्न  
बडिगे हाल नडियसुवरु माणिकनखर नडियसुवरु आचन्द्रार्क-  
वुल्लनक मङ्गलमहा श्री ॥

[ गोम्मट देव के नित्याभिषेक के हेतु सोमि सेटि के पुत्र हलसूर-  
निवासी केति सेटि ने ३ 'मान' दूध के लिए ३ ग का दान दिया जिसके  
व्याज से दूध लिया जावे । ]

८६ ( २४६ )

## उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

( शक सं० ११६६ )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाब्धनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीमत्प्रतापचक्रवर्त्ति होयसल श्रीवीरनारसिंहदेवरसरु  
श्रीमद्राजधानिदोरसमुद्रदलु सुखसङ्कथा विनोददिं राज्यं गेयुत्त-  
मिरे शकवरुष ११८६ नेय श्रीमुखस'वन्सरद आवण सु १५  
आदिवारदलु श्रीमन्महामण्डलाचार्यरु नयकीर्ति'देवर  
शिष्यरु चन्द्रप्रभदेवर कयलु होन्नचगेरेय मादय्यन मग सम्भु-  
देवनु सङ्गिसेट्टियर मग बोम्मण्ण अगगप्पसेट्टियर मकलु दोरय  
चवुडय्यनवरु श्रीगोम्मटदेवर अमृतपडिगे मत्तियकेरेय नट्टकल्ल  
सीमामय्यादैयोलगाद गहे सुत्तालयद चतुर्विंशतितीर्थकर  
अमृतपडिगे कोट्ट मोदलेरिय गहे सलगे वेन्दु-सहित सर्व्ववा-  
धापरिहारवागि धारापूर्व्वकं माडिकोण्डु आचन्द्रार्कतारं वरं  
सत्त्वन्तागि कोट्ट दत्ति । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[ होयसल नरेश श्री वीर नारसिंह के समय में उक्त तिथि को होन्न-चगरे के मादय्य के पुत्र सम्भुदेव ने महामण्डलाचार्य नयकीर्ति देव के शिष्य चन्द्रप्रभदेव से मात्तिय करे की उक्त भूमि खरीदकर उसे गोम्मट देव और चतुर्विंशति तीर्थंकर के दुग्ध-पूजन के लिये प्रदान कर दी । ]

८७ (२४७)

## उपयुक्त लेख के नीचे

( सम्भवतः शक सं० ११६७ )

स्वस्ति श्रीभावसंवत्सरद भाद्रपद सुद्ध ५ आदिवार  
दलु श्रीगोम्मटदेवर नित्याभिषेकके अमृतपडिगे श्रीप्रभाचन्द्र-  
भट्टारकदेवरगुडु गेरसपेय गोविन्दसेट्टिय मग आदियणन  
अक्षयभण्डारवागि इरिसिद गद्याण नाल्कु तिङ्गलिङ्गे होङ्गे  
हाग वडि आवडियलि नित्याभिषेकके वव्वल हाल नडसुवरु ई-हो-  
न्निङ्गे माणिक्यनकर एलमे ओडेयरु । आचन्द्रार्कतारं वरं सत्व-  
न्तागि नडसुवरु । मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[ उक्त तिथि को गेरसपे के गोविन्द सेट्टि के पुत्र व प्रभाचन्द्र भट्टारक देव के शिष्य आदियण्ण ने गोम्मटदेव के नित्याभिषेक के लिए ४ गद्याण का दान किया । इस रकम के एक 'होन' पर एक 'हाग' मासिक व्याज की दर से एक 'वल्ल' दुग्ध प्रति दिन दिया जाना चाहिए । ]

८८ (२२३)

## अष्टदिक्पालक मण्डप में एक स्तम्भ पर

( शक सं० १७४८ )

( पूर्व मुख )

श्री स्वस्ति श्रीविजयाभ्युदय शालिवाहन शख वरुष १७४८  
ने सन्द वर्त्तमानकके सलुव व्ययनामसंवत्सरद फाल्गुण व५  
भानुवारदल्लु काश्यपगोत्रे अहनियसूत्रे वृषभप्रवरे प्रथमानु-  
योगशाखायां श्रीचावुण्डराज वंशस्थराद बिलिकेरे अनन्त-  
राजै अरसिनवर प्रपौत्र तोटदेवराजै अरसिनवर पौत्र सत्यमङ्गलद  
चलुवै-अरसिनवर पुत्र श्रीमन्महिसूरपुरवराधीश श्रीकृष्णराज-  
वडेयरवर सम्मुखदल्लि भारिगाटु कन्दाचार सवारकचेरि—  
( उत्तर मुख )

यिलाखे भत्ति देवराजै अरसिनवरु श्रीगोमटेश्वरस्वामियवर  
मस्तकाभिषेकपूजेत्सवदिवस स्वर्गस्थरादके श्रीमठदिन्द वर्षप्रति  
वर्षदल्लु श्रीगोमटेश्वरस्वामिय वरिगे पादपूजे मुन्ताद सेवार्थ  
नडेयुवहागे यिवर पुत्रराद पुट्टदेवराजै अरसिनवरु १०० वरह  
हाकिरुव पुट्टवट्टिन सेवेगे भद्रं भूयाद्वर्द्धतां जिनशासनं । श्री ।

[ काश्यप गोत्र, अहनिय सूत्र, वृषभ प्रवर और प्रथमानुयोग  
शाखा में चावुण्डराज के वंशज, बिलिकेरे अनन्तराजै अरसु के प्रपौत्र,  
तोटदेवराजै अरसु के पौत्र व सत्यमङ्गल के चलुवै अरसु के पुत्र, मैसूर  
नरेश श्री कृष्णराज वडेयर के प्रधान अङ्गरक्षक ( भत्ति ) देवराजै अरसु  
की मृत्यु गोमटेश्वर के मस्तकाभिषेक के दिवस हुई । अतएव उनके



पुत्र पुट्ट देवराजै अरसु ने गोम्मट स्वामी की वार्षिक पाद पूजा के लिए उक्त तिथि को १०० 'वरह' का दान किया । ]

८८ (२२४)

## उसी मण्डप में एक द्वितीय स्तम्भ के पश्चिम मुख पर

(शक सं० १४५६)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

सखवर्ष साविरद १४५६ तनेय विलम्बि संवत्सरद माच  
शुद्ध ५ यल्लु गेरसोप्पेय चवुडिसटिरु अगणिबोम्मय्यन मग  
कम्भय्यनु तन्न चेत्र अडहागिरलागि चवुडिसटिरु अडनु विडिसि  
कोट्टु दक्के वोन्दु तण्डक्के आहारदान त्यागद ब्रह्मन मुन्दण  
हूविन तोट वोन्दु पडि अक्कि अत्ततेपुञ्ज इष्टनु आचन्द्रार्कस्था-  
यियागि नावु नडसि बहेनु मङ्गलम श्री श्री श्री श्री श्री ॥

[ गेरसोप्पे के चवुडि सेट्टि ने मेरी भूमि रहन से मुक्त कर दी है  
इसलिए मैं अगणि बोम्मय्य का पुत्र कम्भय्य सदैव निम्नलिखित दान  
का पालन करूँगा—एक संघ ( तण्ड ) को आहार, त्यागद ब्रह्म के  
सामने के बाग ( की देख-रेख ) व अत्तत पुञ्ज के लिए एक 'पडि'  
तण्डुल । ]



१०० ( २२५ )

## उसी स्तम्भ के दक्षिण मुख पर

(शक सं० १४५६)

तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चौडिसेट्टिगे दोडदेवप्पगल  
मग चिकणनु कोट्ट धम्मसाधन नमगे अनुमत्य बरलागि नीवु  
नवगे परिहरिसि कोट्ट दके १ तण्डके आहार दानवनु आचन्द्रा-  
कस्थायि यागि नडसि बहेवु मङ्गलमहा श्री श्री श्री श्री श्री ॥

[ दोड देवप्प के पुत्र चिकण ने यह 'धर्म साधन' चौडि सेट्टि को  
दिया कि 'आपने हमारे कण्ट का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य में मैं  
सदैव एक संघ ( तण्ड ) को आहार दूँगा । ]

१०१ ( २२६ )

## नं० १०० के नीचे

(शक सं० १४५६)

तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चावुडिसेट्टिगे कविगल मग  
बोम्मणनु कोट धर्मसाधन नमधि अनुपत्य बरलागि नीवु नवगे  
परिहरिसि कोट्ट दके वर्ष १ के आरतिङ्गलु पर्यन्त १ तण्डके  
आहारदानवनु आचन्द्राकस्थायियागि नडसि बहेवु मङ्गलमहा  
श्री श्री श्री श्री ॥

[ 'कवि, के पुत्र बोम्मण ने चवुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन'  
दिया कि 'आपने हमारी आपद् का परिहार किया है इसके उपलक्ष्य  
में मैं सदैव वर्ष में छह मास एक संघ ( तण्ड ) को अहार दूँगा । ]

१०२ ( २२७ )

## उसी स्तम्भ के पूर्व मुख पर

(शक सं० १४५६)

इ मोदल...तत्संवत्सरदलु गेरसोप्पेय चवुडिसट्टिरिगे  
हूविन चैन्नय्यनु कोट धर्मसाधनद सम्बन्ध नन्न चेत्रवु अड  
हाकिरलागि नीवु आत्तेत्रवनु बिडिसि को..... ॥

[ चेन्नय्य माली ( हूविन ) ने चवुडि सेट्टि को यह 'धर्म-साधन'  
दिया कि 'आपने मेरी जमीन रहन से मुक्त की है इसलिए मैं'... । ]

१०३ ( २२८ )

## उसी मण्डप में तृतीय स्तम्भ

के पूर्व मुख पर

(शक सं० १४३२)

सखवरुष१४३२ डनेय शुक्लसंवत्सरद वैशाख् ब० १०लू  
मण्डलेश्वरकुलो ुङ्ग चङ्गाल्वमहदेवमहीपालन प्रधानसिरोमणि  
केशव-नाथ-वर-पुत्र कुल-पवित्रं जिनधर्मसहायप्रतिपालकरह  
बोम्यणमन्त्रिसहोदररह सम्यक्चूडामणि चैन्नबोम्मरसन  
नञ्जरायपट्टणद श्रावकभव्यजनङ्गल गोष्ठिसहाय श्री गुम्मतस्वा-  
मिय बल्लिवाडव जीर्णोद्धारव माडिसिदरु श्री ॥

[ मण्डलेश्वर कुलोत्तुंग चङ्गाल्व महदेव महीपाल के प्रधान मन्त्री,  
केशवनाथ के पुत्र, बोम्यण मन्त्री के आता चन्न बोम्मरस व नञ्जराय  
पट्टण के श्रावकों ने गोम्मत स्वामी के 'बल्लिवाड' ( ? ऊपर की  
मञ्जिल ) का जीर्णोद्धार कराया । ]

१०४ ( १८५ )

**गोम्मटेश्वर के दक्षिण की ओर  
कूष्माण्डिनी के पादपीठ पर**

( लगभग शक सं० ११०० )

**श्रीनयकीर्त्ति** सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिंगल शिष्यरु श्रीबाल-  
**चन्द्रदेवर** गुड्डु **केति** सेट्टिय मग **बम्मि** सेट्टि माडिसिद यच्च देवते ॥

[ नयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्ति के शिष्य बालचन्द्र देव के शिष्य  
बम्मि सेट्टि, केटि सेट्टि के पुत्र, ने यह यच्च देवता प्रतिष्ठित कराया । ]

१०५ ( २५४ )

**सिद्धरवस्ती में उत्तर की ओर एक स्तम्भपर**

( शक सं० १३२० )

( पश्चिम मुख )

श्रोमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रोनाभेयोऽजितः शम्भव-नमिविमलास्सुव्रतानन्तधर्मा-

श्चन्द्राङ्कुशशान्तिकुन्थु ससुमतिसुविधिश्शीतलो वासुपूज्यः ।

मल्लिश्रेयस्सुपाश्र्वौ जलजरुचिररोनन्दनः पार्श्वनेमी

श्रीवीरश्चेति देवा भुवि ददतु चतुर्विंशतिर्मङ्गलानि ॥ २ ॥

वीरो विशिष्टां विनताय रातीमिति त्रैलोकैरभिवर्ण्यते यः

निरस्तकम्भा निखिलार्थवेदी

पायादसौ पश्चिमतीर्थनाथः ॥ ३ ॥

तस्याभवन् सदसि वीरजिनस्य सिद्ध-

सप्तर्द्धयो गणधराः किल रुद्रसङ्ख्याः ।

ये धारयन्ति शुभदर्शनबोधवृत्ते

मिथ्यात्रयादपि गणान् विनिवर्त्य विश्वान् ॥४॥

इन्द्राग्नि भूती अपि वायुभूतिरकम्पनो मौर्य सुध-  
र्मपुत्राः ।

मैत्रेयमौण्ड्यौ पुनरन्धवेलः प्रभासकश्चेति तदीय-  
संज्ञाः ॥५॥

पूर्वज्ञानिह वादिनोऽवधिजुषो धीपर्ययज्ञानिनः

सेवे वैक्रियकांश्च शिक्तकयतीन्कैवल्यभाजोऽप्यमून् ।

इत्यग्न्यम्बुनिधित्रयोत्तरनिशानाश्चास्तिकायैश्शतै

रुद्रोनैकशताचलैरपि मितान्सप्तैव नित्यं गणान् ॥६॥

सिद्धिं गते वीरजिनेऽनुबद्ध-केवल्यभिल्यास्त्रयएव जाताः ।

श्रीगौतमस्तौ च सुधर्मजम्बू यैः केवली वै तदिहानु-  
बद्धं ॥७॥

जानन्ति विष्णुरपराजितनन्दिमित्रौ

गोवर्द्धनेन गुरुणा सह भद्रबाहुः ।

ये पञ्चकेवलिदप्यखिलं श्रुतेन

शुद्धा ततोऽस्तु मम धीः श्रुतकेवलिभ्यः ॥८॥

विद्यानुवादपठने स्वयमागतभि-

र्विद्याभिरात्मचरितादमलादभिन्नाः ।

पूर्वार्ण ये दशपुरुष्यपि धारयन्ति

तात्रौम्यभिन्नदशपूर्वधरान् समस्तान् ॥६॥

तेस्तत्रियः प्रोष्ठिल गङ्गदेवौ

जयस्सुधर्मा विजयो विशाखः ।

श्रीबुद्धिलोऽन्यै धृतिषेणनागौ

सिद्धार्थकश्चेत्यभिधानभाजः ॥१०॥

नक्षत्रपाण्डू जयपालकंसा-

चाठ्यावपि श्रीद्रुमषेणकश्च ।

एकादशाङ्गीधरणेन रूढा ये पञ्च तेऽमी हृदि मे वसन्तु ॥११॥

आचार-संज्ञाङ्ग-भृतोऽभवन्ते

लोहस्सुभद्रो जयपूर्वभद्रः ।

तथा यशोबाहुरमी हि मूल-

स्तम्भा जिनेन्द्रागमरत्नहर्म्ये ॥ १२ ॥

श्रीमान्कुम्भो विनीतो

हलधरवसुदेवाचला मेरुधीरः

सर्वज्ञः सर्वगुप्तो

महिधर-धनपालौमहावीरवीरौ ।

इत्याद्यानेक सूरिष्वथ सुपदमुपेतु दीव्यत्तपस्या-

शास्त्राधारेषु पुण्यादजनि सजगतां

कोण्डकुन्दो यतीन्द्रः ॥ १३ ॥

रजोभिरस्पृष्टतमत्वमन्तर्बाह्येऽपि संव्यञ्जयितुं यतीशः ।

रजः पदं भूमितलं विहाय चचार मन्ये चतुरङ्गुलं सः ॥ १४ ॥

श्रीमानुमास्वातिरयं यतीश-

स्तत्त्वार्थसूत्रं प्रकटीचकार ।

यन्मुक्तिमार्गाचरणोद्यतानां पाथेयमर्घ्यं भवति प्रजानां ॥ १५ ॥

तस्यैव शिष्योऽजनि गृद्धपिञ्छ-द्वितीयसंज्ञस्य बलाक-  
पिञ्छः ।

यत्सूक्तिरत्नानि भवन्ति लोके

मुक्त्यङ्गनामोहनमण्डनानि ॥ १६ ॥

समन्तभद्रस्स चिराय जीयाद्वादीभवज्जाङ्कुशसूक्तिजालः ।

यस्य प्रभावात्सकलावनीयं वन्ध्यास दुर्वादुकवा  
र्त्तयेऽपि ॥ १७ ॥

स्यात्कार-मुद्रित-समस्त-पदार्थ-पूर्णं

त्र्यैलोक्य-हर्म्यमखिलं स खलु व्यनक्ति ।

दुर्वादुर्कोक्तितमसा पिहितान्तरालं

सामन्तभद्र-वचन-स्फुट-रत्नदीपः ॥ १८ ॥

तस्यैव शिष्यश्शिवकोटिमुरिस्तपो लतालम्बनदेहयष्टिः ।

संसार-वाराकर-पोतमेतत्तत्त्वार्थसूत्रं तदलञ्चकार ॥ १९ ॥

प्रागभ्यधायि गुरुणा किल देवनन्दी

बुद्ध्या पुनर्विपुलया स जिनेन्द्रबुद्धिः ।

श्रीपूज्यपादइति चैष बुधैः प्रचख्ये

यत्पूजितः पदयुगे वनदेवताभिः ॥ २० ॥

भट्टाकलङ्कोऽकृत सौगतादिदुर्वाक्यपङ्क्तैस्सकलङ्कभूतं ।

जगत्स्वनामेव विधातुमुच्चैः सार्थं समन्तादकलङ्कमेव ॥२१॥

जीयाज्जगत्यां **जिनसेनसूरि**र्यस्योपदेशोज्ज्वलदर्पणेन ।  
व्यक्तोक्तं सर्वमिदं विनेयाः पुण्यं पुराणं पुरुषा  
विदन्ति ॥ २२ ॥

विनय-भरण-पात्रं भव्यलोकैकमित्रं  
विबुधनुतचरित्रं तद्गणेन्द्राग्रपुत्रं ।  
विहितभुवनभद्रं वीतमोहोरुनिद्रं  
विनमत **गुणभद्रं** तीर्णविद्यासमुद्रं ॥ २३ ॥

सद्व्यञ्जनस्वरनभस्तनु लक्षणाङ्ग-  
च्छिन्नाङ्ग-भौम-शकुनाङ्ग-निमित्तकैर्यैः ।  
कालत्रयेऽपि सुखदुःखजयाजयाद्यं  
तत्साक्षिवत्पुनरवैति समस्तमेव ॥२४॥

यः पुष्पदन्तेन च भूतबल्याख्येनापि शिष्य-द्वितयेन रेजे ।  
फलप्रदानाय जगज्जनानां प्राप्तोऽङ्कुराभ्यामिवकल्पभूजः ॥२५॥  
**अर्हद्वलि** स्सङ्खचतुर्विधं स श्रीकौण्डकुन्दान्वयमूलसङ्खं ।  
कालस्वभावादिह जायमानद्वेषेतराल्पीकरणाय चक्रे ॥२६॥

**सिताम्बरादौ** विपरीत-रूपे खिले विसङ्खे वितनोतु भेदं ।  
तत्सेननन्दि-त्रिदिवेशसिंहसङ्खेषु यस्तं मनुते  
कुट्टक्सः ॥२७॥

सङ्खेषु तत्र गणगच्छ-वलि-त्रयेण

लोकस्य चक्षुषि भिदाजुपिनन्दिसङ्खे



देशीगणे धृतगुणेऽन्वितपुस्तकाच्छ-

गच्छेऽङ्गुलेश्वरवलिर्जयति प्रभूता ॥२८॥

तत्रासन्नाग-देवोदय-रवि जिन - मेघ - प्रभा-बाल-  
चन्द्रा

देवश्री-भानुचन्द्रश्रुतनय गुणधर्मादयः कीर्तिदेवाः।

देश-श्रीचन्द्र-धर्मेन्द्र-कुल-गुण-तपो भूषणास्मर-  
योऽन्ये

विद्या दामेन्द्रपद्मामरवसु-गुण-माणिक्यकनन्या  
ह्वयाश्च ॥२९॥

( उत्तर मुख )

विहितदुरितभङ्गा भिन्नवादीभशृङ्गा

वितत-विविध-मङ्गाः विश्वविद्याब्जभृङ्गाः ।

विजितजगदनङ्गावेशदूरोऽवलाङ्गा

विशदचरणतुङ्गा विश्रुतास्तेऽस्तसङ्गाः ॥३०॥

जीयाच्छीनेमिचन्द्रः कुवलयलयकृत् कूटकोटीद्वगोत्रो

नित्योद्यन्टिबाधाविरचनकुशलस्तत्प्रभाकृतप्रतापः ।

चन्द्रस्येव प्रदतामृत-वचन-रुचा नीयते यस्य शान्तिं

धर्मव्याजस्य नेतुस्त्वमभिमतपदं यश्च नेमी रथस्य ॥३१॥

श्रीमाधनन्दीविबुधो जगत्यामन्वर्त्यमेवातनुतात्मनाम ।

समुल्लसत्संवरनिर्जरेण न येन पापान्यभिनन्दितानि ॥३२॥

तुङ्गे तदीये धृत-वादिसिंहे गुरुप्रवाहोन्नतवंशगोत्रे ।

अथोदितोऽभून्नजपादसेवाप्रमोदिलोकोऽभयचन्द्रदेवः

॥ ३३ ॥

जयति जिततमोऽरिस्त्यक्तदोषानुषङ्गः

पदमखिलकलानां पात्र-मम्भोरुहायाः ।

अनुगतजयपक्षश्चात्तमित्रानुकूल्य-

स्सततमभयचन्द्रस्सत्सभारतदीपः ॥ ३४ ॥

तदीयतनुजश्रुतमुनिर्गर्गपदेशस्तपोभरनियन्त्रिततनुस्तु-

तजिनेशः ।

ततोऽजनि जिनेन्द्रवचनास्तविषयाशस्ततत्त्वयशसाभृत-

समस्तवसुधाशः ॥ ३५ ॥

भव-विपिनकृशानुर्भव्यपङ्कजभानु-

स्स विततममसोनु स्सम्पदे कामधेनुः ।

भुविदुरिततमोऽरिप्रोत्थसन्तापवारि-

श्रुतमुनिवरसुरिशुद्धशीलोऽस्तनारिः ॥ ३६ ॥

चण्डोदण्डत्रिदण्डं परम-सुख-पदं पापबीजं परागो-

वारागारोरुकार-त्रिविधमधिकृता गौरवं गारवं च ॥

तुल्यं भल्लो न-शल्य-त्रयमतुलवपुशश्चर्ममर्मच्छिदं हो-

भाषोन्मेषि त्रिदोषं श्रुतमुनिमुनिपो निर्मुमोचैक एव ॥ ३७ ॥

प्रशिष्यभगणेङ्गमहसा भुवितदीये प्रवर्द्धयति पूर्णकलइन्दु-

रिवयस्म ।

अनादिनिधनादि-परमागम-पयोधिमभूदभिनवश्रुतमुनि-

गर्गपदे सः ॥ ३८ ॥

मार्गो दुर्गो निसर्गात्प्रतिभटकटुजल्पेन वादेन वापि  
 श्रव्ये काव्येऽतिनव्ये मृदुमधुरपदैः शर्मदैर्नर्मदैश्च ।  
 मन्त्रे तन्त्रेऽपि यन्त्रे नुतसकलकलायां च शब्दापनेवे वा  
 को वान्यः कोविदोऽस्ति श्रुतमुनिमुनिवद्विश्व-विद्या-

विनोदः ॥३६॥

शब्दे श्री पूज्यपादः सकल-विमत-जित्तर्कतन्त्रेषुदेवः  
 सिद्धान्ते सत्यरूपे जिन-विनिगदिते गौतमः काण्डकुन्दः ।  
 अध्यात्मे वर्द्धमानो मनसिज-मथने वारिमुग्दुःखबन्हा-  
 वित्येवं कीर्त्तिपात्रं श्रुतमुनिवदभूद्भूत्रये कोऽत्र कश्चित्

॥४०॥

श्रद्धां शुद्धां प्रवृद्धां दधतमधिकृतां जैनमार्गो सुसर्गो  
 सिद्धिं बुद्धेर्महर्द्धेर्बुध-वर-निवहैरद्भुतामर्त्यमानां ।  
 मित्रं चित्रं चरित्रं भवचय-भयदं भव्यनव्याम्बुजाना-  
 मप्येनोव्यूनमेनं श्रुतमुनि-मुनिपं चन्द्रमाराधयध्वं ॥४१॥  
 श्रोमानितोऽस्याभयचन्द्रसूरेस्तस्यानुजात [३]श्रुतकीर्त्ति-  
 देवः ।

अभूजिनेन्द्रोदितलक्षणानामापुष्णलक्ष्मीकृत-चारु-वृत्तः ॥४२॥  
 विदित-सकलवेदे वीत-चेतो-विषादे

विजित-निखिल-वादे विश्वविद्याविनोदे ।

विततचरितमोदे विस्फुरच्चित-प्रसादे

विनुत-जिनप-पादे विश्वरक्षां प्रपेदे ॥४३॥

स श्रीमांस्तत्तनूजस्तदनु गणपदे सन्न्यधाच्चारुकीर्त्तिः

कीर्त्याकीर्णत्रिलोक्या मुहुरयति विधुः काश्यमद्याप्यतुल्यः।

( तृतीय मुख )

यस्योपन्यास-वन्य-द्विप-पटु-घटयोत्पाटिताश्चादुवाचः  
पद्मासद्मात्तमित्रोज्ज्वलतररुचयोऽप्युत्थितावादिपद्मा : ॥४४॥

चारुश्रीश्चारुकीर्तिः पदनतवसुधाधोश्चरोऽधोश्चरोऽयं  
गर्वं कुर्वन्तमुर्वीश्वर-सदसि महावादिनं वादवन्ध्यं ।

चक्रे दिक्क्रोडदग्रेसरसरसवचाः साधिताशेषसाध्यो  
ऽवेद्यावेद्याद्यविद्याव्यपगमविलसद्विश्वविद्याविनोदः ॥४५॥

बल्लाल-क्षोणिपालं वलित-बलि-वलं वाजिभिर्व्वेजिताजि  
रोगावेगाद्रतासु स्थितिमपि सहसोल्लाघतामानिनाय ।

आतीयैव स्वयं सोऽखिलविदभयसूरेस्तथातारयत्त-  
न्निस्सोमाशेष-शास्त्राम्बुनिधिमभयसूरिं परं सिंहणार्थं

॥४६॥

शिष्टो दुष्टाघ-पिष्टो-करण-निपुण-सूत्रस्य तस्योपदेष्टु-  
शिशुष्यः पीयूष-निध्यन्दन-पटु-वचनः पण्डितः खण्डिताघः ।

सूरिस्सूरो विनेयाम्बुरुहविकसने सर्वदिग्व्यापिधामा  
श्रीमानस्थात्कृतास्थो बेलुगुलनगरे तत्र धर्माभिवृद्ध्यै ॥४७॥

यस्मिन्श्चामुण्डराजो भुजबलिनमिनं गुम्मतं कर्मठाज्ञं  
भक्त्या शक्त्या च मुक्त्यैजित-सुर-नगरे स्थापयद्भद्रमद्रौ ।

तद्वत्काल-त्रयोत्थोज्ज्वल-तनु-जिन-विम्बानि मान्यानि चान्यः  
कैलासे शीलशाली त्रिभुवन-विलसत्कीर्ति-चक्रीव चक्रे ॥४८॥

स्थाने तत्स्थानमन्त्रोज्ज्वलतरमतुलं पण्डितोऽलङ्करोतु

श्रीमानेषोऽर्क्षकीर्त्तिर्नृप इव विलसत्सालसोपानकाद्यैः ।

चित्रं शीर्षेऽभिषिच्य त्रिभुवनतिलकं तं पुनस्सप्तवारान्  
पङ्कोन्मुक्तं विधायाखिलजगदुरुपुण्यैस्तथालम्बकार ॥४६॥

किंवा क्षीराभिषेकादुत्तनिजयशसो निर्म्मलाच्छङ्कराद्रीन्  
गोत्राद्रीन्स्फाटिकीं च चित्तिममरगजान्दिग्गजानेष धीरः ।

क्षीरोदान्स्प्तसिन्धूनुदरिजलधरान्शारदान्नागलोकं  
शेषाकीर्त्तं विदीर्त्तामृतकलशमपि स्वविवर्तेने न विद्मः ॥५०॥

मेरौ जन्माभिषेकं सुरपतिरिव तत्तथैवात्र शैले  
देवस्यादर्शयन्नो परमखिलजनस्यैष सूरिर्विधाय ।

सन्मार्गं चाधुनैतं पिहितमपि चिरं वामदृग्वाक्तमोभि-  
र्निर्देशं तानि पृर्व पुरुरिव पुनरत्राकलङ्कोऽपनीय ॥५१॥

रे रे काणाद कोणं शरणमधिवस क्षुद्रनिद्रानिवासं  
मैमांसेच्छामतुच्छां त्यज निजपटुवादेषु कृच्छ्राशुगच्छ ।

बौद्धाबुद्धे विमुग्धोऽस्यपसर सहसा साङ्ख्यमारङ्ग  
सङ्ख्ये

श्रीमान्मथ्नाति वादीन्द्रगजमभयसूरिः परं वादिसिंहः ॥५२॥

ऐश्वर्यं वहतश्च शाश्वतमुखे धत्तश्च सर्वज्ञतां  
विभ्राते च गिरीशतां शिवतया श्रीचारुकीर्त्तीश्वरौ ।

तत्रायं जिनभागसावजिनभागधोमानयं मार्गणं

हेमाद्रिं समधत्त मार्गणमुरुस्थेमा स हेमाचले ॥५३॥

स्फूर्ज्जद्धूर्ज्जटि-भाल-लोचन-शिखि-ज्वालावलीढस्य ते

हं हो मन्मथजीवनैषधिरभूदेषा पुरा शैलजा ।

सर्व्वज्ञोत्तमचारुकीर्त्ति<sup>१</sup>सुमुनेस्सम्यक्तपो-वह्निना

निर्द्गन्धस्य चरित्रचण्डमरुतोद्धूतस्य का ते गतिः ॥५४॥

पितामहपरिष्वङ्गसङ्गतैः प्रशान्तयं ।

चारुकीर्त्ति<sup>१</sup>वचोगङ्गालिङ्गिताङ्गी सरस्वती ॥५५॥

आस्यं वाणीनिवास्यं हृदयमुरुदयं स्वं चरित्रं पवित्रं

देहं शान्त्यैरुगोहं सकलसुजनतागण्यमुद्भूत-पुण्यं ।

अव्या भव्या गुणालिङ्गिखिलबुधततेर्यस्य सोऽयं जगत्यां

अत्यारूढप्रसादो जयतु चिरमयं चारुकीर्त्ति<sup>१</sup>व्रतीन्द्रः ॥५६॥

मूढं प्रौढं दरिद्रं धनपतिमधमं मानवं मानवन्तं

दुष्टं शिष्टं च दुःखान्वितमपि सुखिनं दुर्मदं धर्मशीलं ।

कुर्व्वन् सामन्तभद्रं चरितमनुसरन्नत्र सामन्तभद्रं ।

(चतुर्थमुख)

तन्वन् श्रीचारुकीर्त्ति<sup>१</sup>र्ज्जगति विजयते चन्द्रिका-चारु-

कीर्त्तिः ॥५७॥

रे रे चार्वाक गर्व्व परिहर विरुदालि पुरैव प्रमुञ्च

साङ्ख्यासङ्ख्येय-राजत्परिकर-निकरादाप्तघटोऽसि

भट्ट ।

पूणर्न काणाद तूणर्न त्यज निजमनिशं मानमापन्निदानं

हिंसन्पुंसोऽभिशंस्यो ब्रजतियदपरान्वादिनः सिंहणार्थः

॥५८॥

तत्पण्डिताङ्घ्रानुरतौ तदिलादिनाथौ

सम्यक्-बोध-चरणोन्नतदासनिष्ठौ,

जाताबुभौ हरियणो हरिणाङ्कचारु-

**मर्माणिक्यदेवइतिचार्जुनदेवकल्पः ॥५८॥**

धन्या मन्ये न सन्यासपरमविधिना नेतुमेव स्वयं स्वं

धर्मं कर्म्मरिमर्म्मच्छिदमुरुमुखदं दुर्लभं वल्लभं च ।

शान्ताश्शान्तेर्नि शान्तीकृत-सकल-जनाः सूक्तिपीयूषपूरै-

स्तेऽमी सर्व्वेऽस्तदेहास्सुरपदमगमन्ध्यात-जैनेन्द्र-पादाः ॥६०॥

तत्र त्रयोदशशतैश्च दशद्वयेन

शाकेऽब्दके परिमितेऽभवदीश्वराख्ये ।

माघे चतुर्दशतिथौ सितभाजिवारे

स्वातौ शनेस्सुरपदं पुरु पण्डितस्य ॥६१॥

आसीदथाभिनवपण्डितदेवसूरि-

राशाननाच्छमुकुरीकृत कीर्त्तिरेषः ।

शिष्ये निधायनिजधर्मधुरीणभावं

यत्रात्मसंस्कृतिपदेऽजनि पण्डितार्थः ॥६२॥

तथ्यं मिथ्या-कदम्बं सततमपि विधित्सुर्व्वथा ताम्यसीदं

तत्त्वं ताथागतत्वं तरलजनशिरोरत्नतावत्प्रधाव ।

जीवं भद्राणि पश्यत्युरुजगदुदितात्यक्तवादाभिलाषो

यस्माद्भस्मीकरोत्यग्निरिव भुवितरून्वादिनः पण्डितार्थः

॥६३॥

संसारापारवाराकर-धर-लहरी-तुल्य-शल्योत्थ-देह-

व्यूहे मुह्यजनानामसुखजलचरैर्दितानाममीषां ।

पोतो नीतो विनीतोऽद्भुतततिगतवन्नव्यभव्याच्चि ताङ्गीघ्र-  
वर्भद्रोन्निद्रस्सुमुद्रस्सततमभिनवोराजते पण्डिताय्यः ॥६४॥

अयमथ गुरुभक्त्याकारयत्तन्निषद्या-

मपरगणिभिरुच्चैर्गोहिभिस्तैस्सहैव ।

शुभ-दिन-सुमुहूर्त्ते पुरितोद्घाखिलाशं

युगपदखिलवाद्यध्वानरत्नप्रदानैः ॥६५॥

इत्यात्मशक्त्या निजमुक्तयेऽहं ह्यासेदितं शासनमेतदुर्व्यां ।

शास्त्रौघकर्तृ-त्रयशंसनाङ्गमाचन्द्रतारा-रविमेरु जीयात् ॥ ६६ ॥

१०६ (२५५)

## उपयुक्त लेख के नीचे

( शक सं० १३३१ )

श्रीमत्कर्नाटदेशे जयति पुरवरं गङ्गवत्याख्यमेतत्

सदृक्कदानोपवासव्रतरुचिरभवत्तत्र माणिक्यदेवः ।

बाचायी धर्मपत्नी गुणगणवसतिस्तस्य सूनुस्तयोश्च

श्रीमान्मायगननामाजनि गुणमणिभाक् चन्द्रकीर्त्तेश्च

शिष्यः ॥ १ ॥

सम्यक्चूडामणियेनिसिद्ध आभव्योत्तमनु स्वस्ति श्री शक  
वरुष १३३१ नेय विरोधिसंवत्सरद चैत्र ब ५ गु श्री  
गुम्मतनाथन मध्याह्नद अष्टविधार्चवना निमित्तवागि बेलुगुलद  
गङ्गसमुद्रद करेय केलगे दानशालेय गद्दे ख २ गवनू बेलुगुलद  
माणिक्यनखरद हरियगौडन मग गुम्मतदेव माणिक्यदेवन



मग बोम्मणनोलगाद गौडुगल समन्नदलि देवरिगे पादपूजेय  
माडि कयवागि कोण्डु कोट्टु असाधारणवहन्त कीर्त्तियन् पुण्य-  
वनू उपाज्जिसि कोण्डनु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[ कर्नाट देश की गङ्गवती नामक नगरी में माणिक्यदेव और उनकी भार्या बाचायि रहते थे । इनके मायण्ण नामक पुत्र हुआ जो चन्द्र-कीर्त्ति का शिष्य था । मायण्ण ने उक्त तिथि को बेलगुल के गङ्गसमुद्र नामक सरोवर की दो खण्डुग भूमि खरीद कर उसे गोम्मट स्वामी के अष्टविध पूजन के लिये बेलगुल के कई पुरुषों के समक्ष दान की । ]

१०७ (२५६)

### उपयुक्त लेख के नीचे

( लगभग शक सं० ११०३ )

शीलदि चन्द्रमौलिविभुवाचलदेवि निजोद्वकान्तेया-

लोलमृगात्ति बेलगुलद गुम्मटनाथन पादद-

र्चालिगे बेडे बेक्कन शीमेयनित्तनुदारवीरब-

ल्लाल-नृपालकनुर्वियुमव्धियुमुलितनमेयदे सत्तिवनं ॥ १ ॥

अन्तु धारापूर्वकवं माडिकोटन्त ग्रामसीमे । मूड होन्नेन-  
हल्लि तेङ्ग बस्तिहल्लि देवरहल्लि पडुव चोलेनहल्लि हाडोनहल्लि  
(पूर्व मुख के नीचे)

बडग मञ्चेनहल्लिय बिट्टु कोट ग्रामौ आचन्द्रार्कस्थायियागि  
सलुगे मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[चन्द्रमौलि की पत्नी आचल देवी की प्रार्थना पर वीरबल्लाल नृप ने 'बेक्क' नामक ग्राम का दान गोम्मटनाथ के पूजन के हेतु किया । लेख में ग्राम की सीमा दी हुई है ।

नोट—आचल देवी के अन्य अनेक दानों का उल्लेख शक सं० ११०३ के लेख नं० १२४ (३२७) में है। अतएव प्रस्तुत लेख का समय भी शक सं० ११०३ के लगभग होना चाहिये। पर आश्चर्य यह है कि यह लेख इससे बहुत पीछे के दो लेखों ( नं० १०५ और १०६ ) के नीचे खुदा हुआ है। लिपि भी इसकी उतनी पुरानी प्रतीत नहीं होती। सम्भव है कि किसी आधार पर लेख पीछे से ही लिखा गया हो। ]

१०८ (२५८)

सिद्धरवस्ती में दक्षिण ओर एक स्तम्भ पर

( शक सं० १३५५ )

(प्रथममुख)

श्री जयत्यजय्यमाहात्म्यं विशासितकुशासनं ।  
 शासनं जैनमुद्गासि मुक्तिलक्ष्म्यैकशासनं ॥ १ ॥  
 अपरिमितसुखमनल्पावगममयं प्रबलबलहृतातङ्कं ।  
 निखिलावलोकविभवं प्रसरतु हृदये परं ज्योतिः ॥ २ ॥  
 उद्दीप्ताखिलरत्नमुद्धृतजडं नानानयान्तर्गृहं  
 सस्यात्कारसुधाभिलिप्तिजनिभृत्कारुण्यकूपोच्छ्रितं ।  
 आरोप्य श्रुतयानपात्रममृतद्वीपं नयन्तः परा-  
 नेते तीर्थकृतो मदीयहृदये मध्येभवाब्ध्यासतां ॥ ३ ॥  
 तत्राभवत् त्रिभुवनप्रभुरिद्ववृद्धिः  
 श्रीवर्द्धमानमुनिरन्तिम-तीर्थनाथः ।  
 यद्देहदीप्तिरपि सन्निहिताखिलानां  
 पृव्वोत्तराश्रितभवान् विशदीचकार ॥ ४ ॥

तस्याभवच्चरमचिज्जगदीश्वरस्य

यो यौव्वराज्यपदसंश्रयतः प्रभूतः ।

श्रीगौतमो गणपतिर्भगवान्वरिष्ठः

श्रेष्ठैरनुष्ठितनुतिर्भुनिभिस्स जीयात् ॥ ५ ॥

तदन्वये शुद्धिमति प्रतीते समग्रशीलामलरत्नजाले ।

अभूद्यतीन्द्रो भुवि भद्रबाहुः पयःपयोधाविव पूर्ण-

चन्द्रः ॥ ६ ॥

भद्रबाहुरग्रिमः समग्रबुद्धिसम्पदा

शुद्धसिद्धशासनं सुशब्द-बन्ध-सुन्दरं ।

इद्वृत्तसिद्धिरत्र बद्धकर्मभित्तपो-

वृद्धिवर्द्धितप्रकीर्तिरुदधे महर्द्धिकः ॥ ७ ॥

यो भद्रबाहुः श्रुतकेवलीनां मुनीश्वराणामिह पश्चिमोऽपि ।

अपश्चिमोऽभूद्विदुषां विनेता सर्व्वश्रुतार्थप्रतिपादनेन ॥ ८ ॥

तदीय-शिष्योऽजनि चन्द्रगुप्तः समग्रशीलानतदेवबृद्धः ।

विवेश यत्तीव्रतपःप्रभाव-प्रभूत-कीर्तिर्भुवनान्तराणि ॥ ९ ॥

तदीयवंशाकरतः प्रसिद्धादभूददोषा यतिरत्नमाला ।

वभौ यदन्तर्मणिर्वन्मुनीन्द्रस्स कुण्डकुन्दोदित-चण्ड-

दण्डः ॥ १० ॥

अभूदुमास्वातिमुनिः पवित्रे वंशे तदीये सकलार्थवेदी ।

सूत्रीकृतं येन जिनप्रणीतं शास्त्रार्थजातं मुनिपुङ्गवेन ॥ ११ ॥

स प्राणिसंरक्षणसावधानो बभार योगी किल गृद्धपत्तान् ।

तदा प्रभृत्येव बुधा यमाहुराचार्यशब्दोत्तरगृद्ध-

पिञ्चं ॥ १२ ॥

तस्मादभूयोगिकुलप्रदीपो बलाकपिञ्चः स तपो-

महर्द्धिः ।

यदङ्गसंस्पर्शनमात्रतोऽपि वायुर्विषादीनमृतीचकार ॥ १३ ॥

समन्तभद्रोऽजनि भद्रमूर्तिस्ततः प्रणेता जिनशासनस्य ।

यदीयवाग्वज्रकठोरपातश्चूर्णीचकार प्रतिवादिशैलान् ॥ १४ ॥

श्री पूज्यपादो धृतधर्मराज्यस्ततो सुराधीश्वर-पूज्य-

पादः ।

यदीयवैदुष्यगुणानिदानीं वदन्ति शास्त्राणि तदुद्धृतानि ॥ १५ ॥

धृतविश्वबुद्धिरयमत्र योगिभिः

कृतकृत्यभावमनुविभ्रदुच्चकैः ।

जिनवद्वभूव यदनङ्गचापहृत्

सजिनेन्द्रबुद्धिरिति साधुवर्णितः ॥ १६ ॥

श्रीपूज्यपादमुनिरप्रतिमौषधर्द्धि-

र्ज्जियाद्विदेहजिनदर्शनपृतगात्रः ।

यत्पादधौतजलसंस्पर्शःप्रभावा-

त्कालायसं किल तदा कनकीचकार ॥ १७ ॥

ततः परं शास्त्रविदां मुनीनां

मग्रेसरोऽभूदकलङ्कसूरिः ।

मिथ्यान्धकारस्थगिताखिलार्थाः

प्रकाशिता यस्य वचोमयूखैः ॥ १८ ॥

तस्मिन्गते स्वर्गभुवं महर्षौ दिवःपतीन्नर्तुमिव प्रकृष्टान् ।

तदन्वयोद्भूतमुनीश्वराणां बभूवुरिस्थं भुवि सङ्गभेदाः ॥१६॥

स योगिसङ्घश्चतुरः प्रभेदानासाद्य भूयानविरुद्धवृत्तान् ।

वभावयं श्रीभगवान्जिनेन्द्रश्चतुर्मुखानीव मिथस्समानि ॥२०॥

**देव-नन्दि-सिंह-सेन-सङ्गभेदवर्तिनां**

देशभेदतः प्रबोधभाजि देवयोगिनां ।

वृत्ततस्समस्ततोऽविरुद्धधर्मसेविनां

मध्यतः प्रसिद्ध एष नन्दिसङ्ग इत्यभूत् ॥ २१ ॥

**नन्दिसङ्गं सदेशीयगणे गच्छे च पुस्तके ।**

**इंगुलेशवल्लिर्जीयान्मङ्गलीकृतभूतलः ॥ २२ ॥**

तत्र सर्वशरीरिरक्षाकृतमतिर्विजितेन्द्रिय-

स्सिद्धशासनवर्द्धनप्रतिलब्ध-कीर्तिकलापकः ।

विश्रुत-श्रुतकीर्ति-भट्टारकयतिस्समजायत

प्रस्फुरद्गुणामृतांशुविनाशिताखिलहृत्तमाः ॥ २३ ॥

कृत्वा विनेयान्कृतकृत्यवृत्तान्निधाय तेषु श्रुतभारमुच्चैः ।

स्वदेहभारं च भुवि प्रशान्तस्समाधिभेदेन दिवं स भेजे ॥२४॥

( द्वितीयमुख )

गते गगनवाससि त्रिदिवमत्र यस्येच्छिन्ना

न वृत्तगुणसंहतिर्व्वसति केवलं तद्यशः ।

अमन्दमदमन्मथप्रणमदुग्रचापोच्चल-

त्प्रतापहतिकृत्तपञ्चरणभेदलब्धं भुवि ॥ २५ ॥

श्रीचारुकीर्त्तिमुनिरप्रतिमप्रभाव-

स्तस्मादभून्निजयशोधवलीकृताशः ।

यस्याभवत्तपसि निष्ठुरतोपशान्ति-

श्चित्ते गुणे च गुरुता कृशता शरीरे ॥ २६ ॥

यस्तपोवल्लिभिर्वेल्लिताघद्रुमो

वर्त्तयामास सारत्रयं भूतले ।

युक्तिशास्त्रादिकं च प्रकृष्टाशय-

श्शब्दविद्याम्बुधेर्वृद्धिकृच्चन्द्रमाः ॥ २७ ॥

यस्य योगीशिनः पादयोस्सर्व्वदा

सङ्गिनीमिन्दिरां पश्यतश्शार्ङ्गिणः ।

चिन्तयेवाभवत्कृष्णता वर्ष्मणः

सान्यथा नीलता किं भवेत्तत्तनोः ॥ २८ ॥

येषां शरीराश्रयतोऽपि वातो रुजः प्रशान्तिं विततान तेषां ।

बल्लालराजोत्थितरोगशान्तिरासीत्किलैतत्किमु

भेषजेन ॥ २९ ॥

मुनिर्मनीषा-ब्रलतो विचारितं समाधिभेदं समवाप्य सत्तमः ।

विहाय देहं विविधापदां पदं विवेश दिव्यं वपुरिद्ध-

वैभवं ॥ ३० ॥

अस्तमायाति तस्मिन्कृतिनि यय्य-

म्नि नाभविष्यत्तदा परिडतयति-

स्सोमः वस्तुमिष्टयातमस्तोमपिहितं

सर्व्वमुत्तमैरित्ययं वक्तृभिरूपाघोषि ॥ ३१ ॥

विबुधजनपालकं कुबुध-मत-हारकं ।

विजितसकलेन्द्रियं भजत तमलं बुधाः ॥ ३२ ॥

**धवल-सरोवर-नगर-जिनास्पदमसदृशमाकृततदुरु-**

तपोमहः ॥ ३३ ॥

यत्पादद्वयमेव भूपतिततिश्चक्रे शिरोभूषणं

यद्वाक्यामृतमेव कौविदकुलं पीत्वा जिजीवानिशं ।

यत्कीर्त्या विमलं वभूव भुवनं रत्नाकरेणावृतं

यद्विद्या विशदीचकार भुवने शास्त्रार्थजातं महत् ॥ ३४ ॥

कृत्वा तपस्तीव्रमनल्पमेधास्सम्पाद्य पुण्यान्यनुपप्लुतानि ।

तेषां फलस्यानुभवाय दत्तचेता इवाप त्रिदिवंस योगी ॥ ३५ ॥

तस्मिन्जातो भूम्नि **सिद्धान्तयोगी**

प्रोद्यद्वाचा वर्द्धयन् सिद्धशास्त्रं ।

शुद्धे व्योम्नि द्वादशात्मा करौघै-

र्यद्वत्पद्मव्यूहमुन्निद्रयन्स्वैः ॥ ३६ ॥

दुर्व्याद्युक्तं शास्त्रजातं विवेकी वाचानेकान्तार्थसम्भूतया यः ।

इन्द्रोऽन्या मेघजालोत्थया भूवृद्धां भूभृत्संहतिं वा

विभेद ॥ ३७ ॥

यद्वत्पदाम्बुजनतावनिपालमौलि-

रत्नांशवोऽनिशममुं विदधुः नरागं ।

तद्वन्न वस्तु न वधूर्न च वस्त्रजातं

नो यौवनेन न च बलं न च भाग्यमिद्धं ॥ ३८ ॥

प्रविश्य शास्त्राम्बुधिमेष धीरो जग्राह पूर्वं सकलार्थरत्नं ।

परेऽसमर्थस्तदनुप्रवेशादेकैकमेवात्र न सर्वमापुः ॥ ३६ ॥

सम्पाद्य शिष्यान्स मुनिः प्रसिद्धा-

नध्यापयामास कुशाग्रबुद्धीन् ।

जगत्पवित्रोकरणाय धर्म-

प्रवर्त्तनायाखिल संविदे च ॥ ४० ॥

कृत्वा भक्तिं ते गुरोस्सर्वशास्त्रं

नीत्वा वत्सं कामधेनुं पयो वा ।

स्वीकृत्योच्चैस्तत्पिबन्तोऽतिपुष्टाः

शक्तिं स्वेषां ख्यापयामासुरिद्धां ॥ ४१ ॥

तदीयशिष्येषु विदां वरेषु गुणैरनेकैश्च तमुन्यभिल्यः ।

रराज शैलेषु समुन्नतेषु स रत्नकूटैरिव मन्दराद्रिः ॥ ४२ ॥

कुलेन शीलेन गुणेन मत्या शास्त्रेण रूपेण च योग्य एषः ।

विचार्य तं सुरिपदं स नीत्वा कृतक्रियं स्व

गणयाञ्चकार ॥ ४३ ॥

अथैकदा चिन्तयदित्यनेनाः स्थितिं समालोक्य निजायुषांऽल्पं ।

समर्प्य चास्मिन् स्वगणं समर्थं तपश्चरिष्यामि समाधि-

योग्यं ॥ ४४ ॥

विचार्य चैवं हृदये गणाग्रणीर्निवेदयामास विनेयवान्धवः ।

मुनिः समाहूय गणाग्रवर्त्तिनं स्वपुत्रमित्थं श्रुतवृत्त-

शालिनं ॥ ४५ ॥



(तृतीयमुख)

मदन्वयादेष समागतोऽयं गणो गुणानां पदमस्य रत्ना ।  
 त्वयाङ्ग मद्रूत्क्रियतामितीष्टं समर्पयामास गणी गणं  
 स्वं ॥ ४६ ॥

गुरुविरहसमुद्यद्दुःखदूनं तदीयं  
 मुखमगुरुवचोभिस्स प्रसन्नोचकार ।  
 सपदि विमलिताब्द-श्लिष्ट-प्रांसु-प्रतानं  
 किमधिवसति योषिन्मन्दफूत्कारवातैः ॥ ४७ ॥  
 कृतिततिहितवृत्तस्सच्वगुप्तिप्रवृत्तो  
 जितकुमतविशेषश् शोषिताशेषदोषः ।  
 जितरतिपति-सत्त्वस्तत्त्व-विद्या प्रभुत्व-  
 स्सुकृतफल-विधेयं सोऽ गमदिव्यभूयं ॥ ४८ ॥  
 गतेऽत्र तत्सुरिपदाश्रयोऽयं  
 मुनीश्वरस्सङ्गमवर्द्धयत्तराम् ।  
 गुणैश्च शास्त्रैश्चरितैरनिन्दितैः  
 प्रचिन्तयन्तद्गुरुपादपङ्कजम् ॥ ४९ ॥  
 प्रकृत्य कृत्यं कृतसङ्करक्षो विहाय चाकृत्यमनल्पबुद्धिः ।  
 प्रवर्द्धयन् धर्ममनिन्दितं तद्गुरुरूपदेशान् स फलीचकार ॥ ५० ॥  
 अखण्डयदयं मुनिर्विमलवाग्भिरत्युद्धतान्  
 भ्रमन्द-मद-सञ्चरत्कुमत-वादिकोलाहलान् ।  
 भ्रमन्नमरभूमिभृद् भ्रमितवारिधिप्रोच्चलत्  
 तरङ्ग-ततिविभ्रम-प्रहण-चातुरीभिर्बुवि ॥ ५१ ॥

का त्वं कामिनि कथ्यतां श्रुतमुनेः कीर्तिः किमागम्यते  
ब्रह्मन् मत्प्रियसन्निभो भुवि बुधस्सम्मृग्यते सर्व्वतः ।

नेन्द्रः किं सच गोत्रभिद् धनपतिः किं नास्त्यसौ किन्नरः  
शेषः कुत्रगतस्स च द्विरसने रुद्रः पशूनां पतिः ॥ ५२ ॥

वाग्देवताहृदय-रञ्जन-मण्डनानि

मन्दार-गुष्प-मकरन्दरसोपमानि ।

आनन्दिताखिल-जनान्यमृतं वमन्ति

कर्णेषु चम्य वचनानि कवीश्वराणां ॥ ५३ ॥

समन्तभद्रोऽप्यसमन्तभद्रः

श्री-पूज्यपादोऽपि न पूज्यपादः ।

मयूरपिच्छोऽप्यमयूरपिच्छ-

श्चित्रं विरुद्धोऽप्यविरुद्ध एषः ॥ ५४ ॥

एवं जिनेन्द्रोदितधर्ममुच्चैः प्रभावयन्तं मुनि-वंश-दीपिनं ।

अदृश्यवृत्त्या कलिना प्रयुक्तो वधाय रोगस्तमवाप

दूतवत् ॥ ५५ ॥

यथा खलः प्राप्य महानुभावं तमेव पश्चात्कबलीकरोति ।

तथा शनैस्सोऽयमनुप्रविश्य वपुर्व्वबाधे प्रतिबद्धवीर्य्यः ॥ ५६ ॥

अङ्गान्यभूवन् सकृशानि यस्य न च व्रतान्यद्भुत-वृत्त-भाजः ।

प्रकम्पमापद्गुरिद्धरागान्न चित्तमावस्यकमत्यपूर्व्व ॥ ५७ ॥

स मोक्ष-मार्गो रुचिमेष धीरो मुदं च धर्मे हृदये प्रशान्तिं

समादधे तद्विपरीतकारिण्यस्मिन् प्रसर्पत्यधिदेहमुच्चैः ५८

अङ्गेषु तस्मिन् प्रविजृम्भमाणे

निश्चित्य योगी तदसाध्यरूपतां ।

ततस्समागत्य निजाग्रजस्य

प्रणम्य पादाववदत् कृताञ्जलिः ॥ ५६ ॥

देव पण्डितेन्द्र योगिराज धर्मवत्सल

त्वत्पद-प्रसादतस्समस्तमर्जितं मया ।

सद्यशः श्रुतं व्रतं तपश्च पुण्यमक्षयं

किं ममात्र वर्त्तित-क्रियस्य कल्प-काङ्क्षिणः ॥ ६० ॥

देहतो विनात्र कष्टमस्ति किं जगत्त्रये

तस्य रोग-पीडितस्य वाच्यता न शब्दतः ।

देय एव योगतो वपु-र्व्विसर्ज्जन-क्रम-

स्साधु-वर्ग-सर्व्व-कृत्य-वेदिनां विदांवर ॥ ६१ ॥

विज्ञाप्य कार्य्यं मुनिरित्यमर्शयं

मुहुर्मुहुर्व्वारयतो गणीशान् ।

स्वीकृत्य सल्लेखनमात्मनीनं

समाहितो भावयति स्म भाव्यं ॥ ६२ ॥

उद्यद्-विपत्-तिमि-तिमिङ्गिल-नक्र-चक्र-

प्रात्तुङ्ग-मृत्यमृति-भीम-तरङ्ग-भाजि ।

तीव्राजवज्रव-पयोनिधि-मध्य-भागे

क्षिभ्रात्यहन्नि'शमयं पतितस्स जन्तुः ॥ ६३ ॥

इदं खलु यदङ्गकं गगन-वाससां केवलं

न हेयमसुखास्पदं निखिल-देह-भाजामपि ।

अतोऽस्य मुनयः परं विगमनाय बद्धाशया

यतन्त इह सन्ततं कठिन-काय-तापादिभिः ॥ ६४ ॥

अयं विषयसञ्चयो विषमशेषदोषास्पदं

स्पृशज्जनिजुषामहो बहुभवेषु सम्मोहकृत ।

अतः खलु विवेकिनस्तमपहाय सर्व्वसहा

विशन्ति पदमक्षयं विविध-कर्म-हान्युत्थितं ॥ ६५ ॥

( चतुर्थ मुख )

उद्दीप्त-दुःख-शिखि-सङ्गतिमङ्गयष्टिं

तीव्राजवञ्जव-तपातप-ताप-तप्तां ।

स्रक्-चन्दनादि-विषयामिष-तैल-सिक्तां

को वावलम्ब्य भुवि सञ्चरति प्रबुद्धः ॥ ६६ ॥

स्रष्टुः स्त्रीणामेनसां सृष्टितः किं

गात्रस्याधोभूमिसृष्ट्या च किं स्यात् ।

पुत्रादीनां शत्रु-कार्य्यं किमर्थं

सृष्टेरित्थं व्यर्थ्यता धातुरासीत् ॥ ६७ ॥

इदं हि वात्यं बहु-दुःख-बीज-

मियं वयश्रीर्घन-राग-दाहा ।

स वृद्धभावोऽमर्षास्त्रिशाला

दशेयमङ्गस्य विपत्फला हि ॥ ६८ ॥

लब्धं मया प्राक्तन-जन्म-पुण्यात्

सुजन्म सद्गात्रमपूर्व्वबुद्धिः ।

सदाश्रयः श्रीजिन-धर्मसेवा

ततो विना मा च परः कृती कः ॥ ६६ ॥

इत्थं विभाव्य सकलं भुवन-स्वरूपं

योगी विनश्वरमिति प्रशमं दधानः ।

अर्द्धावमीलितदृगस्वलितान्तरङ्गः

पश्यन् स्वरूपमिति सोऽवहितः समाधौ ॥ ७० ॥

हृदय-कमल-मध्ये सैद्धमाधाय रूपं

प्रसरदमृतकल्पैर्मूलमन्त्रैः प्रसिञ्चन् ।

मुनि-परिषदुदीर्ण-स्तात्र-घोषैस्सहैव

श्रुतमुनिरयमङ्गं स्वं विहाय प्रशान्तः ॥ ७१ ॥

अगमदमृतकल्पं कल्पमल्पीकृतैना

विगलितपरिमोहस्तत्र भोगाङ्गकेषु ।

विनमदमर-कान्तानन्द-बाष्पाम्बु-धारा-

पतन-हृत-रजोऽन्तर्द्धाम-सोपानरम्यं ॥ ७२ ॥

यतौ याते तस्मिन् जगदजनि शून्यं जनिभृतां

मनो-मोह-ध्वान्तं गत-बलमपूर्यप्रतिहतं ।

व्यदीप्युद्यच्छोको नयन-जल-मुष्णं विरचयन्

वियोगः किं कुट्यादिह न महतां दुस्सहतरः ॥ ७३ ॥

पादा यस्य महामुनेरपि न कैर्भूभृच्छिरोभिधृता

वृत्तं सन्न विदांवरस्य हृदयं जग्राह कस्यामलं ।

सोऽयं श्रीमुनि-भानुमान् विधि-वशादस्तं प्रयातो महान्

यूयं तद्विधिमेव हन्त तपसा हन्तुं यतध्वं बुधाः ॥ ७४ ॥

यत्र प्रयान्ति परलोकमनिन्ध्यवृत्ता-

स्थानस्य तस्य परिपूजनमेव तेषां ।

इज्या भवेदिति कृताकृतपुण्यराशेः

स्थेयादियं श्रुतमुनेस्सुचिरं निषया ॥ ७५ ॥

इशु-शर-शिखि-विधु मित-शक-

परिधावि-शरद्वितीयगाषाढे

सित-नवमि-विधु-दिनोदयजुषि

सविशाखे प्रतिष्ठितेयमिह ॥ ७६ ॥

विलीन-सकल-क्रियं विगत-रोधमत्यूर्जितं

विलङ्घित-तमस्तुला-विरहितं विमुक्ताशयं ।

अवाङ्-मनस-गोचरं विजित-लोक-शक्त्यग्रिमं

मदीय-हृदयेऽनिशं वसतु धाम दिव्यं महत् ॥ ७७ ॥

प्रबन्ध-ध्वनि-सम्बन्धात्सद्रागात्पादन-क्षमा ।

मङ्गराज-कवेर्वाणी वाणी-वीणायतेतरां ॥ ७८ ॥

[ नोट—मंगराज कवि-कृत यह श्रुतमुनि की प्रशस्ति ऐतिहासिक उपयोगिता के अतिरिक्त अपने काव्य-सौन्दर्य में भी अनुपम है । ]

१०६ ( २८१ )

त्यागदब्रह्मदेवस्तम्भ पर

( लगभग शक सं० ६५० )

( उत्तर मुख )

ब्रह्म-क्षत्र-कुलोदयाचल-शिरोभूषामणिर्भानुमान

ब्रह्म-क्षत्रकुलाब्धि-वर्द्धन-यशो-रोचिस्सुधा-दीधितिः ।

ब्रह्म-क्षत्र-कुलाकराचल-भव-श्री-हार-वल्लोमणिः

ब्रह्म-क्षत्र-कुलाग्निचण्डपवनश्चावुण्डराजोऽजनि ॥ १ ॥

कल्पान्त-क्षुभिताब्धि-भीषण-बलं पातालमल्लानुजम्

जेतुं वज्रिवलदेवमुद्यतभुजस्येन्द्र-क्षितीन्द्राज्ञया ।

पत्युश्श्रीजगदेकवीर नृपतेजैत्र-द्विपस्याप्रतो

धावदन्तिनि यत्र भग्नमहितानीकं मृगानीकवत् ॥ २ ॥

अस्मिन् दन्तिनि दन्त-वज्र-दलित-द्विट्-कुम्भि-कुम्भोपले

वीरोत्तंस-पुरोनिषादिनि रिपु-व्यालाहुशे च त्वयि ।

स्यात्कोनाम न गोचरप्रतिनृपो मद्बाण-वृष्णोरग-

प्राप्तस्येति नोलम्बराजसमरे यः श्लाघितः स्वामिना ॥३॥

स्वातःक्षार-पयोधिरस्तु परिधिश्चास्तु त्रिकूटपुरी

लङ्कास्तु प्रति नायकोऽस्तु च सुरारातिस्तथापि क्षमे ।

तं जेतुं जगदेकवीर-नृपते त्वत्तेजसेतिक्षणान्-

निर्व्व्यूढं रणसिङ्ग-पार्थिव-रणे येनेर्जितं गर्जितम् ॥४॥

वीरस्यास्य रणेषु भूरिषु वयं कण्ठप्रहोत्कण्ठया

तप्तास्त्वम्प्रति लब्ध-निर्व्वृत्तिरसास्त्वत्सङ्ग-धाराम्भसा ॥

कल्पान्तं रणरङ्गसिङ्ग-विजयी जीवेति नाकाङ्गना

गीर्वाणी-कृत-राज-गन्ध-करिणे यस्मै वितीर्णाशिषः ॥ ५ ॥

आकण्डुं भुज-विक्रमादभिलषन् गङ्गाधिराज्य-श्रियं

येनादौ चलदङ्क-गङ्गनृपतिर्व्व्यर्थाभिलाषीकृतः ।

कृत्वा वीर-कपाल-रत्न-चषके वीर-द्विषशोणितम्

पातुं कौटुकिनश्च कौणप-गणाःपूण्णाभिलाषीकृताः ॥ ६ ॥

[ नोट—केवल यही एक लेख है जिसमें चामुण्डराय मंत्री का स्वतन्त्र और विस्तृत रूप से वर्णन पाया जाता है। दुर्भाग्यवश यह लेख का एक खण्ड मात्र है। ज्ञात होता है कि अपना एक छोटा सा लेख नं० ११० ( २८२ ) लिखाने के लिये हेर्गडे कण्ण ने इस महत्त्वपूर्ण लेख की तीन बाजू घिसवा डाली है। यदि यह लेख पूरा मिल जाता तो सम्भव है कि उससे चामुण्डराय और गोम्मटेश्वर मूर्ति के सम्बन्ध की अनेक बातें विदित हो जातीं जिनके विषय में अब केवल अनेक अनुमान ही लगाये जाते हैं। ]

११० ( २८२ )

उसी स्तम्भ पर

( लगभग शक सं० ११२२ )

( दक्षिणमुख )

श्री-गोम्मट-जिन-पाग्रद चागद कम्बके यत्तनं माडिसिदं ।

धीगम्भीरगुणाढ्यं भोग-पुरन्दरनेनिपप हेर्गडे करणं ॥

[ गम्भीर बुद्धि और गुणवान् हेर्गडे कण्ण ने गोम्मट जिन के सन्मुख त्यागद स्तम्भ के लिये यत्न देवता निर्माण कराया । ]

१११ ( २७४ )

अखण्ड बागिलु के पूर्वकी ओर चट्टान पर

( शक सं० १२६५ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

श्रीमूल-सङ्घपयःपयोधिवर्द्धनसुधाकराः श्रीबलात्कारगणक-  
मल-कलिका-कलाप-विकचन-दिवाकराः ... वनवा... त कीर्त्ति-



देवाःतत्शिष्याः राय-भुजमुदाम.....आचार्य महा-वादि-  
 वादीश्वर राय-वादि-पितामह सकल-विद्वज्जन-चक्रवर्त्ति देवेन्द्र-  
 विशाल-कीर्त्ति-देवाःतत्शिष्याःभट्टारक-श्रीशुभकीर्त्तिदेवास्त  
 त्शिष्याः कलिकाल-सर्वज्ञ-भट्टारक-धर्मभूषणदेवाः तत्शिष्याः  
 श्री-अमरकीर्त्याचार्याः तत्शिष्याः मालिर्वा...ति-नृपाणां प्रथ-  
 मानल.....रसित...नुत-पा.....यमुज्जासक  
 .....देमक...चार्यपट्टविपुलायाचला ... करण-मात्तण्ड-  
 मण्डलानां भट्टारक-धर्मभूषण-देवानां...तत्त्वार्थ-वार्द्धि-  
 वर्द्धमान-हिमांशुना...वर्द्धमान-स्वामिना कारितोऽहं आचा-  
 र्याणां...स्वस्तिशक-वर्ष १२८५ परिधावि संवत्सर  
 वैशाख-शुद्ध ३ बुधवारे ॥

११२ ( २७३ )

उसी चट्टान पर

( लगभग शक सं० १३२२ )

श्री शान्तिकीर्त्तिदेवर शिष्यरु हेमचन्द्र-कीर्त्ति-देवर  
 निसिद्धि ॥ मङ्गलमहाश्री ॥

११३ ( २६८ )

उसी चट्टान पर

( सम्भवतः शक सं० १०८६ )

श्रीमत्परम-नाम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलाचार्यादि-  
 प्रशस्तय-विराजित-चिह्नालङ्कितं विसम्बोधावबोधितं सकल-  
 विमल-केवल-ज्ञान-नेत्र-त्रयं अनन्त-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखात्म-  
 करं विदितात्म-सद्धर्मोद्धारकरं एकत्व-भावना-भावितात्मं  
 उभ-नय-समर्त्थिस्वरं त्रिदण्ड-रहितं त्रिशल्य-निराकृतं  
 चतु-कषा-विनाशकरं चतुर्विधवुपसर्गगिरिकन्दरादि-दैरेय-  
 समन्वितं पञ्च-दस-प्रमाद-विनास-कर्तुं गलं पञ्चाचार-  
 वीर्याचार-प्रवीणं सङ्गदरुशनद भेदाभेदिगलं सङ्ग-कर्म सारं  
 सप्तनयनिरतं अष्टाङ्ग-निमित्त-कुशलं अष्ट-विध-ज्ञानाचार-  
 सम्पन्नं नव-विध-ब्रह्मचरिय-विनिर्मुक्तं दश-धर्म-शर्म-शान्तं  
 मेकादशश्रावकाचारवुपदेशव्रताचार-चारित्रं द्वादशातप-  
 निरतं द्वादशाङ्ग-श्रुतप्रविधान-सुधाकरं त्रयोदशाचार-शील-  
 गुण-धैर्यमं सम्पन्नं एम्बत-नालकु-लच-जीव-भेद-मार्गणं सर्व-  
 जीव-दया-परं श्रीमत्कोण्डकुन्दान्वय-गगन-मार्त्तण्डं  
 विदितोतण्ड-कुष्ममाण्डं देशिगण-गजेन्द्र-सिन्धूरमदधारावभा-  
 सुरं श्री-महादेशि-गण-पुस्तक-गच्छ कोण्ड-कुन्दान्वय श्रीमत्  
 त्रिभुवनराज-गुरु-श्रीभानुचन्द्र-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलं श्री-  
 सोमचन्द्र-सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगलं चतुर्मुखभट्टारकदेवं  
 श्रीसिंहनन्दिभट्टाचार्यं श्री शान्तिभट्टारकाचार्यं श्री-  
 शान्तिकीर्ति...र...भट्टारकदेवं... श्रीकनकचन्द्रमल-  
 धारिदेवं श्री नेमिचन्द्र मलधारिदेवं चतुसङ्गश्रीसकल-  
 गण-साधारण.....ड-देवधामं कलियुग-गणधर-पञ्चासत्

मुनीन्द्रहं अवर शिष्यरु गौरश्रीकन्तियरु सोमश्रीकन्तियरु  
 ...नश्रीकन्तियरु देवश्रीकन्तियरु कनक-श्रीकन्तियरु  
 शिष्य...यिप्पत्तु-एण्डुतण्ड-शिष्यरु वेरसु हेवणन्दि संवत्स-  
 रद फाल्गुणसु ८ त्रि श्री गोस्मटदेवर तीर्थनन्द.....पञ्च  
 कल्याण .....

[इस लेख में कुन्दकुन्दान्वय, देशी गण, पुस्तकगच्छ के महाप्रभावी  
 आचार्यों—त्रिभुवनराजगुरु भानुचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, सोमचन्द्र  
 सिद्धान्तचक्रवर्त्ति, चतुर्मुख भट्टारकदेव, सिंहनन्दि भट्टाचार्य, शान्ति  
 भट्टारकाचार्य, शान्तिकीर्त्ति भट्टारकदेव, कनकचन्द्र मलधारिदेव, और  
 नेमिचन्द्र मलधारिदेव—के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि  
 इन सब आचार्यों व अनेक गणों और संघों के आचार्य, कलियुग  
 के गणधर पचास मुनीन्द्र, व उनकी शिष्यायों गौरश्री, सोमश्री, देवश्री,  
 कनकश्री व शिष्यों के अट्टाईस संघों ने उक्त तिथि को एकत्रित होकर  
 पञ्चकल्याणोत्सव मनाया । ]

**नोट**—लेख में संवत्सर का नाम हेवणन्दि दिया हुआ है जिससे  
 सम्भवतः हेमलम्ब का तात्पर्य है । शक सं० १०१६ हेमलम्ब था । ]

११४ ( २६६ )

**एक शिला पर जो उस चट्टान के सामने खड़ी है**

( सम्भवतः शक सं० १२३८ )

स्वस्ति श्रीमूलसङ्घदेशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वय  
 श्रीत्रैविद्य-देवर शिष्यरु पद्मणन्दिदेवरु नल-संवत्सरद  
 चैत्र-सु-१ सोमवारदन्दु नाक-श्रीमनस्सरोजिनीराजमरा-  
 लारादरु मङ्गलमहाश्री ॥

[ उक्त तिथि को त्रैविद्यदेव के शिष्य पद्मनन्दिदेव ने समाधिमरण  
 किया । ]

[ नोट—लेख में नल संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० १२३८  
नल था ]

११५ ( २६७ )

## अखण्डबागिलु की शिला पर

( लगभग शक सं० १०८२ )

स्वस्ति श्रीमन्महाप्रधान भव्य-जन-निधानं सेनेयङ्ककार  
रण-रङ्ग-नीर श्रीमन्मरियाने-दण्डनाथानुजं दानभानुजनेनिसिद  
भरतमय्य-दण्डनायकनी-भरतबाहुबलिकेवलिलगल प्रतिमेग-  
लुमनी - वसदिगलुमातीर्थ-द्वार-पत्त-शोभात्थ माडिसिदनी-रङ्गद  
हप्पलियेयुमनीमहासोपानपङ्कियुमं रचिसिदं श्रीगोम्मटदेवर  
सुत्तलु रङ्गम-हप्पलियेयं विगियिसिदनन्तुमल्लदेयुमी-गङ्गवाडिना-  
डोलल्लिगल्लिगेल्लि नोर्पड' ।

कन्द ॥ प्रकट-यशो-विभुवेण्व-

त्तुकन्ने-वसदिगलनोसेदु जीण्णोद्धार-

प्रकरमनिन्नूरनलौ-

किक-धृति माडिसिदनेसेये भरत-चमूपं ॥ १ ॥

भरत-चमूपतिसुते सु-

स्थिरे शान्तल-देवि बूचिराजाङ्गने

तद्वरतनेयं मरि.....

...ने सदु वरयिसिदनिदं ॥ २ ॥

[ मरियणे दण्डनाथ के लघु आता महामंत्री भरतमय्य दण्डनायक  
ने ये भरत और बाहुबलि केवलि की मूर्ति याँ व ये बस्तियाँ इस तीर्थ-

स्थान के द्वार की शोभा के लिये निर्माण कराईं । उन्होंने रङ्गशाला की हृष्पलिगे ( कटघर ? ) व महासोपान व गोम्मटदेव की रङ्गशाला की हृष्पलिगे भी निर्माण कराये, तथा गङ्गवाडिभट में अस्सी नवीन बस्तियाँ बनवाईं और दो सौ बस्तियों का जीर्णोद्धार कराया । भरत चमूपति की सुता शान्तल देवी.....ने यह लेख लिखवाया । ]

११६ ( ३१२ )

### बोदेगल बस्ति के पश्चिम की ओर चट्टान पर

( शक सं० १६०२ )

श्रीमत्तु शालिवाहन शकवरुष १६०२ सिद्धार्थ-संवत्सरद माघ-बहुल १० यल्लु मुनिगुन्दद सीमेय देश-कुलकरणियर मकलुवाङ्क होन्नप्पय्यन अनुज वेङ्कप्पैय्यन पुत्र सिट्ठप्पैन अनुज नागप्पैय्यन पुण्यस्त्रीयराद बनदाम्बिकेयरु बन्दु दरुशनवादरु भद्रं भूयात् श्री ॥ श्रुतसागर-वर्णिगल समेत यिदे तिथियल्लि माडिगूर गिडगप्प नागप्पन पुत्र दानप्पसेट्टर पुण्य-स्त्री-नागव्वन मैदुन भिष्टप्पनु दरुशनवादरु ॥

[ उक्त तिथि को श्रुतसागर गणी के साथ उक्त व्यक्तियों ने तीर्थ वंदना की । ]

११७ ( २५६ )

### कच्चि गुब्बि बागिलु के दक्षिण की ओर चट्टान पर

( सम्भवतः शक सं० १५३१ )

श्री सौम्यसंवत्सरदोलु विभवद आश्वयज व ७ मियो-लु तां श्रीसोमनाथपुरवेनिसिद कोङ्गनाडिङ्गदं अनादिय ग्रामं ॥

आ-ग्रामदलु श्रीमत्पण्डित देवर शिष्यरु काश्यप-नोत्रद द्विज-  
कुल-सम्पन्नरु सेनबोव सायणनवरु अवर मदवलिंगे महदेविगल  
प्रिय-पुत्र हिरियणनू श्री गुम्मतनाथ-स्वामिगल दिव्य-श्री-  
पदवनू दुरुशनवागि परमजिनेश्वर-भक्तरु वर-गुणिगलु मुक्ति-पथवं  
पडदरु ॥ श्री

[ कश्यपगोत्रीय ब्राह्मण और पण्डित देव के शिष्य सेनबोव सायण  
के पुत्र जिनभक्त हिरियण ने उक्त तिथि को अनादि ग्राम कोङ्गनाडु  
की गणना की (?) और उसकी पत्नी महादेवी ने गोम्मतनाथ स्वामी के  
चरणारविन्द की वन्दना कर मुक्ति-मार्ग प्राप्त किया । ]

[ नोट—लेख में सौम्य संवत्सर का उल्लेख है । शक सं०  
१५३१ सौम्य था ]

११८ (३१३)

चौबीस तीर्थंकर बस्ति में

( शक सं० १५७० )

( नागरी लिपि )

वों नम सिद्धेभ्यः गोमट-स्वामीः आदीश्वरः मुल्ल-  
नार्कः चौबीस तीर्थंकरं कि परतीमाः चारुकीरती  
पण्डितः धरमचन्द्रः बल्लातकार उपदसाः सके १५७०  
सर्वधारी-नाम-संवत्सरः वैशाख वदी २ सुक्रवार  
देहराङ्गी पती स्यदै..... गेरवाल्लः यवरेगोत्रः जीनासाः  
धीवा सा का पुत्रः सदावनसाः व भावूसाः व लामासाका  
पुत्रः ताकासा मनासाः कमलपूरे सातसा भाससा.....  
वद...भोपत.....रसे राव.....

११८ (२७७)

अखण्ड बागिलु के जानेवाले मार्ग के पश्चिम की  
ओर चट्टान पर

( विक्रम सं० १७१६ )

(नागरी लिपि)

संवत् १७१८ वर्षे वैशाख-सुदि ७ सोमे श्री काष्ठा-  
सङ्घे मण्डितटगच्छे...श्री-राजकीर्तिः । तत्पट्टे भ श्री  
लक्ष्मीसेनस्तत्पट्टे भ श्री इन्द्रभूषणतत्पट्टे शोसू वधेरवाल  
जाती बोरखज-बाई-पुत्र पं भा धनार्द्र तयो पुत्र पं खाम्फल  
पूजनार्द्र तयो पुत्र पं वन जन पडाई स-परिवारे गोमट-स्वामि  
चा जात्रा.....सफल

१२० ( ३१८ )

पहाड़ी पर चढ़ने के मार्ग के पूर्व की ओर चट्टान पर

( लगभग शक सं० ११४० )

अरकरेय वीर वीरपल्लव-रायन मकं केदेसङ्घर-नायकं  
बेल्लुगोल प्व...येच्च बेलबडिगर बेटके ॥

१२१ (३२१)

ब्रह्मदेव मण्डप के पीछे चट्टान पर

( सम्भवतः शक सं० १६०१ )

सिदार्ति स । कार्त्तिक सुद्ध २ रलु । श्री-ब्रह्म-देवर-  
मटपवन्तु हिरिसालि गिरिगौडना तम्म रङ्गैयन से वे ॥

[ उक्त तिथि को ढिरिसालि के गिरिगौड के लघु आता रङ्गैय ने ब्रह्मदेव मण्डप को दान दिया । ]

[ नोट—लेख में सिद्धार्थि संवत्सर का उल्लेख है । शक सं० १६०१ सिद्धार्थि था । ]

१२२ (३२६)

## पहाड़ी के दक्षिण मूल में चट्टान पर

( लगभग शक सं० ११२२ )

स्वस्ति प्रसिद्ध-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्तिगल् त्रिविष्टपाबेष्टित-  
कीर्त्तिगल् कोण्डकुन्दान्वयगगन-मार्त्तण्डरुमप्प श्रीमन् नय-  
कीर्त्तिसिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल् गुड्ड बम्मदेव-हेगगडेय मग  
नागदेव-हेगगडे नागसमुद्रमेन्दु करेयं कट्टिसि तोटवनि  
किसिदडवर शिष्यरु भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवरु प्रभाचन्द्र  
देवरु भट्टारक-देवरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवरु बालचन्द्र देवर  
सन्निधियलु नागदेव हेगगडेगे आ-तोट गहे अवरेहाल सर्व्वबाधा  
परिहारवागि वर्शके गद्याण ४ तेरुवन्तागि मक्कल मक्कलु पय्यन्त  
कोट्ट शासनात्थवागि श्री-गोम्मट-देवर अष्ट-विधाचर्चनेगे  
बिट दत्ति ॥

[ बम्मदेव हेगगडे के पुत्र व नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति के शिष्य  
नागदेव हेगगडे ने नागसमुद्र नामक सरोवर और एक उद्यान निर्माण  
कराये । इन्हें अवरेहाल सहित नयकीर्त्ति के शिष्य भानुकीर्त्ति, प्रभा-  
चन्द्र, भट्टारकदेव और नेमिचन्द्र पण्डितदेव ने नागदेव हेगगडे को ही  
इस शर्त पर दे दिया कि वह सदैव प्रतिवर्ष गोम्मटदेव के अष्टविध  
पूजन के निमित्त चार गद्याण दिया करे । ]



१२३ (३७५)

**चेन्नयणन के कुञ्ज में एक चट्टान पर**

( लगभग शक सं० १५६५ )

पुट्टसामि-सट्टर श्री-देवीरम्मन मग चेन्नयणन मण्डप  
 आदि-तीर्त्तद कोलविदु हालु-गोलनोविदु अमूर्त-गोलनोविदु  
 गङ्गे नदियो । तुङ्गबद्रियोविदु मङ्गला गौरेयो विदु रुन्द-  
 वनवोविदु सङ्गार-तोटवो । अयि अयिया अयि अयिये वल्ले  
 तीर्त्त वल्ले तीर्त्त जया जया जया जय ॥

[ यह पुट्टसामि और देवीरम्म के पुत्र चण्णन का मण्डप और  
 आदितीर्थ है । यह दुग्धकुण्ड है या कि अमृतकुण्ड ? यह गङ्गा  
 नदी है या तुङ्गभद्रा या मङ्गलगौरी ? यह रुन्दावन है कि विहारो-  
 पवन ? ओहो ! क्या ही उत्तम तीर्थ है ? ]

# श्रवण बेलगोल नगर में के शिलालेख

१२४ ( ३२७ )

अकून वस्ति में द्वार के समीप एक पाषाण पर

( शक सं० ११०३ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादाभोध-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥ १ ॥

भद्रम्भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाध-नाशिने ।

कुतीर्त्य-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥

स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्वानलोद्दाम-तेजं

विस्तारान्तःकृतोर्वी-तलममलयशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।

वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्वावलम्बं गभीरं

प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसगुं होय सलोर्वीश-

वंशं ॥ ३ ॥

अदरोलु कौस्तुभदेन्दनगर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-स-

त्वदगुर्व्वं हिमरश्मियुज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-

तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं तालिद तानस्ते पु-

ट्टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनीपालकं ॥ ४ ॥

कं ॥ विनयं बुधरं रञ्जिसे

घन-तेजं वैरि-बलमनलरिसे नेगल्दं ।

**विनयादित्य-नृपालक-**

ननुगत-नामार्थनमल कीर्त्ति-समर्थ ॥ ५ ॥

**आ-विनयादित्यन वधु**

भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे सद्-

भाव-गुण-भवनमखिल-क-

ला-विलसिते केलेयवरसियेम्बलु पेसरिं ॥ ६ ॥

**आदम्पतिगे तनूभव-**

नादं शचिगं सुराधिपतिगं मुन्ने-

न्तादं जयन्तनन्ते वि-

षाद-विदूरान्तरङ्गनेरेयङ्ग-नृप' ॥ ७ ॥

**आतं चालुक्कय-भूपालन** बलद भुजा-दण्डमुदण्ड-भूप-

ब्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद्-विदलन-कुलिशं वन्दि-सस्यौघ-मेघं ।

श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात-

ख्यात-प्रोद्यद्यशश्री-धवलितभुवनं धीरनेकाङ्गवीर' ॥ ८ ॥

एरेयनेलेगेनिसि नेगल्दिदह्

**एरेयङ्ग नृपाल-तिलकनङ्गने चलूवि-**

ङ्गरेवट्टु शील-गुणदि

नेरदेचलदेवियन्तु नोन्तरुमोलरे ॥ ९ ॥

एने नेगल्दवरिब्वर्ग

तनूभवन्नेगल्दरस्ते बल्लाल'वि-

**ठणु-नृपालकनुदयादि-**

त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तलदोल् ॥ १० ॥

अवरोल् मध्यमनागियुं भुवनदोलु पृव्वापराम्भोधिये-  
 यदुविनं कूडे निमिच्चुवोन्दु-निज-वाहा-विक्रम-क्रीडेयु-  
 द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-त्रातैक-धामं धरा-  
 धव-चूडामणि यादवाब्ज-दिनपं श्रीविष्णुभूपालकं  
 ॥ ११ ॥

एलेगेसेव कायतूत्त-  
 तलवनपुरमन्ते रायरायपुरं ब-  
 ल्वल बलेद विष्णु-तेजो-  
 ज्वलनदे बेन्दवु बलिष्ठ-रिपु-दुर्गाङ्गल् ॥ १२ ॥  
 इनितं दुर्गम-वैरि-दुर्गा-चयमं कोण्डं निजाक्षेपदि-  
 न्दिनिबर्भूपरनाजियोल् तविसिदं तन्नल्ल-सङ्घातदि-  
 न्दिनिबर्गान्तर्गित्तनुद्ध-पदमं कारुण्यदिन्देन्दुता-  
 ननितं लेकदे पेल्वोडब्ज-भवनुं विभ्रान्तनप्पं बलं ॥ १३ ॥

कं ॥ लक्ष्मीदेवि खगाधिप-  
 लक्ष्मङ्गेसेदिर्द विष्णुगेन्तन्ते बलं ।  
 लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग—  
 लक्ष्मानने विष्णुगग्रसतियेने नेगल्दल् ॥ १४ ॥  
 अवर्गो मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनीलकोल्लकेसा-  
 ल्ववयव-शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-  
 निवहमनेच्चु सुयवनणमानदे वीररनेच्चु युद्धदोलु ।  
 तविसुवोनादनात्म-भवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजं ॥ १५ ॥

पडे-माते' बन्दु कण्डङ्गमृत-जलधि तां गब्बदिं गण्डवात'  
 तुडिवातङ्गनेम्बै प्रलय-समयदोल् मेरेयं मीरि बर्णा-  
 कडलन्नं कालनन्नं मुलिद कुलिकनन्नं युगान्ताग्नियन्नं  
 सिडिलन्नं सिंहदन्नं पुरहरनुरिगण्णन्ननी नारसिंहं  
 ॥ १६ ॥

तदद्धाङ्ग-लद्धिम ॥

मृदु-पदेयेचलदेवी —

सुदतिये नरसिंह-नृपतिगनुपमसौख्य-

प्रदे पट्ट-महादेवी-

पदविगे सले योग्येयागि धरेयोल् नेगल्दल् ॥ १७ ॥

वृत्त ॥ ललना-लीलेगे मुन्नवेन्तु कुसुमाखं पुट्टिदों विष्णुगं

ललित-श्री-वधु-विङ्गवन्ते नरसिंहचोण्णिपालङ्गवे-

चल-देवी-वधुगं परार्थ-चरितं पुण्याधिकं पुट्टिदों

बलवट्टैरि-कुलान्तकं जय-भुजं बल्लाल-भूपालकं ॥ १८ ॥

रिपु-भूपालेभ-सिंहं रिपु-नृप-नलिनानीक-राका-शशाङ्कं

रिपु-राजन्यौघ-मेघ-प्रकर-निरसनोद्धूत-त्रात-प्रपातं ।

रिपु-धात्रीशाद्रि-वज्रं रिपु-नृपति-तमस्तेम-विध्वंसनार्कं

रिपु-पृथ्वीपालकालानलनुदयिसिदं वीर-बल्लाल-देवं ॥ १९ ॥

गत-लीलं लालनालम्बित-बहल-भयोप्र-ज्वरं-गूज्जरं स-

न्धृत-शूलं गौलनुच्चैः कर-धृत-विलसत्पल्लवं पल्लवं-प्रो-

बिभ्रत-चेलं चालनादं कदन-वदन-दोलु मेरियं पोयसेवीरा-

हित-भूभृजाल-कालानलनतुल-बलं वीर-बल्लाल-देवं ॥ २० ॥

भरदिन्दं तन्न दोर्गर्ब्वदिनोडियरसं कायदु कादल्कणं पू-  
ण्डरे बल्लाल-क्षितीशं नडदु बलसियुमुत्तेसेना गजेन्द्रो-  
त्कर-दन्ताघात-सञ्चूर्णितशिखरदोलुच्चङ्गियोल्लिखितदंभा-  
सुर-कान्ता-देश-कोश-त्र ज-जनक-हयौघान्वितं पाण्ड्यभूपं

॥ २१ ॥

चिरकालं रिपुगल्गसाध्यमेनिसिद्धं चङ्गियमुत्तिदु-

र्द्धर-तेजो-निधि धूलि-गोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी-  
श्वरनं सन्देशेय क्षितीश्वरननाभण्डारमं स्त्रीयरं

तुरग-त्रातमुमं समन्तु पिडिदं बल्लाल-भूपालकं ॥ २२ ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वार-  
वतीपुरवराधीश्वरं तुलुवबल-जलधि-बडवानलं दायाद-दावानलं  
पाण्ड्य-कुल-कमलवेदण्ड गण्ड-भेरुण्ड मण्डलिक-बेण्टेकार  
चोल-कटक-सुरेकार । सङ्ग्राम-भीम । कलि-काल-काम । सकल-  
वन्दि-वृन्द-सन्तर्पण-समग्र-वितरणविनोद । वासन्तिका देवी-  
लब्ध-वर-प्रसाद । यादव-कुलाम्बर-द्युमणि । मण्डलिक-  
मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलपरोलूगण्ड शनिवारसिद्धि  
गिरि-दुर्ग-मल्ल नामादि-प्रशस्ति-सहितं श्रीमत्त्रिभुवन-मल्ल  
तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-नोलम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गल-गोण्ड-  
भुज-बल-वीर-गङ्ग-प्रताप-होय्सल वीर-बल्लाल देवर्द्धक्षिण-  
मण्डलमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्वकं सुखसङ्कथा-विनो-  
ददि राज्यं गेयुत्तिरे ।

तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥

तनगाराध्यं हरं विक्रम-भुज-परिधं वीर-बल्लाल-देवा-  
 वनिपालं स्वामि विभ्राजितविमल-चरित्रोत्करं शम्भु-देवं ।  
 जनकं शिष्टेष्ट-चिन्तामणि जननि जगत्ख्यातेयकूब्धेयेन्द-  
 न्दिनिसं श्री-चन्द्रमौलि-प्रभुगे सममे कालेय-मन्त्रीश वर्गं  
 ॥ २३ ॥

पति-भक्तं वर-मन्त्र-शक्ति-युतनिन्द्रङ्गेन्तु भास्वद्-वृह-  
 स्पति-मन्त्रीश्वरनादनन्ते विलसद्बल्लाल-देवावनी-  
 पतिगी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-विबुधेशं मन्त्रियादं समु-  
 व्रत-तेजो-निलयं विरोधि-सचिवोन्मत्तेभ-पञ्चाननं ॥ २४ ॥

वर-तर्काम्बुज-भास्करं भरत-शास्त्राम्भोधिचन्द्रं समु-  
 दुर-साहित्य-लतालवालनेसेदं नाना-कला-कोविदं ।  
 स्थिर-मन्त्रं द्विज-वंश-शोभितनशेषस्तुत्यनुद्यद्यशं  
 धरेयोल् विश्रुत-चन्द्रमौलि-सचिवं सौजन्य-जन्मालयं  
 ॥ २५ ॥

तदर्धाङ्ग-लक्ष्मि ॥

घन-बाहा-बहलोर्मि-भासिते मुख-व्याकोश-पङ्केज-म-  
 ण्डने दृङ्गीन-विलासे नाभिविततावर्त्ताङ्गे लावण्य-पा-  
 वन-वास्सम्भृते चन्द्रमौलिवधुवी श्री आचियक्कं जग-  
 ज्जन-संस्तुत्ये कलङ्क-दूरे नुते गङ्गा-देवि तानल्लले ॥ २६ ॥  
 स्वस्त्यनवरत-विनमदमर-मौलि-माला-मिलित-चलन-नलिन-  
 युगल-भगवदर्हत्परमेश्वर-स्नात-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेयुं चतु-

विविधानून-दान-समुत्तुङ्गेयुमप्प श्रीमतु हिरिय-हेर्गडितियाचल-  
देवियन्वयवेन्तेन्दोडे ॥

वरकीर्त्ति-धवलिताशा—

द्विरदौघं मासवाडि-नाड विनूतं ।

परम-श्रावकनमलं

धरणियोली-शिवेयनायकं विभुवेसेदं ॥ २७ ॥

आतन सतिगे सीताम्बुज-

शीतांशु-शरत्पयोद-विशदयशश्श्री-

धौत-धरातलेगखिल-वि-

नीतेगे चन्दव्वेगबलेयर्होरियुण्टे ॥ २८ ॥

तत्पुत्र ॥

जिन-पति-पद-सरसीरुह-

विनमद्भृङ्गं समस्त-ललनानङ्गं ।

विनय-निधि-विश्व-धात्रियोल्

अनुपमनी बम्म-देव हेगडे नेगल्दं ॥ २९ ॥

तत्सहोदरं ॥ गत-दुरितनमल-चरितं

वितरण-सन्तर्पिताखिलार्थि-प्रकरं ।

क्षितियोल्-बावेय-नायक-

नत्ति-धीरं कल्प-वृक्षं गेले वन्दं ॥ ३० ॥

तत्सहोदरि ॥

सरसिरुह-वदने धन-कुचे

हरिणाच्चि मदोत्क-कोकिल-स्वने मदव-



त्करि-पति-गमने तनूदरि

धरेयोल् कालव्वे रूपिनागरमादल् ॥३१॥

तत्सहोदरि ॥

धरेयोल् रुढिय मासवाडियरसं हेम्माडि-देव' गुणा-

करना-भूपन चित्त-वल्लभे लसत्सौभाग्ये गङ्गानिशा-

कर-ताराचल-तार-हार-शरदम्भोदस्फुरत्कीर्त्त-भा-

सुरेयप्पाचल-देवि विश्व-भुवन-प्रख्यातियं तालिददल् ॥

॥ ३२ ॥

तत्सहोदरं ॥

वर-विद्वज्जन-कल्प-भूजनमलाम्भोरासि-गम्भीरनु-

द्धुर-दर्प-प्रतिनायक-प्रकर-तीव्र-ध्वान्त-सङ्घात-सं-

हरणाकर्क शरदभ्रशुभ्रविलसत्कीर्त्यङ्गनावल्लभं

धरेयोल् सोवण-नायकं नेगल्दनुद्यद्वैर्य-शौर्याकरं ॥

॥ ३३ ॥

कं ॥ गिरिसुतेगे जह्नु कन्नेगे

धरणी-सुतेगत्तिमब्बेगनुपम-गुण-दोल् ।

दोरेयेनलिन्तीसकलो-

व्वरेयोल् बाचव्वे शीलवति सति नेगल्दल् ॥३४॥

तत्पुत्रं ॥

परसैन्याहि-विहङ्गनूर्जितयशस्सङ्गं जिनेन्द्राघ्रि-प-

द्य-रजो-भृङ्गनुदार-तुङ्गनेसेदं तन्नोप्पुवीसद्गुणो-

त्करदिं देशिय-दण्डनायकनिलाभिष्टार्थसन्दायकं

धरेयोल् बम्मेय-नायकनिखिलदीनानाथसन्त्रायकं ॥ ३५ ॥

तद्वनिते ॥

शतपत्रेक्षणे मल्लिलसेट्टि-विभुगं निशशेष-चारित्र-भा-

सितेगी माचवे-सेट्टिकव्वेगवनूनात्मीय-सौन्दर्य-नि-

र्जित-चित्तोद्भवकान्तेयुद्भविसिदल् दोचव्वे सत्कान्ते ता-

र-नुषारांशु-लसद्यशो-धवलिताशा-चक्रेयीधात्रियोल् ॥

॥ ३६ ॥

बम्मेय-नायकननुजं ॥

मारं मदनाकारं

हार-क्षीराब्धि-विशद-कीर्त्याधारं ।

धीरं धरेयोल् नेगल्दं

दूरीकृत-सकल-दुरित-विमलाचारं ॥ ३७ ॥

तदनुजे ॥

हरिणी-लोचने पङ्कजानने घनश्रोणिस्तनाभोग-भा-

सुरे बिम्बाधरे कोकिल-स्वने सुगन्ध-श्वासे चञ्चत्तनू-

दरि-भृङ्गावलि-नीलकेशे-कल-हंसीयानेयीकम्बुक-

न्धरेयप्पाचलदेवि-कन्तु-सलियं सौन्दर्यं दिन्देलिपल् ॥

॥ ३८ ॥

तदनुजे ॥

इन्दु-मुखि मृग-विलोचने

मन्दर-गिरि-धैर्ये तुङ्ग-कुच-युगे भृङ्गी-

बृन्द-शिति-केश-विलसिते

चेन्द्रववे विनूतेयादलखिलोर्वरेयाल् ॥ ३६ ॥

तदनुजं ॥

हार-हरहास-हिम-रुचि-

तारगिरि-स्फटिक-शङ्ख-शुभ्राम्बुरुह-

क्षोर-सुर-सिन्धु-शारद-

नीरद-भासुर-यशोऽभिरामं कामं ॥ ४० ॥

सिरिगं विष्णुगवेन्तु मुन्नवसमाखं पुट्टिदों शम्भुगं

गिरिसञ्जातेगवेन्तु षड्वदननादों पुत्रनन्तीगली-

धरणी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-विभुगं श्रीयाचियक्कङ्गवु-

दुर-तेजंगुणि सोमनुद्भविसिदं निस्सीम पुण्योदयं ॥ ४१ ॥

वर-लक्ष्मी-प्रिय-वल्लभं विजयकान्ताकर्णपूरं विभा-

सुर-वाणी-हृदयाधिपं तुहिन-तार-क्षोर-वाराशि-पा-

ण्डुरकीर्त्तिशनुदग्र-दुर्द्धर-तुरङ्गारूढ-रेवन्तनु-

दुर-कान्ता-कमनीयकामनेसेदं श्री सोमनी धात्रियोल्

॥ ४२ ॥

परमाराध्यननन्त-सौख्य-निलयं श्री-मज्जिनाधीश्वरं

गुरु-सैद्धान्तिक-चक्रवर्त्ति नयकीर्त्ति-ख्यात-योगीश्वरं ।

धरणी-विश्रुत-चन्द्रमौलि-सचिवं हृत्कान्तनेन्दन्दडा-

होरीयाचलदेविगिन्दु विशदोद्यत्कीर्त्तिगी धात्रियोल् ॥ ४३ ॥

भरदिं बेलुगोल-तीर्थ-देल् जिन-पति-श्री-पार्श्व-देवोद्धम-

न्दिरमं माडिसिदल् विनूत नयकीर्त्तिख्यात-योगीन्द्रभा-

सुर-शिष्योत्तम-बालचन्द्र-मुनि-पादाम्भोजिनीभक्ते सु-

स्थिरेयप्पाचलदेवि कीर्त्ति-विशदाशा-चक्रे सद्भक्तियिं ॥४४॥

तद्गुरुकुल श्रीसूतसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्ड-  
कुन्दान्वयदोल ॥

कं ॥ विदित-गुणचन्द्र-सिद्धा-

न्त-देव-सुतनात्म-वेदि परमत-भूभृद्-

भिदुर नयकीर्त्ति-सिद्धा-

न्त-देवनेसेदं मुनीन्द्रनपगत-तन्द्रं ॥ ४५ ॥

वर-सैद्धान्त-पयोधि-वर्द्धन-शरत्ताराधिपं तार-हा-

र-रुचि-भ्राजित-कीर्त्ति-धैत-निखितोर्वी-मण्डलं दुर्द्धर-

स्मर-वाणावलि-मेघ-जाल-पवनं भव्याम्बुज-त्रात-भा-

सुरनी-श्रीनयकीर्त्ति-देव-मुनिपं विख्यातियं तालिददो ४६

तच्छिष्यर ॥

वर-सैद्धान्तिक-भानुकीर्त्ति-मुनिपश्री-मत्प्रभाचन्द्र दे-

वरशेषस्तुत-माघनन्दि-मुनि-राजर्ष्यनन्दि-व्रती-

श्वररुर्वी-नुत-नेमिचन्द्र-मुनि-नाथख्यातरादत्रिर-

न्तरवीश्रीनयकीर्त्ति-देव-मुनि-पादाम्भोरुहाराधकर ॥

॥ ४७ ॥

स्मर-मातङ्ग-मृगेन्द्रनुद्ध-नयकीर्त्ति-ख्यात-योगीन्द्र-भा-

सुर-पादाम्बुरुहानमन्मधुकरं चञ्चत्तपो-लक्ष्मिगी-

श्वरनादो नरपाल-मौलि-मणि-रुणमालाचिर्चितांघ्रि-द्वयं

स्थिरनाध्यात्मिक-बालचन्द्र-मुनिपं चारित्र-चक्रेश्वरं ॥४८॥

गौरि तपङ्गलं नेगल्दु तां नेरेदल् गड चन्द्रमौलियोल्

नारियर्गिन्नदे-सावगु पेल्लवुं भवदोल् निरन्तरं ।

सार-तपङ्गलं पडेदु तां नेरेदं गड चन्द्रमौलि-गं-

भीरेयेनिप्प तन्ननेनिपाचलेवोल् सोवगिङ्गे नोन्तरार् ॥४६॥

• शकवर्षद सायिरद नूर नात्केनेय एव-संवत्सरद  
चौष्य-बहुल-तदिगेमुक्रवारदुत्तरायण संक्रान्तियन्दु ॥

वृ ॥ शीलधि चन्द्रमौलि-विभुवाचल-देवि-निजोद्ध-कान्तेया-

लोल-मृगाक्षि-माडिसिद बेल्गोल-तीर्थद पार्श्वदेवर-

च्चार्लिगे बेडे बम्मेयनहल्लियनित्तनुदारि-वीर-ब-

ल्लालनृपालकन्धरेयुमब्धियुमुल्लिनमेयदे सत्तिवने ॥५०॥

तदवनिपनित्त दत्तिय-

नदनाचले बालचन्द्र-मुनि-राजश्री-

पद-युगमं पूजिसि चतु-

रुदधि-वर निमिरे कीर्त्तिजिनपतिगित्तल् ॥ ५१ ॥

अन्तु धारा-पूर्वकं माडि कोट्ट तद्गाम-सीमे । मूड केम्बरेय  
हल्लं । अल्लि तेङ्क मेट्टरे । अल्लि तेङ्क हिरिय-हेदारि । अल्लि तेङ्क  
आलद-मर । अल्लितेङ्क मेलियज्जनोब्बे । अल्लि तेङ्कलङ्कदहा-  
लोब्बे । अल्लि तेङ्क नागर-कट्टक्के होद हेदारि । अल्लि पडुव के-  
न्तट्टिय हल्लं । अल्लि पडुव मर-नेल्लिय-गुण्डु । अल्लि पडुव  
मेट्टरे । अल्लि पडुव पिरियरेय कल्लत्ति । अल्लि पडुवल् कडवद  
कोल । अल्लि पडुव कल्लत्ति । अल्लि पडुव वण्डि-दारियोब्बे ।  
अल्लि बडगलोणिय दारि । अल्लि बडग देवणन-केरेय

तायवल्ल । अल्लि बडग हुण्णिसेय गुण्डु । अल्लि बडगलालद  
गुण्डु । अल्लि मूडलोब्बे । अल्लि मूड नट्ट-गुण्डु । अल्लि मूडल-  
त्तेयलियनगुडे । अल्लि मूडलालद-मर । अल्लि मूडल् केम्बरय  
हल्लमं सीमे कूडित्तु ॥ स्थल वृत्ति ॥ श्रो-करणद केशियणन तम्म  
बाचणन कैयिं मारं कोण्डु बैक्कन कील्केरेय चामगट्टमं  
बिट्टरदर सीमे । मूड सागर । तेङ्क सागर । पडुव हुल्लगट्ट ।  
बडग नट्ट कल् । हिरिय जक्कियब्बेय कंरेय तोट । केतङ्गेरे ।  
गङ्ग-समुद्रद कीलेरिय तोट । बसदिय मुन्दण अङ्गडि इप्पत्तु ॥  
नानादेसियुं नाडुं नगरमुं देवरष्ट-बिधाच्चर्चनेगे बिट्टाय दवसद  
हेरिङ्गे बल्ल १ अडकेय हेरिङ्गे हाग १ मेलसिन हेरिङ्गे  
हाग १ अरिसिनद हेरिङ्गे हाग १ हत्तिय मलवेगे हागे १ सीरेय  
मलवेगे होङ्गे वीस १ एलेय हेरिङ्गे अरुनूरु ॥

दानं वा पालनं वात्र दानाच्छेयोऽनुपालनं ।

दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं पदं ॥ ५२ ॥

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ ५३ ॥

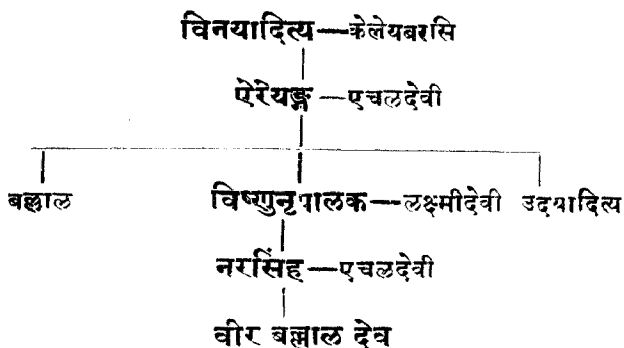
स्व-दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।

षष्टिर्व्वर्ष-सहस्राणि विष्ठायां जायते कृमिः ॥ ५४ ॥

मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[ इस लेख में चन्द्रमौलि मंत्री की भार्या आचलदेवी ( अपर नाम  
आचिथक् ) द्वारा निर्माण कराये हुए जिन मन्दिर ( अकन वस्ति )  
को चन्द्रमौलि की प्रार्थना से होयसल नरेश वीर बल्लाल द्वारा बम्मेयन-  
हल्लि नामक ग्राम का दान दिये जाने का उल्लेख है । प्रथम के बाइस

पद्यों में होयसल वंश के नरेशों का वर्णन है। जिनकी वंशावली इस प्रकार दी है—



विष्णुनृप की कीर्ति में कहा गया है उन्होंने कई युद्ध जीते और अपने शत्रुओं के प्रबल दुर्ग जैसे कि कोयतूर, तलवनपुर व रायरायपुर जला डाले।

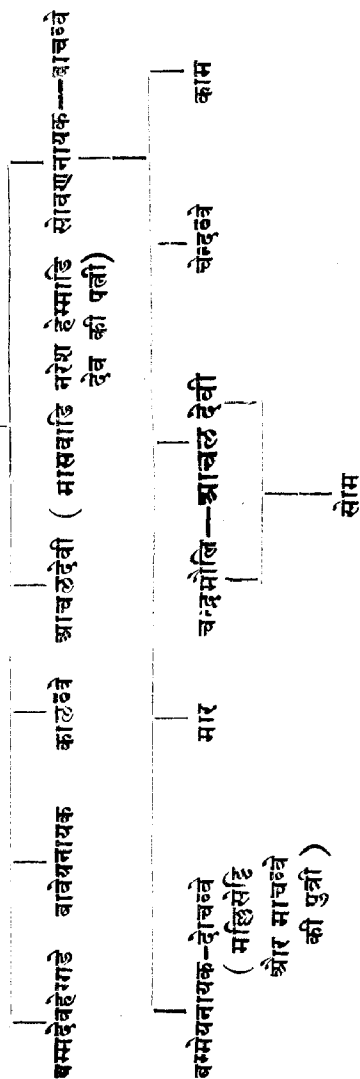
वीर बल्लाल देव की युद्ध-दुन्दुभी बजते ही लाड नरेश की शान्ति भङ्ग हो गई, गुर्जर-नरेश को भीतिज्वर हो गया, गौड़-नरेश को शूल उठ आया, पल्लव-नरेश पल्लवाञ्जलि लेकर खड़े हो गये, और चोल-नरेश के वस्त्र स्वलित हो गये। ओडेयरस-नरेश ने अभिमान में आकर युद्ध करने की ठानी, पर बल्लाल-नरेश ने उच्चङ्गि दुर्ग के शिखरों को चूर्ण कर डाला और पाण्ड्य-नरेश को उसकी अङ्गनाओं-सहित कैद कर लिया।

पद्य बाइस से आगे इन्हीं द्वारवती के यादव वंशी नरेश त्रिभुवन-मल्ल वीर बल्लाल देव का परिचय है। लेख में इनकी अनेक प्रताप-सूचक पदवियों तथा इनके तलकाडु, कोणु, नङ्गलि, नेलम्बवाडि, वनवसे और हानुंगल की विजय का उल्लेख है। शम्भुदेव और अक्कवे के पुत्र चन्द्र-मौलि इन्हीं त्रिभुवन मल्ल वीरबल्लालदेव के मंत्री थे।

पद्य सत्ताइस से चालीस तक आचल देवी के वंश का वर्णन है जो इस प्रकार है—

# चन्द्रमौलि की भार्या आचलदेवी की वंशावली

( मासवाडिनाडु के श्रावक ) शिवेयनायक — चन्द्रवे





आचल देवी नयकीर्ति के शिष्य बालचन्द्र की शिष्या थी । नय-  
कीर्ति सिद्धान्तदेव मूलसंघ, देशियगण, पुस्तक गच्छ, कुन्दकुन्दान्वय के  
गुणचन्द्रसिद्धान्तदेव के शिष्य ( सुत ) थे । नयकीर्ति के शिष्यों में  
भानुकीर्ति, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र थे । ]

१२५ ( ३२८ )

**अकून बस्ति के प्रधान प्रवेश-द्वार के  
सामने की दक्षिणी दीवाल पर**

( शक सं० १३६८ )

**क्षयाह्वय-कु-वत्सरे द्वितय-युक्त-वैशाखके**

**मही-तनय-वारके युत-बलर्क्ष-पक्षेत्तरे ।**

प्रताप-निधि-देवराट प्रलयमाप हन्तासमो

चतुर्दश-दिने कथं पितृपतेनिवार्या गतिः ॥

१२६ ( ३२९ )

**उसी दीवाल के पूर्व कोण पर**

( शक सं० १३२६ )

**तारण-संवत्सरद भाद्र-पद-बहुल - दशमियू सो-**  
**मवारदलु हरिहररायनु स्वस्थनादनु ॥**

१२७ ( ३३० )

**उपर्युक्त लेख के नीचे**

( शक सं० १३६८ )

**क्षयाह्वय-शक-वत्सरे-द्वितय-युक्त-वैशाख के**  
**महीतन [य]- वारके यु.....**

१२८ (३३३)

## नगर जिनालय के बाहर

( ? शक सं० ११२८ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादाभोध-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भय-लोभ-द्वय-दूरनं मदन-धोर-ध्वान्त-तीव्रांशुवं

नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परिनिर्णीतात्थ्य-सन्दोहनं ।

नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुवं सिद्धान्तचक्रेशनं

नयकीर्तिं व्रति-राजनं नेनेदोडं पापोत्करं पिङ्गुं ॥ २ ॥

अवर तच्छिष्यरु ॥

श्री-दामनन्दि त्रैविद्य-देवरु श्री-भानुकीर्त्ति-सिद्धान्त-  
देवरु बालचन्द्र-देवरु प्रभाचन्द्र-देवरु माघणन्दि-भट्टारक-  
देवरु मन्त्रवादि-पद्मणन्दि-देवरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवरु  
इन्तिवर शिष्यरु नयकीर्ति-देवरु ॥

धरेयोल् खण्डलि-मूलभद्र-विलसद्-वंशोद्भवर्स्सत्य-शौ-

चरतरुसिंह-पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि-वेल-पुरा-

न्तर-नाना-व्यवहार-जाल-कुशलरुविरख्यात-रत्न-त्रया-

भरणरुब्बेलगुल-तीर्थ-वासि-नगरङ्गल् रुद्धियं तालिददरु ॥

॥ ३ ॥

श्रीगोम्मटपुरद समस्त-नगरङ्गल्गे श्रीमतु-प्रताप-चक्रवर्त्ति  
वीरबल्लाल-देवरु कुमार-सोमेश्वर-देवन प्रधानं हिरिय-

माणिक्य-भण्डारि-रामदेव-नायकर सन्निधियलु श्रीमन्नय-  
 कीर्ति-देवरु कोट्ट शासनपत्थलेय-क्रमवेन्तेन्दडे गोम्मट-पुरद  
 मनेदेरे अक्षय-संवत्सर मोदलागि आचन्द्रार्क-तारं वरं  
 सलुवन्तागि हणवोन्दर मोदलिङ्गे एन्दुहणवं तेत्तु सुखविप्परु  
 तेलिगर गाणवोलगागि अरमनेय न्यायवन्यायमलत्रय एनु  
 बन्दडं आस्थलदाचार्यरु तावे तेत्तु निर्नयिसुवरु ओकल कारण  
 कथेयिल्ल ई-शासन-मर्यादेयं मीरिदवरु धर्म-स्थलव कंडिसि-  
 दवरु ई-तीर्थद नखरङ्गलोलगे ओव्वरिव्वरु ग्रामिणिगलागि  
 आचार्यरिगे कौटिल्य-बुद्धियं कलिसि वोन्दकोन्द नेनदु  
 तोलसाटव माडि हाग वेल्लेयनलिहि वेडिकोल्लियेन्दु आचा-  
 र्यरिगे मनंगोट्टडे अवरु समय-द्रोहरु राजद्रोहरु बणञ्जिग-  
 पगेयरु नेत्त-गयरु कोल्लेकवर्त्तेगोडेयरु इदनरिदु नखरङ्गलु उपे-  
 त्तिसिदरादडे ई-धर्मव नखरङ्गले कंडिसिदवरल्लदे आचार्यरु  
 दुर्जनरु कंडिसिदवरल्ल नखरङ्गल अनुमतविल्लदे ओव्वरिव्वरु  
 ग्रामिणिगलु आचार्यर मनयेनके अरमनेयनके होक्कडे समय-  
 द्रोहरु मान्य-मन्नण्य पूर्व-मर्यादे नडसुवरु ई-मर्यादेयं  
 किडिसिदवरु गङ्गे-तडिय कविलेयं ब्राह्मणं कोन्द पापद होहरु ।

स्व-दत्तां पर-दत्तां वा यो हरेति वसुन्धरां ।

षष्टिर्वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ ४ ॥

[ नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति के शिष्य दामनन्दि, भानुकीर्त्ति,  
 बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माधनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र हुए । इनके  
 शिष्य नयकीर्त्तिदेव हुए । नयकीर्त्तिदेव ने वीरबल्लालदेव के कुमार

सोमेश्वरदेव के मंत्री रामदेव नायक के समक्ष बल्गोल नगर के व्यापारियों को यह शासन दिया कि वे सदैव के लिये आठ 'हण' का टैक्स दिया करेंगे जिसका एक 'हण' व्याज आ सकता है। इसके अतिरिक्त वे और कोई टैक्स नहीं देवेंगे। यदि राज्य की ओर से कोई न्याय, अन्याय व मलब्रय टैक्स लगाये जावेंगे तो स्वयं बल्गोल के आचार्य ही उसका प्रबन्ध करेंगे। यदि कोई व्यापारी आचार्य को छल-कपट सिखावेंगे तो वे धर्म के और राज्य के द्रोही ठहरेंगे। व्यापारियों को अपने अधिकार पूर्ववत् ही रहेंगे। ये व्यापारी खंडलि और मूलभद्र के वंशज जैनधर्मावलम्बी थे। ]

[ नोट—श्रवण बेल्गोल पर पूरा अधिकार जैनाचार्य का ही था। वहाँ के टैक्स आदि का भी वे ही प्रबन्ध करते थे। ]

१२८ ( ३३४ )

## नगर जिनालय में दक्षिण की ओर

( शक सं० १२०५ )

उक्त श्री-सूतसङ्घेऽस्मिन्बलात्कार-ग.....

.....शास्त्रसाराख्य-शास्त्रकृत् ॥ १ ॥

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाब्धनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ २ ॥

नमः कुमुदचन्द्राय विद्या-विशद-मूर्तये ।

यस्य वाक्-चन्द्रिका भव्य-कुमुदानन्द-नन्दिनी ॥ ३ ॥

नमो नम्रजनानन्द-स्यन्दिने माघनन्दिने ।

जगत्प्रसिद्ध-सिद्धान्त-वेदिने चित्प्रमोदिने ॥ ४ ॥

स्वस्ति श्री जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्वानलोहामतेजं  
विस्तारान्तःकृतोर्वी-तलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।

वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं

प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगुं होयसलोव्वीश-वंशं

॥ ५ ॥

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयं सकवर्ष १२०५ नेय चित्रभानु  
संवत्सर आवण सु १० वृदन्दु स्वस्ति समस्त-प्रशस्ति-सहितं  
श्रीमन्महा-मण्डलाचार्यरुमाचार्य-वर्यरुं श्री-सूल-सङ्घदङ्गलेश्वर  
देशिय-गणाग्रगण्यरुम् राज-गुरु-गलुमप्प नेमिचन्द्र-पण्डित-  
देवर शिष्यरु बालचन्द्र-देवरु श्रीमन्महामण्डलाचार्यरुमाचार्य  
वर्यरुं होयसल-राय-राज-गुरुगलुमप्प श्री-माघनन्दि-सैद्धान्त-  
चक्रवर्त्तिगल प्रिय-गुड्डुगलुमप्प श्री-बेलुगुल-तीर्थद बलात्कार-  
गणाग्रगण्यरुमगण्यपुण्यरुमप्प समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु नखर-  
जिनालयद आदि-देवर अमृत-पडिगे राचेयनहल्लिय होलबेरगो-  
लगाद एडवल्लोरेय केलगे पूर्वदत्ति मोदलेरिय तोटमुं अमृत-  
पडिय गहे...आरर भूमिय सेरुवेगे आ-बालचन्द्र-देवर कय्यलु  
समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु विडिसि कोण्ड वलय-शामनद क्रमवेन्ते-  
न्दडे राचेयन-हल्लिय मल्लिकार्जुन-देवर देव-दानद गहे होर-  
गागि आ-गहेयि मूडलु नट्ट कल्लु । अल्लि तेन्क हासरे गल्लु ।  
अल्लि तेड्डु गिडिगनालद गुण्डुगलि मूडण किरु-कट्टद गहे ।  
नीरोत्तोलगाद चतुस्सीमे । आ-किरु-कट्टद पडुवण कोडियलु  
हुट्टु गुण्डिनलि बरद मुक्कोडे हसुवे नेट्टे अल्लि तेड्डु हिरिय बेट्टद

तप्पल हासरे-गल्लु । आल्ल मूडय देवलङ्गेरेय तेङ्कण कोडिय गुण्डि-  
नलि वरद मुक्कोडे हसुबे नेट्टे आ-कैरे-नीरोतिले सीमे । आकैरेय  
बडगण-कोडिय गुण्डि-नल्लि वरद मुक्कोडे हसुबे नेट्टे इन्तीकैरेयुं  
किरु-कटे वोलगाद चतुस्सोमेय गद्दे ॥

[ इस लेख में कुमुदचन्द्र और माघनन्दि को नमस्कार के पश्चात्  
होय्सल वंश की कीर्ति का उल्लेख है और फिर कहा गया है कि उक्त  
तिथि को इंगलेश्वर, देशिय गण, मूलसंघ के नेमिचन्द्र पण्डितदेव के  
शिष्य बालचन्द्रदेव और बेलगोल के समस्त जौहरियों (माणिक्य नगरङ्गल)  
ने नगर जिनालय के आदिदेव की पूजन के हेतु कुछ भूमि का दान  
दिया । यह भूमि उन्होंने बालचन्द्रदेव से खरीद की थी । ये जौहरी  
होय्सलवंश के राजगुरु महामण्डलाचार्य माघनन्दि के शिष्य थे । लेख  
के प्रथम पद्य में शास्त्रसार नामक किसी शास्त्र के कर्ता का उल्लेख रहा  
है । यह पद्य घिस जाने से आचार्य का नाम नहीं पढ़ा गया ]

१३० ( ३३५ )

नगर जिनालय में उत्तर की ओर

( शक सं० १११८ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति-श्रीजन्म-गोहं निभृत-निरुपमौर्वानलोद्दामत्तेजं

विस्तारान्तःकृतोर्वीतलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामं ।

वस्तु-त्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गभीरं

प्रस्तुत्यं नित्यमम्भो-निधि-निभमेसगुं होय्सलोर्वीश-वंशं

॥ २ ॥

अदरोल् कौस्तुभदोन्दनगर्व्यगुणमं देवेभदुहास-स-  
 त्वदगुर्व्वं हिम-रश्मियुज्वल-कला-सम्पतियं पारिजा-  
 तदुदारत्वद पेम्पनेोर्व्वने नितान्तं ताल्दि तानस्ते पु—  
 ादनुद्वेजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनी-पालकं ॥ ३ ॥

क ॥ विनयादित्य-नृपालन

तनु-भवनेरेयङ्ग-भूभुजं तत्तनयं ।

विनुतं विष्णु-नृपालं

जनपति तदपत्यनेसेदनीनरसिंहं ॥ ४ ॥

तत्पुत्रं ॥

गत-लीलं लालनालम्बित-बहल-भयोघ्र-ज्वरं गूर्जरं स-  
 न्धृत-शूलं गौलनुच्चैः-कर-धृत-विलसत्पल्लवं पल्लवं प्रो-  
 ङ्गित चेलं चोलनादं कदन-वदनदोल् भेरियं पोयसे वीरा-  
 हित-भूशृङ्गाल-कालानलनतुलबलं वीर-बल्लाल-देवं  
 ॥ ५ ॥

चिरकालं रिपु-गलगसाध्यमेनिसिद्धुं वृद्धियं मुक्ति दु-  
 र्द्धर-तेजो-निधि-धूलिगोटेयने कोण्डाकाम-देवावनी-  
 श्वरनं सन्दोडेय त्तितीश्वरननाभण्डारमं स्त्रीयरं  
 तुरग-व्रातमुमं समन्तु पिडिदं बल्लाल-भूपालकं ॥ ६ ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वर द्वारवती-  
 पुरवराधीश्वर । तुलुव-वल-जलधि बडवानल । दायाद-  
 दावानल । पारुड्य कुल-कमल-वेदण्ड । गण्ड-भेरुण्ड ।  
 मण्डलिक - बेटेकार । चोल-कटक-सूरेकार । सङ्ग्राम-भीम ।

कलि-काल-काम । सकल-वन्दि-वृन्द-सन्तर्पण-समग्र-वितरण  
 विनोद । वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । यादव-कुला-  
 म्बर-द्युमणि । मण्डलिक-मकुट-चूडामणि कदन-प्रचण्ड मल-  
 परोल्-गण्ड नामादिप्रशस्ति-सहितं श्रीमत्—त्रिभुवनमल्ल-  
 तलकाडु कोङ्कु-नङ्गलि नोणम्बवादि-वनवसे हानुङ्गल्  
 लोकिगुण्ड-कुम्मट-एरम्बरगेयोलगाद समस्त-देशद  
 नानादुर्गङ्गलं लीला-मात्रदिं साध्यं माडिकोण्ड भुज-बल-वीर  
 गङ्ग-प्रताप-चक्रवर्त्ति होयसल वीर-बल्लाल-देवर् समस्त-मही  
 मण्डलमं दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपालन-पूर्वकं सुखसङ्कथाविनो-  
 ददिं राज्यं गेयुत्तिरे । तदीय-करतल-कलित-कराल-करवाल-  
 धारा-दलन-निस्सपत्नीकृत-चतुर्पयोधि-परिखा-परीत-पृथुल-पृथ्वी-  
 तलान्तर्वर्त्तियुं श्रीमद्-क्षिण-कुकुटेश्वर-जिनाधिनाथ-पद-कुशे-  
 शयालङ्कृतमुं श्रीमत्कमठ-पार्श्व-देवादि-नाना-जिनवरागार-मण्ड-  
 तमुमप्य श्रीमद् बेलोल-तीर्थद श्रीमन्महा-मण्डलाचार्यरे  
 न्तप्परेन्दडे ॥

भय-लोभ-द्वय-दूरनं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुवं  
 नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परि-निर्णीतार्थ-सन्दोहनं ।  
 नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुवं सिद्धान्त-चक्रेशनं  
 नयकीर्त्ति-व्रति-राजनं नेनेदोडं पापोत्करं पिङ्गुं ॥ ७ ॥  
 तच्छिष्यर् श्री-दामनन्दि-त्रैविद्य-देवरुं । श्री भानु-  
 कीर्त्तिसिद्धान्त-देवरुं । श्री बालचन्द्र-देवरुं । श्री-प्रभाचन्द्र-  
 देवरुं । श्री माघनन्दि-भट्टारक-देवरुं । श्री मन्त्रवादि-पद्म-



नन्दि-देवरुं । श्री नेमिचन्द्र-पण्डित देवरुं । श्री-सूल-सङ्घद  
 देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद श्री कोण्ड-कुन्दान्वय-भूषणरप्प  
 श्रीमन्महामण्डलाचार्यर् श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रव  
 र्त्तिगल गुडुं ॥

चित्तितलदोल् राजिसिदं

धृत-सत्यं नेगल्द नागदेवामात्यं ।

प्रतिपालित-जिन-चैत्यं-

कृत-कृत्यं बोम्मदेव-सचिवापत्यं ॥ ८ ॥

तद्वनिते ॥

मुददिं पट्टण-सामियेम्ब पेसरं तालिदद्द लक्ष्मी-समा-  
 स्पदनप्पि-गुणि-मल्लि-सेट्टि-विभुगं लोकोत्तमाचार-स-  
 म्पदेगी-माचवे सेट्टिकव्वेगमनूनात्साहमं तालिद पु-  
 ट्टिद चन्दव्वे रमाप्र-गण्ये भुवन-प्रख्यातियं तालिदल्ल ॥ ८ ॥

तत्पुत्र ॥

परमानन्ददिनेन्तु नाकपतिगं पौलोमिगं पुट्टिदेां  
 वर-सौन्दर्य-जयन्तनन्ते तुहिन-चोरोद-कल्लोल-भा-  
 सुर-कीर्त्तिप्रिय-नागदेव-विभुगं चन्दव्वेगं पुट्टिदेां  
 स्थिरनी-पट्टण-सामि-विश्व-विनुतं श्रीमल्लिदेवाह्वयं ॥ १० ॥  
 चित्तियोल्ल विश्रुत-बोम्मदेव-विभुगं जोगव्वेगं प्रोद्धवत्-  
 सुतनी-पट्टणसामिगार्ज्जित-यशङ्गी-मल्लि-देवङ्गमू-  
 र्जितेगी-कामलदेविगं जनकनम्भोजास्येगुव्वीतल-  
 स्तुतेगी-चन्दले-नारिगीशनेसेदं श्रीनागदेवोत्तमं ॥ ११ ॥

कारिते वीरबल्लाल-पत्तन-स्वामिनामुना ।

नागेन पार्श्वदेवाग्रे नृत्य-रङ्गाशम-कुट्टिमे ॥ १२ ॥

श्रीमन्नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगल्गे परोक्ष-विनयार्थ-  
वागिमुडिजमुमं निषिधियुमं श्रीमत्कमठ-पार्श्व-देवर बसदिय  
मुन्दण कलु-कट्टमं नृत्य-रङ्गमुमं माडिसिद तदनन्तर ॥

श्री-नगर-जिनालयमं

श्री-निलयमनमल-गुण-गणमाडिसिदं ।

श्रीनागदेवसचिवं

श्री-नयकीर्त्ति-त्रतीश-पद-युग-भक्तं ॥ १३ ॥

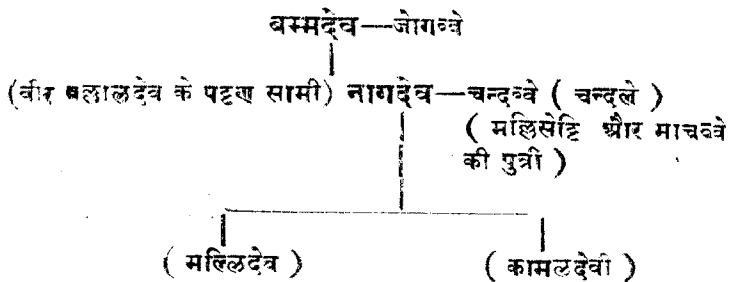
तज्जिनालय-प्रतिपालकरप्प नगरङ्गल् ॥

धरेयोल् खण्डलि-मूलभद्र-विलसद्-वंशोद्भवस्सत्य-शौ-  
चरतर्स्सिह-पराक्रमान्वितरनेकाम्भोधि-बेला-पुरा-  
न्तर-नाना-व्यवहार-जाल-कुशलर् विख्यात-रत्न-त्रया-  
भरणर् ब्वेलगोल-तीर्थ-वासि-नगरङ्गल् रुढियं तालिददर्

॥ १४ ॥

सकवर्ष १११८ नेय राक्षससंवत्सरद जेष्ठ सु १ बृहवार  
दन्दु नगर-जिनालयके थडवलगेरेय मोदलेरिय तोटमुं यारु-  
सलगे-गद्देयुं उडुकर-मनेय मुन्दण केरेय केलगण बेदले कोलग  
१० नगर-जिनालयद बडगण केति-सेट्टिय केरि आ-तेङ्कण  
एरडु मने आ-अङ्गडि सेडेयकि गाण एरडु मनेगे हण अय्दु  
ऊरिङ्गे मलविय हण मूरु ॥

[ इस लेख में नयकीर्त्ति के शिष्य नागदेव मंत्री-द्वारा नगर जिनालय तथा कमठपार्श्वदेव बस्ति के सम्मुख शिलाकुट्टम और रङ्गशाला बनवाने व नगर जिनालय को कुछ भूमि का दान दिये जाने का उल्लेख है । आदि में लेख नं० १२४ के समान होयसल वंश का परिचय है । वीरबल्लाल देव के प्रताप का वर्णन कुछ अंश छोड़कर अक्षरशः वही है । इसके पश्चात् नयकीर्त्तिदेव और उनके शिष्यों दामनन्दि, भालुकीर्त्ति, बालचन्द्र, प्रभाचन्द्र, माघनन्दि, पद्मनन्दि और नेमिचन्द्र का उल्लेख है । नागदेव के वंश का परिचय इस प्रकार है —



खंडलि और मूलभद्र के वंशज व्यापारियों का भी उल्लेख है । ये ही व्यापारी जिनालय के रक्षक थे । ]

१३१ ( ३३६ )

**नगर जिनालय के भीतरी द्वार के उत्तर में**

(शक सं० १२०१ तथा १२१० )

स्वस्ति श्रीमनु-शक-वर्ष १२०३ नेय प्रमाथि-संवत्सरद  
मार्गशिर-सु (१०) वृ दन्दु श्रीबेलुगुल-तीर्थद समस्त नख-  
रङ्गलिगे नखर-जिनालयद पूजाकारिगलु ओडम्बट्टु वरसिद

सासनद क्रमवेन्तेन्दडे । नखर-जिनालयद आदि-देवर देव  
दानद गद्दे बेदलु एलि उल्लदनु बेलदकालदलु देवर अष्टविधा-  
र्चने अमृत-पडि-सहित श्रीकार्यवनु नकरङ्गलु नियामिसि कोट्ट  
पडियनु कुन्ददे नडसुवेवु आ-देव-दानद गद्दे बेदलनु आधि-  
क्रय हालोते गुतगे एम्म वंशवादियागि मक्कलु मक्कलु दप्पदे  
आरु माडिदडं राजद्रोहि समयद्रोहिगलेन्दु वोडम्बट्टु वरसिद-  
शासन इन्तप्पुदके अवर वोप्प श्री-गोम्मटनाथ ॥ श्री बेलुगुल  
तीर्थद नकर-जिनालयद आदिदेवर नित्याभिषेकके श्री-हुलिगे-  
रय सोवणन अत्त-भण्डार-त्रागि कोट्ट गद्याणं अयिदु-होत्रिङ्गे  
हालु व १ ॥

सर्वधारि संवत्सरद द्वितीय-भाद्रपद-सु ५ त्रि ।  
श्री-बेलुगुल-तीर्थद जिननाथ-पुरद समस्त-माणिक्य-नगरङ्गलु  
तम्मोलोडम्बट्टु वरसिद शासनद क्रमवेन्तन्दोडे । नगर-जिना-  
लयद श्री-आदिदेवर जीर्णोद्धारवुपकरण श्री कार्यकेवू धारा-  
पूर्वकं माडि आचन्द्रार्कतार वरं सलुवन्तागि आ-येरडु-पट्ट-  
णद समस्त-नखरङ्गलु स्वदेशि-परदेशियिन्दं वन्दन्तह दवण  
गद्याण-नूरके गद्याणं वोन्दरोपादिय दवण आदिदेवरिगे सलु-  
वन्तागि कोट्ट शासन यिदरोले विरहित-गुप्तवनारु माडिदडमवन  
सन्तान निस्सन्तान अव देव-द्रोहि राज-द्रोहि समय-द्रोहिगलेन्दु  
वोडम्बट्टु वरसिद समस्तनकरङ्गलोप्प श्री-गोम्मट ॥

[ यह लेख तीन भागों में विभक्त है । प्रथम भाग में उल्लेख है  
कि उक्त तिथि को नगर जिनालय के पुजारियों ने बेलगोल के व्यापारियों

को यह लिखा-पढ़ी कर दी कि जब तक मंदिर की देव-दान भूमि में धान्य पैदा होता है तब तक वे सदैव विधि अनुसार मंदिर की पूजा करेंगे ।

दूसरे भाग में उल्लेख है कि नगर जिनालय के आदि देव के नित्याभिषेक के लिये हुलिगरे के सोवण ने पांच गद्याण का दान दिया जिसके व्याज से प्रति दिन एक 'बल' दुग्ध लिया जावे ।

तीसरे भाग में उक्त तिथि को बेल्गोल के समस्त जौहरियों के एकत्रित होकर नगर जिनालय के जीर्णाद्वार तथा बर्तनों आदि के लिये रकम जोड़ने का उल्लेख है । उन्होंने सौ गद्याण की आमदनी पर एक गद्याण देने की प्रतिज्ञा की । जो कोई इसमें कपट करे वह निपुत्री तथा देव, धर्म और राज का द्रोही होवे । ]

[ नोट—लेख के प्रथम भाग में शक सं० १२०३ प्रमाथिसंवत्सर का उल्लेख है । पर गणनानुसार शक सं० १२०३ वृष तथा शक सं० १२०१ प्रमाथी सिद्ध होते हैं । लेख के तृतीय भाग में सर्वधारि संवत्सर का उल्लेख होने से वह शक सं० १२१० का सिद्ध होता है । ]

१३२ ( ३४१ )

## मंगायि वस्ति के प्रवेश मार्ग के बायीं ओर

( लगभग शक सं० १२४७ )

स्वस्ति श्री-मूलसङ्घ देशिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दा-  
न्वयद श्रीमदभिनव-चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्यर शिष्यलु  
सम्यक्त्वाद्यनेक-गुण-गणाभरण-भूषिते राय-पात्र-चूडामणि बेलु-  
गुलद मङ्गायि माडिसिद िभुवनचूडामणियेम्ब चैत्याल-  
यके मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[ अभिनव चासकीर्ति पण्डिताचार्य के शिष्य, बेलगोल के मंगायि के निर्माण कराये हुए 'त्रिभुवन चूड़ामणि' चैत्यालय का मंगल हो । ]

१३३ ( ३४० )

## उसी वस्ति के प्रवेश-मार्ग के दायीं ओर

( लगभग शक सं० १४२२ )

श्रीमत्तु पण्डितदेवरुगल गुडुगलाद बेलुगुलद नाड-चित्र-  
गोण्डन मग नाग-गोण्ड मुत्तगद होन्नेनहन्निय कल-गोण्डनो-  
लगाद गौडगल मङ्गायि माडिसिद वस्तिगे कोट्ट दोडनकट्टे  
गहे बेहलु योधर्मके अलुपिदवरु वारणासियल्लु सहस-रूपिलेय  
कोन्द पापके होगुवरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[ पण्डितदेव के शिष्यों—नाग गोण्ड आदि गौडों ने मंगायि वस्ति के लिये दोडन कट्टे की कुछ भूमि दान की ।

१३४ ( ३४२ )

## मङ्गायि वस्ति की दक्षिण-भित्ति पर

( सम्भवतः शक सं० १३३४ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादासोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

तारास्फारालकौघे सुर-कृत-सुमनोवृष्टि-पुष्पाशयालि-  
स्तेमाः कामन्ति दृढ जधरपटलीडम्भता यस्य मूर्ध्नि

सोऽयं श्री-गोम्मटेशस्त्रिभुवन-सरसी-रञ्जने राजहंसे  
भव्य...ब-भानुर्वेलुगुल-नगरी साधु जेजीयतीरं ॥ २ ॥

नन्दन-संवत्सरद पुश्य-शु ३ लू गेरसोप्पेय हिरिय-  
आय्यगल शिष्यरु गुम्मटणगलु गुम्मटनाथन सन्निधि-  
यल्लि वन्दु चिक-वेट्टदल्लि चिक-वस्तिथ कल्ल-कटिसि जीर्णोद्धारि  
बडग-वागिल वस्ति मूर मङ्गायि-वस्ति वोन्दु हागे अयिदु-वस्ति  
जीर्णोद्धार वोन्दु तण्डक्के अहारदान ।

[ गुम्मटेश की प्रशस्ति के पश्चात् लेख में उल्लेख है कि उक्त तिथि  
को गेरसोप्पे के हिरिय- अय्य के शिष्य गुम्मटण ने यहाँ आकर चिक  
वस्ति के शिला कुट्टम का, उत्तर द्वार की तीन वस्तियों का तथा मङ्गायि  
वस्ति का—कुल पाँच वस्तियों का—जीर्णोद्धार कराया । ]

[ नोट—लेख में नन्दन संवत्सर का उल्लेख है । शक सं०  
१३३४ नन्दन था । ]

१३५ ( ३४३ )

## उपयुक्त लेख के नीचे

( सम्भवतः शक सं० १३४१ )

विकारि-संवत्सरद आवाण शु १ गेरसोप्पेय श्रीमति  
अव्वेगलु समस्त-गोष्ठिय कोटु ग ४ ॥

[ उक्त तिथि को गेरसोप्पे की श्रीमती अव्वे और समस्त गोष्ठी ने  
चार गद्याण का दान दिया । ]

[नोट—लेख में विकारी संवत्सर का उल्लेख है । शक सं०  
१३४१ विकारी था । ]

१३६ ( ३४४ )

भरडारि वस्ति में पूर्व की ओर प्रथम स्तम्भ पर

( शक सं० १२६० )

स्वस्ति नमस्त-प्रशस्ति-सहितं ॥

पाषण्ड-सागर-महा-बड़वामुखाग्नि-

श्रीरङ्गराजचरणाम्बुज-मूल-दास ।

श्री-विष्णु-लोक-मणि-मण्डपमार्गदायी

रामानुजो विजयते यति-राज-राज ॥१॥

शक वर्ष १२६० तेष कीलक-संवत्सरद भाद्रपद-  
शु १० वृ० स्वस्ति श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं आरिराय-विभाड  
भाषेगे तप्पुव रायर गण्ड श्री वीरबुक्क-रायनु पृथ्वी-  
राज्यव माडुव कालदल्लि जैनरिगू भक्तरिगू संवाज  
वादल्लि आनेयगोन्दि होस-पट्टण पेनुगुण्डे कल्लेहद-पट्टण वोल-  
गाद समस्त-नाड भव्य-जनङ्गलु आ-बुक्क-रायङ्गे भक्तरुमाडुव  
अन्यायङ्गलनू विन्नहं माडलागि कोविल्-तिरुमलं-पे माल-  
कोविल्-तिरुनारायणपुरमुख्यवाद सकलाचार्यरु सकल-समयि  
गलू सकलमात्तिकरु मोष्टिकरु तिरुपणि-तिरुविडितप्पीरवरु  
नाल्वत्तेन्दु-जनङ्गलु सावन्त-बोवकलु तिरिकुल जाम्बुवकुल  
बोलगाद हदिनेण्डु-नाड श्रीवैष्णवरकैथलु महारायनु  
वैष्णव दर्शनकके-ऊ जैन-दर्शनकके-ऊ भेदविल्लवेन्दु रायनु वैष्ण-  
वर कैथलु जैनर कै-विडिदु कोट्टु यी-जैन-दर्शनकके पूर्वमरियादे



यलु पञ्चमहावाद्यङ्गलू कलशवु सलुवुदु जैनदर्शनक्के भक्तर देसे  
 यिन्द हानि-वृद्धियादरु वैष्णव-हानि-वृद्धियागि पालिसुवरु  
 यी-मर्यादेयलु यल्ला-राज्य-दोलगुल्लन्तह बस्तिगलिगे  
 श्री-वैष्णवरु शासनव नट्टु पालिसुवरु चन्द्रार्क-स्थायियागि  
 वैष्णव-समयौ जैन-दर्शनव रत्तिसिकोण्डु बहेउ वैष्णवरु  
 जैनरु वोन्दुभेदवागि काणलागदु श्री तिरुमलेय तात  
 यङ्गलु समस्त-राज्यद भव्य-जनङ्गल अनुमतदिन्द बेलुगुलद  
 तिर्यदल्लि वैष्णव-अङ्गरचेगासुक समस्त-राज्यदोलगुल्लन्तह  
 जैनर बागिलुगट्टलेयागि मने-मनेग वर्षवके १ हण कोट्टु आ-यं-  
 त्तिद हेन्निङ्गे देवर अङ्ग-रत्तेगेयिप्पत्तालनूसन्तविट्टु, मिक  
 हेन्निङ्गे जीर्ण-जिनालयङ्गलिगे सोय्यनिकूदु यी-मरियादेयलु  
 चन्द्रार्करुल्लन्नं तप्पलीयदे वर्ष-वर्षक्के कोट्टु कीर्त्तियनू पुण्य-  
 वनू उपाज्जिसिकोम्बुदु यी-माडिद कट्टलेयनु आवनोब्बनु मीरि-  
 दवनु राज-द्रोहिसङ्ग-सम्दायक्केद्रोहि तप्पस्वियागलि ग्रामि-  
 णियागलि यी-धम्मव केड्सिदरादडे गङ्गेय तडियल्लि कपि-  
 लेयनू ब्राह्मणनू कोन्द पापदल्लि होहरु ॥

श्लोक ॥ स्वदत्तं परदत्तं वा यो हरेति वसुन्धरां ।

षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमि ॥२॥

( पोछे से जोड़ा हुआ )

कल्लेहद हव्वि-सेट्टिय सुपुत्र बुसुवि-सेट्टिबुक्क-रायरिगे  
 विन्नहंमाडि तिरुमलेय-तातयङ्गल विजय-नैसि तरन्दु जीर्णोद्धार

व माडिसिदरु उभयसमयवूकूडि बुसुवि-सेट्टियरिगे सङ्ग-नायक  
पट्टव कट्टिदरु ॥

[ वीर बुकराय के राज्य-काल में जैनियों और वैष्णवों में झगड़ा हो गया। तब जैनियों में से अनेकगोण्डि आदि नाडुओं ने बुकराय से प्रार्थना की। राजा ने जैनियों और वैष्णवों के हाथ से हाथ मिला दिये और कहा कि जैन और वैष्णव दर्शनों में कोई भेद नहीं है। जैन दर्शन को पूर्ववत् ही पञ्च महा वाद्य और कलश का अधिकार है। यदि जैन दर्शन को हानि या वृद्धि हुई तो वैष्णवों को इसे अपनी ही हानि या वृद्धि समझना चाहिये। श्रीवैष्णवों को इस विषय के शासन समस्त राज्य की बस्तियों में लगा देना चाहिये। जैन और वैष्णव एक हैं, वे कभी दो न समझे जावें।

श्रवण बेलगोल में वैष्णव अङ्ग-रत्तकों की नियुक्ति के लिये राज्य भर में जैनियों से प्रत्येक घर के द्वार पीछे प्रतिवर्ष जो एक 'हण' लिया जाता है उसमें से तिरुमल के तातय्य, देव की रक्षा के लिये, बीस रत्तक नियुक्त करेंगे और शेष द्रव्य जैन मन्दिरों के जीर्णोद्धार व पुताई आदि में खर्च किया जायगा। यह नियम प्रति वर्ष जब तक सूर्य चन्द्र हैं तब तक रहेगा। जो कोई इसका उल्लंघन करे वह राज्य का, संघ का और समुदाय का द्रोही ठहरेगा। यदि कोई तपस्वी व ग्रामाधिकारी इस धर्म में प्रतिघात करेगा तो वह गंगातट पर एक कपिल गौ और ब्राह्मण की हत्या का भागी होगा।

( पीछे से जोड़ा हुआ )

कल्लेह के हर्विसेट्टि के पुत्र बुसुवि सेट्टि ने बुकराय को प्रार्थनापत्र देकर तिरुमले के तातय्य को बुलवाया और उक्त शासन का जीर्णोद्धार कराया। दोनों सङ्गों ने मिलकर बुसुवि सेट्टि को संघनायक का पद प्रदान किया। ]

१३७ (३४५)

## उसी स्थान में द्वितीय स्तम्भ पर

( लगभग शक सं० १०८० )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

स्वस्ति-श्री-जन्म-गोहं निभृत-निरुपमौर्वानलोद्दाम-तेजं  
विस्तारान्तःकृतोर्वीतलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धाम ।वस्तु-व्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गम्भीरं  
प्रस्तुत्यं नित्यमम्भेनिधि-निभमेसेगुं होयसलोर्नीश-वंशं

॥ २ ॥

अदरोलु कौस्तुभदोन्दनर्घ्य-गुणमं देवेभदुद्दाम-म-  
त्वदगुर्व हिम-रश्मियुज्ज्वल-कला-सम्पत्तियं पारिजा-  
तदुदारत्वद पेम्पनोर्व्वने नितान्तं तारिद तानरुतं पु-  
ट्टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि-विनयादित्यावनीपालकं ॥ ३ ॥

क ॥ विनयं बुधरं रज्जिसे

घन-तेजं वैरि-वलमनललिसे नेगल्द ।

विनयादित्य-नृपालक-

ननुगत-नामार्थनमल-कीर्त्ति-समर्थं ॥ ४ ॥

आ-विनयादित्यन वधु

भावोद्भव-मन्त्र-देवता-सन्निभे स-

द्वाव-गुण-भवनमखिलक-

ला-विलसिते-कैलयवरसियेम्बलं पेसरिं ॥ ५ ॥

आ-दम्पतिगं तनूभव-

नादं शचिगं सुराधिपतिगं मुत्रे-

न्तादं जयन्तनन्ते वि-

षाद-विदुरान्तरङ्ग नेरेयङ्ग-नृपं ॥ ६ ॥

आतं चालुक्य-भूपालन बलदभुजादण्डमुदण्ड-भूप-

त्रात-प्रोत्तुङ्ग-भूभृद्-विदलन-कुलिशं वन्दि-सस्यौघ-मेवं ।

श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात-

ख्यात-प्रोद्यद्यशश्री-धवलित-भुवनं धीरनेकाङ्ग-वारं ॥ ७ ॥

एरयनेलंगनिसि नेगलिद-

दरेयङ्ग-नृपालतिलकनङ्गनेचेल्वि-

ङ्गेरेवट्ट शील-गुणदि

नेरेदं च लदे वियन्तु नेान्तरुमोलरे ॥ ८ ॥

एने नेगल्दवरिर्व्वर्गं

तनू-भवर्त्रेगल्दरस्ते बल्लालं वि-

ष्णु-नृपालकनुदयादि-

त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तल्लदाल् ॥ ९ ॥

वृत्त ॥ अवरोल् मध्यमनागियुं भुवनदाल् पृव्वपराम्भोधि-यं-

यदुविनं कूडे निमिर्च्चुवोन्दु निज-बाहा-विक्रमक्रीड्यु-

द्भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-त्रातैक-धामं धरा-

धव-चूडामणि-यादवाब्ज-दिनपं श्री-विष्णु-भूपालकं ॥ १० ॥

कन्द ॥ एलेगेसेव कायतूर्त्त-

त्तलवन-पुरमन्ते रायरायपुरं व-

त्वल बलेद विष्णुतेजो-

ज्वलनदे बेन्दुवु बलिष्ठ-रिपु-दुर्गङ्गलू ॥ ११ ॥

वृत्त ॥ इनितं दुर्गम-वैरि-दुर्गचयमं कोण्डं निजाक्षेपदि-

न्दिनिबद्धभूपरनाजियोत्तविसिदं तन्नख-सङ्घातदि-

न्दिनिवर्गानतर्गित्तनुद्ध-पदमं कारुण्यदिन्देन्दु ता-

ननितं लेकदे पेलवोडज-भवनुं विभ्रान्तनप्यबलं ॥ १२ ॥

कन्द ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप-

लक्ष्मङ्गे-सेदिदं विष्णुगेन्तन्ते बलं

लक्ष्मा-देवि-लसन्मृग-

लक्ष्मानने विष्णुगप्र-सतियेने नेगल्दलू ॥ १३ ॥

अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनीलकालके सा-

स्ववयव-शोभेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना-

निबहमनेच्चु मुयवनणमानदे वीररनेच्चु युद्धदेल्

तविसुवोनादनात्म-भवनप्रतिमं नरसिंह-भूभुजं ॥ १४ ॥

पडे माते वन्दु कण्डङ्गमृत-जलधि तां गर्ब्बदि गण्ड-वातं

नुडिवातङ्गेन्ननेम्बै प्रलय-समय-देल् मेरेयं मीरिबर्णा-

कडलन्नं कालनन्नं मुलिद-कुलिकनन्नं युगान्ताप्रियन्नं

सिडिलन्नं सिंहदन्नं पुर-हर-नुरिगण्णन्ननी नारसिंहं ॥ १५ ॥

रिपु-सर्पहर्ष-दावानल-ग्रहल-सिखा-जाल-कालाम्बुवाहं

रिपु-भूपोद्यत्प्रदीप-प्रकर-पटुतर-स्फार-भ्रम्भा-समीरं ।

रिपु-नागानीक-तार्क्ष्यं रिपु-नृप-नलिनी-षण्ड-वेदण्डरूपं  
 रिपु-भूमृद-भूरि-वज्रं रिपु-नृप-मदमातङ्ग-सिंहं नृसिंहं । १६ ।  
 स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वर । द्वार-  
 वती-पुरवराधीश्वर । तुलुव-बल-जलधि-बडवानल । दायाद-  
 दावानल । पाण्ड्य-कुल-कमल-वेदण्ड । गण्ड-भेरुण्ड । मण्ड-  
 लिक-त्रेण्टेकार । चाल-कटक-सूरेकार । संप्राम-भीम । कलि-  
 काल-काम । सकल-वृन्द-वृन्द-सन्तर्पण-समग्र-वितरण-विनोद ।  
 वासन्तिका-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद । यादव-कुलाम्बर-द्युमणि ।  
 मण्डलिक-भकुट-चूडामणि-कदन-प्रचण्ड मलपरोलू गण्ड । नामादि  
 प्रशस्ति-सहित श्रीमत्-त्रिभुवन-मल्ल तलकाडु कोङ्गु नङ्गलि  
 नोलम्बवाडि वनवसे हानुङ्गल-गोण्ड भुज-बल वीरगङ्ग-  
 प्रताप-होयसल-नारसिंह-देवर् दक्षिण-मही-मण्डलमं दुष्ट-  
 निग्रह-शिष्टप्रतिपालन-पूर्वकं सुख-सङ्कथा-विनाददिं राज्यं  
 गेयुत्तमिरं तदीय-पितृ-विष्णु-भूपाल-पाद-पद्मोपजीवि ॥

आनेगल्द नारसिंह-ध-

रानाथङ्ग मर-पतिगे वाचस्पतिबोल-

तानेसेदनुचित-कार्य-वि-

धान-धरं मान्य-मन्त्रि हुल्ल-चमूपं ॥ १७ ॥

वृत ॥ अकलङ्कं पितृवाजि-वंश-तिलकं श्रीयक्षरार्जं निजा-  
 म्बिके लोकाम्बिके लोक-वन्दिते सुशीलाचारं दैवन्दिवी-  
 श-कदम्ब-स्तुत-पाद-पद्मनरुहं नाथं यदुत्तोणिपा-  
 लक-चूडामणि-नारसिंह नेनले पेम्पुल्लनो हुल्लपं ॥ १८ ॥

धरंयं गेलिदहं तिण्पुल्लननुदधियनेनेम्ब गुण्पुल्लनं म-  
 न्दरमं माक्कोल्व पेम्पुल्लननमर-महीजातमं मिक्क लोको-  
 त्तरमप्पाप्पुल्लनं पुल्लननेसेव जिनेन्द्राङ्घ्रि-पङ्केज-पूजा-  
 त्करवोल् तलपोयदलम्पुल्लनननुकरिसल् मर्त्यनावोसमर्थं १६  
 सुमनस्सन्तति-सेवितं गुरु-वचो-निर्दिष्ट-नीति-क्रमं  
 समदाराति-वल-प्रभेदन-करं श्री-जैन-पूजा-समा-  
 ज-महोत्साह-परं पुरन्दरन पेम्पं तालिद भण्डारि-हू-  
 ल्लमदण्डाधिपनिर्दपं महियोलुवद्वैभव-भ्राजितं ॥ २० ॥  
 सततं प्राणि-वधं विनोदमनृतालापं वचः-प्रौढि स-  
 न्ततमन्यात्थमनीन्दु कोल्वुदं वलं तेजं पर-स्त्रीयरोल् ।  
 रति-सौभाग्यमनून-काङ्क्षे मतियायतेल्लगर्गमाप्पोल्लतप-  
 ञ्जतरत्न-प्रकरक्के-शील-भट-रोल्गाहुल्लनं हुल्लनं ॥ २१ ॥  
 स्थिर-जिन-शासनोद्धरणरादियोलारनं राचमल्ल-भू-  
 वर-वर-मन्त्रि-रायने बलिककं बुध-स्तुतनप्प विष्णु-भू-  
 वर-वर-मन्त्रिगङ्गणने मत्ते बलिककं नृसिंह-देव-भू-  
 वर-वर-मन्त्रि-हुल्लने पेरङ्गिनिनुल्लडे पेललागदे ॥ २२ ॥  
 जिन-गदितागमार्थ-विदरस्त-समस्त-बहिर् प्रपञ्चर-  
 त्यनुपम-शुद्ध-भाव-निरतर्गत-मोहरेनिप्प कुक्कुटा-  
 सन-मल्लधारि-देवरे जगद्गुरुगल् गुरुगल् निज-व्रत-  
 केनेरुण-नौरवके तोण्यारो चमूपति-हुल्ल-राजना ॥ २३ ॥  
 जिन-गेडोद्धरणङ्गलिं जिन-महा-पूजा-समाजङ्गलिं-  
 जिन-योगि-व्रज-दानदिं जिन-पद-स्तात्र-क्रिया-निष्ठेयि

जिन-सत्पुण्य-पुराण-संश्रवणदिं सन्तोषमं ताल्दि भ-  
व्यनुतं निच्चलुमिन्ते पोलुगलेवं श्रीहुल्ल-दण्डाधिपं ॥ २४ ॥

कन्द ॥ निप्पटमे जीर्णमादुद-

नुप्पट्टायतन महा-जितेन्द्रालयमं ।

निप्पोसतु माडिदं कर-

मोप्पिरे हुल्लं मनस्वि बङ्गापुरदेल् ॥ २५ ॥

मत्तमल्लियं ॥

वृत् ॥ कलितनमुं विटत्वमुमनुल्लवनादियोलोर्व्वनुर्व्वियोल्  
कलिविटनेम्बनातन जिनालयमं नरे जीर्णमादुदं ।  
कलि सलं दानदेल् परम-सौख्य-रमारतियोल् विटं विनि-  
श्चलवे निसिदं हुल्लनदनेत्तिसिदं रजताद्रि-तुङ्गमं ॥ २६ ॥  
प्रियदिन्दं हुल्ल-सेनापति कोपण-महा-तीर्थदेल् धात्रियुं वा-  
र्द्धियुमुल्लन्नं चतुर्व्विशंति-जिन-मुनि-सङ्घके निश्चिन्तमाग-  
च्चय-दानं सल्ल पाङ्गि बहु-कनक-मना-चेत्र-जर्गित्तु सद्दु-  
त्तियनिन्तीलोकमेल्लम्पोगले विडिसिदं पुण्य-पुञ्जैकधामं ॥  
॥ २७ ॥

आकेल्लङ्गेरेयादि-तीर्थमदुमुन्नं गङ्गारिं निर्मितं  
लोक-प्रस्तुतमायतु काल-वशदिं नामावशेषं बलि-  
का-कल्प-स्थिरमागे माडिसिदनी-भास्वज्जिनागारमं  
श्री-कान्तं तलदिन्दमेयदे कलसं श्री-हुल्ल-दण्डाधिपं ॥ २८ ॥

कन्द ॥ पञ्च-महा-वसतिगलं

पञ्च-सुकल्याण-वाञ्छेयिं हुल्ल-चमू-



पं चतुरं माडिसिदं

काञ्चन-नग-धैर्यनेसेव केल्लङ्गेरेयोल् ॥ २६ ॥

कन्द ॥ हुल्ल-चमूपन गुण-गण-

मुल्लनितुमनारो नेरेये पोगल्लल् नेरेवर्

बल्लदोललेदुदधिय जल-

मुल्लनितुमनारो पवणिलल् नेरेवन्नर् ॥ ३० ॥

संश्रित-सद्गुणं सकल-भव्य-नुतं जिन-भासितार्थ-नि-

स्संशय-बुद्धि-हुल्ल-पृतना-पति कैरव-कुन्द-हंस-शु-

भ्रांशु-यशं जगन्नुतदोली-वर-बेल्लगुल तीर्थदोल चतु-

र्विंशति तीर्थकृन्निलयमं नेरे माडिसिदं दलन्तिदं ॥ ३१ ॥

कन्द ॥ गोम्मटपुर-भूषणमिदु

गोम्मटमायतेने समस्त-परिकर-सहितं ।

सम्मददि हुल्ल-चमू-

पं माडिसिदं जिनोत्तमालयमनिदं ॥ ३२ ॥

वृत्त ॥ परिसूत्रं नृत्य-गोहं प्रविपुल-विलसत्पल्ल-देशस्थ-शैल-

स्थिर-जैनावास-युगमं विविध-सुविध-पत्रोल्लसद्-भाव-रूपो-

त्कर-राजद्वार-हर्म्यं बेरसतुल-चतुर्विंश-तीर्थेशगोहं

परिपूर्णं पुण्य-पुञ्ज-प्रतिममेसेदुदीयन्ददि हुल्लनिन्दं ॥ ३३ ॥

स्वस्ति श्री-सूल-सङ्घद देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कोण्ड-

कुन्दान्वय-भूषणरूप श्री-गुणचन्द्रसिद्धान्त-देवर शिष्यरूप

श्री-नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-देवरेन्तप्परेन्दोडे ॥

वृत्त ॥ भय-मोह-द्वय-दूरनं मदन-घोर-ध्वान्त-तीव्रांशुव'  
 नय-निक्षेप-युत-प्रमाण-परिनिर्णीतात्थ-सन्देशनं ।  
 नयनानन्दन-शान्त-कान्त-तनुव' सिद्धान्त-चक्रेशनं  
**नयकीर्त्ति**-व्रतिराजनं ननेदोडं पापोत्करं पिङ्गुं ॥ ३४ ॥  
 कृत-दिग्जैत्रविधं बरुत्ते **नरसिंह**-क्षोणिपं कण्डु स-  
 न्मतिथिं गोम्मट-पार्श्वनाथजिनरं मत्तोचतुर्विंशति-  
 प्रतिमागेहमनिन्तिवर्क्के विनतं प्रोत्साहदिं विट्टन-  
 प्रतिमल्लं **सवणेरनूरनभयं** कल्पान्तरं सल्विनं ॥ ३५ ॥  
 अदर्के **नयकीर्त्ति**-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगलं महा-मण्डलाचार्य  
 रनाचार्यम्माडि ॥

वृत्त ॥ तवदैचित्यदे **नारसिंह**-नृपनिं तां पेतुदं सद्गुणा-  
 र्णवनी जैन-गृहककं माडिदनचण्डं हुल्ल-दण्डाधिपं ।  
 भुवन-प्रस्तुतनोप्पुतिर्प **सवणेरम्बूरनम्भे**धियुं  
 रवियुं चन्द्रनुमुर्वरावलयमुं निलवन्नेगं सल्विनं ॥ ३६ ॥

ग्राम-सीमेयेन्तेन्दडे मूडण-देसेयाल **सवणेर-वेक्केनेडेय**  
 सीमे करडियरे अल्लि तेड्ड हिरियोब्बेयिं पोगलु बिम्बि-सेट्टिय  
 करेय कोडिय कील-वयलु अल्लि तेड्ड बरहाल-करेयच्चुगट्टु मेरे-  
 थागि हिरियोब्बेय वसुरिय तेड्डण केम्बरेय हुण्णिसे तेड्डण देसे-  
 योलु बिलत्तिय **सवणेर एडेय एरेय दिण्णेय हुण्णिसेय कोल-हिरि-**  
**याल अल्लि हडुवलु हिरियोब्बेय सेल्ल-मोरडिय हडुवण बल्लेय**  
**करेय तेड्डण-कोडिय बल्लरिय वन अल्लिन्दत्त तरिहडिय कलिय**  
**मनकट्टद तायवल्ल जन्नवुरद हिरियकरेय तायवल्ल सीमे ॥ हडुवण**

देसेयोल् जन्नवुरक्कं सवणेरिङ्गं सागरमय्यादे जन्नवूर सवणेर  
 करेयेरिय नडुवण हिरिय हुण्णिसे सीमे बडगणदेसेयोल् कक्किन  
 कोहु अदर मूडण बीरज्जन करे आ-करेयोल्गे सवणेर बेडुगन  
 हल्लिय नडुवे बसुरिय दोण्णे अल्लि मूडलालज्जन कुम्मरि अल्लि-  
 मूड चिल्लदरे सीमे ॥

ई-स्थलदिन्दाद द्रव्यमनिल्लियाचार्यरी-स्थानद बसदिगल  
 खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकं देवता-पूजेगं रङ्गभोगकं बसदिगे बेस  
 केय्व प्रजेगं ऋषि-समुदायदाहार-दानकं सलिसुवुदु ॥

इदनावं निज-कालदोल् सु-विधियिं पालिप्प लोकोत्तमं  
 विदितं निर्मल-पुण्य-कीर्त्तियुगमं तां ताल्दुगुं मत्तमि-  
 न्तिदनावं किडिपोन्दु कंट्ट-वगोयं तन्दातनाल्दुं गभीर  
 दुरन्ती ..... ॥ ३७ ॥

[ इस लेख में होयसल वंशी नारसिंह नरेश के मन्त्री हुल्लराज द्वारा गुणचन्द्र सिद्धान्तदेव के शिष्य नथकीर्त्ति सिद्धान्तदेव को सवणेरु ग्राम दान करने का उल्लेख है । प्रारम्भ में होयसल वंश का वही वर्णन है जो लेख नं० १२४ में पाया जाता है । हुल्ल वाजिवंशी यत्तराज और लोकात्मिके के पुत्र थे । वे बड़े ही जिनभक्त थे । 'यदि पूछा जाय कि जैन धर्म के सच्चे पोषक कौन हुए तो इसका उत्तर यही है कि प्रारम्भ में राचमल्ल नरेश के मन्त्री राय ( चामुण्डराय ) हुए, उनके पश्चात् विष्णु नरेश के मन्त्री गङ्गण ( गङ्गराज ) हुए और अब नर-सिंहदेव के मन्त्री हुल्ल हैं ।' हुल्ल मन्त्री के गुरु कुक्कुटासन मलधारिदेव थे । मन्त्री जी को जैनमन्दिरों का निर्माण व जीर्णोद्धार कराने, जैनपुराण सुनने तथा जैन साधुओं को आहारादि दान देने की बड़ी रुचि थी । उन्होंने बंकापुर के भारी और प्राचीन दो मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया,

कोपण में नित्यदान के लिये 'वृत्तियों' का प्रबन्ध किया, गङ्गनरेशों द्वारा स्थापित प्राचीन 'केलङ्गेरे' में एक विशाल जिन मन्दिर व अन्य पाँच जिन मन्दिर निर्माण कराये व बेलगुल में परकोटा, रङ्गशाळा व दो आश्रमों सहित चतुर्विंशति तीर्थंकर मन्दिर निर्माण कराया । सबसेरु ग्राम का दान नारसिंह देव के विजययात्रा से लौटने पर इस मन्दिर की रक्षा के हेतु दिया गया था ।]

१३७ ( ३४६ )

## उसी पाषाण की दायीं बाजू पर

( लगभग शक सं० १०८७ )

श्रीमत्सुपाश्वदेवं

भू—महितं मन्त्रि-हुल्ल-राजङ्गं त-

द्भामिनि-पद्मावतिगं

चेमायुर्निर्वभव-वृद्धियं माल्कभवं ॥ १ ॥

कमनीयानन-हेम-तामरसदि नेत्रासिताम्भोजदि-

न्दमलाङ्ग-शुति-कान्तिगि कुच-रथाङ्ग-द्वन्द्वदि श्री-निवा-

समेनलु पद्मल-देवि राजिसुतमिर्पलु हुल्ल-राजान्तर-

ङ्ग-मरालं रमियिप पद्मिनियवोलु नित्यप्रसादास्पदं ॥ २ ॥

चल-भावं नयनक्के काश्यमुदरक्कत्यन्तरागं पदौ-

ष्ठलसत्पाणि-तलक्के कर्कशते वच्चोजक्के काण्य कच-

कलसत्वं गतिगल्लदिल्ल हृदयकेन्दन्दु पद्मावती-

ललना-रत्नद रूप-शील-गुणमं पोलवन्नराकर्णन्तेयर् ॥ ३ ॥

उरगेन्द्र-क्षीर-नीराकर-रजत-गिरिश्री-सित-च्छत्र-गङ्गा-  
हर-हासैरावतंभ-स्फटिक-वृषभ-शुभ्राभ्र-नीहार-हारा-  
मर-राज-श्वेत-पङ्के रह-हलधर-वाक्छङ्खहंसेन्दु-कुन्दो-  
त्कर-चञ्चत्कीर्त्ति-कान्तं बुध-जन-विनुतं **भानुकीर्त्ति-**  
**व्रतीन्द्र** ॥ ४ ॥

श्री नयकीर्त्ति-मुनीश्वर-  
सुनु श्री **भानुकीर्त्ति**-यति-पतिगित्तं ।  
भूनुतनप्पाहुल्लप-  
सेनापति धारयेरेदु **सवणेरु** ॥ ५ ॥

[ इस लेख में हुल्लराज मन्त्री की धर्मपत्नी पद्मावती ( पद्मलदेवी ) की प्रशंसा के पश्चात् उल्लेख है कि हुल्लराज ने नयकीर्त्ति मुनि के शिष्य ( सुनु ) भानुकीर्त्ति को धारापूर्वक सवणेरु ग्राम का दान दिया । ]

१३७ ( ३४७ )

**उसी पाषाण की बायीं बाजू पर**

( शक सं० १२०० )

स्वस्ति श्री-जयाभ्युदयश्च-शक-वरुषं १२०० नेय बहु-  
धान्य-संवत्सरद चैत्र-सु १ सु भण्डारिययन बसदिय  
श्री-देवरवल्लभ-देवरिगे नित्याभिषेकके अक्षय-भण्डारवागि  
श्रीमनु महा-मण्डलाचारियरु उदचन्द्र-देवर शिष्यरु मुनि-  
चन्द्र-देवरु गर प ५ कं हालु मान २ श्रीमनु चन्द्रप्रभ-देवर

शिष्यरु पदुमणान्दि-देवरु कोट्ट प ६ ह १ श्रीमन्महामण्ड-  
लाचारियरु नेमिचन्द्र-देवर तम्म सातण्णनवर मग पदु-  
मणनवरु कोट्ट ग १ प २ मुनिचन्द्र-देवर अलिय आदि-  
यणन ग १ प २ १/२ बम्मि सेट्टियर तम्म पारिस-देव ग १  
प २ १/२ जन्नवुरद सेनवोव मादय्य ग १ प २ १/२ आतन तम्म  
पारिस-देवय्य सिंगणन प ६ १/२ सेनवोव पदुमणनन मग  
चिक्कणन ग प १ भारतियक्कन नेम्मवेयक्क प १ अगण्णगे...-

श्रीमन्महा-मणलाचारियरु राजगुरुगलुमण्ण श्री-मूल-सङ्ग-  
द समुदायङ्गल दुस्मुखि-संवत्सरद आषाढ सु ५ आ ॥  
श्रीगोम्मट-देवरु श्री-कमठ-पारिश्च-देवरु भण्डार्ययन वसदिय  
श्रीदेवरवल्लभ-देवरु मुख्यवाद वसदिगल देव-दानद गहे  
बेदलु सहित खाण अभ्यागति कटक-शेसे वसदि-मनत्ततयिवु  
मुन्तागि येनुवनुं कोल्लिवेन्दु बिट्टु श्री-बेलुगुल-तीर्थद समस्त-  
माणिक्य-नगरङ्गलु कब्बाहु-नाथ-अरुवणद गौडु-प्रजेगलु मुन्तागि  
श्रीदेवरवल्लभ-देवर हाडुवरहल्लिगे सम्भुदेव अन्यायवागि  
मलत्रयवागि कोम्ब गद्याण अय्दनु आदेवरवल्लभ-देवर रङ्ग  
भोगक्के सलुवुदु आहल्लिय अष्ट-भोग-तेज-साम्य किरुकुल येना  
दोडं आदेवरवल्लभ-देवर रङ्ग-भोगक्के सलु ॥

[ उक्त तिथि को भण्डारियय बल्ली के देवर बल्लभदेव के नित्या-  
भिषेक के लिए उदयचन्द्रदेव के शिष्य मुनिचन्द्रदेव आदि ने उक्त चन्दे  
की रकम एकत्रित की । ]

१३८ (३४६)

## भण्डारिबस्ति में पश्चिम की ओर

( शक सं० १०८१ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघकाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाचनाशिने ।

कुतीर्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभेद-घन-भानवे ॥ २ ॥

स्वस्तिहोयस्तुलवंशाय यदुमूनाय यद्भवः ।

क्षत्र-मौक्तिकसन्तानर् पृथ्वीनायक-मण्डनं ॥ ३ ॥

श्रीधर्माभ्युदयाब्जषण्डतरणिससम्यक्तचूडामणि-

र्त्रीतिश्रीसरणिप्रतापधरणिर्दानार्थि-चिन्तामणिः ।

वंशे यादवनाम्नि मौक्तिक-मणिज्जातो जगन्मण्डनः

क्षीराब्धाविव कौस्तुभोऽत्रविनयादित्यावनीपालकः ॥४॥

अपि च ॥ श्री-कान्ता-कमनीयकैलिकमलोत्तासात्सुनित्यादया-

हर्षान्ध-क्षितिपान्धकार-हरणाद् भूयर् प्रतापान्वयात् ।

दिक्चक्राक्रमणाद्विशत्कुबलय-प्रध्वंसनाद्भूतले

ख्यातोऽन्वर्त्यनिजाख्ययैष विनयादित्यावनीपालकः ॥५॥

धात्रा त्रिलोकोदर-सारभूतैरंशैर्मुदा स्वस्य विनिर्मितेव ।

तस्य प्रिया कैलियनामदेवी मनोज-राज्य-प्रकृतिर्बभूव ॥६॥

तयोरभूद्भूनुतभूरिकीर्त्तिर्पराक्रमाक्रान्तदिगन्तभूमिः ।

तन्भवः क्षत्रकुलप्रदीपः प्रतापतुङ्गोन्वेरेयङ्गभूपः ॥ ७ ॥

वितरण-लता-वसन्तप्रभदारतिवार्द्धि-तारकाकान्तः ।

साक्षात्समरकृतान्तो जयति चिरं भूप-मकुट-मणिररेयङ्गः ॥

॥ ८ ॥

अपि च ॥ शरदमृत-द्युति-कीर्त्तिर्मनसिजमूर्त्ति-

र्विराधिकुरुकपिकेतुः ।

कलि-काल-जलधि-सेतु-

र्जयति चिरं चत्र-मौलि-मणिररेयङ्गः ॥ ९ ॥

अपि च ॥ जयलक्ष्मीकृतमङ्गः कृत-रिपु-भङ्गः प्रणूत-गुण-तुङ्गः ।

भूरि-प्रताप-रङ्गो जयति चिरं नृ-किरीट-मणिररेयङ्गः ॥ १० ॥

अपि च ॥ लक्ष्मीप्रेमनिधिर्विदग्ध-जनता-चातुर्यचर्चा-विधि-

र्वीरश्री-नलिनी-विकास-मिहिरो गाम्भीर्य-रत्नाकरः ।

कीर्त्ति-श्री-लतिका-वसन्त-समयस्मौन्दर्यलक्ष्मीमय-

स्सश्रीमानरेयङ्ग-तुङ्गनृपतिः कैः कैर्न संवर्ण्यते ॥ ११ ॥

अपि च ॥ कश्शक्रोत्यरेयङ्गमण्डलपतेर्दोर्विक्रमक्रीडनं

स्तोतुं मालव-मण्डलेश्वरपुरीं धारामधाक्षीत् क्षणात् ।

दोःकण्डूल-कराल-चालकटकं द्राक् कान्दिशीकं व्यधान्

निर्द्धामाकृतचक्रगोट्टमकरोद् भङ्गं कलिङ्गस्य च ॥ १२ ॥

कान्ता तस्य लतान्तवाणललना लावण्यपुण्यादयैः

सौभाग्यस्य च विश्वविस्मयकृतर्पात्रोधरित्री-भृतः ।

पुत्रीवद्विलसत्कलासु सकलास्वम्भोजयोनेर्व्यू-

रासीदेवल-नामपुण्यवनिता राज्ञी यशश्रोसखी ॥ १३ ॥



अपि च ॥ कुन्तल-कदली-कान्ता पृथु-कुच-कुम्भा मदालसा भाति  
सदा ।

स्मर-समरसज्जविजयमतङ्गोद्भवचारु-मूर्तिरेचलदेवी ॥

॥ १४ ॥

अपि च ॥ शचीव शक्रं जनकात्मजेव रामं गिरीन्द्रस्य सुतेव शम्भुं ।  
पद्मेव विष्णुं मदयत्यजसं सानङ्गलक्ष्मीरेरेयङ्ग-भूपं ॥१५॥  
कौसल्यया दशरथो भुवि रामचन्द्रं  
श्रीदेवकीवनितया वसुदेवभूपः ।

कृष्णं शचीप्रमदयेव जयन्तमिन्द्रो

विष्णुं तथा स नृपतिर्जनयांबभूव ॥१६॥

उदयति विष्णौ तस्मिन्ननेशदरिचक्र-कुलमिलाधिपचन्द्रे ।

अधिकतर-श्रियमभजत्कुवलय - कुलमश्वदमलधर्म्माम्भेधिः ॥

॥ १७ ॥

अपि च ॥ निर्दलितकोयतूरो भस्मीकृतकोङ्क-रायरायपुरः ।

घट्टित-घट्ट-कवाटः कम्पितकाञ्चीपुरस्सविष्णुनृपालः ॥१८॥

अपि च ॥ अतुल-निज-बल-पदाहति-धूलीकृततद्विराटनरपतिदुर्गः ।

वनवासितवनवासे विष्णुनृपस्तरलितोरु-वल्लूरः ॥१९॥

अपि च ॥ निज-सेना-पद-धूलीकईमित-मलप्रहारिणीवारिः ।

कलपाल-शोणिताम्बु-निशातीकृत-निजकरासिरवनिप-

विष्णुः ॥२०॥

अपि च ॥ नरसिंह-वर्म्मे-भूभुज-सहस्रभुज-भूजपरशुरामोऽपि ।

चित्रं विष्णुनृपालश्शतकृत्वोऽप्याजिनिहित-शत्रु-क्षत्रः ॥२१॥

अदियम-पृथुशौर्य्यार्य्यमराहुश्चेङ्गिरि-गिरीन्द्र-हति-पवि-

दण्डः

तलवनपुरलक्ष्मी पुनरहरज्जयमिव रिपोस्स विष्णु-नृपः

॥२२॥

अपि च ॥ चक्रिप्रेषित-मालवेश्वरजगद्देवादिसैन्यार्णव

घूर्णन्तं सहसापिवत्करतलेनाहत्य मृत्यु-प्रभुः ।

प्राक् पश्चादसिनाग्रहीदिह महीं तत्कृष्णवेण्यावधि-

श्रीविष्णुर्भुजदण्डचूर्णितनितान्तोतुङ्गतुङ्गाचलः ॥ २३ ॥

अपि च ॥ इरुङ्गोल-क्षोणी-पति-मृगमृगारातिरतुलः

कदम्ब-क्षोणीश-क्षितिरुह-कुलच्छेद-परशुः ।

निज-व्यापारैक-प्रकटितलसञ्चौर्य्यमहिमा

स विष्णुः पृथ्वीशो न भवति वचोगोचरगुणः ॥२४॥

साक्षाल्लक्ष्मी-व्विपदपगमे विश्वलोकस्य नाग्रा

लक्ष्मीदेवी विशदयशसा दिग्धदिक्चक्रभित्तिः ।

दृष्यद्वैरि-क्षितिप-दितिजव्रात-विध्वंस-विष्णोः

विष्णोस्तस्य प्रणय-वमुधासीत्सुधानिर्मिताङ्गी ॥ २५ ॥

ब्रह्माण्ड-भाण्ड-भरितामलकीर्ति-लक्ष्मी-

कान्तस्तयोरजनि सूनुरजातशत्रुः ।

पृथ्वीश-पाण्डु-पृथयोरिव पुष्पचापो

दैत्य-द्विषत् कमलयोरिवनारसिंहः ॥ २६ ॥

अपि च ॥ गर्व्वं बर्व्वर मुञ्च काञ्चन-चयंचोलाशु राशीकुरु

क्षेमं भिन्नय चेर चीवरमुखो दूरेण विज्ञापय ।

स्वंगौडेति नृसिंह-भूरि-नृपतेर्मध्ये सदस्सर्व्वदा

दुर्व्वारस्सरति ध्वनिः परिजनानिर्घात-निर्घोष-जित् ॥२७॥

अपि-च ॥ शौर्यं नैष हरेः परत्र तरणेरन्यत्र तेजस्वितां

दानित्वं करिणः परत्र रथिनामन्यत्र कीर्तिरदात् ।

राज्यं चन्द्रमसर्परत्र विषमास्त्रत्वं च पुष्पायुधा—

दन्यत्रान्य-जने मनाक् च सहते श्रोतारसिंहो नृपः ॥२८॥

अपि च ॥ स भुज-वल-वीर-गङ्ग-प्रताप-होयसलापर-नामा ।

पालयति चतुस्समयं मर्यादामम्बुनिधिरिवाति प्रीत्या

॥२९॥

चागल-देवी-रमणो यादव-कुल-कमल-विमल-मात्तण्ड-श्रीः॥

छित्वा दृप्त-विरोधि-वंश-गहनं दिग्जैत्र-यात्रा-विधा-

वारुह्योदय-भूधरं रविरिवाद्रिं दीप-वर्त्ति-श्रिया ।

नत्वा दक्षिण-कुक्कुटेश्वर-जिन-श्री-पाद-युग्मं निधिं

राज्यस्याभ्युदयाय कल्पितमिदं स्वस्यात्मभण्डारिणा ॥ ३० ॥

सर्व्वाधिकारिणा कार्य-विधौ योगन्धरायणा-

दपि दक्षेण नीतिज्ञगुरुणा च गुरोरपि ॥ ३१ ॥

लोकाम्बिकातनूजेन जकि-राजस्य सूनुना ।

व्याथसा लोक-रक्षक-लक्ष्मणामरयोरपि ॥ ३२ ॥

मलधारि-स्वामि-पद-प्रथित-मुदा वाजि-वंश-गगनांशुमता ।

हिम-रुचिना गङ्ग-मही-निखिल-जिनागार-दान-तोयधि-बिभवै

॥ ३३ ॥

दूरी-कृत-कलि-स्यूत-नृ-कलङ्केन भूयसा ।

चरित्र-पयसा कीर्ति-धवलीकृत-दिशालिना ॥ ३४ ॥

त्रिशक्ति-शक्ति-निर्भिन्न-मदवद्भू रि-वैरिणा ।

हुल्लपेन जगन्नृत-मन्त्रि-माणिक्य-मौलिना ॥ ३५ ॥

चतुर्विंशति-जिनेन्द्र-श्री-निलयं मलयाचलं ।

सद्धर्म-चन्दनोद्भूतौ दृष्ट्वा निर्म्मापितं ततः ॥ ३६ ॥

द्वितीयं यस्य सम्यक्त्व-चूडामणि-गुणाख्यया ।

भव्य-चूडामणिनाम तस्मै प्रोत्था ददात्ततः ॥ ३७ ॥

दानार्थं भव्य-चूडामणि-जिन-वसतौ वासिनां सन्मुनीनां

भोगार्थं चानुजीर्णोद्धरणमिह जिनेन्द्राष्टविध्यचर्चनात्थं ।

श्री-पार्श्व-स्वामिनां च त्रिजगदधिपतेः कुकुटेशस्य पत्युः

पुण्यश्री-कन्यकाया विवहन-विधये मुद्रिकामर्पयन्वा ॥ ३८ ॥

एकाशीत्युत्तर-सहस्र-शक-वर्षेषु गतेषु प्रमादि-

संवत्सरस्य पुष्य-मास शुद्ध शुक्रवारचतुर्दश्यामुत्त-

रायणसंक्रान्तौ श्री-सूल-संघदेशियगणपुस्तकगच्छसम्बन्धिनं

विधाय ॥

नरसिंह-हिमाद्रितदुधित-कलश-हृद-क-हुल्ल-कर-जिह्विकेया

नत-धारा गङ्गाम्बुनि सचतुर्विंशतिजिनेश-पादसरसीमध्ये।

सवणेरुमदाद्भूपतिरगणित-बलि-कण्ठ-नृपति-शिवि-खचर-

पतिः

प्रगुणित-कुबेरविभवस्त्रिगुणीकृत-सिंहविक्रमो नरसिंहः । ३९ ॥

अतः परं ग्राम-सीमाभिधास्यते ॥ तत्र पूर्वस्यां दिशि सवणेर-  
 बेक्कन यडेय सीमे करडियरे अल्लि तेङ्ग हिरियोब्बेयि पोगलु  
 बिम्बिसेट्टियकरेय कोडिय किब्बयलु ॥ अल्लि तेङ्ग बरहालकरेय  
 अच्चुगट्टु मेरेयागि हिरियोब्बेय वसुरिय तेङ्गण केम्बरेय  
 हुण्णिसे ॥ दक्षिणस्यां दिशि बिलत्तिय सवणेर यडेय एरेय  
 दिण्णेय हुण्णिसेय कोल हिरियाल । अल्लि हडुवलु हिरियोब्बेय  
 सेल्ल मोरडिय हडुवण बल्लेयकरेय तेङ्गणकोडिय बलरिय बन ॥  
 अल्लिन्दत्त तरिहलिय कलियमनकट्टद तायवल्ल जन्नवुरद हिरिय  
 करेय तायवल्ल सीमे ॥ पश्चिमायां दिशि जन्नवुरक्कं सवणेरिङ्गं  
 सागरमरियादे जन्नवूर सवणेर करेयेरिय नडुवण हिरियहुण्णिसे  
 सीमे ॥ उत्तरस्यां दिशि कक्किन कोहु अदर मूडण बीरज्जन  
 करेयाकरेयालगे सवणेर बैडुगनहलिय नडुवे वसुरिय दोणे ।  
 अल्लि मूडलालज्जन कुम्मरि अल्लि मूड चिल्लदरे सीमे ॥

सामान्योऽयं धर्म-सेतुर्नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः  
 सर्वानेतान् भाविनर्पात्स्विवेन्द्रान् भूयो भूयो याचते

रामचन्द्रः ॥ ४० ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुन्धरां ।

षष्टिं वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ ४१ ॥

न विषं विषमित्याहुर्देवस्त्वं विषमुच्यते ।

विषमेकाकिनं हन्ति देवस्त्वं पुत्र-पौत्रकं ॥ ४२ ॥

शरज्ज्योत्स्ना-लक्ष्मी-वपुषि बहलश्चन्दनरसे

दिशाधोशस्त्रीणां स्फुरदुरुदुकूलैकवसनं ।

त्रिलोकप्रासाद-प्रकटित-सुधा-धाम-विशदं

यशो यस्य श्रीमान् स जयति चिरं हुल्लप-विभुः ॥ ४३ ॥

अस्तु स्वस्ति चिराय हुल्ल भवते श्रीजैन-चूडामण्णे

भव्य-व्यूह-सरोज-षण्ड-तरणे गाम्भीर्य-वारान्निधे ।

भास्वद्विश्व-कलाविधे जिन-नुत-त्तोरारब्धि-वृद्धीन्दवे

स्वोद्यत्कीर्ति-सिताम्बुजोदरलसद्वारासि-वार्त्विन्दवे ॥४४॥

श्री गौम्मट-पुरद तिप्पेसुङ्गदल्लि अडकंय हेरिङ्गे २००

हसुम्बेगे अयवत्तु उप्पु हे .....गे विसिगे १ हसुम्बे गोफल ५

मेलसु हेरिङ्गेवल्ल १ हसुम्बेगे मान १ मरिपन्नायदल्लि एलेय.....

.....रेग हाग १ मेलेले २०० गाणदेरे इनितुमं तम्म सुङ्गदधि

कारदन्दु चतुर्विंशति-तीर्थंकरपू.....प्रधान सव्वा-

धिकारि हिरिय-भण्डारि हुल्लय्यङ्गलु हेगडे लक्कय्यङ्गलुं

हेगडे-अ.....होयसल नारसिंह-देवनकय्य बेडि-

कोण्डु विट्टरु ॥ इप्पत्त-नाल्वर मनेदेरे प ..... तां

नुडिदुदे सद्दाणि तन्न पेल्दन्ददोलाण्णडदोडदे मार्गमेन्दडे

नडेदु... ..

शशियिन्दम्बरमब्जदिं तिलि-गोलं नेत्रङ्गलिन्दाननं

पोसमाविं वनमिन्द्रनिं त्रिदिवमासे... ..

... ..कीर्ति-देव-मुनिधिं सिद्धान्त-चक्रेश-नि-

न्देसेगुं श्रीजिन-धर्ममेन्दडे बलिककवण्णपं वण्णपं ॥४५॥

.....तौ लब्धा चमू-नायकः ॥ श्री हुल्ल

स्सवणेरुमेवमददादाच.....त श्रोनय.....

.....क्त्या मुदा धारापूर्व्वकमुर्व्वरा-स्तुति-भृ.....म्भ

.....श्री श्री

भव्याम्भोरुह-भास्करस्सुरसरिन्नोहारवु .....

.....कृ.....निः पुरात्थ्य-रत्नाकरः ।

सिद्धान्ताम्बुधि-वर्द्धनामृतकरः कन्दर्पशैलाशनि-

स्सोऽयं विश्रुत-भानुकीर्त्ति-मुनि.....तं भूतले ॥४६॥

[ इस लेख में भी होयसलवंशी नारसिंह देव के वंश-परिचय के पश्चात् उनका चतुर्विंशति मन्दिर की वन्दना करने तथा हुल्ल द्वारा सव-खेरु ग्राम का दान करने का उल्लेख है । इस लेख में हुल्ल के लघु आता लक्ष्मण का व अमर का भी नाम आया है । नारसिंह देव ने उक्त बस्ती का नाम भव्यचूड़ामणि रक्खा । हुल्लराज की उपाधि सद्यःकव चूड़ामणि थी । लेख का अन्तिम भाग बहुत घिस गया है । इसमें हुल्लय्य हेगडे, लोकय्य आदि द्वारा नारसिंह देव को प्रार्थनापत्र देकर गोम्मटपुर के कुछ टेक्सों का दान चतुर्विंशति तीर्थंकर बस्ति के लिये कराने का उल्लेख है । अन्त में भानुकीर्त्ति मुनि का भी उल्लेख है । ]

१३८ ( ३५१ )

मठ के उत्तर की गोशाला में

( शक सं० १०४१ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री-वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्री-कोण्डकुन्दनामाभूच्चतुरङ्गुलचारणः ॥ २ ॥

तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।

गुणी देवेन्द्र-सिद्धान्त-देवो देवेन्द्र-वन्दितः ॥ ३ ॥

अवर सन्तानदोल ॥

वृत्त ॥ पर-वादि-चित्तिभृन्निशात-कुलिशं श्री-सूल-सङ्घाब्जषट्—

चरणं पुस्तक-गच्छ देशिग-गण प्रख्यात-योगीश्वरा—

भरणं मन्मथ-भञ्जनं जगदोलादं ख्यातनादं दिवा-

करणन्दि-व्रतिपं जिनागम-सुधाम्भोराशि-ताराधिपं ॥ ४ ॥

अन्तेनलित्तेनलकरियेनेयदे जगत्त्रय-वन्द्यरप्पपे-

म्पं तलेदिर्देरेम्बुदने बल्लेनदल्लदे संथमं चरि-

त्रं तपमेम्बिवत्तलगमिन्तु दिवाकरनन्दि-देव-सि-

द्धान्तिगगेन्दडोन्टु रसनोक्तियोलानदनेन्तु वणिणपे ॥ ५ ॥

तरिशय्यरप्प ॥

नेरेयं तनुत्रमिक्किदवोलिर्द मलन्तिने मेय्यनोम्भेयुं

तुरिसुवुदिल्ल निद्दे वरे मग्गुलनिकुवुदिल्ल बागिलं ।

किरु तेरेयेम्बुदिल्लुगुल्लुवुदिल्ल मल्लुवुदिल्लहीन्द्रनुं

नेरेवने वणिणसल्लगुण-गाणावलियं मलधारि-देवरं ॥ ६ ॥

अवरशिष्यर ॥

वृत्त ॥ कन्तुमदापहर्स्कल-जीव-दयापर-जैन-मार्ग-रा-

द्धान्त-पयोधिगलु त्रिषय-वैरिगलुद्धत-कर्म-भञ्जन-

र्स्सन्तत-भव्य-पद्म-दिनकृत्प्रभरं शुभचन्द्र-देव-सि-

द्धान्त-मुनीन्द्ररं पोगल्लुदम्बुधि-वेष्टित-भूरि-भूतलं ॥ ७ ॥



इन्तिवर गुरुगलप्प श्रीमद्दिवाकरणन्दि-सिद्धान्त-देवरु ॥

वृत ॥ आ-मुनि-दीक्षेय'कुडे समग्र-तपो-निधियागि दान-चि-

न्तामणियागि सद्गुण-गणाग्रणियागि दया-दम-क्षमा—

श्री-मुख-लक्ष्मियागि विनयार्णव-चन्द्रिकेयागि सन्ततं

श्रीमति गन्तियन्नेगल्दरुर्विये'लुर्वरे कूर्त्तु कीर्त्तिसलु ॥ ८ ॥

श्रीमति गन्तियज्जित-कषायिगलुप्रतपङ्गलिन्दमि-

न्तीमहियोल् पोगत्तेगे नेगत्तेगे नोन्तु समाधियि जगत-

स्वामियेनिप्प पेम्पिन जिनेन्द्रन पाद-पयोज-युग्ममं-

प्रेमदे चित्तदोल् निलिसि देवनिवास-विभूतिगेयिददलु ॥ ९ ॥

सक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि-सम्बत्सरद फाल्गुण-

शुद्ध-पञ्चमी-बुधवार-दन्दु सन्न्यसन-विधियि श्रीमति  
गन्तियम्मुडिपि देवलोकके सन्दर् ॥

अगणितमेने चारु-तपं

प्रगुणिते गुण-गण-विभूषणालङ्कृतेयि-

न्तगणित-निजगुरुगे-निसि-

धियेयं माङ्गळे गन्तियम्माडिसिदर् ॥ १० ॥

करुणं प्राणि-गणङ्गलोल् चतुरतासम्पत्ति सिद्धान्तदोल्

परितोषं गुण-सेव्य-भव्य-जनदोल् निर्म्मत्सरत्वं मुनी-

श्वररोल् धीरते धीर-वीर-तपदोल् कयूगण्मि पोण्मल् दिवा-

करणन्दि-व्रति पेम्पनें तलेदनो योगीन्द्र-वृन्दङ्गलोल् ॥ ११ ॥

[ यह लेख देशिय गण कुन्दकुन्दान्वय के दिवाकर नन्दि और उनकी शिष्या श्रीमती गन्ती का स्मारक है । दिवाकर नन्दि बड़े भारी योगी थे ।

वे देवेन्द्र सिद्धान्त देव की शाखा में हुए थे । उनके दो शिष्य मलधारि देव और शुभचन्द्र देव सिद्धान्त मुनीन्द्र थे । श्रीमती गन्ती ने उनसे दीक्षा लेकर उक्त तिथि को समाधिमरण किया । यह स्मारक माङ्गव्वे गन्ती ने स्थापित कराया । ]

१४० ( ३५२ )

## मठ के अधिकार में एक ताम्र-पत्र पर का लेख

( शक सं० १५५६ )

श्री स्वस्ति श्री-शालिवाहन-सक-वरुष १५५६ नेय भाव-  
संवत्सरद आषाढ-शुद्ध १३ स्तिरवार ब्रह्मयोगदल्लु  
श्रीमन्महाराजाधिराजराजपरमेश्वर अरि-राय-मस्तक-शूल  
शरणागतवज्रपञ्जर पर-नारी-सहोदर सत्य-त्याग-पराक्रम-मुद्रा-  
मुद्रित भुवन-वल्लभ सुवर्ण-कलस-स्थापनाचार्य-वङ्गधर्म-चक्र-  
श्वरराद मैयिसूर-पट्टण-पुरवराधीश्वरराद चामराजु वोडेरीयनवरु  
देवर बेलुगुलद गुम्मत-नाथ-स्वामियवर अर्चन-वृत्तिय स्वास्ति-  
यनु स्तानदवरु तम्म तम्म अनुपत्यदिन्दावर्त्तक-गुरुस्तरिगे  
अडहुबोग्यवियागि कोट्टु अडहुगारु बाहुकाला अनुभविसि  
बरुत्ता यिरलागि चामराजवोडेयरय्यनवरु विचारिसि अडहु  
बोग्याविय अनुभविसि बरुत्ता यिदन्त वर्त्तकगुरुस्तरनु करे  
यिसि । स्तानदवरिगे नीवु कोटन्थ सालवनु तीरिसि कोडिसिवु  
येन्दु हेललागि वर्त्तक-गुरुस्तरु आडिद मातु तावु स्तानदवरिगे  
कोटन्थ सालवु तम्म तन्देतायिगलिगे पुण्यवागलियेन्दु धारदत्त-

वागि धारेयनु येरदु कोट्टेयु येन्दुसमस्तरु आडलागि । स्तानदवरिगे  
वर्त्तक-गुरस्तर कैयल्लु । गुम्मत-नाथ-स्वामिय सन्निधियल्लि  
देवरु-गुरु-सात्तियागि धारेयनु यरिसि । आचन्द्रार्क-स्ताय-  
वागि देवतासेवेयनु माडिकोण्डु सुकदल्लि यीहरु एन्दु बिडिसि  
कोट्ट धर्म-शासन ॥ मुन्दे बेलुगुलद स्तानदवरु स्वास्तियनु  
अवानानोव्वनु अडहु-हिडिदन्तवरु अडव कोटन्तवरु धरुशन  
धर्मक्के होरगु स्थान-मान्यके कारुणविल्ल । यिष्टक्कु मीरि अडव-  
कोटन्तवरु अडव हिडिदन्तवरनु ई-राज्यक्के अधिपतियागिदन्थ  
घोरेगलु ई-दंवर धर्मवनु पूर्व मेरेगे नडसलुल्लवरु ॥ ई-मेरेगे  
नडसलरियदं उपेत्तेय दोरेगलिगे वारणासियल्लि सहस्र कपि-  
लेयनु ब्राह्मणन्नु कोन्द पापक्के होहरु येन्दु वरेसि कोट्ट धर्म  
शासन मङ्गलमहा श्री श्री श्री ॥

[ कुछ विपत्ति के कारण देवर बेलगुल के स्थानकों ने गुम्मतनाथ  
स्वामी की दान-सम्पत्ति महाजनों को रहन कर दी थी । महाजनों ने  
बहुत समय तक वह सम्पत्ति अपने कब्जे में रखकर उसका उपभोग  
किया । मैसूर के धर्मिष्ठ नरेश चामराज वोडेरय ने इसकी जाँच-पड़ताल  
कर रहनदारों को बुलाया और उनसे कहा कि हम तुम्हारा कर्ज अदा  
करेंगे, तुम मन्दिर की सम्पत्ति को मुक्त कर दो । इस पर रहनदारों ने  
कहा कि अपने पितरों के कल्याण के हेतु हम स्वयं इस सम्पत्ति का  
दान करते हैं । तब नरेश ने वह दान करा दिया और आगे के लिये  
यह शासन निकाल दिया कि जो कोई स्थानक दानसम्पत्ति को रहन  
करेगा व जो महाजन ऐसी सम्पत्ति पर कर्ज देगा वे दोनों समाज से  
बहिष्कृत समझे जावेंगे । जिस राजा के समय में ऐसा कार्य हो उसे  
उसका न्याय करना चाहिये । जो कोई इस शासन का उल्लंघन करेगा

वह बनारस में एक सहस्र कपिल गौश्रों और ब्राह्मणों की हत्या का भागी होगा । ]

१४१

मठ में

श्रोमत्परमगम्भीर-स्याद्वादादामोघलाञ्छनं ।  
 जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥१॥  
 नाना-देश-नृपाल-मौलि-विलसन्माणिक्य-रत्नप्रभा-  
 भास्वत्पद्म-सरोज युग्म-रुचिरः श्रीकृष्णराज-प्रभुः ।  
 श्रोकर्णाटक-देश-भासुरमहेश्वरस्थितिहासनः  
 श्रोचाम-क्षितिपाल-सूनुरवनौ जीयात्सहस्रं समाः ॥२॥  
 स्वस्ति श्रो-वर्द्धमानाख्ये जिने मुक्तिं गते सति ।  
 वह्नि-रन्ध्राब्धिनेत्रैश्च वत्सरेषु मितेषु वै ॥३॥  
 विक्रमाङ्क-समास्विन्दु-गज-सामज-हस्तिभिः ।  
 सतीषु गणनीयासु गणितज्ञैर्बुधैस्तदा ॥४॥  
 शालिवाहन-वर्षेषु नेत्र-वाण-नगेन्दुभिः ।  
 प्रमितेषु विकृत्यब्दे श्रावणे मासि मङ्गले ॥ ५ ॥  
 कृष्णपक्षे च पञ्चम्यां तिथौ चन्द्रस्य वासरे ।  
 दोर्दण्ड-खण्डितारातिः स्व-कीर्ति-व्याप्त-दिक्तटः ॥ ६ ॥  
 सश्रोमान् कृष्ण राजेन्द्रस्यायुःश्री-सुख-लब्धये ।  
 एतस्मिन्दक्षिणेकाशौ नगरे वेल्गुलाह्वये ॥ ७ ॥  
 विन्ध्याद्रौ भासमानस्य श्रीमतो गोम्मटेशिनः ।  
 श्रोपाद-पद्म-पूजायै शेषाणां जिन-वेशमनां ॥ ८ ॥

सार्धं हेमाद्रि-पार्श्व-श-चारु-श्री-चैत्य-वेशमना ।  
 द्वात्रिंशत्प्रमितानां श्री-सपर्योत्सव-हेतवे ॥ ६ ॥  
 जिनेन्द्रपञ्चकल्याण-श्री-रथोत्सव-सम्पदे ।  
 श्रीचारुकीर्त्ति-योगीन्द्र-मठ-रक्षण-कारणात् ॥ १० ॥  
 आहाराभय-भैषज्यशास्त्र-दानादि-सम्पदे ।  
 वेल्गुलाख्यमहाग्रामं विन्ध्य-चन्द्राद्रिभासुरं ॥ ११ ॥  
 भूदेवी-मङ्गलादर्श-कल्याण्याख्य-सरोऽन्वितं ।  
 जिनालयैस्तु ललितैर्मण्डितं गोपुरान्वितैः ॥ १२ ॥  
 स-तटाकं स-चाम्पेयं होस-हल्लिसमाह्वयं ।  
 ईशानदिकास्थितं ग्रामं शाल्याद्युत्पत्तिभासुरं ॥ १३ ॥  
 उत्तनहल्लीति विख्यातं प्रतीच्यां ककुभि स्थितं ।  
 ग्रामं कब्बालुनामानं ग्रामं-गोपाल-संकुलं ॥ १४ ॥  
 पूर्व्वं पूरनार्य्य-सन्दत्तं कुमारे नृपतौ सति ।  
 इति ग्रामान् चतुस्संख्यान् ददौ भक्त्या स्वयं मुदा ॥ १५ ॥  
 स्वस्ति श्री-दिल्लि-हेमाद्रि-सुधा-संगीत-नामसु ।  
 तथा श्वेतपुरक्षेमवेणु वेल्गुल-रूढिषु ॥ १६ ॥  
 संस्थानेषु लसत्सिद्ध-सिंह-पीठ-विभासिनां ।  
 श्रीमतां चारुकीर्त्तिनां पण्डितानां सतां वशे ॥ १७ ॥  
 शासनीकृत्य तान् ग्रामानर्पयामास सादरं ।  
 एषः श्रीकृष्ण-भूपालः पालिताखिल-मण्डलः ॥ १८ ॥

[ यह मूल सनद का मठ के गुरु-द्वारा किया हुआ केवल संस्कृत  
 भावानुवाद है । मूल शासन आगे नं० (३६४) के लेख में दिया जाता है । ]

१४२ (३६२)

## तावरेकेरे के उत्तर की ओर चट्टान पर

श्रीशकधरुष १५६५ नेय

श्रीमच्चारुसुकीर्त्ति<sup>१</sup>-पण्डित-यतिः सीभानुसंवत्सरे

मासे पुष्यचतुर्दशी-तिथिबरे कृष्णे सुपत्ते महान् ।

मध्याह्ने वर मूलभे च करणे भार्गव्यवारे ध्रुवे

योगे स्वर्ग-पुरं जगाम मतिमान् त्रैविद्य-चक्रेश्वरः ॥ श्रीः ॥

१४३ (३७७)

## नगर से पूर्व की ओर बाणावर बसवय्य के खेत में एक शिला पर

( लगभग शक सं १०४२ )

स्वस्ति श्रीमत्तलकाडु-गोण्ड-भुज-बल-वीरगङ्ग - पोयसल-  
देवरुं हिरिय-दण्डनायकरुं राज्ये उत्तरोत्तरवागे श्री-गोम्मटेश्वर-  
देवरबलद-दसेय हल्लव कण्डु चल्लदिं चलदङ्क-राव हेडे-जीय गवरे-  
सेट्टिय मंग बेट्टि-सेट्टिय रावबेय मंग मच्चि-सेट्टि.....जविक  
सेट्टि-मक्कलु मडिसेट्टि मच्चिसेट्टि मदलाद यिवरु तले-हारे उड  
कित.....वत्सरद चैत्र.....दं.....

[ इस लेख में भुजबल वीरगङ्गपोयसदेव के राज्य में चलदङ्गराव हेडेजीव आदि के कुछ व्रत पालने का उल्लेख है । लेख का अन्तिम भाग घिस गया है इससे पूरा भाव स्पष्ट नहीं हो सका । ]

## श्रवण बेलगोल के आसपास

१४४ ( ३८४ )

जिननाथपुर में अरेगल बस्ति के पूर्व की ओर

( लगभग शक सं० १०५७ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादासोघ-ज्ञाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्य-नाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तु जिन-शासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधान-हेतवे ।

अन्य-वादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने-पटीयसे ॥२॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ-महाराजाधिराज  
परमेश्वर-परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं  
श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमान  
माचन्द्रार्ककर्तारम्बरं सल्लुत्तमिरे ॥

विनयादित्य-नृपालं

जन-विनुतं पोयसलाम्बरान्वयदिनपं ।

मनु-मार्गनेनिसि नेगल्दं

वन-निधि-परिवृत-समस्त-धात्री-तलदोल ॥ ३ ॥

तत्पुत्र ॥

एरेयङ्ग-पोयसलं त-

त्तरेयट्टि विरोधि-भूपरं धुरदेडेयोल् ।

तरिसन्दु गेल्लु वोर-

कैरेवट्टागिटु सुखदे राज्यं गेयदं ॥ ४ ॥

आनेगल्दु एरग नृपालन

सूनु वृहद्वैरि-मर्दनं सकल-धरि-

त्री-नाथनर्थि-जनता-

कानीनं धरेगे नेगल्दु बल्लालनृप ॥ ५ ॥

आतन तम्म ॥

कोङ्गलुं मलेयेलुम-

नङ्गय् गलवडिसि लोकिगुण्डिवरं दे-

शङ्गलनिल्कुलि-गोण्ड नृ-

सिङ्गं श्री-विष्णुवर्द्धनोर्वीपालं ॥ ६ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वरं द्वारावती  
पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बर-द्युमणि सम्यक्त-चूडामणि  
मलपरोत्तगण्ड राज-मार्त्तण्ड तलकाडु-कोङ्गु-नङ्गलिकोय-  
तूर्-त्तेरेयूर-उच्चङ्गि-तलेयूपोम्बुच्चमेन्दिवुमादलागे पलवु-  
दुर्गागलं कोण्डु गङ्गवाडि ताम्बत्तरुसासिरमं प्रतिपालिसि  
सुखदि राज्यं गेययुत्तिरे तत्पाद-पद्मोपजीविगल् ॥

वृत्त ॥ जिनधर्माग्रणि-नागवर्म्मन सुतं श्रीमारमय्यं जग-  
द्विनतुं तत्सुतनरचि-राजनमलं कौण्डिन्य-सद्गोत्रना-  
तनचित्तोत्सवे पोचिकव्वे अवर्गत्तुत्साहदि पुट्टिदूर्  
...ठवम्म-चमूपनेम्बनधटं श्रीगङ्गण्डाधिपं ॥ ७ ॥



अन्तु ॥

अदटापुन्नति सत्यमाण्मु चलमायुं सौचमौदार्यम-  
ण्मु दिटं तन्नले निन्दुवेम्ब गुणसंघातङ्गलं तालिदलो-  
कद वन्दि-प्रकरङ्गलं तण्णिपि कः केनार्थियेन्दिदत्तु चा-  
गद पेम्पिन्दमे गङ्ग-राजनेसेदं विश्वम्भराभागदोल् ॥ ८ ॥

तलकाडं सेलदन्ते कोङ्गनोलकोण्डाबं...यं तूल्दिदो-  
र्व्वलदिं चोङ्गरियं कललिच नरसिङ्गन्तकावासमं ।

निलयं माडि निमिच्चिर्व विष्णु-नृपनान्यामार्गादिं गङ्गम-  
ण्डलमं कोण्डनराति-यूथ-मृगसिङ्गं गङ्ग-दण्डाधिपं ॥ ९ ॥

आतन-पिरियण ॥

व्यापित-दिग्बलय-यश-  
श्री-पतिवितरण-विनोद-पति धनपति वि-  
द्यापतियेनिप्प बम्म-च-  
मूपति जिनपतिपदाब्जभृङ्गननिन्द्यं ॥ १० ॥

आतन सति ॥

परम-श्री-जिननाम्  
गुरुगल्लु श्री-भानुकीर्त्तिदेवर् लक्ष्मी-  
करनेनिप्प बम्म-देवने  
पुरुषनेनलु बागणब्बे पडेदले जसमं ॥

कन्द ॥ आसतिगे पुण्यवतिगे वि-

लासद कणि सकल-भव्य-सेव्यं गवर्भा-

वासदिनुदयिसिदं ससि-

भासुरतर-कीर्त्ति'येचदण्डाधीश' ॥१२॥

वृत्त ॥ माडिसिदं जिनेन्द्रभवनङ्गलना कोपणादि-तीर्थदल

रूढियिनेलो-वेत्तेसेव बेलगोलदल बहु-चित्र-भित्तिथिं ।

नोडिदरं मनङ्गोलिपुवेम्बिनमेच-चमूपनर्थि कै-

गूडे धरित्रि कोण्डु कोनेदाडे जसमल्लिदाडे लीलेथिं ॥१३॥

अन्तु दान-विनोदनुं जिनधर्माभ्युदय-प्रमोदनुमागि पलकाल

सुखदलिदुर् बलिक सन्यासन-विधिथिं शरीरमं बिट्टु सुर-लोक

निवासियादनित्त ॥

वृत्त ॥ मलवत्युद्धत-देश-कण्ठकरनाटन्दोत्तिवेङ्कोण्डुदो-

व्वर्लदिं कोङ्गरनोत्ति वैरि-नृपरं बेन्नट्टि तूल्दोविसुत्तन्य-मं-

डलमं तत्पतिगेये माडि जगदोलु बीरकै तानिन्तुगु-

न्दलेयादं कलि गङ्गनप्रतनयं श्री वोप्य-दण्डाधिपं ॥१४॥

खस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति

महाप्रचण्डदण्डनायक वैरिभय-दायक द्रोह-घरट्ट संग्रामजत्तलट्ट ।

हयवत्सराजं । कान्ता-मनोज । गोत्र-पवित्र । बुधजन-मित्रं ।

श्रीमतु वोप्यदेव-दण्डनायकं । तम्मण्णनप्प एचि-राज दण्ड-

नायकङ्गे परोच्च-विनयं निसिधिगेयं निलिसि आतन माडिसिद

बसदिगे । खण्ड-फुटितक्काहार-दानकं । गङ्गसमुद्र-दल १०

खण्डुग गदेयुं हूविन-तोडमुं बसदिय मूडण किरु-गेरेयुं । बेक्कन-

केरेय बेर्हलेयुं तम्म गुरुगलप्प श्रीसूलसङ्घद देसिग-गणद पुस्तक

गच्छद श्रोमत्तु शुभचन्द्रसिद्धान्त-देवर-शिष्यरूप माध (व)  
चन्द्र देवर्गे धारा-पूर्वकं माडिकोट्ट दत्ति ॥

श्लोक—स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुन्धरां ।

षष्टिर्वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥१५॥

सीता—कान्तिगे रुक्मिणि—

गातत-येशनेविराजनर्द्धाङ्गनेये-

मातोदेरे सरि समं तोणे

भूतलदोलग् एचिकब्बे क... रूपि ॥ १६ ॥

दानदोलभिमानदोली-

मानिनिगेण्यिल्ल सतिय.....

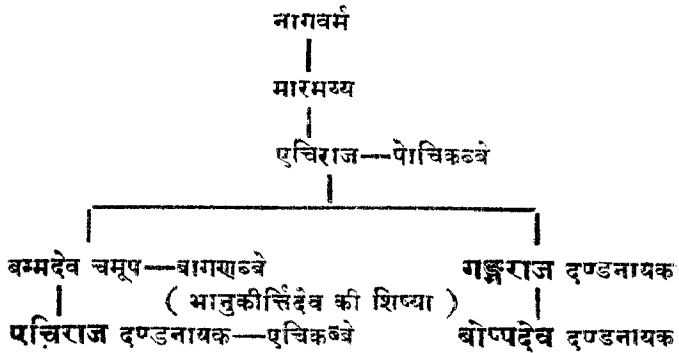
केनार्थियेन्दु कुडुवले

दानमन् एचब्बेयत्तिमब्बरसियबोल् ॥ १७ ॥

इन्तु परम...राज-दण्डनायनदण्डनायकिति श्रीमत्तु शुभ-  
चन्द्र सिद्धान्त-देवर गुडि एचिकब्बेयुं तम्मत्ते बागणब्बेयुं  
शासनमं निलिसि महापूजेयं माडि महादानं गेट्टु तेङ्गिन-तो-  
ण्टवं बिहर् मङ्गल श्री ॥

[ इस लेख में होयमलवंशी नरेश विष्णुवर्द्धन और उनके दण्ड-  
नायक प्रसिद्ध गङ्गराज के वंशों का परिचय है । गङ्गराज के ज्येष्ठ भ्राता  
वर्मदेव के पुत्र एच दण्डनायक ने कोपड़, बेलगोल आदि स्थानों में अनेक  
जिनमन्दिर निर्माण कराये और अन्त में संन्यासविधि से प्राणोत्सर्ग  
किया । गङ्गराज के पुत्र वोप्पदेव दण्डनायक ने अपने भ्राता एचिराज  
की निषद्या निर्माण कराई तथा उनकी निर्माण कराई हुई वस्तियों के

लिये गङ्ग समुद्र की कुछ भूमि का दान शुभचन्द्र सिद्धान्त देव के शिष्य माधवचन्द्र देव को किया। एचिराज की भार्या एचिकब्बे व उसकी ध्वश्र वागणब्बे ने यह लेख लिखाया। एचिकब्बे शुभचन्द्र देव की शिष्या थी। लेख में गङ्गराज की वंशावली इस प्रकार पाई जाती है—





# श्रवण बेल्गोल और आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख



## अवशिष्ट शिलालेखों का निम्न प्रकार समय अनुमान किया जाता है

शक संवत् की छठवीं शताब्दि	{ १५२, १८६.
शक संवत् की सातवीं शताब्दि	{ १५३, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६०, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, २००, २०२, २०३, २०५, २०६, २०७, २०८, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१७, २१८, २१९, २२०, २२४।
शक संवत् की आठवीं शताब्दि	{ १४७, १४९, १५४, १५५, १७५, १६१, २५३, २५६,
शक संवत् की नवमी शताब्दि	{ १४५, १४६, १५६, १७१, १८०, १८५, १८६, २०१, २०६, २२१, २२७, २३५, २३६, २३७, २५५, २७०, २८२, २८७, २९४, २९७, २९८, ३०७, ३१५, ४०६, ४१०।



शक संवत् की  
दसवीं शताब्दि

१४८, १५०, १५१, १६३, १६५, १६६, १६७,  
१७२, १७३, १७४, १७७, १७८, १८३, २१६,  
२२३, २२८, २३६, २५४, २५७, २५८, २५९,  
२६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६६, २७२,  
२७३, २७४, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१,  
२८५, २८६, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२,  
२९३, २९५, २९६, २९६, ३००, ३०१, ३०२,  
३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०८, ३०९, ३१०,  
३११, ३१२, ३१३, ३१४, ४६६.

शक संवत् की  
ग्यारहवीं शताब्दि

१६८, १६९, १७०, १७६, १८१, १८२, १८४,  
१८८, १९६, २०४, २२२, २२४, २२५, २३०,  
२३१, २४०, २४१, २४२, २४६, २६५, २६६,  
२६७, २७१, २७५, २७६, ३१६, ३५१, ३६०,  
३६८, ३६९, ४४५, ४४६, ४४७, ४५४, ४५६,  
४६०, ४७३, ४७८, ४८८, ४८९,

शक संवत् की  
बारहवीं शताब्दि

१७६, १८७, २२६, २३२, २३३, २३४, २३८,  
२४३, २४४, २४५, २४६, २५१, २८३, ३१७,  
३१८, ३१९, ३२०, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६,  
३२७, ३२८, ३६१, ४०१, ४०८, ४११, ४२६,  
४३१, ४६१, ४६६, ४७१, ४७५, ४७६, ४८७,  
४९० !

शक संवत् की  
तेरहवीं शताब्दि { २४८, २५०, २५२, २६८, ३३०, ४०६, ४१३,  
४१४, ४१८, ४२१, ४३०, ४३२, ४४२, ४४३,  
४६२, ४६७, ४७७, ४८१, ४८५ ।

शक संवत् की  
चौदहवीं शताब्दि { २४७, ३५६, ३५७, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४,  
४२०, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२८, ४२९ ।

शक संवत् की  
पन्द्रहवीं शताब्दि { ३२१, ३२२, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ४०२,  
४८३, ४८४ ।

शक संवत् की  
सोलहवीं शताब्दि { ३३४, ३३५, ३७०, ३७५, ३७६, ३७७, ३८१,  
३८८, ३८९, ४०२, ४०३, ४०४, ४१२, ४१६,  
४१९, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३,  
४६३, ४६४, ४६५, ४८२,

शक संवत् की  
सत्तरहवीं शताब्दि { ३४५, ३४८, ३६७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१,  
३८४, ३८५, ४२७, ४४४ ।

शक संवत् की  
अठारहवीं शताब्दि { ४१७, ४३८, ४३९, ४४० ।

## चन्द्रगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

### पार्श्वनाथवस्ति के दक्षिण की ओर चट्टान पर

१४५ ( ३ ) श्रीदेवर पद । वमनि....

१४६ ( ४ ) मल्लिसेन भटारर गुडुं चरेङ्गय्यं तीर्थमंबन्दिदिदं ।

१४७ ( १० ) श्रीधरन्

१४८ ( ४०८ ) नमोऽस्तु १४९ ( ४०९ ) श्रीरत्त

१५० ( ४१० ) सिन्दय्य १५१ ( ४११ ).....गिङ्ग...

कुन्द गङ्गार वण्ट...गद नण्ट

१५२ ( ११ )

.....क्षिणान्पतिः ।

आचार्य्य.....श्रीमान्शिष्यानेक-परिग्रहः ॥ १ ॥

.....विलासस्य निर्व्वाणा.....जनि

चलाचलविशेषस्य गुणैर्देवी च कम्पिता ॥ २ ॥

दीपैर्दू पैश्च गन्धैश्च साकरोदधिम् ..सान् ।

तत्र दिण्डिकराजोऽपि साक्षी सन्निहितोऽभवत् ॥ ३ ॥

परित्यज्य गणं सर्व्वं चातुर्व्वर्ण्य-विशेषितं ।

आहारादिशरीरं च कटवप्र-गिराविह ॥ ४ ॥

आचार्य्याऽरिष्टनेमीशः शुक्लद्वयानोरु वारणं

समारुह्य गतस्सिद्धिं सिद्ध-विद्याधराच्चितः ॥ ५ ॥

१५३ ( १३ )

राग-द्वेष-तमो-माल-व्यपगतशुद्धात्म-संयोजकृ  
**वेगूरा** परम-प्रभाव-रिषियर्स्सर्वज्ञ-भट्टारकर्  
 ...गादेव.....न...डित...न्तव्यु.....लप्रदेशल्  
 श्री कीर्णमल-पुष्प.....र, स्वर्गाग्रमानेरिदार्

[ रागद्वेष रूपी अन्धकार से विमुक्त, शुद्धात्म योद्धा वेगूरा वासी  
 परम-प्रभावी ऋषि, सर्वज्ञ भट्टारक.....शिखर पर.....  
 .....अमल पुष्पों से आच्छादित .....स्वर्ग के अग्रभाग  
 का आरोहण किया । ]

१५४ ( १४ ) अरिष्टनेमिदेवर् काल्यप्पु-तीर्थदोल मुक्त-  
 कालम पडेदु मु...

१५५ ( १५ ) स्वस्ति श्री महावीर...आलदुर तम्मडिगल  
 सन्यसन दिन् इ-तम्मज्जया निसिधिंगे ।

१५६ ( १६ ).....पादपमनून.....स-प्रव.....

१५७ ( १७ ) स्वस्ति श्री भण्टारक थिट्टगपानदा तम्म-  
 डिगल शिष्यर् कित्तेरे-थरा निसिधिंगे ।

१५८ ( २१ )

दक्षिण-भागदामदुरे उय्म् इनिताव...शापदे पावु मुदिदेन्  
 लक्षणवन्तर् एन्त एनलू वरग.....ग ई महा परूतदुल्  
 अक्षय-कीर्त्ति तुन्तकद वार्द्धिय मेल् अदु नोन्तु भक्तियिम्

अक्षि-मणके रम्य-सुरलोक-सुकवके भागि आ.....

पल्लवाचारि-लिकि ( खि ) तम् ।

[ दक्षिण भाग की मदुरा ( नगरी ) से आकर और शाप के कारण सर्प द्वारा सताये जाकर, परीक्षकों के विचार करते ही करते, अक्षयकीर्ति भक्तिपूर्वक इस शिखर पर व्रतों का पालन करते हुए दुःख-सागर को पार कर, रमणीक सुरलोक-सुख के भागी हुए ।

पल्लवाचारि लिखित ]

१५८ ( २२ )

श्री । बाला मेल् सिखि-मेले सर्पद महा-दन्ताप्रदुल् सल्वबाल्  
सालाम्बाल-तपोप्रदिन्तु नडदां नूरेण्टु-संवत्सरं  
कैलौय् पिन् कट वप्प शैलमडर्द् एनम्मा कलन्तूरनं  
बाले पेगोर्गिरवं समाधि-नेरेदेन्नो-तेट्टिददैर् स्सिद्धियान् ॥

[ इस लेख में कालन्तूर के किसी मुनि के कटवप्प पर एक सौ आठ वर्ष तक तप के पश्चात् समाधिमरण की सूचना है । ]

१६० ( २३ )

नम स्वस्ति ।

...दे शास्त्रविदो येन गुणदेवाख्य-सूरिणे  
कल्वाप् पर्वत-विख्याते...नम...तमाग...  
...द्वादश-तपो नुष्ठा.....  
सम्यगाराधनं कृत्वा स्वर्गालय.....

[ शास्त्रवेदी गुणदेव सूरि को नमस्कार, जिन्होंने कलवाप् पर्वत के शिखर पर द्वादश व्रत धारण कर और सम्यगाराधन का पालन कर स्वर्गलाभ किया ]

१६१ ( २७ )

श्री । मासेनर्परम-प्रभाव-रिषियर् क्लृवप्पिना वेट्टुल्ल  
श्री-सङ्गङ्गल पेल्ल सिद्ध-समयन्तप्पादे नोन्तिम्बिनिन्  
प्रासादान्तरमान्विचित्र-कनक-प्रज्वल्यदिन्मिक्कुदान्  
सासिर्व्वर-पूजे-दन्दुये अवर् स्वर्गाग्रमानेरिदार् ॥

[ इस लेख में परम ऋषि 'मासेन' के समाधि मरण की सूचना है । ]

१६२ (३६) श्री चिकुरापरविय गुरवर सिष्यर् सर्वणन्दि  
अवन् श्री वसुदेवन् ।

१६३ (३७) श्रीमद् गङ्गान्व ।

१६४ (३८) वीतरासि । १६५ (३९) श्रीचावुण्डय्य ।

१६६ (४०) श्रीकविरत्न । १६७ (४१) श्रीमद् अङ्गुबोय ।

१६८ (४२) श्रीविदेपय्य । १६९ (४३) श्रीमद् अकलङ्क  
पण्डितर् ।

१७० (४४) श्री सुव ।

१७१ (४५)...लम्बकुलान्तक बीरर वण्ड परिकरन किङ्ग ।

१७२ (४६) स्वस्ति श्री अण्णन कालेय पण्डिग कल्वप्प  
तीर्थव वन्दि...

१७३ (४७) का...य भिर्जग रायन कादगलै वन्तिलि  
देवर वन्तिसिद ।

१७४ (४६) श्री दवणन्दि बलरर गुडु आसु...बन्दु तीर्थव  
बन्दिसिद ।

१७५ (५०) अलस कुमारो महासुनि ।

१७६ (५१) श्री कण्ठय्य ।

१७७ (५२) श्रीवर्म चन्द्रगीतय्य देवर बन्दिसिद

१७८ (५३) श्री इसकय्य । १७९ (५४) श्री बिधियम्म ।

१८० (५५) श्री नागणन्दि कित्तय्य देवर बन्दिसिदर ।

१८१ (५६) स्वस्ति समधिगतपञ्चमहासब्द महासामन्त  
अग्रगण्य

१८२ (५७) मारसन्द्र केय कोट...गलवेय वीर कोट ।

१८३ (५८) मालव अमावर् ।

### शान्तीश्वर वस्ति से नैऋत की ओर

१८४ (६०) श्री परेकरमारुग-बलर-चट्ट सुल बण्टरसुल ।

१८५ (६२) स्वस्ति श्री तेयङ्गुडि.....न्दि-भटारर सिष्य  
.. गर-भटारर सिष्य क...र...मि-भटार  
अवर सिष्यर् षट्टदेवा.....सि-भटार कुमा  
...ल सिष्य न...सले मुनिर्व्वने मन्दि पमुमम्म  
निसिदिगे ।

## पार्श्वनाथ बस्ति में एक टूटे पाषाण पर

१८६ (६८) श्रीमत् बेहृदवो...न मगल् वैजब्बे...लवप्पु-  
तीर्थ्यदोलवू नेन्तु सन्यमनं ।

१८७ (७१)

## चन्द्रगुप्त बस्ति में पार्श्वनाथ स्वामी के सन्मुख एक छोटी मूर्ति के पादपीठ पर

( लगभग शक सं० ११०० )

( अग्रभाग )

श्रीमद्राजतिरीटकोटिघटित...पादपद्मद्रयो  
देवो जैन...रविन्द-दिनकृद्वाग्देवतावल्लभ ।  
...वा...त-समन्वितो यतिपति.....त्र-रत्नाकरः  
सोऽयं निर्जित...तो विजयतां श्रीभानुकीर्त्तिर्भूवि॥१॥  
श्री-बालचन्द्र मुनिपादपयाज.....  
जैनागमाम्बुनिधिर्वर्द्धन-पू.....द्रः ।  
दुग्धाम्बुराशि-हर-हा

( पृष्ठभाग )

...मलश्रितं (बहु) कैवल्यमेम्बस.....ल्पमिनिते नेर्गिरियं  
विश्वम...रिव महिमेयि वर्द्धमा...जिन-पतिगे वर्द्धमान-मुनी  
...सुर नदिय तार हा...र सुर-दन्तिय रजतगिरिय चन्द्रन



बेलिप पिरिदु वर...वर्द्धमानर परमतपोध...रकीर्ति' ...मुरुं  
जगदोलु ॥

...च्छिप्यरु ॥

तीर्थाधीश्वर-व

[ इस लेख में भानुकीर्ति, बालचन्द्रमुनि और वर्द्धमान मुनि का उल्लेख है। अधूरा होने के कारण लेख का प्रयोजन ज्ञात नहीं हो सका। ]

[ पृष्ठभाग का प्रथम पद्य पम्प रामायण आश्वास १ पद १५ से मिलता है। ]

१८८ ( ७२ )

**चन्द्रगुप्त बस्ति में पार्श्वनाथ जिनालय के  
क्षेत्रपाल के पादपीठ पर**

( लगभग शक सं० १०६७ )

.....  
...जनिष्ट.....रित्र...रखिला.....माला-शिलीमुख-वि-  
राजित-पा..... ॥ १ ॥

तच्छिष्यो गुण... त यतिश्चारित्र-चक्रेश्वरः  
तर्क-व्या...दि-शास्त्र-निपु...साहित्य-विद्या-नि...  
मिथ्या-वादि-मदान्ध-सिन्धुर-घटा-सङ्ग.....रवो  
भव्याम्भोज ( यहाँ पाषाण टूट गया है ).....॥२॥

( उसी पीठ के बायें पृष्ठ पर )

...जिने शुभकीर्त्ति-देव-विदुषा विद्वेषि-भाषा-विष-  
ज्वाला-जाङ्गलिकेन जिह्मित-मतिर्वादी वराकस्वयं ॥३॥  
घन-दर्पोन्नद्ध-बौद्ध-चित्तिधर-पवियी बन्दनी बन्दनी ब-  
न्दने सन्-नैय्यायिकोद्यत्तिमिर-तरणियी बन्दनी-बन्दनी ब-  
न्दने सन्-मीमांसकोद्यत्करि-करिरिपुयीव बन्दनी बन्दनी ब-  
न्दने पो पो वादि-पोगेन्दुलिवुदु शुभकीर्त्तीद्ध-कीर्त्ति-  
प्रघोषं ॥ ४ ॥

वितथोक्तियस्तजं पशुपति शार्ङ्गियेनिष्प मूवरुं शुभकीर्त्ति-  
व्रति-सन्निधियोलु नामोचित-चरितरे तोडईडितर-वादिग-  
ललवे ॥ ५ ॥

सिङ्गद सरमं केल्द मतङ्गजदन्तलुकलल्लदे सभेयोळु  
पोङ्गि शुभकीर्त्ति-मुनिपनोलेङ्गल नुडियल्के वादिगल्गे-  
ण्टेल्देये ।

पो...ल्वुदु वादि वृथायासं विबुधोपहासमनुमानोप-  
न्यासं निन्त्री...वासं सन्दपुदे वादि-वज्राङ्गुशेनोल् ॥६॥  
सत्सधर्मिगल् ॥

[ यह लेख टूटा हुआ है पर इसके सब पद्य अन्य शिलालेखों से पूरे किये जा सकते हैं । इसके छहों पद्य शिलालेख नं० २० (१४०) के पद्य ६, ७, ३८, ३९, ४० और ४२ के समान हैं । ]

१८६ ( ७५ )

## कत्तले वस्ति के सन्मुख चट्टान पर ।

( लगभग शक सं० ५७२ )

ममास्तूपान्व.....स कले.....गद्गुरुः ।

ख्यातो वृषभनन्दीति तपो-ज्ञानाब्धि-पारगः ॥ १ ॥

अन्तेवासी च तस्यासीदुपवास-परो गुरुः ।

विद्या-मलिल-निर्द्धूत-शेमुषीको जितेन्द्रियः ॥ २ ॥

...स...त तपो.....तपसैर्योग-प्रभावोऽस्य तु  
चन्धोऽनाहित-कामनो निरुपमः ख्यात्या स...ता...।

दृष्टा ज्ञान-विलोचनेन महता स्वायुष्यमेवं पुनः

पू.....गृहं गुरुरसौ यो...स्थित...वशः ॥ ३ ॥

.....कटवप्प्र-शैल शिखरे सन्यस्य शास्त्र क्रमात् ।

ध्यान.....दा...मणि-मुखे प्रक्षिप्य कर्मन्धनं ।

.....दिव्य-सुखं प्रशस्तक-धिया सम्प्राप्य सर्वेश्वर-

ज्ञानं...न्तमिदं किमत्र तपसा सर्वं सुखं प्राप्यते ॥ ४ ॥

१८० ( ७७ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

सिद्धम् । श्री ।

गति-चेष्टा-विरहं शुभाङ्गदे धनम्मरिट्टमान्विट्ठवल्लू

यतियं पेल्ल विधानदिन्दु तोरदे कल्लवप्पिना शैलदुल्लू

प्रथितार्थ्यपदे नान्त निस्थित-यशा स्वायुः-प्रमा...यक्  
स्थिति-देहा कमलोपमङ्ग सुभसुम् स्वर्लोकादि निश्चितम् ॥

[ इस लेख में किसी के समाधिभरण की सूचना है । ]

१८१ ( ७८ ) सहदेव माणि ।

१८२ ( ७९ )

( लगभग शक सं० ६७२ )

सुन्दरपेम्पदुप्रतपदेगिद.....वार्द्धदनिन्धमेन्दु पिन्  
बन्दनुरागविन्दु बलगंगा...ण्डु महेत्सवदेरि शैलमान् ।  
सुन्दरि सौचदार्यदेरदे...दु विमानमोडिप्पि चित्तिदिम्  
इन्द्र समानमप्य सुख.. ण्डदे...क्षणदेरिद स्वर्गवा ॥

[ सौचदार्य ( ? शुद्धमुनि ) ने आकर हर्ष से पर्वत की वन्दना की और अन्त में यहाँ ही शरीर त्याग किया । ]

१८३ ( ८० )

( लगभग शक सं० ६२२ )

महादेवन्मुनिपुङ्गवन्नदपि कलु पेंदपं  
महातवन्मरणमप्ये तनगा... कमु कण्डे...  
महागिरि म...गलेसलिसि सत्या...नविन्ती-  
महातवदेन्तु मलेमेत्वलवदु दिवं पोक्क

[ महादेव मुनिपुङ्गव ने मृत्युकाल निकट आया जान पर्वत पर तपश्चरण किया और स्वर्ग-गति प्राप्त की । ]

१८४ ( ८१ )

( लगभग शक सं० ६२२ )

बोध्यातिरेच्य-कैवल्य-बोध-प्राप्ति-महौजसे ।

ईशानाय नमो योगि-निष्ठायार् परमेष्ठिने ॥१॥

...रे कित्तर-सङ्घस्य गगनस्य महस्पतिः ।

परिपू...चारि.....ध.....वाण.....

ल्यया...

१८५ ( ८२ ) बलदेवाचार्यर पाउगमण ।

१८६ ( ८३ ) स्वस्ति श्री पद्मनन्दिमुनिप.....अतुल.....

...दनिमा कृतदेवा.....अभव...देप.....मा...

.....ल्लव .....

१८७ ( ८५ ) श्रीपुष्पणन्दिनिसिधिगे ।

१८८ ( ८६ ) .....क्र.....न तम्म.....गे ।

१८७ ( ८७ ) श्री बाट ।

२०० ( ८८ ) कनादो.....ण-वंशा...कल्वप्पिन्दुर्ग.....

२०१ ( ८९ ) श्री बम्म । २०२ ( ९० ) दल्लग पेल्लवन्पाल...

२०३ ( ९१ ) स्वस्ति कोलात्तर सङ्घदि विशोकभटारर  
निसिधिगे ।

२०४ ( ९२ ) श्रीमद् गौड देवर पाद ।

२०५ ( ९३ ) .....ब साधु-प्र...र धीरन्नत-संयता...मन्

इन्द्रनन्दि आचार्य...मे...म्म आमेह...न्तूरिदेर्प्य प्रव-

लान्तरि.....भाव्यमन्वर्पिन्...ण्डे... . हि मोहमगल्द  
इ-वल्-विषयङ्गलनात्म-वश-कूमविदु कट.....स्थिता-  
राधिता...विमु .....श्वररि..... नन.....रेन्द्र-राज्य-  
विभूति-सास्वतमेयिददान् ।

[ संयमी इन्द्रनन्दि आचार्य ने मोह विषयादि को जीतकर 'कट  
( वप्र ) पर्वत पर समाधि मरण किया । ]

२०६ ( ६६ ) स्वस्ति श्री कौलत्तर सङ्घदा देव...खन्ति-  
यन्त्रिसि...

२०७ ( ६७ ) नमिलूरा सिरिसङ्घद् आजिगणदा राज्ञी-  
मती-गन्तियार्

अमलम् नल्लद शीलदिं गुणदिना-मिकोत्तमर्मीलेदोर् ।  
नमगिन्दोलितदु एन्दु एरि गिरियान्सन्यासनं योगदोल्  
नमो चिन्तयदुसे मन्त्रमण्मरि ए स्वर्गालयं एरिदार् ॥

[ नमिलूर संघ, आजिगण की साध्वी राज्ञीमती गन्ति ने पर्वत  
पर संन्यास धारण कर स्वर्ग-गति प्राप्त की । ]

२०८ ( ६८ ) श्री स्वस्ति

तनगे मृत्यु-वरवानरिदे पेट्वाण-वंशदोन्

कालनिगेकसुदे...प्पिन राज्य वीवतिन् ।

घा...क...मोदसु...तो.....मता कच्चि नि-

धानम.....सुर...ग-गतियुल् नेले-कोण्डन् ।

[ इस लेख में पेट्वाण वंश के किसी व्यक्ति के समाधि-मरण का  
उल्लेख है ]

२०६ ( १०० ) परवतिमल ।

२१० ( १०१ ) ...मले-मेल् अच.....महा.....बोल...

२११ ( १०२ ) .....जन्नल् नविलूर् अनेकगुणदा आ-  
सङ्घ.....दु...

.....मेनस्तिलकं.....श्री...राचार्यर ।

.....भिमानमेयदे तोरदेन्दो राग-सौख्यागति

.....ददेन्दु पञ्चपददे दोषं निरासं.....

[ नविलूर् संघ के किसी आचार्य ने संन्यास धारण कर प्राणोत्सर्ग किया । ]

२१२ ( १०३ ) स्वस्ति श्रीमत् नविलूर् सङ्घद पुष्पसेना-  
चारि...य निसिधिगे ।

२१३ ( १०४ ) श्री देवाचार्य.....निसिधिगे ।

२१४ ( १०७ ) श्री

वन्दनुरागदिनेरदु ग्रन्थेगल कक्रमदरिशैल...

वन्दनु मार्गदिने तिमिरा विधिये नविलूर् सं.....

चेन्ददे बुद्धिय हारमनि...तियुं...य मावि-अब्बेगल्  
.....लिप्पि नल् मुरर सौख्यमनिम्मोडगोण्डराट्टमुम् ।

[ नविलूर् संघ के मावि अब्बे ने समाधि मरण किया । ]

२१५ ( १०६ ) श्री

मेघनन्दि मुनि तान् नमिलूर्वर सङ्घदा

.....तीर्थदि सिद्धियान्...

द.....

२१६ (११०) श्रीकण्ठय्य ।

२१७ (१११) श्री

स.....ना.....नेगर्तेयगुं सेदेशे-वडेसि दल्

मुगिव.....नोन्तुम्मेवोल...तपमं

.....नि.....पौत्र नन्दिमुनिप.....

...माय्यन.....यु.....लमालो तल इदरुल् नोन्तु

सिद्धिस्थनादम् ।

[ नन्दिमुनि ने यहाँ व्रतपाल सिद्धि प्राप्त की ]

२१८ (११२) श्री नविलूर् सङ्गदा गुणमति-अव्वेगला  
निसिधिगे ।

२१९ (१२५) अनेक शील गुणदोप्पिदारिन्तु लेक्कि सुदुम्

नेनेगेन्दोरु मुनियिन्दल् तपच्चले नोन्तु ताम्

तमगे मृत्युवरवानरिदं श्री पुर्त्तिय.....

[ अनेक शील-गुण सम्पन्न पूर्त्तिय ने मृत्यु का आगमन जान... ]

२२० (११६) ई-पूज्या...लमान्सरेति

वरदोरेल्-नूव्वर' लक्ष्यमी-



श्रीपूरान्वय गन्धवर्मनमित-श्रीसङ्गदा पुण्यदी-

सन्पौरा...निदे...रिवलघं...री-शिला-तल.....

.....मात्रेरदुप.....इ.....

[ इस लेख में श्रीसंघ, पूरान्वय के पूज्य गन्धवर्मा द्वारा इस शिला पर कुछ किये जाने का उल्लेख रहा है । ]

**कत्तले बस्ति के पीछे चट्टान पर**

२२१ (४१२) चन्दय्य ।

**चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दक्षिण की शिला पर**

२२२ (११६) श्रीमत् लक्खण देवर पाद ।

**चामुण्डराय बस्ति के द्वारे के दोनों बाजू**

२२३ (१२२) श्री चामुण्डराज माडिसिदं

**चामुण्डराय बस्ति के द्वारे से बायीं**

**ओर शिला पर**

२२४ (१२३) (नागरी अक्षरों में) सान्तणन्दि देवर पाद

२२५ (१२४) " श्रीमत्तुचन्द्रकीर्ति देवर  
पाद ।

**तेरिन बस्ति के बायीं ओर एक स्तम्भ पर**

२२६ (१३५) स्वस्ति

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

## तेरिन बस्ति के नवरङ्ग में एक टूटे पाषाण पर

२२७ ( १३६ ) त.....ति कल्बप्पिनस्सि । मलद  
कुमारणन्दिभटारर सिषित्तियर् सायिब्बे-कन्तियर.....  
वप्पिदिगल् ।

( एक बाजू में ) विल.....स...सर्व्व.....

## तेरिन बस्ति के सम्मुख

२२८ ( ४२६ ) ...स्वरेद बद्र...नरगेद कोल

२२९ ( १३७ )

## तेरिन बस्ति के सम्मुख 'तेरु' के उत्तर मुख के ऊपरी भाग पर

( शक सं० १०३६ )

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाघ-नाशिने ।

कु-तीर्त्थ-ध्वान्त-सङ्घात-प्रभिन्न-घन-भानवे ॥ १ ॥

सक वर्ष सायिरदिं

प्रकटमेनल्मूवतोम्भतुं नडेयुतिरल्लु

सुकरमेने हेमलम्बियोल्लु

अकलङ्कद जेष्ट-सुद्ध-गुरु-तेरसियोल्लु ॥ २ ॥

वृत्त ॥

धरणी-पालकनप्प पोयसलन राज-श्रेष्ठिगल्तम्भुति-

व्वरेनल् पोयसल-सेट्टियुं गुण-गणाम्भोरासियेम्बोन्दु सु-

न्दर-गम्भीरद नेमि-से [ट्टि] युमिव श्रोजैन-धर्मके तायु-  
गरेगल् तामेने सन्द पेम्पसदलम्पर्वित्तु भू-भागदोल् ॥३॥

कन्द ॥

अमल-यशरमल-गुण-गण-  
रमलिन-जिन-शासन-प्रदीप करेने पे-  
म्पमर्दिरे पोयसल-सेट्टियु-  
ममेय-गुणि नेमि-सेट्टियुं सुखदिनिरलु ॥ ४ ॥  
अवर जननियरेनल्की-  
भुवनतलं पोगले माचिकब्बेयुमुद्यद्-  
विविध-गुणि शान्तिकब्बेयु-  
मवर्गालु जिन-जननियन्नरुबीतलदोल् ॥ ५ ॥

( उसी 'तेरु' के पश्चिम मुख के ऊपरी भाग पर )

जिन-गृहमं मनो-मुददे माडिसि मन्दरमं विनिर्मिसि-  
ईनुपम-भानुकीर्त्ति-मुनि-से दिव्य-पदाब्ज-मूलदोल् ।  
मनमोसेदिर्व्वरुं परम-दीक्षेयनोप्पिरे ताल्दिदज्जग-  
ज्जन-तति कीर्त्तिसल्के मरु-देवियु [ मिम् ] बिन  
शान्तिकब्बेयुं ॥ ६ ॥

श्री मूलसङ्गदोल् म-  
त्ता-महिमोन्नतमेनिप्प देसिग-गणदोल्  
तामिर्व्वरुमखिल-गुणो-  
हामेयरेने नेगर्हरिन्तु नोन्तरुमोलरे ॥ ७ ॥

जिन-पतिगे पूजेयं स-  
 न्मुनि-पतिगलुगन्न-दानमं भक्तियोलि-  
 म्बिने पोय्सल-सेट्टियुमोल्-  
 पिन कणियेने नेमि-सेट्टियुं माडिसिदर् ॥

[ पोय्सल नरेश के प्रसिद्ध सेटी पोय्सलसेट्टि और नेमिसेट्टि की माताओं—माचिकब्बे और शान्तिकब्बे—ने जिनमन्दिर और नन्दीश्वर निर्माण कराकर भानुकीर्त्ति मुनि से दीक्षा ली । उक्त सेट्टियों ने भक्ति-पूर्वक जिन-पूजन किया और दान दिये । ]

**गन्धवारण बस्ति के समीप एक टूटे पाषाण पर**

२३० ( १४४ ) नमस्सिद्धेभ्यः । शासनं जिनशासन  
 .....भ-चन्द्र

**गन्धवारण बस्ति की सीढ़ियों के पास**

२३१ ( ४२८ ) श्रीमत्तु रविचन्द्र देवर पाद

**इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के मार्ग पर**

२३२ ( १४६ ) नेमगन पाद ।

२३३ ( १४७ ) श्रीसिवगय्य ।

२३४ ( १४८ ) श्री कलययन् ।

२३५ ( १५० )

**इरुवेब्रह्मदेवमन्दिर के द्वार की दक्षिण बाजू पर ।**

ने सेवल्कुन्द गुबु...ट्टिसि पट्टम' गुलिय...सिगेयिले सत्ते गङ्ग-

राज्य.....नेमदे मन्त्रि नरसिङ्ग...तङ्गलियं विशेषदिं ॥

एरेगङ्ग-महामात्यं

...रेदं नत-गङ्ग-महिगे सफल-मतेयिं

गुलिपालनातनलियं

नेरे नेगल्दं नागवर्म्मनवनीतलदोल् ॥ १ ॥

आतन पुत्रनब्धि-वृत्त-धातृयेलितने रामदेव...न

ईतने वत्सराजनिलेगीतने तां भगदत्तनागिविल्यातयसं

तगुल्द कु...मं तोरेदुन्नेरे नेन्तुमेतु

( शेष भाग टूट गया है )

[ गङ्गराज्य के मन्त्री नरसिंह के जामाता । एरेगङ्ग के प्रधान मन्त्री ।—.....जामाता नागवर्म के पुत्र ने—जो रामदेव, वत्सराज व भगदत्त के समान जगत्प्रसिद्ध थे—वैराग्य धारण कर.....]

### उसी द्वार की बायीं बाजू पर

२३६ ( १५१ ).....प्पिडिदुल्ल.....मारदो.....

...र्द्धदि...ट्टगचेल आकं जेगदि.....विमा...माडिसिद...

### उसी मन्दिर के सन्मुख चट्टान पर

२३७ ( १५२ ) चगभच्छणचक्रवर्त्ति गोगिय साव-  
नत्य.....र

२३८ ( १५३ ) ( नागरी अक्षरों में ) चन्द्रकीर्त्ति ।

२३९ ( १५४ ) श्रीमतु राचमल्ल देवर जङ्गिन सेनबोव  
सुवकरय्य वन्दिसिद

## काञ्चिन दोणे के आस-पास

२४० ( १५६ ).....मुडिपिदरवर गुड्डि सायिब्बे  
निसिदल पोल्लुब्बेकान्तियर्गे.....गे ।

२४१ ( १५७ ) श्रीमतु गण्डविसिद्धान्तदेवर गुड्डं  
श्रीधर वोज ।

२४२ ( १६० )

श्रीमत्परमगम्भीर स्याद्वादादामोघलाञ्छनं ।  
जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥  
जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाथिने ।  
नयप्रमाणवाग्रश्मिध्वस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ २ ॥  
परमश्रीजिनधर्मनिर्मल्यशं भव्याब्जिनीभास्करं  
गुरुपादाम्बुजवृत्तनुद्धचरितं विप्रो.....मं मेरुभू-  
धरधैर्यं गुणरत्नवाद्धिं विलसत्सम्यक्करत्नाकरं  
परमोत्साहदे रा.....म्बिलाभागदोलु ॥ ३ ॥

आ-पु.....माण-गुणगले

२४३ ( १६१ ) श्रीधनकीर्त्तिदेवर मानस्तम्भद कम्भ ।

२४४ ( १६२ ) मानभ आनन्द-संवच्छदल्लि कट्टि-  
सिद दोण्यु ।

२४५ ( १६३ ) तम्मय्यङ्गे परोच्चविनयनिशिधि श्रीध-  
रङ्गे परोच्च-विनय तम्मवेगे परोच्च-  
विनयनिशिदि ।

२४६ ( १६४ ).....दलि क.....गो.....  
गलं गङ्ग...निसिदिगेय निरिसिदन् ॥  
.....द.....गमदे.....गलिय...  
सगि.....

**भद्रबाहु गुफा के आग्नेय कोन पर**

२४७ ( १६८ ) श्रीमतु लक्ष्मीसेन भट्टारकदेवर शिष्यरु  
मल्लिसेन-देवर निसिधि ।

**चन्द्रगिरि की चोटी पर चरण-चिह्न के नीचे**

२४८ ( १६९ ) श्री भद्रबाहुभलिस्वामिय पाद ।

**चन्द्रगिरि के मार्ग पर चरण-चिह्न के नीचे**

२४९ ( १७१ ) [ तामिल अक्षरों में ]

कोदइ-शङ्करु मलयशारगलिङ्गु निन्ऱं  
कलनिककु मेर्कु निन् पुलिककु निरै ।

**तोरनगम्ब के बायव्य में जिन-मूर्ति के पास**

२५० ( १७२ ) साम.....देवर.....

**चामुण्डराय शिला पर मूर्तियों के नीचे**

२५१ ( १७३ ) श्रीकनकनन्दि देवर पसि देवर मलि-  
देवर ।

## चन्द्रगिरि की सीढ़ियों के बाईं ओर

२५२ ( १७४ ) श्री नरवर जिनालय करे ।

२५३ ( ४८१ ) श्री रणधीर

## चन्द्रनाथ बस्ति के आस-पास

२५४ ( ४१३ ) .....चामुण्डय्य

२५५ ( ४१३ ) सेट्टपय्य

२५६ ( ४१५ ) सिवमारन बसदि ।

२५७ ( ४१६ ) बसह

## सुपार्श्वनाथ बस्ति के सन्मुख

२५८ ( ४१७ ) श्री वैजय्य २५९ ( ४१८ ) श्री जक्कय्य

२६० ( ४१९ ) श्री कडुग

२६१ ( ४२० ) .....चनमा ।

## चामुण्डराय बस्ति के दक्षिण की ओर

२६२ ( ४२१ ) महामण्ड.....श्व.....

२६३ ( ४२२ ) श्री बास

२६४ ( ४२३ ) बसवय्य

२६५ ( ४२४ ) ओमर.....

२६६ ( ४२५ ) नरणय्य

२६७ ( ४२६ ) .....रसप वम.....य निषिधिगे



### इरुवेब्रह्मदेव मन्दिर के सन्मुख

- २६८ ( ४३१ ) वबोजनु २६९ ( ४३२ ) मेलपय्य  
 २७० ( ४३३ ) श्री पृथुव  
 २७१ ( ४३४ ) चन्द्रादितं ( चरणचिह्न )  
 २७२ ( ४३५ ) नागवर्म्मं बरंदं  
 २७३ ( ४३६ ) ...निगरजेयण तंशवत्रगण्ड  
 २७४ ( ४३७ ) पुलियणन २७५ ( ४३८ ) सौलय्य  
 २७६ ( ४३९ ) कैसवय्य २७७ ( ४४० ) नमोऽस्तु  
 २७८ ( ४४१ ) श्री ऐचय्यं विरोधिनिष्ठुरं  
 २७९ ( ४४२ ) बास

### एरडुकट्टे बस्ति के पूर्व में

- २८० ( ४२७ ) कगूत्तर

### शान्तीश्वर बस्ति के पीछे

- २८१ ( ४३० ) श्रीमत् कम्मरचन्द आचिरग

### काञ्चिनदोणे के पास

- २८२ ( ४४३ ) मुरु कल्लं कदम्ब तरिसि.....

### परकोटे के पूर्वी द्वारे के पास

- २८३ ( ४४४ ) जिनन दोणे

### लक्किदोणे की पश्चिमी शिलापर

- २८४ ( ४४५ ) श्री जिन मार्गान्नीतिसम्पन्नन्सर्पचूडामणि ।

- २८५ ( ४४६ ) श्री बिहरय  
 २८६ ( ४४७ ) श्रीमद् अकचेयं  
 २८७ ( ४४८ ) श्री परवेण्डरणन ईश्वरय  
 २८८ ( ४४९ ) श्री कविरत्न  
 २८९ ( ४५० ) श्री मचय २९० ( ४५१ ) श्री चनपौस  
 २९१ ( ४५२ ) श्री नागति आल्दन दण्डे  
 २९२ ( ४५३ ) श्री बासनणन न दण्डे  
 २९३ ( ४५४ ) श्री राजन चट्ट  
 २९४ ( ४५५ ) श्री बडवर बण्ट'  
 २९५ ( ४५६ ) श्री नागवर्म  
 २९६ ( ४५७ ) श्री बत्सराज बालादित्यं  
 २९७ ( ४५८ ) श्रीमत् मले गोल्लद अरिट्टनेमि पण्डित्  
 पर-समय-ध्वंसक ।

- २९८ ( ४५९ ) श्री बडवर बण्ट'  
 २९९ ( ४६० ) श्री नागय'  
 ३०० ( ४६१ ) श्री देचय ३०१ ( ४६२ ) श्री सिन्दय  
 ३०२ ( ४६३ ) श्री गोवणया बियल-चतुर्मुकं  
 ३०३ ( ४६४ ) श्री...गिवर्म बावसि मला...ति मार्त्तण्डं

३०४ ( ४६५ )

श्री मलधारिदेवरयनप्प श्री नयनन्दिविमुक्तर गुडु'  
 मधुवय्यदेवर' वन्दिसिद् ॥

विधु-विधुधर-हास-पयो-

म्बुधि-फेन-वियच्चराचलोपम-यशन-

भ्यधिकतर-भक्तियिन्द'

मधुवं बन्दिल्लि देवरं बन्दिसिदं ॥

[ मलधारिदेव के पिता नयनन्दि के शिष्य मधुवय्य ने देववन्दना की । ]

३०५ ( ४६६ ) कणनव्वरसिय तम्म चावय्यनुं दम्मडय्यनुं  
नागवर्म्मनुं बन्दिल्लि देवरं बन्दिसिदरु ॥

३०६ ( ४६७ ) श्री सन्द बैल्लोलदले निन्दु...डने विट्टु  
अन्दमारय्य मनदल् अगल देवरेम्बरं  
काण्व बगेयिन्द' । श्री पेग्गेडे रेतय्यन वेदे  
सङ्कय्य ।

३०७ ( ४६८ ) श्रीमत् एरेयप गामुण्डनु मद्दय्यनु बन्दिल्लि  
व्रतकोण्डर

३०८ ( ४६९ ) श्री पुलिकलय्य

३०९ ( ४७० ) श्री काञ्चय्य

३१० ( ४७१ ) श्रीमन् एनगं क्रियद देव वसद

३११ ( ४७२ ) श्री मारसिङ्गय्य ३१२ ( ४७३ ) कत्तय्य

३१३ ( ४७४ ) पुलिचोरय्यं महध्वजदोज...मण्णि-वितान-  
दोज तेज'

३१४ ( ४७५ ) श्री कोपण तीर्थद

३१५ ( ४८२ ) सासिर गद्याण

## विन्ध्यगिरि पर्वत के अवशिष्ट लेख

३१६ ( १८१ )

**गोम्मटेश्वर के बाये चरण के समीप**

श्री-बिटि-देवन पुत्र प्रताप-नारसिंह-देवन कय्यल्ल  
महा-प्रधान हिरिय-भण्डारि हुल्लमय्य गोमट-देवर पा.....  
.....वरवरु,.....दानक्कं सवणेरं बिडिसि कोट्टर् ।

[ महामन्त्री हुल्लमय्य ने बिटिदेव के पुत्र नारसिंहदेव से (गाँव)  
प्राप्त कर गोम्मटदेव और दान के हेतु अर्पण किये । ]

३१७ ( १८७ ) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ  
कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-  
चक्रवर्त्तिगल गुडु बसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१८ ( १८८ ) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ  
कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-  
चक्रवर्त्तिगल गुडु बसविसेट्टि माडिसिदं ॥

३१९ ( १८९ ) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ  
कोण्डकुन्दान्वयद श्रीनयकीर्त्ति  
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल गुडु बल्लेय[द]  
ण्डना [य] कं माडिसिदं ॥

३२० ( १९० ) श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ  
कोण्डकुन्दान्वयद श्री-नयकीर्त्ति

सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल गुडु बल्लेय  
दण्डनायकं माडिसिदं ॥

३२१ ( १६१ ) दुर्मुखि संवत्सरद पुष्यमासद  
शुद्ध विदिगे मङ्गलवार  
कोपणपुरद... .य-सेट्टि गुम्मतसेट्टि  
दनद.....वादर.....

३२२ ( १६२ ) श्रोसंवत् १५४६ वर्ष जेष्ठ सुदि ३ रवि  
[ नागरी लिपि में ] वासरि गोम्मत स्वामी की जात्रा कियो  
गोमत बहुपालै प्रजौसवालै कदिकबंस  
ब्रमचारी पुरस्थाने पुरी ब्रात्रुपुत्रसम...

३२३ ( १६३ ) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्ति गल-  
शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुडु  
अङ्किसेट्टि अभिनन्दन देवरं माडिसिदं ॥

३२४ ( १६४ ) श्रीमूलसङ्घ देसियगण पुस्तकगच्छ  
कोण्डकुन्दान्वयद श्री-नयकीर्त्ति  
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगलगुडु कम्मटद रामि-  
सेट्टि माडिसिद ॥

३२५ ( १६५ ) श्री नयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल  
शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुडु सुङ्गद  
भानुदेव हेगडे माडिसिद अजित-  
भट्टारकरु ॥

- ३२६ ( १६६ ) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल  
गुडु बदियमसेट्टि माडिसिद सुमति  
भट्टारकरु ॥
- ३२७ ( १६७ ) श्री मूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ  
कोण्डकुन्दान्वय नयकीर्त्ति सिद्धान्त-  
चक्रवर्त्तिगल गुडु बसविसेट्टि चतुर्वि-  
शतितीर्थकर माडिसिदं ॥
- ३२८ ( १६८ ) श्रीनयकीर्त्ति सिद्धान्त चक्रवर्त्तिगल  
शिष्यरु श्रीबालचन्द्र देवर गुडुकललेय  
महदेव सेट्टि मल्लिभट्टारकरं माडिसिद ॥
- ३२९ ( १६९ ) शक वर्ष १२०२ नेय प्रमाधि संवत्सरद  
कार्तिक शुद्ध १० सोमवारदन्दु श्रीमनु-  
महा-पसायत तिरुमप्प.....धिकारि  
सम्भुदेवणन-नवर...लु मल्लणनवरु-  
श्रीगोमट .....  
.....मङ्गल महा श्री श्री ॥
- ३३० ( २०० ) सर्वधारि-संवचरद चैत्र-सुद्ध-पाड्य  
बृहवार दन्दु श्रीगोमट-देवर नित्या-  
भिषेकक्के विटेयन हलिय मेणसिन सेयि  
सेट्टिय मग मादिसेट्टि कोट्ट...द्याण  
१ पण २ हालु मान ॥

३३१ ( २०१ ) संवत् १६३५...पिमतीच-स । फ  
 [ नागरी लिपि में ] सुदीय सेनवीरमतजी श्री-जगतकरतजी  
 पदाभट्टोदराजी प्ररसटीवदव...उ...  
 मघोपदे श्री-रायसोरघजी ।

३३२ ( २०२ ) संवत् १५४८ पराभव सं. जे. सुद् ३  
 [ नागरी लिपि में ] मूलसङ्घ अगुषजे श्री-जगद् त...झाकपड  
 .....लं तडमत् मेदाराजद् सतराव्

३३३ ( २०३ ) संवत् १५४८ वरुषे चैत्र वदि १४ द  
 [ नागरी लिपि में ] ने भटारक श्री अभयचन्द्रकस्य शिष्य  
 ब्रह्मधर्मरुचि ब्रह्मगुणसागर-पं ॥  
 की का यात्रा सफल ।

३३४ ( २०४ ) गेरसोपेय अप-नायकर मग लिङ्गणानु  
 साष्टाङ्गवेरगिदनु

३३५ ( २०५ ) आमाची रकम ठऊ [ ठेऊ ]  
 [ नागरी लिपि में ] [ र ] तुमची कम घऊ [ घेऊ ]

[ ३३६ से ३५० तक के लेख नागरी अक्षरों में हैं ]

३३६ ( २०६ ) श्री गणशास्त्र नम शास्त्रो हरखचन्द्रदासजी  
 शवत् १८०० मीगशर वीदी १३ गराऊ ।

[ श्री गणेशाय नमः । साव हरखचन्द्रदासजी संवत् १८०० मगसर  
 वदि १३ गुरौ ]

३३७ (२०७) श्री गणसा अ नमः साओ कपूरचन्द  
मेतीचन्द शतीदी रा सावत १८००  
मगशरा वदी १३ गराऊ ।

[ श्रीगणेशाय नमः । साव कपूरचन्द मेतीचन्द शतीदी रा  
संवत् १८०० मगसर वदि १३ गुरौ ]

३३८ (२०८) सवत १८४२ मह सद ५ अतदस  
अगरवल दलवल पनपथय व सट भग-  
वनदस जतरक अय ।

[ संवत् १८४२ माह सुदी ५ अतदास अगरबाला दिह्रीवाला  
पनपथिया वो सेठ भगवानदास जात्रा का आये ]

३३९ (२०९) सवत १८०० पोस वद १४ मङ्गराय  
बालकीसनजी तेसुवको षण्डेलवाल  
बुधलाल गङ्गरामज करणो भोग.....

३४० (२१०) सवत १८०० मत असड सद १० सन-  
चरवर सुतष रयज बलकसनज अज-  
दतज चनरय व दनदयल अबट अज-  
दतज इक जतर इसथन पठक अगरवल  
सरवग पनपथक गयलगत अयथ

[ संवत् १८०० मिति आषाढ़ सुदि १० शनीचरवार सन्तोषरायजी  
बालकिसनजी अजीतजी चैनराय व दीनदयाल व बेटा अजीतजी एक  
जातरा स्थान पेठका अगरवाला सरावगी पानीपत का गोयल गोत्री  
आये थे ]



३४१ ( २११ ) सवत् १८०० पस वद ६ मगलवर  
वनवरलल इनदयल क बट ।

३४२ ( २१२ ) सवत् १८१२ वसह सद ११ वर मगल  
बलरम रमकसन क बट अ [ गरव ]  
ल सर [ वग क ] स रय ग [ कल ]  
गढय वसह.....इ.....र.....

[ संवत् १८१२ वैसाख सुदि ११ वार मङ्गल बलीराम रामकिसन  
का बेटा अग्रवाल का केंसोराय गोकलगढिया वैसाख..... ]

३४३ ( २१३ ) सवत् १८४३ मत मह वद ३ लष [म]  
ण-रयक बट तोइर मल नरठनवल नत-  
मल गनरम धन.....पै.....  
दज परप.....नरक सहनवल

[ संवत् १८४३ मिती माह वदि ३ लक्ष्मणराय का बेटा तोडरमल  
नरठनवाला ( ? ) [ नत ]थ[ मल गनीराम धन..... ]

३४४ ( २१४ ) सवत् १८१२ मत वसह वद ८ वर सन  
सठ रजरम रमकरसन मगत रयक बट  
गयल गत...र.....सरपल सभनथ बट  
नय.....क बट ।

३४५ ( २१५ ).....सद मगल वर नय.....  
नरयनज वहड.....रथथ.....इ  
जहतय रमदनमल कसद.....वमदय

कसद जैनदरयज.....वन.....ग  
.....रलम .....

३४६ ( २१६ ) कसवराय का बेटा सबत १८१२ वसष  
सद ११ वर मगल-वर समर-मलक बट मज-  
रम गगनय मडनगड पनपथय अग्रवल ।

३४७ ( २१७ ) समत १८०० जट सद ३ करबधक सट  
इमणपन थनय यमढ.....र.....  
र...लसराय...रयज इसरमज लसनय  
हुलसरय बलकदस सरवग अग्रवल  
पनपथ गरगगत बनय सननय ।

३४८ ( २१८ ) उदसग वगवल रतत.... रजप.....  
प वल ।

३४९ ( २१९ ) सबत १८१२ वसह सद ८ नवलरय  
सकरदसक बट अयथ ।

३५० ( २२० ) सबत १८१२ मत वसष सद ८ सनच-  
रक दन सतषरयः मगनरमक बट जइकर-  
नक पत सरवग

३५१ ( २२१ )

अष्ट-दिक्पाल मण्डप की छत के  
मध्य भाग में गोलाकार

( उत्तर ) अरसू-आदित्यङ्गवाचाम्बिके गवोलविनि

पुट्टिदर पम्पराजं हरिदेवं मन्त्रि-यूथाग्रणि  
गुणि बल-

( पूर्व ) देवण्णनेन्दन्तिवम्मूर्वरुमुर्वी-ख्यात-कण्णाटिक  
कुल-तिलकम्मर्माचि-राजङ्गे मावन्दिररात्यु  
च्चण्ड-शक्तर-

( दक्षिण ) -जिनपति-पद-भक्तर्महाधारयुक्तर ॥

सकल-सचिव-नाथः साधिताराति-यूथः ।

परिहृत-पर-दारो

( पश्चिम ) .....भारती-कण्ठ-हारः ।

विदित-विशद-कीर्त्तिर्निर्वश्रुतोदार-मूर्त्ति-

स्स जयतु बलदेवः श्री जिनेन्द्राङ्घ्रि-सेवः ॥

[ अरसादित्य (व नृप आदित्य) और आचाम्बिके को सुख देने-  
वाले तीन पुत्र उत्पन्न हुए—पम्पराज, हरिदेव और मन्त्रि-समूह में  
अग्रगण्य, गुणी बलदेव । ये लोक-प्रसिद्ध कण्णाटिक कुल के तिलक,  
माचिराज के पितृव्य, शत्रुओं के लिए प्रचण्ड-शक्ति, जिन-पद-भक्त  
महा साहसी थे । समस्त मन्त्रियों के नाथ, शत्रुओं को वश करनेवाले,  
परस्त्री-त्यागी, सरस्वती देवी के कण्ठहार, विशुद्ध कीर्त्ति, प्रसिद्ध और  
उदार-मूर्त्ति जिनेन्द्र-पद-सेवी बलदेव जयवान् हो । ]

३५२ ( २२२ ) कालायुक्त संवत्सरद माघ व १२ लु

गुम्मि सेट्टि मग.....सेट्टि

दर्शनव् आदनु ॥

कालायुक्त संवत्सरद माघ व १२...पुट्टण

मग चिकणननु दर्शनव् आदरु ॥

३५३ ( २२६ ) .....क-संवत्सर आवण सु ५...

... ..

... ..

सि.....पाल.....आ-ग्रामदल्लि ना...

कियना...य...ग्रामके सलु...दलु.....

कट्टु...डारम्भ-नीरारम्भ-सकल-सुवर्णा-

दाय-सकल-दवसादाय आ.....गरु

आ-ग्राम.....ग११... ..वरहगलनु ।

[ इस लेख में मय नगद और अनाज की आमदनी के किसी ग्राम के दान का उल्लेख रहा है । ]

३५४ ( २३० ) कु.....फाल.....अनुभ...

को.....य सीमेगे बेकद.....कण्डुय

.....वूलि .....आ-ग्रामके...वनु नीवे

तेत्तुकोण्डु..... आ-ग्रामदल्लिन नमगे

सलुव पत्तिगेयनु पौत्रपारम्परे आ-चन्द्रार्क

स्थायियागि अनुभविसिकोण्डु बरुवदु यी

.....कय-साधन.....यी-मय्यादि

.....कयसाधन ..... य्या .....

नाग-गवुडन.....द स्थानीक.....

.....सात्तिगलुन.....हलिय...बाल

मल्ले देवरु नज्जेगवुड हिन्दल.....द

कोत्तनगवुड बसट्टर गवुड.....हलिय  
तिर्त्तवन मुयि मय्या.....

[ यह किसी ग्राम का बैनामा सा ज्ञात होता है । ]

३५५ ( २३१ ) पण्डित देवरु माडित्तु माहाभिषेकदोलगे  
हालु-मोसरोगे २ पृजारिगे १ भागि केल-  
सिगलिगे कलुकुटिगरिगे भागि २ भण्डि-  
कारङ्गे १ तप्पिदवर कै सास्ति चरु हरियाणी

[ लेख का भावार्थ कुछ संदिग्ध है । शायद इसमें महाभिषेक के लिए व पुजारियों, कारीगरों और मजदूरों को पण्डित देव के दान का उल्लेख है । ]

३५६ ( २३२ ) श्रीमतु व्यय संवत्सरद माग सुद्ध १३ नेय  
त्रयोदसियलु करिय-कान्तणसेट्टियर मक्कलु  
करिय-बिरुमण सेट्टियर तम्म करिय गुम्मट  
सट्टियरु विडितियिन्द सङ्गव कुडिकोण्डु  
बेलुगुलदलु गुम्मटनाथन पादद मुन्दे रत्तत्र-  
यद नोम्पिय उद्यापनेय माडि सङ्गयपूजेय  
माडि कीर्त्तिपुण्यवनु उपार्जिसिकोण्डरु श्री ।

[ उक्त तिथि को करिय कान्तण सेट्टि के पुत्र व करिय बिरुमण सेट्टि के भ्राता गुम्मटसेट्टि ने एक संघ सहित बेलुगल की वन्दना की और गोम्मटनाथ के दर्शन कर कीर्त्ति और पुण्य का उपार्जन किया । ]

३५७ ( २३३ ) श्रीमतु करिय बोम्मणगे गुम्मटनाथ ने  
गति कं ।

३५८ ( २३६ ) संवत् १८०० कतसद ६ सवत् १८००  
(नागरी लिपि में) पह-स २ पत दव पनपथ दनचद परवल  
क बप ।

३५९ ( २४८ ) सब १८०० मत पह सद ८ मंगलवर  
(नागरी लिपि में) कट रह व गरधर लल वजमल क बट व  
मगतरय कट रयक बट बणमल गमत  
सम क जत कर ।

३६० ( २५१ ) ( यह लेख, शिलालेख नं० ६० (२४०)  
के प्रथम १५ पद्यों की हूबहू कापी मात्र है )

३६१ ( २५२ ) स्वस्ति श्रीमतु वडुव्यवहारि मोसलेय...  
वि-सेट्टियरु तावु माडिसिद चवीसतीर्थ-  
कर अष्टविधार्चनेगे वरिषनिबन्धियागि  
माणिक्यनकर.....शस-नकरङ्गलु कोट्ट  
पडिप...गे हाग ।...व-सेट्टि बाचिसेट्टि  
चिक्क बाचिसेट्टि प २ अम्मलेय केटि  
सेट्टि चन्दिसेट्टि गुम्मिसेट्टि चिक्कतम्म,  
प २ आदिसेट्टि चौडिसेट्टि १ बाचिसेट्टि  
अयिबिसेट्टि जक्कवेमैदुन बोदिसेट्टि  
बाचि सेट्टि मारिसेट्टि वम्मिसेट्टि प २  
माचि सेट्टि नम्बिसेट्टि मसणिसेट्टि केति-  
सेट्टि प २ केतिसेट्टि रेविसेट्टि हरियम-  
सेट्टि कोम्मिसेट्टि आदिसेट्टि चिक्क-केति

सेट्टि प २ पट्टण स्वामि चन्देसेट्टि सोम-  
 सेट्टि केतिसेट्टि प २ सोडलिसे सेट्टि  
 बाकवेचट्टि.....केमिसेट्टि प १...  
 ..द.....चिक्क...हेगडिति पट्टण-  
 स्वामि मलिसेट्टि कामवे प २ बम्मेय  
 नायक दोचवे नायिकिति चिक्क पट्टण  
 स्वामि प २ बाहुबलिसेट्टि पारिषसेट्टि  
 बसविसेट्टि बरत बाहुबलि प २ सङ्क-  
 सेट्टि एचिसेट्टि चौडिसेट्टि बाचिसेट्टि  
 सक्किसेट्टि प २ नागिसेट्टि करियशान्ति-  
 सेट्टि बवणसेट्टि बोप्पसेट्टि प २ मैलि-  
 सेट्टि महदेव सेट्टि हारुवसेट्टि प १  
 काविसेट्टिय पारिषसेट्टि आदिसेट्टि  
 प १ ओडेयच्चसेट्टि जक्किसेट्टि प १  
 तिप्पसेट्टिय बसविसेट्टि चिक्क तिप्पि-  
 सेट्टि प १.....य पदुमनसामि-  
 सेट्टि बमच्चि पदुम प १ देसिसेट्टि  
 कलिसेट्टि केतिसेट्टि बम्मिसेट्टि प १...  
 यटद राचमल्लसेट्टि यरु पट्टण स्वामि  
 जकरसरु होयसलसेट्टि बीवसेट्टि पट्टण  
 स्वामि मलिसेट्टि चाकिसेट्टि दासिसेट्टि  
 प ३ नेमिसेट्टियरु प २ नाविसेट्टि देवि-

संहि चट्टिसेट्टि कातवेसेट्टिति प २  
 पट्टणस्वामि बोप्पिसेट्टि बोकिसेट्टि तम्म  
 बोप्पिसेट्टि बसविसेट्टि त्राहुवल्लिसेट्टि  
 जक्कवे अत्तियक्क प २ अङ्गुरिक कालि-  
 सेट्टि सोमिसेट्टि चन्दिसेट्टि देविसेट्टि  
 चिक्क कालिसेट्टि प २ सोविसेट्टि चङ्गिसेट्टि  
 बम्मिसेट्टि प १ होन्निसेट्टि पारिष सेट्टि  
 कुप्पवे प २ माचिसेट्टि चट्टिसेट्टि गङ्गि-  
 सेट्टि कालिसेट्टि मारिसेट्टि प २ मङ्गि-  
 सेट्टि वर्द्धमानसेट्टि पारिषसेट्टि प २  
 काविसेट्टि देविसेट्टि वम्मसेट्टि प १  
 गुम्मिसेट्टि माकिसेट्टि गोम्मटसेट्टि  
 माचिसेट्टि प १ मसण्णिसेट्टि लकुमि-  
 सेट्टि प १ बहण्णिगेय बम्मवेय केटि-  
 सेट्टि प १ दनसेट्टिय म... वसेट्टि देमि-  
 सेट्टि चामवे प २ बाचिकवेय बम्मि-  
 सेट्टि पारिषसेट्टि चिक्क पारिषसेट्टि बेलि-  
 सेट्टि सोमसेट्टि गोम्मट सेट्टि केतिसेट्टि प २  
 सहदेवसेट्टिय चेट्टिसेट्टि रामिसेट्टि चट्टि-  
 सेट्टि प २ पट्टुमसेट्टि होल्लेसेट्टि गोम्मट-  
 सेट्टि लकुमिसेट्टि पोचम्म नाकिसेट्टि  
 महदेवसेट्टि प २ नागर-नविलेय केति-



सेट्टियमग बम्मिसेट्टि गुज्जवे प २ सेलदि  
 सेट्टि मसण्णिसेट्टि महादेवसेट्टि प १  
 वासुदेव नायक रामचन्द्र पण्डित चिक्क-  
 वासुदेव प २ सेनबोव-तिव्वसेट्टि प १  
 जयपिसेट्टि वम्मि सेट्टि पटुमिसेट्टि  
 चिक्कजयपिसेट्टि प २ अङ्गडिय महदेव-  
 सेट्टि गोम्मटसेट्टि महदेवि सोमक प २  
 केतिसैट्टिय आदिसेट्टि प १.....  
 ...य्य .....मग अल्लडिप्प पडि...होङ्गे  
 गद्याण नात्क कोडुवरु ४ वर्द्धमान हेगडे  
 नागवे हेगडित्ति बाहुबलि कलवे प २  
 कंदार वेगडे कन्नवे हेगडित्ति जक्कण्ण  
 हुरिय कडलेय केति सेट्टि जक्किसेट्टि प २  
 कालिसेट्टि भरुदेवि चागवे हेगडित्ति  
 वोक्कवे-हगडित्ति प २

[मोसले के वडुव्यवहारि बसवि सेट्टि के प्रतिष्ठित कराये हुए चतुर्विं-  
 शति तीर्थङ्करों की अष्टविध पूजार्चन के हेतु उपयुक्त सज्जनों ने उपयुक्त  
 वार्षिक चन्दा देने की प्रतिज्ञा की । ]

३६२ ( २५७ ) श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं॥१॥

स्वस्ति श्री शकवर्ष १३७१ नेय युव

संवत्सरद वैशाख शुद्ध १० गु. स्वस्ति

श्रीमत्तु चारुकीर्त्ति पण्डित देवरु-गलु  
अवर शिष्यरु अभिनव-पण्डित-देवरुगलु  
बेलुगुलद नाड गवुडुगलु माणिक्य नख-  
रद हलरु पण्डितु स्थानिकरु वैद्यरु.....  
.....वरु

[ यह लेख अधूरा है । इसमें बेलुगुल के चारुकीर्त्ति पण्डितदेव  
और अभिनव पण्डित देवका उल्लेख है ]

३६३ ( २६० ) सके १६५५ आश्वीज वदि ७...खेरा-  
( नागरी लिपि में ) मासा पुत्र.....मखीसा.....श्री  
सक.....वानापोसा.....  
.....गया सफल श्री ।

३६४ ( २६१ ) सके १६५३ आश्वीज-वद ७ खेरामासा  
( नागरी लिपि में ) पुत्र हीरासाछा पणेतुणखा जात्रा सफल ।  
३६५ ( २६२ ) सके १६६३ आश्वीज वद ७ खेरामासा  
( नागरी लिपि में ) पुत्र धरमासाछा पौत्र जागा.....  
जात्रा सफल ॥

३६६ ( २६३ ) सके १६५३ पौस वदि १२ शुक्रवारे  
( नागरी लिपि ) भण्डेवेड कीर्त्ति सहित उघरवल जाती  
हीरासाह सुत हाससा सुत चागेवा  
सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई मन्नाई  
सहित जात्रा सफल करी कारज कर ।

३६७ ( २६४ ) वेय नाम संवत्सरद कार्तिक सुद्ध अष्टमी  
(अखण्डवागिलु के यि गुरुवार ॥  
बरामदे में )

३६८ ( २६५ ) स्वस्ति श्री मूल सङ्घ देशियगण  
(द्वारे के पास भुज- पुस्तकगच्छ श्रीगण्डविमुक्त सैद्धान्तदेवर  
बलिस्वामी के पाद- पीठ पर ) गुड्ड भरतेश्वर दण्डनायक माडिसिद ॥

३६९ ( २६६ )

[ लेख नं० ३६८ के ही समान ]

(द्वारे के पास भरते-  
श्वर के पादपीठ पर)

३७० ( २७० ) श्रीमतु आस्वैज सुद्ध ८ ल्ल बेगूर गामेय  
नरसप्पसट्टियर मग बैयणतु स्वामि-दरु-  
सनव माडि ई-कट्टे कट्टिय अरवटिगे  
निलिसिदरु ॥

[उक्त तिथि को बेगूर के गामेय नरसप्पसेट्टि के पुत्र बैयण ने स्वामी  
के दर्शन किये, यह कुण्ड बनवाया और उस पर छप्पर डलवाया । ]

३७१ ( २७१ ) सोमसेन देवर गुड्ड गोपय वैचक्र

३७२ ( २७२ )...भुवनकीर्त्तिदेवर शिष्य.....कीर्त्ति-  
देवर निशिधि ।

३७३ ( २७५ ) वनवासिवस्वा .....रद....रा.....

३७४ ( २७६ ) सिंहनन्दि आचार्यरु ॥

३७५ ( २७८ ) पूतावाई.....जगदाई पणास जात्रा  
(नागरी लिपि में) सफल ॥

३७६ ( २७६ ) पूजनाई पुत्र पण्डि...पू...

(नागरी लिपि में)

३७७ ( २८० ) श्रोमतु आस्वै बहुलं १ यलु भारगवेय  
नागप्प-सठर मग जिन्नणनु बेलुगुलद  
चारुकीर्ति भटार श्री पादव के थिसि-  
दरु श्री ॥

[ नं० ३७८ से ४०४ तक के लेख नागरी लिपि में हैं । ]

३७८ ( २८३ ) चीतामनस बवरा माणकर ई-कर

३७९ ( २८४ ) सके १६४२ वैसाष वदी १३ बु गडासा  
धर्मासा कोट्टसा सो मानीकसाच नमस्कार  
( कनाडी लिपि में ) माणिकसा

३८० ( २८५ ) .....सा.....प्र.....के १६४२...  
क वदी १३ मरिवहीरा जात्रा सफल ॥

३८१ ( २८६ ) श्री काष्टसङ्घे ॥

३८२ ( २८७ ) शक १५६७ पार्थिव-नाम संवत्सरे वैशाख  
मासे शुक्ल पक्षे चतुर्दशी दिवसे श्री काष्ट-  
सङ्घे वधेरवाल जातीय गोनासा गोत्रे  
सवदी बावुसार्या जायनाई तयो पुत्रौ  
द्वौ प्रथमपुत्र सन्नोजसार्या यमाई तयो पुत्रा  
यरु...मध्य सीमा सङ्घवीर्या सङ्घवी-  
र्यार्जुनसीत ग्रामे सम्प्रणमति द्वितीय पुत्र  
सङ्घवी पदजीयार्या तानाई तयो पुत्रौ

द्वौ विदुमाय्या कमलाजा पुत्र एशोजा  
पदाजी सङ्गवो द्वितीय पुत्र गेसाजीति  
सम्प्रणमति हीरासा धरमासा माडगडी ।

३८३ ( २८८ ) साके १५७४ चैत्र सुधी ५ आल्घा ।  
जगस बाल्वान्त-पुसा त्याचे भाऊ  
गोनसा समसनी धर्म वष्टल आ ॥

३८४ ( २८९ ) सक १५७४ चैत्र वद १० प । जीनासा  
सुत जीनदास

३८५ ( २९० ) चैत्र वदी ६ पं । सक १५७४ सा । अ-  
लीसा जात्रा सफल ॥

३८६ ( २९१ ) श्री काष्टसङ्ग माडवगडी १५७७ मनमथ  
नाम संवदसरे कार्तिक वदी १५ हीरासा  
घुमाईछ पुत्र धरमासा ईराई पुत्र सानसा  
व हीरासा वष्टगडेसा तप दमा काधे  
जात्रा सफल माताई चे जात्रा ॥

३८७ ( २९२ ) सके १५७७ मनमथ नाम संवत्सरे कार-  
तिक वदी पाडिव १ तलीची मारमा  
कालावा मारमा जीवामा जीवाजी पाही  
घानयजी वानदीका जामखेडकर साता  
कातीमा करका जत्रा ।

३८८ ( २९३ ) सके १६७४ चै, वदी ६ धवाडसा  
मानीकसा जत्रा सफली ॥

- ३८६ ( २६४ ) १७६४ सुरजन साफल
- ३८० ( २६५ ) सके १७५४ चैत्र वदी ५ जत्र करी सफल
- ३८१ ( २६६ ) सुपुजीश नेमाजी सामजी सरत योगोई
- ३८२ ( २६७ ) सके १६४० फालगुन सुदी १ गु. दे-  
मासा मानीकसा गविल ( कनाड़ी में )  
देमासा रजा
- ३८३ ( २६८ ) सके १५८४ वैशाख सुदी ७ श्री काष्ठा-  
सङ्गे पीतलागोत्रे लषसा पु हीरासा  
रामासा जात्रा सफल ।
- ३८४ ( २६९ ) ब्रह्मरङ्ग सागर पं । जसवन्त ।
- ३८५ ( ३०० ) प गोविन्दा माथ गङ्गाई
- ३८६ ( ३०१ ) संवत् १७१८ वर्षे वैशाख सुदि ७ चन्द्रे  
श्री काष्ठासङ्गे पण्डित
- ३८७ ( ३०२ ) सके १५६८ सावळरे फालगुन वदि ६  
तदा.....स.....पुत्र चीळक.....  
यायसा.....अवार.....अ रघु.....  
छा चीळक.....
- ३८८ ( ३०३ ) आम्बवाजी का जन्माजी का तप
- ३८९ ( ३०४ ) माघ सुदि ६ पेडेक...त्रा घडे...जात्रा  
सफल ॥

४०० ( ३०५ ) संवत् १५६६ पार्थिव नाम संवत्सरे  
माघ शुदी पाडिव माचा.....पुत्र  
धावर...जात्रा सफल ॥

४०१ ( ३०६ ) सके १५६६ पार्थी नाम संवत्सरे मेगने-  
मासा तसे मायो जीवाई भीवभा जेट  
सुध ३

४०२ ( ३०७ ) १३५ जीवा सङ्गवी १३५ अडु सङ्गवीचा  
गोगासा

४०३ ( ३०८ ) ब्र । शापसाजी ब्र ॥ रत्नसागर '

४०४ ( ३०९ ) गुडवटिपुर...गोविन्द जीवापेटी सबडी  
सफली ।

४०५ ( ३१० ) १५६२ श्रीमतु पार्तिव संवत्सरद वैशाख  
सुद पञ्चमी कमल परद कमवोव्येनिम  
सुरप नगपन वलभ नम गोत्र मग जिनप  
सुरप इगवरुं चिखणद सेटि...

४०६ ( ३११ ) हालेजन मसण्येय कट्टि विडुवर गण्ड  
वोडेयर हेण्डतिय गण्ड बोयसेट्टिय मद  
कोड

४०७ ( ३१४ ) जिन वर्मन कङ्करिय ध्वनि किविवुगं  
दुर्जनङ्गे भयमुं सुजनङ्ग अनुरागमुमुदै-  
सुगुं घननाददिनेन्तु हंसेगं नविलिङ्गं

४०८ ( ३१५ ) कोलिपाके माणिक्यदेवन गुडु जिन-  
वर्म जोगि कङ्कुरि-जगदाल मोरमूर  
आदिनाथ नमोऽस्तु ।

४०९ ( ३१६ ) श्रामत् रुवारि विदिगइ कम्मटइ सुलेरिद  
मुट्टिदर मेयिजायिले पेरगगिन् ।

४१० ( ३१७ ) परनारी पुत्रक मण्टर तोल्लु केल्लेगे कुर्पात  
पिसुण्णगडसर्पतोदल्दर बीव बावन वण्ट  
गुण्डचक्र जेडुगं

४११ ( ३१८ ) स्वस्ति श्री पराभव-संवत्सरद मार्गशिर  
अष्टमी शुक्रवारदन्दु कोमरच णा अकन  
तम्म मले आल-अप्पाडि नायक इल्लिदु  
चिकवेट्टकेच्च ॥

४१२ ( ३२० ) गडिव गद्देगे क ४०

४१३ ( ३२२ ) विजयधवल । ४१४ ( ३२३ ) जयधवल

४१५ ( ३२४ ) सके १५७५ मास्वा पाण्डव गोकुला-  
(नागरीलिपि में) सन्नोजीन्वो सफल जत्रा ।

४१६ ( ३२५ ) माणि-वीरभद्रन पण्डरद नपा...कन  
...बैरव बीरेव...हिव...न...तन...

४१७ ( ४७६ ) ओं नमो सिद्धेय्य ॥ श्री गोमटेश प्रसन  
धरणप्पासूज ॥ हुब्बल्लि स्मरणार्थ चिं ।  
मातप्पा अरपण हुब्बल्लि ।



[ यह लेख एक घण्टे पर है । धरणापासुज की स्मृति में मातृपा ने अर्पण किया ]

४१८ ( ४७७ ) श्रीमल्लिसेट्टिय मगलाद र...यिगल निसिधि

४१९ ( ४७८ ) काल...कर...ह...ल नेरुवाद...ल्  
अमर...वगे...चले...कस...य गडे  
गौडगां...नण्टर पं...न बान.....रिद  
युगल न.....चन्द...प्पं केच्चगौड गरु  
यङ्क.....धार या...द

४२० ( ४७९ ) पण्डितय्य

४२१ ( ४८५ ) विरोधिकतुसंवत्सरद जेष्ट शुद्ध १० श्री मूल-  
सङ्घ देसिगण पुस्तकगच्छ कोण्डकुन्दान्वयद  
श्रीमद् अभिनव पण्डिताचार्यर शिष्य सम्य-  
क्तचूडामणि एनिसिद आभव्योत्तमतु तलेहद  
नागि सेट्टिय सुपुत्र पाइसेटि श्री गुम्मतनाथ  
स्वामिय पूजेगे सम्पगेय मरन बलि समर्पसिद  
पलदिन्द जिनेश्वरन चरणस्मरणान्त-करणनु सुख  
समाधियिन्द सुगति प्राप्तनादुदके मङ्गल महा  
श्री श्री श्री ।

४२२ ( ४८६ ) स्वस्ति श्रीमतु जिनसिनि भट्टारक पट्टा-  
चार्यरु कोल्लापुरद वरु सङ्घ सहवागि  
रौद्रि संवत्सरद वैशाख सुद १० सक-

वार दिन दशशनव माडिदरु ॥ सि...द  
.....कोट्ट.....

४२३ ( ४६७ ) श्री ठयय संवत्सरद माघ सुद १३ नेय  
त्रयोदशियलु ओजकुल...लसेट्टि पच्चा-  
वती वज्र कच्चा...क...मप्प नाउ अरु  
मन्दि के...थ.....दके.....द...

४२४ ( ४६८ ).....श्री ठयय संवत्सरद माघ सुद १३  
नेय त्रयोदशियलु किरिय कालन सिटि-  
यर अलियिन्दिरु सेट्टि नेमणसेट्टियर मग-  
सेट्टि ब्रंमयसेट्टि गोम्मटनाथन पादद  
मुन्दे तसा...यनागि कम्बय.....दिदनु ॥

४२५ ( ४६९ ) सुभमस्तु । विक्रम नाम संव.....  
राज्य.....सक.....न नमि...  
...र...डिचलु...ल...

## श्रवण वेल्लुल नगर के अवशिष्ट लेख

४२६ ( ३३१ )

**अकून वस्ति में पार्श्वनाथ की मूर्ति पर**

श्री-सूलसङ्घ-देशिगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दान्वयके  
सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती नयकीर्त्ति-मुनीश्वरो भाति ॥१॥

तच्छिष्योत्तम-बालचन्द्र-मुनिप-श्री-पाद-पद्म-प्रिया  
सर्वोर्वी-नुत-चन्द्रमौलि-सचिवस्यार्द्धाङ्ग-लक्ष्मीरियं ।

आचाम्बा रजताद्रि-हार-हर-हासोद्यद्यशो-मञ्जरी-  
पुञ्जीभूत-जगन्नया जिन-गृहं भक्त्या मुदाकारयत् ॥२॥

४२७ ( ३३२ )...तातीराव सुदीपरा...पमघदेव

४२८ ( ३३७ ) श्रीमत्पण्डिताचार्य गुड्डि देवराय  
महारायर राणि भीमादेवि माडिसिद्ध  
शान्तिनाथ स्वामि श्री ॥

४२९ ( ३३८ ) श्रीपण्डितदेवर गुड्डि बसतायि माडि-  
सिद्ध वर्द्धमान स्वामि श्री ॥

४३० ( ३३९ )

**मङ्गायि वस्ति के द्वितीय दरवाजे की चोखट पर**

स्वस्ति श्री सूलसङ्घ देशियगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दा-  
न्वय श्रीमद्-अभिनव-चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्यर शिष्ये

सम्यक्त्वचूडामणि रायपात्र-चूडामणि बेलुगुलद मङ्गायि  
माडिसिद त्रिभुवनचूडामणि येम्ब चैत्यालयके मङ्गल-महा  
श्री श्री श्री ॥

[श्री मूलसङ्घ देशिय गण, पुस्तक गच्छ, कोण्डकुन्दान्वय के अभिनव  
चारुकीर्त्ति पण्डिताचार्य के शिष्य बेलुगुलवासी सम्यक्त्व चूडामणि  
मङ्गायि द्वारा निर्मापित त्रिभुवन चूडामणि नामक चैत्यालय का  
मङ्गल हो । ]

४३१ ( ३४८ ) .....छनं .....शासनं...परोक्ष

.....य्य...द्भु.....नुडि.....

लान्तरक...ल्लायदेवरु तत्सिष्य.....ज्य

...दाता.....तत्सिष्य .....

अभेयनन्दि.....सिद्धान्ति देवरु

देव.....द्धान्तिदेवरु.....

वचन्द्र.....सुरकीर्त्ति त्रैवि.....

चन्द्र भट्टा.....गुणचन्द्र

.....भट्टारक.....भट्टा-

रकरु.....कटका.....व

.....त कमल.....प्रह

.....ध्याह्नकल्पवृक्ष वासु

पू...य.....सिचति...कश्री...

.....दु.....योगि तिल

.....दं श्रीमा.....तया  
 तमक तत्प्र.....वे ॥ श्रीकू.....यव  
 .....ताय.....रमल.....म्  
 अन्वयाभिधान अभिनव स्वार च चतु...  
 ...चक्रवर्त्ति

.....मा र.....त्प्रमे...  
 .....गु .....  
 .....  
 ...कंपडि.....

४३२ ( ३५० ) पिङ्गल-स.....द्ध ५ लु स.....  
 गण पुस्त.....न्दान्वयद.....  
 र्त्ति पण्डिताचा.....तरकलगु.....र  
 मदवलिंगे कि.....ङ्किपूर दन.....  
 मि सेण्टियर.....बेलुगुलके व

४३३ ( ३५३ )

**पूणेंया की सनद जो कागज पर लिखी हुई  
 बेलुगुल के मठ में है**

**शुक्ल-संवत्सरद फाल्गुन ब द बुधवारदलु श्रीमत्तु  
 पूणेंयनवरु किक्केरि आमील गवुडैयगे वरसि कलुहिस्त कार्य**

अदागि स...द कलगण धर्मस्तलदिन्दा कौमारहेगाडियवर  
 श्रवण बलगुलकके देवर दरुशनकके बन्दु यिहु हजूरिगे बन्दु  
 यिहु अरिके-माडिकोण्डु पूर्वकके कृष्णराज-वडयरवर  
 श्रवणबलगुलदल्लि यिरुव चिक्क-देवराय-कल्याणि-समीपद दान-  
 श्यालि-धर्मकके किक्केरि-तालूक कवालु यम्ब ग्राम-वन्नु नडसि-  
 कोण्डु बरुवन्ते सन्नदु वरशि कोट्टुद्दु हाजरु यिधे यन्दु तन्दु  
 तारिशि दरिन्दा कट्टले-माड्सि यिधित्तु यी-कवालु-ग्रामद हुट्टु-  
 वलि योग गु ८०-यम्बत्तु वरहायिरु-वदरिन्दा श्रवण बलगुल-  
 दल्लि यिरुव चिक्क-देवराय-कल्याणि-समीपदल्लि नडव दान-  
 श्यालि-धर्मकके गोमटेश्वर पूजिगे श्रवण बलगुलदल्लि यिरुव  
 मटद सन्न्याशि चारकीर्ति-पण्डिताचार्यर मटकके द वेच्चकके  
 सहा ग्रामवन्नु प्रमोदूत-संवत्सरद आरव्याग्राम यिवर ताबे  
 माड्सि नेम्मदि-गूडि नडशि कोण्डु बरुवदू यी ग्रामदल्लि पालु-  
 वूमि सागुवलि माड्सिकोण्डु केरे कट्टे कट्टिसि कोण्डु ग्रामकके  
 राजपत्तु तन्दु येनु जास्ति हुट्टुवलि यिवरु माडि कोण्डाग्यू  
 सदरि वरद मटद वेच्चकके देवर पूजिगे दान-स्यालिंगे सहा  
 उपयोगा-माडिको-लुवदे होरतु सरकारद तण्टे माड कंलस-  
 विन्ना सराग-गूडि नडसिकोण्डु बरुवदु तारीकु २८ ने माहे  
 मार्चि साल १८१० ने यिस वीयल्लु सद्रि वरद मेरिगे नदै-  
 शिकोण्डु बरुदु श्री ताजाकलं यी-सन्नदु दप्तरकके वरशि कोण्डु  
 असल सन्नदुने हिदकके कोडुवदु रुजु श्री पैवस्तकि पाल्गुण व  
 १० शुक्रवार स्तल दाकलु ।

[ धर्मस्थल के कोमार हेग्गडि ने आकर कृष्णराज वडथर के समय की एक सनद पेश की जिसमें किक्केरि तालुका के कवालु नामक ग्राम का बेलगुल के चिक्कदेवराय के समीप की दानशाला के हेतु दान दिये जाने का उल्लेख था । इसी सनद के अनुसार उक्त तिथि को पूर्णय्य ने यह सनद दे दी कि उक्त ग्राम की आय, जो उस समय ८० वराह थी, उक्त दानशाला और बेलगुल के सठ के हेतु काम में लायी जाय । भविष्य में आय में जो वृद्धि हो वह भी इसी हेतु खर्च की जाय यह सनद उक्त तिथि को सरकारी दफ्तर में नकल कर ली गई । ]

४३४ ( ३५४ )

## मुम्मडि कृष्णराज ओडेयर की सनद उसी सठ में कागज पर

श्रीकण्ठाच्युत-पद्मजादि-द्विषद्-वक्रोद्ध-तेजःछटा-  
सम्भूतामतिभीषण-प्रहरण-प्रोद्भासि बाहाष्टकां ।  
गर्जत्-सैरिभ-दैत्य-पातित-महा-शूलां त्रिलोकी-भय-  
प्रोन्माथ-व्रत-दीक्षितां भगवतीं चामुण्डिकां भावये ॥१॥

निदानं सिद्धानां निखिल-जगतां मूलमनघं  
प्रमाणं लोकानां प्रणय-पदमप्राकृतगिरां ।  
परं वस्तु श्रीमत् परम-करुणासार-भरितं  
प्रमोदानस्माकं दिशतु भवतामप्यविकलं ॥ २ ॥

हरेलीला-वराहस्य दंष्ट्रा-दण्डस्स पातु नः ।  
हेमाद्रि-कलशा यत्र धात्री छत्र-श्रियं दधौ ॥ ३ ॥

नमस्तेऽस्तु वराहाय लीलयोद्धरते महीं ।

खुर-मध्य-गतो यस्य मेरुः कणकणायते ॥ ४ ॥

पातु त्रीणि जगन्ति सन्ततमकूपाराद्धरामुद्धरन्

क्रोडा-क्रोड-कलेवरस्स भगवान्यस्यैक-दंष्ट्राङ्कुरे ।

कूर्मः कन्दति नालति द्विरसनः पत्रन्ति दिग्दन्तिनो

मेरुः कोशति मेदिनी जलजति व्योमापि रोलम्बति ॥५॥

स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय-शालिवाह-शक-वर्षगलु १७५२

सन्द वर्तमान-विकृति-नाम-संवत्सरद श्रावण ब० ५

सोमवारदल्लु आत्रेय-सगोत्र आश्वलावन-सूत्र रुकशाखा-

नुवर्तिगलाद यिम्मडि-कृष्णराज-वडयर वर पौत्रराद चामराज-

वडयरवर पुत्रराद श्रीमत् सुमस्त-भूमण्डल-मण्डनायमान-निखिल-

देशावतंस-कर्नाटक-जनपद-सम्पदधिष्ठानभूत-श्रीमन्महीसूर-महा-

संस्थान-मध्य-देदीप्यमानाविकल-कलानिधि-कुल - क्रमागत-राज -

चितिपाल-प्रमुख- निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्त्ति-मण्ड-

लानुभूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद्-राजाधिराज-राज-

परमेश्वर प्रौढ-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति विरुदेन्तेम्बर-गण्डलोकैक-

वीर यदु-कुल-पयःपारावार-कलानिधि शङ्ख-चक्रांकुश-कुठार-

मकर-मत्स्य-शरभ-साल्व-गण्ड-भेरुण्ड-धरणीवराह-हनुमद्-गरुड-

कण्ठीरवाद्यनेक-विरुदाङ्कितराद महीशूर श्री कृष्णराज-वडयर-

वरु श्रवण बेलगुलद चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार्य मठकके श्रवण

बेलगुलद देवस्थानगल पण्डितर-दीपाराधने बगगे दागदोजि-

केलसद बगगे सहा बरसि कोट्ट ग्राम-दान-शासन-क्रमवेन्तेन्दरे ।



किक्केरि-तालुकु श्रवणबेलगुल दल्लिरुव दोडु-देवरु १ अल्लिरुव  
 चिल्लरे-देवस्थान ७ चिक्कबेट्टद मेले यिरुव देवस्थान १६ ग्राम-  
 दल्लिरुव देवस्थान ८ सहा देवस्थान ३२ के सह पडितर-दीपा-  
 राधने-वग्गे नडैयुव नगदु तस्तीकु १२०-शिवायि चारुकीर्त्ति  
 पण्डिताचारं मठक्के नडैयुव कब्बालु-ग्राम १ यिदरल्लि पडितर-  
 दीपाराधनेगे सालुवदिल्लवाहरिन्द मठक्के नडैयुव कब्बालु-ग्राम  
 १ यिदरल्लि पडितर-दीपाराधनेगे सालुव-दिल्लवाहरिन्द मठक्के  
 नडैयुव कब्बालु-ग्राम मात्र कायं माडिसि पडितर दीपाराधने  
 नडैयुव वग्गे श्रवण बेलगुल ग्राम १ उत्तैनहल्लि ग्राम १ होसह-  
 ल्लि ग्राम १ यी-मूरु-ग्रामवन्नु सर्व्व-मान्यवागि अप्पणे-कोडि-  
 सुबेकेन्दु अरमने समुरवद लक्ष्मी-पण्डितरु हजूरल्लरिके-माडि-  
 कोण्डहरिन्द सह नगदु तस्तीकु मोक्षोप माडिसि विट्टु यी-  
 मूरु-ग्राम-गलन्नु सह सदरि देवस्थानगल पडितर-दीपाराधने  
 मुन्ताद वग्गे चारुकीर्त्ति-पण्डिताचारं मठद हवालु-माडिकोट्टु  
 ई-ग्रामगल बेरीजु पञ्चसालु हुट्टुवलि पटि कलुहिसुवन्ते तालुकु  
 मजकूर आमीलगे निरूपअप्पणे-कोट्टिद मेरे आमीलन रुजु  
 मोहर दप्पर दाखले नीसि अर्जियल्लि मलफूपागि बन्द पट्टि  
 पराम्बरिसि कट्टले-माडिसिरुव विवर बेरीजु ( ) कसबा  
 श्रवण बेलगोल ग्राम असलि १ दाखले कोप्पलु २ केरे १ कट्टे  
 २ के सहा बेरीजु ( ) पैकि वजा जारि यिना-मत्ति-  
 ( यहाँ तीनों ग्रामों की आय का पाँच साल का पूरा  
 व्योरा दिया है )

यी-मेरे यिरुव ग्रामगलु यिदर दाखले-ग्राम करे कट्टे मुन्तागि  
सदरि बेलगुलदल्लिरुव दोडु-देवरु मुन्तागि ३२ देवस्थान  
मलयूरु-बेदद मेले यिरुव देवस्थान १ सहा मूवत्त-मूरु-देवस्थानद  
पडितर दीपाराधने रथोत्सव मुन्ताद बग्ये यी-देवस्थान गलिंगे  
वर्षम्प्रति दागदोजि आगतक्कहु माडिसतक्क बग्ये सहा  
आत्रेय-सगोत्र आश्वलायन-सूत्र चट्टक-शाखानुवर्तिगलाद  
यिम्मडि-कृष्णराज-वडयरवर पौत्रराद चामराज-वडयरवर  
पुत्रराद श्रीमत्समस्त-भूमण्डल-मण्डलायमान-निखिल-देशावतंस-  
कर्नाटक-जनपद-सम्पदधिष्ठानभूत-श्रीमन्-महीसूर-महासंस्थान-  
मध्य-देदीप्यमानाविकल-कलानिधि-कुल-क्रमागत-राज-चित्ति-  
पाल-प्रमुख-निखिल-राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्ति-मण्डलानु-  
भूत-दिव्य-रत्न-सिंहासनारूढ श्रीमद् राजाधिराज राज परमेश्वर  
प्रौढ-प्रतापाप्रतिम-वीर-नरपति विरुदेन्तेम्बर गण्ड लोकैक-वीर  
यदु-कुल-पयः-पारावार-कलानिधि शङ्ख-चक्राङ्कुश-कुठार-मकर-  
मत्स्य-शरभ-शाल्व-गण्डभेरुण्ड-धरणीवराह हनूमद्-गरुड-कण्ठीर-  
वाद्यनेक-विरुदाङ्कितराद महीसूर श्री-कृष्णराज-वडयरवर  
सर्वमान्यवागि अप्पण्णे-कोडिसि-धेवेयाद-कारण यी-ग्रामगलन्नु  
यी-विकृति-संवत्सरदारभ्य मठद इवालु-माडिकोट्टु निरुपा-  
धिक-सर्वमान्य-वागि नडसिकोण्डु बरुवन्ते तालुकु मजकूर  
आमीलगे सन्नदु अप्पण्णे-कोडिसिधोतागि सदरि सन्नदिन मेरे  
यी-मूरु-ग्रामगल यल्ले चतुस्सीमा-वल्लगण गदे बेदलु मने-हण  
केम्पु-नूलु उप्पिन मोले योचलु-पैरु पुर वर्ग येरु-काणिके नाम-

काणिके गुरु-काणिके काणिके बेडिके कब्बिण्ण पोम्मु आले-  
 पोम्मु हट्टि-पोम्मु मार्ग-करगपडि सुङ्ग पोम्मु जाति-कूट समया-  
 चार हुल्लु हण चरादाय होरादाय सीगे मड्डि पतङ्ग पोप्पलि  
 गिड-गावलु ब्राह्मण-निवेशन शूद्र-निवेशन सोप्पिन तोट तिप्पे-  
 हल्ल श्रीगन्ध होरताद मर वलि फल-वृत्त मदिक मुन्ताद आ-  
 सकल स्वाम्यवन्नु रुहिसि कोल्लुत्ता श्रवण बेलगुल-प्रामदल्लि  
 नेरेयुव सन्ते-सुङ्गद हुट्टु वलियन्नु तेग दुकोल्लुत्ता यी-ऐवजिनल्लि  
 देवर सेवेगे उपयोग-माडिकोल्लुत्ता वरुवदु यी-ग्रामगल्लि  
 होसदागि करे कट्टे काल्वे अणे मुन्तागि कट्टिसि बाजे-बानु  
 मुन्तागि याव बाबिनल्लि येनु हेचु हुट्टु वलि माडि-कोण्डाग्यु  
 सदरि देवर सेवे मुन्तादक्के उपयोग-माडिकोल्लुवदु यम्बदागि  
 श्रवण बेलगुलद चारुकीर्त्ति-पण्डिताचार मठक्के आत्रेय-सगोत्र  
 आश्वलायन-सूत्र ऋक-शाखानुवर्त्ति-गलाद यिम्मडि-कृष्णराज  
 वडयरवर पौत्रराद चामराज-वडेरवर पुत्रराद श्रीमत्समस्त-  
 भूमण्डल-मण्डनायमान - निखिल - देशावतंस - कर्नाटक - जनपद-  
 सम्पदधिष्ठानभूत-श्रीमन्महीशूर-महासंस्थान-मध्य-देदीप्यमानावि-  
 कल - कलानिधि - कुल - क्रमागत-राज - चित्तिपाल-प्रमुख - निखिल-  
 राजाधिराज-महाराज-चक्रवर्त्ति-मण्डलानुभूत-दिव्य-रत्न - सिंहा-  
 सनारूढ श्रीमद्-राजाधिराज राज-परमेश्वर प्रौढ-प्रतापाप्रतिम-  
 वीर-नरपति विरुदेन्तेम्बरगण्ड लोकैक-वीर यदु-कुल-पयः-पारा-  
 वार-कलानिधि शङ्ख-चक्राङ्कुश-कुठार-मकर-मत्स्य-शरभ-साल्व-  
 गण्डभेरुण्ड-धरणी-वराह-हनूमद्रुड-कण्ठीरवाद्यनेक-विरुदाङ्कि-

तराद महीशूर श्रीकृष्णराज-बडयर वरु बलगुलद देवस्थान गल  
पडितर दीपाराधने रथोत्सव वर्षम्प्रति आगतकक दाग-देजि-  
केलसद बग्गे सहा बरेसि कोट्टु सर्वमान्य-ग्राम-साधन सहि ॥

आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च

द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।

अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये

धर्मश्च जानाति नरस्य वृत्तं ॥ ६ ॥

स्वदत्ताद्विगुणं पुण्यं परदत्तानुपालनं ।

परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ ७ ॥

स्वदत्ता पुत्रिका धात्री पितृ-दत्ता सहोदरी ।

अन्यदत्ता तु माता स्याद् दत्तां भूमिं परित्यजेत् ॥ ८ ॥

स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धराम् ।

षष्टिं वर्ष-सहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः ॥ ९ ॥

मद्भ्रंशजाः परमहीपतिवंशजा वा

ये भूमिपास्तततमुज्ज्वलधर्मचित्ताः ।

मद्धर्ममेव सततं परिपालयन्ति

तत्पादपद्मयुगलं शिरसा नमामि ॥ १० ॥

ब तारीख ८ ने माहे आगिष्ट सन् १८३० ने यिसवि  
खत्त अरमने सुबराय मुनशि हजूर पुरनूर सदरि अपणे-कोडि-  
सिरुव मेरिगे असलि-ग्राम मूरु दाखलि-ग्राम यरडु कैरे वन्दु  
कटे मूरकके सह जारि यिनामति सिवायि सालियाना कण्ठि-  
रायि वम्भैनूर-अरुवतारु वरहालु व्याले बेरीजु डल्ल यी-ग्राम-

गलत्रु निम्म हवालु-माडिकोण्डु देवस्थानगल दीपाराधने पडितर  
 चत्सव मुन्तागि निरुपाधिक-सर्वमान्यवागि नडसि-कोण्डु बरुवदु  
 रुजु श्रीकृष्ण ।

( यहाँ मुहर लगी है )

[ इस सनद का भावार्थ लेख नं० १४१ में गर्भित है । ]

४३५ ( ३५५ )

## मठ में अनन्तनाथ स्वामी की प्रभावलि की पीठ पर

( शक सं० १७७८ )

( ग्रंथ और तामिल )

श्रीमदनन्तनाथाय नमः

अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तर-सहस्रकाद्गुणिते ।

शालिवाहन-शक-नृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

एकान्नविंशतियुतात्पञ्च-शत-सहस्र युग्मकाद्गुणिते ।

श्री वर्द्धमान-जिनपति-मोक्षगताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥

एक-न्यून-शताब्दात्प्रभवादि-गताब्दके सङ्गुणिते ।

एवं प्रवर्तमाने नल्ल-नामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥

मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।

अवाक्काशीति विख्यात-बैलुगुले नगरे वरे ॥ ४ ॥

भण्डार-श्री-जैन-गोहे श्री-विहारोत्सवाय च ।

आजवञ्जव-नाशाय स्व-स्वरूपोपलब्धये ॥ ५ ॥

श्री चारुकीर्ति-गुरुराढन्तेवासित्वमीयुषाम् ।  
 मनोरथ-समृद्धयै सन्मत्तिसागर-वर्णिनां ॥ ६ ॥  
 धरणेन्द्र शास्त्रिणा शुभम्भकुम्भकोणं उपेयुषा ।  
 अनन्तनाथ-विम्बोऽयं स्थापितस्सन्प्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥

श्री-पञ्चगुरुभ्यो नमः ।

४३६ ( ३५६ )

## उसी मठ में गोमटेश्वर की प्रभावलि की पीठ पर

( शक सं० १७८० )

( ग्रन्थ और तामिल )

श्री श्री-गोमटेशाय नमः

अशीत्यधिक-सप्त-शतोत्तर-सहस्र-सङ्गुणित-शालिवाहन-  
 शक-वर्षे एकविंशत्यधिक-पञ्चशतोत्तर-द्विसहस्र-प्रमित-श्रीमहति  
 महावीर-वर्द्धमान-तीर्थङ्कर-मोक्षगताब्दे एकपञ्चाशद्गुणित-प्रभ-  
 वादि-संवत्सरे-सति प्रवर्तमान-कालयुक्ति नाम-संवत्सरे दक्षिणा-  
 यने ग्रीष्मकाले आषाढ-शुक्ल-पूर्णिमायां शुभतिथौ श्री-दक्षिण-  
 काशी-निर्विशेष-श्रीमद्-बेलगुल-भण्डार-श्रीजिनचैत्यालये नित्य-  
 पूजा-श्रीविहारमहोत्सवार्थ श्रीमच्चारुकीर्ति-पण्डिताचार्य-  
 वर्याग्रान्तेवासि-श्री-सन्मत्तिसागर-वर्णिनां अभीष्ट-संसिद्धयर्थ  
 श्रीमद्-गोमटेश्वर-स्वामि-प्रतिकृतिरियं श्रीतञ्जपरीमधिवसद्भ्यां

गोपाल-आदिनाथ-आवकाम्यां प्रतिष्ठापूर्वकं स्थापित ॥ भद्रं भूयात् ॥

४३७ ( ३५७ )

## नवदेवता मूर्ति के पृष्ठ भाग पर

( ग्रन्थ और तामिल )

श्री शालीवाहन शकाब्दाः १७८० प्रभवादि गताब्दाः  
५१ ल् शेल्लानिन्नर कालयुक्ति नाम संवत्सर आषाढ शुद्ध  
पूर्णिमा-तिथियिल् श्रीमद् बेलगुलमठत्तिल् श्रीमन् नित्य पूजा  
निमित्तं श्रीमत्पञ्चपरमेष्ठि प्रतिबिम्बमानदु तञ्जनगरं पेरुमाल्  
आवकराल् संयिबत्त उभयं ॥ वर्द्धतां नित्य मङ्गलं ॥

[ बेलगुल के मठ में नित्य पूजन के लिए तञ्ज नगर के पेरुमाल  
आवक ने यह पञ्चपरमेष्ठी की मूर्ति उक्त तिथि को अर्पित की । ]

४३८ ( ३५८ )

## गणधर मूर्ति के पृष्ठ भाग पर

( ग्रन्थ और तामिल )

वृषभसेन गणधरन् भरतेश्वर चक्रवर्त्ति गौतमगणधरन् श्रेणिक  
महामण्डलेश्वरन् ( कन्नड में ) कलसदल्लिरुव पदुमैय्यन धर्म्म ।

४३८ ( ३५६ )

## पञ्चपरमेष्ठि मूर्ति पर

( ग्रन्थ और तामिल )

बेलिगुल मटत्तुक्कु मन्नाकोविल् सिन्नु मुदलियार् पेण्शादि  
पञ्चावतियम्माल् उभयं शुभं ।

[ मन्नाकोविल के सिन्नुमुदलियार् की भायां पञ्चावतियम्माल्  
ने बेलिगुल मठ को अर्पित की ]

४४० ( ३६० )

## चतुर्विंशति तीर्थङ्करमूर्ति के पृष्ठ भाग पर

( ग्रन्थ और तामिल )

स्वस्ति श्री बेलिगुलमठस्य तच्चूरु-अजिकाधर्मः

४४१ ( ३६१ )

## अनन्ततीर्थकर प्रभावली के पृष्ठभाग पर

( ग्रन्थ और तामिल )

श्री शालिवाहन शकाब्दाः १७८० श्रीमत् पश्चिमतीर्थ-  
कर मोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ ल् शेल्लानिन्ऱ  
कालयुक्तिनामसंवत्सर आषाढशुद्धपूर्णिमातिथियिन् श्रीमत्वे-  
ल्लुलनगरभण्डारजिनालयत्तिल् अनन्तवृत्तोद्यापनानिमित्तं श्री



वृषभायनन्ततीर्थकरपर्यन्तचतुर्दशजिनप्रतिबिम्बमानदु तज्ज-  
नगरं शक्तिरं अप्पावु श्रावकराल् शेयित्त उभयं वर्द्धतां  
नित्यमङ्गलं ॥

[ वेल्गुल नगर की भण्डार वस्ति में अनन्तव्रत के पूर्ण होने पर उक्त तिथि को तज्जनगर के शक्तिरम् अप्पाउ श्रावक ने प्रथम चतुर्दश तीर्थकरों की मूर्तियाँ अर्पित कीं । ]

४४२ ( ३६३ ) श्री चामुण्डरायन वस्तिय सीमे ।

४४३ ( ३६४ ) श्री नगर जिनालयद करे ।

४४४ ( ३६५ ) श्री चिकदेवराजेन्द्रमहास्वामियवरकल्याणि

४४५ ( ३६६ ) स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल  
तलकाडुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णु-  
वर्द्धन होयसलदेवर विजयराज्यमुत्तरो-  
त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क...

४४६ ( ३६७ )

**जक्किट्टे के दक्षिण में एक चट्टान पर जिन-  
मूर्ति के नीचे**

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाब्धनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥

श्रीमूलसङ्घद देशियगण्ड पुस्तकगच्छद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-  
देवर गुडि दण्डनायक-गङ्गराजनत्तिगे दण्डनायक-बोप्पदेवन

तायि जकमव्वे मोत्त-तिलकमं नेन्तु नेम्बरे नयणन्द-देवर  
माडिसि प्रतिष्ठेय माडिसिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ।

४४७ ( ३६८ ) स्वस्ति श्रीमत्**शुभचन्द्र**सिद्धान्तिदेवर  
गुड्डं श्रीमनु महाप्रचण्डदण्डनायक गङ्ग-  
पय्यगलत्तिगे शुभचन्द्र देवर गुड्डि जक्कि-  
मव्वे केरेय कट्टिसि नयणन्द देवर माडि-  
सिदरु मङ्गलमहा श्री श्री ॥

४४८ ( ३६९ ) पुट्टसामि चैन्नणन कोलद मार्ग ।

४४९ ( ३७० ) चैन्नणन कोलद मार्ग ।

४५० ( ३७१ ) पुट्टसामि सट्टर मग चैन्नणन हालुगोल ।

४५१ ( ३७२ ) चैन्नणन अमृतकोल ।

४५२ ( ३७३ ) चैन्नणन गङ्ग बावनी कोल ।

४५३ ( ३७४ ) श्री पुट्टसामि सट्टर मकलु चिकणन तम्म  
चैन्नणन अदि-तर्तद कोल जय जया ।

४५४ ( ३७६ ) श्री गोम्मट देवर अष्ट विधाचर्चनेगे... हिरिय  
...यिकूल.....द...लजन कयिकन्तिय  
...ज बिट्ट दत्तिय श्रीमन्महा...चार्य्यरु  
हिरिय नयकीर्त्ति-देवर चिकनय-  
कीर्त्ति देवर आचन्द्रार्कतारंवरं सलिसु-  
त्तिहरु मङ्गलमहा श्री श्री श्री क्षयसंवत्सरद  
चैत सुद्ध ७ आ । श्रीमन्महामण्डलाचार्य्यरु  
हिरियनयकीर्त्तिदेवर सिष्यरु चन्द्रदेवर

सुतालयद चतुर्विंशतीर्थकरिगे.....रिय  
कय्यलु सासनद सारिगे.....

[ यह लेख अधूरा है । इसके ऊपर और नीचे का भाग बिलकुल ही घिस गया है । लेख में चतुर्विंशति तीर्थकरों की अष्टविध पूजन के लिए उक्त तिथि को कुछ भूमि के दान का उल्लेख है । इस दान को ज्येष्ठ नयकीर्त्ति और लघु नयकीर्त्ति आचन्द्रार्कतारं नियत रखें । ]

४५५ ( ४८० )

मठ में वर्द्धमान स्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर  
( ग्रंथ और तामिल )

श्रीवर्द्धमानायनमः । शालीवाहन शकाब्दः १७८० श्री-  
मत्पश्चिमतीर्थङ्करमोक्षगताब्दः २५२१ प्रभवादिगताब्दः ५१ ल्  
शेळानिन्नर कालयुक्ति नाम संवत्सर आषाढ शुद्ध पूणिमा तिथि-  
यिल् श्रीमद् बेल्गुमठत्तिल् नित्यपूजा-निमित्तमाग श्री सन्मति-  
सागरवणिगलुदैय अभीष्टसिद्धयर्थ श्रीवीर-वर्द्धमान स्वामिप्रति-  
विम्बं कञ्चिदेशं शेण्णियम्बाक्कं अप्पासामियाल् सैय्वित्त उभयं  
एधता नित्यमङ्गलं ॥

४५६ ( ४८१ )

चन्द्रनाथस्वामी की प्रभावली पर  
( ग्रंथलिपि में )  
( शक सं० १७७८ )

श्री चन्द्रनाथाय नमः ॥

अष्टा-सप्तत्यधिकात्सप्त-शतोत्तर-सहस्रकाङ्गुणिते ।

शालीवाहन-शकनृप-संवत्सरके समायाते ॥ १ ॥  
 एकान्न-विंशति-युतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।  
 श्री-वर्द्धमान-जिनपति-मोक्ष-गताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥  
 एकन्यूनशतार्धात्प्रभवादिगताब्दके च संगुणिते ।  
 एवं प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥  
 मीने मासि सिते पक्षे पूर्णिमायान्तिथौ पुनः ।  
 अवाक्-काशीतिविख्यात-बेल्गुले नगरे मठे ॥ ४ ॥  
 श्रीचारुकीर्त्ति-गुरुराडन्तेवासित्वं ईयुषां ।  
 मनोरथ-समृद्धयै सन्मत्तिसागर-वर्णिनां ॥ ५ ॥  
 कुम्भकोण-पुरस्था श्री-नेकका श्रावकी शुभा ।  
 स्थापयामास सद्भिम्बं चन्द्रनाथ-जिनेशिनः ॥ ६ ॥  
 प्रतिष्ठा-पूर्वकन्नित्य-पूजायै स्वोपलब्धये ।  
 पञ्च-संसार-कान्तार-दहनाय शिवाय च ॥ ७ ॥

भद्रं भूयात् ।

४५७ ( ४८२ )

**नेमिनाथस्वामी की प्रभावली के पृष्ठ भाग पर**

( ग्रन्थ अक्षरों में )

( शक सं० १७७८ )

श्री नेमिनाथाय नमः ।

अष्टासप्तत्यधिकात्सप्तशतोत्तरसहस्रकाद्गुणिते ।

शालीवाहनशकनृपसंवत्सरके समायाते ॥ १ ॥

एकान्नविंशतियुतात्पञ्चशतसहस्रयुग्मकाद्गुणिते ।  
 श्रीवर्द्धमानजिनपतिमोक्षगताब्दे च सञ्जाते ॥ २ ॥  
 एकन्यूनशताद्धात्प्रभवादिगताब्दके च सङ्गुणिते ।  
 एवं प्रवर्त्तमाने नलनामाब्दे समायाते ॥ ३ ॥  
 मीने मासि सिते पक्षे पौर्णमास्यान्तिथौ पुनः ।  
 अवाक् काशीतिविख्यातबेलगुले नगरे वरे ॥ ४ ॥  
 भण्डारश्रीजैनगेहे श्रीविहारोत्सवाय च ।  
 अनन्तभवदावाग्नीशमनाय शिवाय च ॥ ५ ॥  
 श्रीचारुकीर्त्तिगुरुराडन्तेवासित्वमीयुषां ।  
 मनोरथसमृद्धयै सन्मत्तिसागरवर्णिनां ॥ ६ ॥  
 शात्तण्णश्रीष्ठिना शुम्भत्कुम्भकोणमुपेयुषा ।  
 श्रीनेमिनाथविम्बोऽयं स्थापितस्स प्रतिष्ठितः ॥ ७ ॥

४५८ ( ४८३ )

## पण्डित दीर्बलिशास्त्रि के घर शान्ति- नाथ मूर्त्ति के पृष्ठभाग पर

( नागरी अक्षरों में )

सं १५७६ व० शा० १४४१ प्र० कर प्र० कु० सहित पौ०  
 मासे श्रीउस० ज्ञा० सोनीसीहा भार्या धर्म्माई नाम्ना पुत्र सो  
 सिङ्गारीया श्रेयोह । वि...मासे० शु० प० ६ सोमे श्री  
 शीतलनाथ विम्बं कारितं । प्र० श्री० वृ० त० पाप । श्रीवि-  
 लसामुक्कुरिभिः ।

४५६ ( ४८४ )

## गरगट्टे विजयराज्यय के घर जिनमूर्ति के पाद पीठ पर

श्रीमद् देवणन्दि भट्टारकर गुड्डि मालब्बे कडसतवादिय  
तीर्थद वसदिगे कोट्टल्

४६० ( ४८५ )

## गरगट्टे चन्द्रय के घर जिनमूर्ति के पादपीठ पर

श्रीमत्कण्णवे कन्तियरु कलसतवादिय तीर्थद वस-  
दिगे कोट्टर्

४६१ ( ४८६ ) मल्लिषेण । ४६२ ( ४८७ ) वीरण ।

४६३ ( ४८८ ) चिकणन तम्म चैन्नणन कोल ।

४६४ ( ४८९ ) पुटसामि चैन्नणन मण्टप कोल तोट ।

४६५ ( ४९० ) चिकणन त.....चैन्नणन कोल ।

४६६ ( ४९३ ) हालोरति ।

४६७ ( ४९४ ) श्रीजिननाथ पुरद सीमे ।

४६८ ( ५०० )

## मठ के दायीं ओर तेरिन मण्डप में रख पर

शालिवाहन शक १८०२ ने विक्रमनामसंवत्सरद माघ  
शुद्ध ५ ल्लु वीराजेन्द्रप्याटेयल्लु इरुव रायणनशेट्ट अत्तिगे जिन्न-  
मन शेवर्त्त ।

[ वीर राजेन्द्रप्याटे के रायणनसेट्टि की भावज ने प्रदान किया ]

## अवणवेल्गुल के आसपास के ग्रामों के शिलालेख । जिननाथपुर के लेख

४६६ ( ३७८ )

### शान्तीश्वर बस्ती के द्वार पर

स्वस्ति श्रीजगन्नाथ...बलिय पुनकालर मगं जूनिकवन तम्मं  
चोल पैर्म्डियर मरुलारद गण्ड...सावितरदेव...स...मुग  
.....रि.....ल.....लरनडि...रं कादि कोन्दुजाल...न्द्र  
गङ्गर बीडिन उरं कचेयरे भु...सेमर सुरिगेल् कलगमेनितु रि...  
यिसिजसक्के कवन्दद नि...तन्न मोम्मक्कलु...गसु...सिडिल्  
त...मल् तुलिद...गेकान्त.....गोल् मरि सत्तलेङ्कर अन्द  
पेकिनेम्ब सि.....गिङ्गे.....र.....सा.....र परि  
.....गुल् तब्ब...क.....लल्लदे

गङ्गर प.....जिनतीर्थद बा...स्तल्-अग्रगण्यनु...ङ्ग  
चोल-स...पडवरिगे ॥ ...सन्दनाग.....निलेगजन...लदत  
...लु यवनल्प चन्दम .....गु.....दागि.....यदि जिन-  
पूजेयनेयदे माडिदं ॥...लगचित्र.....तनग.....विद.....  
ल स.....न...दि महसन्धसनें गय्यनिप्प...तन्न...दिन वर-  
नेरय...त सनु...

.....श्रमरिद बेम काम सले..... रद सन्यासनदि  
.....दिरन.....म...प नेट्टन्दवदि...सङ्ग नि...जर्विल्ले...  
बलेह...गाविगलात्म येन्तल् चित्त...कुडेदेयनिरि.....मोद...  
.....तिदे.....

[ इस अत्यन्त दूटे हुए लेख के प्रथम भाग में चोल और गङ्ग के नरेशों के बीच घोर युद्ध का और अन्तिम भाग में किसी के समाधि-मरण का उल्लेख है ]

४७० ( ३७६ )

## उसी बस्ती के रङ्गमण्डप में एक स्तम्भ पर

श्री शुभमस्तु ।

स्वस्ति सद्गुदय शालिवाहन सक वरुस १५५३ प्रजोत्पत्य  
संवत्सरद पाल्गुण सुध ३ लु कम्ममेन्य लोहित गोत्रद नर्ल  
मलि सेट्टि मग पालेद पदुमण्णनु यि-वस्ति प्रतिष्ठे जीर्णदार  
माडिदरु मङ्गल महा श्री श्री श्री

[ उक्त तिथि को कम्ममेन्य लोहितगोत्र के नर्लमलिसेट्टि के पुत्र  
पालेद पदुमण्ण ने इस वस्ति का जीर्णोद्धार कराया । ]

४७१ ( ३८० )

## शान्तीश्वर बस्ति में शान्तीश्वर की पीठिका पर

स्वस्ति श्री मूलसङ्घ-देशियगण-पोस्तकगच्छद कोण्डकुन्दा-  
न्वय कोल्लापुरद सावन्तन बसदिय प्रतिबद्धद श्री-माघनन्दि-  
सिद्धान्त-देवर शिष्यरु शुभचन्द्र-त्रैविद्य-देवर शिष्यरप्प साग-  
रणन्दि-सिद्धान्तदेवरिगे वसुधैक-बान्धव श्रीकरणद रेचिमय्य-  
दण्डनायकरु शान्तिनाथ-देवर प्रतिष्ठेयं माडिधारा-पूर्वकं कोट्टरु

४७२ ( ३८१ ) सङ्गम देवन कोडगिय मने

४७३ ( ३८२ ) श्रीमतु त्रिकालयोगिगल्लु मठ मोदलो-



तिर्दरु श्री मूलसङ्घद अभयदेवरु नाम...

दे तम्मुत्तिपदव...र इह ॥

४७४ ( ३८३ ) स्वस्ति श्री विजयाभ्युदय शालिवाहन  
शक वरुष १८१२ नेय विरोधि नाम  
संवत्सरद वैशाख बहुल पञ्चमियल्लु  
श्रीमद् बेल्गुल निवासियागिद् मेरुगिरि  
गोत्रजराद श्री बुजबलैय्यनवरिगे निश्रेय  
सुखाभ्युदय प्राप्त्यर्थ-वागि प्रतिष्ठेयं  
माडिसिदं ॥

[ यह लेख अरेगल्लु बस्ति की प्रतिमा पर है ]

४७५ ( ३८५ )

**जिननाथपुर में तालाब के निकट एक चट्टान पर**

साधारण-संवत्सरद श्रावण सु १ । आ । श्रीमन्महाम-  
ण्डलाचार्यरु राज-गुरुगलुमप्प हिरिय-नयकीर्त्ति-देवर  
शिष्यरु नयकीर्त्ति-देवर तम्म गुरुगलु बेक्कनलु माडिसिद वस-  
दिय चेन्न-पारिश्वदेवर अष्ट-विधार्चनेगे हिरिय-जक्कियंवेय-केरेय  
हिन्दण नन्दन-बनदोलगे गदे सलगे ख २...र्व्वकं माडिकोट्टरु  
मङ्गल-महा श्री श्री श्री ॥

[ उक्त तिथि को महामण्डलाचार्य राजगुरु हिरिय नयकीर्त्तिदेव के  
शिष्य नयकीर्त्तिदेव ने अपने गुरु बेक्क की बनवाई हुई बस्ति के चेन्न-  
पार्श्वदेव की अष्टविध पूजन के लिए उक्त भूमि का दान दिया ।

४७७ ( ३८६ )

## उसी ग्राम में एक चट्टान पर

.....सि.....श्री.....भन.....गिरे माडि...  
.....दव्रतिय..... मुनिराजरिन्द.....विलु .....भरदिन्द  
समाधि...मुं नाडुं प्रभु ब्रातमुं ।

नेरेदिन्तेल्लरुमिहुं कोट्टरमल्लाम्भोराशियुं मेरु भू-  
धरमुं चन्द्रनुमकर्कनुं वसुधेयुं निल्वन्नेगं सल्वनं ॥ १ ॥

इन्त् ई-धर्ममं किडिसिदवरु गङ्गये तडियल्लेक्कोटिमुनीन्द्रं  
कविलेयुं ब्राह्मणरुमं कोन्द ब्रह्मत्तियलु होहरु ।

[ इस दूटे हुए लेख में किसी दान का उल्लेख है जिसके विच्छेद से गङ्गा के तीर पर सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौश्रों और ब्राह्मणों की हत्या का पाप होगा । ]

४७७ ( ३८७ ) श्रीमतु सिङ्ग्यप नायकर कोमरन निरू-  
[काले गौड की भूमि में] पदिन्द बेक्कन गुरुवप सोवपनोलगाद  
प्रभुगलुचामुण्डरायन बस्तिगे समर्पिसिद  
सीमे श्री ।

[सिङ्ग्यप नायक की आज्ञा से बेक्कन के गुरुवप सोवप आदि 'प्रभुओं' ने यह भूमि चामुण्डराय बस्ति को अर्पण की । ]

४७८ ( ३८८ ) श्रीविष्णुवर्धन • देवर हिरियदण्डनायक  
गङ्गपय्य स्वामिद्रोह घरट्ट श्रीबेलुगुलद

तीर्त्तदलु जिननाथ-पुरवमाडि य...स्तयस  
 .....रदलु.....ह-घरट्टनेम्ब कोलग...  
 जगलवाडिद.....विष्णुवर्द्धन देवर...  
 को परिहार ॥ द्रोहघरट्ट-नेचव कोलु ।

[ इस दूटे हुए लेख में विष्णुवर्द्धन नरेश के प्रधान दण्डनायक गङ्गापथ्य द्वारा बेलगुल में जिननाथपुर निर्माण कराये जाने का उल्लेख है ]

४७६ ( ३८६ )

**जिननाथपुर में शान्तिनाथ बस्ति से पश्चिमोत्तर  
 की ओर एक खेत में समाधिमण्डप पर**

( शक सं० ११३६ )

ओं नमः सिद्धेभ्यः ।

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलाचार्यरु' राज-गुरुगलेनिप बेलि-  
 कुम्बद श्री-नेमिचन्द्र-पंडितदेवरेन्तप्परेने ॥

वृत ।

परमजिनेश्वरागम-विचार-विशारदनात्मसद्गुणो-

त्कर-परिपूर्णनुन्नत-सुखार्थि विनेय-जनोत्पल-प्रियं ।

निरुपम-नित्यकीर्त्ति-धवलीकृत.....नेन्दु लोकमा-

दरिपुदुसूरि...निधिचन्द्रमनं मुनि-नेमिचन्द्रनु ॥

अवर प्रिय-शिष्यरूप श्रीमद्दालचन्द्र-देवर तनयन स्वरूप-  
 निरूप.....नन्तण्णन वाग्विलासवार्प.....

तण्णन सञ्चरित्र.....गदोलु ॥ जन-जिन-मणि...निहा  
 ...कं.....नियवे...न रूप-यौवन-गुणसम्पत्तियिन्दातं  
 वत्तिगु.....भुवन-भूषण-बालचन्द्र...रुहक . ल . य  
 ....बहल-चदु.....गजराज.....तीव्र-ज्वरो...कक्कशः  
 प्रतिका...रिय...सक-वर्षद ११३६ नेय श्रीमुखसंवत्स-  
 रद कार्तिक शुद्ध ५सो । प्रभात-समयदोलु सन्यसन-  
 समन्वितं ॥

कन्द ।

पञ्च-नमस्कार मन

सञ्चलिसदेन्तोप्पुदु सकल...

...बदु.....गरुह

.....र दिविज-वधुगे वल्लभनादं ॥

...यम्म...सादरक.....

...य यल्लरुं ॥ अन्तु...देवर धि...यर दहन-स्तानदोलु

परोत्त...निमित्तवागि बैराजनि माडिसिद बालचन्द्र

देवर मग...न शिलाकूटं ॥ मात.....शील-व्रत...

गुण.....द विभव.....भूतलदोलु कालब्बेये सीतेगे

रुग्मिणिगे रतिगे सरि दोरे सम.....वेनिसिदा-महासति

त्तयि.....स्तानमनरिदे.....भाव-संवत्सरद जेष्ट-

व । द्वि । निशान्तदोलु सल्लेखन-विधियि समाधिय पडेदु

स्वर्ग-प्राप्तेयादलु ॥ श्रीशान्तिनाथाय... ॥

[ इस दूटे हुए लेख में बेलिकुम्भ के महामण्डलाचार्य नेमिचन्द्र पण्डित देव के प्रिय शिष्य व बालचन्द्रदेव के तनय के उक्त तिथि को समाधिमरण का उल्लेख है। उनकी शमशानभूमि पर यह शिलाकूट बनवाया गया। लेख के अन्तिम भाग में साध्वी कालबे के समाधि-मरण का उल्लेख है। ]

### जिन्नेनहल्लिग्राम के लेख

४८० ( ३६० ) श्री शकवर्ष १५८६ प्रमादी च संवत्स-

१ रद वैशाख बहुल ११ यल्लि समुद्रादीश्वर  
स्वामियवर नित्यसमाराधने नित्योत्सह  
कोलतोड मण्टपद सेवेगे पुटसामि सेट्टियर  
मग चेन्नणनु बिट्ट जिन्नेयन हल्लिय ग्राम  
मङ्गल महा श्री श्री श्री ।

[ उक्त तिथि को पुटसामि के पुत्र चेन्नण ने समुद्रादीश्वर ( चन्द्र-  
नाथ ) स्वामी के नित्य पूजनोत्सव के व कुण्ड, उपवन और मण्डप  
की रक्षा के हेतु जिन्नेयन हल्लि ग्राम का दान किया ]

४८१ ( ३६१ ) श्री चामुण्डरायन वस्तिय सीमे ॥ श्री

### हालुमत्तिगट्ट ग्राम के लेख

४८२ ( ३६२ ) रुस..... विक.....वरु...सङ्कणनंगं

कोडगि तोट.....दा सिला ससन.....

करण वि...कन... ..सङ्कणनगवू

आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख ३८१

**चिकसङ्कण...प्र...न बरकोट कोडग...**

.....ला ससन मङ्गल महा श्री श्री ।

[ इस दूटे हुए लेख में एक उद्यान के दान का उल्लेख है ]

४८३ ( ३८३ ) दे.....य-नायकन मग मादेय नायक

माडिसिद नन्दि

[मादेय नायक ने नन्दि निर्माण कराई ]

**कण्ठीरायपुर ग्राम के लेख**

४८४ ( ३८५ ) श्रीमत् पण्डितदेवरुगल गुडुगल बेल-

गुलद नाड चेन्नण-गौण्डन मग नागगोण्ड

मुत्तगदहोन्न...लिय कल्लगोण्ड बैर गोण्ड-

नालगाद गौडुगल मङ्गायि माडिसिद वस्तिगं

कोट्ट वोट्टुर कट्टेय गद्दे बेदलु यि-धम्मके

तपिदवरु वारणासियलु... हसकपिलेय

कोन्द पापके होह.....ल-महा श्री श्री श्री।

[ पण्डितदेव के उक्त शिष्यों ने मङ्गायि की बनवाई हुई वस्ति को वड्डुरकोट्टे की भूमि प्रदान की । जो कोई इस दान का विच्छेद करे उसे बनारस में एक हजार कपिला गौओं की हत्या का पाप हो । ]

४८५ ( ३८६ ) श्री चामुण्डरायन वस्ति सीमे ।

## साणेन हल्लिग्राम के लेख

४८ई ( ३६७ )

( शक सं० १०४१ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाब्धनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रमस्तुजिनशासनाय सम्पद्यताम्प्रतिविधान-हेतवे ।

अन्यवादि-मद-हस्ति-मस्तक-स्फाटनाय घटने पटीयसे ॥२॥

नमः सिद्धेभ्यः ॥ नमो वीतरागाय ॥ नमो अरुहन्ताय ॥

स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दाख्ये विख्याते देशिके गणे ।

सिंहणन्दि-मुनीन्द्रस्य गङ्ग-राज्य-विनिर्मितं ॥ ३ ॥

[ आगे लेख की १ से ४० पंक्ति तक गङ्गराज का वही वर्णन है जो लेख नं ६० ( २४० ) के तीसरे पद्य से आगे १४ वें पद्य तक पाया जाता है । ]

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द.....नूर्मडि धन्यनल्ले  
॥ १५ ॥

इससे आगे—

अन्तु बेडिकोण्डु श्री पार्श्वदेवर पृजेगं कुक्कुटेश्वर-देवर्ग  
विहर सक-वर्ष १०४१ नेय विलम्बि-संवत्सरद फाल्गुण-  
शुद्ध दसमि ब्रह्मवारदन्दु शुभचन्द्र-सिद्धान्ति-देवर कालं  
कच्चिर्व विट्ट-दत्तिय गोविन्दवाडिगे मूडण-सीमे ईशाङ्ग-दिशेय  
परेय को...तोण्टिगेरेय निरुह क्लेल्लहनहल्लिग होद बट्टेय

दिब्बेय सारण हुलुमाडिय गडि तेङ्कलु अर्हनहल्लियिन्दा...  
मदिपुरक्कं हिरिय-देवर बेट्टक्कं होद हेब्बट्टेये गडि हडुवलु  
हिरिय...हल्ल नजुगेरे बैक्कननिप...वडकलु गङ्गसमुद्रक्के  
चल्यद हडुवण दिण्नेयिं पडुवलु गडि यिन्ती-चतुस्सीमेयं पूर्व  
...वक्कन...नुं प्रत्यधिवासद...पडु.....गोम्मटपुरद पट्टण-  
स्वामि मल्लि सेट्टियरु...सेट्टि गण्डनारायण-सेट्टियुं मुख्यवाद  
नकर-समूहमुमिद्दुमाडिद मय्यादे यिन्तीधम्ममं प्रतिपालिसु-  
वर्गो महा-पुण्यं अक्कुं ॥

वृत्तं ॥

प्रियदिन्दिन्तिदनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महा-श्रीयुम-  
क्केयिदं कायदे कायव पापिगे कुरुत्तेत्रोर्व्वियोलु वारणा-  
शियोलेक्कोटि-मुनीन्द्ररं कविलेयं वेदाढ्यरं कोन्दुदो-  
न्दयसंसारगुमेनुत्ते सारिदपुदी-शैलात्तरं सन्ततं ॥ १६ ॥

विरुद-रूवारि-मुख-तिलकं गङ्गाचारि खंडरिसिदं ॥

[ इस लेख में लेख नं० १० ( २४० ) के समान गङ्गराज के कीर्तिवर्णन के पश्चात् उल्लेख है कि उन्होंने विष्णुवर्द्धन नरेश से गोविन्दवाडि ग्राम को पाकर उसे पार्श्वदेव और कुक्कुटेश्वर की पूजा के हेतु उक्त तिथि को शुभचंद्र सिद्धान्त देव का पादप्रक्षालन कर दान कर दिया । जो कोई इस दान का पालन करेगा वह दीर्घायु और वैभव सुख भोगेगा पर जो कोई इसका विच्छेद करेगा उसे कुरुत्तेत्र व बनारस में सात करोड़ ऋषियों, कपिला गौश्रों व वेदज्ञ पण्डितों की हत्या का पाप होगा । लेख को गङ्गाचारि ने उत्कीर्ण किया है । ]

४८७ ( ३६८ ) ...रिसिदेवगे विट्ट दत्तिय गदेय.....



३८४ आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख

ब्रहेति कवि सेटियुं मडना बिट गदे  
सलगे ओन्दु कोलग ।

[ इसमें कवि सेट्टि के कुछ भूमि के दान का उल्लेख है ]

४८८ ( ३६६ ) श्री वृषभस्वामि

( खण्डित मूर्ति के पादपीठ पर )

४८९ ( ४०० ) श्री मूलसङ्गद देशिगणद पोस्तक गच्छद

श्री शुभचन्द्र सिद्धान्त देवर गुडिज-  
जिकियवे दण्डनायकिति साहलि.....

८ देवगो प्रतिष्ठेयं माडि जजिकियवे...

...डर मग पयमगद स.....चुनरेय

...दवाडिय.....यलु सलगे बेदले

कोलगं ५ गोविन्द-पडिय कोलग १

बेदले कण्डुग ।

[ शुभचन्द्र सिद्धान्तदेव की शिष्या जिकियवे ने मूर्ति की स्थापना कराई और गोविन्द वाडि की उक्त भूमि अर्पण की । ]

### सुण्डहल्लिग्राम का लेख

४९० ( ४०७ )

.....संवत्सरद मार्गशिर शु. १० ब्रह्मवार

.....न्महामण्डलाचार्यरु नेमिचन्द्र

पण्डितदेवरु .....पट्टणस्वामि नागदेव

हेगाडेवुं केज्जगीडनुं..... न मग मार

गौड करेयं कट्टिदनलेयेन्दु आत .....  
 हारिसुबुदिल्ल ता तेरुव अय्यदु हणविन  
 दो... ..बेहले हडुवण मुत्तेरि सीमे  
 आतन म.....पय्यन्त सलुवन्तागि  
 कोट पतले प्रलिहिदव कविलेय कोन्द ॥

[ यह लेख कुछ भूमि का पट्टा है। इसमें महामण्डलाचार्य नेमिचन्द्र पण्डित देव का उल्लेख करके कहा गया है कि मारगौड ने एक तालाब बनाया; इसके लिए नागदेव हेग्गडे और केज्जुगौड ने उसे सदा के लिए उक्त भूमि का पट्टा दे दिया। ]

## बेक्कग्राम में बस्ती के सन्मुख एक पाषाण पर

( शक सं० १०८५ )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

श्रीकान्तापीनवत्तोरुहगिरिशिखरोज्जृम्भमानं विशालं

लोकोद्यत्तापलोपप्रवणविलसितं वीरविद्विड् महीपा-

नेकव्यामुक्तसञ्जीवनबहुलितोद्यद्गुणस्तोममुक्ता-

नीकं निष्कण्टकं निश्चलमेनलेसगुं होयसलच्चत्र-  
 वंशं ॥ २ ॥

अदरोल्मौक्तिकदन्ते पुट्टिदनिलापालौघचूडामणि-

त्वदिनुद्यद्गुणशोभेयिं स्वरुचियिं सद्भृत्तराराजित-

त्वदिनत्युन्नतजातिर्यिं सममेनत्सङ्ग्रामरङ्गप्रदेल्

मदवद्वैरिकुलप्रतापिविनयादित्यं धराधीश्वरं ॥३॥

क ॥ विनयादित्यन तनयं

जननुतन एरेयङ्गभूभुजं तत्तनुजं ।

विनुतं विष्णुनृपालं

मनस्वि तदपत्यं नेग...नरसिंहं ॥ ४ ॥

वृ ॥ नतनरपालजालक विशालविजृम्भितबालभासुरो-

द्धततिल.....गलनाहवरङ्गरामनू-

र्जितनिजपुण्यपुञ्जबलसाधितसर्व.....

.....महोन्नतिकेथिन्देसेदं नरसिंह भूभुजं ॥ ५ ॥

क ॥ आ-नरसिंहनृपाङ्गं

भूनुते पट्टमहदेवि तत्सतियादल् ।

मानिनिय् एचल देविये

दानगुणख्यातकल्पलतेवोल् आ..... ॥ ६ ॥

वृ ॥ ललनालीलगे मुन्नवेन्तु मदनं पुट्टिर्दना-विष्णुगं

विलसच्छ्रीवधुविङ्गवन्ते नरसिंहक्षोणिपालङ्गव् ए-

चलदेविप्रियेगं परार्थचरितं पुण्याधिकं पुट्टिदं

बलवद्वैरिकुलान्तकं जयभुजं बल्लाल भूपालकं ॥ ७ ॥

गतलीलं लालनालम्बितबहलभयोप्रज्वरं गूर्जरं

सन्धृतशूलं गौलनङ्गीकृतकृशतरसम्पन्नव पल्लव ।

प्रोज्झितचोलं चोलनादं कदनवदनदेल् भेरियं पोयसे वी-

राहितभूभृज्जालकालानलवतुलभुजं वीरबल्लालदेव ॥८॥

रिपुराजद्राजिसम्पत्सरसिरुह शरत्कालसम्पूर्णचन्द्रं

रिपुभूपापारदीपप्रकरपटुतरोद्भूतभूरिप्रवातं ।

रिपुराजन्यौघ...खलसौ.....लोमप्रतापं

रिपुपृथ्वीपालजाल क्षुभितयमनिवं वीरबल्लालदेवं ॥६॥

स्वस्ति समधिगत पञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारावती-  
पुरवराधीश्वरं । तुलुवबलजलदविलयानिलं । दायाददुर्ग-  
दावानलं । पाण्ड्यकुलकुलकुधरकुलिशदण्डं । गण्डभेरुण्डं ।  
मण्डलिकबेण्टेकार । चोलकटकसुरेकार । सङ्ग्रामभीम । कलि-  
कालकाम । सकलवन्दिजनमनस्तन्तर्पण प्रवणतरवितरणविनोदं ।  
वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसादं । यादवकुलाम्बरद्युमणि ।  
मण्डलिकचूडामणि । कदनप्रचण्ड । मलपरोल् गण्ड नामादि  
प्रशस्तिसहितं । श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल तलकाडु-कांगु-नङ्गलि-  
नेलम्बवाडि-बनवसे-हानुङ्गलुगण्ड भुजबलवीरगङ्गप्रतापहो-  
यसलबल्लालदेवरु दक्षिणमहीमण्डलमं दुष्टनिग्रह-शिष्टप्रतिपालन-  
पूर्वकं सुखसङ्कथाविनोददि दोरसमुद्रदेश् राज्यं गेयुत्तिरे ॥  
तत्पितामहविष्णुभूपालपादपद्मोपजीवि ॥

वृ ॥ नुते लोकास्त्रिके माते रुढजनकं श्रीयत्तराजं यशो-

न्विते यो-पद्मलदेवि वल्लभे जगद्विख्यातपुण्याधिपं ।

सुतनी-श्री नरसिंहदेवसचिवाधोशं जिनाधोशनी-

प्सितदैवं तनगेन्दोर्ध्वं विदितनो श्रीहुल्लदण्डाधिपं ॥ १० ॥

क ॥ जनकतनुजातेयिन्दं

वनजोद्भववनितेयिन्दवगलवेनिपल ।

जननुत पद्मलदेविय—

नून-पतिव्रतदिनमलचतुरतेयिन्दं ॥ ११ ॥

तत्पुत्र ॥

विनुत-नयकीर्त्ति-मुनिपद-

वनरुहभृङ्गं विदग्धवनिताङ्गं ।

कनकाचलगुणतुङ्गं

वनवैरिमदेभसिहनी-नरसिंहं ॥ १२ ॥

स्वस्ति श्री मूलसङ्घनिलयमूलस्तम्भरुं निरवद्यविद्यावष्टम्भरुं  
देशियगण गजेन्द्रसान्द्रमदधारावभासरुं । परसमयसमुत्पादित-  
सन्त्रासरुं । पुस्तकगच्छस्वच्छसरसीसरोजविराजमानरुं ।  
कोण्डकुन्दान्वयगगनदिवाकररुं । गाम्भीर्यरत्नाकररुं ।  
तपस्श्रीरुन्द्ररुमप्य गुणभद्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् ममहामण्डला  
चार्य नयकीर्त्ति सिद्धान्तदेवरेन्तपरेन्दडे ॥

वृ ॥ स्मरशस्त्राम्बुजदण्डचण्डमदवेतण्डं दयासिन्धु

बन्धुरभूभृद्वरनुद्धमोहबहलाम्भोरासिकुम्भोद्भवं ।

धरेयोल्तां नेगल्दं भयक्षयकरं लोभारिशोभाहरं

स्थिरनी-श्री-नयकीर्त्तिदेवमुनिपं सिद्धान्तचक्रेश्वरं ॥ १३ ॥

तच्छिष्यर् ॥

उरगेन्द्रक्षीरनीराकररजतगिरिश्रीसितच्छत्रगङ्गा-

हरहासैरावतेभस्फटिकवृषभशुभ्राभ्रनीहारहारा-

मरराजश्वेतपङ्केरुहहलधरवाक्शङ्खहंसेन्दुकुन्दो-

त्करचञ्चत्कीर्त्तिकान्तं बुधजनविनुतं भानुकीर्त्ति-  
व्रतीन्द्रं ॥ १४ ॥

सिद्धान्तोद्धतवार्द्धिवर्द्धनविधौ शुक्लैकपर्वोद्धत-  
स्ताराणामधिपो जितस्मरशरः पारात्थ्यपारङ्गतः ।  
विख्यातो नयकीर्त्ति' देवमुनिपश्रोपादपद्मप्रिय-  
स्सं श्रीमान्भुवि भानुकीर्त्ति' मुनिपो जीयादपारावधि ॥ १५ ॥

शक वर्षद १०६५ नेय विजयसंवत्सरद चौष्यबहुल  
चौतिमङ्गलवारदन्दु उत्तरायण सङ्क्रान्तियस्त्रि भानुकीर्त्ति'  
सिद्धान्त देवरनधिपतिगलागि माडि तद्गुरुगलप्प नयकीर्त्ति'-  
सिद्धान्तचक्रवर्त्तिगल्गेधारापूर्वकं माडि ॥

वृ ॥ अचलश्रीयुतगोम्मटेशविभुगं श्रीपार्श्वदेवङ्गवु-  
द्ध-चतुर्विंशतितीर्थकर्गवेसवी-सत्पूजेगं भोगकं ।  
रुचिरान्नोत्करदानकं मुददे बिट्टं बेक्कनेम्बूरनु-  
द्ध-चरित्रं सले मेरुवुल्लिनेगवी-बल्लालभूपात्तमं ॥ १६ ॥  
क्रमदि गोम्मटतीर्थपूजेगवशेषाहारदानकवु-  
त्तमरं मुख्यरनागि माडि विदित श्री भानुकीर्त्ति'श्वरं ।  
विमदङ्गी-नयकीर्त्ति'-देवयतिगाकल्पं सलल्बेकनं  
सुमनस्कं विभुहुल्लपं बिडिसिदं श्री वीरबल्लालनिं ॥ १७ ॥

ग्राम सीमे ॥ ( यहाँ सीमा का वर्णन है ) इदु बेक्कन  
चतुस्सीमे ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा ( इत्यादि )

[ चन्नरायपट्टन १४६ ]

[ लेख नं० १२४ के समान होयसल वंश के परिचय व वीरबल्लाल-देव के प्रतापवर्णन के पश्चात् बल्लाल नरेश के दण्डाधिपति हुल का परिचय है । हुल यत्तराज और लोकाम्बिके के पुत्र थे । उनकी पत्नी का नाम पद्मलदेवी और पुत्र का नरसिंह सचिवाधीश था । हुल जिन-पदभक्त थे । इसके पश्चात् कहा गया है कि उक्त तिथि को गुणभद्र के शिष्य नयकीर्त्ति के शिष्य भानुकीर्त्त व्रतीन्द्र को बल्लाल नरेश ने पार्श्व और चतुर्विंशति तीर्थंकर के पूजन के हेतु मारुहल्लि ग्राम का दान दिया । इसके कुछ पश्चात् हुलप ने बल्लालदेव से बेक्क ग्राम का भी दान दिलवाया । ]

४६२

## हले बेलगोल में ध्वंस बस्ती के समीप एक पाषाण पर

( शक सं० १०१५ )

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यतां प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाय घटने पटीयसे ॥ १ ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय-श्री-पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-  
मेश्वरपरमभट्टारक सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरणं श्रामत्  
त्रिभुवन-मल्लदेवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्क  
सलुत्तमिरेतत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपञ्चमहाशब्द महा-  
मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि

सम्यक्चूडामणि मलपरोल्गण्डाद्यनेकनामावलीसमालङ्कृत श्रीमत्  
त्रिभुवनमल्ल-विनयादित्य-पोयसलं ॥

श्रीमद्यादववंशमण्डनमणिः क्षोणीशरत्तामणि-  
ल्लक्ष्मीहारमणिर्नरेश्वरशिरःप्रोत्तुङ्गशुम्भन्मणिः ।  
जीयान्नोतिपथेक्षदर्पणमणिल्लोकेकचिन्तामणिः  
श्रीविष्णुर्विनयान्वितो गुणमणिस्सम्यक्चूडामणिः  
॥ २ ॥

एरेद मनुजङ्गे सुरभू-  
मिरुहं शरणेन्दवङ्गे कुलिशागारं ।  
परवन्तिगेनिलतनेयं  
धुरदोल्पोणर्दङ्गे मित्तुं विनयादित्यं ॥ ३ ॥

रक्कस-पोयसलनेम्बा-  
रक्करमं बरेदु पटमनेत्तिदडिदिरोल् ।  
लक्कद समलेक्कदे मरु-  
वक्कं निन्दपुवे समरसङ्घट्टणदोल् ॥ ४ ॥

बलिदडे मलेदडे मलपर  
तलेयोल्बालिडुवनुदितभयरसवसदिं ।  
बलियद मलेयद मलपर  
तलेयोल्कैयिडुवनोडने विनयादित्यं ॥ ५ ॥

आ-पोयसलभूपङ्गे म-  
हीपालकुमारनिकरचूडारत्नं ।



श्रीपति निजभुजविजय-म-

हीपति जनिथिसिदनदटन् **एरेयङ्ग** नृपं ॥ ६ ॥

वृत्त ॥ अनुपमकीर्त्ति मूरेनेय मारुति नाल्कनेयुप्रवह्नियय्-

देनेयसमुद्रमारेनेय पूगण्येलनेयुर्वरेशनेण्

टनेय कुलाद्रियोम्भतनेयुद्रसमेतहस्ति पत्तेने-

य निधानमूर्त्तियेने पोल्बवरार् **एरेयङ्ग**देवनं ॥ ७ ॥

अरिपुरदोलधगद्धगिलु धन्धगिलेम्बुदराति-भू...

र शिरदोलु...ठगिलठ.....एम्बुदु वरिभूतले-

श्वरकरुलोलु चिमिलिचमिचिमिलिचमिलेम्बुदु...पलिहि दु-

र्द्धरतरमेन्दोडल्कुरदं पोलुवराम् **मलेरा** राजनं ॥ ८ ॥

कन्द ॥ मुररिपुव पिडिव चक्रद

हतिगं केसरिगमा-फणिध्वंसिय वि-

ष्फुरितनखहतिग **मेरेगन**

करवालगमिदिर्चिर्चि बर्दुङ्कलार्परुमोलर ॥ ९ ॥

इर्मर्मडि दधोचिमुनिगे प-

दिर्मर्मडि गुत्तगे चारुदत्तगत्तल् ।

नूर्म्मडि रविसूनुगे सा-

सिर्मर्मडि मेलु दानगुणदिन् **एरेयङ्ग**नृपं ॥ १० ॥

आ-महामण्डलेश्वरन गुरुगलेन्तप्परेन्दडे ॥

श्लोक ॥ श्रीमतो वर्द्धमानस्य वर्द्धमानस्य शासने ।

श्रीकोण्डकुन्दनामाभून्मूलसङ्घाग्रणी [गणी] ॥ ११ ॥

तस्यान्वयेऽजनि ख्याते विख्याते देशिके गणे ।

गुणी देवेन्द्र सैद्धान्तदेवो देवेन्द्रवन्दितः ॥ १२ ॥

जयति चतुर्मुखदेवो योगीश्वरहृदयवनजवनदिननाथः ।

मदनमदकुम्भकुम्भस्थलदलनोत्खणपटिष्ठनिष्ठुरसिंहः ॥ १३ ॥

तच्छिष्यो गोपनन्द्याख्यो बभूव भुवनस्तुतः ।

बाणीमुखाम्बुजालोकभ्राजिष्णुमणिदर्पणः ॥ १४ ॥

जयति भुवि गोपनन्दी जिनमतलसज्जलधितुहिनकरः ।

देशियगणाग्रगण्यो भव्याम्बुजषण्डचण्डकरः ॥ १५ ॥

वृत्त ॥ तुङ्गयशोभिरामनभिमानसुवर्णधराधरं तपो-

मङ्गललक्ष्मिवल्लभनिलातलवन्दित गोपनन्दिया-

वङ्गम-साध्यमप्य पलकालदे निन्द जनेन्द्रधर्ममं

गङ्गनृपालरन्दिन विभूतिय रूढियनेयदे माडिदं ॥ १६ ॥

जिनपादाम्भोजभृङ्गं मदनमदहरं कर्मनिर्मूलनं वा-

ग्वनिताचित्तप्रियं वादिकुलकुधरवज्रायुधं चारु विद्व-

ज्जनपात्रं भव्यचिन्तामणि सकलकलाकोविदं काव्यकञ्जा-

सननन्तानन्ददिन्दं पोगले नेगल्दनी-गोपनन्दि-

व्रतीन्द्रं ॥ १७ ॥

मलेयदे साङ्ख्य मट्टमिरु भौतिक पोङ्गि कडङ्गि बागदि-

त्तोल तोल बुद्ध बौद्ध तलेदारदे वैष्णव डङ्गडङ्ग वा-

ग्भरद पोडप्पु वेड गड चार्बक चार्बक निम्म दर्पमं

सलिपने गोपनन्दिमुनि पुङ्गवनेम्ब मदान्धसिन्धुरं ॥ १८ ॥

तगेयल् जैमिनि तिप्पिकेण्डु परियत्त्वैशेषिकं पोगदु-

ण्डिगे योत्तल्मुगतं कडङ्गि बलेगोयल् अत्तपादं विडल् ।

पुगे लोकायतनेयदे साङ्ख्य नडसल्कम्मम्म षट्त्तर्कवी-  
धिगलोत्तूलिदतु गोपनन्दिदिगिभप्रोद्वासिग-

न्धद्विपं ॥ १८ ॥

दिट नुडिवन्यवादिमुखमुद्रितनुद्धतवादिवाग्बलो-  
द्धटजयकालदण्डनपशब्दमदान्धकुवादिदैत्यधू-  
ज्जटिकुटिलप्रमेयमदवादिभयङ्करनेन्दु दण्डुलं  
स्फुटपटुघोष दिक्तटमनेयिदतु वाक्पटु गोपनन्दिय ॥२०॥  
परमतपोनिधान वसुधैवकुटुम्बक जैनशासना-  
म्बरपरिपूर्णचन्द्र सकलागमतत्वपदार्थशास्त्र-वि-  
स्तरवचनाभिराम गुणरत्नविभूषण गोपनन्दि नि-  
श्रोरैगिनिसप्पडं दोरेगलिच्छेणे गाणेनिलातलाग्रदोल् ॥२१॥

क ॥ एननेननेले पेल्वेनण स-

न्मानदानिय गुणव्रतङ्गलं ।

दानशक्तियभिमानशक्ति वि-

ज्ञानशक्ति सले गोपनन्दिय ॥ २२ ॥

वच ॥ इन्तु नेगल्द कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमूलसङ्घद देशि  
गणद गोपनन्दि पण्डितदेवर्गे १०१५ नेय श्रीमुखसंवत्स-  
रदपौष्यशुद्ध १३ आदिवार सङ्क्रान्तियन्दु श्रीमत-त्रिभु-  
वनमल्लन् एरेगङ्ग-वोयसलं गङ्गमण्डलमं सुखसङ्कथाविनो-  
ददिं राज्यं गेययुत्तमिहुं बेलगोलद कव्वप्पुतीर्त्थद वसदिगल  
जीण्णोधारणकं देवपूजेगं आहारदानकं पात्रपावुलकं राचनहल्ल  
मुमंबेलगोलपन्नेरडुमं धारापूर्वकं माडि विट्ट दत्ति ॥

( स्वदत्तां परदत्तां वा—इत्यादि श्लोकों के पश्चात्  
श्रीमन्महाप्रधान हिरिय दण्डाधिप.....मय्यङ्गे.....

... ..

[ चन्नरायपट्टन १४८ ]

[इस लेख में होयसल नरेश विनयादित्य और उनके पुत्र एरेयङ्ग की कीर्ति के पश्चात् कहा गया है कि त्रिभुवनमल एरेयङ्ग ने उक्त तिथि को कल्वप्पु पर्वत की वस्तिधों के जीर्णोद्धार तथा आहारदान व बर्तन वस्त्र आदि के लिए अपने गुरु मूलसंघ देशीगण कुन्दकुन्दान्वय के देवेन्द्रसैद्धान्तिक व चतुर्मुखदेव के शिष्य, गोपनन्दि पण्डितदेव को राचनहल्लै व बेलगोल १२ का दान दिया। लेख में गोपनन्दि आचार्य की खूब कीर्ति वर्णित है। उन्होंने जो जैनधर्म स्थगित हो गया था उसकी गङ्गनरेशों की सहायता से विभूति बढ़ाई। उन्होंने साङ्ख्य, भौतिक, वैशेषिक, बौद्ध, वैष्णव, चार्वाक जैमिनि आदि सिद्धान्तवादियों को परास्त किया इत्यादि।]

४६३

## चल्लग्राम के बयिरेदेव मन्दिर में एक पाषाण पर

( शक सं० १०४७ )

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावती-  
पुरवरेश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्चूडामणि मलप-

३८६ आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख

रोलु गण्डनुहण्डमण्डलिकशिरोगिरिवज्रदण्डं तलकाडुगोण्डं  
वीर-विष्णुवर्द्धनदेवनातनन्वयक्रमं यदुमोदलादनेकराजा  
सन्तानकदिं बलिकके ॥

यदुकुलकुलाद्रिशिखरदोलु  
उदियसिद्धं दुर्निरीक्षतेजोहृत स-  
म्पदरातिराजमण्डल-  
नुदात्तगुणरत्नवार्द्धिं विनयादित्यं ॥ २ ॥

आतन तनयं सकल-म-  
हीतल साम्राज्य लक्ष्मियुं तनगेक-  
श्वेतातपत्रमागे पु-  
रातननृपरेणगे वन्दन एरेयङ्ग नृपं ॥ ३ ॥  
आ-विभुगं नेगर्दं एचल-  
देविगमादर्त्तनूभववर्बललाल-

श्रीविष्णुवर्द्धन-  
राविक्रमनिधिगलनुजन् उदयादित्यं ॥ ४ ॥  
नेनेयल्पापक्षयं नोडिदोडभिमत संसिद्धि सद्भक्तियिन्दं  
मनमोल्दाराधिसल्लासुकृतदोदवनेवेल्बुदेम्बन्नेगम्मु-

न्नित पुण्यं वीररप्पा-नल्लनहुषरोलन्यूननादं जगत्पाव-  
नसत्यत्यागशौचाचरणपरिणतं वीरविष्णुक्षितीशं ॥ ५ ॥  
\* निर वद्यक्षत्रधर्मान्वितरेनिप महाक्षत्रियर्क्षोऽरुदोल्ना-  
त्वरेमुन्नं श्रीदिलीपं दशरथतनयं कृष्णराजं बलिकका-

\* यहाँ एक पंक्ति की कमी है

द्यर सादृश्यकवेन्दं यदुकुलतिलकं वीरविष्णुत्तितीशं ॥ ६ ॥

अदियमनोडिदोमने रोडिसि कल्लु नृसिंहवर्मनो-

डिदनवनोटमं गुणिसि चेङ्गिरि चेङ्गिरियल्लि कल्लु को-

ण्डदटिन कोङ्गरा-नेगर्द कोङ्गरनीत्तिसि पाण्ड्यनोडिदं

यदुतिलकङ्गे विष्णुधरणीपतिगोडदरार्द्धरित्रियोल् ॥ ७ ॥

व ॥ अन्तदियमनदटलेदु नृसिंहवर्मसिंहमं कदनदोलेच्चट्टि  
वैरिगल शिरोगिरिगलं दोर्दण्डवज्रदण्डदिन्दलरे पोयटु कल  
पाल कुलमं कलकुलं माडि तगुल्दङ्गरन सप्ताङ्गमुमनेलकुलि-  
गोण्डु दक्षिणसमुद्रतीरं वरं समस्तभूमियुमनेकच्छत्रछायेयिं  
प्रतिपालिसुत्तु तलवनपुरदोलसुखसङ्कथाविनोददिं राज्यं  
गेयुत्तमिरे ॥

श्रीवीरविष्णुवर्द्धन-

देवं षट्तर्कषणमुख श्रीपाल-

त्रैविद्यव्रतिगी-जै-

नावसतमनधिकभक्तियि माडिसिदं ॥ ८ ॥

पोसतेने ता माडिसिदी-

बसदियुमं बाडमिदरसम्बन्धियेन-

ल्लेसेवा.....

बसदियुमं तीर्थदल्लि कोट्टं मुददिं ॥ ९ ॥

आकुलतिलकङ्गे गुरुकुलमाद श्रीमद्द्रमिणगणद नन्दिस-

ङ्गद-रङ्गु लान्वयदाचार्यावल्लियेन्तेन्दोडे ॥

क्रम ह...महावीर-

स्वामिय तीर्थकके गौतमर्गणधररन्त ।

आ-मुनियिं बलिकाद म-

हा-महि मरेनि..... ॥ १० ॥

श्रुतकेवलिंगलु पलवरु-

मतीतरादिम्बलिकके तत्सन्तानो-

त्रतिथं समन्तभद्र-

त्रतिपर्त्तलेदरु समस्तविद्यानिधिगल ॥ ११ ॥

अवरिं बलिकम् एकसन्धि-सुमति-भट्टारकरवरिं बलिके  
वादीभसिंह श्रीमदकलङ्कदेवरवरिं वक्रग्रीवाचार्यरवरिं  
श्रीणन्द्याचार्य...यके राज्यवामुददिं सिंहनन्द्याचार्य-  
रवरिं श्रीपालभट्टारकरवरिं श्रीकनकसेन-वादिराज-देव-  
रवरिं बलिकके ॥

इतर व्या...लेके म...मनितुमिसु...प्रभा-सं-

द्वतियिन्दे वयसुतिर्पर्द्धनद्...अधिकमे-

यिदद' किञ्चित्करकिञ्चिन्न्यूनमेन्दु'.....

.....नोप्पद.....जगत्पूतमाश्चर्यभूतं ॥ १२ ॥

अवरिं श्रीविजयर्भुवनविनूतरु शान्तिदेवर वरिं.....

वनद.....न त्रतिपरु ॥

आ-पुष्पसेन सिद्धान्तदेवरिं बलिक ॥

गतसर्वज्ञाभिमानं सुगतनपगताप्रप्रणादं कणादं

कृत.....पादा-

नतनाद' मर्त्यमात्रङ्गल नुडिगलोल...नेनसत्पर्वि लोको-

अतनायतहंनमताम्भोनिधिविधुविभवं **बादिराज**...॥१३॥

.....**शान्तिषेण**देवरवरिं बलिकक ॥

पेरतें सप्तर्द्धिं यिं सम्भविक्रमोदवुगुं प्रातिहार्यङ्गलेल्लं  
नेरेदिककुं रीतियिन्दे-समवसितियुमी-कष्टकालप्रभाव' ।  
पेरपिङ्गल्की-महायोगियोलेने तपमुं योग्यतालद्धिमयुं कण्-  
देरेइन्तागिर्पुदिन्दन्दनुपममपरातीतदिव्यप्रभाव' ॥ १४ ॥

कन्तुवनान्तुमेयदे...यदोडिसि दुर्मदकर्मवैरि-वि-  
क्रान्तमनेयदे लङ्गिसि महापुरमाग...दि... ।

...ना-तीर्त्थनाथरेने रुद्धियनान्त **कुमारसेन** सै-  
द्धान्तिकरादमुज्जलिसिदर्जिनधर्मयशोविकासमं ॥ १५ ॥

सले सन्द योग्यतेय.....

...लेसेद दुर्द्धरतपोविभूतिय पेप्पि ।

कलियुगगणधरेम्बुदु

नेलनेल्लं **मल्लिषेण** मलधारिगल' ॥ १६ ॥

हृद्यस्याद्वादभूभृद्भुवननुपमषट्-तर्कभास्वन्नखम्पा-

यदुद्यद्दर्पान्धवादिद्विरदनघटेयं विक्रमप्रौढियिन्दं ।

विद्यासिंहीरतिव्याप्तियोले सुखियिसुत्तिर्पुदु उत्साहदिं त्रै-  
विद्य-**श्रीपाल**-योगीश्वरनेनिप महावादिमत्तेभसिहं

॥१७॥

आवन विषयमो षट् त-

कर्काविलबहुभङ्गिसङ्गतं **श्रीपाल**-



त्रैविद्यगद्यपद्य-व-

चोविन्यासं निसर्गविजयविलासं ॥ १८ ॥

तमगाज्ञावशमादुदुन्नतमहीभृत्कोटि वि-

ण्मर्दन्ती-धरेगेयदे तम्म मुखदोल्बट्-तर्कवारासि-वि-

भ्रममापोशनमात्रमादुदेनलीमातेनगस्त्य प्रभा-

वमुमं कील्पडिसित्तु पेम्पि... श्रीपाल-योगोन्द्रन॥१९॥

वर्गत्यागद सूचित-

मार्गोपन्यासदलवु मार्कोललन्ता-

भर्गङ्गमरिदेनलके नि-

रर्गलमादत्त...वीर्यं व्रतियोल् ॥ २० ॥

इन्तु निरवद्यस्याद्वादभूषणरुं गणपोषणसमेतरुमागि वादी-  
भसिंह वादिकोलाहल तार्किकचक्रवर्त्तियेम्ब निजान्वयनामङ्गल-  
नोलकोण्डु अन्वयनिस्तारकरुं श्रीमदकलङ्क-मतावलम्बनरुं  
षट् तर्कषण्मुखरुमसारसंसारव्यापारपराङ्मुखरुमाद श्रीपाल  
त्रैविद्यदेवर्गे ॥

शल्यत्रयरहितर्गी-

शल्यग्राममनुपमं कोट्टरिन्पह-

शल्यं सकलकलान्वय-

कल्यं श्रीविष्णुभक्तियं तां मेरेदं ॥ २१ ॥

अन्ती-बसदिय खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारकमी-सम्बन्धिय  
रिषिसमुदायदाहारदानकं कश्चिगोण्ड वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन  
पौयसलदेवं सकवर्ष १०४७ क्रोधिसंवत्सरद उत्तरायणसंक्रमणदलु

कावेरी तीरद हुल्लेयहोलेयलु शल्यदुरुवं तीर्थदल्लि तम्म बस-  
दियुमं श्रीपालत्रैविद्यदेवर्गे कैधारे येरेदु श्रीवीर-विष्णु-  
वर्द्धनं कोट्टियूर सीमा सम्बन्धमेन्तेन्दोडे ( यहाँ सीमा का  
वर्णन है ) इन्तीचतुस्सीमेयिन्दोल्लगुल्लदं सर्व्ववाधापरिहारमागि  
बिट्टु कोट्टु श्री वीरविष्णुवर्द्धनदेवं कोट्टु श्रीपाल त्रैविद्य-  
देवरु तम्म माडिसिद होयसल जिनालयके बिट्टु तलवृत्ति बेलदले  
वूर मुन्दण हादरिवालोलगागि मत्तरु नाल्कु अत्तिकेरेयुमं  
हिरियकेरेय केलगे गहे सलगे एलु तोण्ट ओन्दु दोडुगट्टद  
केरे वोल्गागि चतुस्सीमेयुमं बसदिगे माडि बिट्टु कोट्टु भूमि  
यिदर सीमे मूडलु केसरकेरेगलिद मणल हल्ल तेड्डु होन्नमरके  
होद बट्टे हडुव हिरियकेरेयोल्गोरे बडग होन्नमरक्के होद  
होलेय बट्टे ।

[ चन्नरायपट्टन १४६ ]

[ इस लेख में होयसल वंश के विनयादित्य, परेयङ्ग और विष्णुवर्द्धन  
के प्रताप-वर्णन के पश्चात् कहा गया है कि विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव ने  
उक्त तिथि को वस्तिश्रों के जीर्णोद्धार तथा ऋषियों को आहारदान के  
लिए श्रीपालत्रैविद्यदेव को शल्य नामक ग्राम का दान दिया । श्रीपाल  
त्रैविद्यदेव द्रमिण संघ व अरुल्ललान्वय के आचार्य्य थे । इस अन्वय  
की परम्परा इस प्रकार दी हुई है । महावीर स्वामी के पश्चात् गौतम  
गणधर हुए । फिर कई श्रुतकेवलियों के पश्चात् समन्तभद्र तृतीय  
हुए । उनके पश्चात् क्रम से एकसंधिसुमति भट्टारक, वादीभासंह  
अकलङ्कदेव, वक्क्रीवाचार्य, श्रीनन्दाचार्य, सिंहनन्दाचार्य, श्रीपाल  
भट्टारक, कनकसेन, वादिराजदेव, श्रीविजय, शान्तिदेव, पुष्पसेनसिद्धान्त-  
देव, वादिराज, शान्तिसेनदेव, कुमारसेन सैद्धान्तिक, मल्लिषेण मलघारि

और त्रैविद्य श्रीपालयोगीश्वर हुए । कई जगह आचार्यों के नाम पढ़े नहीं गये इसलिए परम्परा का पूरा क्रम ज्ञात नहीं हो सका । ]

४८४

**बोम्मेनहल्लिल ग्राम में जैन बस्ती के**

**सन्मुख एक पाषाण पर**

( शक सं० ११०४ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

श्रीपति जन्मदिन्देसेव यादववंशदोलाद दक्षिणो-

र्व्वीपतियप्पनोर्व्व सलनेम्ब नृपं सलेयिन्द कोपन-

द्विपियनोन्दनोर्व्व मुनि पोय सलयेन्दडे पोयदु गेल्लु दि-

ग्व्यापि-यशं नेगल्ले वडेदं गड पोयसलनेम्ब नामदि

॥ २ ॥

स्वस्ति श्रीजन्मगेहं निभृतनिरुपमोदात्ततेजोमहौर्व्वं

विस्तारान्तःकृतोर्व्वीतलमवनतभूभृत्कुलत्राणदत्तं ।

वस्तुत्रातोद्भवस्थानकममलयशशचन्द्रसम्भूतिधामं

प्रस्तुत्यं नित्यमम्भोनिधिनिभमेसेगुं होयसलोर्व्वी-

शवंशं ॥ ३ ॥

अदरोल्कौस्तुभदोन्दनर्ध्यगुणमं देवेभदुद्दाम-स-

त्वदगुर्व्वं हिमरस्म्युज्वलकलासम्पत्तियं पारिजा-

तदुदारत्वद् पेम्पनोर्व्वने नितान्तं ताल्दि तानस्ते पु-

ट्टिदुनुद्वृत्तमोविभेदि विनयादित्यावनीपालकं ॥ ४ ॥

बुधनिधि विनयादित्यन

वधु कैलेयव्वरसियेम्बलात्मास्यविभा-

विधुरितविधु परिजन-का-

मधेनु नेगल्दल्सुसीलगुणगणधामं ॥ ५ ॥

अवर्गेरेयङ्गं जनिधिसि-

द्वनेचलदेविगादनादम्पतिगु-

द्भविसिदरजेयबल्ला-

ल-वीर-विष्णुप्रतापियुदयादित्यर ॥ ६ ॥

अवरोल्मध्यमनागियु-

मवर्गेङ्गं विष्णु पदकनायकदन्तो-

प्पुवनुदितवीरलक्ष्मिय

सवति महापट्टदरसि लक्ष्मियधीशं ॥ ७ ॥

भूदेवसभोच्चारित-

वेदध्वनिनिरतविष्णुभूपङ्गल-

हमादेविगमुदयिसिदं

श्रीदयितं नारसिंहदेवनृपालं ॥ ८ ॥

भूवल्गभविपुलयश-

शश्रीवल्गभनारसिंहनृपपट्टमहा-

देवियेनल्नेगल्देचल-

देविगे बल्लालदेवनुदयं गेयदं ॥ ९ ॥

हंसरुच्यङ्गिकोटेय-

नसदृशभुजबलदे मुने कोण्डरसुगला-

रसहायशूरशनिवा-

रसिद्धिगिरिदुर्गमल्लबल्लालनबोल् ॥ १० ॥

एकाङ्गवीर शूद्रुक-

नाकारमनोजनार्थिसुरतरु तुरगा-

नीक-वर-वत्स-राजन-

नेकपभगदत्तनल्ले बल्लालनृपं ॥ ११ ॥

गद्य ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं । द्वारा-  
वती पुरवराधीश्वरं । तुलुव बलजलधि बडवानलं । पाण्ड्य-  
कुलदावानलं । मण्डलिकबेण्टकारं चालकटकसूरेकारं ।  
वासन्तिकादेवीलब्धवरप्रसाद । वितरणविनोदं । यादव-  
कुलाम्बरद्युमणि । मण्डलिकमुकुटचूडामणि । असहाय  
शूर नृपगुणाधारं । शनिवारसिद्धि । सद्धर्मबुद्धि । गिरि-  
दुर्गमल्ल । रिपुहृदयसेल्ल । चलदङ्कराम । रणरङ्गभीम ।  
कदनप्रचण्ड । मलपरोल्लगण्ड नामादिप्रशस्तिसहितं  
कोङ्कनङ्गलितलकाडु नोलम्बवाडि बनवासेहानुङ्गल्लोण्ड  
भुजबलवीरगङ्गप्रतापहोयसलबल्लालदेवर्द्धचिणमहीमण्डलमं  
सद्धर्म परिपालिसुत्तुं दोरसमुद्रद नेलेवीडिनोल्सुखसङ्कथा-  
विनोदं राव्यं गेयुत्तुमिरे तत्पाद पद्मोपजीवि ॥

भरतागमतर्कव्या-

करणोपनिषत्पुराणनाटककाव्यो-

त्करविद्वज्जननुतनेनिप-

स्थिरपुण्यं चन्द्रमौलिमन्त्रिललामं ॥ १२ ॥

नुतबल्लालनृपालदक्षिणभुजादण्डं पयःपूरहा-

र-तुषारस्फटिकेन्दुकुन्दकमनीयाद्यशोवार्द्धिवे-

ष्टितद्विचक्रनपारपुण्यनिलयं निश्शेषविद्वज्जन-

स्तुतनप्पी-विभुचन्द्रमौलिसचिवं धन्यं परैर्द्धन्यरे

॥ १३ ॥

आ-चन्द्रमौलिगखिलक-

लाचतुरङ्गमलकीर्त्तिगसदृशविभव-

ङ्गाचाम्बिके गुणवार्द्धि स-

दाचारसमेते चित्तवल्लभेयादल् ॥ १४ ॥

हरिणीलोचने पङ्कजानने धनस्रोणिस्तनाभोगभा-

सुरे बिम्बाधरे कोकिलस्वने सुगन्धश्वासे चञ्चत्तनू-

दरि भृङ्गावलिनीलकेशे कलहंसीयाने सत्कम्बुक-

न्धरेयप्पाचलदेवि कन्तु सतियं सौन्दर्यदिन्देलिपल्

॥ १५ ॥

त्रिकुलकं ॥ सुकविसुरतरुशिलेयना-

यक चन्द्राम्बिकेय मगनेनिप सोवण ना-

यकनय्य तायि बाचा-

म्बिके देशिदण्डनायकं हिरियण्णं ॥ १६ ॥

भयलोभदुर्लभ बम्मेय-

नायकनिद्धकीर्त्ति किरियण्णं मा-

रेयनायकं भगिनि च-

लियब्बरसि कामदेवनणुगिन तम्मं ॥ १७ ॥

भूविनुतनात्मजातं

सोवण्णं चन्द्रमौलि पति तनगे कला-

कोविदनेन्दन्दाचल-

देवियवोल्लनोन्त सतियराव्वसुमतियोल् ॥ १८ ॥

गौरितपङ्गलं नेगल्दुतुं नेरेदलाड चन्द्रमौलियो-

ल्लनारियर्गिन्नवे सोवगु पेल्पलवुं भवदोत्तिरन्तरम्

सारतपङ्गलं पडेदु ताम्नेरेदं गड चन्द्रमौलिग-

म्भीरेयेनिप्प तन्ननेनिपाचल्लेवोल्सोवगिङ्गे नोन्तरार्

॥१९॥

तद्गुरुकुल श्रीमूलसङ्घ देशियगण पुस्तकगच्छ कोण्ड-  
कुन्दान्वयदोल् ॥

क ॥ विदित गुणचन्द्रसिद्धा-

न्तदेव सुतनात्मवेदि परमतभूभृ-

द्भिदुर नयकीर्त्तिसिद्धा-

न्तदेवनेसेदं मुनीन्द्रनपगततन्द्रं ॥ २० ॥

परमागमवारिधिहिम-

किरणं राद्धान्तचक्रिनयकीर्त्तियमी-

श्वरशिष्यनमलनिजचि-

त्परिणतनध्यात्मिबालचन्द्र मुनीन्द्रं ॥ २१ ॥

भरदिं बेलुगुल तीर्थदे।ल् जिनपतिश्रीपार्श्वदेवोद्धम-  
 न्दिरमं माडिसिदल्विनूत नयकीर्त्तिख्यातयोगीन्द्र-  
 भासुरशिष्योत्तम बालचन्द्रमुनिपादाम्भोजिनीभक्ते सु-  
 स्थिरेयप्पाचलदेवि कीर्त्तिविशदाशाचक्रे सद्भक्तियिं

॥ २२ ॥

व ॥ शकवर्षद सासिरदनूरनाल्कनेय प्लवसंवत्सरद पौष-  
 बहुलतदिगे शुक्रवारदुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु ॥

वृ ॥ शीलदि चन्द्रमौलिसचिवं निजवल्लभेयाचिक्कना-  
 लोलमृगात्ति माडिसिद पार्श्वजिनेश्वरगेहदुद्रपू-  
 जालिगे बेडे बम्मेयनहल्लियनित्तनुदारि वीर-ब-  
 लालनृपालकं धरेयुमब्धियुमुल्लिनमेयदे सल्विनं

॥ २३ ॥

तदवनिपनित्त दत्तिय-

नदनाचले बालचन्द्रमुनिराजश्री-

पदयुगमं पूजिसि चतु-

रुदधिवरं निमिरे कीर्त्ति जिनपतिगित्तल् ॥ २४ ॥

अन्तु धारापूर्वकमागि कोट्ट तद्ग्रामसीमे ( यहाँ नौ पंक्तियों में  
 सीमा आदि का वर्णन है )

श्रीमन्महामण्डलाचार्यनयकीर्त्तिदेवरु बम्मेयनहल्लियलु  
 कन्नेवसदियं माडिसि श्रीपार्श्वनाथप्रतिष्ठेयं माडि देवरष्ट-  
 विधाचर्चनेगे सोमसमुद्रद करेय कोलगे मोदलेरियल्लि गद्दे सलगे  
 येरडु बडगण हालिनलु वेदलु नानूरुवं नयकीर्त्तिदेवरु मारेय



नायकन मग सोवण्णनु गौड गौडनोलगाइ प्रजेगलुं आचन्द्रतार'  
वर सल्वन्तागि बिट्ट दत्ति मङ्गल महा श्री ॥

[ चन्नरायपट्टन १२० ]

[ इस लेख में लेख नं० २६ के समान होयसल वंश की उत्पत्ति व लेख नं० १२४ के समान होयसलनरेशों का बल्लालदेव तक व बल्लालदेव के मंत्री चंद्रमौलि और उनकी धर्मपत्नी आचलदेवी के वंश आदि का वर्णन है। तत्पश्चात् कहा गया है कि आचलदेवी ने बड़ी भक्ति से वेल्गुल तीर्थ पर पार्श्वनाथ मन्दिर निर्माण कराया और इसके लिए बल्लालदेव से बम्मेयनहल्लि ग्राम प्राप्त कर उसे अपने गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव के शिष्य बालचन्द्रमुनि की पादपूजा कर उस मन्दिर को दान कर दिया।

लेख के अन्तभाग में उल्लेख है कि महामण्डलाचार्य नयकीर्तिदेव ने बम्मेयनहल्लि में एक नई बस्ती निर्माण कराई और उसमें पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा की और कुछ भूमि का दान दिया। ]

४६५

**कुम्बेन हल्लि ग्राम में अञ्जनेय मन्दिर के  
समीप एक पाषाण पर**

( लगभग शक सं० ११२२ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

नमोऽस्तु ॥

श्रीपतिजन्मदिन्देसेव यादववंशदोलाद दक्षिणो-

र्वीपतियप्पनोर्ब्ब सल्लनेम्ब नृपं सेलेयिन्दे कोपन-

द्वीपियनोन्दनाब्ध मुनि पोय्सलयेन्दडे पोय्दु गेल्लु दि-  
गव्यापियशं नेगस्तेवडेदोण्णड पोय्सलनेम्ब नामदिं ॥२॥

**बिनयादित्यनृपालन**

तनूजनेरेयङ्गभूपनातन पुत्रं ।

कनकाचलोन्नतं वि-

ष्णुनृपाल...तनात्मजं ॥ ३ ॥

.....यं सकल-म-

हीतलसाम्राज्य लक्ष्मिय..... ।

श्वेतातपत्रनागे पु-

रातन नृपगेंणिसिद...बल्लालनृपं ॥ ४ ॥

एकत्र गुणिनस्सर्व्वे वादिराज त्वमेकतः ।

तवैव गौरवं तत्र तुलायामुन्नतिः कथं ॥ ५ ॥

सले सन्द योग्यतेयिन-

गलिसिद दुद्धरतपोविभूतिय पेम्पिं ।

कलियुगगणधरेम्बुदु

जगवेल्लं मल्लिषेणमलधारिगलं ॥ ६ ॥

तमगाज्ञावशमादुदुन्नतमहीभृत्कोटि तम्मिन्दे वि-

ष्णमर्द्धत्ती-धरेगेयदे तम्म मुख्खेल्षट्त्तर्कवारासिवि-

भ्रममापोशनमात्रमादुदेनलिं मातेनगस्त्यप्रभा-

वमुमं कील्पडिसित्तु पेम्पिनेसकं श्रीपालयोगीन्द्रन॥७॥

अवरप्रशिष्यरु श्री वादिराजदेवरु तम्म सत्यद कुम्बेयन

हल्लियल्लु तम्म गुरुगलिगे परोत्तविनयमागि परवादिमल्लजिनाल

यमेन्दु कन्नेवसदियं माडिसि देवरष्टविधाचर्चनेगं आहारदानकं  
हिरियकरेय गौडियहल्लिगदे सल्लगे एरडु कोलग हत्तु अल्लि तेड्ड  
बिट्टि सेट्टियकरेयुं अदर केलद बेदत्ते सल्लगं एरडुवं सन्वबाधा  
परिहारमागि बिट्ट दत्ति ॥

( स्वदत्तां परदत्तां आदि श्लोक )

श्रीमन्महाप्रधानं सर्वाधिकारि तन्त्राधिष्ठायकं कम्मटद  
माचय्यनुं माव बल्लय्यनुं देवर नन्दादीविगेगे गाणद सुड्डवं  
बिट्टरु ॥ कण्डच्चनायकन मदवल्लिगे राचवेनायकितिय मग  
कुन्दाडहेगडे नयचक्रदेवर बेसदिं माडिसिद बमदि ॥ स्वस्ति  
श्रीमन्महाप्रधान सर्वाधिकारि हिरियभण्डारि हुल्लयङ्गल मेय्दुन  
अश्वाध्यत्तद हेगडे हरियण्णं कुम्बेयनहल्लिय देवर माडिसि  
कोट्ट ॥

**श्रीपाल** त्रैविद्यदेवर शिष्यरु पदद शान्तिसिद्ध पण्डित-  
गैयु अवर पुत्र **परवादिमल्ल** पण्डितगैयुं अवर तम्म उमेयाण्डगं  
आतन तम्म **वादिराजदेवङ्ग** वादिराजदेवरु धारापूर्वकं  
माडि कोट्टरु ॥

[ चन्नरायपट्टन १२१ ]

[ इस लेख में पूर्ववत् बल्लालदेव तक होयसल वंश के वर्णन के पश्चात् वादिराज मल्लिषेण मलधारि की कीर्त्ति का वर्णन है और फिर षड्दर्शन के अध्येता श्रीपाल योगीन्द्र का उल्लेख है। इनके शिष्य वादिराजदेव ने अपने गुरु के स्वर्गवास होने पर 'परवादिमल्ल जिनालय' निर्माण कराया और उसकी अष्टविध पूजन तथा आहार-दान के लिये कुछ भूमि का दान दिया।

महाप्रधान सर्वाधिकारी तन्त्राधिष्ठायक कर्मठ माचर्य तथा उनके श्वशुर बल्लर्य ने जिनालय में दीपक के लिए तेल के टेक्स का दान दिया ।

कुण्डच्चनायक की भार्या राचवे तथा नायकिति के पुत्र कुन्दाड हेगडे ने नयचक्रदेव की आज्ञा से बस्ती निर्माण कराई ।

इसी प्रकार महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भण्डारी हुल्लर्य के साले अश्वध्वज ठरियण्ण ने कुम्बेयनहल्लि के देव की प्रतिष्ठा कराई ।

वादिराजदेव ने ये दान श्रीपाल त्रैविद्यदेव के शिष्य शान्तिसिंग-पण्डित व परवादिमल्लपण्डित व उमेयाड व वादिराजदेव को दिये । ]

४६६

## चन्नरायपट्टन में गढ़े रामेश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

( शक सं० ११०८ )

[ ऊपर का भाग टूट गया है ]

.....श्रेष्ठगुणं पोगले सत्ययुधिष्ठिर.....नवसेकाररधि-  
ष्ठायक.....यण्णनं बुधनिधियं ॥

सोगयिसुव गङ्गावाडिगे

मोगमेने . न...पुददरोल् ।

मिगे दिण्डिगूर शाखा-

नगरं बोद्वेनिपुदल्ले मोनेगनकट्टं ॥ १ ॥

कनकाचलकूटदवोलु

घनपथमं मुट्टि नेट्टनमर्दोप्पुविनं ।

**मोनेगनकट्टदल्लार्जत-**

जिन गृहमं रामदेवविभु माडिसिदं ॥ २ ॥

तद्गुरुकुलमेन्तेन्दडे । श्रीनयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्त्तिसल-  
शिष्यरु ।

विदिताध्यात्मिकबालचन्द्रमुनिराजेन्द्राग्रशिष्यप्रश-

स्तिदवन्धर्मुनिमेघचन्द्ररनघर्भास्वहयासागरा-

भ्युदयर्पोस्तकगच्छदेशिकगण श्रीकोण्डकुन्दान्वया-

स्पददीपकर्करमोप्पुवर्बसुधेयोल्हास्वत्तपोलक्ष्मिणि ॥ ३ ॥

**शकवर्ष ११०८** नेय विश्वावसु संवत्सरदुत्तरायण संक्रान्ति-  
यादिवारदन्दु बनवसेकारर मोत्तदनायकरु दिण्डियूरवृत्तिय  
गावुण्डुप्रभुगलुं मेलिमासिर्व्वरु शान्तिनाथदेवरष्टविधार्चनेगं  
खण्डस्फुटजीर्णोद्धारककं ऋषियराहारदानककं सर्वाबाधपरिहार-  
मागि मेघचन्द्रदेवर्गे धारापूर्वकं माडि बिट्टु गद्देवेहलेस्थलङ्ग  
लेन्तेन्दडे । ( यहाँ दान का विवरण है )

[ चन्नरायपट्टन १६६ ]

[.....गङ्गवाडि के मोनेगनकट्टे का दिण्डिगूर एक शाखा नगर  
था । मोनेगनकट्टे में रामदेवविभु ने एक विशाल जिनालय निर्माण  
कराया । रामदेव के गुरु, नयकीर्त्तिसिद्धान्तचक्रवर्ती के शिष्य अध्या-  
त्मिक बालचन्द्र मुनि के प्रधान शिष्य मेघचन्द्र थे । उक्त तिथि को  
बनवसे के कर्मचारी मोत्तद नायक तथा दिण्डियूरवृत्ति के गौण्ड और  
प्रभुओं ने शान्तिनाथ भगवान के अष्टविधार्चन के तथा जीर्णोद्धार व  
आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान मेघचन्द्रदेव को कर दिया । ]

४६७

## तगडूरु ग्राम में पुरानी नगरी के स्थल पर एक पाषाण पर

( लगभग शक सं० १०५० )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

स्वस्ति श्री.....मेश्वर परमभट्टारक सत्याश्रयकुल-  
तिलकं चालुक्याभरण श्रीमत्त्रिभुवनमल्ल देवर राज्यमुत्तरो-  
त्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं सलुत्तमिरे तत्पादपद्मो-  
पजीवि स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावती-  
पुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्कचूडामणि मले-  
परोलु गण्ड राजमार्तण्ड कोङ्कुनङ्गलि.....तलकाडुबनवासे  
हानुङ्गलुगोण्ड भुजबलवीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन पोयसलदेवर...  
कुलगगनदिवामणिय् ए.....गदेवनवन मग..... विष्णु  
नृपं तडू मीश.....तनूभवने.....वाव...॥

पेसर्गोण्डावावदेशङ्गलनेणिसुवुदावावदुर्गङ्गलं व-

णिसि पेलुत्तिप्पुदावावनिपतिगलं लेक्किमुत्तिप्पुदेम्बो-  
न्देसकं.....कडेवर'.....सा-

धिसिदं भूलोक.....तिलकं वीरविष्णुचितीशं॥२॥

...सङ्कथाविनोददि राज्यं गेयुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

भीमाज्जुन-लवकुशरिव-

रीमालकयेनलके तम्मुतिर्व्वर...।

श्रीमन्मरियानेयमु-

हामगुणं भरतराजदण्डाधिप... ॥ ३ ॥

श्रीविष्णु पोयसलङ्गखि-

लावनिय.....दल.....साधिसि....।

...विदित भरत चक्रियन्

...विभुवेनेयिसुगुमखिलधरेयोत्भरतं ॥ ४ ॥

मरुवककमनोडिसलुं

नेरे राज्यश्रीविलासमं मेरेयलुवी-

मरियाने नेरगु.....

.....मेचचे पट्टदानेयुमादं ॥ ५ ॥

आतन सति मुन्न् नेगल्दा-

सीतेगरुन्धतिगे वा.....

.....दारेयेनलल्लदे

भूतलदोले जक्कणव्वेगुलिदद्दारेये ॥ ६ ॥

.....याने दण्णायकनेरेयन...न जक्कियव्वेगे सुतरत्त...

.....एरगु... ..भरतबाहुबलिगलेनिप्पर ॥ ७ ॥

अन्तवरेन्तेने ॥

श्रीमत्पेर्गडे माचिराजगिरियोत्पुट्टुत्ते सन्मार्गदि-

न्दामाश्रीमरुदेवियेम्ब नलिनीवासकके सन्दाजन-

आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख ४१५

प्रेमे श्रोजिनमार्गदान्देसकदानैर्मल्यदिं पोर्दिदल्  
चाम.....पेर्गडेदेवसज्जलधियं पुण्यापगारूपदिं

॥ ८ ॥

.....रेय चामियक्कन  
सोदररापिरियचौण्डनेम्ब.....णन-  
न्तादरद चन्दिदय.....

.....दलदो-बूचियणनुमेन्दिवरप्पर् ॥ ९ ॥

परमजिनेश्वरं मनदोलोप्परे तन्नयकीर्त्ति नाकदो-  
ल्परदिरे दानधम्मविनयव्रतसीलचरित्रमेम्बल-  
ङ्करणद पेम्मे मानसके पोण्मे दयारसमुण्मे चित्तदो-  
ल्लुगुवभिवन्दनं मनदोलागददिक्कुदु चामियक्कन  
॥ १० ॥

भारद्वाज सुगोत्रदो-  
लारुं मुन्नान्तरिल्ल नेरपल्लसमं ।

ताराद्रिसन्निभं तग-

डूर जिनालयमदेसेये चामलेयेसेदल् ॥ ११ ॥

जिनपूजाष्टविधार्चनक्के मुनियर्गाहारदानक्के त-  
ज्जिनचैत्यालयजीर्णदुद्धरणकं सल्वन्तिदं सोब-गौ-  
ण्डन पुत्रकुलदोपक्कर्जननुतश्रीरायगावुण्डनो-  
त्तमनदं मल्लयनायकं गुणगणख्यातम्महोत्साहदिं

॥ १२ ॥



४१६ आसपास के ग्रामों के अवशिष्ट लेख

धारापूर्वकदिं तग-

दूरं वगलबन्मगट्टवं बसदिगे सले ।

धारिणियरियल्विट्ट-

बभूरविशशितारमेरुगलिनल्विनेगं ॥ १३ ॥

परमजिनेश्वरपूजेगे

पिरिदुं सद्भक्तियिन्दे कोडियकेय्यं ।

वरगुणरायगवुण्डं

निरुतं कल्याणकीर्त्तिमुनिपङ्गित्तं ॥ १४ ॥

भूविनुतं कलि-बोप्यं

देवङ्गं चरुगिङ्गे नेमवेर्गडेय मगं ।

भूविदितमागे कोट्टं

तावरेगेरेयल्लि गदे खण्डुग वेनन्दं ॥ १५ ॥

कल्याणकीर्त्ति कीर्त्तिसु-

वल्ल्युदयं मूरुलोकमं व्यापिसि कै-

वल्यदोडगूडि सले मा-

णगल्यमुमादत्तु चिन्ते चिन्त्यङ्गलवोल् ॥ १६ ॥

( स्वदत्तां परदत्तां वा आदि श्लोक )

[ चन्द्रायपट्टन १६८ ]

[ इस लेख में चालुक्यत्रिभुवनमल्ल व विष्णुवर्द्धन पोयसलदेव के राज्य में नयकीर्त्ति के स्वर्गवास हो जाने पर चामले द्वारा तगडूर में जिनालय निर्माण कराये जाने व अष्टविधार्चन, आहारदान तथा

जीर्णोद्धार के हेतु रायगवुण्ड और मल्लय नायक द्वारा 'तगडूर' और 'बम्मगुट्ट' का दान दिये जाने का उल्लेख है। रायगवुण्ड ने जिन-पूजन के लिए 'कोड' की भूमि कल्याणकीर्ति मुनि को दी। लेख में अन्य दानों का भी उल्लेख है। अन्त में कल्याणकीर्ति की प्रशंसा के पद्य हैं। ]

४६८

## गुड्डिव ग्राम के मदलहसिगे नामक स्थल में

एक स्तम्भ पर

( लगभग शक सं० १००० )

भद्रमस्तु जिनशासनस्य । स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर-  
नधटरादित्य त्रिभुवनमल्ल चोलकोङ्गाल्वदेवर पादारा-  
धक...तु-रावसेट्टिय मम्मगनदटरादित्य सावन्तबूवेय नायक-  
नुत्तरायण संक्रमणदन्दु हडुवण तुम्बिन मोदलेरियलु १३  
खण्डुग वयलं २ खण्डुग अडुविन मण्णुमं पद्मणन्दि-  
देवरिगे धारा-पूर्वकं माडिविट्टु कोट्टु । ( स्वदत्तां परदत्तां  
आदि श्लोक )

[ होले नरसीपुर १६ ]

[ त्रिभुवनमल्ल चोलकोङ्गाल्वदेव के पादाराधक व रावसेट्टि के पौत्र बूवेय नायक ने उक्त तिथि को पद्मनन्दि देव को उक्त भूमि का दान दिया । ]

## मललकेरे ग्राम में ईश्वर मन्दिर के सन्मुख एक पाषाण पर

( शक सं० ११७० )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्रादामोध-लाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

भद्रं भूयाजिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कुतीर्त्यध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥ २ ॥

वृ ॥ यदुवंशचित्तिपालकं शशपुरी वासन्तिका.....

मदनागिर्पिन.....बुराजित...मेल्पाये शाूल..

...जैन मुनीश्वरं पिडिद... ..

.....पोडेद.....॥ ३ ॥

आ-होयसलान्वयदोल ॥

वृ ॥ भूनाथासेव्यपादं निखिलरिपुमहीपालविध्वंस केली-

कीनाशं वैरिभूभृन्मृगगहनदवन्ताने दुर्गप्र.....

...ना...रामनेत्रोभयश... ..श्रीललामं-

तानेन्दीविश्वलोक...सलिसिदं वीरबल्लालभूप

॥ ४

गोपतिगातपनिकरं

गोपतिगे.....वागोदडं ।

गोपतियादन्ता ..

गोपति बल्लालगात्मजं नरसिंहं ॥ ५ ॥

वृ ॥ जित्वा वैरिनरेन्द्रचक्रमखिलं संग्रामरङ्गेऽभव-  
न्भूचक्रं लवणाब्धिर्वेष्टितमिदं स्वीकृत्य...

...श्वर वैष्णवाहुतमहो तन्मुख्यचक्रं सदा

श्रीसोमेश्वरदेव यादव.....॥ ६ ॥

भामानीकामनोजं

भीमाहितदैत्यततिगे दशरथरामं ।

सोमं सुजनसुधाब्धिगे

सोमेश्वरदेवनेन्दु वर्णिपुटु जगं ॥ ७ ॥

व ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावती-  
पुरवराधीश्वरं विद्विण्णशाकरविधुन्तुदं । कलिङ्गमत्त-  
मातङ्गमस्तकविदारणोत्कण्ठकण्ठीरवं । सेवु ( णो )र्वी-  
पालारण्य-दावानलं । मालवमहीपालाम्भोधिकुम्भस-  
म्भवं । वासन्तिकादेवीलब्धलसितप्रसाद । यादवकुला-  
म्बरद्युमणि । सम्यक्तवचूडामणि । मलेराजराज मलेपरोलु  
गण्ड गण्डभेरुण्ड कदनप्रचण्ड सनिवार-सिद्धि गिरिदुर्ग-  
मल्ल । चलदङ्करामनसहायशूरनेकाङ्गवीरं । मगर...  
कुलिश...रं । चोलराज्यप्रतिष्ठाचार्य पाण्ड्यकुलसंर-  
क्षणदत्तदत्तिणभुजं । भुजवलाज्जितानेक-नामप्रशस्ति-  
समालङ्कृतं श्रीमद्-गङ्गहोयसलप्रतापचक्रवर्त्तिवीरसोमे-

श्वरदेवरु दक्षिणमण्डलम् दुष्टनिग्रहशिष्टपरिपालनपू-  
र्व्वकं राज्यं गेयुत्तमिरे ।

तत्पादपञ्चोपजीवि सेनानाथशिरोमणि वन्दिजन-चिन्तामणि  
सुजनवनजवनपतङ्गं राजदलपत...सलिंगं कलिगलङ्कुश स्वामि-  
दण्डशेनेन्तेप्पनेन्दडे ॥

वृ ॥ श्रीयं विस्तीर्णवत्तस्थलनिलयदो.....

श्रीयं कूर्वाल केलीसदनदोलोलविं ताल्दि विख्यातकीर्ति-  
श्रीयन्दाशान्तम् रञ्जिसे निजविजय...स्वान्तजातं...  
...यिय सैन्याधिनाथं नेगल्दनुरुगुणस्तोमनुर्वील्लामं

॥ ८ ॥

आतननुजं ॥

क ॥ ...रु देत्त.....

...सिरमं ब्रह्मसैन्यनाथं क्षिप्रं ।

धुरदोलतिचतुरं निज-

.....वीरं...तिगे सिरदा...तिय... ॥ ९ ॥

ग्रामन्त्रि ॥

मालिनी ॥ मनुचरितनुदारं वत्समन्त्रिप्रगल्भं

जिनसदनसमूहाधारसारानुशा...म् ।

तनगे.....पिपदं पूर्णपुण्यं

जननुतविजयणं मन्त्रिगोत्राग्रगण्यं ॥ १० ॥

क ॥ कामं कमनीयगुणं

धीमन्तसिरोजबन्धललित.....।

श्रीमज्जिनपदनलिन-शि-

लीमुखनमृतांशुविशदकीर्त्तिप्रसरं ॥ ११ ॥

तज्जननीजनकरु ॥

लोकाश्चर्यनियोगयोगनिपुणं दुर्गाम्बिकावल्लभं

नाकथ्यं भुवनाभिराम च...नेम्बिनं कोङ्ग-दे-

शैकश्रीकरणाग्रगण्यनेसेदं तत्सूनु कामानु...

शाकीर्णायतकीर्त्तिकान्तनेसेवं सातं गुणव्रातदिं

॥ १२ ॥

आकामात्मजरु ॥

परमजिनचरणदामं

वरविद्वद्वाद्विसेमनबलाकामं ।

करणगणाग्रणी सीमं

कमलवाणीरामं ॥ १३ ॥

सुरकुजके कामधेनुगे

परसक् इन-सुतगे सममे.....।

सुर...परिकिसे पुरुसरत्नं

निरुपमनी-सेमनमलगुणगणधामं ॥ १४ ॥

जीर्णजिनभवतमं भू

वर्णिसलुद्धरि...सरसगुण-मकीर्त्तिं दिगन्ता-

कीर्णमेने धर्मसस्या-

...र्ण...कर्ण.....संवर्ण्यं ॥ १५ ॥

आ-सातण्णनेन्तप्पं ॥

सातिशयचरितभरितं

भूतभवद्वाविभव्यजनसंसेव्यं ।

सातण्णनमलगुणसं-

भूतं जिनपदपयोरुहाकरहंसं ॥ १६ ॥

मल्लिकामाले ॥ देवदेवन शान्तिनाथन गेहमं पोसताणि स-

द्वोधिप...ओल्हु निम्मिसे तन्न कीर्त्ति दिगन्तम-

न्तिन्ने भव्यचकोरिचन्द्रमनेन्दु बन्देले वणिणसलू

कावणावरजं विचित्र चरित्रसातण्णनोप्पुवं ॥ १७ ॥

क ॥ सातण्णन वनिते गुण-

.....रत्न...दि भूतलदोल् ।

नोन्तिन्नवे बोध...वे

सातिस...ख्यातिगिन्दे रञ्जिसुतिर्पल् ॥ १८ ॥

आ-इम्पतिगल गर्भदे-

लादवर्मकरेसेव-काम-सातङ्गल वि-

द्यादिगुणरूपिनोल्प-

न्दादु.....धरित्रिगोर्वं पडेदं ॥ १९ ॥

स्वस्ति श्रीसूतसङ्घ देसियगण पोस्तकगच्छद कोण्डकुन्दा-  
न्वय सिद्धेश्वर...मानानूनचारुचरित्रं श्रीमाधणन्दिसिद्धान्त-  
चक्रवर्त्ति.....तप्पं ॥

वृ ॥ स्वान्तभवप्रसृति...रसं ॥

वरचारित्रननूनपुण्यजननं.....क-भा-

सुरनीरेजसुमित्रनार्जितदया.....।

.....पवित्रनेन्दु भुवनं सङ्कीर्त्तिसत्त्वर्त्तिपं

वरसैद्धान्तिकमाघनन्दिमुनिपं श्रीकोण्डकुन्दान्वयं

॥ २० ॥

तच्छिष्यरु ॥

क ॥ चारुतरकीर्त्तिदिग्वि-

स्तारितनतनुप्रताप.....।

.....यं भानुकीर्त्ति वि.....

.....बुधनिकरं ॥ २१ ॥

आ-मुनिय शिष्यनखिल-क-

लामयनुदारचरितनतिविशदयशो-

धामं मुनिपुङ्गव.....

.....वर्णिपुटु माघणन्दिब्रतियं ॥ २२ ॥

वृ ॥ वरविद्यामहितं सुराचलदवोल् श्रीमाघणन्दिब्रती-

श्वरनिर्द्द.....दद्रिसानुसुपरीतानूनशिष्यौघमं ।

.....त्रितुलप्रभृतिथन्तारय्ये ता.....कां-

.....मण्डलवेन्दोडिन्नवर पेम्पं पेल्लेनेनेन्दोडं ॥ २३ ॥

व ॥ यिन्तु विराजिसुत्तिर्द्दसमुदायदल्लि माघणन्दि-भट्टारकर

गुडुं सोवरस-सूनु सान्तण्णनु.....देन्तप्पुटु ॥

वृ ॥ जगतीसम्भूतधर्माङ्कुर...देम्बन्ते भूकान्ते रा...

जगदिं पोत्तिर्द्द पोण्गेल्लसद कलसविदेम्बन्ते भव्यावलीके-



लिगे रम्यस्थानमेम्बन्तिरे सुकृतिसुधासूतिविम्बोदयैन्द्रो-  
नगवे बन्दावगं रञ्जिसिदुदु वसुधाचक्रदोल् जैनगेहं ॥२४॥

क ॥ आ-जिनभवनदोलोप्पुव

मूजगपतिशान्तिनाथ तन्नमलपदा-

म्भोजङ्गलोलदु भव्यस-

माजं... ..लिगे.....नुदितोदयमं ॥ २५ ॥

इन्तेल्दु मणलकरेयोल्

शान्तीशनिशान्तवेसेये निर्म्मिसि निखिला-

शान्तायतकीर्त्ति.....

.....सातनिप्पनुर्वीवर्ण्यं ॥ २६ ॥

व ॥ अन्तिर्हु तन्निष्ठगोत्रमित्रपुत्रकलत्रादिसुखसम्भूतिनिमित्तं  
सातण्णनगण्यपुण्यप्रभावं शकवर्षद ११७० नेयप्लवङ्ग  
संवत्सरद फाल्गुण सु ५ आ श्रीशान्तिनाथस्वामियं  
प्रतिष्ठेय माडिया-जिनपरियर्चनेगमाहारदानककमेन्दु बिट्ट  
भूमि आ-नाडुसेनबोव विजयण्ण-सोवण्ण-मदुकण्णनुं  
समस्तनाडुगौडगलू मुख्यवागि सोवण्णनु मललकरेयखि  
माडिसिद चैत्यालयककं बिट्ट भूमिय सीमासम्बन्धवेन्तेन्दडे  
( यहाँ सीमा-वर्णन और अन्तिम श्लोक हैं )

[ अर्कलगुद १२ ]

[ इस लेख में प्रथम होयसलवंश के बल्लालदेव, नरसिंह और सोमेश्वरदेव का वर्णन है। सोमेश्वरदेव के वर्णन में कहा गया है कि उन्होंने कलिङ्गनरेश का मस्तक विदीर्ण किया, सेवुण राजा को नष्ट

किया, मालव-नरेश को जीता, मगर राज्य की नींव खोद डाली, चोल राज्य की प्रतिष्ठा की, पाण्ड्यवंश की रक्षा की, इत्यादि । इनके राज्यकाल में उनके सेनानाथ 'शान्त' ने शान्तिनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया । शान्त की भार्या का नाम 'भोगव्वे' तथा पुत्रों के नाम 'काम' और 'सात' थे । उनके गुरु की परम्परा इस प्रकार थी:—मूलसंघ, देशीयगण, पुस्तकगच्छ, कोण्डकुन्दान्वय में माघनन्दि व्रती हुए । उनके शिष्य भानुकीर्त्ति और उनके शिष्य माघनन्दि भट्टारक हुए । इन माघनन्दि भट्टारक के एक गृहस्थ शिष्य सोवरस के पुत्र सातण्ण ने मनलकरे में शान्तिनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया और उस पर सुवर्ण कलश की स्थापना कराई तथा उक्त तिथि को जिनार्चन व आहारदान के हेतु उक्त भूमि का दान दिया । ]

५००

## सोमवार ग्राम में पुरानी बस्ती के समीप एक पाषाण पर

( शक सं० १००१ )

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादामोघ-लाञ्छनं ।

जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनं ॥ १ ॥

श्रीप्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवो जीयाच्चिरं भुवि ।

विख्यातोभयसिद्धान्तरत्नाकर इति स्मृतः ॥ २ ॥

अवनीचक्रके पूज्यं निजपदमेनिसितैदे सन्मार्ग.....

.....क्तोदात्तसैद्धान्तिकनेसेदपनम्मम्म काणूर्गण-प्रो-

द्भवनु.....धर कुलिशधर'..... ।

.....वि...जिनागम.....नीराजह'स ॥ ३ ॥

जगदाश्रयमिदत्तपूर्वमिदरन्दकज्जं कूड व-  
 द्विगेयन्तिट्टमिडत्तिकदेनेरेदने पेलेम्ब कोङ्गाल्व जै-  
 नगृहं नाडे वेडङ्गुवेत्तदट्टरादित्यावनीनाथ की-  
 र्त्तिगडर्पिर्पेवोलिन्तु तोर्पुदेने मत्ते वण्णिणं वण्णिणं ॥४॥  
 जगदोलतानीव दा...नेगलल् अदट्टरादित्य-चैत्यालयक्कयै-  
 दे गुणाम्भोराशि वीराग्रणि विजयभुजोद्भासिदिव्यार्चनक्क-  
 नदु गडं सद्धक्तियिन्दं तरिगलनिय मण्णल्लि नाल्वत्तेरल्ल-  
 ण्डुगव्रीजक्कित्तनत्तुत्तवदिन् अदट्टरादित्यनादित्यतेजं ॥५॥  
 इनितं सिद्धान्तदेवगर्गनुनयदरिदाचन्द्रतारं सलुत्ते-  
 न्तेने धारापूर्वकं कोट्टु दनुदधिजलस्थूलकल्लोललीला-  
 वनिचक्कैदे पर्वित्तदनिदनुदनेनेन्दपै दानदोल्पा-  
 वनुमं सिक्किर्पिनं माडिसिदनेसेये सद्धर्मि कोङ्गाल्वभूपं ॥६॥  
 स्वस्ति सकवर्ष १००१ नेय सिद्धार्थिसंवत्सरं प्रवर्त्ति-  
 सुत्तिरे स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं ओरे-  
 यूर्पुर्वराधीश्वरं जटाचोलकुलोदयाचलगभस्तिमालि सूर्य-  
 वंश-शिखामणि शरणागतवज्रपञ्जरं श्रीमद्राजेन्द्रपृथुवीको-  
 ङ्गाल्वं राज्यं गेयुत्तुं श्रीसूलसङ्घद काण्णूर्गणद तगरिगलगच्छद  
 गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेवगर्गे बसदियं माडिसि देवगर्गर्चना-  
 सोगके तरिगलनेय मावुकल्लुं हेदगेदा...वित्तुवट्टं कोट्टु भूमि ख  
 ४२ । ( अन्तिम श्लोक ) चतुर्भाषालिखित्यकविद्याधरं सन्धि-  
 विग्रहि श्रीमन्नकुलार्थ्य वरेदं मङ्गलं महा श्री ।

[ अर्कलगुद ६६ ]

[ इस लेख में उभयसिद्धान्तरत्नाकर प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव के उल्लेख के पश्चात् कहा गया है कि कोङ्गात्वनरेश अदटरादित्य ने जो 'अदटरादित्य चैत्यालय' निर्माण कराया था उसकी पूजन के हेतु राजा ने सिद्धान्तदेव को 'तरिगलनि' की ४२ खण्डुग भूमि दान कर दी ।

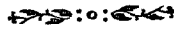
चोलकुल के सूर्यवंशी महामण्डलेश्वर राजेन्द्र पृथुवीकोङ्गात्व ने मूलसंघ, कानूरगण, तगरिगल् गच्छ के गण्डविमुक्तदेव के लिए एक बस्ती निर्माण कराई और देवपूजन के लिए उक्त भूमि का दान दिया ।

यह लेख चार भाषाओं के ज्ञाता सान्धिविग्रहिक नकुब्जार्थ का रचा हुआ है । ]

---



# अनुक्रमणिका



इस अनुक्रमणिका में जैन मुनि, आर्यिका, कवि व संघ, गण, गच्छ और ग्रन्थोंके नाम ही समाविष्ट किये गये हैं। नाम के पश्चात् ही जो अंक दिये गये हैं उनसे लेख-नम्बर का अभिप्राय है। भू० के पश्चात् जो अंक दिये गये हैं वे भूमिका के पृष्ठ-नम्बर हैं।

इस अनुक्रमणिका में निम्न लिखित संकेताक्षरों का प्रयोग किया गया है:—

उ०=उपाधि । गं० वि०=गंडविमुक्त । त्रै० च०=त्रैविद्यचक्रवर्ती ।  
त्रै० यो०=त्रैकाल्ययोगी । पं०=पंडित । पं० आ०=पंडिताचार्य । भ०=भट्टारक । म०=मलधारी । म० दे०=मलधारि देव । सि० च०=सिद्धान्तचक्रवर्ती ।  
सि० दे०=सिद्धान्त देव । सै०=सैद्धान्तिक । श्वे०=श्वेताम्बर ।

अ

अकम्पन १०५. भू० १२५.  
अकलंक ४०, ४७, ५०, ५४, १०८,  
४९३. भू० ७९, ११२, १३५,  
१३७, १३९, १४४, १४५.  
अकलंक त्रैविद्य, देवकीर्ति के शिष्य ४०.  
अकलंक पंडित १६९. भू० ११७,  
१५३.  
अक्षयकीर्ति १५८ भू० १५१.  
अग्निभूति १०५ भू० १२५.  
अचल १०५ भू० १२८.  
अजितकीर्ति, चारुकीर्ति के शिष्य ७२  
भू० १६२.  
अजितकीर्ति, शान्तिकीर्ति के शिष्य  
७२.  
अजितपुराण. कविचक्रवर्तिकृत भू०  
११७.

अजितसेन व अजितभट्टारक ३८, ५४,  
६०. भू० २६, ७२-७४, १४०,  
१५२.  
अध्यात्म बालचन्द्र, नयकीर्ति के शिष्य  
( देखो बालचन्द्र ) ७०, ८१, ९०.  
अनन्तकवि, बेलगोलद गोम्मटेश्वर चरित  
के कर्ता भू० ५, २७, ३३, ४८.  
अनन्तकीर्ति, वीरनन्दि के शिष्य, ४१.  
अनन्तामति गन्ति ( आर्यिका ) २८.  
अनुबद्धकेवली १०५.  
अन्धवेल १०५ भू० १२५.  
अपराजित १, १०५ भू० ६०, ६२,  
१२५.  
अभयचन्द्र, नन्दि माघनन्दि के शिष्य  
४१, १०५, भू० १३०, १३५.  
अभयचन्द्र, त्रै० च०, गोम्मटसारवृत्ति के  
कर्ता भू० ७२.

अभयचन्द्रक ३३३ भू० १६१.  
 अभयनन्दि पण्डित २२ भू० ११८,  
 १५३.  
 अभयदेव ४७३ भू० १५६.  
 अभयनन्दि, त्रै०यो०के शिष्य ४७, ५०.  
 अभयसूरि १०५.  
 अभिनवचारुकीर्ति पं० आ० १३२, भू०  
 ४६, १६०.  
 अभिनव पं० पंडितदेव के शिष्य,  
 १०५, ३६२. भू० १३५, १६१.  
 अभिनव पं० आ० ४२१ भू० १६०.  
 अभिनव श्रुतमुनि १०५ भू० १३५.  
 अमरकीर्ति, धर्मभूषण के शिष्य, १११  
 भू० १३६.  
 अमरनन्दि १०५.  
 अरिष्टनेमि पं. २९७ भू० ११८.  
 अरिष्टनेमि २५ भू० १४.  
 अरिष्टनेमि गुरु १५२ भू० १११, १४९.  
 अरुङ्गलान्वय ४९३ भू० १३६, १४८.  
 अर्जुनदेव १०५.  
 अर्हदास कवि १०५ भू० ३८.  
 अर्हद्वलि १०५ भू० ५९, १३४.  
 अविद्धकर्ण, पद्मनन्दि व कुमारदेव गोला-  
 चार्यके शिष्य ४० भू० १३२.  
 अविनीत भू० १२८.  
 आजीगण २०७.  
 आर्यदेव ५४ भू० १३९.  
 इ  
 इङ्गुलेशबलि १०५, १०८, १२९ भू०  
 १३५, १४६.

इन्द्रनन्दि ५४, २०५ भू० ७७, १२०,  
 १२८, १३९, १४५, १४८, १५२.  
 इन्द्रभूति ( देखो गौतम ) ५४, १०५  
 भू० १२५.  
 इन्द्रभूषण, लक्ष्मीसेन के शिष्य, ११९.  
 भू० १६१.  
 ईशान १९४.

उ

उग्रसेन गुरु, पट्टिनिगुरु के शिष्य, ८  
 भू० १५०.  
 उत्तरपुराण, गुणभद्रकृत, भू० ३०, ७६.  
 उदयचन्द्र ४२, १०५, १३७. भू० १५९.  
 उपवासपर, वृषभनन्दिके शिष्य, १८९.  
 उल्लिङ्गलगुरु ११ भू० १५०.

ऋ

ऋषभसेनगुरु १४.

ए

एकत्वसतति पद्मनन्दिकृत भू० ११२.  
 एकसंधिसुमतिभट्टारक ४९३, भू०  
 १३७.

क

कण्ठवे कन्ति ( आर्यिका ) ४६०.  
 कनकचन्द्र ११३ भू० १३७.  
 कनकनन्दि ४०, ४४, २५१ भू० ९०,  
 १५५, १५८.  
 कनकश्री कन्ति ( आर्यिका ) ११३.  
 कनकसेन, बलदेवमन्त्रीके गुरु, १५  
 भू० १४९.  
 कनकसेन-वादिराज ४९३ भू० १३७.  
 कमलभद्र ५४ भू० १३९.

कर्मप्रकृति भ० ५४ भू० १३९.  
 कलधौतनन्दि, देवेन्द्रके शिष्य, ४२,  
 ४३, ५०.  
 कल्याणकीर्ति, माघनन्दिके शिष्य, ५५,  
 भू० १३३, १४३.  
 कल्याणकीर्तिमुनि ४९७ भू० १५५.  
 कविचक्रवर्ति, अजितपुराणकर्ता भू०  
 ११७.  
 कविताकान्त=शान्तिनाथ ५४.  
 कविरत्न १६६, २८८ भू० ११७.  
 कंसाचार्य १०५ भू० १२६.  
 काणूरगण ५०० भू० १४८.  
 कालाविर्गुह १३ भू० १५०.  
 काष्ठासंघ ११९, ३८१, ३८२, ३८६,  
 ३९३, ३९६ भू० ११९, १४८.  
 कित्तरसंघ १९४ भू० १४७.  
 कुकुटासन ४३.  
 „ ० मलाधारि ( गण्डविमुक्त  
 म० ) ४५, ५९, ९०, १३७,  
 ३६० भू० १५६.  
 कुकुटेश ( बाहुबलि ) ८५, १३०,  
 १३८, ४८६.  
 कुन्दकुन्दाचार्य ( कोण्डकुन्द० )=पद्म-  
 नन्दि ४०, ४२, ४३, ४७, ५०,  
 ७२, १०५, १०८, ४९२ भू०  
 १२७-१२९, १३३, १३४, १३८  
 १४०, १४४.  
 „ जिनचन्द्रके शिष्य भू० १२८.  
 कुमारदेव=अविद्धकर्ण पद्मनन्दि ४०.  
 कुमारनन्दि २२७ भू० १५२.

कुमारसेन सै० ५४, ४९३ भू० १३७,  
 १३८, १४०.  
 कुमुदचन्द्र १२९ भू० १५९  
 „ भू० १४३.  
 कुम्भ १०५ भू० १२८.  
 कुलचन्द्र, कुलभूषणके शिष्य, ४० भू०  
 १३२.  
 कुलभूषण, पद्मनन्दिके शिष्य, ४०,  
 ४१, १०५ भू० १३०, १३२.  
 कृत्तिकार्य १ भू० ६२, १२६.  
 कोण्डकुन्दान्वय ( कुन्दकुन्दान्वय )  
 ४०, ४१, ४२, ४५, ५४, ५५,  
 ५९, ९०, १०५, ११३, ११४,  
 १२२, १२४, १३०, १३२, १३७,  
 १३९, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०,  
 ३२४, ३२७, ३६०, ४२१, ४२६,  
 ४३०, ४७१, ४८१, ४८६, ४९१,  
 ४९२, ४९४, ४९९, भू० ९०,  
 १२९, १३०, १३७.  
 कोलतूरसंघ ३३, २०३, २०६ भू०  
 १४७.  
 कौमारदेव ४०.  
 क्षत्रिकार्य भू० १२६.  
 क्षत्रिय १०५ भू० १२६.  
 ग  
 गङ्गदेव १०५ भू० १२६.  
 गच्छ १०५.  
 गण १०५.  
 गणधर ५०, १०५.  
 गणभूत ( उ० ) भू० १४१.



गण्डविमुक्त, माघनन्दिके शिष्य, ४०,  
२४१, ३६८, ३६९, भू० १३२,  
१५५.

गण्डविमुक्त म०=कुक्कुटासन म०,  
दिवाकरनन्दिके शिष्य ४३.

गण्डविमुक्त गौलमुनि=म० हेमचन्द्र,  
५५, भू० १३३.

गण्डविमुक्त (वादि चतुर्मुख रामचन्द्र)  
देवकीर्तिके शिष्य, ४० भू० ११२.

गण्डविमुक्त सि० दे० ५०० भू० ३९,  
९३, ९४, ११०, ११८, १५३.

गुणकीर्ति ३० भू० १५१.

गुणकीर्ति १०५.

गुणचन्द्र (भद्र) ४२, ५५, ७०, ९०,  
१२४, १३७, ४९१, ४९४, भू०  
९६, ९७, १३३, १४६.

गुणचन्द्र ४३१ भू० १५९.

गुणचन्द्र म० दे०, शान्तीश के शिष्य,  
भू० ८२.

गुणदेव ४७७.

गुणदेवसूरि १६० भू० १५१.

गुणनन्दि, बलाकपिञ्छके शिष्य ४२,  
४३, ४७, ५०, १०५.

गुणभद्र, जिनसेनके शिष्य १०५ भू०  
७६, १३४.

गुणभूषित २१ भू० १५०.

गुणसेन ९, ५४ भू० १४०, १५०.

गुप्तिगुप्त भू० ६५, १२८.

गुम्मत, °देव, °नाथ, °स्वामी, °श्वर,  
गोमत, °देव, °देश, °श्वर इत्यादि=

बाहुबलि ४५, ५९, ८०-९६,  
१०३, १०५-१०७, ११०, ११३,  
११५, ११८, ११९, १२२,  
१३१, १३४, १३७, १४०,  
१४३, ३१६, ३२२, ३२९,  
३३०, ३५६, ३५७, ३५९,  
३६०, ४१७, ४२१, ४२४,  
४३३, ४३६, ४५४, ४८६.

गृद्धपिञ्छ ४०, ४२, ४३, ५०, १०५,  
१०८, २२९ भू० १४०.

गोपनन्दि, चतुर्मुखके शिष्य ५५,  
४९२ भू० ५३, ७५, ८७, १३३,  
१४२, १५३.

गोम्मतसारवृत्ति (अभयचन्द्रकृत) भू०  
७२.

गोम्मटेश्वरचरित (अनन्तकविकृत) भू०  
२३, २७, ४८, १०७.

गोलाचार्य ४०, ४७, ५०, भू० १३१,  
१३२, १४२.

गोवर्धन १, १०५, भू० ५६, ५७,  
६०, ६२, १२५.

गौतम १, ४०, ४२, ४३, ४७, ५०,  
५४, १०५, १०८, ४३८, ४९३,  
भू० ६२, १२९-१३१, १३६,  
१३८.

गौलदेव, °मुनि=म० हेमचन्द्र, गोप-  
नन्दिके शिष्य, ५५.

च

चतुर्मुख (वृषभनन्दि) ५५, ४९२,  
भू० ११३.

चतुर्मुखदेव ५४ भू० ११२, १४०,  
१४३.

चतुर्मुख भ० ११३ भू० १३७.

चन्द्रकीर्ति ४२, ४३, ५४, ९३,  
१०५, १०६, २२५, २३८, भू०  
११७, १२१, १३९, १५३,  
१५८, १५९.

चन्द्रगुप्त १७, ४०, ५४, १०८,  
भू० ५४-७०, १३०, १३१,  
१३८, १४९.

चन्द्रदेवाचार्य ३४ भू० १५१.

चन्द्रनन्दि, गोपनन्दिके शिष्य, ५५  
भू० ११३.

चन्द्रप्रभ, हिरिय नयकीर्ति के शिष्य,  
८८, ८९, ९६, १३७ भू० १२०,  
१५८, १५९.

चन्द्रभूषण १०५.

चन्द्राङ्क १०५.

चरितश्री ३ भू० १५०.

चामुण्ड, राज, राय, चामुण्डराय,  
६७, ७६, ८५, १०५, २२३  
भू० ९, १५, २३-२९, ३२,  
३८, ४०, ४८, ७३, ७४, ७८,  
९०, ९५, १०६, १०८, १०९,  
११७.

चामुण्डराय पुराण भू० २८, ३२, ७३.

चारुकीर्ति ७२, ४३५, ४३६ भू०  
१६२.

चारुकीर्ति शुभचन्द्रके शिष्य ४१, ५३,  
भू० १३०, १५५.

चारुकीर्ति श्रुतकीर्ति के शिष्य, १०५,  
१०८, ३६२, ३७७, भू० १००,  
१३५, १६१.

चारुकीर्ति गुरु भू० १०६.

चारुकीर्ति पं० ११८.

चारुकीर्ति पं० ८४, ४३३, ४३४  
भू० ३४, ४१, ४८, ५२, १६१,  
१६२.

चारुकीर्ति पं० १४२, १६१.

चामुण्डराज ( देखो चामुण्ड ) ७५,  
९८, १०९.

चिकुरापरविय गुरु १६२ भू० १५१.

चिक्क नयकीर्तिदेव ४५४.

चिदानन्द कवि ( मुनिवंशाभ्युदयकर्ता )  
भू० २७, ४५, ५९, १०५.

चिन्तामणि काव्य ( चिन्तामणिकृत )  
५४, भू० १३८.

चिन्तामणि ५४ भू० १३८.

चूडामणि काव्य ( वर्धदेवकृत ) ५४  
भू० १३८.

छ

छंदःशास्त्र ( पूज्यपाद कृत ) ४० भू०  
१४१.

ज

जगतकरतजी=जगत्कीर्तिजी ३३१.

जम्बुनायगिर ( आर्यिका ) ५.

जम्बू १, १०५ भू० ६०, ६२, १२५.

जय १, १०५ भू० ६२, १२६.

जयधवल ( ग्रंथ ) ४१४ भू० ४४.

जयपाल १०५ भू० १२६, १२७.

जयभद्र १०५ भू० १२६, १२७.

जलजरुचि १०५.

जसकीर्ति=यशःकीर्ति, गोपनन्दि के शिष्य, ५५, १३३.

जिनचन्द्र ५५, १०५ भू० १३३, १४२.

जिनचन्द्र, कुन्दकुन्द के गुरु भू० १२८.

जिनसेन ४७, ५०, १०५, ४२२ भू० २४, ७६, १३४, १६१.

जिनेन्द्रबुद्धि=देवनन्दि ४०, १०५, १०८ भू० १४१.

जैनाभिषेक ( पूज्यपादकृत ) ४० भू० १४१.

जैनेन्द्र ( व्याकरण पूज्यपादकृत ) ४०, ५५, भू० १४१.

त

तगरिल गच्छ ५०० भू० १४८.

तत्त्वार्थसूत्र ( उमास्वातिकृत ) १०५ भू० १४०.

तत्त्वार्थसूत्रटीका ( शिवकोटिकृत ) १०५ भू० १४१.

तपोभूषण १०५.

तार्किक चक्रवर्ति ३० ४९६.

तीर्थद गुरु १२.

त्रिदिवेशसंघ=देवसंघ १०५.

त्रिभुवनदेव, देवकीर्ति के शिष्य, ३९, ४० भू० ९६, १५७.

त्रिसुष्टिदेव, गोपनन्दि के शिष्य, ५५, भू० १३३.

त्रिरत्ननन्दि, माघनन्दि के शिष्य ५५, भू० १३३.

त्रिलोकसार ( नेमिचन्द्रकृत ) भू० ३०.

त्रिलोक प्रज्ञप्ति ( ग्रंथ ) भू० ३०.

त्रैकाल्ययोगी ४७३ भू० १५६.

त्रैकाल्ययोगी गोल्लाचार्य के शिष्य ४०, ४७, ५० भू० १३२, १४२.

त्रैविद्य ४७, ५०, ५४, ५६.

त्रैविद्यदेव ११४.

द

दक्षिणाचार्य=भद्रभाहु भू० ५९, ६०.

दक्षिणकुक्कुटेश्वर=गुम्मत १३८.

दयापाल, मतिसागरके शिष्य, ५४ भू० १३९.

दयापाल पं० ( महासूरि ) ५४ भू० १३९.

दर्शनसार ( देवसेनकृत ) भू० १४८.

दामनन्दि, रविचन्द्रके शिष्य ४२, ४३, १०५.

दामनन्दि=दावनन्दि, ( नयकीर्तिके शिष्य ) १२८, १३० भू० १५६.

दामनन्दि, चतुर्मुखदेवके शिष्य, ५५, भू० १३३, १४२.

दिण्डिगूरशाखा ४९६ भू० १४७.

दिवाकरनन्दि, चन्द्रकीर्तिके शिष्य ४३, १३९, भू० १५४.

देवकीर्ति, गण्डविमुक्तके शिष्य, ३९, ४०, १०५, भू० ५२, ९६, ११६, १३२.

देवचन्द्र ४०, १०५, भू० ६०.

देवणन्दि, जिनेन्द्रबुद्धि, पूज्यपाद, ४०, १०५, ४५९ भू० ७२, १३२, १३४, १४१, १५३.

देवश्री कन्ति ( आर्थिका ) ११३.  
 देवसंघ १०५, १०८ भू० १४५.  
 देवसेन ( दर्शनसार कर्ता ) भू० १४८.  
 देवेन्द्र ( श्वे० ) भू० १४३.  
 देवेन्द्र, गुणनन्दिके शिष्य ४२, ५०,  
 ५५, ४९२ भू० १३३, १५३.  
 देवेन्द्र, चतुर्मुखदेवके शिष्य ५५, भू०  
 १३३.  
 देवेन्द्र विशालकीर्ति १११ भू० १३६.  
 देशभूषण १०५.  
 देसि, देसिग, देसियगण ४०-४३,  
 ४५-५०, ५३, ५५, ५६, ५९,  
 ६३, ६४, ७२, ९०, १०५,  
 १०८, ११३, ११४, १२४, १३०,  
 १३२, १३७, १३८, १३९, १४४,  
 २२९, ३१७-३२०, ३२४, ३२७,  
 ३६०, ३६८, ३६९, ४२१, ४३०,  
 ४४६, ४७१, ४८६, ४८९, ४९१,  
 ४९२, ४९४, ४९६, ४९९ भू०  
 १३१, १३३, १३७, १४४.  
 द्रमिणगण ४९३ भू० १३६, १४८.  
 द्रव्यसंग्रह ( नेमिचन्द्रकृत ) भू० ३२.  
 द्रुमषेणक १०५, भू० १२६, १२७.

ध

धण्णे कुत्तारेवि गुरवि ( आर्थिका ) १०.  
 धनकीर्ति २४३ भू० १५७.  
 धनपाल १०५ भू० १२८.  
 धर्म १०५.  
 धर्मचन्द्र, चारुकीर्तिके शिष्य ११८  
 भू० १६१.

धर्मभूषण, अमरकीर्तिके शिष्य १११  
 भू० १३६.  
 धर्मभूषण शुभकीर्तिके शिष्य १११  
 भू० १३६.  
 धर्मसेन ७ भू० १२६, १२७, १५०.  
 धवल ( ग्रंथ ) भू० ४४.  
 धृतिषेण १, १०५ भू० ६२, १२६.  
 ध्रुवसेन भू० १२६, १२७.

न

नकुलार्थ ( लेखक ) ५००.  
 नक्षत्र १०५ भू० १२६.  
 नन्दिगण, °संघ, °आम्नाय, ४०, ४२,  
 ४३, ४७, ५०, १०५, १०८,  
 ४९३. भू० ६५, १२८-१३१,  
 १३६, १४४, १४५-१४८.  
 नन्दिमित्र १०५ भू० ६०, १२५.  
 नन्दिमुनीप २१७ भू० १५१.  
 नन्दिसेन २६ भू० १५१.  
 नयकीर्ति, गुणचन्द्रके शिष्य ४२, ७०,  
 ७८, ८१, ८५, ९०, ९६, १०४,  
 १०५, १२२, १२४, १२, ८ १३०,  
 १३७, ३१७-३२०, ३२३-३२८  
 ४२६, ४९१, ४९४, ४९६, ४९७,  
 भू० १३, ३५, ३७, ४५, ४६,  
 ८९, ९६-९६, १११, १४६,  
 १५५, १५६.  
 नयकीर्तिदेव, हिरिय नयकीर्तिके शिष्य,  
 १२८, ४७५ भू० १५७.  
 नयनन्दिविमुक्त ३०४ भू० ११८, १५२.  
 नमिद्धर, नविद्धर, निमिद्धर व मयूरसंघ,

२७, २८, ३१, २०७, २१२,  
२१५, २१८ भू० १४७.

नवस्तोत्र ५४.

नाग २५४ भू० १२६.

नागचन्द्र १०५.

नागनन्दि १०८.

नागमति गन्ति ( आर्यिका ) २.

नागवर्मकवि २९५.

नागसेन १४ भू० ११२, १२६, १५०.

नानार्थ रत्नमाला ( इरुगपकृत ) भू०  
१०४.

नीतिसार ( इन्द्रनन्दिकृत ) भू० १४५,  
१४८.

नेमिचन्द्र १०५, १२९, १३७, ४७९,  
४९० भू० २६, ३२, ४०, ४८,  
१०६, १३४, १५८.

नेमिचन्द्र नयकीर्तिके शिष्य, ४२, १२२  
१२४, १२८ भू० १५७.

नेमिचन्द्र म० दे० ११३ भू० १३७.

न्यायकुमुदचन्द्रोदय ( ग्रंथ ) भू० १४१.

## प

पञ्चबाणकवि ८४ भू० २६, ३३, १०५.

पट्टिनिगुरु ८ भू० १५०.

पण्डित, चारुकीर्तिके शिष्य १०५,  
१०८ भू० १३५.

पण्डितदेव, ११७, १३३, ३५५, ४२९,  
४०४, भू० ४७, १६१.

पण्डितयति १०८ भू० ४६.

पण्डिताचार्य ४२८ भू० ४६, १०३,  
१६०.

पण्डितार्य ८२, १०५ भू० ३८, १०४,  
११२, ११६.

पण्डितेन्द्र १०८.

पद्मनन्दि=कुन्दकुन्द ४०, ४२, ४३,  
४७, ५० भू० १२९, २३१.

पद्मनन्दि १०५, १९६ भू० १५२.

पद्मनन्दि चन्द्रप्रभके शिष्य १३७ भू०  
१५९.

पद्मनन्दि त्रैविद्यदेवके शिष्य ११४ भू०  
१६०.

पद्मनन्दि नयकीर्तिके शिष्य ४२, १२४,  
१२८, १३० भू० १५७.

पद्मनन्दि शुभचन्द्रके शिष्य ४१ भू०  
११२.

पद्मनन्दि देव ४९८ भू० १५२.

पद्मनाभपण्डित, अजितसेनके शिष्य  
५४ भू० १४०.

पनसोगेबलि=हनसोगेबलि भू० १४६,  
१४७.

परवादिमल्ल ५४, ४९५ भू० ८०,  
१३९, १५८.

परवियगुरु १६२.

परिशिष्टपर्व ( श्वे० ग्रंथ ) भू० ६६, ६७.

पाण्डु १०५ भू० १२६.

पात्रकेसरि ५४ भू० १३८.

पानपभटार ६ भू० १५०.

पुत्र १०५ भू० १२५.

पुत्राटसंघ भू० १४७ फु. नो.

पुष्पदन्त, अर्हद्वलिके शिष्य, १०५ भू०  
१२९, १३४.

पुष्पदन्त ( महापुराणकर्ता ) भू० ७७.

पुष्पनन्दि १९७ भू० १५२.

पुष्पसेन ५४ भू० १३९.

पुष्पसेनाचार्य २१२ भू० १५२.

पुष्पसेन सि० दे० ४९३ भू० १३७.

पुस्तकगच्छ ४०-४३, ४५-५०, ५३,

५६, ५९, ६३, ९०, १०५, १०८,

११३, ११४, १२४, १३०, १३२,

१३७, १३८, १३९, १४४, ३१७,

३१८, ३१९, ३२०, ३२४, ३२७,

३६८, ३६९, ४२१, ४२६, ४३०,

४४६, ४७१, ४८६, ४८९, ४९१,

४९४, ४९६, ४९९, भू० १३७,

१४४, १४६.

पूज्यपाद=देवनन्दि ४०, ४७, ५०,

५५, १०५, १०८ भू० १४१.

पूरान्वय ( श्रीपूरान्वय ) २२० भू०

१४७.

पूरुतिथि गुरु ११५.

पेरुमालु गुरु १०.

पोल्लव्वे कान्तियर ( आर्थिका ) २४०.

प्रथमानुयोगशाखा ९८.

प्रभाचन्द्र=चन्द्रगुप्त १ भू० ६२-६४.

प्रभाचन्द्र १०५.

प्रभाचन्द्र चतुर्मुख के शिष्य, ५५ भू०

११२, १३३, १४२.

प्रभाचन्द्र नयकीर्ति के शिष्य ४२, १२२,

१२४, १२८, १३०.

प्रभाचन्द्र पद्मनन्दि के शिष्य ४० भू०

१३२.

प्रभाचन्द्र मेघचन्द्र के शिष्य ४३, ४४,

४७, ५०, ५१, ५२, ५३, ५६,

६२, भू० ९२, ११६, १५४.

प्रभाचन्द्र भट्टारक ९७ भू० १५९.

प्रभाचन्द्र सि० दे० ५०० भू० ११०,

१५३, १५६.

प्रभावक चरित ( श्वे. ग्रंथ ) भू० १४३.

प्रभावती ( आर्थिका ) २७.

प्रभासक १०५ भू० १२५.

प्रोष्ठिल १, १०५ भू० ६२, १२६.

ब.

बलदेवगुरु, धर्मसेनके शिष्य, ७, भू०

१५०.

बलदेवमुनि, कनकसेनके शिष्य १५ भू०

१४९.

बलदेवाचार्य १९५, भू० १५८.

बलर ( भट्टारक ) १७४.

बलाकपिञ्छ, गृद्धपिञ्छके शिष्य, ४०,

४२, ४३, ४७, ५०, १०५,

१०८, भू० १३१, १३४, १४०.

बलात्कारगण १११, १२९ भू० १३५,

१३६, १४६.

बालचन्द्र ( दखो अध्यात्मि ), नयकी-

र्तिके शिष्य, ४२, ५०, ६९, ८५,

१०४, १०५, १२२, १२४, १२८,

१३०, १८७, ३२३, ३२५,

३२८, ४२६, ४९४, ४९६, भू०

३७, ९७-९९, १५६.

बालचन्द्र, नेमिचन्द्रके शिष्य, १२९,

४७९, भू० ५२, १६०.

बालचन्द्र, अभयचन्द्रके शिष्य, ४१ भू०  
१३०.

बालचन्द्र, माघनन्दिके शिष्य, ५५ भू०  
१३३.

बालसरस्वती उ०, ५५ भू० ८३.

बालेन्दु ( देखो बालचन्द्र, अभयच-  
न्द्रके शिष्य )

बाहुबलि ( भुजबलि, दोर्बलि, ) देखो  
गुम्मट ८५, ३६५.

बाहुबलि चरित भू० २८, ३१.

बुद्धिल १, १०५ भू० ६२, १२६.

बृहत्कथाकोष ( हरिषेणकृत ) भू० ५६.

बेल्गोलदगोम्मटेश्वर चरित भू० ५.

बोप्पण कवि ८५ भू० २२.

बोम्मणकवि ८४, १०१.

ब्रह्मगुणसागर, अमरचन्द्रके शिष्य,  
३३३, भू० १६१.

ब्रह्मदेव ( टीकाकार ) भू० ३२.

ब्रह्मधर्मरुचि अभयचन्द्र भ० ३३३ भू०  
१६१.

ब्रह्मरङ्गसागर ३९४.

### भ.

भट्टाकलंक ( देखो अकलंक ) ५५,  
१०५, भू० १३४.

भट्टारकदेव, नयकीर्तिके शिष्य, १२२.

भद्रबाहु ( भद्राचार्य ) १, १७, ४०,  
५४, ७१, १०५, १०८, भू० १५,  
२४, ५४-६६, ६९, १२५,  
१२८, १३१, १३८, १४९.

भद्रबाहु चरित ( रत्ननन्दिकृत ) भू०  
५८, ६०.

भद्रबाहुबलिस्वामी २४८.

भरत व भरतेश्वर ७५, ११५, ४३८.

भानुकीर्ति, गण्डविमुक्तदेवके शिष्य, ४०  
भू० १३२.

भानुकीर्ति, नयकीर्तिके शिष्य, ४२,

७०, १०५, १२२, १२४, १२८,

१३७, १३८, १४४, १८७,

२२९, ४९१, भू० ८८, ९५,

९७, १५४, १५५, १५६.

भानुकीर्ति, माघनन्दिके शिष्य, ४९९,  
भू० १५९.

भानुचन्द्र, त्रिभुवनराजगुरु, सि० च०  
११३, भू० १३७.

भुजबलिचरित ( पञ्चबाणकृत ) भू०  
२३, २४, १०५.

भुजबलि शतक ( दोड्डयकृत ) भू० २३,  
२६, ३२, ११०.

भुवनकीर्ति देव ३७२ भू० १६०.

भूतबलि, अर्हद्वलिके शिष्य १०५ भू०  
१२९, १३४.

### म

मङ्गराजकवि १०८ भू० ३८.

मण्डलाचार्य उ० ५२, ८८, ८९, ११३.

मण्डितदगच्छ ११९ भू० ११९, १३८.

मतिसागर, श्रीपालके शिष्य ५४ भू०  
१३९.

मयूरग्रामसंघ ( देखो नमिल्लरसंघ ) २७,  
२९ भू० १४७.

मयूर पिञ्छ १०८.

मलधारि गण्डविमुक्त ४३, १३९.

मलधारि देव ११३ भू० १३७.

मलधारि देव, श्रीधरदेवके शिष्य ४२,  
४३.

मलधारि, नयनन्दिविमुक्तके शिष्य,  
३०४ भू० १५२.

मलधारि मल्लिषेण, अजितसेनके शिष्य,  
५४, ४९३, ४९५ भू० ११६,  
१३७, १४०, १५८.

मलधारि रामचन्द्र, अनन्तकीर्तिके शिष्य,  
४१.

मलधारि स्वामी १३८ भू० ९५.

मलधारि हेमचन्द्र, गोपनन्दिके शिष्य,  
५५ भू० १३३.

मल्लिदेव २५१.

मल्लिषेण ४६१ भू० १५८.

मल्लिसेन भट्टारक १४६ भू० ११८,  
१५२.

मल्लिसेन, लक्ष्मीसेनके शिष्य २४७ भू०  
१६०.

महदेव १९३ भू० १५१.

महामण्डलाचार्य उ० ४०, ८९, ९६,  
१२९, १३० १३७, ४७५, ४७९,  
४९०.

महावीर १०५ भू० १२८.

महावीराचार्य ( गणितसार कर्ता ) भू०  
७६.

महासेन ( देखो मासेन )

महिधर १०५ भू० १२८.

महेन्द्रकीर्ति, कलधौतनन्दिके शिष्य  
४७, ५०.

महेन्द्रचन्द्र ५५ भू० १३३.

महेश्वर ५४ भू० १३८.

माघनन्दि १०५ भू० १३४.

माघनन्दि, कुमुदचन्द्रके शिष्य १२९.

माघनन्दि, कुलचन्द्रके शिष्य ४० भू०  
११२, १३२.

माघनन्दि, कुलभूषणके शिष्य ४०, भू०  
१३०.

माघनन्दि, गुप्तिगुप्तके शिष्य भू० १२८.

माघनन्दि, चतुर्मुखके शिष्य ५५ भू०  
१३३.

माघनन्दि, चारुकीर्तिके शिष्य ४१  
भू० १३०.

माघनन्दि, नयकीर्तिके शिष्य ४२,  
१२४, १२८, १३० भू० १५७.

माघनन्दि, श्रीधरदेवके शिष्य ४२.

माघनन्दि भट्टारक, भानुकीर्तिके शिष्य  
४९९ भू० १५९.

माघनन्दि व्रती ४९९ भू० १००.

माघनन्दि सि० च० १२९ भू० १५९.

माघनन्दि सि० दे० ४७१.

माणिकनन्दि १०५.

माणिकयनन्दि, गुणचन्द्रके शिष्य ४२.

माधव, देवकीर्तिके शिष्य ३९, ४०  
भू० ९६, १५७.

माधवचन्द्र, शुभचन्द्रके शिष्य ४१,  
१४४ भू० १५५.

मानकव्वे गन्ति ( आर्थिका ) १३९.

मासेन ऋषि ( महासेन ) १६१ भू०  
१५१.



मुनिचन्द्रदेव, उदयचन्द्रके शिष्य १३७  
भू० १५९.

मुनिवंशाभ्युदय (चिदानन्दकृत)  
भू० २७, ४५, ५९, ६२, १०५.

मूलसंघ ४०, ४१, ४३, ४५-५०,  
५३, ५५, ५६, ५९, ६३, ६४,  
९०, १०५, १११, १२४, १२९,  
१३०, १३२, १३७, १३८, १४४,  
२२९, ३१७, ३१८-३२०, ३२४,  
३२७, ३३२, ३६०, ३६८, ३६९,  
४२१, ४२६, ४३०, ४४६, ४७१,  
४७३, ४८९, ४९१, ४९२, ४९४,  
४९९, ५०० भू० १०३, १२९,  
१३१, १३३, १३५, १३६, १४४.

मेघचन्द्र, गुणचन्द्रके सधर्म, ४२  
मेघचन्द्र, नयकीर्तिके शिष्य, ४२.  
मेघचन्द्र, बालचन्द्रके शिष्य, ४९६,  
भू० १५७.

मेघचन्द्र, माघनन्दिके शिष्य, ५५ भू०  
१३३.

मेघचन्द्र, वीरनन्दिके गुरु ४१.  
मेघचन्द्र, सकलचन्द्रके शिष्य ४७, ५०,  
५३, ५६, भू० ९१, ९२, ११६,  
१५४.

मेघनन्दि २१५ भू० १००, १५१.

मेरुधीर १०५ भू० १२८.

मेल्गवासगुरु २३ भू० १५१.

मैत्रेय १०५ भू० १२५.

मौण्ड्य १०५ भू० १२५.

मौनियाचारिय ३१ भू० १५१.

मौनीगुरु २, ९ भू० १४९.

मौर्य १०५ भू० १२५.

य

यशोबाहु १०५.

यशःकीर्ति, गोपनन्दिके शिष्य ५५ भू०  
११२, १३३, १४३.

यशःपाल भू० १२६, १२७.

यशोबाहु भू० १२६.

यशोभद्र भू० १२६, १२७.

र

रत्नकरण्ड श्रावकाचार (समन्तभद्रकृत)  
भू० ७६.

रत्ननन्दि, ललितकीर्तिके शिष्य भू०  
५८, ६०.

रत्नमालिका (अमोघवर्षकृत) भू० ७६.

रविचन्द्र, कलधौतनन्दिके शिष्य ४२,  
४३, २३१.

रविचन्द्र ५३ भू० १५५.

राघवपाण्डवीय (श्रुतकीर्तिकृत) ४०  
भू० १४३.

राजकीर्ति ११९ भू० १६१.

राजावलिकथा (देवचन्द्रकृत) भू०  
२३, २७, ६०.

राज्ञीमति गन्ति (आर्थिका) २०७.

रामचन्द्र, बालचन्द्रके शिष्य ४१ भू०  
१३०.

रामिल्ल भू० ५७.

राय=चामुण्डराय १३७.

रूपसिद्धि (दयापालकृत) ५४.

ल

लक्ष्मणदेव २२२.

लक्ष्मणान्दि, देवकीर्ति पं० दे० के शिष्य  
३९, ४० भू० ९६, १५७.लक्ष्मीसेन, राजकीर्तिके शिष्य ११९,  
भू० १६१.

लक्ष्मीसेनभट्टारक २४७.

ललितकीर्ति, अनन्तकीर्तिके शिष्य भू०  
३४, ५८.लोह ( लोहार्य ) १, १०५, भू० ६२,  
१२५, १२६, १२७.

व

वकगच्छ ५५, भू० १३३, १४६.

वकग्रीव ५४, ४९३ भू० १३७, १३८.

वज्रनन्दि ५४ भू० १३८.

वड्डदेव ५५ भू० १३३.

वर्धमानदेव ५३ भू० १५५.

वर्धमानाचार्य भू० ७५.

वलि १०५.

वसुदेव १०५ भू० १२८.

वसुनन्दि १०५.

वादिकोलाहल ३, ५४, ४९३.

वादिगण १०५.

वादिचतुर्मुख उ० ४०.

वादिराज ४९३, ४९४, ४९५, भू०  
८३, ९९, १३७, १५८.वादिराज, मतिसागरके शिष्य ५४, भू०  
१३९, १४३.

वादीसिंह उ० भू० १४१.

वादीभ कण्ठीरव उ० ५४.

वादीभसिंह ४९३.

वायुभूति १०५ भू० १२५.

वासवचन्द्र, चतुर्मुख देवके शिष्य, ५५  
भू० ८३, १३३, १४३.

विजय १०५ भू० १२६.

विजयधवल ( ग्रंथ ) ४१३.

विद्याधनञ्जय उ० ५४ भू० १३९.

विद्यानन्दि १०५.

विनीत १०५ भू० १२८.

विमलचन्द्र ५४ भू० १३९.

विशाख १, १०५ भू० ५७, ५९, ६१,  
६२, १२६.

विशोक भट्टारक २०३ भू० १५२.

विष्णु १०५ भू० ६०, ६२, १२५.

विष्णुदेव १, १२५.

वीर १०५ भू० १२८.

वीरनन्दि, मेघचन्द्रके शिष्य, ४१, ५०.

वीरनन्दि, महेन्द्रकीर्तिके शिष्य, ४७,  
५०.

वीरसेन ४७, ५०.

वृषभगण ४७, ५०.

वृषभनन्दि ३१, ५५, १८९ भू० १४९,  
१५१.

वृषभप्रवर ९८.

वृषभसेन ४३८.

वेष्टेडेगुरु १९.

वैद्यशास्त्र ( पूज्यपादकृत ) भू० १४२.

श

शब्दचतुर्मुख ५४ भू० ८३.

शब्दावतारन्यास ( पूज्यपादकृत ) भू०  
१४२.

शशिमति गन्ति ( आर्यिका ) ३५.  
 शाकटायन सूत्रन्यास भू० १४१.  
 शान्तकीर्ति, अजितकीर्तिके शिष्य ७२  
 भू० १६२.  
 शान्तनन्दि २२४.  
 शान्तराज पं०, भू० १९, २१, ३३.  
 शान्तिकीर्ति ११२, ११३ भू० १३७.  
 शान्तिदेव ५४, ४९३ भू० ८६, १३७,  
 १४०.  
 शान्तिनाथ, अजितसेनके शिष्य, ५४  
 भू० १४०.  
 शान्तिभट्टारकाचार्य ११३ भू० १३७.  
 शान्तिसिंह पं० ४९५ भू० १५८.  
 शान्तिसेन १७-१८ भू० ५६, १४९.  
 शान्तिसेनदेव ४९३ भू० १३७.  
 शान्तीश, गुणचन्द्र म०के गुरु भू० ८२.  
 शास्त्रसार ( ग्रंथ ) १२९ भू० १००.  
 शिवकोटि, °आचार्य, °सूरि, समन्त-  
 भद्रके गुरु, १०५ भू० १३४, १४१.  
 शुभकीर्ति, चतुर्मुखदेवके शिष्य, ५५  
 भू० १३३.  
 शुभकीर्ति, देवकीर्तिके शिष्य, ४० भू०  
 ११६.  
 शुभकीर्ति, देवेन्द्र विशालकीर्तिके शिष्य,  
 १११ भू० १३६.  
 शुभकीर्ति, बालचन्द्रके शिष्य, ५०,  
 १८८ भू० १५५.  
 शुभचन्द्र, देवकीर्तिके शिष्य, ४० भू०  
 ११६.

शुभचन्द्र, गं० वि० म० दे० के शिष्य,  
 ४३, ४५-४९, ५९, ६३-६५,  
 ९०, १३९, १४४, ३६०, ४४६,  
 ४४७, ४८६, ४८९ भू० ४९,  
 ९१, ९२, १५३, १५५.  
 शुभचन्द्र, माघनन्दिके शिष्य, ४७१  
 भू० ९८, १३०, १५८.  
 शुभचन्द्र, म० रामचन्द्रके शिष्य ४१  
 भू० ११२.  
 श्रीकीर्ति १०५.  
 श्रीदेव १४५.  
 श्रीदेवाचार्य २१३ भू० १५२.  
 श्रीधरदेव, दामनन्दिके शिष्य, ४२, ४३.  
 श्रीनन्दाचार्य ४९३ भू० १३७.  
 श्रीपाल ५४, ४९३, ४९५, भू० ८८,  
 ९९, १३७, १३९, १५८.  
 श्रीपूरान्वय ( देखो पूरान्वय ) २२०  
 भू० १४७.  
 श्रीभूषण १०५.  
 श्रीमति गन्ति ( आर्यिका ) १३९  
 श्रीवर्धदेव ५४ भू० १३८.  
 श्रीविजय ५४, ४९३ भू० ७५, १३७,  
 १३९.  
 श्रीविहार ( उत्सव ) ४३५, ४३६.  
 श्रीसंघ २२०.  
 श्रुतकीर्ति ४०, १०५, १०८ भू०  
 १३५, १४३.  
 श्रुतकेवलि ४०, ५४, १०५, १०८.  
 श्रुतबिन्दु ( चन्द्रकीर्तिकृत ) ५४ भू०  
 १३९.

श्रुतमुनि, अभयचन्द्रके शिष्य, १०५  
भू० ३८, १०४, १३५.

श्रुतमुनि, पण्डितार्यके शिष्य, ५२ भू०  
१६०.

श्रुतमुनि, सिद्धान्तयोगीके शिष्य, १०८,  
भू० ११६, १३५.

श्रुतसागर वर्णि ११६ भू० १६१.

श्रुतावतार (इन्द्रनन्दिकृत) भू० १२७,  
१२८.

### स

सकलचन्द्र, अभयनन्दिके शिष्य ४७,  
५०.

सत्ययुधिष्ठिर ( चामुण्डरायकी उ० )  
भू० ७३.

सन्दिगगण २१ भू० १५०.

सन्मत्तिसागर, चारुकीर्तिके शिष्य ४३५  
४३६, ४५५-४५७ भू० १६२.

सप्तमहर्षि ४०, ४२, ४३, ४७, ५०,  
५४.

समन्तभद्र ४०, ५४, १०५, १०८,  
४९३ भू० १३१, १३४, १३६,  
१३८, १४१.

समस्तविद्यानिधि उ० भू० १४१.

समाधिशतक ( पूज्यपादकृत ) ४० भू०  
१४१.

सम्यक्त्वचूडामणि उ० ५३, ५६, ९०,  
१०६, १३८, १४४, ३६०,  
४२१, ४३०, ४८६, ४९१, ४९२,  
४९३, ४९७, ४९९.

सम्यक्त्वरत्नाकर उ० ४३, ४४, ४७.  
सरसजनचिन्तामणि ( शान्तराजकृत )  
भू० १९.

सर्वगुप्त १०५ भू० १२८.

सर्वज्ञ १०५ भू० १२८.

सर्वज्ञचूडामणि ८१.

सर्वज्ञभट्टारक १५३ भू० १५१.

सर्वनन्दि, चिकुरापदवियके शिष्य १६२  
भू० १५१.

सर्वार्थसिद्धि ( पूज्यपादकृत ) ४० भू०  
१४१, १४२.

सन्यसन, सन्यास, सल्लेखना, समाधि  
१, ७, ८, १३, १४, २६, २९,  
३८, ४४, ४७, ४८, ४९, ५१-  
५४, १०५, १०८, १३९, १५५,  
१८६, २०७, ४६९, ४७९.

सम्पूर्णचन्द्र=रविचन्द्र, कलधौतनन्दिके  
शिष्य ४२, ४३.

सरस्वतीगच्छ भू० ६५.

सागरनन्दि, शुभचन्द्रके शिष्य ४७१  
भू० ५१, ९८, १५८.

सातनन्दिदेव २२४ भू० १५३.

सायिब्बे कान्तियर (आर्यिका) २२७.

सारत्रय ( चारुकीर्तिकृत ) १०८.

सिताम्बर=श्वेताम्बर १०५.

सिद्धनन्दि ६३.

सिद्धान्तयोगी, पण्डितके शिष्य १००  
भू० १३५.

सिद्धार्थ १, १०५ भू० ६२, १२६.

सिंगणन्दिगुरु, बेट्टेडेगुरुके शिष्य १९  
भू० १५०.

सिंहनन्दि ५४, ३७४, ४८६, भू०  
 ७१, ७२, १३८.  
 सिंहनन्दिभट्टाचार्य ११३ भू० १३७.  
 सिंहनन्दाचार्य ३७४, ४९३, भू० २६  
 १३७, १६०.  
 सिंहणाय १०५.  
 सिंहसंघ १०५, १०८ भू० १४५.  
 सुजनोत्तंस=बोप्पकवि ८५.  
 सुधर्म १०५ भू० १२५-१२७.  
 सुभद्र १०५ भू० १२६.  
 सुमतिदेव ५४ भू० १३८.  
 सुमतिशतक ( सुमति देवकृत ) ५४.  
 सुरकीर्ति ४३१ भू० १५८.  
 सेनसंघ १०५, १०८.  
 सोमदेव भू० ७७.  
 सोमचन्द्र ११३ भू० १३७  
 सोमश्री ( आर्यिका ) ११३.

सोमसेनदेव ३७१ भू० १६०.  
 स्थलपुराण ( ग्रंथ ) भू० २३, २७.  
 स्थूलवृद्ध भू० ५७.  
 स्वामी ५४ भू० ८३.  
 स्वास्थ्यशास्त्र ( पूर्जपादकृत ) ४० भू०  
 १४१.

### ह

हनसोगे शाखा ७० भू० १४६.  
 हरिषेण ( कथाकोषकर्ता ) भू० ५६.  
 हलधर १०५ भू० १२८.  
 हिरिय नयकीर्ति ८९, ४५४, ४७५.  
 हरिवंशपुराण भू० ३०, १२५, १२७.  
 हेमचन्द्राचार्य ( श्वे० ) भू० ६६.  
 हेमचन्द्रकीर्ति, शान्तिकीर्तिके विषय  
 ११२ भू० १६०.  
 हेमसेन ५४ भू० १३९.

## अनुक्रमणिका २

—:०:—

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्यिका, कवि व संघादिको छोड़ शेष सब प्रकारके नामोंका समावेश किया गया है। नामके पश्चात्के अंकोंसे लेख-नंबर व भू० के पश्चात्के अंकोंसे भूमिका-पृष्ठका तात्पर्य है।

इस अनुक्रमणिकामें निम्नलिखित संकेताक्षरोंका प्रयोग किया गया है।

उ०=उपाधि। को० न०=कोङ्काल्व नरेश। गं० न०=गंग नरेश। गं० रा०=गंग राजकुमार। ग्रं०=ग्रंथ। ग्रा०=ग्राम। चं० न०=चंगाल्व नरेश। चा० न०=चालुक्य नरेश। चामु०=चामुण्डराय। चो० रा०=चोल राजधानी। चो० से०=चोल सेनापति। जा०=जाति। जै० मं०=जैन मंदिर। तृ०=तृतीय। दा०=दार्शनिक। दु०=दुर्ग। द्वि०=द्वितीय। न०=नरेश। नि० सर०=निडुगल सरदार। नो० न०=नोलम्ब नरेश। पा० सर०=पाण्ड्य सरदार। पु०=पुरुष। पौ० ऋ०=पौराणिक ऋषि। पौ० न०=पौराणिक नरेश। प्र०=प्रथम। मं०=मंत्री। मै० न०=मैसूर नरेश। मौ० न०=मौर्य नरेश। रा० न०=राष्ट्रकूट नरेश। रा० रा०=राष्ट्रकूट राजकुमार। रा० वं०=राजवंश। वि० न०=विजयनगर नरेश। शै० न०=शैशुनाग नरेश। सर०=सरदार। सरो०=सरोवर। से० सेनापति। स्था०=स्थान। हो० न०=होय्सल नरेश।

अ

अकालवर्ष=कृष्ण द्वि०, रा० न०, भू०

७६.

अकनबस्ति=पार्श्वनाथ मंदिर भू० ४३,

४४, ९७.

अक्कवे, चन्द्रमौलि मं० की माता १२४

भू० ९७.

अक्षपाद दा० ५५.

अखण्डवागिल दरवाजा भू० ३८.

अगलि, ग्रा० ९.

अगशाजी पु०, भू० ३७.

अग्रवाल जा० ३३८, ३४०, ३४६,

३४७ भू० १२०.

अजितादेवी चामु० की भार्या भू० २४.

अडेयार राष्ट्र अदेयरेनाडु २.

अण्णय्य पु० १७२ भू० ४८.

अण्णितटाक स्था० ४२.

अतकूर, ग्रा०, भू० १०९.

अत्तिमन्वरसि, अत्तिमन्वे, स्त्री ५९,

१२४, १४४, भू० ९०.

अदटरादित्य को० न० ४९८, ५००

भू० ११०.

अदियम चो० से० ५३, ९०, १३८,  
३६०, ४८६, ४९३ भू० ५०.

अध्याडिनायक पु० ७४.

अनन्तपुर, जिला, भू० १११.

अन्दमासलु, स्था० २४.

अन्धासुरचौव दु० ५६.

अन्याय ( एक टैक्स ) १२८.

अप्रतिमवीर उ० ४३४.

अभ्यागते ( एक टैक्स ) १३७.

अमर, हुल्ल मं० के भ्राता १३८ भू० ९५.

अमोघवर्ष प्र०, रा० न०, भू० ७६.

अमोघवर्ष तृ०=वद्देग, रा० न०, भू०  
७४, ७७.

अम्मेले, ग्रा० ३६१.

अय्कनकट्ट, स्था० ५९.

अय्यावोले, ग्रा० ६८.

अरकेरे, ग्रा० १२० भू० १०९.

अर्कलुगुद तालुका, भू० १०९.

अरसादित्य, मं० ३५१.

अरिराय विभाड, उ० १३६.

अरेगलबस्ति भू० ५१.

अरेयकेरे, सरो० ५१.

अर्ककीर्ति, न० १०५.

अर्जुनशीतग्राम, ३८२.

अर्थर वेल्सली साहब-भू० १८.

अर्हनेहल्लि, ग्रा० ८३, ४८६.

अलसकुमार, पु० १७५ भू० ११७.

अलाउद्दीन खिलजी भू० ८५.

अलियमारिसेट्टि, ८७.

अल्ल, सर०, ३८.

अवधदेश, भू० ११९.

अवरेहाल्लु ग्रा० १२२.

अशोक, न०, भू० ६८.

अहमदनगर भू० १०१.

अहितमार्तण्ड, उ० ३८.

अंगडि, ग्रा० ३६१ भू० ८३.

अंगरिक-कालिसेट्टि, पु० ३६१.

आइने अकबरी ग्रं०, भू० ६८.

आगरा नगर, भू० ११९.

आचलदेवि, आचले, आचाम्बा, आचि-  
यक्क=चन्द्रमौलि मं० की भार्या,  
१०७, १२४, ४२६, ४९४ भू०  
४४, ९७, ९८.

आचलदेवि, हेम्माडिदेवकी भार्या १२४.

आचाम्बिके, अरसादित्यकी भार्या, ३५१.

आत्रेयस गोत्र ४३४.

आदितीर्थ, कुण्ड, १२३, ४५३.

आदिलशाह भू० १०१.

आनेयगोन्दि, ग्रा० १३६.

आर्ब्व, ग्रा० ८९.

आलेपोम्मु ( एक टैक्स ) ४३४.

आलेसुंक ( एक टैक्स ) ४३४.

आलदुरतम्मडिगल, पु० १५५.

आश्वलायन सूत्र, ग्रं० ४३४.

आहवमल्ल, चा० न० ५४ भू० ८३, १४०.

आहवमल्ल-सोमेश्वर, चा० न०, भू० ८४.

इ

इच्छादेवी, भुजबलिकी रानी, भू० २४.

इनुडुर, ग्रा० २३.

इन्डियन एफेमेरिस, ग्रं०, भू० : २९,  
३१.

इन्दिराकुलगृह=शासनबस्ति ६५, भू०  
१०, ९२.

इन्द्र, राज, रा० न० ३८, ५७, १०५,  
१०९, भू० ७२, ७६-७९.

इम्मडि कृष्णराज बडेयर, मै० न० ४३४.

इरुगप, इरुगेन्द्र, इरुगेश्वर=हरिहर द्वि०  
के से०, ८२ भू० १०४.

इरुक्कोल, नि० सर०, ४२, १३८ भू०  
१११.

इरुवे ब्रह्मदेव मंदिर भू० १४.

इस्थान पेठ, ग्रा० ३४०.

उ

उधेरवाल=वधेरवाल जा० ११४.

उच्चङ्गि, उच्छङ्गि, दु०, ३८, ५३, ५६,  
९०, १२४, १३०, ४३१, ४९४  
भू० ९७.

उज्जैन (नगर) १ भू० ५७, ५८, ६२.

उत्तनहल्लि, ग्रा०, ८३.

उत्तेनहल्लि, ग्रा० ४३४.

उदयविद्याधर, उ० ६१ भू० ७४.

उदयसिंग, पु० ३४८.

उदयादित्य, हो० न०, १२४, १३७,  
४९३, ४९४, भू० ८७.

ऋ

ऋषिगिरि=चिक्कबेट्ट, ३४.

ए

एकोटि जिनालय, भू० १०३.

एच, राज, एचिग, एचिगाङ्ग, एचि-

राज, गंगराजके पिता ( बुधमित्र )

४४, ४५, ५९, ९०, १४४,  
३६०, ४८६, भू० ८९.

एच, एचिराज=बम्मके पुत्र, से० १४४,  
भू० ८६, ९१.

एचण, एचिराज=गंगराजके पुत्र ५९,  
६६, भू० ९.

एचब्बे, स्त्री० १४४.

एचलदेवी, हो० रा० ९०, १२४ भू०  
९६.

एचलदेवी, हो० रा० १२४, १३७,  
१३८, ४९०, ४९३, ४९४ भू०  
८७.

एचिराज, से०, भू० ९१.

एचिसेट्टि, पु० ८६, ३६१.

एडवलगेरे, सरो०, १२९, १३०,

एनूर, स्था०, भू० ३४.

एरग, एरेयङ्ग, हो० न०, ५६, १४४.

एरडुकटे बस्ति, भू०, १०, १३, ९१.

एरम्बरगे, देश, १३० भू० ९७.

एरेगङ्ग ( गंगराष्ट्र ) भू० ७४.

एरेयङ्ग=एरग, हो० न० ५३, ५६, १२४,  
१३०, १३७, १३८, १४४,  
४३२, ४९१-४९५. भू० ५३,  
८३, ८७.

एरेयप्प, गं० न०, भू० ७५.

एरेव बेडेङ्ग, उ० ५७, भू० ७९.

ओ

ओडेय, पा० सर०, ९०, १२४, १३०.

ओदेगल बस्ति भू० ४१.



ओम्मालिगेयहाल, स्था० ५१.  
ओरेयूर, चो० रा० ५००, भू० ११०,  
१११.

क

कगरे, ग्रा० ९० भू० ९६.  
कश्चिनदोणे, कुण्ड, भू० १४.  
कटकसेसे ( एक टैक्स ) १३७.  
कटवप्र= चिकवेष्ट २७-२९, ३३,  
१५२, १५९, १८९ भू० ६३,  
६४, ११६.  
कडवदकोल, कुण्ड १२४.  
कडसतवाडि, ग्रा० ४५९, ४६०.  
कणाद, दा० ४९३.  
कत्तले बस्ति भू० ५, १३, ९१.  
कदन कर्कश उ० ३८.  
कदम्ब, पु०, भू० १४.  
कदम्ब, रा० वं० १३८, २८२, भू०  
१०८.  
कदम्बहलि, ग्रा०, भू० १०३.  
कदिक वंश ३२२.  
कन्खरी, वादित्र ४०७, ४०८.  
कन्दाचार, सिपाही ९८.  
कन्नेगाल, स्था०, भू० ८२, ९०, ९१.  
कन्ने बसदि, जैनमंदिर ११५.  
कन्नौज, नगर, भू० ७६.  
कपिल, दा० ३९.  
कब्बालु, ग्रा० ४३३, ४३४.  
कबाले, ग्रा० ८३ भू० १०७.  
कब्बप्पुनाडु, प्रदेश, ५१, ४९२.  
कब्बादुनाथ अरुवण, स्था० १३७.

कब्बिणदपोम्मु, एक टैक्स ४३४.  
कमलपुर, कमलपुर ११८, ४०५.  
कम्पिता, रानी १५२.  
कम्ब राजकुमार, गं० रा०, भू० ७८, ७९.  
कम्भय्य, रा० रा० ९९.  
कम्मट, टकसाल ३२४.  
कम्ममेन्य लोहित गोत्र ४७०.  
करबध, स्था० ३४७.  
करहाटक, स्था० ५४ भू० १४१.  
करिकाल चोल न०, भू० १११.  
कर्कराज, रा० न०, भू० ७७, ८१.  
कर्णाट, कर्णाटक, देश, ८३, १०६,  
४३४, भू० ५९  
कर्णाटक कुल ३५१.  
कलचुरि नरेश भू० ५०, ९८.  
कलन्तूर, ग्रा० १५९.  
कलपाल, न० ५३, १३८.  
कलले, स्था० ३२८.  
कलस, ग्रा० ४३४.  
कलिगलोत्ताण्ड, उ० ५७, भू० ७९.  
कलिङ्ग, देश १३८, ४९९.  
कलिदुर्ग गामुण्ड, पु० २४.  
कल्कणिनादु, प्रदेश ५३, ५६.  
कल्कि, चतुर्मुख, न०, भू० २९-३१.  
कल्बप्पु, कब्बप्पु, काल्बप्पु=चकवेष्ट ३,  
२३, २४, ३४, ३५, ४७, १५४,  
१६०, १६१, १७२, १९०, २००,  
२२७, भू० ५५.  
कल्याणि, सरो०, भू० ४८, १०६.  
कल्लय्य, पु० ९३ भू० १२१.

कल्याणी, चो० राजधानी भू० ८१.  
 कलहल, एक नाला ५९.  
 कलेह, ग्रा० १३६.  
 कवट्ट, ग्रा० ३६.  
 कंवाचारि, लेखक ५३.  
 कवि सेट्टि, प्र० ८९ भू० १२०.  
 काञ्चीपुर ५४, ९०, १३८, ३६०,  
 ४८६, भू० ७६, १४१.  
 काश्मीरदेश ४५५.  
 काडलूर, ग्रा० २४.  
 काडारम्म, एक टैक्स ३५३.  
 कादम्बरी ग्रं० (नागदेवकृत) भू० ११७.  
 काडुवट्टि, पल्लव नरेशोंकी उ० ३८.  
 कापुर जिला भू० ८३.  
 कान्यकुब्जनगर=कन्नौज भू० ५९.  
 कापालिक ३८.  
 काम, ( देखो नृप काम )  
 कामदेव, उच्छल्लि सर० ४०, ९०,  
 १२४, १३० भू० ११२.  
 कामलदेवी, नागदेव मं० की पुत्री ४२  
 १३०.  
 कारकल, ग्रा०, भू० ३४.  
 कालतूर, स्था०, भू० ११६.  
 कालवाडिगे, एक टैक्स ४३४.  
 कालब्बे, स्त्री, भू० ५२.  
 काललदेवी, चामु० की माता भू० २४.  
 कावेरी, नदी, ५९ भू० १०९.  
 काशी नगर ८४, ४३५, ४३६.  
 काश्यप गोत्र ९८, ११७.  
 किक्कोरि, स्था० ४३३, ४३४.

कितूर=कीर्तिपुर ७.  
 किराज, जा० ३८.  
 किरियकालन सेट्टि, पु० ४२४.  
 किरिय चौण्डेय, पु० ८७.  
 किल्केरे, स्था० २४.  
 कीर्तिनारायण, उ० ५७ भू० ७९.  
 कीर्तिवर्म्मा, चा० न०, भू० ७५, ८०,  
 ८१.  
 कुक्कुटसर्प ८५.  
 कुन्थनाथ जिनालय, भू० १०५.  
 कुम्भकोण, स्था० ४३५, ४५६, ४५७.  
 कुम्मट, स्था० १३० भू० ९७.  
 कुम्बेयनहल्लि, ग्रा० ४९५.  
 कुरुक्षेत्र ५३, ५६, ५९, ८३, ४८६.  
 कुर्ग नगर, भू० ८३, ११०.  
 कुलोत्तुङ्ग चङ्गाल्व भट्टदेव, चं० न०  
 १०३ भू० १११.  
 कूगेब्रह्मदेव बस्ति, भू० १२.  
 कृष्ण ( प्र० ) रा० न०, भू० ७५.  
 कृष्ण ( द्वि० ) रा० न०, भू० ७६, ८०.  
 कृष्ण ( तृ० ) राज, राजेन्द्र, रा० न०  
 ३८, ५४, ५७ भू० ७२, ७६-८०.  
 कृष्ण, नृप, राज, ओडेयर ( प्र० )  
 मै० न० ८३ भू० ४८, १०७.  
 कृष्णराज ओडेयर ( तृ० ) मै० न० ९८,  
 ४३३, ४३४, भू० २०, २१, ३३,  
 ४७, १०७, १०८.  
 कृष्णराज बहादुर वर्तमान मै० न०, भू०  
 ३३, १०८.  
 कृष्णवेण्णा=कृष्णा नदी १३८.

केतङ्गेरे, सरो० १२४.

केतिसेट्टि पु० ९५, १०४, १३०,  
३६१, भू० १२२.

केदार नाकरस सर० ४० भू० ११२

केन्तट्टियहल्ल, एक नाला १२४.

केम्पम्मणि स्त्री भू० ६.

केम्बरेयहल्ल, एक नाला १२४.

केलियदेवी, केलियब्बरसि, विनयादित्य

हो० न० की रानी, १२४, १३७,

१३८, ४९४, भू० ८७.

केलङ्गेरे, ग्रा० ४०, १३७ भू० ७५, ९६.

केलहनहल्लि, ग्रा० ४८६.

केशवनाथ, महादेव चं० न० के मं०

१०३ भू० ३६.

कैटभ, एक राक्षस ३८.

कोङ्ग जा० ५३, १४४.

कोङ्गनाडु, प्रदेश ११७.

कोङ्गराय रायपुर दु० १३८.

कोङ्गलि, ग्रा० ५६.

कोङ्गाल्व, रा० वं० ५०० भू० ८३,

१०९.

कोङ्गु, प्रदेश ५६, १२४, १३०,

१३७, १४४, ४९१, ४९४,

४९७, ४९९, भू० ९०.

कोटिपुर भू० ५६, ६०.

कोट्टर, स्था० ९.

कोट्टसा, स्था० ३७९.

कोणेयगङ्ग, सर० ६० भू० ७४, ७७.

कोपण, कोपल, ग्रा० ४७, १३७,

१४४, भू० ९६.

कोपणपुर, स्था० ३२१.

कोयतूर, दु० ५३, ५६, १२४, १३७,  
१३८, १४४.

कोलार, कुवलाल, राजधानी भू० ७१.

कोलाल ग्रा० ५६.

कोलिपाके, स्था० ४०८.

कोल्लापुर=कोल्हापुर ४०, ४२२, ४७१.

कोवल्ल, स्था० २४.

कोविल=श्रीरङ्गम् १३६.

कौण्डिन्य गोत्र ४०, ४३, ४५, ५९,  
९०, १४४, ३६०, ४८६.

ख

खचरपति=जीमूतवाहन, पौ० न०

१३८.

खण्डलि, वंश १२८, १३०.

खाण ( एक टैक्स ) १३७.

खामफल, पु० ११९.

खुसरो, ईरानका बादशाह भू० ८०.

खेरामासा, पु० ३६३-३६५.

खोटिगदेव, रा० न०, भू० ७७.

ग

गङ्ग, रा० वं० ३८, ४५, ५४, ५५,

५९, ८५, १०९, १३७, १३८,

१५१, १६३, २३५, ४६९,

४८६, भू० ७०-७५, ८४, १०९

१४२.

गङ्ग, गङ्गण, गङ्गराज, विष्णुवर्धनके से०

४३-४८, ५९, ६३, ६५, ७५,

७६, ९०, १३७, १४४, ३६०,

४४६, ४४७, ४७८, ४८६,

મૂં ૬, ૧૦, ૧૧, ૩૬, ૪૯,  
૫૦, ૫૪, ૮૨, ૮૮-૯૨, ૯૫,  
૯૭, ૧૦૯.

ગજ્જકન્દર્પ, ૩૦ ૩૮.

ગજ્જગાજ્જેય, ૩૦ ૫૭, મૂં ૭૯.

ગજ્જચૂડામણિ, ૩૦ ૩૮.

ગજ્જહિકાર, જાં, મૂં ૭૧.

ગજ્જણ, લેખક ૫૦.

ગજ્જવાવની કોલ, કું ૪૫૨.

ગજ્જમલ્ડલ=ગજ્જવાડિ ૫૩, ૧૪૪,

ગજ્જમળ્ડલિક, ૩૦ ૩૮.

ગજ્જરાય=વામું ૯૦, ૩૬૦.

ગજ્જરાસિંગ, ૩૦ ૩૮.

ગજ્જરોલ્મળ, ૩૦ ૩૮.

ગજ્જવજ્ર, ૩૦ ૩૮, ૬૦, મૂં ૭૪,  
૭૭.

ગજ્જવતી, સ્થાં ૧૦૬.

ગજ્જવાડિ=ગજ્જમળ્ડલ ૪૫, ૪૭, ૫૩,  
૫૬, ૫૯, ૯૦, ૧૧૫, ૩૬૦,  
૪૩૧, ૪૮૬, ૪૯૬, મૂં ૭૫,  
૯૦, ૯૪.

ગજ્જ વિદ્યાધર, ૩૦ ૩૮.

ગજ્જસમુદ્ર, ગ્રાં ૫૩, ૮૮, ૮૯, ૧૪૪,  
૪૮૬.

ગજ્જસમુદ્ર, સરોં ૫૬, ૯૨, ૧૦૬,  
૧૨૪.

ગજ્જાચારિ, લેખક ૪૭, ૫૩, ૫૪,  
૪૮૬.

ગજ્જાયી, સ્ત્રી ૩૯૫.

ગઢિગલાભરણ, ૩૦ ૫૭.

ગણ્ડ નારાયણ સેટ્ટિ, પું ૪૮૬.

ગણ્ડ મેરુણ્ડ, પૌં ૫૫૧ ૪૩૪.

ગણ્ડમાર્તણ્ડ, ૩૦ ૩૮.

ગણ્ડરાભરણ, ૩૦ ૫૩.

ગનીરામ, પું ૩૪૩.

ગન્ધવર્મ, પું ૨૨૦.

ગરુડ કેશિરાજ, સરં ૩૭, મૂં ૧૧૨

ગર્ગ, ગોત્ર ૩૪૭, મૂં ૧૨૦.

ગવરેસેટ્ટિ, પું ૧૪૩.

ગાડદેરે ( એક ટૅક્સ ) ૧૩૮.

ગિરિદુર્ગમલ્લ, ૩૦ ૧૨૪, ૪૯૪, મૂં  
૯૭.

ગિરિધરલાલ, પું ૩૫૯.

ગુજરાત=ગુર્જરદેશ મૂં ૮૧.

ગુજ્જવે, સ્ત્રી ૩૬૧

ગુડઘટિપુર, સ્થાં ૪૦૪ મૂં ૧૧૯

ગુણમતિયન્બે, સ્ત્રી ૨૧૮.

ગુત્તિય ગજ્જ, ૩૦ ૩૮.

ગુમ્મટરાજા, મૂં ૧૧૨.

ગુપ્તવંશી રાજા મૂં ૩૦.

ગુમ્મટ, સરં ૪૦.

ગુમ્મટદેવ, પું ૧૦૬.

ગુમ્મટસેટ્ટિ, પું ૩૨૧.

ગુમ્મણ, પું ૮૪.

ગુમ્મસેટ્ટિ, પું ૩૫૨, ૩૬૧.

ગુરુકાણિકે, એક ટૅક્સ ૪૩૪.

ગુર્જરદેશ ૩૮, ૧૨૪, ૧૩૦, ૪૯૧

મૂં ૭૮.

ગુલબર્ગી, રાજધાની મૂં ૧૦૧.

ગુલ્લકાયજિ સ્ત્રી, મૂં ૨૬, ૨૭,  
૩૮, ૩૯.

गेडेगलामरण, उ०, भू० ७९.

गेरवाल=वघेरवाल ११८, ११९,  
३८२.

गेरसोप्पे, स्था० ९७, ९९, १००—  
१०२, १३४, १३५, ३३४; भू०  
४७.

गेसाजी, पु०, ३८२.

गोगि, सर० ३३७.

गोणूर, ग्रा० ३८.

गोदावरी नदी ५९.

गोनासा, पु० ३८२, ३८३, भू०  
११९.

गोम्मटपुर, श्रवण बेलगुल ९२, १२८,  
१३७, १३८, ४८६.

गोम्मटसेट्टि, पु० ८१, ३६१, भू० ९९.

गोम्मटेश्वर मूर्ति भू० १७.

गोयिल गोत्र ३४०, ३४४, भू० १२०.

गोलकुण्डा, राजधानी, भू० १०१.

गोल्ल देश ४०, ४७, ५०.

गोविन्द, पु० ३९५, ४०४.

गोविन्द ( द्वि० ) रा० न०, भू० ७५.

गोविन्द ( तृ० ) रा० ना०, भू० ७६,  
७८, ७९.

गोविन्दवाडि, स्था० २४, ५३, ४८९,  
भू० ९१.

गोविन्दसेट्टि, पु० ९७.

गौड, गौल, देश १२४, १३०,  
१३८, ४९१, भू० १४२.

गौरश्री कन्ति, स्त्री ११३.

घ

घट्कवाट, स्था० १३८.

घेरवाल=वघेरवाल.

च

चक्रगोट्ट, दु० ५३, ५६, १३८.

चगभक्षण चक्रवर्ती, उ० ३३७ भू०  
८१.

चङ्गनाडु=हुणसूर तालुका, भू० १११.

चङ्गाल्व, रा० वं० १०३, भू० ८४,  
१०९, ११०

चतुस्समयसमुद्धरण, उ० ५३.

चतुर्मुख कल्कि, न०, भू० ३०.

चन्दले, चन्दांम्बिके, चन्दब्बे, नागदे-  
वकी भार्या, ४२, १३०.

चन्दाचारिग ( लोहकार ) २८१.

चन्दिकब्बे=चन्दले ५३.

चन्द्रप्रभ बस्ति, भू० ८.

चन्द्रमौलि, सं० १०७, १२४, ४२६,  
४९४, भू० ४४, ९७, ९८.

चरेङ्गय्य, पु० १४६, भू० ११८.

चलदगलि, उ० ५७.

चलदङ्ककार, उ० ५७ भू० ९२.

चलदङ्कराव, उ० १४३, ४९९, भू०  
७९.

चलदुत्तरङ्ग, उ०, ३८.

चलुवै अरसु, पु० ९८.

चाकिसेट्टि, पु० ३६१.

चागदकम्ब=त्यागदस्तम्भ ११० भू०  
४०.

चागल देवी, नारसिंह प्र०, हो० न० की  
रानी १३८.

चागवे हेगडित्ति, स्त्री ३६१.

चामण्ड, ग्रा० १२४.

चामराज नगर, भू० ७८.

चामराज ओडेयर ( ९ ) मै० न०  
२४४, २४५, ४३४, भू० १०५,  
१०६.

चामराज ओडेयर ( ६ ) मै० न० ८४,  
१४०, ४३३.

चामुण्ड व्यापारी ४९.

चामुण्डघ्य, पु० ११८.

चामुण्डराय बस्ति ४४२, ४७७, ४८१,  
भू० ८, १३, १६, ७३.

चामुण्डरायकी शिला, भू० १५.

चामुण्डिका देवी ४३४.

चारुदत्त वाणिक ५३.

चार्वार्क ( दर्शन ) ३९, ४०, ४९२.

चालुक्य, रा० वं० ३८, ४५, ५४, ५५,  
५९, १२४, १३७, भू० ७५,  
८०, ८७, ९०, ९१, १४३.

चालुक्याभरण, उ० १४४, ४९२,  
४९७, भू० ८२.

चावराज, लेखक ४४, ४७.

चावुडघ्य, पु० ९६.

चावुडिसेट्टि, पु० ९९, १००, १०२.

चावुण्डघ्य, पु० १६४, भू० ११७.

चिकण, पु० ८७, १००, ४५३, ४६३,  
४६५.

चिकूर, ग्रा० १६२.

चिकण्ण, पु० ८४, १३७, ३५२.

चिकदेव राजेन्द्र ओडेयर, मै० न० ४४४,

भू० ५, ३३, ४५, ४८, १०६,  
१०७.

चिकदेवरायकल्याणि, कुण्ड, ४३३.

चिक बस्ति १३४ भू० १२२.

चिकवेष्ट ( चन्द्रगिरि ) ४११.

चिकमदुकन्न, पु० ८८ भू० १२०.

चिगदेवराजकल्याणि, कुण्ड, ८३.

चित्तूर, ग्रा० २.

चेन्निरि, दु० ५३, १३८, १४४, ४९३.  
भू० ९०.

चेन्दवे, स्त्री १२४.

चेन्नण, चेन्नण ( बस्तिनिर्मापक ),  
१२३, ४४८-४५३, ४६३-४६५,  
४८०. भू० ४०, ४१.

चेन्नण काकुण्ड, भू० ४९.

चेन्नण बस्ति, भू० ४०.

चेन्नण, पु० ८४.

चेन्नपट्टन, भू० १०६.

चेर देश, ३८, १३८.

चेलिनी रानी ६३.

चैत्यालय १३२, ४३०.

चोल देश, ३८, ८१, ९०, १२४,  
१३०, ३६०, ४८६, ४९१, ४९९,  
५००, भू० ५९, ६१, ७१, ८१,  
८४, १०९.

चोलकटकसूरेकाद, उ० ४९४.

चोलपेर्माडि न० ५४.

चोलेनहल्लि ग्रा० १०७.

चौवीसतीर्थकर बस्ति, ११८ भू० ४१.

छ

छन्दोम्बुधि, नागवर्मकृत, ग्रं०, भू० ११७.

ज

जक्कणब्बे, जक्कम्बे, ( गङ्गराजकी  
भावज ) ४३, ४४६, ४४७, भू०  
५४, ९२.

जकरसूरु होयसलसेट्टि, पु० ३६१.

जक्किक्के, सरो०, भू० ४९.

जकिराज, हुल्लके पिता, १३८, भू० ९५.

जगदेकवीर, उ० ३८, १०९.

जगदेव, तेलुगु सर०, भू० १०६.

जगदेव, चो० से० १३८.

जतलट्ट, जत्तुलट्ट ( योधा ) ४३, ५३.

जन्नवुर, ग्रा० १३७, १३८.

जय, 'सिंह ( प्र० ) चा० न० ५४ भू०  
८३, १३९, १४३.

जातिकूट, एक टैक्स, ४३४.

जातिमणिय, एक टैक्स ४३४.

जानकि, मङ्गप से० की भार्या, इरुगपकी  
माता ८२, भू० १०४.

जायसवाल, भू० ६८.

जिगणेक्के, सरो०, भू० ४६.

जिननाथपुर, ग्रा०, भू० ५०, ५२.

जिनचन्द्र, पु० ७१

जिनदेव ( ण ) चामु० के पुत्र ६७, भू०  
९, ७४.

जिननाथपुर, ग्रा० ४०, ८३, १३१,  
४६७, ४७८, भू० ८८, ९८.

जिनवर्म, पु० ४०७.

जिन्नहल्लि, ग्रा० ८३.

जीमूतवाहन, न० ५३.

जीवापेट, स्था० ४०४.

जैनमठ, भू० ४७.

जैमिनि, दा० ५५, ४९२.

जोगब्बे, जोगम्बा, बम्मदेवकी भार्या,  
४४, १३०.

ट

टाकरी लिपि, भू० ११९.

टामस साहब भू० ६७, ६८.

ठ

ठक्क, दे० ५४, भू० १४१.

त

तच्चूरु ग्रा० ४४०.

तज्जनगरम्, तज्जपुरी=तज्जोर ४३६,  
४३७, ४४१.

तट्टगेरे, स्था० २४.

तरिहल्लि, ग्रा० १३८.

तरेकाडु=तलकाडु, दु० १३.

तलकाडु, तलवनपुर दु० ४५, ५३,  
५६, ५९, ९०, १२४, १३०,  
१३७, १३८, १४३, १४४,  
३६०, ४४५, ४८६, ४९१,  
४९३, ४९४, ४९७, भू० ७१,  
७८, ९०.

तलेयूर, ग्रा० ५६, ४३१.

तालीकोटा, युद्धस्थान, भू० १०१.

तावरेकेरे, सरो०, भू० ५२.

तिगुल=तामिल, तिमिल, जा० ४५, ५९,  
९०, ३६० भू० ९०.

तिप्पेसुक्क, एक टैक्स, १३८.

तिम्मराज, एनूर मूर्ति प्रतिष्ठापक, भू०  
३५.

तिरिकुल, परिया जा०, १३६.

तिरुनारायणपुर=मेल्कोटे, ग्रा० १३६.

तीर्थद बसदि, कलसतवाडिका जै० मं०  
४५९, ४६०.

तुङ्गबद्रि=तुङ्गभद्रा नदी, १२३.

तुलुब, देश, ५३, १२४, १३०,  
१३७, ४९१, ४९४.

तेयंगुडि, ग्रा० १८५.

तेरदाल, ग्रा०, भू० ११२

तेरिन बस्ति, बाहुबलि बस्ति, भू० ११,  
१३, ८८.

तेरेयूर, ग्रा० ५३, ५६, ४३१.

तैल व तैलप, चा० न०, भू० ७७, ८१,  
११७.

तोण्ड, देश ५३.

त्यागद ब्रह्मदेव स्तम्भ=चागद°, भू० ४०.

त्रिभुवन चूडामणि=मंगायिबस्ति १३२,  
४३० भू० ४६.

त्रिभुवनमल्ल, उ० ४५, ५३, ५६, ५९,  
६८, ९०, १२४, १३०, १३७,  
३६०, ४४५, ४८६, ४९१,  
४९२, ४९७, ४९८, भू० ८२,  
८९, ११०.

त्रिभुवनमल्ल देव, °पेर्मडि=विक्रमादित्य  
(चतुर्थ) चा० न० ४५, ५९,  
१४४, भू० ८२.

त्रैलोक्यरजन=बोप्पण चैत्यालय, भू० ९.  
थिद्विगप्पान, स्था० १५७.

द

दण्डि, कवि, ५४ भू० १३८.

दधीचि, पौ० ऋ० ४९.

दन्तिदुर्ग, रा० न०, भू० ७५, ८०, ८१.

दशरथ, पौ० न० १३८, भू० ४९३,  
४९९.

दागोदाजि=जीर्णोद्धार ४३४.

दानचन्द पुरवाल, पु० ३५८.

दानमल, पु० ३४५.

दानशाले बस्ति, भू० ४५.

दाम=दामोदर, चो० से० ९०, ३६०,  
४८६, भू० ९०, १०९.

दासोज, मूर्तिकार, ५०, भू० ७.

दिण्डिक, दिण्डिराज, १५२, भू०  
१११, १४९.

दिण्डिग गामुण्ड, पु० २४.

दिलीप, नो० न०, भू० १०९.

दिलीप, पौ० न० ४९३.

दीनदयाल, पु० ३४०, ३४१.

दुर्विनीत, गं० न०, भू० ७२.

देमति, देमवति, देमियक्क=देवमति, स्त्री  
४६, ४९ भू० ९१.

देवकोट नगर, भू० ५६.

देवगिरि, भू० ८१.

देवण कारीगर, ८५.

देवणनकेरे, सरो० १२४.

देवर बेल्लुगुल १४०.

देवरहल्लि, ग्रा० १०७.

देवराज प्र०, वि० न०, भू० ४६,  
१०३.



देवराद्र, देवराय, द्वि०, वि० न० १२५,  
भू० १०४, १०५.

देवराजै अरसु, मं० ९८.

देवराय महाराज, भू० ४६,

देवीरम्मणि, स्त्री भू० ६.

देशकुलकर्णि, उ०, ११६.

दोड कृष्णराज वडेयैरैय ( प्र० ) मै०  
न० ८६.

दोडनकट्टे, ग्रा० १३३.

दोडदेवराज ओडेयर, मै० न०, भू० ४५.

दोरसमुद्र=द्वारावती ९६, ४९१, ४९४.

द्रोहधरट्ट, उ० ४४, ५९, ९०, १४४,  
३६०, ४७८, ४८६.

द्वारावती, द्वारावतीपुर ( दोरसमुद्र )  
४५, ५३, ५६, ५९, ८१, ९०,  
१२४, १३०, १३७, १४४,  
३६०, ४८६, ४९१-४९४, ४९७,  
४९९, भू० ८१, ८४, ८६.

ध

धनायी, स्त्री ११९.

धरणेन्द्र शास्त्री पु० ४३५.

धरमचन्द्र, पु० ११८, भू० ४१.

धरमासा, पु० ३८६.

धर्मस्तल=धर्मस्थल ४३३.

धर्मासा, पु० ३६५, ३७९.

धवलसर, धवल सरोवर ५४, १०८,  
भू० १.

धारा नगरी ५५, १३८.

धूर्जटि ५४, ४९२, भू० १४१,  
१४२.

ध्रुव, रा० न०, भू० ७५, ७८, ७९.

न

नकुलार्य, मं० ५००, भू० ११०.

नगर जिनालय १०८, १२९-१३१,  
२५२, ४४३, भू० ४५.

नङ्गलि, दु० ५६, १२४, १३०, १३०  
१३७, १४४, ४९१, ४९४ ४९७.

नञ्जरायपट्टण, ग्रा० १०३, भू० ३६.

नदि ( राष्ट्र ) ३४.

नन्द, रा० वं०, भू० ६९.

नन्नि, नो० न०, भू० १०९.

नरग, सर० ३८.

नरसिंग, °सिंह°वर्म, चो० सर० ९०,  
१३८, १४४, ३६०, ४८६, भू०  
९०, १०९.

नरसिंहाचार रायबहादुर, भू० ६३, ७०.

नविल्लर, ग्रा० २४.

नहुष, पौ० न० ५६.

नाग, °देव, बम्मदेव मं० के पुत्र ४२,  
१२२, १३०, १३७, ४९०.

नागकुमार, पौ० न०, भू० ४७.

नागति, स्था० २९१ भू० ११८.

नागदेव, मं० बलदेवके पुत्र ५१, भू०  
१३, ४५, ९८.

नागनायक सर० १४, भू० ११२.

नागरनाविले स्था० ३६१.

नागले, बूचण मं० की माता ४६, ४९.

नागवर्म, नरसिंह मं० के नाती भू० ७५.

नागवर्म, मूर्तिकार, २७२, भू० ११७,  
११८.

नागवर्म, योधा २३५.

नागवर्म, गंगराजके प्रपितामह व मार  
के पिता १४४, भू० ८९.

नागवर्म, से० बलदेवके पिता ५३.

नागसमुद्र, सरो० १२२.

नागियक, बलदेवके पुत्र, नागदेवकी  
भार्या ५१, ५२.

नामकाणिके, एक टैक्स ४३४.

नारसिंह, नृसिंह प्र०, हो० न० ४०, ८०  
९०, १२४, १३०, १३७, १३८,  
४९१, ४९३, ४९४, ४९९, भू०  
४३, ८४, ८५, ९४-९७.

नारसिंह द्वि०, हो० न०, भू० ९९, १००.

नारसिंह तृ०, हो० न०, भू० १००.

नासिक राजधानी भू० ७६.

निडुगल, रा० वं०, भू० १११.

निम्ब, देव, मं० ४० भू० ११२.

नीरारम्भ, एक टैक्स ३५३.

नील मं० ४२.

नीलगिरि ५३, ५६.

नुडिदन्ते गण्ड, उ० ३८, ४४.

नूत्रचण्डिल, न० ४७, ५०.

नृपकाम, हो० न० ४४, भू० ८३, ८४,  
८६.

नेडुबोरे, ग्रा० ६.

नेमिसेष्टि, पु० ८६, २२९, ३६१ भू०  
१२, ८८.

नेरिलकेरे, सरो० ५९.

नोलम्ब, रा० वं० ३८, भू० १०९.

नोलम्बकुलान्तक, उ० ३८, १७१.

नोलम्बराज, सर० १०९.

नोलम्बवाडि, प्रदेश ५३, १२४,  
१३०, १३७, ४९१, ४९४.

न्याय, एक टैक्स १२८.

प

पञ्जाब देश, भू० ११९.

पट्टणसामि, स्वामि, उ० १३०, ४८६,  
४९० भू० ४५, ९८.

पट्टदेसायिक, एक टैक्स, ४३४.

पट्टिपेरुमाल, सर० ५३.

पडेवलगेरे, स्था० ८९.

पत्तिगे=आय ३५४.

पदुमसेष्टि पंडित, भू० १०६.

पदुमसेष्टि, पु० ८१ भू० ९९, १०६.

पद्मरथ, पौ० न०, भू० ५६, ६०.

पद्मलदेवी, पद्मावती, हुल्लकी भार्या  
१३७, ४९१ भू० ९६.

पद्मावती बस्ति=कत्तले बस्ति, भू० ५.

पम्पराज, अरसादित्यके पुत्र ३५१.

परवादिमल्ल जिनालय, भू० ९९.

परम, ग्रा० ४५, ५९ भू० १०, ९१.

पल्लव, रा० वं० ३८, १२४, १३०,  
४९१ भू० ८०.

पल्लवाचारि, लेखक १५८.

पाटलिपुत्र, नगर ५४ भू० ६०, १४१.

पाण्डु, पौ० न० १३८.

पाण्ड्य, देश, रा० वं० ३८, ५३, ५४,  
१२४, १३०, १३७, ४९१, ४९३,  
४९४, ४९९ भू० ६१, ८३, ११२,  
१४०, १४३.

पातालमल्ल, सर० ३८, १०९.  
 पानीपथ ३३८, ३४०, ३४६, ३४७,  
 ३५८ भू० १२०.  
 पाभसे, दु० ३८.  
 पार्श्वनाथ बस्ति भू० ४, १६, ६१,  
 ९७.  
 पाशवारु, एक टैक्स ४३४.  
 पिट्ट, पिट्टुग, योधा ५८ भू० ७९.  
 पिरिय दण्ड नायक, उ० ४०.  
 पीतला गोत्र ३९३ भू० ११९.  
 पुट्टैयसेट्टि, भू० ५.  
 पुन्नाट देश, भू० ५७.  
 पुरवर्ग, एक टैक्स ४३४.  
 पुरवाल, जा० ३५८.  
 पुरस्थान, स्था० ३२२.  
 पुरुरव, पौ० न० ५६.  
 पुलाकेशी प्र०, चा० न०, भू० ८०.  
 पूर्णय्य, कृष्णराज तृ०, मै० न० के मं०  
 ४३३ भू० १०७.  
 पेज्जेरु=हेमावती, राजधानी, भू० १११.  
 पेनुगुण्डे, ग्रा० ९४.  
 पेरुमाल्कोविल=काञ्ची १३६.  
 पेर्गल्वप्पु गिरि २४.  
 पेर्जेडि, स्था० १३.  
 पेल्वान, कुल २०८.  
 पेर्मडिचोल, भू० १०९.  
 पोचलदेवि, पोचाम्बिका, पोचिकम्बे,  
 पोचम्बे, गंगराजकी माता ४४,  
 ४५, ५९, ६४, ६५, ९०, १४४,  
 ३६०, ४८६ भू० ६, ९१, ९२.

पोम्बुच्च, पोम्बुर्च, दु० ५३, ५६, १४४.  
 पोय्सल, रा० वं० ५३, ५४, ५६,  
 २२९.  
 पोय्सलसेट्टि, भू० १२, ८८.  
 पौण्ड्रवर्धन देश, भू० ५६.  
 पौदनपुर, भू० २४, २६.  
 प्रचण्ड दण्ड नायक, उ० ५२, ५३.  
 प्रताप चक्रवर्ति, उ० ९०, ९६, १२८,  
 १३०.  
 प्रताप नारसिंह=नारसिंह प्र०, द्वी०  
 न० ३१६.  
 प्रतापपुर, ग्रा० ४०.

## फ

फ़ीट, डॉक्टर भू० ६३, ६५, ७०.

## व

वङ्कापुर=वङ्कापुर ३८, ५५, १३७ भू०  
 ७२, ९६.  
 वङ्गलोर नगर, भू० ७१, ९३.  
 वडवरबण्ट, उ० २४९, २९८.  
 वनवसे (वनवासे) दु०, व प्रान्त ३८,  
 १२४, १३०, १३७, ४९१,  
 ४९४, ४९६, ४९७.  
 वनिय, बनिया, जा०, ३४७.  
 वम्म, देव, से० १४४ भू० ८९, ९२.  
 वम्मदेव मं० ४२, १२२, १२४, १३०.  
 वम्मैयनहल्लि, ग्रा० १२४, ४९४ भू०  
 ४४, ९८.  
 वम्मैय नायक से० १२४, ३६१, ४९४.  
 वरहालकेरे, सरो०, १३७, १३८.  
 वरार, प्रदेश, भू० १०१.

बर्बर देश १३८.

बलगुल ( बेलुल ) ४३४.

बलदेव, बल, बलण, मं० ५१-५३,  
३५१, भू० ३५, ९३.

बलि, बलीन्द्र, पौ० न० ५३, १३८.

बलिपुर ५५, भू० ८२.

बलेयपट्टण, ंवट्टण, दु० ५६.

बल्ल=बलदेव मं० ५१.

बल्लभ=वल्लभ रा० न० २४.

बल्लाल, प्र०, हो० न० १०५, १०८,  
१२५, १३७, १४४, ४९१, ४९३  
भू० ४८, ८४, ८७, १००.

बल्लाल, वीर बल्लाल, द्वि०, हो० न०  
९०, १२४, १३०, ४९४, ४९५, भू०  
४४ ४५, ५१, ८४, ८५, ९५,  
९६, ९८, ९९.

बल्लेय, से० ३१९, ३२०.

बल्लेयकेरे, सरो० १३७, १३८.

बसदि, एक टैक्स, १३७.

बसविसेट्टि, पु० ७८, ८६, ८७, ३१८,  
३२७, ३६१ भू० ३६, ३७, १२१.

बस्तिहल्लि, प्रा० १०७.

बहणिगे, प्रा० ३६१.

बहमनी राज्य भू० १०१.

बागडेगे, प्रा० ८५.

बागणब्बे, स्त्री १४४, २५१.

बागियूर, प्रा० ६१.

बाणारसि ( काशीपुरी ) ५३, ५६,  
५९, ८३, ११६.

बायिक, योधा ६१.

बारकनूर, प्रा० ९४.

बालकिसनजी, पु० ३३९, ३४०.

बालादित्य, सर० २९६, भू० ११२,  
११८.

बालूराम, पु० ३४२.

बास, पु० २६३, २७९, २९२.

बाहुबलि, पु० ३६१.

बाहुबलि बस्ति=तेरिनबस्ति, भू० १२.

बाहुबलिसेट्टि, प्र० ७८, ८६, ३६१.

बिटेयनहल्लि, प्रा० ३३०.

बिट्टिदेव=विष्णुवर्धन, हो० न० ५३,  
३१६.

बिडिति, प्रा० ३५६.

बिदर राज्य, भू० १०१.

बिदियमसेट्टि, पु० ८६, ३२७.

बिन्दुसार, मौ० न०, भू० ६८.

बिम्बसार=त्रेणिक मौ० न०, भू० ६८.

बिम्बसेट्टिमकेरे, सरो० १३७, १३८

बिरुदरुवारि मुखतिलक, उ० ४३, ४४,  
४७, ५३, ५९, ४८६.

बिरुदेन्नेम्बर गण्ड, उ० ४३४.

बिलिकेरे, प्रा० ९८.

बिलहण कवि, भू० ८१.

बीजापुर राज्य भू० ८०, १०१.

बीरञ्जन केरे सरो० १३७, १३८.

बीररबीर, उ० ५७.

बुक्कण, से० ८२ भू० १०४.

बुक्कराय, वि० न० ८२, १३६, भू०  
१०१, १०२, १०४.

बुचानन साहब, भू० १८.

बूचण, बूचिमय्य, बूचिराज, मं० ४०,  
४६, ४९, ११५ भू० ९१, ११२.

बेक्क, ग्रा० ९०, १०७, १२४, २१२,  
४७५, ४७७ भू० ९६, ९७.

बेक्कनकेरे, सरो० १४४.

बेगूरु, ग्रा० ३७०, भू० १२२.

बेंडिगे, एक टैक्स, ४३४.

बेडुगनहल्लि, ग्रा० १३७, १३८.

बेर्क=बेक्क, ग्रा० ५९, ४९१.

बेलगोल, बेलगुल, बेलगोल, २४, ४४,  
५६, ५९, ६७, आदि.

बेलिकुम्ब, स्था० ४७९, भू० ५२.

बेलुकरे, बेलुकरे, स्था० ४१, भू०  
११२.

बेलुगुलनाडु प्रदेश, ४८४.

बेल्लर राजधानी, भू० ८४.

बैच, बैचप. से० ८२, १०४. भू०  
१०४.

बैयण, पु० ३७० भू० १२२.

बैरोज, मूर्तिकार. ४७९, भू० ५२.

बोकवे हेगडिति स्त्री ३६१.

बोकिमय्य, लेखक ५३.

बोकिसेट्टि, पु० ७८, ८६, ८७, ३६१.

बोगाच्च, सैनिक ६०.

बोगार राज, सर० ४१.

बोगेय, योधा ६०.

बोप्प, देव, से० १४४, भू० ४९.

बोप्पण चैत्यालय=त्रैलोक्यरञ्जन ६६,  
भू० ९.

बोम्मिसेट्टि, पु० ८४, १०४, १३७.

बोम्यण, मं० ८४, १०३.

बोम्मण, बोम्यप्प कवि ८४ भू० १०५,  
१०६.

बोयिग, योधा ६०.

बौद्ध ३९, ४०, ४९२.

बौरिंग साहब, भू० १८.

ब्रह्मक्षत्रकुल १०९ भू० ७३.

ब्रह्मदेव मंदिर, भू० ४२.

ब्रह्मदेव स्तम्भ, भू० ३७.

भ

भगदत्त, पौ० न० ५३, २३५, ४९४.

भगवानदास, पु० ३३८.

भण्डारि बस्ति=भव्यचूडामणि १३७,  
४३५, ४३६, ४४१, ४५७, भू० ४२,  
४३, ४९, ९४, १०६.

भण्डेवाड, ग्रा० ३६६.

भद्रबाहुकी गुफा, भू० १५, ५५.

भरत, मय्य, ईश्वर, से० ४०,  
११५, ३६८, ३६९ भू० ३५, ३९,  
९३, ११२

भरतेश्वर मूर्ति, भू० १३.

भल्लातकीपुर, भू० १०६.

भव्यचूडामणि, उ० १३८.

भव्यचूडामणि=भण्डारिबस्ति १३८,  
भू० ४३, ९५.

भाट्ट, दर्शन १०५.

भाद्रपद, स्था०, भू० ५८.

भानुदेव हेगडे, पु० ३२५.

भारगवे, ग्रा० ३७७.

भारतियक, स्त्री १३७.

भारवि कवि ५५.

भाषेगे तप्पुव रायरगण्ड, उ० १३६,

भीमादेवी, रानी ४२८ भू० ४६,  
१०३.

भुजबलवीरगङ्ग, उ० १३८, १४३,

४९१, ४९४, ४९७.

भुजबलि ( बाहुबलि, गोम्मट ) १०५.

भुजबलैय्य, पु०, भू० ५१.

भूतराय, गं० न०, भू० १०९.

भोज, न० ५५, भू० ३२, ३३, ११२  
१४२.

भौतिक दर्शन ४९२.

म

मगध देश, भू० ६९.

मगर, राष्ट्र, ८१, ४९९.

मङ्गप, बुक्के से० ८२.

मङ्गामिबस्ति १३४ भू० ४६, १०३,  
१२२.

मङ्गलेश, चा० न०, भू० ८०.

मज्जिगण, पु०, भू० १०.

मज्जिगण बस्ति, भू० १०.

मण्डलिक त्रिनेत्र, उ० ३८.

मण्णे=मान्यपुर, भू० ७१.

मत्तियकेरे, स्था० ९६.

मदनेय, ग्रा०, भू० ४५.

मधुरा पुरी १५८.

मधुवय्य, पु०, भू० ११८.

मनरवत, एक टैक्स १३७.

मनचेनहलि, ग्रा० १०७.

मनसिज, न० २४.

मनेदेरे, एक टैक्स १३८.

मन्नाकोविल, ग्रा० ४३९.

मरियाने, से० ४०, ११५, भू० ९४,  
११२.

मरुदेवि=माचिकब्बे २२९.

मरुदेवी, स्त्री ३६१.

मलनूर ग्रा० ८.

मलपर, मलेप, मलपरोलगण्ड, पहाड़ी

सर० ४५, ५३, ५६, ५९, १२४,  
१३०, १३७, ४९२, ४९४,  
४९७, ४९९, भू० ८३.

मलप्रहारिणी नदी १३८.

मलब्रय, एक टैक्स १२८, १३७.

मलयूर, स्था० ४३४, भू० १०७.

मलिककाफूर, से०, भू० ८४.

मलेगोल, स्था० २९७.

मलेराज राज, उ० ४९९.

मल्लिदेव, नाथ, नागदेव मं० के पुत्र  
४२, १३०.

मल्लिनाथ, लेखक, ५४.

मल्लिषेण, पु० ४६१.

मल्लिसेट्टि, पु० ६८, ८६, ८७, १२४,  
१३०, ४१८, ४८६, भू० ३९,  
११७.

महदेव, चं० न० १०३ भू० ३६.

महादेव पु० ८६.

महानवमी मंडप, भू० १३.

महाप्रचण्डदण्डनायक, उ० ४३, ४४,  
४७, ५१, १४४, ४४७.

महासामन्ताधिपति, उ० ४३, ४४,  
४७, १४४.

महीपाल कन्नौज न०, भू० ७६.

माकणब्बे, गंगराजकी मातामह, ४४,  
४५, ५९, ९०, ३६०, ४८६  
भू० ८९.

माचिकब्बे, पोयसलसेट्टिकी माता, २२९  
भू० ८८.

माचिकब्बे, शान्तलदेवीकी माता, ५०,  
५३, ५६, भू० १२, ९३.

माचिराज, पु० ३५१, ४९७.

माडगढ, माडवगढ, ३८२, ३८६, भू०  
११९, १२०.

माडिगूर, ग्रा० ११६.

माणिकदेव, सर० १०५ भू० ११२.

माणिक्य भण्डारि, उ० ४०, १२८.

मातूर, वंश, ३८.

मानगप, इरुगपके पिता, ८२ भू०  
१०४.

मानभ पु०, भू० १५.

मान्यखेट, न०, भू० ७६.

मार, मारमय्य, गंगराजके पितामह  
४४, ४५, ५९, ९०, १४४, ३६०,  
४८६ भू० ८९.

मार, सोवण नायकके पुत्र १२४.

मारगौण्डनहल्लि, ग्रा० ८६.

मारसिंग, गय्य, शान्तलदेवीके पिता,  
५३, ५६, ३११, भू० ९३, ११७.

मारसिंग=गंगवज्र, गं० न०, भू० ७४.

मारसिंह, गं० न० ३८, भू० १३, ७२,  
७३, ८१, ७७-७९, ११७.

मारुहल्लि, ग्रा०, भू० ९७.

मारेयनायक, पु० ४९४.

मार्गेडिमल्ल=पिट्टुग, सर० ५८ भू० ७९.

मालव, देश, ५४, १३८, ४९९ भू०  
७६, १४१.

मावन गन्धहस्ति, उ० ५८ भू० ७९.

मासवाडिनाडु, प्रदेश, १२४.

मुण्डा लिपि भू० ११९.

मुत्तगदहोन्नहल्लि, ग्रा० १३३.

मुदगेरे तालुका, भू० ८३.

मुद्राराक्षस, ग्रं०, भू० ६८, ६९.

मुनिगुण्ड सीमे, प्रदेश, ११६.

मुल्लूर, ग्रा० ४४, ५४, भू० ९०.

मुहम्मद तुगलक, भू० १०१.

मूडविद्री, ग्रा०, भू० ४४.

मूलभद्र कुल, १२८, १३०.

मेरुगिरि कुल ४७४.

मैगस्थनीज, भू० ६७.

मैसूर, मैयिसूर, महिसूर, महीसूर, ८३,  
८४, ९८, १४०, ४३४, भू० ७१,  
१०५, ११०.

मोट्टेनविले, ग्रा०, ५३, ५६.

मोतीचन्द्र, पु० ३३७.

मोनेगनकट्टे, ग्रा०, ४९६.

मोरयूर, ग्रा० ४०८.

मोरिङ्गेरे, स्था० ५१, भू० ९३.

मोसले, ग्रा० ८६, ८७, ३६१.

मौर्य, रा० वं०, भू० ६९.

य

यक्षराज, हुल्लके पिता, ४०, १३७, ४९१.

यगलिय, ग्रा० ८९.

यदु, पौ० न० ५६, १३७, १३८.

यदु, कुल, ४३४, ४९९.

यदुतिलक, उ० ४९३.

यवरेगोत्र ११८.

यशस्वती, भरतकी माता, भू० २४.

यादव, कुल, ४५, ५३, ५६, ५९,

८१, ९०, १२४, १३०, १३७,

१३८, १४४, ३६०, ४८६,

४९१-४९५, ४९७, ४९९, भू०

८१, ११०.

यिरुगप=इरुगप, ८२.

येरुकाणिके, एक टैक्स, ४३४.

योगन्धरायण, मं० १३८, भू० ९५.

र

रक्समणि=गंगवज्र ६० भू० ७४, ७७,

११७.

रङ्गय्य, पु०, भू० ४२.

रट्टकन्दर्प, उ० ५७ भू० ७९.

रणरत्नभीम उ० ४९४.

रणरत्नसिंग उ० १०९.

रणसिंग, न० १०९.

रणावलोक कम्बय्य, रा० न० २४.

रत्नचण्डिल, न०, भू० १४२.

रत्नसागर पु० ४०३.

राइस साहब, भू० ६३, ६८.

राक्षस, मं०, भू० ६९.

राचनहल्लि, ग्रा० ८३.

राचमल्ल, देव, गं० न० ८५, १३७,

२३९, भू० ९, २८, २९, ३२,

७३, ७८.

राचेयनहल्लि, राचनहल्ल, ग्रा० १२९,  
४९२, भू० ५३.

राजकीर्ति, पु० ११९.

राजचूडामणि मार्गडेमल, रा० न० इन्द्र  
चतुर्थके श्वसुर ५७, ५८ भू० ७९.

राजतरंगिणी, ग्रं०, भू० ६८.

राजमार्तण्ड, उ० ५७, ४९७ भू० ७९.

राजादित्य, चो० न०, भू० ७७.

राजादित्य, चा० न० ३८, भू० ८१.

राजेन्द्र चोल, न०, भू० १०९.

राजेन्द्र चोल को० न०, भू० ११०

राजेन्द्र पृथुवी, को० न० ५००.

राम, पौ० न० ४९९.

रामचन्द्र पं०, पु० ३६१.

रामदेवनायक, सोमेश्वरके मंत्री १२८,  
भू० ९९.

रामराय, वि० न०, भू० १०१.

रामानुज, वैष्णवाचार्य १३६, भू० ३४.

रामेश्वर, हिन्दू तीर्थ ८४.

रायपात्रचूडामणि उ० ४३०.

रायरायपुर, दु० ५३, १२४, १३७.

राष्ट्रकूट, रा० वं०, भू० ७५, ८१.

रुग्मिणीदेवी, कृष्णकी रानी ५६.

रूपनारायण बसदि=कोल्लपुरका जै० मं०  
४०.

रुवारि, लेखक ५४.

रेचिमय्य, बल्लाल द्वि० के से० ४७१,  
भू० ५१, ९८.

रोइ, दु० ५३.



ल

लकले, लकव्वे, लक्ष्मिदेवि, लक्ष्मीदेवी,  
=गंगराजकी भार्या, ४५-४९, ५९,  
६३, भू० ११, ९१, ९२.

लक्कि, स्त्री भू० १५.

लक्किदोणे, कुण्ड, भू० १५.

लक्ष्मण, हुल्लके भ्राता १३८, भू० ९५.

लक्ष्मणराय, पु० ३४३.

लक्ष्मादेवी, लक्ष्मीदेवी=विष्णुवर्धनकी  
रानी १२४, १३७, १३८, ४९४,  
भू० ९४.

लक्ष्मीधर=लक्ष्मण, रामके भ्राता ५१.

लक्ष्मीपण्डित, पु० ४३४.

लड्डु, डाक्टर, भू० ६३.

ललितसरोवर ७९ भू० ३५.

लंकापुरी १०९

लाडदेश १२४, १३०, ४९१.

लाट=गुजरात, भू० ७६.

लोकविद्याधर, पु० ६१, भू० ७४.

लोकायत दर्शन ४९२.

लोकाम्बिका, हुल्लकी माता ४०, १३७,  
१३८, ४९१, भू० ९५.

लोकिगुण्डि, ग्राम ५३, १३०, १४४.

ल्यूमन साहब, भू० ६७.

व

वङ्कापुर=वङ्कापुर ५५.

वडिव, को० न०, भू० ११०.

वज्जल, न० ३८.

वज्जलदेव, वज्जिलदेव, चा० न० १०९  
भू० ७८.

वड्डव्यवहारि, उ० ८६, ३६१.

वड्डेग, रा० न० अमोघवर्ष तृ० ६०, भू०  
७४.

वत्सराज, न० ५३, १४४, २३५,  
४९४, ४९९, भू० ११८.

वनगजमल्ल, उ० ३८.

वनवासि=वनवसे, राज्य ३८, १३८.

वरुण, ग्राम, भू० ८२.

वर्धमानाचारि, लेखक ४३, ४४, ५९.

वलभ गोत्र ४०५.

वल्लभराज=कृष्ण द्वि०, रा० न०, भू०  
७६.

वल्लूर, ग्राम १३८.

वमुधैकबान्धव, उ० ४७१.

वस्तियग्राम ८३.

वाजि वंश ४०, १३७, १३८ भू०  
९५.

वालापि=बदामी, राजधानी भू० ८०.

वाराणसी=बनारस १३३, १४०, ४८६.

वासन्तिकादेवी १२४, १३०, १३७.

विक्रमाङ्कदेव चरित, ग्रं०, भू० ८१.

विक्रमादित्य, चा० न० ४९४ भू० ८०,  
८१.

विजयनगर, भू० १०१.

विजयमल, पु० ३५९.

विनयादित्य, हो० न० ५४, ५६, १२४,

१३०, १३७, १३८, १४४,

४९१-४९५ भू० ८४-८७, ९४,

९८, १४०.

विनेयादित्य=विनयादित्य, हो० न० ५३

विन्ध्यगिरि ३८.

विराट पौ० न० १३८.

विलसनकट्ट, सरो० ५३, ५६.

विशाला (राज्य ?) १.

विशालाक्ष पंडित, मं०, भू० ३३.

विष्णु, °वर्धन, हो० न० ३३-४५, ४७,

५०, ५२, ५३, ५६, ५९, ६२,

९०, १२४, १३०, १३७, १३८,

१४४, ३६०, ४४५, ४७८, ४८६,

४९१-४९५, ४९७ भू० ६,

१०-१२, ३४, ३६, ४९, ५०,

८२-९५, १००, १११.

विष्णुभट्ट, भू० १४२.

वीरगङ्गा, उ० ४५, ५३, ५६, ५९,

९०, १२४, १३०, १३७, ३६०,

४४५, ४८६, ४९३.

वीर नारसिंह ( द्वि० ) हो० न० ८१.

वीर नारसिंह ( तृ० ) हो० न० ९६.

वीर पल्लवराय १२० भू० १०९.

वीर पाण्डय, कारकल मूर्तिके प्रतिष्ठा-  
पक, भू० ३४.

वीर बल्लाल (द्वि०) हो० न० ९०, १०७,

१२४, १२८, १३०, ४९१,

४९९.

वीर राजेन्द्र पेटे, ग्रा० ४६८.

वेगूर, ग्रा० १५३.

बेल्लोल=बेल्लोल १७-१८.

बेल्लाद, ग्रा० ७.

वैदिश, नगर० ५४.

वैशेषिक, दर्शन ३९.

वैष्णव, सम्प्रदाय १३६, ४९२, भू०  
१०२.

श

शकराजा, भू० ३०.

शङ्कर नायक, सर० ७३, १२०, २४९,  
भू० १०९.

शत्रुभयंकर न० ५४.

शनिवार सिद्धि उ० १२४, ४९४,  
४९९.

शबर, जा० ३८.

शम्भुदेव, चन्द्रमौलि मं०के पिता १२४  
भू० ९७.

शम्भुनाथ, पु० ३४४.

शरच्चन्द्र घोषाल, प्रो०, भू० २९.

शशपुर=अंगडि, ग्रा० ५६, ४९९, भू०  
८३, ८४.

शान्त=दण्डराज ४९९ भू० ९९.

शान्तवर्णि, पु०, भू० ३३.

शान्तल देवी, बूचिराजकी भार्या ११५  
भू० ९४.

शान्तला, शान्तलदेवी, विष्णुवर्धनकी  
रानी ५०, ५३, ५६, ६२ भू०  
११, ९२, ९३.

शान्तिकब्बे, नेमिसेट्टिकी माता २२९  
भू० १२, ८८.

शान्तिनाथ बस्ति भू० ७, ५०, ५१.

शान्तीश्वर बस्ति भू० १२, ४१, १०३.

शासनबस्ति=इन्दिराकुल गृह भू० १०,  
१६.

शाह कपूरचन्द पु० ३३७.  
 शाह हरखचन्द पु० ३३६.  
 शिकारपुर ग्रा०, भू० ८२.  
 शिवि, पौ० न० १३८.  
 शिवगङ्गा, स्था० ५३ भू० ९३.  
 शिवमार (द्वि०) गं० न० २५६ भू० ८,  
 ७४, ७८.

शिवमारन बसदि भू० ७४.  
 शिशुपाल, पौ० न० ३८.  
 शुभतुङ्ग, कृष्ण (द्वि०) रा० न०, भू० ७६  
 शूद्रक, पौ० न० ४९४.  
 शैशुनाग, रा० वं०, भू० ६९.  
 श्रवण बेलगुल ४३३, ४३४.  
 श्रियादेवी, सिंगिमय्यकी भार्या, ५३.  
 श्रीकरणद हेगडे, उ०, ४०.  
 श्रीकरण रेचिमय्य, मं० ४७१.  
 श्रीधरवोज, मूर्तिकार, २४१, भू०  
 ११८.

श्रीनिलय=नगर जिनालय, भू० ४५.  
 श्रीपुरुष, गं० न०, भू० ८, ७१.  
 श्रीपृथ्वीवल्लभ उ०, भू० ७६.  
 श्रेणिक, न० ४३८.

ष

षड्दर्शनस्थापनाचार्य, उ०, ८४.  
 षड्धर्मचक्रेश्वर, उ० १४०.

स

सगर, पौ० न० १२४.  
 संग्राम जत्तलट्ट, उ० ४७, ५३, १४४.  
 सत्यमंगल, ग्रा० ९८.  
 सत्याश्रयकुलतिलक, उ०, १४४,

४९२, ४९७.

सन्तोषराय, पु० ३४०, ३५०.  
 समधिगतपञ्च महाशब्द, उ० ४३, ४४,  
 ४७, ५६, ९०, ११३, १२४,  
 १३०, १३७, १४४, ३६०,  
 ४९२, ४९४, ४९७, भू० ८२,  
 ११०, ११८.

समयाचार, एक टैक्स, ४३४.  
 सरावगी, जा० ३४०, ३५०, भू०  
 १२०.

सर्पचूड़ामणि, पु० १३७.

सर्वणन्दि, पु० १६२.

सल, हो० न० ४९४, ४९५, भू० ८३,  
 ८५.

सल्य, ग्रा० ५९, ४९३, ४९५, भू०  
 ८८.

सवणेरु, ग्रा० ८०, ९०, १३७, १३८,  
 ३६१, भू० ९५, ९६.

सवतिगंधवारण बस्ति, ५३, ५६,  
 भू० ११, ९२, ९३.

सागर, ग्रा० १२४.

साणेनहल्लि, ग्रा०, भू० ४९, ५४.

सावन्त बसदि, कोल्लापुरका जै० मं०  
 ४७१.

साविमले, गिरि, ५३.

साहस तुङ्ग ( दन्तिदुर्ग, रा० न० ? )  
 ५४, भू० ७९, ८०, १३९.

सिङ्गिमय्य, पु०, भू० ९३.

सिद्धरबस्ति, भू० ३८, १०६.

सिद्धरगुण्ड=सिद्धबिला, भू० ३९.

सिद्धान्त बस्ति, भू० ४४.

सिरियादेवी, ५२.

सिवमारन बसदि, भू० ८.

सिवेय नायक, सर०, १२४.

सिंगण, सिंगिमय्य, बलदेव मं० के पुत्र  
५१-५३.

सिंग्यप नायक, सर० ४७७, भू० ११२.

सिंधु, देश, ५४ भू० १४१.

सिंहल, देश, ५५.

सिंहल नरेश, भू० ११२, १४३.

सिंहसेन, चन्द्रगुप्त मौर्यके पुत्र, भू० ६१.

सुनन्दा, भुजबलिकी माता, भू० २४.

सुपार्श्वनाथ बस्ति, भू० ८.

सुप्रभा, चन्द्रगुप्त मौर्यकी रानी, भू०  
५७.

सेठ राजाराम, पु० ३४४.

सेनवीरमतजी, पु०, भू० ३७.

सेरिंगपट्टम, भू० ५५, ६२, १०६.

सेवुण, न०, ४९९.

सोम, चन्द्रमौलि मं० के पुत्र, १२४.

सोमनाथपुर, ग्रा० ११७.

सोमशर्मा, पुरोहित, भू० ५६.

सोमश्री स्त्री, भू० ५६.

सोमेश्वर, सर० १२८.

सोमेश्वर-आहवमल्ल, चा० न०, भू० ८४.

सोमेश्वर देव, हो० न० ४९९, भू०  
९९, १००.

ह

हत्तिपोम्मु, एक टैक्स, ४३४.

हृष्यलिगे=कठघटा, ११५.

हरदिसेट्टि, पु० ८६.

हरिदेव, मं० ३५१.

हरिय गौड, पु० १०६.

हरियण, पु० ८६.

हरियण, सर० १०५, भू० ११२.

हरियमसेट्टि, पु० ३६१.

हरिहर द्वि०, वि० न० १२६, भू० १०१,  
१०३, १०४.

हर्विसेट्टि, पु० १३६.

हर्षवर्धन, न०, भू० ८०.

हलसूर, ग्रा० ९५, भू० १२२.

हलेबेलगोल, ग्रा०, भू० ५३.

हाडुवरहल्लि, ग्रा० १३७.

हाडोनहल्लि, ग्रा० १०७.

हानुल्ल, दु० ५३, १२४, १३०,  
१३६, ४९१, ४९७.

हाविसेट्टि, पु० ८७.

हारुवसेट्टि, पु० ८६, ३६१.

हार्नले साहब, भू० ६७.

हालज, पु० ४०६.

हामसा, पु० ३६६.

हिमशीतल, न० ५४, भू० ११२,  
१३९.

हिरियण्ण, पु० ११७.

हिरिय जक्कियब्बेयकेरे, सरो० १२४,  
४७५.

हिरिय दण्डनायक, उ० १४३, ४७८.

हिरिय भण्डारि, उ० ८०, ९०, १३८.

हिरिय माणिक्य भण्डारि, उ० १२८.

हिरिसालि ग्रा० १२१, भू० ४२.

हीरासा, पु० ३६४, ३६६, ३८२  
३८६, ३९३.

हुलिगेरे, ग्रा० १३१.

हुल्ल, राज, बल्लाल द्वि० के से०, ४०,  
४२, ८०, ९०, १२४, १३७,  
१३८, ३१६, ४९१, भू० ४३,  
७५, ९४-९७.

हुल्लघट्ट, ग्रा० १२४.

हुल्लहण, एक टैक्स, ४३४.

हुल्लेय, पु० ८७.

हुञ्जेर, ग्रा० ५३.

हुडेजीय, पु० १४३.

हेमवती नदी, भू० १०९.

हेम्माडिदेव, सर०, १२४,

हेर्गडेकण्ठ, पु०, भू० ४०.

होन्नचगेरे, ग्रा० ९६.

होन्नलि, ग्रा० ४८४.

होन्निसेट्टि, पु० ८७, ३६१.

होन्नेनहलि, ग्रा० १०७.

होन्नेय, पु० ८७.

होय्सल, रा० वं० ४४, ४७, १२४,  
१२९, १३०, १३७, १३८, ४९१,  
४९२, ४९४, ४९५, ४९७, ४९९,  
भू० ८१-८३, १०१.

होय्सल सेट्टि, पु० ८६, ३६१.

होय्सलाचारि, लेखक, ४४.

होल्लिसेट्टि, पु० ८६.

होल्लेसेट्टि, पु० ३६१.

होसगेरे, सरो० ५९.

होसपट्टण, ग्रा० १३६.

होसबोल्लु, ग्रा० ८४.

होसहलि, ग्रा० ८३, ८४, ४३४.

# माणिकचन्द-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमालाका सूचीपत्र

केवल संस्कृत-प्राकृतके ग्रन्थ ।

[ इस ग्रन्थमालाके तमाम ग्रन्थ लागत मूल्यपर बेचे जाते हैं,  
अतएव इसके सभी ग्रन्थ बहुत सस्ते हैं । ]

१ लघीयखयादिसंग्रह—( १ भट्टकलंकदेवकृत लघीयखय अनन्त-  
कीर्तिकृत तात्पर्यवृत्तिसहित, २ भट्टकलंकदेवकृत स्वरूपसम्बोधन, ३-४ अनन्त-  
कीर्तिकृत लघु और बृहत्सर्वज्ञसिद्धि ) पृष्ठसंख्या २२४ । मूल्य १८)

२ सागारधर्मावृत—पं० आशाधरकृत, स्वोपज्ञभव्यकुमुदचन्द्रिका टीका-  
सहित । पृष्ठसंख्या २६० ।

३ विक्रान्तकौरवीय नाटक—कवि हस्तिमल्लकृत । पृ० १७६ । मू० १८)

४ पार्श्वनाथचरित—श्रीवादिराजसूरिप्रणीत । पृ० २१६ । मू० ॥)

५ मैथिलीकल्याण—कविवर हस्तिमल्लकृत नाटक । पृ० १०४ । मू० ॥)

६ आराधनासार—आचार्य देवसेनकृत मूल प्राकृत और पण्डिताचार्य  
रत्नकीर्तिदेवकृत संस्कृतटीका । पृष्ठसंख्या १३२ । मू० १॥)

७ जिनदत्तचरित—श्रीगुणभद्राचार्यकृत काव्य । पृ० १०० । मू० १॥)

८ प्रद्युम्नचरित—परमार राजा सिन्धुलके दरबारी और महामहत्तर श्रीप-  
ण्टके गुरु आचार्य महासेनकृत काव्य । पृ० २३६ । मू० ॥)

९ चारित्रसार—श्रीचामुण्डराय महाराजरचित । पृ० १०८ । मू० १८)

१० प्रमाणनिर्णय—श्रीवादिराजसूरिकृत न्याय । पृ० ८४ । मू० १८)

११ आचारसार—श्रीवीरनन्दि आचार्यप्रणीत यतिधर्मशास्त्र । इसमें  
सुनियोंके आचारका वर्णन है । पृ० १०४ । मूल्य १८)

१२ त्रिलोकसार—श्रीनेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीकृत मूल गाथा और  
माधवचन्द्र त्रैविद्यदेवकृत संस्कृतटीका । पृ० ४४० । मू० १॥)

**१३ तत्त्वानुशासनादिसंग्रह—**( १ श्रीनागसेनमुनिकृत तत्त्वानुशासन, २ श्रीपूज्यपादस्वामीकृत इष्टोपदेश पं० आशाधरकृत संस्कृतटीकासहित, ३ श्रीइन्द्रनन्दिकृत नीतिसार, ४ मोक्षपंचाशिका, ५ श्रीइन्द्रनन्दिकृत श्रुतावतार, ६ श्रीसोमदेवप्रणीत अध्यात्मतरंगिणी, ७ श्रीविद्यानन्दस्वामिप्रणीत बृहत्पंचनमस्कार या पात्रकेसरीस्तोत्र सटीक, ८ श्रीवादिराजप्रणीत अध्यात्माष्टक, ९ श्रीअमितगतिसूरिकृत द्वात्रिंशतिका, १० श्रीचन्द्रकृत वैराग्यमणिमाला, ११ श्रीदेवसेनकृत तत्त्वसार ( प्राकृत ), १२ ब्रह्महेमचन्द्रकृत श्रुतस्कन्ध, १३ ढाढसी गाथा ( प्राकृत ), १४ पद्मसिंहमुनिकृत ज्ञानसार संस्कृतच्छायासहित ।) पृष्ठसंख्या १८४ । मू० ॥३= )

**१४ अनगारधर्मामृत—**पं० आशाधरकृत स्वोपज्ञ भव्यकुमुदचन्द्रिकाटीकासहित । यह भी मुनिधर्मका ग्रन्थ है । पृष्ठसंख्या ६९६ । मूल्य ३॥ )

**१५ गुक्त्यनुशासन—**श्रीमत्समन्तभद्रस्वामिकृत मूल और विद्यानन्दस्वामिकृत संस्कृतटीका । पृ० १९६ । मू० ॥१= )

**१६ नयचक्रसंग्रह—**( १ श्रीदेवसेनसूरिकृत नयचक्र, २ आलापपद्धति और ३ माइल धवलकृत द्रव्य-गुणस्वभाव प्रकाशक नयचक्र ) पृष्ठसंख्या १९४ । मू० ॥३= )

**१७ षट्प्राभृतादिसंग्रह—**( १ श्रीमत्कुदकुन्दस्वामीकृत मूल षट्पाहुड और उसकी श्रुतसागरसूरिकृत संस्कृतटीका, २ श्रीकुन्दकुन्दकृत लिंगप्राभृत, ३ शीलप्राभृत, ४ रयणसार और ५ द्वादशानुप्रेक्षा संस्कृतच्छायासहित ।) पृष्ठसंख्या ४९२ । मू० ३ )

**१८ प्रायश्चित्तसंग्रह—**( १ इन्द्रनन्दियोगीन्द्रकृत छेदपिण्ड प्राकृत छायासहित, २ नवतिवृत्तिसहित छेदशास्त्र, ३ श्रीगुरुदासकृत प्रायश्चित्तचूलिका, श्रीनन्दिगुरुकृतटीकासहित, ४ अकलंककृत प्रायश्चित्त ) पृष्ठ २०० । मू० १= )

**१९ मूलाचार—**( पूर्वार्ध ), श्रीवट्ठकेरस्वामीकृत मूल प्राकृत, श्रीवसुनन्दिश्रमणकृत आचारवृत्तिसहित । पृ० ५२० । मू० २॥ )

**२० भावसंग्रहादि—**( १ श्रीदेवसेनसूरिकृत प्राकृत भावसंग्रह, छायासहित, २ श्रीवामदेवपण्डितकृत संस्कृत भावसंग्रह, श्रीश्रुतमुनिकृत भावत्रिभंगी और ४ आस्रवत्रिभंगी ) पृ० ३२८ । मू० २॥ )

**२१ सिद्धान्तसारादिसंग्रह—**( १ श्रीजिनचन्द्राचार्यकृत सिद्धान्तसार प्राकृत, श्रीज्ञानभूषणकृत भाष्यसहित, २ श्रीयोगीन्द्रकृत योगसार प्राकृत, ३ अमृताशीति संस्कृत, ४ निजात्माष्टक प्राकृत, ५ अजितब्रह्मकृत कल्याणालोयणा प्राकृत, ६ श्रीशिवकोटिकृत रत्नमाला, ७ श्रीमाधनन्दिकृत शास्त्रसारसमुच्चय, ८ श्रीप्रभाचन्द्रकृत अर्हत्प्रवचन, ९ आप्तस्वरूप, १० वादिराजश्रेष्ठीप्रणीत ज्ञानलोचनस्तोत्र, ११ श्रीविष्णुसेनरचित समवसरणस्तोत्र, १२ श्रीजयानन्दसूरिकृत सर्वज्ञस्तवन सटीक, १३ पार्श्वनाथसमस्यास्तोत्र, १४ श्रीगुणभद्रकृत चित्रबन्धस्तोत्र, १५ महर्षिस्तोत्र, १६ श्रीपद्मप्रभदेवकृत पार्श्वनाथस्तोत्र, १७ नेमिनाथस्तोत्र, १८ श्रीभानुकीर्तिकृत शंखदेवाष्टक, १९ श्रीअमितगतिकृत सामायिकपाठ, २० श्रीपद्मनन्दिरचित धम्मरसायण प्राकृत, २१ श्रीकुलभद्रकृत सारसमुच्चय, २२ श्रीशुभचन्द्रकृत अंगपण्णत्ति प्राकृत, २३ विबुधश्रीधरकृत श्रुतावतार, २४ शलाकाविवरण, २५ पं० आशाधरकृत कल्याणमाला ) पृष्ठसंख्या ३६५ । मू० १॥ )

**२२ नीतिवाक्यामृत—**श्रीसोमदेवसूरिकृत मूल और किसी अज्ञातपण्डितकृत संस्कृतटीका । विस्तृत भूमिका । पृ० सं० ४६४ । मू० १॥॥ )

**२३ मूलाचार—**( उत्तरार्ध ) श्रीवट्टकेरस्वामीकृत मूल प्राकृत और श्रीवसुनन्दि आचार्यकृत आचारवृत्ति । पृ० ३४० । मू० १॥ )

**२४ रत्नकरण्डश्रावकाचार—**श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्रकृत मूल और आचार्य प्रभाचन्द्रकृत संस्कृतटीका, साथ ही लगभग ३०० पृष्ठकी विस्तृत भूमिका ( हिन्दीमें ) है, जिसमें स्वामी समन्तभद्रका जीवनचरित और मूल तथा टीकाग्रन्थकी निष्पक्ष तथा मार्मिक समालोचना की गई है । भूमिकालेखक बाबू जुगल किशोरजी मुस्तार हैं जो इतिहासके विशेषज्ञ हैं । सम्पूर्ण ग्रन्थकी पृष्ठसंख्या ४५० मू० २)

**२५ पंचसंग्रह—**माथुरसंघके आचार्य श्रीअमितगतिसूरिकृत । इसमें गोम्मटसारका सम्पूर्ण विषय संस्कृतमें श्लोकबद्ध लिखा गया है । प्राकृत नहीं जाननेवालोंके लिए बहुत उपयोगी है । पृष्ठसंख्या २४० । मूल्य ॥॥ )

**२६ लाटीसंहिता—**ग्रन्थराज पंचाध्यायीके कर्ता महान् पण्डित राजमल्लजीकृत श्रावकाचारका अपूर्व ग्रन्थ । पृष्ठसंख्या १३२ । मूल्य ॥ )



**२७ पुरुदेवचम्पू**—महापण्डित आशाधरके शिष्य कविवर्य अर्हदासकृत चम्पू ग्रन्थ । पं० जिनदासशास्त्रीकृत टिप्पणसहित । पृष्ठसंख्या २१२ । मू० ॥१॥)

**२८ जैन-शिलालेखसंग्रह**—श्रवणबेलगोल (जैनबद्री) के तमाम शिलालेखोंका अपूर्व संग्रह, जो ४२८ पृष्ठोंमें समाया हुआ है । इसका सम्पादन अमरावतीके किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर बाबू हीरालालजी जैन, एम्० ए० एल० एल० बी० ने किया है । प्रत्येक लेखका सारांश हिन्दीमें दे दिया गया है । भूमिका १६२ पृष्ठकी है जो बहुत ही विद्वत्तापूर्ण और कामकी है । सम्पूर्ण ग्रन्थ ६०० पृष्ठोंसे ऊपरका है । मूल्य २॥)

**२९-३०-३१ पद्मचरित**—(पद्मपुराण) आचार्य रविषेणकृत विशाल कथा-ग्रन्थ । यह तीन खण्डोंमें समाप्त होगा । पहला खण्ड प्रकाशित हो चुका है । मूल्य प्रत्येक खण्डका १॥)

**सूचना**—आगे अनेक बड़े बड़े और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंके छपानेका प्रबन्ध हो रहा है ।

**नोट**—यह ग्रन्थमाला स्वर्गीय दानवीर सेठ मणिकचन्द हीराचन्दजी जे० पी० के स्मरणार्थ निकाली गई है । इसके फण्डमें लगभग १२-१३ हजार रुपयेका चन्दा हुआ था जो कि प्रायः खर्च हो चुका है । इसकी सहायता करना प्रत्येक जैनी भाईका कर्तव्य है । जो सज्जन यों सहायता न कर सकें उन्हें इसके प्रकाशित हुए ग्रन्थ ही खरीद कर अपने घर और मंदिरमें रखना चाहिए । यह भी एक तरहकी सहायता ही है । हमारे प्राचीन आचार्योंके बनाये हुए हजारों ग्रन्थ भंडारोंमें पड़े पड़े सड़ रहे हैं । यह ग्रन्थमाला उन ग्रन्थोंका उद्धार करके सबके लिए सुलभ कर देती है, इस लिये इसको सहायता पहुँचाना जिनवाणी माताका उद्धार करना और जैनधर्मकी प्रभावना करना है । जो महाशय एक ग्रन्थके छपाने लायक या उससे भी आधा रुपया देते हैं, उनका फोटू ग्रन्थके भीतर लगवा दिया जाता है । नीचे लिखे पतेपर पत्रव्यवहार करना चाहिए ।

**नाथूराम प्रेमी, मंत्री,**

**माणिकचन्द जैन-ग्रन्थमाला,**

**हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई ।**

# पूर्व प्रकाशित ग्रन्थोंकी सूची

—११०:६३३—

[ प्रत्येक ग्रन्थ लागत मात्र मूल्य पर बेचा जाता है । ]

१ लघोयकथासंग्रह ( न्याय ) १-	१५ युक्तप्रज्ञासन ( न्याय ) ॥१-
२ सगारधर्माभूत ॥३-	१६ नयनकसंग्रह ॥३-
३ विक्रान्त-कौरवीय ( नाटक ) ॥३-	१७ षट्प्राश्रुतादिप्रश्न ३)
४ पार्श्वनाथचरित ( काव्य ) ॥	१८ प्रायश्चित्तसंग्रह १-
५ मैथिली-कल्याण ( नाटक ) १)	१९ मूलाचार सटीक (पूर्वार्ध) २॥
६ आराधनासार १)॥	२० भावसंग्रह २॥
७ जिनप्रतिमा ( काव्य ) १)॥	२१ त्रिदशतारासंग्रह १॥
८ प्रद्युम्नचरित १)	२२ नारायणसंग्रह १॥
९ चारित्रसार ॥३-	२३ लक्षण सटीक (पूर्वार्ध) १॥
१० प्रणयनिर्णय ( प्रणय ) १-	२४ लक्षण सटीक (उत्तरार्ध) १॥
११ आराधनासार ॥३-	२५ लक्षणसंग्रह ॥३-
१२ त्रिदशकला सटीक १॥॥	२६ लक्ष्मीसंहिता ॥
१३ तत्त्वानुशासनचरितसंग्रह ॥३-	२७ सुगदेवचम्पू ॥३-
१४ अनगरधर्माभूत ३॥	२८ प्राचीन शिलालेखसंग्रह २)
	२९ पद्मपुराण ( प्रथमखंड ) १॥

**नोट—**आगे और बड़े बड़े महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंके छपानेका प्रयत्न हो रहा है । प्रत्येक जेजीको इसके ग्रन्थ मँगाकर सहायता देना चाहि ।  
 १००) सौ रुपया देकर सहायता देनेवालोंको सब ग्रन्थ भेजा जायगा ।

विशेषक —

नाथूराम जेजी, मंत्री,  
 जेजी, पो० निरगाँव, बम्बई ।